हिन्दुस्तानी कहावत कोश

एस. डब्ल्यू. फैलन

अनुवादक और संशोधक
कृष्णानन्द गुप्त

हिन्दुस्तानी कहावत-कोश

हिन्दुस्तानी कहावत-कोश

एस. डब्ल्यू. फैलन

अनुवादक और संशोधक
कृष्णानन्द गुप्त

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-4685-7

HINDUSTANI KAHAVAT KOSH *(Hindi)*

निदेशक. नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

व्यवहृत सांकेतिक अक्षरों के निर्देश

अं.	=	अंग्रेजी
अ.	=	अरबी
उप.	=	उपदेश
ऊ.दे.	=	ऊपर देखिए
क.	=	कहते हैं अथवा कही जाती है।
कहा.	=	कहावत
कृ.	=	कृषि संबंधी
गा.	=	ग्रामीण
दे.	=	देखिए
नी. वा.	=	नीति मूलक वाक्य
पं.	=	पंजाबी
पाठा.	=	पाठांतर
प्र. पा.	=	प्रचलित पाठ
पू.	=	पूर्वी
फ़ा.	=	फ़ारसी
भो.	=	भोजपुरी
म.	=	मराठी
मु.	=	मुसलमानी
मुहा.	=	मुहावरा
रा. मा.	=	रामचरित मानस
लो. वि.	=	लोक विश्वास
व्य.	=	व्यवसाय संबंधी
सं.	=	संस्कृत
समा.	=	समानता
स्त्रि.	=	स्त्रियों में प्रचलित
हिं.	-	हिंदुओं की

सूचना– कहावतों की व्याख्या में अधिकांश स्थलों पर तब, इसलिए आदि के आगे (.) चिह्न लगाकर छोड़ दिया गया है; वहां प्रसंग के अनुसार 'तब कहते हैं, इसलिए कहते हैं; अथवा इसलिए कहा गया है,' इस प्रकार वाक्य को पूरा कर लेना चाहिए।

अ

अंग्रेज़ की नौकरी और बंदर नचाना बराबर है

वह एक बहुत मुश्किल काम है।

(बंदर एक बड़ा चंचल और चिड़चिड़े स्वभाव का जानवर होता है। ज़रा भी नाराज़ हो जाए तो या तो अपना खेल दिखाना बंद कर देगा, या मदारी को नोंच-खसोट लेगा। इसलिए कहावत का भाव यह है कि अंग्रेज की नौकरी में बहुत सावधान रहने की जरूरत पड़ती है। ज़रा चूके कि गए !)

अंग्रेज़ भी अक्ल के पुतले हैं

बड़े गुणी है।

अक्ल का पुतला=एक मुहा., बुद्धिमान।

अंग्रेज़ी राज, तन को कपड़ा न पेट को नाज

टैक्सों के बोझ से पीड़ित जनता को अच्छी तरह खाना-कपड़ा नहीं मिलता था।

अंग्रेज़ों ने चरसा भर ज़मीन से सारा हिन्दुस्तान अपना कर लिया

अर्थात वे पक्के व्यवसायी और कूटनीतिज्ञ हैं। चरसा, (चरस) भूमि नापने का एक परिमाण जो 2100 हाथ का होता है।

अंडा सिखावे बच्चे को कि चीं-चीं मत कर

छोटे मुंह बडी बात।

अंडुवा बैल, जी का जवाल, (ग्रा.)

स्वतंत्र और उच्छृंखल व्यक्ति के लिए क.।

अंडुवा=बिना बधियाया हुआ बैल। सांड।

अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई

परिश्रम कोई करे, और कोई लाभ उठाए।

अंडे सेना=पक्षियों का अपने अंडों पर गर्मी पहुंचाने के लिए बैठना।

अंतड़ियां कुल्हू अल्ला पढ़ रही हैं

अर्थात भूख से आंतें कुलबुला रही हैं।

(कुल-हो-अल्लाह—कुरान के एक सूरा का प्रारंभिक अंश है; जिसे विशेष अवसरों पर पढ़ते हैं।)

अंतड़ी में रूप बकची में छब, (मु. स्त्रि.)

रूप आंतों में और छवि बक्से में बंद रहती है। अर्थात चेहरे की सुंदरता खाने-पीने और शरीर की सुंदरता वस्त्र-आभूषणों पर निर्भर करती है।

अंत बुरे का बुरा

बुरे का अंत बुरा ही होता है। जो किसी का बुरा करता है, अंत में स्वयं उसका बुरा होता है।

अंत भले का भला

जो दूसरों के साथ भलाई करता है, अंत में उसका स्वयं भला होता है।

अंत भला सो भला

सब बातों को सोचकर अंत में जिस निर्णय पर पहुंचा जाए, उसे ही ठीक मानना चाहिए।

(इसी प्रकार की दूसरी कहावत है—'अंत भला सो गता' अर्थात अंत समय जैसी मति होती है, वैसी ही मृत्यु के बाद जीव की दशा होती है।)

अंदर छूत नहीं, बाहर कहें दुरदुर, (हि.)

मन में तो संयम नहीं, पर बाहर से सफाई रखे। पाखंडी के लिए क.।

अंधरी गैया, धरम रखवाली, (ग्रा.)

अंधी गाय धर्म की रक्षा करने वाली होती है, अर्थात उसकी सेवा से विशेष पुण्य मिलता है। भाव यह है कि

दीन-हीन की सेवा करनी चाहिए।

अंधा कहे मैं सरग चढ़ भूतों और मुझे कोई न देखे

अनाचारी खुल्लमखुल्ला निंदित आचरण करके चाहता है कि उसके कर्मों का पता किसी को न चले, तो यह कैसे संभव है?

अंधा क्या चाहे, दो आंखें

जिसे जिस वस्तु की आवश्यकता होती है, वह उसी की चिंता करता है। अथवा किसी की इच्छित वस्तु के लिए पूछे जाने पर क.।

अंधा क्या जाने बंसत की बहार

जिसने जो वस्तु देखी ही नहीं, वह उसकी विशेषता क्या जाने?

अंधा क्या जाने लाल की बहार

दे. ऊ।

[लाल−(फा. लाल) एक फूल विशेष।]

अंधा गाए, बहरा बजाए

जहां दो एक से एक मूर्ख इकट्ठे हुए हों, वहां क.।

अंधा गुरु, बहरा चेला, मांगे हड़ दे बहेड़ा

मांगता है हड़ तो चेला देता है बहेड़ा। न गुरु चेले का कुछ देखता है और न चेला गुरु की कुछ सुनता है। जहां दोनों एक-दूसरे के विपरीत हों अथवा मिलकर काम न कर सकते हों, वहां क.।

अंधा चूहा, थोथे धान

जो जिस वस्तु के योग्य होता है, उसे वही वस्तु मिलती है, अथवा वह उसी से संतुष्ट हो जाता है।

अंधाधुंध मनोहरा गाय

चूंकि कोई देखने या सुनने वाला नहीं, इसलिए मनोहरा के मन में जो आता है सो गाए चला जा रहा है।

जहां कोई देखने वाला नहीं, वहां जो मन में आए सो किए जाओ।

मनोहरा=किसी व्यक्ति का नाम।

अंधा बगुला कीचड़ खाय

अभागा हमेशा दुख भोगता है। अथवा कह सकते हैं कि अनाड़ी को हमेशा निकम्मी वस्तु ही मिलती है।

अंधा बांटे शीरनी, फिर-फिर अपनों ही को दे

जब कोई आदमी किसी वस्तु को घुमा-फिराकर अपने ही लोगों को देता है, तब क.। कुनबापरस्ती।

शीरनी=शीरीनी, मिठाई।

पाठा.−अंधा बांटे रेवड़ी...।

अंधा बेईमान

अंधे को चूंकि दिखाई नहीं देता, इसलिए वह बड़ा शक्की होता है, और लोगों पर विश्वास नहीं कर पाता।

(इस पर एक कथा है−एक अंधा आदमी किसी भोज में शामिल हुआ। भोजन करते समय उसने सोचा कि यहां सभी मनुष्य दोनों हाथों से खाते होंगे, इसलिए वह भी वैसा ही करने लगा। फिर उसने सोचा कि शायद ये थाली में मुंह लगाकर भी खाते होंगे, इसलिए वह उसी तरह खाने भी लगा। फिर उसके दिमाग में आया कि लोग शायद थाली भी लेकर घर चले जाते होंगे। इसलिए आगे की थाली को लेकर चलने लगा। दरवाजे पर पहुंचने पर नौकर ने उसके हाथ से थाली छीनकर कहा−अंधा बेईमान; और इस तरह अंधों के संबंध में उक्ति चल पड़ी।)

अंधा बेईमान, बहरा बहिश्ती

अंधा धूर्त होता है, पर बहरा भलामानुस, क्योंकि वह किसी की बुराई कानों से नहीं सुनता।

बहिश्ती=स्वर्ग का आदमी, देवता।

अंधा मुल्ला, टूटी मसीदा

(1) जैसे अंधे मुल्ला जी वैसी ही उनकी टूटी मसजिद, दोनों एक से। अथवा

(2) जैसे को तैसा ही मिलना है।

अंधा राजा, चौपट नगरी

जहां राजा मूर्ख या लापरवाह हो, वहां देश चौपट तो होगा ही।

जहां मालिक स्वयं काम न देखे, वहां क.।

अंधा लकड़ी एक बार ही खोता है

होशियार से एक बार ही भूल होती है। अंधे के हाथ से मरने पर ही लकड़ी छूटती है।

अंधा सिपाही, कानी घोड़ी; बिधना ने आप मिलाई जोड़ी

जहां कोई व्यक्ति जैसा (निकम्मा या बेतुका) हो वैसा ही उसका साजबाज अथवा कोई साथी भी हो, वहां व्यंग्य में क.।

अंधा हादी, बहिरा मुर्शिद, (मु.)

दे.−अंधा गुरु...।

हादी=गुरु, मुर्शिद=चेला।

अंधियारी गई कि चोर

न कहीं अंधियारी गई है और न कहीं चोर ही। अर्थात अंधियारी रात आने पर चोर चोरी करने निकलेगा ही। जिसे जिस काम की आदत पड़ जाती है, मौका पाते ही वह उसे करेगा ही। जब कोई मनुष्य अपनी किसी बुरी

आदत को छिपाता है, तब क.।

अंधी नाइन, आइने की तलाश

जब कोई ऐसी वस्तु चाहे, जिसके पाने के वह बिल्कुल ही योग्य न हो, अथवा जिसका वह कोई उपयोग ही न जानता हो, तब क.।

अंधी पीसे, कुत्ता खाय

तब कहते हैं, जब कोई अपने परिश्रम से पैदा की गई किसी वस्तु का स्वयं उपयोग न कर सके और दूसरे उसका मजा लूटें।

अंधी मां निज पूतों का मुंह कभी न देखे

जब कोई व्यक्ति दुर्भाग्यवश अपनी किसी वस्तु का पूरा लाभ उठाने से वंचित हो, तब क.।

अंधे के आगे रोये, दोनों दीदे खोये

जब कोई मूर्ख समझाने से न समझे, तब क.।

जब कोई मनुष्य किसी के दुख को सुनने के बाद कोई ध्यान न दे, तब भी क.।

अंधे का खुदा हाफ़िज़, (मु.)

अंधे का ईश्वर रक्षक होता है।

अंधे की दाद न फरियाद, अंधा मार बैठेगा

अंधे को छेड़ना ठीक नहीं। वह अगर मार बैठे, तो उसकी किसी से कोई शिकायत नहीं की जा सकती।

चिढ़कर जब कोई व्यक्ति किसी को मारे, तो उसे और चिढ़ाने के लिए क.।

अंधे की लकड़ी

इकलौता लड़का। जब किसी को किसी एक ही चीज का सहारा हो, तब क.।

अंधे के हाथ बटेर

अनायास किसी के हाथ ऐसी श्रेष्ठ वस्तु का लग जाना, जो उसे कभी मिल नहीं सकती।

अंधे के हिसाब दिन-रात बराबर

क्योंकि उसे कुछ दिखाई नहीं देता।

अंधे को जुआ मुआफ़ है

अनजाने में या अज्ञानवश जब किसी से कोई भूल हो जाए, तब क.।

अंधे को भागना क्या जरूर है?

जो जिस काम को कर ही नहीं सकता, वह उसे करने के लिए कटिबद्ध ही क्यों हो?

अंधे ने चोर पकड़ा, दौड़ियो मियां लंगड़े

एक हास्यजनक बात; अंधा न तो चोर ही पकड़ सकता है और न लंगड़ा दौड़ ही सकता है। जहां कोई व्यक्ति किसी काम को करने में बिल्कुल ही असमर्थ हो फिर भी वह उसमें चिपटा रहे, वहां उसे व्यंग्य में क.।

अंधेर नगरी अबूझ राजा; टके सेर ककड़ी, टके सेर खाजा

जहां घोर अन्याय और अंधेरगर्दी फैली हो, वहां क.।

खाजा=घी, शक्कर और मैदे की एक मिठाई।

पाठा.—अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी...।

अंधेर रसिया ऐना पै मरें

अंधे का मुंह देखने के लिए दर्पण चाहना। एक हास्यजनक इच्छा।

अंधेरी रैन में जेवड़ी सांप

अंधेरी रात में रस्सी सांप जान पड़ती है। मन की संदिग्ध अवस्था के लिए क.।

अंधेरे घर का दीया

इकलौता लड़का।

अंधेरे घर में धींगर नाचे

जहां देखभाल करने वाले के अभाव में कोई उद्दंड व्यक्ति मनमानी करे, वहां क.। सूने घर के लिए भी क.।

धींगर=लंबा-तड़ंगा आदमी; भूत।

अंधेरे घर में सांप ही सांप

अंधेरे में हमेशा इस बात का डर लगा रहता है कि न जाने क्या हो। मन की भयभीत अवस्था।

अंधे हाफ़िज़, काने नवाब

जो अंधा है वह हाफिज और जो काना है वह नवाब।

हाफिज=ऐसा व्यक्ति जिसे कुरान कंठस्थ हो, पंडित।

अंधों ने गांव मारा, दौड़ियो वे लंगड़े

अंधे न तो गांव लूट सकते हैं और न लंगड़े दौड़कर मदद कर सकते हैं। हास्यजनक बात।

अंधों ने बाजार लूटा

दे. ऊ.।

अंधों में काना राजा

मूर्खों में थोड़ा पढ़ा-लिखा ही विद्वान समझा जाता है।

अइले कुल के अगरू, दीया बुतैले सगरू, (पू.)

किसी अभागी स्त्री को कोसना कि यह आई कुलबंतिन, जिसने घर का दीपक ही बुझा दिया, अर्थात सर्वनाश कर दिया।

अइले गइले गोड़ हलुकैले, पैले और हलुक, (भो.)

आने-जाने में पैर टूटे और जब खाने बैठे तो पहले कौर में ही कै हो गई। (मक्खी खा लेने से)

(1) बने-बनाए काम में बाधा पड़ना।

(2) परिश्रम का पूरा लाभ नहीं उठा पाना।

अइले जोड़ला परखो रे, (पू.)
किसी सगे-संबंधी के बहुत दिनों बाद आने पर कहते हैं कि 'लो भाई, ये आ गए, पहचानो इन्हें।'

अइले निहरवा खरचये के धरवा, ना कोई चीन्हें जाने, नाहीं इतवरवा, (भो.)
एक ऐसे व्यक्ति का कथन जो परदेश में है और त्योहार के अवसर पर जिसके पास पैसा नहीं। कह रहा है कि यहां न तो कोई मुझे पहचानता है, और न कोई मेरा यकीन ही करता है, किससे उधार मांगकर त्योहार का काम चलाऊं?

अकाल नहीं है काल है
घोर अकाल के लिए क.।

अकाल मृत की मुक्ति नहीं
असामयिक मृत्यु अच्छी नहीं होती।

अकेलवा गइल मैदान फिरे, लोग कहिल कि हेराय गेले, (भो.)
कोई स्त्री बाहर शौच फिरने गई, लोगों ने समझा कि खो गई। तात्पर्य, जवान स्त्री की हमेशा मुसीबत रहती है। लोग जरा-जरा-सी बात में उस पर संदेह करते हैं।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता
एक अकेला व्यक्ति किसी ऐसे काम को नहीं कर सकता, जिसके लिए बहुत से व्यक्तियों की जरूरत हो।

अकेला चले न बाट, झाड़ बेठे खाट, (नी. बा.)
कभी अकेले रास्ता नही चलना चाहिए; चारपाई पर बैठने के पहले उसे झाड़ लेना चाहिए।
(वास्तव में यह एक लोक-कहानी का नीतिमूलक वाक्य है, जिसमें एक व्यक्ति एक राजकुमार को उपर्युक्त शिक्षा देता है।)

अकेला पूत कमाई करे, घर का करे या कचहरी करे
एक अकेला आदमी क्या-क्या कर सकता है?

अकेला हंसता भला न रोता
सुख-दुख में जिसका कोई साथी न हो, वह किसी काम का नहीं। अथवा सुख-दुख में सबको शामिल करके रहना चाहिए।

अकेला हसन रोवे कि कब्र खोदे, (मु.)
एक आदमी एक साथ दो काम नहीं कर सकता।

अकेली कहानी गुड़ से मीठी
एक अकेली वस्तु सबसे श्रेष्ठ तो मानी ही जाएगी, क्योंकि उसकी तुलना में कोई दूसरी अच्छी वस्तु मौजूद नहीं !

अकेली लकड़ी, न जले न बरे, न उजेरा होय, (स्त्रि.)
किसी एक अकेली वस्तु (या व्यक्ति) से सामर्थ्य से बाहर आशा नहीं करनी चाहिए।

अकेली लकड़ी कहां तक जले ?
दे. ऊ.।

अकेले-दुकेले का अल्लाह बेली
अनाथ का ईश्वर सहायक होता है।

अक्ल का दुश्मन
यानी मूर्ख।

अक्ल की कोताही ओर सब कुछ
उपहास में मूर्ख या कम समझ वाले से क.।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना
वास्तविकता का विचार न करके केवल कल्पना से काम लेना।

अक्ल के तोते उड़ गए
होश-हवास गायब हो गए।

अक्ल के नाखून लो
अपनी अक्ल को दुरुस्त करो।

अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरता है
बुद्धि को तिलांजलि दे रखी है।

अक्ल चे कुत्रिस्त की पेशे मर्दा वि. आयद, (फ़ा.)
अक्ल क्या कोई कुतिया है, जो मर्दो के पास आए ही? अर्थात प्रत्येक व्यक्ति में बुद्धि तो स्वाभाविक होती है, उसे जबर्दस्ती बुलाया नहीं जा सकता।

अक्ल ना ग्यान, थप्पड़ खाय समझ भियान, (पू.)
मूर्ख को पिटने से ही अक्ल आती है।

अक्ल बड़ी कि बहस?
तर्क की अपेक्षा बुद्धि से काम लेना अच्छा होता है। (यह कहा. अपने अशुद्ध रूप में 'अक्ल बड़ी कि भैंस' इस तरह प्रचलित है।)

अक्लमंद को एक इशारा काफी है
समझदार इशारे में बात समझ लेता है। उसे बहुत समझाना नहीं पड़ता।

अक्लमंदों की दूर बला
समझदारों को कष्ट नहीं भोगना पड़ता।

अगड़म-बगड़म काठ कठंवर
फालतू चीजों का ढेर।

अगर कोह टल्ले, न टल्ले फ़कीर
पहाड़ भले ही टल जाए पर फ़कीर नहीं टलता। वह भीख

लेकर ही दरवाजा छोड़ता है। हठीला व्यक्ति।

अगर्चे गंदा, मगर ईज़ाद-ए-बंदा
कोई चीज बुरी है तो क्या, मगर बनाई तो अपने हाथ से गई है।

अगला करे, पिछले पर आवे
(1) किसी काम की भलाई बुराई उन लोगों पर ही आती है, जो उसे अंत में करते हैं।
(2) बड़ों की भूल छोटों को भुगतनी पड़ती है।

अगला लीपा गया सराहा, अब का लीपा आगे आया
जब कोई आदमी अपनी किसी पिछली कारगुजारी की याद दिलाए, किंतु वर्तमान में उसका कार्य संतोषजनक न हो, तब क. कि तुम्हारे पिछले काम की सराहना की गई, किंतु अब तो तुमने सब चौपट कर दिया।

अगली महली मछली, पछली परधान
घर में जो जेठी वह पहले से मौजूद थी, उसे कोई नहीं पूछता, पर वह आकर घर की मालकिन बन बैठी। जो मुख्य था, वह तो पीछे रह गया और पीछे का मुख्य बन बैठा।

अगले को घास, न पिछले को पानी
स्वार्थी या कंजूस के लिए क., जो किसी को कुछ नहीं देता।

अगले पानी, पिछले कीच
काम में शीघ्रता करने वाले लाभ में रहते हैं। जो कुएं पर पानी भरने जल्दी पहुंच जाते हैं, उन्हें साफ पानी मिलता है, बाद में जाने वालों को तलछट हाथ लगती है।

अगहन, चूल्हे अदहन
अगहन के दिन अदहन के उबाल की तरह शीघ्र निकल जाते हैं, अर्थात छोटे होते हैं।
(अथवा अगहन के दिन इतने छोटे होते है कि चौके-चूल्हे का काम करते-करते निकल जाते हैं)
अदहन = दाल, चावल आदि पकाने का उबलता पानी।

अगिल खेती आगे-आगे, पाछिल खेती भागे जोगे, (कृ.)
खेती में सफलता तभी मिलती है, जब उसका सब काम समय पर किया जाए। विलंब से करने पर यदि कुछ प्राप्त हो जाए, तो समझना चाहिए कि वह भाग्य से मिला।
भागे जोगे = भाग्य के योग से।

अग्गम बुद्धी बानिया, पच्छम बुद्धी जाट, (ग्रा.)
बनिया अक्ल में तेज होता है, और जाट बुद्धू होता है।
(मालूम होता है कि यह दृष्टिकोण उस समय कुछ लोगों में था, पर यह कोई चिरंतन सत्य नहीं।)

अघाना बगुला, पोठिया तीत
बगुले का पेट भरा है, इसलिए उसे अब सभी मछलियां कड़वी लग रही हैं। भरा पेट होने पर कोई वस्तु अच्छी नहीं लगती।
पोठिया=एक जाति की मछली।

अच्छा किया खुदा ने, बुरा किया बंदे ने
ईश्वर जो कुछ करता है, सब अच्छा ही करता है। बुरे कर्म तो मनुष्य करता है और उनका फल भोगता है। तात्पर्य यह कि किसी काम के लिए ईश्वर को दोष देना व्यर्थ है।

अच्छा किया रहमान ने, बुरा किया शैतान ने
ईश्वर के सब काम अच्छे होते हैं। बुरे काम तो शैतान करता है। व्यंग्योक्ति।

अच्छी चीज सब को पसंद है
अच्छी चीज सब चाहते हैं, अथवा अच्छी चीज की सब प्रशंसा करते हैं।

अच्छी भई, गुड़ सत्तरह सेर
कोई वस्तु जब बहुत सस्ती या आसानी से मिल रही हो, तब क. कि बहुत अच्छा है, लूटो खाओ, मौज उड़ाओ। *(फैलन के जमाने में, यानी सन् 1885 में जब उसका यह कहावत-कोश प्रकाशित हुआ, गुड़ रुपए का दस सेर मिलता था, जैसा कि उसने स्वयं लिखा है।)*

अच्छे घर बयाना दिया
पहले से उलटा ! जब कोई अपने से अधिक जबर्दस्त के साथ झगड़ बैठे और उलझन में पड़ जाए, तब क.।
(भले भवन अब बायन दीन्हा, पावहुगे फल आपन कीन्हा। रा. मा.)
बयाना=(1) किसी काम के लिए पेशगी दी जाने वाली रकम।
(2) मिठाई, पूड़ी आदि की वह सौगात, जो कहीं बाहर से आने पर अपने सगे-संबंधियों और इष्ट मित्रों में बांटी जाती है और जिसके बदले में उसी प्रकार की सौगात पाने की वे आशा रखते हैं।

अच्छे बुरे में चार अंगुल का फ़र्क है !
आंख और कान में, यानी देखने और सुनने में, केवल चार अंगुल का अंतर है। कान की सुनी हुई बात सही भी हो सकती है और ग़लत भी। इसलिए जब तक किसी बात को स्वयं अपनी आंख से देख न ले, तब तक केवल सुनकर उस पर विश्वास न करें।

अच्छे भये अटल, प्रान गए निकल

अच्छा भर-पेट भोजन किया कि प्राण ही निकल गए।

(1) जब किसी जगह मनचाहा लाभ होने के साथ ही करारी हानि भी हो जाए, तब क.।

(2) बहुत खाने वाले लालची के लिए भी क.।

अटल=तृप्त।

(यह कहावत हँसी में मथुरा के चौबों के लिए प्रयुक्त होता है। पेट भर खा लेने के बाद भी यदि कोई उन्हें चार आने से एक मुहर तक फी लड्डू देने को कहे, तो वे और भी खा लेंगे। खिलाने वाला समझता था कि मैं अपना परलोक बना रहा हूं। उस समय अन्न भी काफी था, पर अब स्थिति बदली है, किंतु फैलन ने ऐसा ही लिखा है।)

अच्छे हैं, पर खुदा पाला न डाले

जब कोई आदमी देखने में भला, पर व्यवहार में बिल्कुल उसके विपरीत हो, तब उसके लिए व्यंग्य में क.।

(फैलन के अनुसार ऊपर की यह कहा. अक्सर पुलिस के कर्मचारियों के लिए कही जाती है।)

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।

चाहे कोई काम करे या न करे, पर ईश्वर सबको खाने को देता है।

आलसी और संतोषी मनुष्य की उक्ति।

आलसियों के लिए भी क.।

अजगर के दाता राम

ईश्वर अजगर जैसे प्राणी को भी भोजन देता है, जो एक स्थान पर अचल होकर पड़ा रहता है।

अजब तेरी कुदरत, अजब तेरा खेल।
छछूंदर भी डाले, चमेली का तेल।

जब किसी मनुष्य को संयोग से कोई ऐसी वस्तु काम में लाने के लिए मिल जाए, जो अपने जीवन में उसने कभी देखी न हो, अथवा जिसके वह बिल्कुल योग्य न हो, तब व्यंग्य में क.।

अजीरन को अजीरन ही ठेले, नहीं तो सिर चौहट्टे खेले

जो जैसा है उसका मुकाबला वैसा ही आदमी कर सकता है। यदि कोई दूसरा करे, तो उसे हानि उठानी पड़ती है।

(लोगों की धारणा है कि अजीर्ण में खूब भर पेट खाने से लाभ होता है और पिछले अनपचे अन्न को वह बाहर निकाल देता है।)

अटकल पच्चू सैर मुकर्रर

एक अनिश्चित अथवा केवल अनुमान पर आधारित बात।

(जोड़ की दूसरी कहा.--अटकल पच्चू डेढ़ सौ या अटकल पच्चू साढ़े बाईस)

अटका बनिया सौदा दे

इसलिए देता है कि पिछला उधार वसूल करने का अन्य कोई उपाय उसके पास नहीं होता।

जब कोई आदमी विवश होकर किसी के लिए कुछ करता है तब क.।

अटकेगा सो भटकेगा

(1) जिसकी गर्ज़ होती है, वह दौड़ता फिरता है। अथवा

(2) दुविधा में पड़े और गए।

अड़ते से अड़ते जाइए, चलते से दूर

जो लड़ने पर ही उतारू हो, उससे दो-दो हाथ निपट लेना चाहिए, और जो रास्ता जा रहा हो, उसे छेड़ना नहीं चाहिए।

अड़सठ तीरथ कर आई तूमड़ी, तऊ न गइ कड़वाई

तूमड़ी भले ही तीर्थयात्रा कर आए, किंतु उसकी कड़वाहट नहीं जाती।

जन्मजात स्वभाव नहीं मिटता।

तूमड़ी=लौकी की जाति का एक फल, जो बहुत कड़वा होता है। साधु लोग उसे पात्र बनाते हैं और साथ लिए फिरते हैं।

अड़ी घड़ी काज़ी के सिर पड़ी, (मु.)

किसी काम की भलाई-बुराई मुख्य आदमी के सिर आकर पड़ती है।

अढ़ाई दिन की सक्के ने भी बादशाहत कर ली

जब कोई व्यक्ति हठात किसी ऊंचे पद पर पहुंच कर रौब दिखाता है, तब उससे क.।

(अलिफ लैला में एक किस्सा है जिसमें सक्का नाम का एक भिश्ती ढाई दिन के लिए बादशाह बन जाता है। कहा. उसी से चली।)

अढ़ाई हाथ की ककड़ी, नौ हाथ का बीज

अनहोनी बात। दूर की हांकना।

अताई नानखताई, जब जी में आई तोड़ खाई

प्राकृतिक वस्तु का मनचाहा उपयोग किया जा सकता है।

अति और नारायन से बैर है

(1) ईश्वर को अत्याचार पसंद नहीं

(2) हद से बाहर कोई काम अच्छा नहीं होता।

अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप्प।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप्प।
अति किसी चीज की अच्छी नहीं होती।
धुप्प=धूप।

अदालत का बड़ा नाजुक मुआमला है
इसलिए कि हर बात में परेशानी होती है, और क्या फैसला हो, इसका भी कुछ ठीक नहीं रहता।

अधेला न दे, अधेली दे
तब कहते हैं, जब जहां देना चाहिए वहां न दे, पर व्यर्थ में अधेली दे दे।
अधेला=एक पैसे का आधा हिस्सा।
अधेली=अठन्नी।

अनकर खेती अनकर गाय, वह पापी जो मारन जाय
पराया खेत पराई गाय; हमें मतलब क्या जो भगाने जाए। अर्थ दूसरे के मामले में नहीं पड़ना चाहिए।

अनकर चुक्कर, अनकर घी, पांड़े बाप का लागा की, (पू.)
दूसरे का आटा, दूसरे का घी, रसोइए के बाप का खर्च क्या हुआ? दूसरे के माल को बेरहमी से खर्च करना।

अनकर धन पर लछमी नारायन
पराए धन पर धन्ना सेठ बनना, अथवा पराया माल उड़ाना।
(भोजन के पहले हिंदुओं में लक्ष्मीनारायण कहने का रिवाज है। लक्ष्मीनारायण करना=भोजन प्रारंभ करना।)

अनकर सुघर वर पानी के हलकोर, अपना कुबज वर सतुआ भर कोर
दूसरे का सुघड़ पति तो पानी के छींटों की तरह तुच्छ और अपना निकम्मा पति सत्तू के कौर की तरह मीठा।
अपनी चीज हमेशा अच्छी होती है, क्योंकि वह अपनी तो है।

अनकर सेंदुर देख आपन कपार फोरे, (पू.)
दूसरे का सुख देखकर ईर्ष्या करना।
यहां कपार फोड़ने के दो अर्थ हैं :
(1) हाय-हाय करना।
(2) सिर फोड़कर रक्त निकालना, जिसमें अपना ललाट भी दूसरे की तरह लाल हो जाए।
(सेंदुर स्त्रियों के लिए सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। सधवा स्त्रियां ही मांग में सेंदुर भरती है।)

अनका गोड़वा धोय नाइनियां आपन धोवत लजाय, (पू.)
अपने हाथ से अपना काम करने से लज्जित होना, पर दूसरे का काम प्रसन्नतापूर्वक करना।

अनके धन पर चोर राजा
दूसरे की कमाई हुई संपत्ति पर मौज उड़ाना।

अनके पनियां मैं भरूं, मेरे भरे कहार
जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के काम को अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझकर नहीं करना चाहता, तब उसकी ओर से क.।
(तुल.—मोरे पीसे पिसनारी में राउर पारन जाऊं। बुन्दे.)
अनके=दूसरे का।

अनजान की मिट्टी खराब
अज्ञान कष्ट का कारण होता है और उसका काम नहीं बनता।

अनजान सुजान, सदा कल्यान
मूर्ख और ज्ञानी, ये दोनों मजे में रहते हैं।
मूर्ख इसलिए कि उसे भले-बुरे का कोई ज्ञान नहीं होता इस कारण वह किसी बात की चिंता नहीं करता *(सब से भले विमूढ़ जिन्हे न व्यापे जगत-गति)* और ज्ञानी इसलिए कि वह आगा-पीछा सोचकर हर काम करता है।

अनदेखा चोर, बाप बराबर
जिस चोर की चोरी पकड़ी नहीं गई, उसे साहूकार ही माना जाएगा।

अनदेखा चोर, साले बराबर
जिस तरह साले से कोई परदा नहीं होता, वह घर में सब जगह बे-रोक-टोक आ-जा सकता है, उसी तरह जिस चोर को चोरी करते नहीं देखा, उससे कुछ कहा नहीं जा सकता, उसे घर में पूरी आजादी रहती है।

अनदोखो को दोख, जिसकी गती ना मोख
जो व्यक्ति निरपराधी को अपराध लगाता है, ईश्वर उसे दंड देता है।
गती=सद्‌गति।
मोख=मुक्ति।

अनविरतक विरत घमलोर बजाई
ऐसा ब्राह्मण जिसके कोई जजमानी नहीं होती, झूठमूठ का घंटा बजाता है।
अनविरतक=जिसके कोई वृत्ति न हो, बिन जजमानी का। भूखा।
विरत=व्रती, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण
घमलोर=व्यर्थ का शोरगुल।

अनमिले की कुशल है
भेंट न हो, सो ही अच्छा।

जब किसी व्यक्ति से हम दूर रहना चाहते हैं, तब उसके संबंध में क.।

अनमिले के त्यागी, रांड़ मिले बैरागी

कोई (औरत) न मिली तो त्यागी, मिल गई तो वैरागी। जब जैसा अवसर देखा, तब तैसा करना।

त्यागी=विरक्त साधु।

वैरागी=वैष्णवों का एक संप्रदाय।

(वैरागियों में स्त्री रखने का नियम है, त्यागी स्त्री नहीं रख सकते। इसलिए क.।)

अनहोत में औलाद

ग़रीबी में बहुत संतान का होना (अखरता है)।

अनहोनी होती नहीं, होनी होवनहार

जो होना है वह होकर रहता है; जो नहीं होना वह नहीं होगा।

भाग्यवादियां की उक्ति।

अनाड़ी का सौदा बारा-बाट

मूर्ख का कोई काम ढंग से नहीं हो पाता।

बारहबाट होना=मारा-मारा फिरना, नष्ट-भ्रष्ट होना।

अनाड़ी का सोना बाराबानी

मूर्ख का सोना हमेशा चोखा !

क्योंकि उसे खरे-खोटे की पहचान नहीं होती।

(सराफों की भाषा में बाराबानी सोना बहुत बढ़िया किस्म के सोने को कहते हैं; ऐसा सोना जो कई बार साफ़ किया गया हो।)

अनोखी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी-पी भरी पड़ो री

जब किसी नीच को कोई ऐसी वस्तु मिल जाती है, जो पहले कभी उसके पास न रही हो, तो वह उसका बड़ा घंमड करता है।

अनोखी जुरवा, साग में शोरवा, (मु. स्त्रि.)

शोरुवा मांस का ही बनता है पर उस मूर्ख स्त्री ने भाजी का ही शोरुवा बना दिया।

अनाड़ीपन के लिए क.।

जुरवा=जोरू, स्त्री।

अनोखे गांव में ऊंट आया, लोगों ने जाना परमेसुर आया

किसी गांव के लोगों ने ऊंट नहीं देखा था। एक बार जब वह उनके गांव में आया, तो उन्होंने उसे परमेश्वर समझा। मूर्ख लोग बिना देखी वस्तु के संबंध में नाना प्रकार की कल्पनाएं करते हैं।

अनोखे घर कटोरी

किसी घर में जब कोई ऐसी वस्तु आ जाए, जो पहले न रही हो, और उसका बहुत प्रदर्शन किया जाए, तब क.।

अन्न धन अनेक धन, सोना रूपा कितेक धन

अन्न ही सबसे बड़ा धन है, सोना-चांदी उसके सामने कुछ नहीं।

अन्नुख घर में नाती भतार, (पू.)

जिस घर में नाती का पति की तरह सम्मान हो, उसे सचमुच अनोखा माना जाना चाहिए। अथवा अनोखे घर में नाती ही पति होता है।

जहां बड़ों के स्थान पर छोटों की अधिक चले, वहां क.।

अपना-अपना खाना, अपना-अपना कमाना

एक-दूसरे पर आश्रित न रहना। अपना अलग धंधा करना।

अपना-अपना घोलो, अपना-अपना पिओ

(1) स्वयं अपना प्रबंध करो; हम किसी की जिम्मेदारी नहीं ले सकते। अथवा

(2) अपनी विपत्ति स्वयं भुगतो।

(फैलन ने इसका अर्थ विस्तार से नहीं लिखा। वास्तव में इस कहावत का निकास इस कथा से है—किसी राजस्थानी को कुसुंभा यानी अफीम का घोल पीने की आदत पड़ गई थी। उसने अपने एक पड़ोसी को भी उसका चस्का लगा दिया। रोज उसे बुलाकर कुसुंभा पिलाता। उसके बाद जब देखा कि अफीम पूरी तरह इसके मुंह लग गई है, तो एक दिन उसके आने पर उसने घर के किवाड़ नहीं खोले और उपर्युक्त वाक्य कहा।)

अपना-अपना ढंग है

हर आदमी का काम करने का अपना तरीका होता है।

अपना-अपना दुखड़ा सब रोते हैं

सबको अपनी-अपनी पड़ी है, हरेक अपने दुखों की शिकायत करता है अथवा हरेक को कोई न कोई परेशानी है। दे.—अपनी-अपनी सब...।

अपना-अपना लहनिया है

अपना-अपना भाग्य, जिसे जो मिल जाए।

लहनिया=प्राप्य।

अपना-अपना ही है, पराया-पराया ही है

जहां अपना आदमी काम आ सकता है, वहां पराया नहीं।

अपना उल्लू कहीं नहीं गया

अर्थात हम अपना मतलब तो निकाल ही लेंगे; किसी न किसी को बेवकूफ बना लेंगे।

अपना कुत्ता बरजो, हम भीख से बाज आए
जब कोई किसी के पास सहायता के लिए जाए और वहां उल्टा मुसीबत में फंसता जान पड़े, तब क.।

अपना के जुरे ना, अनका के दानी, (भो.)
स्वयं खाने को नहीं दूसरे को दान करने को तैयार।

अपना के बिड़ी-बिड़ी, दूसरे के खीर पूड़ी, (पू.)
घर वालों को पूछें नहीं, बाहर वालों को खीर-पूड़ी खिलाएं।

अपना के रोटी, तीन गीत गौती, (स्त्रि.)
(1) जो खाने को दे उसी का गुणगान करने को तैयार।
(2) खाने को मिले, चाहे जो काम करा लो।

अपना कोई नहीं
संसार के सब नाते झूठे हैं। समय पर कोई काम नहीं आता।

अपना गू भोजन बराबर
(1) अपनी बुरी से बुरी वस्तु भी भली जान पड़ती है।
(2) अपना अवगुण भी गुण जान पड़ता है।

अपना घर अपना बाहर
यानी घर की चीज़ भी हमारी और बाहर की भी। स्वार्थी के लिए क.।

अपना घर दूर से सूझता है
(1) अपना मतलब सब देखते हैं। (2) समय पर घर की याद आती है।

अपना घर सत्तू ना, अनका घर पेड़ा
मुफ्तखोरी करना।

अपना घर संझौत ना, अनकर घर मसूर अइसन वाती
दूसरे के सहारे गुलछर्रे उड़ाना।
संझौत=संध्या-दीप।

अपना घर हग भर, दूसरे का घर बूकने का डर
अपने घर में चाहे जो करो, पर दूसरे के घर में संभल कर रहना चाहिए।

अपना टेंटर देखे नहीं, दूसरे की फुल्ली निहारे, (पू.)
स्वयं अपने बड़े दुर्गुण न देखकर दूसरों के छोटे दुर्गुण देखते फिरना।
टेंटर=रोग या चोट के कारण आंख के ढेल पर का उभरा हुआ मांस।
फुल्ली=आंख की पुतली पर पड़ जाने वाला सफेद दाग।

अपना ठीक ना, अनकर नीक ना, (पू.)
(1) जिसे न अपना काम पसंद आए और न दूसरे का।
(2) जो न स्वयं काम करना जाने, और न दूसरे के ही काम को पसंद करे।

अपना तोसा अपना भरोसा
अपनी जरूरतों को पूरा करने का सामान हमेशा अपने साथ रखना चाहिए। उनके लिए किसी दूसरे पर निर्भर रहना ठीक नहीं।
तोसा=(फा. तोशः) पाथेय, कलेवा, खाने-पीने का सामान।

अपना दीजे, दुश्मन कीजे
किसी को कुछ उधार देना उसे अपना दुश्मन बनाना है; क्योंकि मांगने से वह बुरा मानता है।

अपना निकाल, मुझे डालने दे
अपना ही स्वार्थ देखना।

अपना नैना मुझे दे, तू घूम फिर के देख
अपनी चीज मुझे दे-दे, और तू हवा खा !

अपना पूत, पराया टटींगर
अपना लड़का तो लड़का है और पराया उठाईगीरा ! अपनी वस्तु को सराहना।
टटींगर=फालतू आदमी, उठाईगीर।

अपना बिसमिल्ला, दूसरे का 'नौज़ बिल्ला', (मु.)
अपनों की ख़ैर मनाना और दूसरों का बुरा तकना।
बिसमिल्ला='बिस्मल्लाह रहमाननिर्रहीम' पद का पूर्वार्द्ध और संक्षिप्त पद, जिसका अर्थ होता है—ईश्वर के नाम से।
नौज़ बिल्ला=(मौ. नऊज़ बिल्लाह) ईश्वर हमारी रक्षा करे यानी ईश्वर हमें उससे बचाए।

अपना बैल कुल्हाड़ी नाथब
अपने बैल को हम कुल्हाड़ी से नाथेंगे। इसमें किसी का क्या?
अपनी वस्तु का हम चाहे जिस प्रकार उपयोग करें, तुम बीच में बोलने वाले कौन?
नाथना=जानवर की नाक में छेद करके रस्सी डालना।

अपना मरन, जगत की हंसी
दूसरों को विपत्ति में फंसा देखकर दुनिया हंसती है। संसार की रीति यही है।

अपना माल अपनी छाती तले
अपने माल की स्वयं हिफ़ाज़त करनी चाहिए।

अपना मीठ, अनकर तीत, (पू.)
अपनी मीठी, दूसरे की कड़वी।
अपनी वस्तु की सब सराहना करते हैं।

अपना रख, पराया चख
अपना माल न खाकर दूसरे का उड़ाना चाहिए। स्वार्थी की उक्ति।

अपना लाल गंवाय के, दर-दर मांगे भीख
अपनी मूल्यवान वस्तु खोकर दूसरों का मोहताज बनना। लाल=(1) पुत्र। (2) एक मूल्यवान रत्न। माणिक।

अपना लेखा क्या, पराया देना क्या?
हमें दूसरों से जो लेना है, उसकी चिंता क्या? वह तो मिलेगा ही। और पराया लेकर कहीं दिया भी जाता है। दूसरों का लेकर जो देना नहीं जानते, उनकी उक्ति अथवा उनके लिए प्रयोग करते हैं।

अपना वही, जो काम आवे
वक्त पर काम आने वाले को ही अपना समझना चाहिए।

अपना-सा मुंह लेकर रह जाना
झेंप जाना; कुछ जवाब देते न बनना; कायल हो जाना।

अपना सो नबेड़ा पराया सो धतकेड़ा
अपना काम निकाल लेना, पराए के लिए टरका देना। नबेड़ा=(निवेड़ा), सुलझाया।

अपना हाथ जगन्नाथ
अपना हाथ जगन्नाथ की तरह पवित्र है। मतलब, अपने हाथ का सब काम अच्छा होता है।

अपना हारा और महरी का मारा, कौन कहता है?
अपने हारने या बेइज्जत होने और स्त्री के हाथ से पिटने की बात कोई किसी से नहीं कहता। मतलब, अपनी कमज़ोरी सब छिपाते हैं।

अपना ही पैसा खोटा, तो परखने वाले का क्या दोष?
जब अपनी ही कोई चीज बुरी है, तो इसमें आलोचकों का क्या दोष? वे तो उसे बुरी बताएंगे ही।
(प्रायः उस समय कहते हैं, जब अपने घर के लड़के अथवा किसी अन्य व्यक्ति की गलती से दूसरों को शिकायत का मौका मिल जाता है।)

अपना ही माल जाए और आप ही चोर कहलाए
जब किसी दूसरे की गलती से किसी का नुकसान हो जाए और लोग उसे ही उसके लिए जिम्मेदार ठहराएं, तब क.।
(पुलिस वाले चोर का पता लगाने में असमर्थ रहने पर प्रायः चोरी की शिकायत करने वाले के सिर सारा दोष मढ़ते हैं कि इसमें तुम्हारी कुछ शरारत है। फैलन के अनुसार उपर्युक्त कहा. ऐसे मौकों पर ही प्रयुक्त होती है।)

अपना है ही ना, दूसरे के दानी, (पू.)
दे.—अपना के जुरे ना...।

अपनी अकल और पराई दौलत बड़ी मालूम होती है
हर आदमी अपने को दूसरों की अपेक्षा अधिक समझदार और दूसरों को अपनी अपेक्षा अधिक मालदार समझता है।

अपनी अक्ल के आगे किसी को समझता ही नहीं
यानी बड़ा समझदार बना फिरता है।

अपनी-अपनी खाल में सब मस्त हैं
(1) हर आदमी अपनी धुन में मस्त है।
(2) अपनी-अपनी जगह सब मौज करते हैं।

अपनी-अपनी चाल-ढाल है
अपना-अपना तर्ज-तरीका है।

अपनी-अपनी चाल है
हर जगह का अपना रीति-रिवाज होता है।

अपनी-अपनी तुनतुनी, अपना-अपना राग
अपनी धुन में मस्त।
पाठा.—अपनी-अपनी डफली...।

अपनी-अपनी सब गाते हैं
सब अपनी कहना चाहते हैं, कोई दूसरों की सुनना नहीं चाहता।

अपनी-अपनी समझ है
हर आदमी का सोचने का अपना तरीका होता है, जिसकी समझ में जैसा आ जाए।

अपनी असल पर आ गया
अपना असली रूप प्रकट कर दिया। जब कोई क्षुद्र व्यक्ति किसी ऊंचे पद पर पहुंच कर कोई हलका काम कर बैठे, तब क.।

अपनी इज्जत अपने हाथ है
अपने मान-सम्मान का ध्यान हमें स्वयं ही रखना चाहिए। किसी ओछे के मुंह न लगने के लिए क.।

अपनी ओर निबाहिए, बाकी की वह जाने
दूसरों के प्रति अपने कर्तव्य-पालन से हमें चूकना नहीं चाहिए। दूसरे क्या करते हैं, यह वे जानें।

अपनी करनी पार उतरनी
अपने कर्मों का फल हमें स्वयं ही भोगना पड़ता है। जैसा करेंगे, वैसा पाएंगे।

अपनी कोख का पूत नौसादर, (स्त्रि.)
अपनी चीज सबसे बढ़िया
[नौसादर (Salammoniac) सोना साफ करने के काम आता है और सर्वसाधारण की दृष्टि में एक कीमती चीज समझी जाती है।]

अपनी गरज़ को गधा चराते हैं
अपना पतलब साधने के लिए नीच कर्म भी करना पड़ता है।

(चेचक का प्रकोप होने पर गधे को उबले हुए चने खिलाने का रिवाज हिंदुओं में है।)

अपनी गरज़ को गधे को बाप बनाते हैं

अपना काम बनाने के लिए छोटे आदमी की भी ख़ुशामद करनी पड़ती है।

अपनी गरज़ बावली

गरज़मंद को अपने काम के सिवा और कुछ नहीं सूझता।

अपनी गली में कुत्ता शेर

अपने घर में सब जोर बताते हैं।

अपनी गुड़िया संवारो

लो, अपना काम देखो, मुझसे जितना बना, कर दिया। जब किसी से ऐसा कहने की जरूरत पड़े, तब क.।

(उक्त कहा. का प्रयोग तब होता है, जब लड़की के विवाह में उसका पिता लड़की के पहनने के लिए कपड़े और गहने आदि [illegible] को सौंपता है।)

अपनी चिलम भरने को मेरा झोंपड़ा जलाते हो

अपने थोड़े से लाभ के लिए दूसरे का कोई बहुत बड़ा नुकसान करने को तैयार हो जाना।

अपनी छाछ को कोई खट्टा नहीं कहता

अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं बताता।

अपनी जान सबको प्यारी है

कोई जानबूझकर मरना नहीं चाहता।

अपनी टांग उघारिए, आप ही लाजों मरिए, (स्त्रि.)

अपने घर का भेद बाहर खोलने से अपनी ही बदनामी होती है।

पाठा.—अपनी टांग उघारिए, आपहि मरिए लाज।

अपनी तो यह देह भी नहीं

यह शरीर भी अपना नहीं, तब अन्य किसी वस्तु की तो बात क्या?

अपनी दाढ़ी सब बुझाते हैं

सब अपनी फ़िक्र पहले करते हैं। पहले आप फिर बाप।

अपनी नींद सोना, अपनी नींद उठना

पूर्ण स्वतंत्र होना। किसी बात की कोई चिंता न होना।

अपनी पगड़ी अपने हाथ

अपनी इज्ज़त अपने हाथ होती है।

अपनी बला और के लिए

अपनी विपत्ति दूसरे के सिर मढ़ना।

अपनी बेटी को ऐसा मारूं कि पतोहू त्रास कर जाए

किसी नए या अपरिचित व्यक्ति पर अपना रोब जंमाने के लिए उसके सामने किसी दूसरे पर गुस्सा उतारकर अपने स्वभाव की तेजी प्रकट करना।

(कहावत का असली भाव यह है कि दूसरों पर अपना आतंक जमाने के लिए हम निकटस्थ व्यक्तियों पर तेजी-तर्रारी दिखाते हैं; क्योंकि वैसा करना आसान है। घर के लोग हमारी डांट-फटकार चुपचाप सह जो लेते हैं। थोड़े से शब्द-भेद के साथ इसी प्रकार की दूसरी कहावत है—अपने बच्चे को ऐसा मारूं कि पड़ोसन की छाती फटे।)

अपनी बेर को घोलमघाला, हमारी बेर को भूखमभाखा, (पू.)

स्वयं तो तर माल उड़ाए और हमें भूखा रखा। स्वार्थी के लिए क.।

अपनी मसलहत हर शख़्स ख़ूब जानता है

हर आदमी अपनी कमजोरियां या कठिनाइयां अच्छी तरह जानता है।

मसलहत=हालचाल, भेद।

अपनी राधा को याद करो

यानी जाओ, अपनी बिगड़ी ख़ुद संभालो। हम कुछ नहीं जानते।

अपनी लिट्टी पर सब आग रखते हैं

अपनी रोटी सब सेंकते हैं। यानी सब अपना स्वार्थ देखते हैं।

लिट्टी=एक प्रकार की मोटी रोटी।

अपनी हराई-मराई कोई नहीं भूलता

अपना भुगता सबको याद रहता है।

हराई-मराई=हार-पीट।

अपनी हाय और पर गंवाई

ऐसे आदमी को अपना दुखड़ा सुनाया, जिसने उस पर कोई ध्यान ही नहीं दिया।

अपने-अपने क़देह की सब ख़ैर मनाते हैं

सब अपना प्याला भरा रखना चाहते हैं। सब अपना स्वार्थ तकते हैं।

क़देह=(फा. क़दह) प्याला, भिक्षापात्र।

अपने-अपने ख्याल में सब मस्त हैं

हर आदमी अपने रंग में डूबा है।

अपने ऐब सब लीपते हैं

अपने दोष सब छिपाते हैं

अपने किए का क्या इलाज?

अपने कर्मों का फल स्वयं ही भुगतना पड़ता है। उसके लिए कोई क्या कर सकता है?

अपने किए को भोगो
जैसा किया वैसा भुगतो। (कोई उसमें क्या करे?)

अपने को ना, अंते खबला खबला बांटे, (पू. स्त्रि.)
घर के लोगों को भूखा रखकर बाहर वालों को खिलाना। अपनों की इज्जत न करना।
खबला=खोवा, अंजलि।

अपने घर के सब बादशाह हैं
(1) अपने घर में सब बड़े हैं।
(2) अपने घर के सब मालिक हैं, चाहे जो करें।

अपने घर में आता किसको बुरा लगता है
मुफ़्त का माल आ जाए, तो सब चाहते हैं।

अपने झोंपड़े की खैर मांगो
अपनी कुशल मनाओ, फिर दूसरे की फ़िक्र करना।

अपने ढिग पैसा तो पराया आसरा कैसा
अपने पास जब सुभीता है, तो दूसरों का आसरा क्यों ताका जाए?

अपने दिल की गवाही को सच जान
मन जैसा बोले, वैसा ही करना चाहिए।

अपने नैन गंवाय के दर-दर मांगे भीख
अपनी वस्तु खोकर दूसरों से मांगना। जो व्यक्ति अपनी किसी चीज की रक्षा नहीं कर सकता, उसे कष्ट भोगने पड़ते हैं।

अपने नैन मुझे दे, तू झुलाता फिर
दे.—अपना नैना मुझे दे...।

अपने पांव में आप ही कुल्हाड़ी मारते हैं
अपने हाथों अपना नुकसान करते हैं।

अपने पूत कुंवारे फिरें, पड़ोसी के फेरे
अपने लड़के के विवाह की फ़िक्र नहीं, पड़ोसियों का विवाह कराते फिरते हैं।
अपना काम छोड़कर परोपकार करते फिरना।
फेरे=परिक्रमा; विवाह।

अपने बच्चे को ऐसा मारूं, पड़ोसिन की छाती फट जाए
दे.—अपनी बेटी को...।

अपने बच्छे के दांत कोसों से मालूम देते हैं
अपनी चीज या अपने घर के आदमी की असलियत सब जानते हैं।

अपने बच्छे के दांत हर कोई जानता है
दे.ऊ.।

अपने बावलों रोइए, दूसरों के बावलों हंसिए
अपनी संतान बुरी होने पर आदमी रोता है, दूसरे की बुरी होने पर हंसता है। पराए दुख को हम दुख नहीं मानते।
बावला=पागल, मूर्ख।

अपने मन से जानिए, पराए मन की बात
दूसरे आपसे क्या चाहते हैं अथवा कैसे व्यवहार की आशा रखते हैं, इसे स्वयं अपने मन से समझ लेना चाहिए। दूसरों के साथ आप जैसा व्यवहार करेंगे, वैसा ही व्यवहार दूसरे आपके साथ करेंगे।

अपने मरे बगैर स्वर्ग नहीं दीखता
अपने हाथ से किए बिना काम नहीं होता। अपनी मुसीबत स्वयं भुगतनी पड़ती है।

अपने मियां दर-दरबार, अपने मियां चूल्हे द्वार
एक ही आदमी का सब तरह के छोटे-बड़े काम करना। अथवा अकेले आदमी की मुसीबत होती है, क्या-क्या करे; राजदरबार जाए या चूल्हा फूंके।

अपने मुंह धन्नाबाई
अपनी प्रशंसा आप करना।

अपने मुंह मियां मिट्ठू
दे. ऊ.।

अपने मुंह शादी मुबारक
स्वयं अपना ढोल पीटना।

अपने मुए राम नहीं
अपने को खपाए बिना कार्य सिद्ध नहीं होता। मरने पर फिर राम नहीं मिलते; जीवित रहते उनका स्मरण करो, यह अर्थ भी हो सकता है।

अपने लगे तो देह में, और के लगे तो भीत में
दूसरों के कष्ट की परवाह बहुत कम की जाती है।

अपने सुई भी न जाने दो, दूसरे के भाले घुसेड़ दो
दे. ऊ.।

अपने से बचे तो और को दें
स्वार्थी के लिए क.। अथवा पहले हम तो अपनी ज़रूरत पूरी कर लें, फिर दूसरों को दें।

अपनों की आड़ कोई नहीं उठाता
अपने सगे-संबंधियों का अहसान कोई नहीं लेना चाहता।

अफ़यूनी जनूनी
अफ़ीमची पागल होता है।

अफ़लातून के नाती (या साले) बने हैं
अपने को बड़ा अक्लमंद समझते हैं।

(अफ़लातून या प्लेटो प्राचीन यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक हुआ है।)

अफ़सोस ! दिल गड्ढे में

मनचाही न कर पाना।

अफ़ीमची तीन मंजिल में पहिचाना जाता है

अपनी सुस्त और लड़खड़ाती चाल से; वह उसे छिपा नहीं सकता।

अफ़ीम या खाए अमीर या खाए फ़क़ीर

अफ़ीम महंगी होती है। साधारण आदमी खा नहीं सकते। अमीर खरीदकर और ग़रीब मांगकर खा सकते हैं।

अफ़ीमी मिठास बड़ी रग़बत से खाता है

अफ़ीमची को मिठाई बहुत पसंद होती है।

रग़बत=रुचि, आग्रह।

अब की अब के साथ, जब की जब के साथ

आगे जैसा होगा देखा जाएगा, इस समय तो परिस्थिति के अनुसार ही हमें काम करना होगा।

अब की छई की निराली बातें

वर्तमान पीढ़ी के छोकरों की बातें समझ में नहीं आतीं।

छई=पीढ़ी।

अब की बचे तो सब घर रचे

इस बार मुसीबत टल जाए तो बड़ी बात समझिए, अर्थात बचना मुश्किल है।

अब के मुड़हें हो राजा? (पू.)

हे राजा ! तुम्हारे बिना अब कौन लोगों के बाल बनाएगा? जब कोई आदमी यह दंभ करे कि उसके बिना काम चल ही नहीं सकता, तब क.।

(कथा है कि किसी एक नाई के मर जाने पर उसकी स्त्री छाती पीट-पीटकर रोने और उक्त प्रकार से कहने लगी कि 'अब के मुड़हें हो राजा?')

अब के साहे हम ना ब्याहे, फिर पड़े वह साहे, (हिं.)

अब की सहालग में अगर हमारा विवाह न हुआ, तो उस सहालग को धिक्कार है।

किसी ऐसे व्यक्ति की उक्ति जिसका विवाह नहीं हो रहा है।

अब जीने का कुछ स्वाद नहीं

जिंदगी में अब कुछ मजा नहीं रह गया।

अब तो पत्थर के नीचे हाथ दबा है

ऐसी संकटापन्न स्थिति सामने आ जाना, जिसके संबंध में यकायक कुछ किया न जा सके। जैसे अपने किसी मित्र या बड़े आदमी को कोई चीज उधार दे दी जाए और फिर वापस न आने पर उससे मांगी न जा सके।

अब तो रुपए की जात है

अब तो रुपया ही सब-कुछ है।

अब पछताए का होत है, जब चिड़ियां चुग गईं खेत

अवसर के निकल जाने पर बाद में पछताना व्यर्थ है।

(आछे दिन पाछे गए, हरि सो किया न हेत। अब पछताए होत का, (जब) चिड़ियां चुग गई खेत।)

अब भी मेरा मुर्दा तेरे जिंदा पर भारी है, (मु.)

अपनी बिगड़ी हुई हालत में भी मैं हर बात में तुमसे बड़ा हूं।

अबरा की जोरू, सब की भौजाई, (पू.)

ग़रीब या कमजोर की औरत से सब हंसी करते हैं। कमजोर से सब लाभ उठते हैं।

भौजाई=बड़े भाई की स्त्री को भावज कहते हैं; उससे हंसी-दिल्लगी करने का भारत में आम रिवाज है।

अबरे के भैंस बियाइल, सगरो गांव मटिया ले धाइल, (भो.)

किसी कमज़ोर आदमी की भैंस ब्याई तो सारा गांव मटकी लेकर दौड़ पड़ा दूध लेने के लिए। मूर्ख से सब लाभ उठाना चाहते हैं। अथवा दुर्बल जानकर सब सताते हैं।

बियाना=बच्चा देना।

अब सतवंती होकर बैठी, लूट लिया संसार, (स्त्रि.)

आजन्म बुरे कर्म किए और अब साधु-संत बन गए।

पाखंडी के लिए क.।

अब से आए, घर से आए

अभी आ रहे हैं और घर से आ रहे हैं।

(ऐसे व्यक्ति द्वारा कहावत का प्रयोग होता है, जो परदेस से आ रहा हो, जहां उसे कोई कष्ट न हुआ हो।)

अभी एक बूंट की दो दाल नहीं हुई हैं

अभी मामला तै नहीं हुआ। अथवा इसका यह अर्थ भी लगाया जा सकता है कि अभी सब मिलकर ही रहते हैं, अलग नहीं हुए।

बूंट=चना।

पाठा.—अभी तक चने की...।

अभी कै दिन कै रात

उस व्यक्ति के लिए कहते हैं जो अधिकार पाकर इतराने लगता है और समझता है कि सदैव मेरे ऐसे ही दिन रहेंगे। उसके लिए भी क., जो किसी वस्तु का नियमानुसार अधिकारी बनने के पहले ही उस पर अपना हक़ जताने लगता है।

अभी तो तुम मां का दूध पीते हो
अभी तो तुम छोकरे हो, क्या समझो?

अभी तो तुम्हारे दूध के दांत भी नहीं टूटे हैं
जो इतनी बढ़चढ़ कर बात करते हो।

अभी तो होठों का दूध भी नहीं सूखा है
लड़के होकर वड़ों की तरह बात मत करो।

अभी दिल्ली दूर है
अभी तो बहुत रास्ता तै करना है। बहुत काम करने को पड़ा है।
(फा.—हनोज दिल्ली दूर अस्त।)

अभी सेर में पौनी भी नहीं कती है
अर्थात् अभी तो बहुत कुछ करना है
सेर में=सेर भर रूई में।
पौनी=पावभर, एक चौथाई।

अमानत में खयानत तो जमीन भी नहीं करती, (प्र. पा.)
धरोहर में बेईमानी तो धरती भी नहीं करती। उसमें जो कुछ गाड़कर रख दिया जाता है, वह ज्यों का त्यों मिल जाता है।

अमानी अवादानी, इजारा उजाड़ा
अमानी और इजारा दोनों ब्रिटिश शासन काल में लगान वसूली की दो पद्धतियां थीं। अमानी की जमीन की मालिक सरकार होती थी और वह किसान से उसका सीधा लगान वसूल करती थी। इसके विपरीत इजारे की जमीन पर मालिक जमींदार होता था और उसका लगान जमींदार वसूल करता था। उसी से कहावत का तात्पर्य यह है कि सरकार को लगान देने में किसान को सुविधा और जमींदार को देने में बहुत असुविधा होती है।

अमीर का उगाल गरीब का आधार
अमीर जिस वस्तु को तुच्छ समझकर फेंक देता है, ग़रीब का उससे ही बहुत काम चलता है।

अमीर को जान प्यारी फ़कीर को एकदम भारी
क्योंकि फ़कीर कष्ट में रहता है।

अमीर ने पादा, सेहत हुई; गरीब ने पादा, बेअदबी हुई
बड़े आदमियों के अवगुण भी गुण बन जाते हैं, किंतु उन्हीं अवगुणों के लिए गरीब की आलोचना की जाती है।

अय, तेरी कुदरत
(हे ईश्वर) तेरी विचित्र लीला।

अय, मेरे अगले, मनमाने सो कर ले, (स्त्रि.)
ऐसे व्यक्ति का उद्गार जो किसी के द्वारा बहुत सताया जा रहा हो। बहुधा अपने किसी अत्याचारी पति से ऊब कर स्त्री ऐसा कहती है।

अयांरा चेह बयां? (फा.)
प्रत्यक्ष का क्या वर्णन करना।

अरका नाइन, बांस की नहरनी, (पू.)
(नहरनी लोहे की होती है बांसी की नहीं)
नई नाइन, और बांस की नहरनी।
जब कोई नौसिखिया अपनी होशियारी दिखाने के लिए बिल्कुल ही अजीब ढंग से काम करे, तब क.।

अरज़ां बइल्लत, गरां ब हिकमत, (फा.)
सस्ती चीज हमेशा कष्टदायक होती है और महंगी आराम देने वाली।
तुल.—महंगा रोवे एक बार सस्ता रोवे वार-बार।

अरमान भारी घोंघा
घोंघे को बड़ा घमंड।
(छोटे आदमी का अभिमान करना।)

अरहर की टट्टी गुजराती ताला
एक बेजोड़ काम। अरहर की टट्टी में जिसे आसानी से तोड़ा जा सकता है, कोई एक मजबूत ताला लगाना तक मूर्खता है।
(पंजाब का गुजरात नामक स्थान किसी समय तालों के लिए प्रसिद्ध रहा है।)

अलकब्ज़ ओ दलील उलमुल्क, (अ.)
किसी चीज पर कब्जे का मतलव ही है कि वह हमारी है।

अलख पुरुख की माया, कहीं धूप कहीं छाया
ईश्वर की लीला जानी नहीं जाती, कहीं धूप है तो कहीं छाया।

अलखामोशी नीम रज़ा
चुप रहना आधी रज़ामंदी है।
(सं.—मौनं सम्मति लक्षणम्।)

अल गई, बल गई, जलवे के वक्त टल गई, (मु. स्त्रि.)
प्यार और खुशामद की बातें करती है, लेकिन मौके पर गायब हो जाती है।
ऐसा व्यक्ति जो ज़रूरत पर काम न आए।
जलवा=(अ. जल्व) जलसा, मुसलमानों में वधू का पहले-पहल अपने पति के सामने मुंह खोलकर होना।

अलफरवः ख़्वाहमख़्वाह मर्द-ए-आदमी, (मु.)
लंबा-तगड़ा आदमी देखने में हिम्मत वाला तो जान ही पड़ता है। (फिर चाहे वह वैसा न हो।)

अलबल ख़ुदाबल, (मु.)
ईश्वर का बल ही सबसे बड़ा बल है।

अलवेली ने पकाई खीर, दूध की जगह डाला नीर, (स्त्रि.)
किसी अनोखी औरत ने खीर बनाई, और उसमें दूध की जगह पानी डाल दिया। ऐसी स्त्री के लिए कहा जाता है, जो होशियार तो बहुत बनती हो, पर करना-धरना कुछ न जानती हो।

अला लूं, बला लूं, सहनक सरका लूं, (मु. स्त्रि.)
प्यार करूं, खुशामद करूं और भोजन का थाल अपने आगे खिसका लूं।
मीठी बातें करके अपना उल्लू सीधा करना। कपट भरा व्यवहार करना।
सहनक=वह थाल जिसमें मुसलमानों के यहां सुहागिनों को भोजन कराया जाता है।

अलिफ़ अल्ला, (मु.)
ईश्वर अलिफ है। यानी ईश्वर एक अथवा महान है।
(अलिफ फारसी वर्णमाला का प्रथम अक्षर है और हमेशा अलग लिखा जाता है।)

अलिफ़ के नाम खुटका भी नहीं जानते
अर्थात निरे मूर्ख या अनपढ़ हैं।
खुटका=छोटी लाठी। अक्षर में लगायी जाने वाली खड़ी लकीर।

अलिफ़ के नाम वे नहीं जानते
वे पढ़े-लिखे हैं।

अलील की राय अलील
वीमार की राय मानने योग्य नहीं होती, अथवा जिसका शरीर स्वस्थ नहीं, उसके विचार भी स्वस्थ नहीं होते।

अल्लाह-अल्लाह करो और ख़ैर मांगो, (मु.)
वस अव तो ईश्वर का नाम लो और कुशल मनाओ।

अल्लाह अल्लाह ख़ैर सल्लाह, (मु.)
ईश्वर की बड़ी कृपा जो सव काम खैरियत से हुआ।

अल्लाह करे बांका पकड़ा जाए, लाल खां के लड़के से जकड़ा जाए, (मु. स्त्रि.)
एक तरह की गाली। किसी दुष्ट को कोसना।
वांका=गुंडा।

अल्लाह करे सो हो
ईश्वर को जो मंजूर होता है, वही होता है।

अल्लाह का दिया सब-कुछ
ईश्वर ने जो दिया, वही वहुत है। अथवा जो कुछ है वह सव ईश्वर का दिया है।

अल्लाह का दिया सिर पर
ईश्वर जो कुछ दे, सहर्ष स्वीकार है। इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि ईश्वर का दीपक अर्थात चांद हमारे सिर पर है, जो हमें रात में प्रकाश देता है।

अल्लाह का नाम लो
ईश्वर का भय खाओ।

अल्लाह का नाम सच्चा, सब झूठा है जुतान
ईश्वर का नाम ही इस संसार में सच्चा है और सब प्रपंच है।
जुतान=भान।

अल्लाह दे, अल्लाह दिलावे, बंदा दे मुराद पावे
देता दिलाता तो ईश्वर है, मनुष्य जब कुछ देता है, तो ईश्वर उसकी मुराद पूरी करता है।
(फकीरों की सदा)

अल्लाह दे, बंदा पावे
देता ईश्वर है, मनुष्य अपने सत्कर्मों का फल पाता है।

अल्लाह दो सींग देवे, तो वह भी क़बूल हैं
ईश्वर जो भी कष्ट सहावे सहने को तैयार हैं।
(परेशानियों से ऊबे हुए व्यक्ति की उक्ति)

अल्लाह यार है तो बेड़ा पार है
ईश्वर की कृपा हो तो सब काम बन जाता है।

अल्लाह रे ! दीदे की सफाई
यानी कैसी आंख मारती है। निर्लज्ज स्त्री के लिए क.।
दीदा=आंख

अल्लाह रे ! मैं !
अपनी पीठ आप ठोकना। अभिमान से फूलना।

अल्लाह ही अल्लाह है
जहां देखो, वहां ईश्वर ही ईश्वर है।

अल्लाह ही की चोरी नहीं तो बंदे का क्या डर है
जव ईश्वर सब जानता है, उससे कोई बात छिपी नहीं, तब आदमी से क्या डरना?
(पिला मय आशकारा हमको किसकी साकिया चोरी
ख़ुदा की जव नहीं चोरी तो फिर बंदे की क्या चोरी।
—जौक)

अल्लाह है तो क्या डर है?
ईश्वर जव रक्षक है तो डर किस बात का?

अल्लाहो अकवर
ईश्वर महान है।

अव्वल खेश, वाद हू दरवेश, (फा.)
पहले अपने को, वाद में फ़कीर को।

अपनी फ़िक्र पहले। अपने आप फिर बाप।

अव्वल तआम, बादहू कलाम, (फा.)

पहले भोजन फिर बात। भोजन मुख्य है, वह पहले कर लेना चाहिए।

अव्वल मरना, आखिर मरना, फिर मरने से क्या है डरना?

हर हालत में जब मरना ही है, तब मृत्यु का भय क्या?

अशरफियां लुटें और कोयलों पर छाप

अशर्फियां ख़र्च हों और कोयले की हिफ़ाजत की जाए। अनावश्यक सावधानी बरतने पर कहते हैं।

अशराफ के लड़के बिगड़ते हैं तो भड़वे बनते हैं

भले आदमियों के लड़के कुसंग में पड़कर जब बिगड़ते हैं तो फिर किसी काम के नहीं रहते।

असबाब में असबाब, एक चंग एक रबाब

बस हमारा कुल जमा यही सामान है—एक चंग और एक रबाब।

(किसी फक्कड़ कला-प्रेमी की उक्ति।)

चंग=डफ की तरह का मंजीरा लगा हुआ एक बाजा।

रबाब=सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।

असल असल है, नकल नकल है

नकली चीज असली की बराबरी नहीं कर सकती।

असल कहे सो दाढ़ीजार, (पू.)

जो सच कहे वही बुरा।

दाढ़ीजार=एक गाली।

असल के असल होते हैं

अच्छे कुल में अच्छे ही पैदा होते हैं।

असल से खता नहीं, कम असल से वफा नहीं

जो वास्तव में उच्च कुल का है, उससे कभी धोखा नहीं होता। नीच से सचाई और ईमानदारी की आशा नहीं करनी चाहिए।

असील की मुर्गी टके-टके

अच्छी चीज की कद्र न होना।

असील=मुर्गी की एक बढ़िया जाति।

अस्तबल की बला बंदर के सिर

किसी का दोष किसी के सिर मढ़ा जाना।

अस्तबल=घुड़साल।

तबेले की बला भी कहते हैं।

अस्सी की आमद चौरासी का ख़र्च

आमदनी से खर्च ज्यादा।

अस्सी बरस की उमर, नाम मियां मासूम

गुण, धर्म के विरुद्ध नाम।

(मासूम छोटे बच्चे को कहते हैं।)

अस्सी लस्सी

अस्सी बरस का होने पर आदमी बिल्कुल ढीला-ढाला हो जाता है।

अहमक से पड़ी बात, काढ़ो ऐंठा तोड़ो दांत

मूर्ख को डंडे से ही समझाया जा सकता है।

अहमद की दाढ़ी बड़ी या मुहम्मद की ?

किसी की भी बड़ी हो, हमें क्या मतलब?

(व्यर्थ की बात)

अहमद की पगड़ी मुहम्मद के सिर

बेतुका काम। अथवा एक की हानि करके दूसरे को लाभ पहुंचाना।

अहीर का क्या जजमान और लपसी का क्या पकवान

लपसी जैसे कोई बहुत अच्छा पकवान नहीं, अहीर भी वैसे ही कोई बहुत अच्छा जजमान नहीं; क्योंकि वह अच्छी दक्षिणा नहीं दे सकता।

अहीर का पेट गहिर, बाम्हन का पेट मदार

अहीर का पेट गड्ढा और ब्राह्मण का ढोल होता है।

(मतलब दोनों अधिक खाते हैं।)

अहीर की दहेंड़ी मटिया सुर्खरू

अहीर की मथानी और मटकी हमेशा चिकनी-चुपड़ी रहती है; क्योंकि घी-दूध के संपर्क में रहती है।

(ऐसे स्थान से संबद्ध व्यक्ति के लिए क., जहां उसे खूब खाने-पीने को मिलता हो।)

अहीर गाड़ी जात गाड़ी, नाई गाड़ी कुजात गाड़ी

अहीर की गाड़ी ही सच्ची गाड़ी है, नाई की गाड़ी गाड़ी नहीं; क्योंकि गाड़ी चलाना अहीर का ही काम है, नाई का नहीं।

जिसका जो काम है वह उसे ही शोभा देता है।

अहीर देख गड़रिया मस्ताना

अहीर को पिए देखकर गड़रिए ने भी गहरी चढ़ा ली। दूसरों का ग़लत अनुसरण करना।

(अहीर एक पशुपालक जाति है और गड़रिए भेड़ें पालते हैं उनकी आर्थिक स्थिति अहीरों से अच्छी नहीं होती।)

अहीर से जब गुन निकले जब बालू से घी

बालू से जिस तरह घी नहीं मिल सकता, उसी तरह अहीर से उसके व्यवसाय के भेद नहीं जाने जा सकते।

आ

आंख एकौ नहीं कजरौटी दस ठाई

आंख एक भी नहीं, और कजरौटी रख छोड़ी हैं दस। झूठा आडंबर दिखाना।

कजरौटा=काजल रखने की डिबिया।

ठाई=ठौर, संख्यावाची शब्द।

तुल.—आंख नहीं पर काजर पारे।

आंख ओझल पहाड़ ओझल

आंख की ओट होने से तो पहाड़ भी नहीं दिखाई देता। किसी को तभी तक हमारा ध्यान रहता है, जब तक उसकी नजर के सामने रहो।

(इसका एक अन्य रूप है—सींक ओट हुए, पहाड़ ओट हुए।

मराठी में भी है—काडी आड गेला तो पर्वता आड गेला।)

आंख का अंधा, गांठ का पूरा

ऐसा धनी पर मूर्ख व्यक्ति, जिसका पैसा आसानी से उड़ाया जा सके।

आंख का पानी ढल गया

लाज-शर्म खो बैठे।

आंख की बदी भौंह के सामने

बुरी नीयत छिपती नहीं, चेहरे पर प्रकट हो जाती है।

आंख के आगे नाक, सूझे क्या खाक

(व्यंग्य में) आंख पर तो परदा पड़ा है, दिखाई क्या दे?

(एक कहानी है कि किसी समय एक नकटे ने अपना संप्रदाय बढ़ाने के उद्देश्य से कहना शुरू कर दिया कि मुझे ईश्वर के दर्शन होते हैं। लोग जब आपत्ति उठाते कि भाई हमारे भी तो आंखें है, ईश्वर हमें क्यों नहीं दिखाई देता, तो वह जवाब देता 'तुम्हारी आंख के आगे नाक जो लगी है।' इस पर लोगों ने अपनी नाक कटवानी शुरू कर दी। पर उन्हें ईश्वर के दर्शन नहीं हुए। अंत में अपने को मूर्ख बना देख उन्होंने भी यही कहना प्रारंभ कर दिया कि नाक की वजह से हमें ईश्वर नहीं दिखाई देता है। और इस प्रकार नकटों की जमात बढ़ने लगी।)

आंख गड्ढ, नाक भद्द, सोहनी नाम

नाम अच्छा, हर रूप-रंग उसके विपरीत।

आंख चौपट, अंधेरे नफ़रत

आंख है ही नहीं, और कहते हैं—हमें अंधेरे से नफ़रत है। *(अपनी झूठी विशेषता दिखाकर शान बघारना।)*

आंख न दीदा, काढ़े कशीदा, (स्त्रि.)

काम करने का शऊर नहीं, फिर भी करने का शौक।

कशीदा काढ़ना=कपड़े पर बेल-बूटे बनाना।

आंख न नाक, बन्नी चांद-सी

शक्ल-सूरत तो भद्दी फिर भी चटक-मटक से रहना।

आंख फड़के दहिनी, मैया मिले कि बहिनी,
आंख फड़के बाई, भैया मिलें कि साईं

दाहिनी आंख के फड़कने पर मां या बहिन से और बाई के फड़कने पर भाई या पति से भेंट होती है।

आंख फूटी पीर गई

(वेदना से) आंख फूटी तो फूटी पर कष्ट से छुटकारा तो मिला। अच्छी वस्तु कष्टदायक हो तो उसका जाना ही अच्छा। किसी हमेशा की झंझट की वस्तु के नष्ट हो जाने पर क.।

आंख फूटेगी तो क्या भौंह से देखेंगे

जिस पर सब कुछ निर्भर है, अथवा जो मुख्य वस्तु है, जब वही नहीं रहेगी, तब काम कैसे चलेगा? प्रायः ऐसी स्त्री

को क., जो अपने पति का सदा बुरा मनाया करती है।

आंख फेरे तोते की-सी, बात करै मैना की-सी

बात करने में मीठा, पर बेमुरौवत।

आंख बची माल दोस्तों का

जहां थोड़ी भी असावधानी से चोरी या नुकसान का डर हो, वहां क. कि भाई अपनी चीज की हिफाजत रखना, वरन यह जगह ऐसी है कि जरा नजर बची और माल गायब।

(आंख बची और नगरी लुटी भी कहते हैं।)

आंख में मैल और इसमें मैल नहीं

बहुत ही स्वच्छ वस्तु। सच्चरित्र के लिए क.।

आंख में लोर, दांत निपोर

सिलबिला आदमी।

आंख है जब तक तो खुश आती है भौंह।
आंख ही फूटी तो कब भाती है भौंह ?

आंखें जब तक बनी रहती हैं, तभी तक भौंह भी अच्छी लगती हैं। किंतु आंखों के न रहने पर भौंह अपना महत्व खो बैठती हैं।

(आशय यह कि जिस व्यक्ति को हम प्यार करते हैं, उससे संबंधित व्यक्ति हमें उसके जीवनकाल तक ही अच्छे लगते हैं। उसके मरने पर उसके मित्र या सगे-संबंधी फिर हमें नहीं सुहाते। जैसे पत्नी के मर जाने से साले अथवा लड़की के न रहने पर दामाद से फिर हमें कोई मतलब नहीं रहता।)

आंखें तो खुली रह गईं और मर गई बकरी

अप्रत्याशित रूप से किसी घटना का घटित हो जाना।

(बकरे की गर्दन को एक ही झटके में छुरी से अलग करने पर उसकी आंखें खुली रहती हैं। उसी से कहा. बनी।)

आंखें हुईं चार तो मन में आया प्यार।
आंखें हुई ओट तो जी में आया खोट।

मुंह देखे की प्रीति।

आंखें हैं या भैंस के चूतड़

जिसे सामने की चीज न दिखाई दे उससे हंसी में क.।

आंखों का देखा दूर कर, भले मानस का कहना कर

दुराग्रह को दूर करके दूसरे भले आदमी की बात माननी चाहिए।

आंखों का नूर, दिल की ठंडक

प्रिय जन के लिए क.।

आंखों का काजल चुराता है

ऐसा चालाक या धूर्त्त है।

आंखों का तारा

बहुत प्यारी वस्तु। प्रायः लड़के के लिए प्र.।

आंखों का तेल निकालना

आंखों से बहुत काम लेना। बहुत कंजूसी करने पर भी कह सकते हैं।

(नोट—यह कहावत मुख्य रूप से चालाक के लिए ही प्रयुक्त होती है अन्यथा वह अपना मजा ही खो बैठती है। गुजराती में यह इसी अर्थ में प्रयुक्त होती है।)

आंखों की सूइयां निकालना बाकी है

बस थोड़ा काम बाकी है।

(लोक-विश्वास है कि यदि आटे की मूर्ति बनाकर उसमें शत्रु का नाम ले-लेकर सूइयां चुभो दी जाएं, और उसके मरने की कामना की जाए, और फिर उस मूर्ति को मरघट में रख दिया जाए, तो उस शत्रु के सर्वांग में उसी तरह की सूइयां चुभ जाएंगी और वह तड़प-तड़प कर मर जाएगा। पर अगर कोई तरकीब जानता हो, तो मंत्र द्वारा सूइयों को एक-एक करके अलग करके उसे जीवित भी किया जा सकता है। इस पर एक कथा भी है कि किसी ने उपर्युक्त रीति से एक व्यक्ति को मार डाला। उस मृत पुरुष की स्त्री जादू जानती थी। पति को जीवित करने के लिए उसने एक-एक करके उसके शरीर की सारी सूइयां निकाल डालीं। किंतु जब केवल आंखों की सूइयां निकालनी शेष रहीं, तब कार्यवश उसे बाहर उठकर जाना पड़ा। उसी समय उसकी नौकरानी वहां पहुंच गई। उसने आंखों की सूइयां निकाल डालीं। ऐसा करते ही वह मनुष्य जीवित हो गया। यह समझ कर कि इस नौकरानी ने ही मेरी प्राणरक्षा की है, वह उस पर बहुत प्रसन्न हुआ और औरत को अलग करके उसके साथ विवाह कर लिया।)

आंखों के अंधे नाम नैनसुख

नाम के विपरीत गुण।

आंखों के अंधे नाम रोशन

दे.ऊ.।

आंखों देखा भट पड़े, मैंने कानों सुना था

आंखों देखी बातों पर विश्वास न करने वाले से व्यंग्य में क.।

भट पड़े=भट्टी में यानी भाड़ में जाए।

आंखों देखी मानूं, कानों सुनी न मानूं

आंखों देखी बात पर ही विश्वास किया जा सकता है। कानों से सुनी हुई पर नहीं।

आंखों पर ठीकरी रखना
जानबूझकर अनजान बनना।
आंखों पर पलकों का बोझ नहीं होता
(1) अपने घर का आदमी किसी को भारी मालूम नहीं देता।
(2) बड़ों को छोटों का भरण-पोषण नहीं अखरता
आंखों में खाक
गाली देना, कोसना।
धोखा देना।
आंखों में घर करता है
प्यारा लगता है।
आंखों में चर्बी छाई है
अपना भला-बुरा न देख सकने वाले के लिए क.।
बहुत अहंकारी से भी क.।
आंखों में सरसों फूलना
मदमस्त होना। किसी को कुछ न समझना।
आंखों वालों आंखयां बड़ी न्यामत हैं
अंधे भिखारियों की टेर।
आंखों सुख, कलेजे ठंडक, (स्त्रि.)
बहुत प्रिय वस्तु। पुत्रादि के लिए कं.।
आंखों से सुखी नाम हाफ़िज जी
भगवान ने आंखें दीं, फिर भी नाम हाफ़िज।
गलत नाम।
(सम्मानार्थ—मुसलमानों में अंधे को हाफ़िज कहते हैं।)
आंत भारी तो माथ भारी
पेट ठीक न रहने से सिर भारी रहता है।
आंता-तीता, दांता नोन, पेट भरन को तीन ही कोन।
आंखें पानी, काने तेल, कहे घाघ बैदाई गेल।
ताजा खाने, दांतों में नमक लगाने, पेट को एक-चौथाई खाली रखने, आंखों में शीतल जल के छींटे देने, और कानों में तेल डालते रहने से, घाघ कहते हैं, वैद्य की जरूरत नहीं पड़ती।
आंधर कूकर बतास भूंके, (पू.)
अंधा कुत्ता हवा की आहट पाकर ही भय ेत हो उठता है। इसी प्रकार की दूसरी कहावत है—'कनवा बैल बयारे सनके'।
आंधर कूटे, बहिर कूटे, चावल से काम
आदमी कैसा ही हो, हमें क्या? काम होना चाहिए।
आंधर के गाय बयाइल, टहरी लेके दौरलन, (भो.)
अंधे की गाय ने बच्चा दिया तो लोग मटकी लेकर दौड़े दूध के लिए।
सीधे की सिधाई से सब लाभ उठाना चाहते हैं।
आंधी आवे बैठ जाए, पानी आवै भाग जाए
आंधी आने पर बैठ जाना चाहिए। पानी आने पर भाग जाना चाहिए। मतलब यह कि आंधी में दौड़ना नहीं चाहिए, और पानी में एक जगह खड़े होकर भींगना नहीं चाहिए।
आंधी के आगे बेने की बतास
आंधी में पंखा झलना व्यर्थ है।
तुल.—भूतों के आगे लोट।
आंधी के आम
अकस्मात हाथ लगी वस्तु। सस्ती वस्तु।
आंसू एक नहीं, कलेजा टूक-टूक
झूठी सहानुभूति दिखाना।
आई गई पार पड़ी
किसी तरह काम पूरा हुआ। अथवा जो होना था हो चुका, उसकी चिंता व्यर्थ।
आई तो रमाई, नहीं तो फ़कत चारपाई
मजा-मौज का साधन मिल गया तो ठीक, नहीं तो चिंता नहीं।
आई तो रोजी, नहीं तो रोज़ा, (मु.)
मिला तो खा लिया, नहीं तो रोज़े का व्रत समझो। किसी फक्कड़ की कहावत।
रोज़ा=वह धार्मिक उपवास जो मुसलमान रमज़ान के दिनों में करते हैं।
आई न गई, कौन नाते बहिन, (पू. स्त्रि.)
ज़बर्दस्ती रिश्ता निकालना।
आई न गई, कौले लग ग्याभिन भई, (स्त्रि.)
कहीं आई गई नहीं, तो क्या कोने से लगकर गर्भवती हुई? जब कोई अपने को बहुत भोलाभाला या निर्दोष साबित करने की कोशिश करे, तब कं.।
आई न गई, छो-छो घर ही में रही, (मु. स्त्रि.)
जो कभी घर से बाहर न निकली हो, ऐसी स्त्री के प्रति उपेक्षा में कही गई बात।
आई बहू आया काम, गई बहू गया काम
(1) घर में जितने आदमी बढ़ते हैं, उतना ही काम बढ़ जाता है। (2) बहू आई नहीं कि काम बढ़ जाता है, क्योंकि घर का छोटा-बड़ा सब काम उसी के मत्थे मढ़ा जाता है।

आई बात का रखना, कुंद ज़हन होना
(1) मन के उठे हुए विचार को प्रकट न करना मूर्खता का लक्षण है। (2) सामने आई हुई बात को निपटा देना चाहिए।

आई बात रुकती नहीं
मन में उठा विचार प्रकट होकर ही रहता है।

आई माई को काजर नहीं, बिलाई को भर मांग
मां के लिए काजल नहीं और बिल्ली के लिए मांग भर सेंदुर।
घर के लोगों को छोड़कर फालतू आदमियों का सत्कार करना।

आई मौज फ़क़ीर की, दिया झोंपड़ा फूंक
विरक्त या फक्कड़ साधु के लिए कहते हैं कि मन में आया तो झोंपड़ा फूंककर चलता बनता है।

आई है जान के साथ, जाएगी जनाजे के साथ, (मु.)
आदत से मतलब है जो जिंदगी में छूटती नहीं।

आओ जाओ घर तुम्हारा, खाना मांगो दुश्मन हमारा
झूठा सत्कार करना।

आओ ढुगाना चुटकी खेलें, बैठे से बेगार भली
आओ पड़ोसी चुटकी बजाएं, बैठे रहने से तो वेगार अच्छी। व्यर्थ में समय नष्ट करने वाले से व्यंग्य में क.।

आओ पीर, घर का भी ले जाओ
जब कहीं से कुछ मिलने की आशा हो और वह न मिले, बल्कि गांठ का भी चला जाए, तब क.।

आओ पूत सुलच्छने, घर ही का ले जाव
अपने किसी दुर्व्यसनी पुत्र के प्रति पिता का उद्‌गार।

आकास बांधे, पाताल बांधे, घर की टट्टी खुली
दुनिया का प्रबंध करते फिरें, पर घर का इंतजाम न कर सकें।

आकिल को एक हर्फ बहुत है
अथवा समझदार थोड़े में बात समझ जाता है।

आक़िलां पैरवी-ए, नुक़्त न कुनंद
पढ़े-लिखे नुक़्तों की परवाह नहीं करते, वे विना नुक़्तों के भी पढ़ लेते हैं *(फारसी लिपि में घसीट लिखते समय नुक़्ता लगाना छोड़ देते हैं,। फारसी लिपि में नुक़्ता एक ख़ास चीज है।)*

आख थू ! खट्टे हैं
प्रयास करने पर जब कोई वस्तु न मिले तो मन को समझाने के लिए उसे बुरा बताने लगना।
(अंग्रे.—Grapes are sour=अंगूर खट्टे हैं।)

आखिर अपनी जात पर आ गया
जब कोई छोटा आदमी ऊंचे पद पर पहुंचकर तुच्छ काम कर बैठता है, तब क.।

आखिर मरोगे, रुपया जोड़-जोड़ क्या करोगे?
पैसे का सदुपयोग करना चाहिए।

आग और पानी को कम न समझे
आग और बाढ़ के पानी की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए; उनसे सतर्क रहे।

आग और फूस का बैर है, (नी.वा.)
कुसंग से बचने के लिए क.।

आग और बैरी को कम न समझो
आग और शत्रु; इनसे सतर्क रहे।

'आग' कहते मुंह नहीं जलता
किसी वस्तु का नाम लेने मात्र से उसका प्रभाव प्रकट नहीं हो जाता।

आग का जला आग ही से अच्छा होता है
कभी-कभी जिस वस्तु के सेवन से कष्ट हो, उसी से फिर आराम भी मिलता है।
(सं—उष्मुष्णेन शीतलं समः समं शमयति।)
(आग से जलने पर आग से सेंकते हैं, ठंडे जल का प्रयोग नहीं करते।)

आग के आगे सब भस्म है
आग के आगे कोई चीज नहीं ठहरती। प्रबल के सामने कमजोर भाग जाते हैं।

आग को दामन से ढकना
जानबूझकर ऐसा काम करना, जिसका परिणाम भयंकर हो।
(आग को अंगरखे के छोर से ढकना वज्रमूर्खता है।)

आग खाएगा सो अंगार हगेगा
बुरे काम का नतीजा बुरा होता है।

आग खाए मुंह जरे, उधार खाए पेट जरे
आग खाने से मुंह जलता है, पर उधार खाने से पेट जलता है।
(हमेशा ऋण चुकाने की चिंता रहती है, इस कारण क़र्ज़ न ले।)

आग पानी का बैर है
दो विपरीत गुण-धर्म वाली चीजें एक स्थान पर नहीं रह सकतीं।
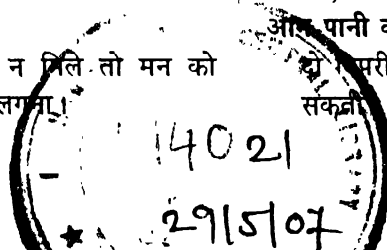
आग बिन धुआं नहीं
कारण बिना कोई कार्य नहीं होता।

आग लगते झोंपड़ा जो निकले सो लाभ
सर्वस्व नष्ट होने में से जो कुछ बच सके, उसे ही लाभ समझना चाहिए।

आग लगा तमाशा देखना
(1) दो आदमियों में आपस में झगड़ा कराकर अलग हो जाना।
(2) विवाह-शादी या ठाठबाट में व्यर्थ पैसा खर्च करना।

आग लगा पानी को दौड़ना
दो आदमियों में झगड़ा कराकर झूठमूठ मेल की बात करना। कपट का व्यवहार करना।

आग लगे तो घूर बतावे
आग की वजह से धुआं उठ रहा है, पर कहते हैं कि नहीं वह धूल है। जानबूझकर किसी को धोखे में रखना। अथवा स्वयं धोखे में रहना।

आग लगे पर कुआं खोदना
विपत्ति के बिल्कुल सिर पर आ जाने पर उससे बचने का उपाय करना।

आग लगे पै बिल्ली का मूत ढूंढ़ना
किसी विपत्ति के सिर पर आने पर उससे बचने का ऐसा उपाय खोजना, जिससे कोई लाभ ही न हो।

आगे लगे मढ़े, वज्र पड़े बारात
मतलब, भाड़ में जाए सब चीज।
मढ़ा=विवाह का मंडप।

आग लेने आए थे, क्या आए? क्या चले?
जब कोई थोड़ी देर के लिए आकर चला जाए, तब क. कि आप आए ही व्यर्थ में।

आग मीर की दाई, सब सीखी-सिखाई
प्रायः बड़े आदमियों के चतुर नौकर के लिए क. कि सब सीखे-सिखाए हैं, बड़े होशियार हैं।

आगे आगरा पीछे लाहौर
पहले तो आगरा मिलेगा, बाद में लाहौर। जो चीज आगे आने वाली है, पहले उसी की चर्चा करनी चाहिए।

आगे कुआं, पीछे खाई
दोनों ओर विपत्ति।

आगे खुदा का नाम
जो कुछ किया जा सकता था सो किया, आगे ईश्वर मालिक है।

आगे चलते हैं पीछे की खबर नहीं
भविष्य की चिंता न करना।

आगे जाएं घुटने टूटें, पीछे देखें आंखें फूटें
सांप-छछूंदर जैसी गति होना।

आगे दौड़ पीछे चौड़
आगे बढ़ता जाए, पर पीछे की खबर न ले। प्रायः ऐसे लड़के के लिए प्रयुक्त, जो आगे का सबक तो जल्दी याद कर ले, पर पीछे का भूलता जाए।

आगे नाथ न पीछे पगहा, सबसे भला कुम्हार का गदहा।
ऐसे व्यक्ति के लिए क., जो बिल्कुल स्वतंत्र या निश्चिंत हो, जिसका कोई मित्र या सगा-संबंधी न हो, लावारिस।
नाथ=पशुओं की नाक की रस्सी।
पगहा=पशुओं के पैर बांधने की रस्सी।

आगे पग रखे पत बढ़े पाछे पग रखे पत जाय
मैदान में आगे बढ़ने वालों का सम्मान बढ़ता है, पीछे हटने वाले सम्मान खो बैठते हैं।

आगे-पीछे सब चल बसेंगे
देर-सवेर सब को जाना है।

आगे रोक, पीछे ठोक, ससुर सड़कै न जाए तो क्या हो?
आगे रास्ता बंद, पीछे डंडे पड़ रहे हैं, ऐसी हालत में वह ससुरा (बैल) सड़क पर आगे न बढ़े, तो मैं करूं क्या? मतलब भागने का कहीं रास्ता नहीं।

आगे हाथ, पीछे पात, (स्त्रि.)
इतना गरीब कि तन ढकने को कपड़े नहीं; हाथ और पत्तों की सहायता से अपनी लज्जा दूर कर रहा है।

आछे दिन पाछे गए, हरि से किया न हेत।
अब पछताए होत का, चिड़ियां चुग गई खेत।
अच्छा अवसर खोकर बाद में पछताना व्यर्थ है।

आजकल तो तुम्हारे ही नाम कमान चढ़ी है
अर्थात आजकल तुम्हारा बोलबाला है।

आजकल रोज़गार उन्का है
आजकल रोज़गार नाममात्र का है।
उन्का=एक कल्पित पक्षी।

आजकल शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं
खूब अमन-चैन है।

आज का काम कल पर मत रखो
आज का काम आज ही निपटा दो।

आजकल की कन्या अपने मुंह से वर मांगती है, (हिं.)
अर्थात आजकल की लड़कियां बड़ी निर्लज्ज होती जा रही

हैं। स्वयं अपने विवाह की बात करती हैं।

आज किधर का चांद निकला है?

आज आप किधर भूल पड़े?

जब कोई बहुत दिनों बाद नजर आए, तब क.।

आज की आज, आज की बरस दिन में

आज की बात आज भी निपटाई जा सकती है, और उसमें एक वर्ष भी लगाया जा सकता है। किसी मामले को समय पर तै न करने पर क.।

(उर्दू के दो पुराने और प्रामाणिक कहावत-संग्रहों में मैंने इस कहावत का यही अर्थ पाया कि 'काम जल्द नहीं हो जाता'।)

आज के थापे आज नहीं जलते

आज के थापे उपले आज ही नहीं जलते (उन्हें सूखने में समय लगता है।)

काम तुरंत नहीं हो जाता (उसके लिए तैयारी करनी पड़ती है।)

तुरंत का सिखाया आदमी तुरंत काम करने योग्य नहीं बन जाता।

आज के बनिया कल के सेठ

व्यापार में शीघ्र उन्नति होती है, जिसे आज बनिया कहते हैं, वह कल सेठ बन जाता है।

आज क्या घोड़े बेच के सोए हो?

जो बेफिक्री की नींद सो रहा हो।

आज तक पड़े हींग हगते हैं

(1) आज तक हालत ठीक नहीं। अस्वस्थ हैं।

(2) बेकार पड़े वक्त खराब करते हैं।

(3) अपने किए का परिणाम भोग रहे हैं।

आज निपूती, कल निपूती, टेसू फूला, सदा निपूती, (स्त्रि.)

गाली देना। किसी निपूती स्त्री को कोसना कि तू हमेशा ऐसी ही रहेगी, टेसू में फूल आया, पर तेरे पुत्र नहीं होने का।

टेसू=ढाक का फूल।

आज नहीं कल

टालमटोल करना।

(इसकी एक कथा है—एक मुसलमान प्रतिदिन रात में एक पेड़ के नीचे जाकर ईश्वर से प्रार्थना किया करता था कि 'ऐ खुदा ! मुझे अपनी मुहब्बत में खेंच।' उसकी यह बात किसी मसखरे ने सुन ली और एक रात पेड़ पर से रस्से का फंदा नीचे गिराकर उसे ऊपर खींचना शुरू कर दिया। तब वह ईश्वर का भक्त चिल्लाया—'आज नहीं कल'।

आज बसेरवा नियर, कल बसेरवा दूर, (पू.)

आज तो मेरा घर यहीं है, कल दूसरे देश में जाकर रहना होगा। मतलब—इस लोक को छोड़कर दूसरे लोक में जाना होगा।

(यह बेटी के बिदा के समय के एक मार्मिक गीत की कड़ी है।)

आज मुए कल दूसरा दिन।

मरने के बाद सब भूल जाएंगे । सब ज्यों के त्यों अपने-अपने काम-धंधे में लग जाएंगे।

(इसका एक अन्य रूप है, आज मरे कल पितरों में। बंगला में है—आज मरले काल दु दिन हवे, परले कुल की संगे जावे।)

आज मेरे मंगनी, कल मेरे ब्याह, परसों लौंडिया कौ कोई ले जाए

मतलब, किसी प्रकार काम से छुट्टी तो मिले। अथवा कोई आदमी काम से छुट्टी पाने के लिए उतावला हो रहा हो, तो उसके लिए भी क.।

आज मेरे मंगनी, कल मेरे ब्याह, टूट गई टंगड़ी रह गया ब्याह

आदमी मंसूबे बनाता है, पर भविष्य में क्या होगा, कोई नहीं जानता।

आज मैं, कल तू

एक न एक दिन सब पर विपत्ति आती है। अथवा सबको एक दिन इस संसार से जाना है, आज हम तो कल तुम।

आज मैं हूं और वह है

कुछ भी हो, आज उससे निपटकर ही रहूंगा।

आज से कल नेरे है

आज के बाद कल ही आएगा। अथवा कल आते क्या देर लगती है ?

आज हमारी कल तुम्हारी, देखो लोगों फेरा-फारी

देर-सबेर सबको इस दुनिया से जाना है। आज हमारी बारी है, तो कल तुम्हारी।

आज है सो कल नहीं

संसार परिवर्तनशील है।

आजादी खुदा की नियामत है

स्वतंत्रता ईश्वर का वरदान है।

आजिज़ी सबको प्यारी है

विनम्रता सबको पसंद है।

आटा नहीं तो दलिया जब भी हो जाएगा

(1) गेहूं पीसने से आटा न बने, तो दलिया तो बन ही जाएगा।

अधिक नहीं तो थोड़ा लाभ हो ही जाएगा।

हिम्मत बंधाने और काम करने की प्रेरणा देने के लिए क.।

आटा निबड़ा, बूचा सटका

आटा खतम हुआ और कुत्ते ने अपना रास्ता लिया। स्वार्थी और मुफ्तखोर के लिए क.।

बूचा=कनकटे कुत्ते को कहते हैं

(कुत्ते का कान फड़फड़ाना अशुभ मानते हैं, इसलिए कान काट डालते हैं। कुत्ते के अर्थ में यह शब्द रूढ़ हो गया है।)

आटे का चिराग, घर रखूं तो चूहा खाय, बाहर रखूं तो कौवा ले जाए

ऐसी वस्तु जिसकी रक्षा कठिन हो। अथवा जब सब तरह से मुश्किल हो, तब भी क.।

(देवी की मनौती मानने के लिए स्त्रियां आटे का दीपक बनाती हैं।)

आटे के साथ घुन भी पिसा

बड़े के साथ रहने से किसी एक मामले में छोटा भी चक्कर में आ गया।

धनवान के साथ एक गरीब भी पिस गया।

आटे में नोन

साधारण मात्रा में।

आठ कठौती मठा पिये, सोलह मकुनी खाय।
उसके मरे न रोइए, घर का दलिद्दर जाय।

बहुत खाने वाले का मजाक।

मकुनी=एक प्रकार की मोटी रोटी।

आठ गांव का चौधरी, बारह गांव का राव।
अपने काम न आए तो अपनी ऐसी तैसी में जाय।

कोई आदमी अगर आठ गांव का चौधरी या बारह गांव का राजा है; तो बना रहे; वक्त पर हमारे काम न आए, तो उसका बड़प्पन हमारे किस काम का ?

आठ जुलाहे नौ हुक्का, जिस पर भी थुक्कम थुक्का।

आठ जुलाहों के पास नौ हुक्के, फिर भी इस बात का झगड़ा कि आपस में किस प्रकार दिए जाएं कि कोई बाकी न रहे। जुलाहे प्रायः सीधे और मूर्ख माने जाते थे। उसी का एक उदाहरण।

(जुलाहों के बुद्धूपन की अनेक कहानियां प्रसिद्ध हैं। एक कहानी है कि एक बार दस जुलाहे एक रेगिस्तान पार कर रहे थे। वहां उन्हें मरीचिका दिखाई दी, उसे नदी समझकर उन्होंने पार किया। बाद में यह देखने के लिए कि कोई डूब तो नहीं गया; अपने को गिनना शुरू किया। हर आदमी गिनते समय अपने को छोड़ जाता। इस प्रकार जिसने भी गिना उसने अपने दल में एक आदमी कम पाया। तब सब बैठकर रोने लगे। उसी समय वहां से एक घुड़सवार निकला। उसने जब उनका किस्सा सुना, तो एक-एक करके गिनकर बताया कि वे पूरे दस हैं और उनमें से कोई डूबा नहीं है। इसी प्रकार की एक दूसरी कहानी है कि घर की मुंडेर पर बैठा हुआ एक कौवा एक जुलाहे के लड़के के हाथ से रोटी छीनकर ले गया। यह समझकर कि कौवा अवश्य सीढ़ियों के रास्ते नीचे उतरा होगा उसने पहले सीढ़ियां खोदकर अलग कर दीं, बाद में लड़के को और रोटी दी। एक तीसरी कहानी है कि एक जुलाहे को किसी ज्योतिषी ने बताया कि उसके भाग्य में कुल्हाड़ी से उसकी नाक कटना लिखा है। जुलाहे को इसका विश्वास नहीं हुआ और यह देखने के लिए कि आखिर कुल्हाड़ी से नाक कटेगी तो किस प्रकार ! उसे लेकर उसने घुमाना शुरू किया। कहता जाता—'यों करब तो गोड़ कटब, यों करब तो हाथ कटब, और यूं करब तो ना-आ...' और यह कहते-कहते उसकी नाक साफ हो गई।)

तुल.—आठ कनौजिया नौ चूल्हे। इसी भाव की कहावत बंगला में भी है—बार राजपूत तैरो हांडी, केऊ खाय ना कारो बाड़ी।

आठ बार नौ त्यौहार

हिंदुओं में त्यौहार बहुत होते हैं। हर महीने दो—चार व्रत या त्यौहार पड़ जाते हैं। उसी पर कहा. कही गई है। हमेशा त्यौहार मनाते रहने के लिए भी कह सकते हैं।

आठ मिले काठ, तुलसी मिले जाट

आठ तरह के काठ क्या मिल गए, समझ लो जाट मिल गया। जाटों पर फब्ती।

आठ काठ=आठ प्रकार की लकड़ी। एक मुहा. जिसका अर्थ होता है : बेमेल वस्तुओं का जमघट।

आठों गांठ कुम्भेत

सब तरफ से कुम्भेत। बहुत चालाक और बदमाश।

(कुम्भेत दाखी रंग के घोड़े को कहते हैं। ऐसा घोड़ा बहुत तेज और फुर्तीला माना जाता है।)

आठों पहर काल का डंका सिर पर बजता है

मौत हर वक्त सिर पर सवार है।

आता तो सब ही भला, थोड़ा बहुता, कुच्छ।
जाते तो दो ही भले, दालिद्दर और दुःख।

आती सभी वस्तुएं अच्छी होती हैं, थोड़ी आवें या बहुत; पर दो वस्तुएं जाती हुई अच्छी होती हैं—दरिद्रता और दुख।

आता हो तो उसे हाथ से न दीजे, जाता हो तो उसका गम न कीजे

आती हुई वस्तु को छोड़ो नहीं, जाती हुई की चिंता न करो।

आती बहू, जन्मता पूत

घर में बहू का आना, और पुत्र का उत्पन्न होना, ये सब को अच्छे लगते हैं।

आते आओ, जाते जाओ

जहां लोगों की बहुत भीड़ इकट्ठा हो रही हो, जैसे दावत या तमाशे में, वहां क.।

आते का नाम सहजा, जाते का नाम मुक्ता

संसार में आने का मतलब ही यह है कि हमें दुख सहन करने के लिए तैयार रहना चाहिए, मुक्ति तो यहां से जाने पर ही मिलती है। अथवा दुख आने पर उसे धैर्यपूर्वक सहन करना चाहिए, जव वह जाए तभी समझो कि छुटकारा मिला।

आते जाते मैना ना फंसी, तू क्यों फंसा रे कौवे

मैना तो जाल में फंसी नहीं, कौवा फंस गया।

मूर्ख की अपेक्षा सयाना आदमी ही अधिक धोखा खाता है।

आत्मा में पड़े तो परमात्मा की सूझे

पेट भरा होने पर ही कोई काम सूझता है।

आदम आया, दम आया

आदम के साथ सृष्टि का प्रारंभ हुआ।

(बाइबिल के अनुसार आदम प्रथम मानव था, जिससे मानव सृष्टि आगे बढ़ी।)

आदमी अनाज का कीड़ा है

आदमी अन्न पर ही जीवित रहता है।

आदमी अपने मतलब में बंधा है

हर आदमी अपने मतलव की ही बात करता है।

आदमी अशरफ-उल-मख़लूक़ात है

मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठ है।

आदमी आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर

सब आदमी एक से नहीं होते। कोई अच्छा होता है, कोई बुरा।

आदमी का शैतान आदमी है

मनुष्य को मनुष्य ही गड्ढे में गिराता है।

आदमी की क़द्र मरे पर होती है।

मृत्यु के बाद ही आदमी की क़द्र होती है। तब लोग याद करते हैं कि अमुक व्यक्ति ऐसा था।

आदमी की कसौटी मुआमला

काम पड़ने पर ही मनुष्य की परीक्षा होती है।

आदमी की दवा आदमी

मनुष्य को मनुष्य सुधारता है।

आदमी की पेशानी दिल का आईना है

मनुष्य के हृदय के भाव उसके चेहरे पर दिखाई पड़ जाते हैं।

(मन महीप के आचरण, दृग दिमान कह देत।)

आदमी कुछ खोकर ही सीखता है

हानि होने पर ही आदमी को अक़्ल आती है।

आदमी को ढाई गज कफ़न काफी है

मरने पर उसके लिए ढाई गज कफ़न काफी होता है। वह बेकार ही अपनी जरूरतें बढ़ाता रहता है।

आदमी को ढाई गज जमीन काफी है, (मु.)

मरने पर आदमी को क़ब्र में दफ़ना दिया जाता है, कोई चीज उसके साथ नहीं जाती।

आदमी को आदमियत लाज़िम है

मनुष्य में मनुष्यता का होना वहुत आवश्यक है।

आदमी को आदमी से सौ दफ़ा काम पड़ता है

इसलिए परस्पर हिलमिल कर रहना चाहिए। न जाने कब किससे काम पड़ जाए।

आदमी क्या है, आबनूस का कुंदा है

यानी वहुत मूर्ख है। काले आदमी के लिए भी कह सकते हैं।

(आबनूस काले रंग की पहाड़ी लकड़ी होती है।)

आदमी क्या है, सरांचे का बांस है

बहुत लंबे और बेडौल के लिए क.।

आदमी ठोकर खाकर संभलता है

हानि होने पर ही आदमी को होश आता है।

आदमी ने आखिर कच्चा शीर पिया है

मनुष्य के लिए भूल स्वाभाविक है। आखिर उसने मां का कच्चा दूध पिया है ! इस कारण उसकी बुद्धि भी हमेशा अपरिपक्व रहे, तो इसमें आश्चर्य क्या?

आदमी पानी का बुलबुला है

आदमी का जीवन उतना ही अस्थायी है, जितना पानी का बुलबुला।

आदमी पेट का कुत्ता है

आदमी पेट का गुलाम है।

आदमी माल की खातिर पहाड़ सिर पर उठाता है

फायदे के लिए आदमी बड़े से बड़ा कष्ट उठाने को तैयार रहता है।

आदमी सा पखेरू कोई नहीं

मनुष्य सब जीवों में अद्भुत है।

आदमी है कि घनचक्कर

फालतू या मूर्ख के लिए क.।

आदमी है या बिजली

बहुत फुर्तीले के लिए क.।

आदमी हो या बेदाल के बूदम

आदमी हो या उल्लू?

(फारसी में 'बूदम' से दाल अक्षर निकाल लेने पर 'बूम' रह जाता है, जिसका अर्थ उल्लू है।)

आदमी हो या संगे बेनून

फारसी में संग का अर्थ पत्थर है। उसमें से 'नून' अक्षर निकाल लेने पर 'संग' रह जाता है, जिसका अर्थ 'कुत्ता' है। आपस में मजाक में वाक्य का प्रयोग करते क.।

आदर न भाव, झूठे माल खाव

बेमन से खाना-खिलाना। दिखावटी सत्कार करना।

आदर बढ़ल, गजाधर बहू के

जब समाज में किसी का यकायक सम्मान बढ़ जाए, तब क.।

गजाधर=किसी का नाम।

आद हिंदू बाद मुसलमान, (हिं.)

इस देश में पहले तो हिंदू ही रहते थे, मुसलमान तो बाद में आए। हिंदुओं का महत्व बताने के लिए क.।

(फैलन ने इसका यह अर्थ बताया है कि पहले लोग हिंदू थे, बाद को उनमें से मुलसमान हो गए।)

आदी के चंदन, लिलार चरचराय, (पू.)

अदरक के चंदन से माथा तो चरचराएगा ही। बुरे का संग कभी लाभदायक नहीं होता।

आदी मिरचई का कौन साथ? (पू.)

दोनों के गुण भिन्न होते हैं।

आध सेर के पात्र में कैसे सेर समाय?

(1) किसी मूर्ख या छोटे आदमी में अधिक योग्यता कहां से आ सकती है?

(2) छोटा आदमी थोड़ी विद्या-बुद्धि या संपत्ति पाकर ही इतरा उठता है।

आधा आप घर, आधा सब घर

आधा तो स्वयं रख लिया और आधे में से सब घर को दिया। स्वार्थी के लिए क.।

आधा तजे पंडित, सर्वस तजे गंवार

आधा खर्च करने से अगर आधा बच सकता हो, तो समझदार आदमी वैसा करता है; यानी आधा खर्च कर देता है, लेकिन मूर्ख आदमी पूरा बचाने के लोभ में सब खो बैठता है।

आधा तीतर, आधा बटेर

बेमेल चीज। खिचड़ी भाषा।

आधा मियां शेख शरफुद्दीन, आधा सारा गांव

जबर्दस्त का हिस्सा सबसे ज्यादा होता है।

आधी छोड़ सारी को धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे

लालच बुरा होता है।

पाठा.—आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे।

आधी मुर्गी, आधी बटेर

दे.—आधा तीतर...।

आधी रात को जंभाई आय, शाम से मुंह फैलाय

जमुहाई लेने की कोशिश शाम से शुरू कर दी, पर आई आधी रात को!

किसी काम की अनावश्यक रूप से बहुत पहले से तैयारी शुरू कर देना।

आधी रोटी बस, कायथ है कि पस

किसी कायस्थ सज्जन की कम खाने की आदत पर फब्ती कि बस, बस, इन्हें अधिक मत परोसो, ये कायस्थ हैं, पशु नहीं।

(कायस्थ बहुत तकल्लुफ-पसंद होते थे।)

आधे असाढ़ तो बैरी के भी बरसे, (कृ.)

आधे असाढ़ में तो बैरी के खेत में भी पानी बरसे। यानी ईश्वर सबके साथ समान न्याय करता है। अथवा आधे असाढ़ तो वर्षा अवश्य होती है, यह अर्थ भी हो सकता है।

आधे काजी कुद्दू, आधे बाबा आदम, (मु.)

ऐसे व्यक्ति के लिए क. जिसका बड़ा परिवार हो।

(किंवदंती है कि कुद्दू नाम के एक काजी थे। उनकी औरत के एकसाथ 200 बच्चे पैदा हुए। ऐसी दशा में दुनिया की आबादी में उनके नाती-पोतों का बहुत बड़ा हिस्सा तो होना ही चाहिए।)

आधे गांव दिवाली, आधे गांव फाग
मनमानी करना, मिलकर काम न करना।
(दिवाली कार्तिक में होती है, और फाग फागुन के महीने में। ये दोनों त्यौहार एक साथ हो नहीं सकते।)

आधे माघे, कमली कांधे, (ग्रा.)
आधे माघ में (जाड़ा कम हो जाने के कारण) कंबल को कंधे पर रख लेते हैं।

आन बनी सिर आपने, छोड़ परायी आस
विपत्ति में कोई सहायक नहीं होता। स्वयं ही भुगतनी पड़ती है।

आन से मारे, तान से मारे, फिर भी न मरे तो रान से मारे
वेश्या के लिए क.।

आप काज महाकाज
अपना काम स्वयं ही करने से ठीक होता है। दूसरों पर छोड़कर हाथ पर हाथ धरकर न बैठो।

आप की खिजालत मेरे सिर आंखों पर
आपके लिए मैं शर्मिंदा हूं। आपने जो किया, उसे मैं भुगतूंगा।
खिजालत=शर्मिंदगी।

आपकी टिक्की यहां नहीं लगने की
आपकी रोटी यहां नहीं सिकने की।
यानी आपका मतलब यहां हल होने का नहीं।
आपकी दाल यहां नहीं गलने की।
आपका पौवा यहां नहीं लगने का।

आपको फजीहत, गैर को नसीहत
स्वयं बुरे काम करके दूसरों को उपदेश देना।
(पर उपदेश कुशल बहुतेरे)।

आप खाय, बिलाई बताय
चालाक आदमी या लड़का। स्वयं मिठाई-पूड़ी हड़प जाए और दूसरे का नाम ले कि उसने खाया।

आप खुरादी, आप मुरादी
आप ही खाने वाले और आप ही अपनी मुराद पूरी करने वाले।
स्वयं कुछ कर लेना। दूसरों को न पूछना।

आप गए और आसपास
आप बर्बाद हुए, साथियों को भी बर्बाद किया।

आप चले भुइयां, शेखी गाड़ी पर
शेखीबाज के लिए क.।
(पैदल चल रहे हैं और गाड़ी होने का दावा करते हैं।)

आप जिंदा तो जहान जिंदा
अपनी जिंदगी से ही सब कुछ लगा है।

आप डूबा तो जग डूबा
जब हम ही नहीं हैं, तो औरों से हमें क्या मतलब? जब हमारी हानि हुई है, तो दूसरों की भी होती रहे; हमें क्या?

आप डूबे बाभना, जिजमाने ले डूबे
आप भी बर्बाद हुए, यार-दोस्तों को भी बर्बाद किया।
(आप मरी तो मरी, मेरे हीरामनऊं ऐ लै मरी। ब्र.)

आ पड़ोसिन मुझ-सी हो, (स्त्रि.)
मेरी तरह तू भी रांड हो जा! दूसरों का बुरा तकना।

आ पड़ोसिन लड़ें, (स्त्रि.)
बेमतलब झगड़ा करने वाले के लिए क.।

आप तो गर्म करके शर्बत पिलाते हैं।
गुस्सा उठाकर मीठी-मीठी बातें करते हैं।

आपत्ति काले मर्यादा नास्ति, (सं.)
विपत्ति के समय धर्म-अधर्म का विचार नहीं किया जाता।

आपन खेत बम लौटे, पाही जोते जाइला, (भो.)
अपना खेत तो बिन जुता पडा है, दूसरे गांव का खेत जाकर जोतता है।
अपना काम छोड़कर दूसरे का करना।

आपन दे के बुड़बक बने के?
ऐसा कौन है, जो अपनी चीज दूसरे को देकर मूर्ख बने? कोई नहीं।

आपन भल होयत तो जगत्तर प्रीत गारी, (भो.)
स्वयं भला है, तो संसार मित्र बन जाता है।

आपन मामा मर मर गइलन, जुलहा, धुनिया, मामा भइलन; (भो.)
अपने मामा तो मर गए, कभी उनकी बात नहीं पूछी, और अब धुनिया, जुलाहों को मामा बना लिया।
घरवालों का आदर न करके बाहर के लोगों से संबंध जोड़ना।

आप बीती कहूं या जग बीती?
मैं अपना दुखड़ा रोऊं या दूसरों का?

आप भला तो जग भला

(1) भले के लिए सब भले।

(2) भले को सब भले ही दीखते हैं।

आप भूले उस्ताद को लगाम

अपनी भूल दूसरे के मत्थे मढ़ना।

आपम धाप कड़ाकड़ बीते, जो मारे सो जीते

लड़ाई में फिर अपनी तरफ से कसर नहीं छोड़नी चाहिए, अपनी चोट करारी पड़नी चाहिए। जो आगे बढ़कर मारता है, वही जीतता है।

आप मरे जग परलौ

हमारे बाद दुनिया में कुछ भी होता रहे, हमें क्या मतलब? हम नहीं तो दुनिया भी नहीं।

(अंग्रे.—me the after deluge)

आप मियां सूबेदार घर में बीवी झोंके भाड़

घर में [illegible] को नहीं, बाहर शान बघारते हैं।

आप रहें उत्तर, काम करें पच्छम

शऊर से काम न करने वाले से क.।

आप राह राह, दुम खेत खेत

सिलबिल्ला आदमी।

आप सुने राग से, फकीर सुने भाग से

बड़ा आदमी पैसा खर्च करके गाना सुनता है, गरीब अपनी किस्मत से मुफ्त में सुनता है।

आप से आवे तो आने दे

अपने आप आ रही वस्तु के लिए मना नहीं करना चाहिए। *(कथा है कि किसी मुलसमान ने पक्षियों का मांस न खाने की कसम खा रखी थी। एक दिन उसकी स्त्री ने बहुत-सा घी-मसाला डालकर मुर्गी पकाई। उसके पति को जब यह बात मालूम हुई तो बड़ा नाराज हुआ, किंतु बाद में स्त्री के बहुत कहने पर थोड़ा शोरुवा लेने के लिए राज़ी हो गया। औरत ने सावधानी से बोटियों को अलग करके शोरुवा परोसना शुरू किया, लकिन परोसते समय एक बोटी नीचे गिरने लगी। औरत ने उसे रोकना चाहा। इस पर उसके पति ने कहा—आप से आवे तो आने दो, रोका मत। इसी प्रकार की एक और कथा है—एक ब्राह्मण देवता सबको बैंगन न खाने का उपदेश दिया करते थे। एक दिन किसी जजमान ने एक टोकरी भर बैंगन लाकर उन्हें भेंट किए। उन्होंने लेने से इंकार किया। लेकिन उनकी पत्नी होशियार थी। बोली—जो चीज आपसे आए, उसे स्वीकार लेना चाहिए। इस पर ब्राह्मण देवता मान गए और बैंगन घर में रख लिख गए।)*

आपसे गया तो जहान से गया

(1) जो अपनी नजरों में गिरा, वह दुनिया की नजरों में भी गिरा।

(2) जो अपनी फ़िक्र नहीं करता दुनिया भी उसकी फ़िक्र नहीं करती।

आपसे भला खुदा से भला

जो अपनी निगाह में भला है, वह ईश्वर की निगाह में भी भला है।

आप हरफन मौला हैं

यानी आप हर काम में बड़े उस्ताद हैं। प्रायः व्यंग्य में क.।

आप हारे, बहू को मारे

जुए में पैसा हार आए, और आकर औरत को मारते हैं। अपना गुस्सा दूसरों पर उतारना।

आप ही अपनी क़ब्र खोदता है

आप अपनी मौत बुलाता है। अपना सर्वनाश करता है।

आप ही की जूतियों का सदका है

यह सब आपकी ही बदौलत है।

(इस पर एक कथा है कि एक बार एक मुसलमान मसखरे ने दोस्तों को सुन्नत की दावत दी। जब सब लोग आकर भीतर बैठे तो उसने नौकर से चुपचाप उन सब के जूते बेच आने के लिए कहा। नौकर ने वैसा ही किया और दाम मालिक को लाकर दे दिए। दोस्तों ने दावत बहुत पसंद की और कहना शुरू किया—जनाब-मन, आपने बड़ी तकलीफ की। इस पर मसखरे ने हाथ जोड़कर कहा—यह सब आपकी ही जूतियों का सदका यानी प्रताप है। मैं भला किस लायक हूं।)

आप ही नाक चोटी गिरफ्तार हैं, (स्त्रि.)

खुद ही चक्कर में पड़े हैं।

आप ही मियां मंगते बाहर खड़े दरवेश

अपनी सहायता कर नहीं पाते, दूसरों की सहायता क्या करेंगे?

आ फंसे का मामला है

अर्थात अब तो चक्कर में पड़ गए हैं, जो होगा भुगतेंगे।

आफताब पर थूकने से अपने ही मुंह पर पड़े।

बड़ों की निंदा से उनका कुछ नहीं बिगड़ता, स्वयं को ही हानि उठानी पड़ती है।

आब आब कर मर गए, सिरहाने रहा पानी

अकड़कर बोलना। शान बघारने के लिए ऐसी भाषा में बोलना जो दूसरों की समझ में न आए।

(कथा है कि कोई फारसी पढ़ा-लिखा व्यक्ति बीमार पड़ा और मृत्यु के समय आब-आब चिल्लाता रहा, परंतु घर वाले उसकी बोली नहीं समझ सके और प्यास के मारे उसके प्राण निकल गए। यह पूरी कहा. इस प्रकार है—
काबुल गए मुग़ल बन आए, बोलन लागे बानी।
आब आब कर मर गए, सिरहाने रहा पानी।)

आ, बड़े बाप की बेटी है तो पंजा कर ले
किसी एक स्त्री का दूसरी शेखी मारने वाली स्त्री से कथन।
पंजा करना=उंगलियों में उंगलियां फंसाकर इस तरह मरोड़ना कि दूसरा आदमी चीं बोल जाए।

आब न दीदह, मोज़ह कशीदह, (फा.)
पानी है नहीं, पर (भीगने के डर से) मोजा उतार लिया?
अकारण हाय-तोबा मचाना।

आबरू जग में रहे, तो जान जाना पश्म है
इज्जत के सामने जिंदगी कोई चीज नहीं।
पश्म=बाल, तुच्छ वस्तु।
(इस कहावत में 'आबरू' और 'जान जाना' इन शब्दों के दोहरे अर्थ हैं। आबरू और जान जाना नाम के दो शायर लखनऊ में हो गए हैं। दोनों में आपस में बहुत छेड़छाड़ रहती थी। यह शेर आबरू का कहा हुआ है जिसमें जान जाना पर कटाक्ष है। पूरा शेर इस प्रकार है—
जो सती सत पर चढ़ै तो पान खाना रस्म है।
आबरू जग में रहे तो जान जाना पश्म है।

आ बला, गले लग
जानबूझकर विपत्ति मोल लेना।

आ बैल, मुझे मार
दे. ऊ.।

आम इमली का साथ है
दो बेमेल व्यक्तियों का साथ। दो चालाकों का इकट्ठा होना।
(आम इमली दोनों ही खट्टे होते हैं।)

आम के आम गुठलियों के दाम
ऐसा सौदा जिसमें सब प्रकार से लाभ हो।

आम खाने या पेड़ गिनने?
सीधी काम की बात न करके व्यर्थ का प्रश्न करना।
पाठा.—आम खाने से मतलब या पेड़ गिनने से?

आम झड़े पताई, लड़का रोवे दाई दाई, (स्त्रि.)
आम के पत्ते झड़ने की आवाज हो रही है। लड़का समझता है आम गिर रहे हैं और रोता है 'मां आम दो।'
अलभ्य वस्तु के लिए हठ।

आमदनी के सिर सेहरा
जिसके पास पैसा है वही बड़ा आदमी है।
सेहरा=श्रेय दिया जाना।

आमने-सामने घर करूं और बीच करूं मैदान, (स्त्रि.)
निर्लज्ज और उद्धत औरत के लिए क.।

आम फले तो नव चले, अरंड फले इतराय
सज्जन ऊंचे पद पर पहुंचकर विनम्र बनता है, पर नीच इतराने लगता है।

आम बोओ आम खाओ, इमली बोओ इमली खाओ।
जैसा करोगे वैसा पाओगे।

आम मछली का साथ है
अच्छा जोड़ मिला है।
(कच्चे आमों के साथ प्रायः मछली पकाते हैं।)

आय तो जाय कहां
व्यर्थ किसी एक बात के पीछे पड़ जाना।
जो बात होनी है वह होकर रहेगी, यह अर्थ भी हो सकता है।

आया कर, तू जाया कर, टट्टी मत खड़काया कर
यानी व्यर्थ तंग मत किया करो। किसी के प्रति उपेक्षा के रूप में कहना।

आयां रा चेह बयां, (फा.)
प्रत्यक्ष का क्या वर्णन करना?
(हाथ कंगन को आरसी क्या?)

आया कुत्ता ले गया, तू बैठी ढोल बजा
अपनी धुन में इतना मस्त हो जाना कि दूसरी ओर क्या हो रहा है, इसका पता न लगना।
(कथा है कि एक मिरासिन किसी दावत में गई। वहां ढोल बजाने में इतना तन्मय हो गई कि उसके सामने की पत्तल कुत्ता उठा ले गया और उसे इस बात का पता ही न चला। अमीर खुसरो की इस पर एक तुकबंदी है। कहते हैं कि एक बार खुसरो प्यासे एक कुएं पर गए। वहां चार औरतें पानी भर रही थीं। उनमें से एक उन्हें पहचान कर बोली—आप हमारी चीजों पर कुछ शायरी कर दें, तो पानी पिलाएं। खुसरो ने मंजूर कर लिया। तब एक बोली—आज मेरे घर खीर पकी है, इस पर कुछ कहिए। दूसरी बोली—मेरे चरखे पर कुछ कहिए। तीसरी बोली—सामने खड़े कुत्ते पर कुछ कहिए। चौथी ने आग्रह किया—मेरे ढोल पर कुछ

कहिए। खुसरो बहुत प्यासे थे। एक साथ चारों की इच्छा पूरी करते हुए बोले—
खीर पकाई जतन से, चरखा दिया जला।
कुत्ता आया खा गया, तू बैठी ढोल बजा।
इस पर सब बहुत खुश हुई और खुसरो को पानी पिला दिया।)

आया तो नोश, नहीं फरामोश
मिला तो खा लिया, अन्यथा परवाह नहीं।

आया बंदा आई रोज़ी, गया बंदा गई रोज़ी, (मु.)
दुनिया में आदमी से ही सब काम लगा है।

आया रमज़ान, भागा शैतान, (मु.)
अच्छे के सामने बुरा नहीं ठहरता।
(रमजान के महीने में मुसलमान रोज़ा रखते हैं और उसे एक पवित्र महीना मानते हैं।)

आया [illegible] [illegible], जाड़े को चढ़ा छोह
पूस आने पर जाड़ा अपना जोर दिखाता है।
छोह=क्रोध

आए आम, जाए लवेड़ा
डंडा भले ही चला जाए पर आम तो आए।
(कुछ पाने के लिए खोना भी पड़ता है। लवेड़ा या लभेड़ा एक फल भी होता है, जिसका अचार बनता है। तब यह अर्थ हो सकता है कि भले ही एक सामान्य वस्तु हाथ से चली जाए, पर अच्छी वस्तु तो मिले।)

आये कनागत फले कांस, वामन उछलें नौ-नौ बांस, (हिं.)
कनागत अर्थात पितृपक्ष के दिनों में ब्राह्मणों को बहुत निमंत्रण मिलते हैं, इसलिए वे बहुत प्रसन्न रहते हैं। लोलुप ब्राह्मणों के लिए क.।
निमंत्रण=न्यौता।

आए की शादी, न गए का ग़म
सदैव प्रसन्न रहना।
ग़म—रंज।

आएगा कुत्ता तो पाएगा टिक्का, (स्त्रि.)
मेहनत से ही खाने को मिलता है।

आए चैत सुहावन, फूहड़ मैल छुड़ावन, (स्त्रि.)
ऐसी सुस्त और गंदी औरत, जो जाड़ों में सर्दी के भय से नहाती नहीं और जिसका मैल गर्मियों में पसीना आने पर ही छूटता है। अथवा जो गर्मी आने पर ही नहाती है।
(सामान्य रूप से ऐसे आदमी के लिए कहावत का प्रयोग होता है, जो कभी-कभी सफाई कर लिया करता है, अन्यथा गंदा रहता है।)

आए थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास
आए थे किसी काम को, करने लगे कुछ और।

आए मीर, भागे पीर
मीर के आने पर पीर भाग जाते हैं। बड़े हुनरमंद के सामने छोटे की दाल नहीं गलती।
(इसकी कथा है कि अमरोहे में शेख सद्दू या मीरांजी नामक एक व्यक्ति रहता था। वह बिल्कुल अशिक्षित था, फिर भी अपने को इल्मे तसखीर या ज्योतिष में निपुण बताता था। एक दिन खेत में उसे एक दीपक मिला, जिसमें एकसाथ चार बत्तियां जलती थीं। उसे घर ले जाकर उसने जलाया, तो उसके सामने चार जिन्न आकर खड़े हो गए। उन्हें देखकर वह भयभीत हो गया और दीपक को बुझाने की कोशिश करने लगा। लेकिन जिन्न नहीं टले। बोले—हमें कुछ काम बताओ। शेख बदचलन था। उसने जिन्नों से एक खूबसूरत औरत लाने को कहा। जिन्नों ने तुरंत वैसा कर दिया। किंतु उस औरत के साथ शेख ने जब दुराचार करना चाहा तो जिन्नों ने बताया कि वे तभी तक उसकी बात मानेंगे जब तक वह सही रास्ते पर रहेगा। पर वह उस सुंदरी को बार-बार बुलाता रहा। अंत में वह बेकाबू हो सुंदरी की तरफ बढ़ा। तब जिन्नों ने उसे मार डाला। मरकर वह बड़ा पीर हुआ और लोगों के सिर आने लगा। और भी बहुत से पीर हुए हैं। लेकिन जहां शेख सद्दू पहुंचता है, वहां दूसरे पीर नहीं ठहर पाते। इस शेख सद्दू की अब भी अमरोहे में दरगाह बनी है और लोग वहां ज़ियारत करने जाते हैं।)

आरजू ऐब है
लालसा बुरी वस्तु है।

आरसी में मुंह देखो
डींग हांकने वाले या अनुचित मांग करने वाले से कहते हैं कि जरा शीशे में अपना मुंह भी तो देखो, तुम इस योग्य हो भी कि नहीं।

आ लगा मुरमुरे वाला
बातूनी आदमी के लिए कहते हैं कि वह फिर आ गया बकवास करने।
(चने बेचने वाले 'मुरमुरे चने' की आवाज सड़कों पर लगाया करते हैं। उसी से कहा. बनी।)

आलमगीर सानी, चूल्हे आग न घड़े पानी
मुग़ल बादशाह आलमगीर द्वितीय (ई. 1754-59) का

शासन प्रबंध अच्छा नहीं बताया जाता। उसके समय में प्रजा को बड़ा कष्ट था। उसी से मतलब है।

आलस, निद्रा और जंभाई, ये तीनों हैं काल के भाई

बहुत आलस्य करना, सोना और जमुहाना, ये तीनों स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं होते।

आलसी सदा रोगी

आलसी हमेशा बीमार रहता है।

आला, दे निवाला, (स्त्रि.)

ऐ ताक ! तू मुझे रोटी का टुकड़ा दे।

(कथा है कि एक राजा ने किसी भिखारिन की खूबसूरत लड़की पर लट्टू होकर उससे शादी कर ली। पर महलों में आकर भी उस लड़की की भीख मांगने की आदत नहीं छूटी और वह अपने कमरे के ताकों में रोटी रखकर भीख मांगा करती। उससे कहावत का आशय यह है कि बचपन की कोई पुरानी आदत मुश्किल से छूटती है।)

आलिम वह क्या, अमल न हो जिसका किताब पर

वह पढ़ा-लिखा ही क्या, जो सद्ग्रंथों का उपदेश न माने। आलिम=विद्वान।

आला हिम्मत सदा मुफ़लिस

हिम्मत वाला हमेशा गरीब रहता है, क्योंकि मौके पर वह अपना सर्वस्व दांव पर लगा देता है।

(फैलन के अनुसार कहावत सट्टेबाजों के लिए प्रयुक्त होती है।)

आवत हा-ही, जावत संतोख

धन और संतान के लिए कहा गया है। आने पर प्रसन्नता होती है, जाने पर संतोष से काम लेना पड़ता है।

आवे न जावे, बृहस्पति कहावे

आता-जाता कुछ नहीं, फिर भी अपने को पंडित कहते हैं। दंभी पुरुष।

(बृहस्पति देवताओं के गुरु थे।)

आशनाई करना आसान, निभाना मुश्किल

प्रेम करना आसान है, पर निभाना कठिन है।

आशिक़ अंधा होता है।

प्रेम में मनुष्य को भुला-बुरा कुछ नहीं सूझता।

आशिक़ की आबरू है गाली और मार खाना

आशिक़ पिटने और गाली खाने में ही अपनी इज्जत समझता है। अथवा आशिक पिटने और गाली खाने के लिए ही बना होता है।

आशिक़ को खुदा ज़र दे, नहीं तो कर दे ज़मीं के परदे

ईश्वर प्रेमी को या तो बहुत-सा पैसा ख़र्च के लिए दे या फिर उसे मार ही डाले।

आशिक़ी और खाला जी का घर !

सोने में सुगंध ! खाला यानी मौसी के घर जाने में किसी प्रकार की रोक-टोक नहीं; किसी भी लड़की से वहां खुलकर प्रेम किया जा सकता है।

(मुसलमानों में मामा-फूफा की लड़की से विवाह करने का रिवाज है।)

आशिक़ी और मामा जी कर डर !

जव इश्क किया तो मामाजी का क्या डर? कोई और हो तो चिंता भी की जाए।

आशिक़ी खाला जी का घर नहीं

अर्थात वह आसान काम नहीं।

आशिक़ी न कीजिए तो क्या घास खोदिए

किसी मनचले आशिक़ का कहना कि दुनिया में आकर इश्क़ के फंदे में न फंसा जाए तो आखिर किया क्या जाए?

आश्ती ! और जान जी का डर !

आश्ती होकर मरने का डर। अर्थात काम का बीड़ा उठाया और अव पिछड़ रहे हो।

(आश्ती उसे कहते हैं जो मुश्किल से मुश्किल काम करने को तैयार हो।)

आसक्ती गिरा कुएं में, कहा, अभी कौन उठे

किसी घोर आलसी के लिए क.।

आसक्ती=अशक्त, आलसी।

आसक्ती गिरा कुएं में, कहा, यहां ही भले

दे. ऊ.।

आस बिरानी जो तके, वह जीवित ही मर जाय

दूसरों के आश्रित रहने की अपेक्षा तो मर जाना अच्छा।

आस बुढ़ापा आइयां, हुआ सूत-कुसूत।
या हो पैसा गांठ का, या हो पूत सपूत।

बुढ़ापे में या तो पास पैसा हो, या सेवापरायण सुयोग पुत्र। सूत कुसूत होना=मु., बना बनाया काम बिगड़ना।

आसमान का थूका मुंह पर आता है।

बड़ों की निंदा करने से स्वयं अपनी हानि होती है।

आसमान ने डाला, धरती ने झेला

ऐसा व्यक्ति जिसकी खोज-खबर लेने वाला कोई न हो।

निराश्रित।

आसमान के फटे को कहां तक थेगली लगे

थोड़ा बिगड़ा काम सुधारा जा सकता है, पर बहुत बिगड़ा कहां तक संभाला जाए।

थेगली=फटे हुए कपड़े का छेद वंद करने के लिए लगाया जाने वाला टुकड़ा। पैबंद।

आसमान में थेगली लगाती है

बड़ी चालाक है।

आसमान से गिरा, खजूर में अटका

(1) किसी काम का पूरा होते-होते रह जाना।

(2) मुश्किल से मुश्किल काम तो कर लेना, पर बाद में किसी मामूली काम से घबरा जाना। प्रायः तब कहते हैं, जव किसी के पास से किसी को कुछ मिल रहा हो ओर दूसरे लोग बीच में उसे दवा लें।

आस्तीन का सांप

ऐसा व्यक्ति जो मित्र बनकर धोखा दे।

आस्तीन में सांप पाला है

जानबूझकर ऐसे व्यक्ति को आश्रय देना, जो बाद में शत्रु साबित हो।

आह-ए-मरदां, न ऊह-ए-ज़नां, (फा.)

न मर्दों जैसे 'आह', न औरतों जैसी 'ऊह।' बेहद डरपोक।

आहार चूके वह गए, व्यवहार चूके वह गए।

दरबार चूके वह गए, ससुरार चुके वह गए।

भोजन में, लेनदेन में, राजदरबार में और ससुराल में संकोच करने वाला व्यक्ति टोटे में रहता है।

आहारे व्यवहारे, लज्जा न कारे

भोजन और लेनदेन में संकोच नहीं करना चाहिए।

इ

इंचा-खिंचा वह फिरे, जो पराए बीच में पड़े
दूसरे के झगड़े में पड़ने से हमेशा परेशानी उठानी पड़ती है।

इंदर राजा गरजा, म्हारा जिया लरजा, (मार.)
बादल गरजे और गल्ले का व्यापारी घबराया
(कि वर्षा होने से खरीदकर रखे हुए गल्ले को मनमाने भाव नहीं बेच सकेगा।)
म्हारा=मेरा।

इकरारे जुर्म, इसलाहे जुर्म, (फा.)
अपराध का स्वीकार कर लेना ही उसका माफ हो जाना है।

इकलख पूत सवालख नाती, उस रावन के दीया न बाती
रावण का इतना बड़ा परिवार होने पर भी उसके मरते समय कोई नहीं बचा था।
(भाव यह है कि बड़े परिवार का गर्व नहीं करना चाहिए।)

इक्का, वकील, गधा; पटना शहर में सदा, (पू.)
पटना में इक्का, वकील और गधा इन तीन की अधिकता है।

इक्के चढ़के जहां जाय, पैसे दैके धक्के खाय
इक्के की सवारी में बड़े हिचकोले लगते हैं। एक मुसीबत की चीज है।

इजारा उजाड़ा
जमींदार की जमीन जोत पर लेने से किसान बर्बाद हो जाता है।
(यह जमींदारी-प्रथा के जमाने की बात है। सं.)

इज्ज़त की आधी भली, बेइज्ज़त की सारी बुरी
सम्मान के साथ दी गई वस्तु थोड़ी भी अच्छी होती है

इज्ज़त के आगे माल क्या चीज है?
प्रतिष्ठा के सामने धन कोई वस्तु नहीं।

इज्ज़त वाले की कमबख्ती है
क्योंकि उसे तरह-तरह के खर्चे या झंझटें लगी रहती हैं।

इतना खाए जितना पचे
(1) आहार में संयम बरतना चाहिए।
(2) रिश्वतखोरों के लिए भी क.।

इतना झूठ बोलो जितना आटे में नमक
बोलना ही पड़े, तो झूठ उतना ही बोले जितना खप सके।

इतना नफा खाओ जितना आटे में नोन, (व्य.)
अधिक मुनाफ़ा खाना ठीक नहीं।

इतना पक्का कि बासी टिक्का
इतना भोजन बना कि बासी बच रहा।
टिक्का=मोटी रोटी।

इतनी तो राई होगी जो रायते में पड़े
इतना साधन तो है कि हमारा काम चल जाए।

इतनी भी अक्ल अजीरन होती है !
क्या इतनी थोड़ी अक्ल से ही तुम्हारा पेट फूलने लगता है? अर्थात तुम में तो थोड़ी भी सहज बुद्धि नहीं।

इतनी सी जान, गज भर की ज़बान !
जीभ के बातूनीपन की ओर संकेत है। जब कोई लड़का बड़ों के सामने बढ़-चढ़कर बातें करता है, प्रायः तब क.।

इत्तफाक बड़ी चीज है
एका बड़ी चीज है, उससे सब काम बनते हैं।

इत्तफाक में ही कुब्बत है
एका में ही बल है।

इधर काटा उधर पलट गया
दग़ाबाज के लिए कहते हैं।
(सांप के विषय में कहा जाता है कि वह काटते ही पलट जाता है, तभी उसका विष चढ़ता है।)

इधर क़िबला क़ुतुब, उधर खदीजा, मूतूं किधर?
इधर मक्का, उधर खदीजा की कब्र, मैं पेशाव करूं तो किधर?
दोनों ओर संकट।
(खदीजा मुहम्मद साहब की पत्नी का नाम था। उनकी जिस तरफ कब्र है, उस ओर और मक्का की ओर भी मुंह करके मुसलमान पेशाब नहीं करते।)

इधर गिरूं तो कुआं, उधर गिरूं तो खाई
(1) वचने की कोई सूरत नजर न आना।
(2) गहरे असमंजस में पड़ना।

इधर न उधर यह बला किधर
यकायक किसी नई विपत्ति के आने पर।

इनकी नाक पर गुस्सा रखा ही रहता है
जरा-जरा-सी बात पर नाराज होते हैं।

इनके चाटे रूख नहीं जमते
अर्थात वहुत ही धूर्त हैं।
(टिड्डियों के आक्रमण से पेड़ नष्ट हो जाते हैं। उसी से मुहावरा लिया गया है।)

इनके यहां तो चमड़े का जहाज चलता है
वेश्याओं के लिए क.।

इनको तो पत्थर मारे मौत नहीं
अर्थात वड़े निर्लज्ज हैं।

इनको भी लिखो
जब किसी विपय में औरों की तरह कोई स्वयं भी मूर्खता प्रकट करे, तब हंसी में क.।
(इस पर कथा है कि एक बार अकबर बादशाह ने बीरवल से पूछा कि संसार में अंधों की संख्या अधिक है या आंख वालों की। बीरवल ने जवाब दिया—जहांपनाह, अंधों की संख्या अधिक है। बादशाह ने कहा—साबित करो, कैसे? बीरबल तब एक मुंशी को साथ लेकर निकले और एक जगह सड़क पर कंकड़ चुनने लगे। जो आदमी वहां से निकलता, वही पूछता—'आप यह क्या कर रहे हैं?' इस पर बीरबल हरेक के लिए अपने मुंशी से कहते जाते, अच्छा इनका भी लिखो, यानी इनका भी नाम अंधों में लिखो। इसलिए कि ये देख रहे हैं कि हम क्या कर रहे हैं। फिर भी हमसे सवाल करते हैं। बीरबल ने जब बादशाह को वह सूची दिखाई, तो उनकी समझदारी पर वह बड़ा खुश हुआ।)

इन तिलों में तेल नहीं
अर्थात यहां से कुछ पाने की आशा मत रखो। बहुत धूर्त या कंजूस के लिए क.।

इन बेचारों ने हींग कहां पाई जो बगल में लगाई
जब कोई सीधा-सादा गरीब आदमी बदमाशों के चक्कर में पड़कर कोई जघन्य अपराध कर बैठे, तब क.।
(हींग की तेज गंध बहुतों को पसंद नहीं होती, कोई शरीर में लगाना पसंद नहीं करता।)

इन्शाअल्लाताला, बिल्ली का मुंह काला
प्रायः मजाक में उस समय क., जब किसी के मुंह से कोई बहुत भोंडी या हास्यजनक बात निकल जाए।
इन्शाअल्लाताला=ईश्वर ने चाहा तो।

इन्सान पानी का बुलबुला है
मानव-शरीर क्षणभंगुर है।

इन्सान में क्या रखा है?
मर जाने पर उसे कोई नहीं पूछता। अथवा वड़ी आसानी से चल बसता है।

इन्सान ही तो है
इस कारण उससे भूल होना स्वाभाविक है।

इनायते शाही किसी की मीरास नहीं
बादशाह की मेहरबानी किसी की बपोती नहीं, यानी वह किसी पर भी खुश हो सकता है।

इब्तिदा से इन्तहा तक
आदि से अंत तक।

इब्तिदाये इश्क़ है, रोता है क्या?
आगे आगे देखिए, होता है क्या?
किसी काम को शुरू करके जब कोई उसकी कठिनाइयों को देखकर झींकने लगे, तब क.।
इब्तिदा=प्रारंभ।

इराकी पर जोर न चला, गधी के कान उमेठे
ज़बर्दस्त से वश न चलने पर कमजोर पर गुस्सा।
इराकी=घोड़े की एक नस्ल, इराक देश का घोड़ा।

इलम का पढ़ना लोहे के चने चबाना है
विद्या सीखना एक बहुत कठिन काम है।

इल्म दर सीना, न दर सफ़ीना, (फा.)
ज्ञान तो मनुष्य के हृदय में रहता है, किताबों में नहीं

इल्लत जाए धोये-धोये, आदत कहां जाए?
गंदगी तो धोने से छूट सकती है, पर बुरी आदत नहीं छूटती।
इश्क़ के कूचे में आशिक़ की हज़ामत होती है
इश्क़ में आदमी बर्बाद हो जाता है।
इश्क़ छिपाने से नहीं छिपता
प्रेम को छिपाया नहीं जा सकता।
इश्क़, मुश्क़, खांसी शुश्क, खून-खराबा छुपता नहीं
प्रेम, कस्तूरी की गंध, सूखी खांसी और खून ये छिपते नहीं। पाठा.—इश्क, मुश्क, खांसी, खुशी...।
इश्क़ में आदमी के टांके उखड़ते हैं
यानी इतने कष्ट भोगने पड़ते हैं कि अक्ल दुरुस्त हो जाती है।
इश्क़ में शाह और गदा बराबर
प्रेम के मामले में राजा और रंक सब बराबर।
इश्क़ या करे अमीर या करे फ़क़ीर
अमीर इसलिए कि उसके पास ख़र्च करने को पैसा होता है, फ़कीर इसलिए कि उसे किसी बात का भय नहीं होता।
इश्क़े मजाज़ी से इश्क़े हक़ीकी हासिल होता है
मानवीय प्रेम से ईश्वरीय प्रेम प्राप्त होता है।
इसका दुख दिखावे मुख
चेहरे से इसका दुख प्रकट हो रहा है।
इस कान सुनी, उस कान निकाल दी
किसी की बात पर ध्यान न देना।
इसके पेट में दाढ़ी है
कम उम्र का होकर भी बड़ा सयाना है।
इस घर का बाबा आदम ही निराला है
इस घर की सब बातें ही अनोखी हैं।
इस तरह कांपता है, जैसे कसाई से गाय
बुरी तरह भयभीत है।
इसमें भी कुछ भेद है
अवश्य इसमें कुछ रहस्य है।
इस हाथ लेना, उस हाथ देना, (व्य.)
नकद सौदा। किसी काम का तुरंत फल मिलना।
इस्सर आए, दलिद्दर जाए
ऐश्वर्य आए और दरिद्रता भाग जाए। कामना। *(दीपावली की रात को आले-कोने साफ करती हुई हिंदू स्त्रियां उक्त वाक्य कहती हैं।)*
इस्सर से भेंटा नहीं, दलिद्दर से विगाड़
जानबूझकर हानि का काम करना।

ई

ईट का घर मिट्टी कर दया, (स्त्रि.)
बना-बनाया काम बिगाड़ दिया।

ईट का घर, मिट्टी का दर
बेतुका या बदनुमा काम।

दर=दरवाजा।

ईट की देवी, झामे का परसाद
जैसी देवी वैसी पूजा। जैसे के साथ तैसा व्यवहार।
झामा=ईटों का रोड़ा।

ईट की पांत, दम मदार
जब कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर काम करने को तैयार हो, तब उससे व्यंग्य में क. कि हां, बस मदार साहब की ताकत से ईटों की कतार में कोई करामात पैदा होने वाली है। *(कहा जाता है कि मकनपुर में शेख बदरुद्दीन उर्फ मदार साहब की कब्र पर एक पत्थर अधर में लटक रहा है।)*

ईट की लेनी, पत्थर की देनी
ईट का जवाब पत्थर से दिया जाता है।

ईंट से ईंट बज गई
घमासान लड़ाई छिड़ गई।

ईतर के घर तीतर, बाहर-बांधूं कि भीतर
किसी के घर जब कोई नई वस्तु आए और वह उसे सबको दिखाता फिरे, तब क.।
ईतर=इतर, क्षुद्र।

ईतर के घर तीतर, घड़ी बाहर घड़ी भीतर
दे.ऊ.।

ईद के चांद हो गए
अर्थात तुम्हारे तो दर्शन ही नहीं होते।
(मुसलमानों में रमज़ान महीने के समाप्त होने पर उत्सुकतापूर्वक चांद देखते हैं, पर वह बहुत कम दिखाई देता है। चांद देखना सब चाहते हैं, पर उसके दर्शन विरल होते हैं।)

ईद पीछे चांद मुबारक
शुभ अवसर के बाद बधाई। बे-मौके का काम।

ईद पीछे टर
ईद के बाद खुशियां मनाना व्यर्थ है।
काम तो मौके पर ही करना चाहिए।
(कई जगह ईद के दूसरे दिन एक मेला लगता है, जो टर का मेला कहलाता है। फैलन ने भी अपने अंग्रेज़ी-हिन्दी शब्दकोश में टर का अर्थ दिया है, ईद के बाद का।)

ईद पीछे टर, बरात पीछे धौंसा
ईद के बाद खुशियां मनाना और बरात के बाद बाजा बजाना दोनों ही व्यर्थ हैं।

ईद, बकरीद, शबरात कुटनी, दाहा करे हाय, हाय, फगुआ बिसनी
ईद, बकरीद और शबरात में कुटनी बुलाते हैं। घर में किसी की मौत होने पर हाय-हाय करते हैं और होली पर रंडियां नचाते हैं।
(मुसलमानों पर कटाक्ष।)

ईसा बदीने खुद, मूसा बदीने खुद, (फा.)
ईसा अपने धर्म पर चलें, मूसा अपने धर्म पर।
अपना धर्म ही सबसे श्रेष्ठ होता है।

उ

उंगलियां नचाना अच्छा नहीं, (लो. वि.)
(उंगलियां नचाना एक अशुभ कार्य मानते हैं।)

उंगली पकड़ते पहुंचा पकड़ना
थोड़ा सहारा मिलने पर किसी के गले पड़ जाना।

उकतानी कुम्हारी, नाखून से भट्टी खोदे
जल्दबाज कुम्हारिन फावड़े की जगह नाखून से ही मिट्टी खोदती है।
उतावलापन दिखाना।

उखली में मुसरा, माई-बाप विसरा, (पू.)
खाने-पीने को मिला नहीं कि फिर मां-वाप की भी याद नहीं आती।
(उखली में मुसरा से मतलब है कूटने के लिए धान होना।)

उखली में सिर दिया, तो मूसलों का क्या डर?
किसी कठिन काम को करने का बीड़ा ही उठाना, तो परेशानियों से क्या डरना?

उगत उगे मह भरे, विसवत ऊगे जाय, (कृ.)
देर से उगने वाली फसल के जल्दी उग आने पर वह सूख जाती है। जिस काम में जितना समय लगेगा, वह लगना चाहिए, तभी वह ठीक होता है।

उगले तो अंधा, खावे तो कोढ़ी, (लो. वि.)
घोर असमंजस की स्थिति।
(लोक-विश्वास है कि छछूंदर को पकड़ लेने पर सांप अगर उसे निगल ले, तो कोढ़ी हो जाता है और उगल दे तो अंधा।)

उजड़े घर का बलेंड़ा
ऐसा निकम्मा आदमी, जिसका घर बर्बाद हो चुका है।
वलेंड़ा=छप्पर के बीच में लगने वाली लंवी लकड़ी।

उजले उजले सब भले, उजले भले न केस।
नारि नवे न रिपु दवे, न आदर करे नरेस।
और सव वस्तुएं सफेद अच्छी होती हैं, पर बालों का सफेद होना अच्छा नहीं।
(क्योंकि बुढ़ापे में फिर न औरत ही कहना मानती है, न शत्रु भय खाता है, और न राजा ही आदर करता है।)

उज्ज्वल बरन अधीनता, एक चरन दो ध्यान।
हम जाने तुम भगत हो, निरे कपट की खान।
बगुले के लिए कहा गया है—देखने में साफ-सुथरे हो, विनम्र हो, एक पेर से खड़े हुए हो, लेकिन तुम्हारा ध्यान दो जगह बंटा हुआ है। हम समझे तुम कोई साधु हो, किंतु तुम तो बड़े कपटी निकले।
(बगुला नदी या तालाब के किनारे चुपचाप खड़े होकर यकायक मछली पकड़ लेता है। उसी से बगुला भगत मुहा. बना। दोहे में धूर्त्त या पाखंडी की ओर इशारा है।)

उज्रे गुनाह बदतर अज़ गुनाह, (फा.)
अपराध छिपाना अपराध करने से कहीं अधिक बुरा है।

उठकर फली सरीकी तो फोड़ती है ही नहीं
उठकर फली जैसी कोई वस्तु भी नहीं फोड़ती। अर्थात बड़ी आलसिन है।

उठ गए ना जानिए जो टट्टी दे गए बार
जो दरवाजे पर ताला लगाकर चला गया हो, उसे मरा नहीं समझ लेना चाहिए।

उठ जा तड़के उठ जा भाई, जित तन्ने दीखे लाभ भलाई
सुबह उठते ही आदमी को अपने काम-धंधे में लग जाना चाहिए।

उठती जवानी मांझा ढीला

निकम्मे या आलसी व्यक्ति के लिए क.।

मांझा=कांठी, शरीर के रंग-रेशे।

उठती पैंठ

चूकता अवसर।

(बाजार के उठ जाने पर सन्नाटा छा जाता हे और फिर कोई वस्तु नहीं मिलती—उसी से मुहावरा बना।)

उठती पैंठ आठवें दिन

बाजार के उठ जाने पर फिर आठवें दिन ही चीज मिलती है। मतलब अवसर से लाभ उठा लेना चाहिए।

(गांवों में प्रायः आठवें दिन बाजार लगता है और उसमें आवश्यक वस्तुएं बिकने आती हैं।)

उठते लात, वैठते घूंसा, (स्त्रि.)

किसी के साथ बहुत बुरा व्यवहार करना।

उठते ही [illegible] टूटी

कार्यारंभ करते ही विघ्न।

उठाऊ चूल्हा

ऐसा व्यक्ति जो परिवार के साथ एक जगह न टिके। प्रायः नौकरपेशा आदमी के लिए क.।

उठाओ मेरा मकना, मैं घर संभालूं अपना, (स्त्रि.)

कोई विवाहित स्त्री ससुराल में आते ही कह रही है—'हटाओ मेरा यह परदा, में अपना घर संभालूंगी।' (रौव जमाना)

उठा वबूला प्रेम का, तिनका चढ़ा अकास।
तिनका तिन में मिल गया, तिनका तिनके पास।

आत्मा के संवंध में कहा गया हे कि मरने पर देह पंचतत्वों में मिल जाती है और आत्मा ईश्वर में जाकर लीन हो जाती है।

'तिनका' के दो अर्थ हैं—सूखी घास का टुकड़ा और 'उसका'।

उड़ चल पंछी पिय के देश, (स्त्रि.)

किसी विरहिणी का कहना।

उड़द कहे मेरे माथे टीका, मो विन व्याह न होवै नीका

उड़द का विशेष महत्व है।

उड़द का महत्व। (हिंदुओं के यहां विवाह आदि में उड़द की विशेष आवश्यकता पड़ती है। 'माथे टीका' से मतलव उस सफेद दाग से है जो उड़द पर उसके अंकुरित होने के स्थान पर होता है।)

उड़द के आटे की तरह ऐंठते हैं

अर्थात वड़े अहंकारी हैं।

उड़दी उड़दों की भली, रस की आछी खीर।
लाज जो राखे पीव की, वह भी आछी वीर।, (ग्रा.)

वड़ी तो उड़द की, और खीर गन्ने के रस की अच्छी होती है, और फिर वह स्त्री भी अच्छी है, जो अपने प्रियतम का मान रखती है।

उड़ता गप्पा

मुफ्त का माल।

उड़ती उड़ती ताक चढ़ी

किसी उड़ती खवर का सच वन जाना।

ताक चढ़ना=(मु.) महत्व मिल जाना।

उड़ते के पर काटे है।

बहुत चालाक है।

उड़ भंभीरी, सावन आया

चल, उड़ भंभीरी, सावन आ गया। अर्थात जिस अवसर की प्रतीक्षा में तू थी, वह आ गया; अव आनंद मना।

भंभीरी=तितली, पंखी।

उढ़याइल सतुआ पितरन के दान, (पू.)

जो सत्तू उड़ गया वह पितरों को अर्पित। निकम्मी वस्तु किसी दूसरे के मत्थे मढ़कर एहसान करना।

मुफ्त का यश लूटना।

उढ़ली वहू बलैंड़े सांप दिखावे, (स्त्रि.)

दुश्चरित्र स्त्री छप्पर में सांप वतलाती है।

मतलव—वहाना करके घर से भाग निकलना चाहती है। जव कोई काम से बचने का झूठा वहाना करे, तव क.।

उढ़ली=पर-पुरुष से प्रेम करने वाली विवाहिता स्त्री।

उत औखाद कुछ काम न आवे, मौत पकड़ जी जिसका लेवे

मौत के सामने छोटे-वड़े किसी की नहीं चलती।

औखाद=औक़ात (अ.) हैसियत।

उतका जाना नाहीं आछा, जित गुंडन का होने बासा

जहां गुंडे रहते हों, वहां नहीं जाना चाहिए।

उतको भूल न जा रे भाई, जित होती हो मार-पिटाई

लड़ाई-झगड़े के स्थान पर भूलकर भी न जाए।

उत तू वुवा वाजरा भाई, जित होवे थल की मुकताई।

खूब जुती हुई भुरभुरी जमीन में ही बाजरा बोना चाहिए।

मुकताई=मुकतास, खुलाव। (मुक्त से शव्द बना हे।)

उत तेरा जाना मूल न सोहे, जो ताने देखत कूकर होवे

ऐसी जगह कभी नहीं जाना चाहिए, जहां लोग तुम्हें देखते ही कुत्ते की तरह काटने दौड़ें।

ताने=तुझे।

उत तेरा जाना निपट भलेरा, जित होवे तेरे मिंत का डेरा।
जहां मित्र हों, वहीं जाना चाहिए।

उत दाता देवे उसे, जो ले दाता नाम।
इत भी सगरे ठीक हों, उसके करतब काम।
भगवान का नाम लेने से परलोक में भी लाभ होता है और इस लोक में भी।

उत भी तुम मत बैठो प्यारे, जित बैठे हों बैरी सारे
जहां तुम्हारे शत्रु बैठे हों, वहां नहीं जाना चाहिए।

उत मत कभी तू जारे मीता, जित रहता हो सिंह और चीता
जहां शेर और चीतों का वास हो, वहां कभी न जाना चाहिए।

उत मत कभी न बैठ तू, जित कुन्यायी लोग।
न्याव भूल कुन्याव का, बांधे मिलकर जोग।
जहां न्याय की जगह अन्याय हो रहा हो, वहां कभी न जाए।

उत मत गेहूं बुवा रे चेले, जित हों थल पाथर और ढेले
जिस जमीन में पत्थर और ढेले हों, वहां गेहूं नहीं बोना चाहिए।

उत मत रो अपना दुख जाकर, जित आवें बैरी उमड़ाकर
ऐसी जगह, जहां शत्रु बैठे हों; जाकर अपना दुखड़ा नहीं रोना चाहिए।

उतर गई लोई, तो क्या करेगा कोई ?
जिसकी इज़्ज़त चली गई, उसे फिर किस बात का डर? निर्लज्ज के लिए क.।
लोई=ऊनी चादर।
लोई उतर जाना=मु. नंगे हो जाना; इज़्ज़त चली जाना।

उतरा कबीर सराय में, गठकतरे के पास।
जस करसी तस पावसी तू, क्यों भयो उदास।
गठकतरे से भेंट होने पर अगर वह जेब काट ले, तो इसमें उदास होने की क्या बात ? जो जैसा करेगा, वैसा फल पाएगा।

उतरा घाटी हुआ माटी
गले के नीचे उतरकर अन्न मिट्टी हो जाता है।
(मृत शरीर के लिए भी कह सकते हैं। श्मशान में जाकर मिट्टी हो जाता है।)

उतरा छितरा जो हुआ, बाकी सार न होय।
साथ कहे रे बालके, लाख जतन कर लेय।
एक बार जिसकी प्रतिष्ठा चली जाती है, वह फिर नहीं संभलता; चाहे लाख प्रयत्न करो।

उतरा शहना, मर्दक नाम
पद से अलग हुआ कोतवाल नामर्द कहलाने लगता है। पद से ही आदमी की प्रतिष्ठा होती है।

उतरे जी से चीज जो, बाकी सार न होय।
तू ऐसा मत कीजियो, जगत बिसारे तोय।
मन से उतरी चीज का फिर कोई मूल्य नहीं रहता। इसलिए तुम्हें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए कि लोग तुम्हें भूल जाएं, अर्थात तुम उनके मन से उतर जाओ।

उत से अंधा आय है, इत से अंधा जाय।
अंधे से अंधा मिला, कौन बतावे राय।
जहां दो मूर्ख मिल जाएं, वहां कौन किसे समझाए?

उत ही भला है बैठना, जित करके शुभ ज्ञान।
मुल्ला पंडित बैठ कर, बांचे बेद पुरान।
जहां ज्ञान की बातें हो रही हों और वेद-पुराणों का पाठ हो, वहीं बैठना चाहिए।

उतावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा
उतावला पागल होता है। धैर्य वाला पुरुष ही गंभीर कहलाता है।

उती के निन्नानवे, बारह पंजे साठ
मूर्ख के लेखे निन्नानवे और साठ बराबर होते हैं।

उत्तम खेती मद्धम बान, निखद सेवा भीख निदान
खेती करना सबसे उत्तम है, फिर व्यापार; नौकरी बुरी चीज है और भीख मांगना तो सब से बुरा है।
निखद=निकृष्ट।
(मराठी में इसका एक रोचक रूप सुनने को मिलता है—उत्तम शेती मध्यम व्यापार, कनिष्ट चाकरी; निदान भीक, न मिले भीक तर वैद्यगिरी शीक।)

उत्तम गाना, मध्यम बजाना।
कंठ संगीत सब से श्रेष्ठ, उसके बाद वाद्य।

उत्तम से उत्तम मिले, मिले नीच से नीच।
पानी से पानी मिले, मिले कीच से कीच।
जो जैसा होता है, वह वैसे ही संगत करता है।

उत्तर की ही स्त्री, दक्खिन ब्याही जाय।
भाग लगावे जोग जब, कुछ ना पार बसाय।
कोई उत्तर की स्त्री दूर देश दक्षिण में ब्याही जाए, तो इसके लिए कोई क्या कर सकता है? यह सब तो भाग्य की बात है।

उत्तर गुरु, दखन मां चेला, कैसे विद्या पढ़े अकेला ?
गुरु कहीं हो और चेला कहीं हो, तो फिर पढ़ाई तो हो चुकी।

उत्तर जाव कि दक्खन, वही करम के लक्खन

निकम्मे आदमी की अकर्मण्यता दूर नहीं होती, वह कहीं भी जाए।

(प्र. प्रा.—जाव पूत दक्खन...।)

उत्तर रहे बतावे दक्खन, वाके आहे नाहीं लक्खन।

जो कहे कुछ और करे कुछ, ऐसे आदमी से सतर्क रहना चाहिए।

उत्तरा हार जो बरसा होवे, काल पिछोकर जाकर रोवे

उत्तरा नक्षत्र में वर्षा होने से काल पिछवाड़े बैठकर रोता है, अर्थात फसल अच्छी होती है।

(उत्तरा नक्षत्र भाद्र मास के अंत में लगता है। इन दिनों की वर्षा गेहूं की फसल के लिए बहुत अच्छी मानी जाती है। फैलन ने यह कहावत गलत लिखी है। उत्तरा की जगह 'उत्तर' लिखा है। और उसका अर्थ 'नार्थ' किया है। हिन्दी के कुछ कहावत संग्रहों में उसका अंधानुकरण कर दिया गया है। इसी प्रकार की एक और कहावत है—'बरस लगीं ऊतरा, गेहूं न खायें कूतरा।')

उथली रकावी, फुलफुला भात, लो पंचों हाथ ही हाथ

खिलाने-पिलाने में जब कोई कंजूसी करे, तब उसके प्रति व्यंग्य में क.।

(किसी कंजूस ने विवाह के अवसर पर उथली थालियों में फूला-फूला भात परोसा। वह इतना कम था कि लोगों का उससे पेट ही नहीं भरा।)

उद्यम से दलिद्दर घटे

परिश्रम या काम-धंधे से दरिद्रता दूर होती है।

उधार का खाया कोई नहीं भूलता।

उधार लिया सबको याद रहता है।

उधार खाना और फूस का तापना बराबर है

फूस की आग से जैसे बहुत देर तक नहीं तापा जा सकता, वैसे ही उधार के पैसे से भी अधिक दिनों काम नहीं चलाया जा सकता।

उधार खाए बैठे हैं।

किसी काम को करने के लिए तुले बैठे हैं।

उधार दिया, गाहक खोया, (व्य.)

क्योंकि पैसा मांगने से वह नाराज होता है या फिर दुबारा आता नहीं।

उधार दिया गाहक खोया, सदका दिया रद बला, (व्य.)

उधार देने से गाहक हाथ से जाता है, दान देने से पुण्य होता है।

(मतलब, उधार की अपेक्षा किसी को मुफ्त में चीज देना अच्छा।)

उधार दीजे, दुश्मन कीजे, (व्य.)

पैसा उधार देना जानबूझकर लोगों को अपना दुश्मन बनाना है, क्योंकि वापस मांगने से बुराई पैदा होती है।

उधार देना, लड़ाई मोल लेना, (व्य.)

दे.ऊ.।

उधार बड़ी हत्या है, (व्य.)

उधार लेना एक मुसीबत है।

उधेड़ के रोटी न खाओ, नंगी होती है, (लो. वि.)

उधेड़कर रोटी खाना अच्छा नहीं, उससे बदनामी होती है।

उनके पेशाब में चिराग चलता है

यानी बड़ा रोबदाब है।

उनईस बीस तो भइले चाहे, (भो.)

कम या ज्यादा तो हर चीज होती ही है। अथवा दो वस्तुओं में थोड़ा-बहुत अंतर तो होगा ही।

उन्नीस बीस का फर्क तो होता ही है

दे. ऊ.।

उपड़े झांट मदार की, शुजा चले अजमेर

कोई आदमी अगर (मकनपुर न जाकर) अजमेर जाता है, तो इसमें मदार साहब का क्या बिगड़ता है?

(अजमेर में मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है और मकनपुर में मदार साहब की। दोनों ही स्थानों पर मुसलमान बड़ी संख्या में ज़ियारत के लिए जाते हैं।)

उर्दू का मुहावरा दिल्ली पर खतम है

(1) बढ़िया मुहावरेदार उर्दू दिल्ली में ही सुनने को मिलती है। अथवा

(2) दिल्ली में जो (उर्दू) ज़बान बोली जाती है, उसे ही मुहावरेदार मानना चाहिए।

उलझ जाएगा तो सुलझ ही रहेगा

घर-गृहस्थी के धंधे में लग जाएगा, तो कुछ सुधर ही जाएगा।

(प्रायः अविवाहित आवारा लड़के के लिए क.)

उलझना आसान, सुलझना मुश्किल

किसी झगड़े में पड़ना तो आसान होता है, किंतु उससे छुटकारा पाना मुश्किल होता है।

उल्टा चोर कोतवाल डांटे

किसी की हानि करके उल्टा उसी पर रोब जमाना।

(प्र. पा.—उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।)

उल्टी खोपड़ी अंधा ज्ञान

मूर्ख आदमी। कहा जाय कुछ, समझे कुछ।

उल्टी गंगा पहाड़ को चली

जहां जिस वस्तु की आवश्यकता नहीं, उसका वहां जाना, अथवा असंभव घटना के लिए भी कह सकते हैं।

उल्टी गंगा बहाना

उल्टा काम करना।

उलटी टांगें गले पड़ीं

उल्टे विपत्ति में पड़ गए।

उल्टी टोपी, गुड़ चने

बच्चों की तुकबंदी जिसका वे खेल में प्रयोग करते हैं। *(उल्टी टोपी लगा रखी है, चलो गुड़-चने खिलाओ।)*

उल्टी वाकी रीत है, उल्टी वाकी चाल।
जो नर भौंड़ी राह में, अपना खोवे माल।

जो आदमी गलत काम में पैसा खर्च करे, समझना चाहिए, उसकी अकल मारी गई है।

उलटी माला फेरना, (लो. वि.)

(1) किसी का बुरा चाहना। कोसना।
(2) उल्टा काम करना।
(1) किसी का बुरा चाहना। कोसना।
(2) उल्टा काम करना।

उल्टी सैफ़ी पढ़ना, (मु., लो.वि.)

दे.ऊ.।
(सैफ़ी एक प्रकार का मारण-मंत्र है, जिसका प्रयोग शत्रु के नाश के लिए किया जाता है। इसमें एक नंगी तलवार सामने रखकर मंत्र पढ़कर फूंकते हैं, साथ ही शत्रु का नाम लेते जाते हैं।)

उसकी गिरह का क्या जाता है ?

उसका क्या बिगड़ता है ?

उसकी जात वह दाहू-ला शरीक है

वह (ईश्वर) अद्वितीय है।

उसकी टांगें उसी के गले पड़ीं

अपनी करतूत से स्वयं ही विपत्ति में फंस जाना। अथवा दूसरे को फंसाने जाकर स्वयं फंस जाना।

उसकी तूती बोल रही है

अर्थात रोबदाब है। सब उसकी इज्ज़त करते हैं। *(तूती बोलना एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है ख्याति या प्रतिष्ठा बढ़ना।)*

उसकी सीख न सीखियो, जो गुरु से फिर जाय।
विद्या सूं खाली रहे फिर पाछे पछताय।

जो गुरु को ही धोखा दे, उससे सतर्क रहना चाहिए। ऐसा आदमी विद्या नहीं सीख पाता और पीछे पछताता है।

उस कूकर से बचकर रहे, जाको जगत कटखना कहे

बदनाम आदमी से बचना चाहिए।

उसके आगे सीस नवावे, बड़ा बड़ेरा जिसको पावे

बड़े का सम्मान करना चाहिए।

उसके कान पर एक जूं नहीं चलती

वह किसी की बात नहीं सुनता।
(प्र. पा.—उसके कान पर जूं नहीं रेंगती।)

उसके भाग बड़े अलबेले, जो दौलत में खावे खेले।

वह सचमुच भाग्यशाली है, जिसका जीवन, सुख-चेन से बीते।

उसके राज में गायन भी गाभ डाले

गर्भवती गर्भ छोड़ देती है। मतलब बड़ा दबदबा है।

उसको तो पत्थर मारे मौत नहीं

बड़ा निर्लज्ज है।

उसको वहां मारे, जहां पानी भी न मिले

दुष्ट के लिए क.।

उसको सब की फ़िक्र है

भगवान सबकी ख़बर लेता है।

उसको सीख न दे कभी, जो हो कहर नीच।
लोह भेख नाहीं धंसे, कहूं पाथर बीच।, (ग्रा.)

नीच को शिक्षा देना वैसा ही व्यर्थ है, जैसा पत्थर में लोहे की कील ठोकने का प्रयत्न करना।

उस जातक पर प्यार जताओ, मात-पिता विन जिसको पाओ

अनाथ पर दया करनी चाहिए।

उस जातक से करो न यारी, जिस की माता हो कलहारी

जिसकी मां झगड़ालू हो, उस लड़के से प्रेम नहीं करना चाहिए।

उस दिन भूलें चौकड़ी, वली, नबी औ पीर।
लेखा लेवे जिस दिना, कादर पाक क़दीर। (मु.)

ईश्वर जिस दिन कर्मों का लेखा लेने बैठेगा उस दिन क्या संत, क्या पैग़ंबर और क्या पीर सभी अपनी चौकड़ी भूल जाएंगे। कादर, पाक, क़दीर—सर्वशक्तिमान, पवित्र और समर्थ ईश्वर के विशेषण।

उस नर के भी एक दिन, पड़े गले में फांद।
जिसने चोरी लूट पर लई कमरिया बांध।

चोरी और लूट करने वाला आदमी कभी न कभी पकड़ा ही जाता है।

उस नर को ना सीख सुहावे, नेह फंद में जो फंस जावे
प्रेम-फंद में पड़े आदमी को सीख अच्छी नहीं लगती।

उस नर से तुम मिलो न कोई, जाको देखो कपटी धोई
कपटी और धोखेबाज का साथ नहीं करना चाहिए।

उस पुरखा का नाह भरोसा, जो ले चीज दिखावे टोंसा
जो चीज लेकर न लौटावे, ऐसे आदमी का भरोसा नहीं करना चाहिए।

उस पुरखा की बात पर, नाह भरोसा राख।
बार-बार जो बोले झूठ, दिन भर मां सौ लाख।
जो हमेशा ही झूठ बोलता रहा हो, उसका विश्वास न करें।

उस बस्ती में तू कभी, कीजो मत विश्राम।
जो ही नामी देश में, ठग चोरों का ग्राम।
ठग और चोरों की बस्ती में कभी नहीं जाना चाहिए।

उससे तू मिल दौड़ कर, जो नर ज्ञानी होय।
दाना दुश्मन भी भला, कह गए यह सब कोय।
हमेशा समझदारों के पास बैठना चाहिए। पढ़ा-लिखा दुश्मन भी अच्छा होता है।

उसी की जूती, उसी का सिर
उसी के साधनों से उसी की हानि। किसी को मूर्ख बनाकर जब उसका पैसा खाया जाए, प्रायः तब क.।

उसी घड़ी तू द्वार पे जो बेरी घर जाए।
ऐसा न हो धोये से, बैठे पैर जमाय।
अर्थ स्पष्ट है।
धोये से=धोखे से।

उसी राह चल तू जो गुरु तुझे बताय।
जो विद्या के थान पर तुरत ठिकाना पाय।
स्पष्ट।

उसी रूख पर है चढ़ा, उसी की जड़ कटवाय।
वह मूरख तो एक दिन, गिर दबकर मर जाए।
स्पष्ट।

उसे तो धोनी भी नहीं आती
शौच के लिए पानी लेना भी नहीं जानता।
(इतना अनाड़ी है।)

उस्ताद, हज्जाम, नाई, मैं और मेरा भाई, घोड़ी और घोड़ी का बछेड़ा, और मुझको तो आप जानते ही हैं।
किसी वस्तु के बंटते समय, उसे घुमा-फिराकर कई नामों से लेना।
(एक नाई किसी दावत में गया। वहां लोगों ने पूछा—तुम कै आदमी हो ? नाई ने उपर्युक्त प्रकार से सात की संख्या बताई, जब कि वास्तव में वह अकेला ही था।)

ऊ

ऊंघते को ठेलते का बहाना

कोई स्वयं ऊंघ कर गिर रहा था। इतने में दूसरे का धक्का लगा। तब उसे कहने का मौका मिल गया कि तूने मुझे पटक दिया।

(जब किसी काम के बिगड़ जाने का सारा दोष किसी दूसरे के मत्थे मढ़ दिया जाए, जब कि वह काम अधिकांश में अपनी ही भूल से बिगड़ा है, प्रायः तब क.।)

ऊंच नीच में बोई क्यारी, जो उपजी सो भई हमारी

ऊवड़-खावड़ जमीन में खेती करने से जो मिल जाए, उसे ही बहुत समझना चाहिए।

ऊंच बड़ेरी, खोखर बांस, ऋण खैलों बारह मास

बारहों महीने उधार के पैसे पर जीवन-निर्वाह करना वैसा ही है, जैसा कि ऊंचे छप्पर में खोखले बांस लगाना, (जो शीघ्र टूट जाएंगे।)

ऊंची दूकान, फीका पकवान।

दूकान की तड़क-भड़क तो बहुत, पर मिटाई मिष्ठता शून्य। नाम बड़ा, काम छोटा।

ऊंचो ऊंचों सब चलें, नीचो चले न कोय।
तुलसी नीचो वह चले, जो गर्व से ऊंचो होय।

सब बड़े बनकर रहना चाहते हैं, अपने को छोटा समझना कोई पसंद नहीं करता। जो गर्व से रहित है, वही अपने को छोटा समझता है।

ऊंट का पाद, न जमीन का न आसमान का

ऐसी वस्तु या ऐसा काम, जिससे कोई मतलब हल न हो। निकम्मे आदमी के लिए भी कहेंगे।

ऊंट किस कल बैठे

दे. देखें ऊंट किस करवट बैठे।

ऊंट की चोरी और झुके-झुके

किसी बड़े काम को चुपचाप नहीं किया जा सकता; वह प्रकट हो ही जाएगा। जैसे ऊंट की चोरी चुपचाप नहीं की जा सकती।

ऊंट की चोरी सिर पर खेलना

कोई बड़ी चोरी छिपती नहीं। ऊंट को चुराकर कोई कहां रखेगा ?

ऊंट की पकड़, कुत्ते की झपट

ये दोनों ही खतरनाक होते हैं।

ऊंट की पकड़, कुत्ते की झपट, खुदा इनसे बचाए

ईश्वर दोनों से बचाए, क्योंकि दोनों ही बुरे हैं।

ऊंट के गले में बिल्ली

(1) दो बेजोड़ चीजों का मेल, जैसे किसी बूढ़े का कम उम्र लड़की से विवाह।

(2) किसी काम में ऐसा अड़ंगा लगा दिया जाए कि वह हो ही न सके।

(इसकी एक कथा है—किसी समय एक आदमी का ऊंट खो गया। उसने मनौती की कि अगर मिल गया, तो उसे वह दो पैसे में बेच देगा। संयोग से ऊंट घर वापस आ गया। तब ऊंट के गले से उसने एक बिल्ली बांधी और उस बिल्ली के दाम इतने अधिक रख दिए जितने ऊंट के भी नहीं थे। साथ ही यह शर्त भी लगा दी कि जो भी आदमी दो पैसे में ऊंट खरीदेगा, उसे बिल्ली भी खरीदनी पड़ेगी। उसकी इस शर्त पर कोई भी ऊंट खरीदने को तैयार नहीं हुआ। इस तरह उसका ऊंट बच गया और बात भी रह गई।)

काटा खाया।)

ऊंट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं जाता, तब तक ही जानता है 'मुझ से ऊंचा कोई नहीं'

जब तक किसी घमंडी व्यक्ति की अपने से अधिक योग्य व्यक्ति से भेंट नहीं होती, तब तक उसका गर्व चूर नहीं होता।

ऊंट जब भागे तब पच्छम को

ऊंट रेगिस्तान का जीव है, इसलिए क.।

प्रायः मूर्ख और दुराग्रही के लिए प्र. पा.।

ऊंट डूबे, खच्चर थाह मांगे

जो काम बड़ों से न हो सके, उसे जब छोटे करने का साहस करें तब क.।

ऊंट डूबे मेंढकी थाह मांगे।

दे. ऊ.।

ऊंट तो दगते थे, **मकड़ी (या मेंढकी) ने भी टांग फैला दी।**

वड़ों की देखादेखी कोई काम करना।

(जानवरों के बीमार होने पर गरम लोहे की सलाख उनके बदन से छुआते हैं। उसे ही दागना कहते हैं। जानवरों पर निशान बनाने के लिए भी उन्हें दागा जाता है।)

ऊंट बड़बड़ाता ही लदता है

ऐसे व्यक्ति के लिए क., जो काम करते समय हमेशा बड़बड़ाए।

(ऊंट की आदत होती है कि लदते समय बलबलाता है।)

ऊंट बलबलाने से लड़ता है

ऊंट लड़ते समय बलबलाता है। व्यर्थ बड़बड़ाने वाले से क.।

ऊंट बिलाई ले गई, 'हां जी, हां जी' कीजे।

बड़े आदमियों की हां में हां मिलाना। अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी की गलत बात का समर्थन करना।

किसी ने कहा—'ऊंट को बिल्ली उठा ले गई', तो दूसरे ने जवाब दिया—'हां जरूर उठा ले गई। मैंने भी देखा।'

(ऊंट बुड्ढा हुआ, पर मूतना न आया

जब किसी बड़ी उम्र के व्यक्ति में काम करने का शऊर न हो, तब क.।)

ऊंट मक्के ही को भागता है

दे.—ऊंट जब भागे तब...।

ऊंट मक्खी को भी हांकता है

अर्थात ऊंट भी मक्खी जैसे क्षुद्र जीव से अपनी रक्षा करता है।

ऊंट मरा कपड़े के सिर

किसी एक मद में हुई हानि को दूसरी मद में अधिक मुनाफा लेकर पूरा कर लेना।

(कथा है कि किसी एक व्यापारी का ऊंट मर गया। तब उसके दाम उसने कपड़े के माल पर चढ़ा दिए और इस प्रकार क्षतिपूर्ति कर ली।)

ऊंट रे ऊंट तेरी कौन कल सीधी

ऐसे आदमी के लिए क., जिसकी नस नस में शरारत भरी हो। बेडौल के लिए भी कहा जाता है।

ऊंट सा कद तो बढ़ा लिया, पर शऊर जरा भी नहीं

किसी पिता का अपने बेशऊर लड़के से कथन।

ऊख से गंड़ेरी प्यारी, गुड़ से प्यारा गांड़ा।
मां-बहिन से जोरू प्यारी, जिससे होय गुजारा।

स्पष्ट।

गांड़ा=एक प्रकार की मिठाई गट्टा, जो कन्नौज का प्रसिद्ध है।

ऊजड़ खेड़ा, नाव न बेड़ा

ऐसा उजाड़ गांव जहां कुछ भी न हो; न नाव, न बेड़ा।

(फैलन ने इस कहावत को उक्त प्रकार से ही लिखा है। पर इसका शुद्ध रूप—ऊजड़ खेड़ा—नाव नवेड़ा जान पड़ता है। गांव तो उजाड़ है पर नाम है उसका 'नवेला'।)

ऊजड़ गांव में मुरार महतो

जिस गांव में कोई अन्य महत्वपूर्ण वस्तु नहीं होती, वहां कोल्हू को ही बड़ी अजीब चीज मानते हैं।

(फैलन ने मुरार का अर्थ कोल्हू किया है।)

ऊजड़ में तो गूजर नाचे, ढाक देख बैरागी।
खीर देख के बामन नाचे, तन-मन होवे राजी।

गूजर एक गोपालक जाति है। वह जंगल देखकर प्रसन्न होती है, क्योंकि वहां उसे अपने ढोर चराने का सुभीता रहता है। ढाक खंजड़ी की तरह का एक वाद्ययंत्र है, जिसे बैरागी बजाते हैं। वह ढाक देखकर खुश होता है। (यहां ढाक से मतलब ढाक के जंगल से भी हो सकता है।) ब्राह्मणों की मिष्ठान्नप्रियता तो प्रसिद्ध है ही, खीर देखकर उनका तन-मन प्रफुल्लित हो जाता है।

ऊजड़ हो घर सास को, बैर करै हर बार।
पीहर घर सूयस बसे, जब लग है संसार।, (स्त्रि.)

सास के अत्याचार से ऊबी हुई किसी बहू का कथन। पीहर=मायका। सूयस=सुयश।

ऊतर-पातर, मैं मियां तू चाकर
लड़कों के खेल की एक तुकबंदी। अपने ऊपर चढ़ी हुई दाई को चुका देने पर उसका प्रयोग करते हैं।

ऊधो को लेन, न माधो का देन
किसी से कोई मतलब न होना।

ऊधो बन आए की बात (हि.)
किसी काम में अप्रत्याशित रूप से सफलता मिलने पर क.।
(ऊधो कृष्ण के मित्र और सखा थे, पर यहां यह नाम साधारण व्यक्ति के नाम के रूप में ही प्रयुक्त हुआ है।)

ऊपर का धड़ भाई और नीचे का अलखुदाई
कपटी के लिए क. जो ऊपर से भाई जैसा व्यवहार करे, पर मन में क्या है, ईश्वर ही जान सकता है।

ऊपर से 'राम' 'राम', भीतर कसाई का काम
कपटी और धूर्त्त।

ऊसर खेत में केसर
(1) मूर्खतापूर्ण कार्य, केसर की खेती ऊसर जमीन में नहीं हो सकती। उसके लिए तो बढ़िया उपजाऊ भूमि चाहिए। अथवा
(2) ऊसर भूमि में केसर जैसी मूल्यवान वस्तु पैदा हो गई !
एक आश्चर्य की बात।
(अयोग्य घर में कोई योग्य लड़का पैदा हो जाए, तब कहा जा सकता है।)

ए

एक अंडा वह भी गंदा

एक चीज और वह भी बेकार। प्रायः निकम्मे और अकेले लड़के के लिए क.।

एक अकेला, दो का मेला

एक से दो भले होते हैं। अच्छा लगता है।

एक अकेला, दो से ग्यारह

एक आदमी तो हमेशा एक ही रहता है, पर एक की जगह दो इकट्ठे हो जाएं, तो उनमें ग्यारह की शक्ति आ जाती है। *(एक के आगे एक की संख्या और लिखने से ग्यारह होते हैं।)*

एक अनार सौ बीमार

एक वस्तु के बहुत से चाहने वाले। किसे-किसे दी जाए? *(समा.—अकेली हरदसिया सबरा गांव रसिया।)*

एक असामी सौ अर्जियां

एक अपराधी की ओर से सौ प्रार्थना पत्र।
बेतुका काम।

एक अहीर की एक ही गाय, ना लागे तो छूछी जाय

एक अहीर की एक ही गाय है, जब कभी वह दूध नहीं देती, तो बर्तन खाली रहता है। मतलब, किसी वस्तु का एक या अकेला होना अच्छा नहीं। घर के एकमात्र कमाने वाले के लिए कह सकते हैं। वह कमा कर न लाए तो सबको भूखा रहना पड़े।

एक अहारी सदा व्रती, एक नारी सदा जती

दिन में एक बार भोजन करने वाला सदैव संयमी और जिसके केवल एक स्त्री हो वह सदैव ब्रह्मचारी माना जाता है।

एक आंख फूटती है, तो दूसरी पर हाथ रखते हैं

इसलिए कि दूसरी न फूट जाए। एक हानि होने पर मनुष्य दूसरे से बचने का उपाय सोचते हैं।

एक आंख मटर का बिया, वह भी आंख भवानी लिया

बेचारे के मटर के बीज जितनी एक आंख थी, वह भी भवानी ने ले ली, अर्थात चेचक में मारी गई। हानि पर हानि होना।

एक आंख में लहर-बहर, एक आंख में खुदा का कहर

मतलब काने से है। ऐसे व्यक्ति के लिए भी कहते हैं, जो ऊपर से तो बड़ा भला जान पड़े, पर भीतर से दुष्ट हो।

एक आंख से रोवे, एक से हंसे

रोने का झूठा स्वांग करने वाला। प्रायः लड़कों के लिए क.।

एक आम की दो फांकें

दो सगे भाई जिनमें आपस में बड़ा प्रेम हो।
दो एक-सी वस्तुओं के लिए भी क.।

एक आवे के बर्तन हैं

सब एक से हैं। एक ही हाथ के बने हैं। अथवा एक ही परिवार के हैं।
(आवा या अवा उस भट्ठी को कहते हैं, जिसमें कुम्हार अपने मिट्टी के बर्तन पकाता है।)

एक इतवार के व्रत से जनम का कोढ़ नहीं जाता

कोई एक पुरानी बीमारी किसी तरह की भी हो—एक-दो दिन के प्रयास से दूर नहीं होती।
(कथा है कि कृष्ण के पुत्र को कोढ़ हो गया था। वह सूर्य की पूजा से दूर हुआ। इसलिए कोढ़ होने पर लोग सूर्य की मानता मानते हैं और इतवार को व्रत रखते हैं; क्योंकि वह सूर्य का दिन है।)

एक ओर चार वेद, एक ओर चतुराई

चतुराई बड़ी चीज है। वेद-पुराणों अथवा पुस्तकों का ज्ञान उसके सामने कोई वस्तु नहीं।

तुल.—एक ओर चार वेद, एक ओर लवेद।

लवेद=झूठ।

एक कहो न दस सुनो

न किसी को एक गाली दो, न दस सुनो। तुम जिसके साथ जैसा व्यवहार करोगे, वैसा दूसरे भी तुम्हारे साथ करेंगे।

एक और एक ग्यारह

एक ही जगह दो आदमी बड़ा काम कर सकते हैं। संघ में बड़ी शक्ति है।

दे.—एक अकेला दो से...।

एक का तीते तीनों तीत

एक के कड़वे होने पर सभी कड़वे हो जाते हैं।

एक का स्वभाव बुरा होने से दूसरे भी वैसे ही बन जाते हैं।

एक कान बहरा करो, एक कान गूंगा

कोई तुम्हारी बुराई करे, तो उस पर ध्यान मत दो।

('कान गूंगा' से यहां मतलब मुंह बंद रखने से ही है।)

एक कान सुनी दूसरे कान उड़ाई

किसी की बात पर ध्यान न देना।

एक का मुंह शक्कर से भरा जाता है, सौ का मुंह ख़ाक से भी नहीं भरा जाता

थोड़े आदमियों का अधिक अच्छा आदर-सत्कार किया जा सकता है।

एक की दारू दो, दो की दारू चार

एक (उद्धत आदमी) को ठीक करने के लिए दो चाहिए और दो को ठीक करने के लिए चार।

दारू=दवा। शराब।

एक की सैर, दो का तमाशा; तीन का पिटना, चार का स्यापा

यात्रा तो अकेले ही ठीक रहती है, तमाशे में दो, तीन में लड़ाई-झगड़े का डर रहता है, और जहां चार हुए, समझो वहां जनाज़ा निकला।

पाठा.—एक की सैर, दो का तमाशा; तीन का मेला, चार का झमेला।

एक के दूना से सौ के सवाये भले (व्यं.)

अधिक मुनाफ़े पर कम माल बेचने की अपेक्षा कम मुनाफ़े पर अधिक माल बेचना अच्छा। वह कुल मिलाकर अधिक हो जाता है।

एक को दैहै रुतबा-ए-आली, एक को दैहै खुरपा और जाली

ईश्वर किसी को ऊंचा पद देता है, किसी को गरीब-मजदूर बनाता है।

खुरपा=घास खोदने का औजार।

जाली=मछली पकड़ने का जाल।

एक को साई, एक को बधाई

(1) देने का वादा करना किसी एक से और दे देना किसी दूसरे को।

(2) आश्वासन देकर किसी का काम करना, किसी का न करना।

(3) किसी को यों ही टरका देना, किसी की खातिरदारी करना।

साई=वह धन जो किसी काम के लिए पेशगी दिया जाता है। बयाना।

एक कौड़ी गांठी, चूड़ा पहनूं कि माठी, (स्त्रि.)

गांठ में काफी पैसा न होते हुए भी तरह-तरह के काम करने या वस्तुएं खरीदने की इच्छा करना।

चूड़ा=कलाई में पहिनने का कांच या धातु का गहना।

माठी=बांह में पहिनने का गहना।

एक खता, दो खता, तीसरी खता मादरबख्ता

एक भूल को भूल समझा जा सकता है (वह क्षम्य होती है), दूसरी बार की भूल को भी भूल समझा जा सकता है। पर यदि कोई तीसरी बार भी वैसी ही भूल करे, तो समझना चाहिए कि यह उसका स्वभाव है।

मादरबख्ता=मां के गर्भ से प्राप्त। जन्मजात।

एक खाय दूध मलीदा, एक खाय भुस

अपना-अपना भाग्य। कोई मजा-मौज करता है, कोई कष्टों में जीवन बिताता है।

भुस=अनाज के सूखे डंठल।

एक गरीब को मारा था तो नौ मन चर्बी निकली थी

प्रायः ऐसे लोग होते हैं जो टैक्स या चंदा आदि देने के भय से धनी होते हुए भी गरीब बनते हैं, उनके प्रति व्यंग्य में क.।

एक गुरु के चेले, (हिं.)

एक उस्ताद के चेले। सब एक से चालाक।

एक घड़ी की 'ना', सारे दिन का उद्धार

किसी भी विषय में संकोच छोड़कर एक बार 'ना' कह देने से बार-बार के झंझट से छुट्टी मिल जाती है।

एक घड़ी की बेहयाई, सारे दिन का आधार

जो लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए बेशर्मी अख्तियार कर लेते हैं, और उचित अनुचित की परवाह नहीं करते, उनसे व्यंग्य में क.। अथवा ऐसे व्यक्ति की उक्ति, जो अपने लाभ के लिए निर्लज्ज बन जाना ठीक समझता है।

एक चना दो दाल !

एक चने की दो ही दाल होती हैं।

(वास्तव में यह बच्चों के एक गीत की कड़ी है। एक चना दो दाल, मोरी सावन आई, इत्यादि)

एक चना बहुतेरी दाल

एक चने से बहुत-सी दाल हो सकती है। मतलब, घर के एक प्रमुख व्यक्ति के बने रहने से नौकर-चाकर या लड़के तो और भी हो सकते हैं। मुख्य वस्तु ही रक्षणीय होती है।

एक चुप सौ को हराय

चुप रहने वाले के सामने सौ बोलने वाले हार मन लेते हैं।

एक चुप, हजार चुप

किसी वाद-विवाद के मौके पर एक आदमी अगर चुप हो जाए, तो बाकी अपने-आप चुप हो जाते हैं।

एक छौनी के आंचल में नोंन, घड़ी-घड़ी रूठे. मनावे कौन?

बच्चों की तुकबंदी। किसी साथी के रूठ जाने पर मनाने के लिए प्रयोग करते हैं।

एक जना घर मुरदा भेल, चार जना मिल खटिया लेल
आप आपके सब ही मालुक, बार उखाड़े मुरदा हालुक।

किसी के घर एक आदमी मर गया। चार आदमी उसे खटिया पर उठाने आए। पर वे सब अपने घर के बड़े आदमी थे। और मुर्दा भारी था। तब उसे हलका करने के लिए उसके बाल बना दिए गए। ऊपर की इस तुकबंदी का अंतिम चरण 'बार उखाड़े...' ही कहावत के रूप में प्रयुक्त होता है और उसे तब कहते हैं, जब किसी बड़ी विपत्ति को दूर करने के लिए नाममात्र का निष्फल प्रयास किया जाए।

एक जान, दो क़ालिब

एक प्राण दो शरीर। दो घनिष्ठ मित्र, अथवा दो सगे भाई, जिनमें गाढ़ा स्नेह हो।

एक जान, हजार अरमान

आदमी की एक जान के पीछे हजार कामनाएं लगी हैं, कहां तक पूरी हों।

एक जोरू की जोरू, एक जोरू का खसम; एक जोरू का सीसफूल, एक जोरू का पश्म

कोई स्त्री का दास होता है, तो कोई उसका स्वामी; कोई उसके माथे का आभूषण होता है, तो कोई उसका पश्म। पश्म=पुरुष या स्त्री के निम्न स्थान के बाल। बहुत ही तुच्छ वस्तु। (बढ़िया मुलायम ऊन को भी पश्म कहते हैं।)

एक जोरू सारे कुनबे को बस है

एक स्त्री पूरे परिवार के लिए काफी है। अथवा एक होशियार औरत पूरे घर को संभाल सकती है।

(कहावत वहीं लागू होती है, जहां भाई के मर जाने पर उसकी विधवा को रख लेने की प्रथा प्रचलित है। मजाक में भी कहावत का प्रयोग हो सकता है।)

एक जौ की सोलह रोटी; भगत खाय, भगतानी मोटी

बच्चों की तुकबंदी, जिसमें पाखंडी साधु-संन्यासियों का मजाक उड़ाया गया है।

एक डर, दो तरफ

दो विरोधियों में डर दोनों तरफ रहता है। अर्थात जितना एक व्यक्ति दूसरे से डरता है, उतना ही दूसरा भी उससे भय खाता है।

एक डूबे तो जग समझावे, सब जग डूबा जाए

एक आदमी गलती करे, तो उसे समझाया जा सकता है, पर जहां सभी गलत रास्ते पर हों, वहां कौन किसे समझाए ?

एक तंदुरुस्ती हजार न्यामत

तंदुरुस्ती बड़ी चीज है।

एक तरकश के तीर

सभी एक से।

एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी ?

दो एक-सी वस्तुओं में छोटे-बड़े का क्या भेदभाव करना ?

एक तो करेला कड़वा, दूसरे नीम चढ़ा

जब कोई क्षुद्र व्यक्ति कुसंग में पड़कर अथवा अचानक मान-सम्मान पाकर और भी बुरा बन जाए, तब क.।

एक तो कानी थी ही, दूसरे पड़ गया कुनक

विपत्ति में और भी विपत्ति आना।

कुनक=किरकिरी।

एक तो कानी बेटी की माई, दूसरे पूछने वालों ने जान खाई, (स्त्रि.)

एक तो मेरी बेटी कानी है–(मेरे लिए यही दुख क्या कम है?) फिर उसके विषय में तरह-तरह के प्रश्न करने वालों

ने और भी नाक में दम कर रखा है।

झूठी सहानुभूति दिखाने वालों के लिए कहते हैं।

एक तो कानी बेटी ब्याही, दूसरे पूछने वालों ने जान खाई

एक तो कानी लड़की के साथ अपने लड़के का विवाह किया, फिर लोग उसके रूप-रंग के विषय में पूछकर मुझे और भी लज्जित करते हैं।

एक तो गड़ेरन, दूसरे लहसुन खाए, (पू.)

गड़ेरन एक तो स्वभाव से गंदी होती है, फिर अगर लहसुन खा ले, तो उसके मुंह से और भी दुर्गंध आएगी।

(जब कोई छोटा आदमी ऊंची जगह पर पहुंचकर इतराने लगे, तो कह सकते हैं।)

एक तो चोरी, दूसरे सीनाज़ोरी

अपराध करके उल्टे आंख दिखाना।

एक तो डायन, दूसरे हाथ लुआठ

एक तो कोई आदमी पहले से ही बहुत दुष्ट, फिर अगर उसके हाथ में कोई ताकत आ जाए, तो वह और भी भयंकर बन जाता है।

लुआठ=जलती हुई लकड़ी, मशाल।

एक तो था ही दीवाना, तिस पर आई बहार

एक तो पहले से ही पागल था, और फिर वसंत ऋतु आ गई, जिसमें पागलपन और भी बढ़ जाता है।

(जब किसी बिगड़े हुए आदमी को और भी बिगड़ने के अवसर मिल जाएं।)

एक तो पड़ा लोटता है, दूसरा कहे जरा चोखी देना

शराब के नशे में पड़ा एक लोट रहा है, फिर भी दूसरा जरा और चोखी मांगता है।

ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जो किसी बुरे कार्य के परिणाम को देखकर भी उसे छोड़ना नहीं चाहता।

एक तो भालू, दूसरे कांधे कुदाल

भालू एक तो पहले से ही भयंकर, फिर उसे मिल गया कुदाल। मतलब, और भी भयंकर बन गया।

एक तो भीख, दूसरे पछोर-पछोर

भीख में साफ अनाज चाहते हैं। मुफ्त के माल में ऐब नहीं निकालना चाहिए।

पछोर=सूप से अनाज फटकना, साफ करना।

एक तो मियां थे ही थे, दूसरे खाई भांग,
तले हुआ सिर, ऊपर हुई टांग।

एक तो हज़रत पहले से ही काफी तगड़े थे, ऊपर से भांग खाई, जिससे हालत और भी गई-गुजरी हो गई।

जब कोई दूसरों के देखादेखी शौक करे और उससे हानि उठाए, तब क.।

एक तो मीरां थे ही, दूजे खाई भांग

एक तो मियां के सिर पहले से ही मीरां साहब (जिन्न) आते थे और अब भांग खा ली, जिससे हालत और भी बिगड़ गई।

(मीरां के विवरण के लिए दे.–'आए मीर, भागे पीर।')

एक तो मीठ और कठौत भर

एक तो बढ़िया चीज चाहिए और वह भी बहुत-सी! अथवा बढ़िया चीज भरपेट खाने को मिले, तो फिर क्या पूछना।

कठौत=कठौता, लकड़ी का बासन।

एक तो मुआ अनभाया था, दूसरे सई सांझ से आता था

किसी दुराचारिणी स्त्री का अपने पति अथवा किसी अन्य प्रेमी के संबंध में कथन कि अव्वल तो वह मुझे पसंद नहीं था और फिर शाम से ही आकर अड्डा जमाता था।

एक तो शेर, दूसरे बख़्तर पहने

अत्याचारी के हाथ में जब शक्ति भी आ जाए। शेर अगर बख़्तर पहिन ले, तो क्या पूछना। और भी ग़ज़ब ढाएगा।

एक दम में हजार दम

(1) एक सांस भी अगर बाकी है, तो समझो हजार सांस बाकी हैं। यानी उस आदमी के जीने की आशा करनी चाहिए।

(2) एक आदमी से हजार आदमियों की गुजर-बसर होती है।

एक दम, हजार-उम्मेद

(1) अंतिम सांस तक एक आदमी के जीवित रहने की आशा रहती है।

(2) आदमी की एक दम (जान) के पीछे हजार आशाएं लगी रहती हैं।

एक दर बंद, हजार दर खुले।

हमारे लिए अगर एक दरवाजा बंद हो गया, तो दूसरे कितने ही खुले हैं।

मतलब, हम किसी एक के आश्रित नहीं। कुछ न कुछ कर ही गुजरेंगे।

एक दिन का पावना, दूसरे दिन अनखावना

अतिथि तो एक ही दो दिन का होता है, उसके बाद तो लोग उससे ऊबने लगते हैं।

अनखावना=(1) खीझ पैदा करने वाला, 'अनख' से बना

है। अथवा (2) अन्न-खावना अर्थात भूखे रहो।
(कहावत के उत्तरांश का यह अर्थ भी हो सकता है कि दूसरे दिन 'अन्न न खाओ', अर्थात एक दिन के बाद दूसरे दिन अतिथि को खाने के लिए कोई नहीं पूछता)

एक दिन के सौ साठ दिन

मतलब, आज नहीं, तो फिर देखा जाएगा, हम बदला लेकर रहेंगे।

एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन बलाए जान, (मु.)

मेहमान एक-दो दिन के बाद ही एक मुसीबत बन जाता है। *(बंगला में भी है—माछ आर अतिथि दुई दिन परेई विष।)*

एक दिन सबको मरना है

स्पष्ट।

एक न शुद दो शुद

एक ही क्या कम था, और अब दो हो गए। किसी झगड़े या वाद-विवाद के बीच में एक के साथ अनावश्यक रूप से दूसरा भी बोल उठे, प्रायः तब कहते हैं कि अभी तो एक ही बोल रहा था, आज दो बोल उठे।
(इसकी एक कथा है : किसी व्यक्ति ने एक जादूगर से तीन मंत्र सीखे। एक से मृत को जीवित किया जा सकता था, दूसरे से उसके मन का हाल जाना जा सकता था। और तीसरे से उसे फिर मृतक बनाया जा सकता था। इन मंत्रों की परीक्षा के लिए एक दिन उसने एक मुर्दे को जीवित किया और उसका सब हाल जान लिया। किंतु उसे फिर मृतक बनाने का मंत्र वह भूल गया। नतीजा यह हुआ कि उस मुर्दे का प्रेत उसके पीछे लग गया। जहां भी वह जाता, प्रेत उसके साथ रहता। इस मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए उसने अपने मरे हुए गुरु को मंत्र द्वारा जीवित किया, पर दुर्भाग्यवश वह इस बार दूसरा मंत्र भूल गया और गुरु के पास से जीवित को फिर मृतक बनाने का मंत्र नहीं जान सका। इस प्रकार एक के स्थान पर अब दो प्रेत उसके साथ लग गए।)

एक 'नहीं' सत्तर बला टाले

किसी व्यक्ति को यदि कोई वस्तु नहीं देनी है, अथवा उसका कोई काम नहीं करना है, तो संकोच छोड़कर नहीं कर देना सबसे अच्छा होता है। उससे बहुत-सी मुसीबतें टल जाती हैं।

एक ना सो दुख हरे

दे. ऊ.।

एक नीम सब घर सितलहा

नीम का एक ही पेड़ और घर भर को शीतला निकली है। कैसे काम चले ?
सितलहा=शीतला रोग से ग्रस्त।
(फैलन ने इस कहावत को इस प्रकार लिखा है—'एक नीम सब घर सीतल'—जो अशुद्ध है। चेचक निकलने पर नीम के पत्ते रोगी के सिरहाने रखने के काम आते हैं। उसी से कहा. चली।)

एक नीम सौ कोढ़ी

दे.—एक अनार सौ बीमार, तथा ऊपर भी।
(नीम के पत्ते तथा निबौरी का तेल भी चर्म रोगों के लिए लाभदायक माना जाता है।)

एक नूर आदमी, हजार नूर कपड़ा

आदमी की अपनी जो शोभा होती है, वह तो होती ही है, पर कपड़ा पहनने से वह सौगुनी हो जाती है।

एक पंथ दो काज

एक काम में दो काम बनना। अथवा एक लाभ में दो लाभ।

एक पानी जो बरसे स्वाती, कुरमिन पहने सोने की पाती, (कृ.)

स्वाती नक्षत्र में पानी बरसने से कुरमिन को सोने के गहने पहनने को मिलते हैं, अर्थात फसल बहुत अच्छी होती है।

एक पेड़ हर्रे, सगरे गांव खांसी

हरड़ का एक ही पेड़ और सब गांव को खांसी। दे.—एक अनार सौ बीमार।
हर्रे=हरड़, जिसका फल खांसी के काम आता है।

एक फूअड़ फूअड़ के गई, जा कुठला-सी ठाड़ी भई

एक बेशऊर औरत दूसरी बेशऊर के यहां गई और ठूंठ की तरह जाकर खड़ी हो गई। फूहड़ औरतों पर व्यंग्य, जिन्हें बात करने का सलीका नहीं होता।
कुठला=अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बर्तन।

एक बखिया मोरे पल्ले, कौन पिनौते होके चल्ले

मेरी गांठ में एक ही कुर्ती है, मैं किस रास्ते से जाऊं ?
(जिसमें सबकी नजर उस पर पड़ जाए)
अपनी किसी थोड़ी-सी चीज का घमंड करना।

एक बार जोगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी

योगी दिन में एक बार और भोगी दो बार शौच जाता है। इससे अधिक बार जाए, तो उसे रोगी समझना चाहिए।

एक बोली तीन काम
ऐसा होशियार आदमी जो एक काम में तीन काम करे।
(एक पंथ दो काज)

एक बोली, दो बोली, मेरी न कटी सटासट बोली, (ग्रा. स्त्रि.)
अर्थात बड़ी बातूनी है, जो बराबर बोलती ही चली जा रही है।

एक मछली सारे जल को गंदा करती है
एक बुरा आदमी सारे घर या समाज को बुरा बना देता है।

एक मास ऋतु आगे धावे
ऋतु का रूप एक महीना पहले से दिखाई पड़ने लगता है।

एक मुंह दो बात
बात कहकर बदलना।

एक मुर्गी नौ जगह हलाल नहीं होती
एक आदमी अपने को एक साथ कई कामों में नहीं खपा सकता अथवा एक साथ कई स्थानों पर काम नहीं कर सकता।

एक मुश्किल की हजार हजार आसान रखी हैं
कठिन से कठिन काम को करने का उपाय खोजा जा सकता है।

एक मेरे घर अन्ना, दूसरा खन्ना, (मु. स्त्रि.)
अपना बड़प्पन दिखाने के लिए किसी स्त्री का कथन कि मेरे यहां दो-दो नौकर हैं, एक तो बच्चों को खिलानें के लिए दाई और दूसरा खवास।

एक मैं, दूसरा मेरा भाई, तीसरा हज्जाम नाई
किसी वस्तु के बंटते समय अनुचित रूप से दूसरों के नाम भी हिस्सा मांगने लगना।
(नाई, बारी, कहार आदि जब किसी भोज में जाते हैं, तब अपने अलावा अपने परिवार के सब लोगों के लिए पत्तल डलवाते हैं, यद्यपि वे सब वहां मौजूद नहीं होते। उसी से कहा. बनी।)

एक म्यान में दो छुरी
एक स्थान पर अपना-अपना स्वतंत्र अधिकार जताने वाले दो मालिक।
(जैसे एक स्त्री के दो प्रेमी)

एक रती बिन नहीं रती का
प्रतिष्ठाहीन आदमी किसी काम का नहीं।
रती के दो अर्थ हैं=(1) रति, शोभा, प्रतिष्ठा (2) रत्ती, आठ चावल का मान या वांट, कौड़ी, पैसा।

एक रोटी के दो टुकड़े
समान प्रकृति की दो वस्तुएं।

एक सिर, हजार सौदा
एक आदमी के सिर बहुत-सा काम।

एक सुहागन, नौ लौंडे
एक वस्तु के कई गाहक।

एक सूरमा चना भाड़ को नहीं फोड़ सकता
एक आदमी सब कुछ नहीं कर सकता।

एक से एक, दो से ग्यारह
एक आदमी तो हमेशा एक ही रहेगा, पर दो के मिलने से उनमें ग्यारह की शक्ति आ जाती है।

एक से दो भले
कहीं बाहर जाना हो, तो एक से दो अच्छे होते हैं।

एक से ले एक को दे
किसी से लेकर किसी को देना। ईश्वर के लिए कहा जा सकता है कि वह एक से लेकर दूसरे को देता है।

एक हंसे, दूसरा दुख में
संसार में कोई सुखी है तो कोई दुखी, अथवा एक को दुख में देखकर दूसरा हंसता है।

एक हम्माम में सब नंगे, (मु.)
सभी में कुछ न कुछ त्रुटियां होती हैं।
तुल.—धोती के भीतर सब नंगे।

एक हाथ ज़िक्र पर, एक हाथ फ़िक्र पर, (मु.)
एक हाथ से माला जपना, दूसरे से काम की फ़िक्र करना। पाखंडी के लिए क.।
ज़िक्र=उल्लेख, यहां ईश्वर का उल्लेख यानी ईश्वर-भजन।

एक हाथ लेना, एक हाथ देना, (व्य.)
नकद सौदा करना।

एक हाथ से ताली नहीं बजती
झगड़ा एक ही तरफ से नहीं होता। दोनों कुछ न कुछ जिम्मेदार रहते हैं।

एक ही लकड़ी से सबको हांकना
जो जैसा है, उसके साथ वैसा व्यवहार न करना।

एक हुनर और एक ऐब, हर आदमी में होता है
हर आदमी में कोई न कोई गुण और अवगुण होता है।

एक हुस्न आदमी, हज़ार हुस्न कपड़ा।
लाख हुस्न ज़ेवर, करोड़ हुस्न नखड़ा।
किसी पुरुष या स्त्री का जो कुछ अपना सौंदर्य है, वह तो होता ही है, पर कपड़ों से उसमें हज़ार गुनी, गहनों से लाख

गुनी और हाव-भाव तथा कटाक्ष से उसमें करोड़ गुनी वृद्धि हो जाती है।

एक कूकर तू दूबर काही, दस घर की आवाजाही।

किसी ने कुत्ते से पूछा तुम दुबले क्यों ?

उत्तर मिला—पेट के लिए घर-घर घूमना पड़ता है।

मतलब पेट की चिंता बुरी चीज है। कुत्ता भी दुबला बन जाता है।

एकै दाल, एकै चावर, करै गुन ओ बाउर

एक ही वस्तु से किसी को लाभ पहुंचता है, किसी को हानि।

बाउर=वायु पैदा करने वाली, वादी।

एकै साधे सब सधै, सब साधै सब जाय

(1) एक बार में एक ही काम करना चाहिए, कई काम एकसाथ करने से सभी बिगड़ जाते हैं।

(2) अपना कोई काम बनाने के लिए किसी एक आदमी को अपने अनुकूल रखना ठीक होता है, सब को अनुकूल बनाने की चेष्टा करने से सभी हाथ से निकल जाते हैं, और काम भी नहीं होता।

एवज़ मावज गिला नदारद

बुराई का बदला बुराई से चुका देने पर शिकायत किस बात की ?

एहसान कर और दरिया में डाल

उपकार करके भूल जाना चाहिए।

एहसान लीजे जहान का, न एहसान लीजे शाहेजहान का

बड़े आदमियों का एहसान लेना ठीक नहीं होता।

ऐ

ऐंचन छोड़ घसीटन में पड़े

एक मुसीबत से बचे तो दूसरी में पड़े।

ऐंतवार जब जानिए, जब हट्टी लीपें बानिए, (हिं.)

दूकानदार जब अपनी दूकान लीपें, तभी समझो इतवार है। *(दूकानदार प्रायः इतवार को अपनी कच्ची दूकानें लीपते हैं—उसी ओर संकेत है।)*

ऐब करने को भी हुनर चाहिए

हर काम के लिए होशियारी की जरूरत पड़ती है, यहां तक कि बुरा काम करने के लिए भी।

ऐरे ग़ैरे पचकल्यान

फालतू आदमी।

(पचकल्यान वह घोड़ा कहलाता है, जिसका सिर और चारों पैर सफेद हों और बाकी लाल या काला। ऐसा घोड़ा शुभ नहीं माना जाता।)

ऐरे ग़ैरे फस्ल बहुतेरे

फसल पर अर्थात घर में अनाज होने पर मुफ्तखोरों की कमी नहीं रहती।

ऐरो के चेरो, नौआ के बराहिल

ओछे की खुशामद और नाई की टहल।

जब किसी काम के लिए छोटे की चिरौरी करनी पड़े, तब क.।

चेरो=चिरौरी करना।

बराहिल=सेवा-टहल करना।

ऐसन बुड़बक कौन है, जो खात नहीं अघाय

ऐसा कौन मूर्ख होगा, जो पेट भर जाने पर भी खाने को मांगे ?

ऐसन सुहाग मोरा नित उठ होला, (स्त्रि.)

किसी को अपने प्रति एकाएक अनुकूल होते देखकर कहते हैं।

ऐसा किया दिल गुरदा, कि रुपया किया खुरदा, (मु.)

ऐसी उदारता दिखाई कि रुपया भुना डाला।

कंजूस के लिए व्यंग्य में क.।

ऐसा चाटा कि धोये का चाचा

मतलब, बिल्कुल मटियामेट कर दिया।

ऐसा जैसे रुपए के टके भुना लिए

किसी की चीज पर आसानी से कब्जा कर लेना या सरलता से कोई काम कर लेना।

ऐसी-ऐसी छटी बलबल जायं, नौ-नौ पतरी भातें खायं, (स्त्रि.)

ऐसी छठी रोज हुआ करे, जिसमें नौ-नौ पत्तल भात खाने को मिले।

आशीर्वाद है। किसी के घर खूब अच्छा खाने को मिलने पर कहते हैं।

छठी=जन्म से छठे दिन का संस्कार।

ऐसी कही कि धोए न छूटे

किसी से बहुत चुभती हुई बात कहना।

ऐसी तेरे ही तले गंगा बहै है, (स्त्रि.)

किसी एक लड़ाकू स्त्री का दूसरी से कहना कि तू ही बड़ी पाक-साफ है (और तो सब गंदे हैं) अथवा तू ही बड़ी सच्ची है (और तो झूठे हैं)।

ऐसी बहू सयानी कि पैंचा मांगे पानी, (स्त्रि.)

बहू ऐसी होशियार है कि पानी भी मांगती है तो उधार। *(इसलिए कि दूसरे लोग उससे कभी कोई वस्तु मुफ्त में न

मांगे, और यदि मांगें भी तो तुरंत लौटा दिया करें।)

ऐसी मेख मारी कि पार निकल गई

मन को गहरी चोट पहुंचने पर क.।

मेख=लकड़ी या लोहे की बड़ी कील।

ऐसी लटकी कि भुईं में पटकी, (स्त्रि.)

ऐसा नीचा दिखाया कि जमीन चाट रही है, अर्थात बड़ी लड़ाका बनती थी, सो मुंह बंद हो गया।

(किसी एक लड़ाकू स्त्री का दूसरी से कहना।)

ऐसी होती कातनहारी, तो काहे फिरती मारी मारी, (स्त्रि.)

अगर तू ऐसी ही होशियार होती, तो इस प्रकार मारी-मारी क्यों फिरती ?

(ताना मारना)

ऐसे आदमी के दीदे में साठी कि पीच पसा दीजिए

ऐसे आदमी की आंख में तो चावलों का गरम-गरम मांड डाल देना चाहिए।

(किसी दुष्ट को गाली)

ऐसे ऊत रिवाड़ी जाएं, आटा बेचें गाजर खाएं

ऐसे मूर्ख भला रेवाड़ी जाकर क्या करेंगे, जो आटा बेचकर गाजर खाते हैं।

(रेवाड़ी राजस्थान में गल्ले की एक बड़ी मंडी है। इसका भाव यह है कि ऐसा निकम्मा व्यक्ति, जो आटे की जगह गाजर खाता है, वहां जाकर क्या व्यापार करेगा ?)

ऐसे गए जैसे गदहे के सिर से सींग

किसी जगह से चुपचाप उठकर चले आना।

(गधे के सिर पर सींग होते ही नहीं, इसलिए वह जगह बिल्कुल साफ रहती है।)

ऐसे गए जैसे महफिल से जूता

दे.ऊ.।

(मज़ाक में ही क.। महफ़िल में जाने के पहले जूते बाहर ही उतार दिए जाते हैं और अक्सर चोरी चले जाते हैं।)

ऐसे चूतिया शिकारपुर में रहते हैं

अर्थात ऐसे मूर्ख किसी और जगह देखिए, जो आपकी बातों में आ जाएं।

[पता नहीं क्यों और किस प्रकार मौगांव और शिकारपुर (उत्तरप्रदेश) के दो स्थान मूर्खों के लिए, प्रसिद्ध हैं। यह कहने की बात है। मूर्ख सर्वत्र होते हैं।]

ऐसे पै तो ऐसी, काजल दिए पै कैसी ?

सहज में तो इतनी सुंदर ! फिर काजल लगाने पर न जाने कितनी सुंदर लगेगी ?

ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय ?

बूढ़े या निकम्मे आदमी के लिए क.।

(यह पूरी कहावत इस प्रकार है, जो वास्तव में बैल पर कही गई है—

दांत घिसे और खुर घिसे,

पीठ बोझ न लेय।

ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय।)

ऐसे ही तुमने सोंठ बेची है

अर्थात तुम से मैंने क्या कोई कर्ज़ ले रखा है, जो तुम से दबूं।

जब कोई बिना प्रयोजन किसी पर अपना रोब जमाए, तब क.।

ऐसे होते तो ईद-बकरीद को काम आते, (मु.)

जब कोई निठल्ला आदमी अपने विषय में बहुत बढ़-चढ़कर बातें करे, तब क.।

ओ

ओछा पात्र उबलता है

कम भरा हुआ बर्तन छलकता है।

नीच को बड़ी जल्दी हर बात का घमंड हो जाता है।

(अधजल गगरी छलकत जाय)

ओछी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी-पी भरी पदोड़ी, (स्त्रि.)

जब किसी को कोई ऐसी वस्तु मिल जाए, जो उसके पास कभी न रही हो और वह उसका बहुत उपयोग करे, तव क.।

ओछी पूंजी खसमों खाय, (व्य.)

कम पूंजी से व्यापार करने पर हमेशा हानि होती है।

खसम=मालिक, व्यापारी से मतलब है।

ओछी लकड़ी फरीस की, बिन ब्यारे फर्राय।
ओछे के संग बैठ के, सुघड़ों की पत जाय।

झाऊ की ओछी लकड़ी बिना हवा के ही फर-फर करती है। (यानी बहुत इतराती है) बुरों की संगत में बैठने से भलों की इज्जत जाती है।

ओछे की पीत जैसे बालू की भीत

नीच की मित्रता बालू की भीत की तरह क्षण-स्थायी होती है।

ओछे के घर खाना, जनम-जनम का ताना, (स्त्रि.)

ओछे आदमी के घर कभी खाने नहीं जाना चाहिए, क्योंकि वह बात-बात में उसकी याद दिलाएगा। तात्पर्य छोटे आदमी का कभी एहसान नहीं लेना चाहिए।

ओछे के बैल गिरे

ऐसी घटना जिसकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। जब कोई छिछोरा आदमी अपने किसी थोड़े नुकसान को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर दिखाए, तव क.।

ओछे के साथ एहसान करना ऐसा है, जैसे बालू में मूतना

ओछे के साथ एहसान करना बिल्कुल व्यर्थ होता है, क्योंकि वह उसका बदला चुकाना नहीं जानता।

ओछे संग ना बैठिए, ओछा बुरी बलाय।
पल में हो घी खीचड़ी, पल में विसयर भाय।

ओछे का साथ कभी न करना चाहिए। वह एक बड़ी विपत्ति है।

कभी तो वह बहुत चिकनी-चुपड़ी बातें करता है, और कभी सर्प बनकर डंसता है।

बिसयर=विषधर।

ओछे से खुदा काम न डाले

भगवान ओछे से बचाए।

ओझ भरे, न रोग झरे

न पूरा पेट भरे, न रोग दूर हो।

न मन की इच्छाएं कभी पूरी हों, और न चित्त को शांति मिले।

ओढ़नी की बतास लगी

यानी औरत का रंग चढ़ गया।

विवाह होते ही जो औरत की बहुत फ़िक्र करने लगे, उसके लिए क.।

ओढ़ी चादर हुई बराबर 'मैं शाह की खाला हूं', (स्त्रि.)

चादर पहनकर सामने आ गई और कहती है—मैं भी शाह की मौसी हूं।

बहुत शेखी मारने वाले के लिए क.।

अं:नामासी न आवे 'मैया पोथी ला दे', (स्त्रि.)

पढ़े-लिखे हैं नहीं, किताब मांगते हैं।

ऐसी वस्तु मांगना, जिसके उपयोग की क्षमता न हो।
(ओनामासी ओऊम् नमः सिद्धम् का विकृत रूप है। अक्षरारंभ के समय बच्चों से पाटी पर लिखवाते हैं।)

ओलती का पानी बलेंडी नहीं जाता

नियम विरुद्ध कोई काम नहीं होता।
(ओलती छप्पर के ढाल के उस किनारे को कहते हैं, जिससे वर्षा का पानी नीचे गिरता है। बलेंडी छप्पर के ऊपर की मेंड़ होती है। बलेंडी का पानी ओलती की तरफ ही आएगा, उल्टा ऊपर नहीं जाएगा।)

ओलती तले का भूत, सत्तर पुरखों का नाम जाने

घर का आदमी घर के सब भेद जानता है।

ओल में से निकलकर चूल में पड़ना

एक हलकी मुसीबत से निकलकर बड़ी मुसीबत में पड़ना। ओल=चूल्हे के पीछे बना हुआ वह छेद, जिस पर साग-तरकारी गरम होने के लिए रख दी जाती है। चूल=चूल्हा।

ओसों प्यास नहीं बुझती

जब किसी को कोई वस्तु इतनी कम मिले कि उससे तृप्ति न हो, तब क.। कंजूसी से काम लिया जाए, तब भी कह सकते हैं।

औ

औंधा खाय लौंडा

जल्दबाजी करने वाला औंधा गिरता है, अर्थात हानि उठाता है।

औंधी खोपड़ी, उल्टी मत

मूर्ख के लिए क.।

(औंधी खोपड़ी एक मुहावरा है, जिसका अर्थ बुद्धिहीन होता है।)

औंधे मुंह, चिराग पांव

तू औंधे मुंह गिरे, तेरे पांव तले चिराग हो, अर्थात तेरी दुर्गति हो। आवेश में एक तरह की गाली।

औंधे मुंह दूध पीते हैं

अर्थात अभी बिल्कुल बच्चे हैं। कुछ जानते नहीं। जो बहुत सीधा-सादा बनकर दिखावे, उससे ताने में क.।

औंधे मुंह, शैतान का धक्का

एक गाली कि तू औंधे मुंह गिरे और तुझे शैतान का धक्का लगे।

औघट चले, न चौपट गिरे

न बुरे रास्ते चले, न हानि उठाए।

और की फुल्ली देखते हैं, अपना टेंटर नहीं

द.-- अपना टेंटर देखें नहीं...।

और की बुराई अपने आगे आई

दूसरों के कर्मों का फल हमें भोगना पड़ा।

और की भूक न जानें, अपनी भूक आटा सानें, (स्त्रि.)

दूसरों की भूख की चिंता नहीं, अपने लिए आटा गूंधते हैं। स्वार्थी के लिए क.।

औरत ओर ककड़ी की बेल जल्दी बढ़ती है

लड़कियां शीघ्र जवान होती हैं।

औरत और घोड़ा रान तले का

औरत और घोड़ा इन पर यदि पर्याप्त नियंत्रण न रखा जाए, तो वे बेकाबू हो जाते हैं।

औरत का खसम मर्द, मर्द का खसम रोजगार

स्त्री जिस प्रकार पुरुष के सहारे रहती है, उसी प्रकार पुरुष रोजगार के सहारे।

औरत का राज है

जिस घर में स्त्री की चलती हो, वहां क.।

औरत को नादारी में जांचे

स्त्री की परीक्षा आपत्तिकाल में ही होती है।

औरत न मर्द, मुआ हिजड़ा है।
हड्डी न पसली, मुआ छिछड़ा है।

गाली।

औरत पर हाथ उठाना ठीक नहीं

औरत को मारना नहीं चाहिए।

औरत पर जहां हाथ फिरा, और वह फैली

विवाह के बाद कम उम्र की लड़की भी शीघ्र जवान बन जाती है।

औरत मर्द का जोड़ा है

स्त्री की पुरुष से और पुरुष से स्त्री की शोभा है। अथवा स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते।

औरत रहे तो आपसे, नहीं तो जाय सगे बाप से

(1) स्त्री यदि स्वयं ही सच्चरित्रा है, तब तो वह रहेगी, अन्यथा अपने बाप के साथ भी निकल जाती है।

(2) स्त्री यदि अपने आप चाहे, तो घर में रह सकती है, नहीं तो उसका बाप भी उसे सम्हाल कर नहीं रख सकता।

और दिनों खीर पूड़ी, परब के दिन दांत निपोरी

और दिनों तो खुशी मनाना, पर खुशी के मौके पर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना।

ऐसे व्यक्ति के लिए क., जो अवसर के लिए पैसा बचाकर नहीं रखता, तथा दूसरे मौकों पर व्यर्थ खर्च करता है।

और मज़ाक भूल गए, मेरे पीस आइयो

किसी स्त्री का अपने प्रेमी से कथन है कि बस "मेरे यहां पीस आओ'–तुम्हें इसके सिवा और कोई मज़ाक नहीं आता।

(पीसने के बहाने उसका प्रेमी क्यों बुला रहा है, स्त्री इसे जानती है; इसीलिए हंसकर इस तरह की बात कहती है।)

और रंग का गिलहरा

रंग-ढंग या पोशाक-पहनावे में यकायक परिवर्तन होने पर क. कि यह तो दूसरे रंग का गिलहरा आ गया।

गिलहरा=गिलहरी नामक जीव का पुल्लिंग।

औसर का चूका आदमी और डाल का चूका बंदर नहीं संभलता

आदमी अगर किसी अवसर से लाभ उठाने से चूक जाए, और बंदर भी एक डाल से दूसरी डाल पर उछलते समय ठिकाने पर न पहुंच सके, तो ये दोनों फिर संभलते नहीं, अर्थात हानि उठाकर ही रहते हैं।

पाठा.–औसर का चूका किसान।

औसर चूकी डोमनी, गावे ताल बेताल

अगर डोमनी मौके पर किसी जगह गाने-बजाने न जा पाए, तो वह बेसुरा गाने लगती है। तात्पर्य अवसर से लाभ न उठाने वाला व्यक्ति पछताता है।

(डोमनियां डोम जाति की स्त्रियां होती हैं, जो शादी-ब्याह में लोगों के घर जाकर गाती-बजाती हैं और उसके लिए इनाम पाती हैं। अतः कोई डोमनी अगर मौके पर किसी के यहां न पहुंच पाए, तो स्वाभाविक रूप से उसे उसका बहुत दुख होगा, और वह ठीक ढंग से गा नहीं पाएगी।)

कोई अच्छा मौका हाथ से निकल जाने पर जब आदमी का दिमाग सही न रहे और वह अंड-बंड काम करने लगे, तब क.।

क

कंजा भागवान होता है

कंजी या भूरी आंखों वाला भाग्यवान होता है।

(एक लोक-विश्वास)

कंजूस मक्खीचूस

सूम के लिए क.।

कंथ न पूछे बात मेरा धना सुहागन नाम

पति तो बात नहीं पूछता और अपना नाम बतलाती है धना सुहागन !

जब कोई अपने आप ही व्यर्थ में किसी स्थान का मालिक बना फिरे, तब क.।

('कंत न पूछे बात मेरा धरा सुहागन नाम' भी कहते हैं।)

धना=नाम विशेष।

तुल.—गांठ में कौड़ी नहीं, नाम धन्नासेठ।

कंद लुटें और कोयलों पर मुहर

बड़े खर्चों में कमी न करके छोटे-छोटे खर्चों में सावधानी बरतना।

ककड़ी के चोर की गर्दन नहीं मारते

किसी साधारण अपराध के लिए कड़ा दंड नहीं देना चाहिए।

(मराठी में है—कांकड़ीची चोरी बुक्याचा मार)

कचरी खाए दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए

बाहर जाकर व्यर्थ समय नष्ट करने वाले के लिए क.।

कोई आदमी रोज़गार के लिए परदेश गया, पर लाभ के स्थान पर गांठ की पूंजी खर्च करके घर वापस आ गया।

कचरी=फूट की जाति का एक फल।

कचहरी का दरवाजा खुला है

अर्थात सीधे-सीधे लड़ने की जरूरत नहीं, जाकर नालिश करो, तुम्हें कोई रोकता नहीं।

जब दो व्यक्तियों में किसी विषय को लेकर, विशेषकर जमीन-जायदाद को लेकर कोई झगड़ा होता है, तो प्रायः वह व्यक्ति जो अधिक सबल होता है, दूसरे से इस प्रकार की बात कहा करता है।)

कच्चा दूध सबने पिया है

सब मनुष्य हैं और भूल सभी से होती है।

कच्चा दूध से मतलब मां के दूध से है।

कच्चा तो कचौड़ी मांगे, पूरी मांगे पूरा।
नोंन मिर्च तो कायथ मांगे, बामन मांगे बूरा।

लड़के कचौड़ी की तरह की कुरकुरी चीज पसंद करते हैं, जवान मुलायम पूड़ी चाहते हैं, कायस्थों को नमकीन पसंद होता है और ब्राह्मणों को मिष्ठान्न प्रिय है।

कच्ची कली कचनार की, तोड़त मन पछताय

कोई व्यक्ति कचनार कि कच्ची कली को तोड़ने जा रहा है, पर यह देखकर कि अभी उसमें मधुर रस और पराग की बहुत कमी है, उसका मन पछताता भी है।

[यह एक दोहे की कड़ी है जो अविकसित यौवना नायिका को लक्ष्य करके कही गई है और प्रसिद्ध लोककथा 'सारंगा सदावृक्ष' (सदावत्स) में सुनने को मिलती है।]

कच्ची पेंदी, दस्तरख़्वान का जरर, (मु.)

मिट्टी के कच्चे बर्तन से दस्तरख्वान के खराब होने का डर रहता है, क्योंकि मिट्टी के बर्तन से पानी टपकेगा।

(अनुभवहीन के लिए कहा जाता है।)

दस्तरख़्वान=वह चादर जिस पर खाना रखकर खाया जाता है।

कच्ची शीशी मत भरो, जिसमें पड़ी लकीर।
बालेपन की आशकी, गले पड़ी जंजीर।

लड़कपन में प्रेम करना अच्छा नहीं होता। उससे जीवन में कष्ट भोगने पड़ते हैं।

(ऐसा कांच जिसमें लकीर पड़ी हो जल्दी टूट जाता है।)

कच्चे बांस को जिधर से नवाओ नव जाय, पक्का कभी न टेढ़ा होय

छुटपन में बच्चों के स्वभाव को इच्छानुसार मोड़ा जा सकता है, बाद में उनकी आदतें नहीं बदलतीं।

कचौड़ी की बू अब तक नहीं गई

जब कोई साधारण आदमी बड़े ओहदे पर पहुंचकर फिर ज्यों का त्यों हो जाए, लेकिन अपने बड़प्पन की बू-बास को न छोड़े, तब क.।

क़ज़ा के आगे हकीम अहमक

मौत के आगे वैद्य-हकीम की कुछ नहीं चलती।

क़ज़ा के तीर को ढाल की हाजत नहीं

क्योंकि वह तीर किसी के रोके रुक ही नहीं सकता।

हाजत=ज़रूरत।

क़ज़ा से चारा नहीं

मौत पर किसी का वश नहीं।

कटेगा बटाऊ का, सीखेगा नाऊ का

किसी की हानि की परवा न करके अपना लाभ देखना।

बटाऊ=राहगीर, यात्री।

पाठा.—कटे सिर काऊ का, बेटा सीखे नाऊ का।

कटे पर नोंन-मिर्च लगाना

जली-कटी बातों से किसी की मानसिक पीड़ा को और बढ़ाना।

कड़का सोहै पाली ने, बिरहा सोहै माली ने, (ग्रा.)

कड़खा तो गड़रियों के मुंह से अच्छे लगते हैं और बिरहा मालियों के मुंह से।

जिसका जो काम है, वह उसी को शोभा देता है।

कड़का=कड़खा, युग के समय के गीत।

बिरहा=एक प्रकार के शृंगार गीत।

कड़ाकड़ बाजे थोथे बांस

खोखले बांसों से आवाज अधिक निकलती है। निकम्मा आदमी बहुत बात करता है।

कड़ी काट बेलन बनाना

किसी छोटी वस्तु को तैयार करने के लिए बड़ी वस्तु को नष्ट कर डालना।

कड़ी=लकड़ी की लंबी और मोटी धरनी होती है। जिस पर छत टिकी होती है। उसे काटकर बेलन बनाना एक मूर्खतापूर्ण कार्य है।

कडुआ ज़हर

(1) ज़हर की तरह कड़वी वस्तु।

(2) ऐसा कार्य जो अप्रिय होने पर भी करना पड़े।

कडुआ थू-थू मीठा हपहप

अच्छे को ले लेना और बुरे को अस्वीकार कर देना कि दूसरे उसे झेलें।

कड़वा स्वभाव, डूबती नाव

दोनों खतरनाक होते हैं।

कडुए से मिलिए, मीठे से डरिए

कड़ुआ बोलने वाला खरी बात कहता है, इसलिए उससे मित्रता रखनी चाहिए। मिष्टभाषी खुशामदी होता है, उससे बचना चाहिए।

कढ़ी का-सा उबाल

ज़रा-ज़रा-सी बात में गुस्सा आना।

कढ़ी=बसन और मठे से बना एक व्यंजन।

कढ़ी में कोयला

(1) अच्छी वस्तु के साथ बुरी का मिल जाना।

(2) भले के साथ बुरे का संग।

क़तल भूजी क़ब्ल अजीजा, (मु. स्त्रि.)

इसका शुद्ध रूप है—कत्लल मूजी कब्लल ईजा, इसके पहले कि सांप काटे, उसे मार डालना चाहिए।

क़दम-ए दरवेशा रद्दे बला, (फा.)

संतों के आगमन से विपत्तियां दूर होती हैं।

क़द्र उल्लू की उल्लू जानता है।
हुमा को कब चुगद पहिचानता है?

उल्लू की क़द्र तो उल्लू ही कर सकता है, वह हुमा की क़द्र करना क्या जाने?

(हुमा एक काल्पनिक पक्षी है, जिसके विषय में मुसलमानों के यहां विश्वास है कि यदि वह किसी के सिर पर बैठ जाए, तो वह आदमी राजा बन जाता है।)

चुग़द=(फा.) उल्लू। मूर्ख।

क़द्रदां की जूतियां उठाइए, नाक़द्रे के पांपोश मारने न जाइए

जो अपने गुणों की क़द्र करे, उसकी जूतियां उठाने को तैयार रहना चाहिए। जो किसी बात को कुछ न समझे, ऐसे नाक़द्र को जूतियां मारने भी नहीं जाना चाहिए।

क़द्र खो देता है हर बार का आना-जाना

किसी जगह बार-बार जाने से सम्मान घटता है।

(अंग्रे.—Familiarity breeds contempt)

क़द्रदां के खुदा पांयते बिठाए, बेक़द्र के सिरहाने भी न बिठाए

गुण-ग्राहक के पैरों तले भी हमें बैठना पसंद है, पर जो

हमारे गुणों की क़द्र न जानता हो, उसके सिरहाने बैठना भी हम पसंद नहीं करेंगे, यानी अपना झूठा सम्मान नहीं चाहते।

क़द्रे आफ़ियत कसे दानद कि ब-मुसीबते गिरिफ़्त आयद, (फा.)

जो कभी दुख उठा चुका हो, वही सुख का मूल्य जानता है।

क़द्रे आफ़ियत मालूम होगी

सुख का मूल्य मालूम पड़ेगा (दुख पड़ने पर)।

कनखजूरे के कै पांव टूटेंगे

किसी बड़े साधन-संपन्न व्यक्ति की कितनी हानि होगी? मतलब थोड़ी-बहुत हानि उसको नहीं अखरती। जैसे कनखजूरे को अपने दो-एक पांवों का टूटना नहीं अखरता। (कनखजूरा एक पतला लंबा कीड़ा होता है, जिसके बहुत से पैर होते हैं।)

कनात बड़ी दौलत है

संतोप वड़ा धन है।

(सं.—संतोषं परमं सुखम्।)

कनौड़ी बिल्ली चूहों से कान कटावे

कमजोर बिल्ली चूहों से कान कटवाती है यानी दबती है।

(कनौड़ी का ठीक अर्थ काना या अपंग है।)

कपटी की पीत, मरन की रीत

कपटी से प्रेम करना मौत को वुलाना है।

कपड़ा कहे तू मुझे कर तह मैं तुझे करूं शह

कपड़ा कहता है कि तू मुझे अच्छी तरह तह करके रखे, तो मैं तेरी शान बढ़ाऊंगा।

मतलव, कपड़ों को संभालकर रखना चाहिए।

कपड़ा पहनिए जगभाता, खाना खैए मनभाता

कपड़ा दूसरों की पसंद का पहने, भोजन अपनी पसंद का करे।

कपड़े फटे ग़रीबी आई

फटे कपड़े पहनना दरिद्रता का चिह्न है।

कपूत बेटा मरा भला

बुरे लड़के का तो मर जाना ही अच्छा।

कब के बनिया, कब के सेठ

किसी के सहसा धनवान बन जाने पर क.। कल तक नोंन-गुड़ बेचते थे, अव सेठ बन गए।

कब दादा मरेंगे, कब बेल बंटेगी

किसी एक काम का दूसरे काम की वजह से अटका पड़ा रहना।

पाठा.—कब दादा मरेंगे, कब बेल बंटेंगे।

बेल=एक तरह का नेग होता है, जो गमी होने पर नाई-भाटों को दिया जाता है।

कब मरै, कब कीड़े पड़ें

गाली।

कब मुआ और कब राक्षस हुआ

उसके लिए कहा जाता है, जो नीच से अचानक बड़ा बन जाए और रोब जमाए, अर्थात बड़ा आदमी कब से बन गया ? व्यंग्योक्ति।

कब के राजाई सुर भये, कोदों के दिन बिसर गए

बड़े आदमी कब से बन गए ? क्या उन दिनों को भूल गए जब कोदों की रोटी खाया करते थे।

(जब कोई आदमी सहसा धन-सम्मान पाकर ग़रीबी के दिनों को भूल जाए और बढ़-बढ़कर बातें करे। कोदों एक बहुत हल्की क़िस्म का अनाज होता है।)

कबाड़ी के छप्पर पर फूस नहीं

जो काठ-कबाड़ का व्यापार करे, उसके छप्पर पर फूस न हो, एक आश्चर्य की बात।

(इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि काठ-कवाड़ का व्यापार करने वाले के पास कभी पैसा इकट्ठा नहीं होता।)

कवित सोहे भाट ने, और खेती सोहे जाट ने

कविता भाट को शोभा देती है और खेती जाट को। जिसका जो काम है, वह उसी को अच्छा लगता है। अथवा उसे वही कर सकता है।

कबीरदास की उल्टी बानी, आंगन सूखा, घर में पानी

यह कबीर की उलटबांसी के नाम से प्रसिद्ध उनकी गूढ़ रचनाओं का एक नमूना है। इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि मनुष्य भोग-विलास में डूबा रहता है, किंतु उसका मन ईश्वर-भक्ति में सूखा ही रहता है।

कबीरदास की उल्टी बानी, बरसे कंबल भीजे पानी

दे. ऊ.। इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि इस संसार में सज्जन पुरुष दुख भोगते हैं और असज्जन मौज उड़ाते हैं।

(वास्तव में कबीर की इन उलटबांसियों का कोई ठीक अर्थ लगाना बड़ा कठिन है। साधारण जनता में वे किसी अद्भुत या अनहोनी घटना की टिप्पणी के रूप में ही व्यवहृत होती हैं।)

कबूतरखाने का-सा हाल है, एक आता है, एक जाता है

किसी स्थान विशेष पर लोगों का बराबर आना-जाना।

क़ब्र का मुंह झांककर आए हैं।
मौत के मुंह से बचकर आए हैं।

क़ब्र पर क़ब्र नहीं बनती
(1) क़ब्र पर क़ब्र कोई नहीं बनाता।
(2) घर में व्यक्तियों का मत एक नहीं होता।
(3) विधवा फिर विवाह करे, तो उसकी भी भर्त्सना करने के लिए क.।
(4) फ़िज़ूलख़र्ची के लिए अथवा जब कर्ज़ पर कर्ज़ चढ़ता जाए, तब भी कहा जाता है।

क़ब्र में पांव लटकाए बैठा है
मरने को बैठा है। (वृद्ध के लिए क.।)

क़ब्र में भी तीन दिन भारी होते हैं।
मरने के बाद भी आदमी का परेशानियों से पीछा नहीं छूटता।
(मुसलमानों का विश्वास है कि कब्र में दफ़नाए जाने के बाद उन्हें तीन दिन तक खुदा के सामने ज़िंदगी का हिसाब देना पड़ता है।)

क़ब्र में रख के ख़बर को न आया कोई।

मुए का कोई नहीं, जीते-जी का सब कोई।
मरने के बाद कोई ख़बर नहीं लेता, सब जीते-जी के ही साथी होते हैं, मरे का कोई नहीं।

कभी कुंडे के इस पार, कभी कुंडे के उस पार
भंगड़ी या सदा आलसी के लिए क.।
कुंडा=भंग घोटने का बर्तन।

कभी के दिन बड़े, कभी की रात
(1) समय एक-सा नहीं रहता।
(2) आज अगर तुम्हारा मोका लगा है, तो कभी हमारा भी लगेगा।

कभी घुनघुना, कभी मुट्ठी भर चना
(1) कभी उबले गेहूं तो कभी चने।
(2) जब जो मिला खा लिया। संतोषी की उक्ति।

कभी घी घना, कभी मुट्ठी भर चना, कभी वह भी नहीं
दे. ऊ.।

कभी न कभी टेसू फूला
जब कोई मनुष्य अप्रत्याशित रूप से कोई भला काम कर बैठता है, तब उसके लिए क.।

कभी न गांडू रन चढ़े, कभी न बाजी बम
कायर के लिए कहा गया है कि वह न तो कभी युद्ध-क्षेत्र में ही गया, और न कभी उसके लिए जुझाऊ बाजे ही बजे।
(यह गंग कवि के नाम से प्रसिद्ध एक दोहे की अर्द्धाली है, जिसे कहा जाता है कि उन्होंने मरते समय कहा था और फिर वह हाथी के पैर तले कुचलवा डाले गए थे। पूरा दोहा इस प्रकार है—
कभी न गांडू रन चढ़े, कभी न बाजी बम।
सकल सभा को राम-राम, बिदा होत क़वि गंग।)

कभी न देखा बोरिया, सुपने आई खाट
हैसियत से बाहर से ऊंचे ख्याल बांधने वाले के लिए क.।

कभी न देखी चद्दर-चदरी
किसी स्त्री की घर वालों से शिकायत कि तुम लोगों ने मेरे लिए कभी कोई कपड़ा नहीं बनवाया।

कभी न सोई सांथरे, सुपने आई खाट
दे.—कभी न देखा बोरिया...।
सांथरा=टाट।

कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर
कभी एक आदमी का दूसरे से काम पड़ता है, तो कभी दूसरे का भी उससे।
(गाड़ी को नदी पार जाने के लिए नाव की आवश्यकता पड़ती है। किंतु नाव जब जमीन पर बनकर तैयार होती है, अथवा खराब हो जाती है, तब उसे गाड़ी पर लादकर ही नदी में ले जाते हैं या वहां से लाते हैं।

कभी रंज, कभी गंज
कभी दुख तो कभी सुख। जब जैसा समय आ जाए, भोगना ही पड़ता है।
गंज=ढेर राशि; बहुत-सा।

कम ख़र्च बालानशीन
ऐसी चीज़ जो कम दामों की हो, और बढ़िया तथा टिकाऊ भी हो।

कमबख़्त गए हाट, न मिली तराजू न मिले बांट
बेशऊर के लिए क. कि दूकानदार ने जो कुछ दिया वही लेकर आ गए, तौलकर नहीं देखा कि उसने कितना दिया। अथवा अभागे के लिए भी कह सकते हैं कि वह जहां जाता है, वहीं उसके काम में कुछ न कुछ बाधा पड़ जाती है।

कमबख़्ती की निशानी, जो सूख गया कुएं का पानी
यह मेरा दुर्भाग्य है जो कुएं का पानी ही सूख गया। सहसा कोई अनिष्ट हो जाने पर भाग्य को कोसना।
तुल.—जहं-जहं संत मठा को जाएं।
तहं तहं भैस पड़ा दोऊ मर जाएं।

कमर न बूता, साझे सूता, (पू., स्त्रि.)
अपने निखट्टू पति के प्रति किसी स्त्री का कथन।

कमर में तोसा, बड़ा भरोसा

गांठ की चीज समय पर काम आती है

तोसा=(फा. तोशः, कलेवा, नाश्ता।)

क़तर दर अक़रब है

चंद्रमा वृश्चिक में है। अर्थात ग्रह बुरे हैं।

(वृश्चिक राशि वाले के लिए चंद्रमा का उक्त राशि में होना शुभ नहीं माना जाता।)

कमली ओढ़ने से फ़कीर नहीं होता

भेष बदलने से कोई साधु नहीं हो जाता।

कमाई न धमाई, मोके भूंजे भूंजे खाई, (पू. स्त्रि.)

किसी स्त्री का अपने निकम्मे पति या पुत्र से कथन।

कमाऊ आवे डरता, निखट्टू आवे लड़ता, (स्त्रि.)

काम करने वाला तो विनम्र होता है और निकम्मा लड़ाकू।

कमाऊ खसम किसने न चाहे, (स्त्रि.)

सभी स्त्रियां चाहती हैं कि उन्हें कमाऊ पति मिले, अथवा कमाऊ पति को सभी स्त्रियां चाहती हैं।

कमाऊ पूत, कलेजे सूत, (पू., स्त्रि.)

कमाऊ लड़के को सभी चाहते हैं।

कलेजे सूत=कलेजे से लगकर सोना है।

कमाऊ पूत की दूर बला

कमाऊ लड़का कष्ट नहीं भोगता।

कमान से निकला तीर और मुंह से निकली बात फिर नहीं आती

मुंह से जो निकला, सो निकला, वह वापस नहीं लिया जा सकता। (इसलिए बात सोच समझ कर करें।)

कमानी न पहिया, गाड़ी जोत मेरे भैय्या, (ग्रा.)

किसी काम का पहले से कोई संबंध है ही नहीं, फिर भी उसे करने की तैयारी करना।

कमाय न धमाय, मोकों भूंजे भूंजे खाय, (स्त्रि.)

अकर्मण्य पति या पुत्र।

कमावें खानखाना, उड़ावें मियां फहीम

किसी के कमाए धन को कोई उड़ावे।

(कहा जाता है मुग़ल सम्राट अकबर के इतिहास प्रसिद्ध और वज़ीर बैरामखां के पास एक फहीम नाम का गुलाम था, जो बड़ा उदार था और मालिक का पैसा आंख मूंदकर लोगों पर खर्च कर दिया करता था।)

कमावे धोतीवाला, उड़ावे टोपीवाला

कमावे कोई और मौज करे कोई। 'धोतीवाला' से अभिप्राय भारतीय से है और 'टोपीवाला' से मतलब अंग्रेज़ से। इस प्रकार कहावत का अर्थ होता है कि अंग्रेज यहां भारतवासियों की गाढ़ी कमाई पर मौज उड़ाते रहे।

करके खाना और मौज करना

परिश्रम की रोटी खाओ और मौज करो।

कर खेती परदेस को जाए, वाको जनम अकारथ जाए, (कृ.)

जो खेती करके स्वयं उसकी देखभाल नहीं करता, वह अपना समय व्यर्थ खोता है। अर्थात खेती में वह सफल नहीं होता।

करघा छोड़ जुलाहा जाए, नाहक चोट विचारा खाए

अपना काम छोड़कर, व्यर्थ दूसरों के झगड़े में पड़ने से हानि उठानी पड़ती है।

(कथा है कि एक जुलाहा अपने मित्रों के साथ तमाशा देखने गया। रास्ते में पानी बरसने लगा। उससे बचने के लिए वह एक मकान की ओट में खड़ा हो गया। संयोग से मकान पुराना था और गिर पड़ा; जिससे जुलाहे को चोट लग गई। यह कहा. साधारणतः इस प्रकार प्रचलित है : करघा छोड़ तमाशे जाए, नाहक चोट जुलाहा खाए।)

करघा बीच जुलाहा सोहे, हल पर सोहे हाली।
फौजन बीच सिपाही सोहे, बागन सोहे माली।

अपनी-अपनी जगह सब शोभा पाते हैं।

हाली=हल चलाने वाला, किसान।

करछी हाथ सैलाने ही को करते हैं।

करछुल दाल-तरकारी चलाने के लिए ही हाथ में लिया जाता है। अर्थात नौकर को काम करने के लिए ही रखते हैं।

करतब की विद्या है

कोई काम हो, करने से ही आता है।

(स.--विद्या अभ्यास सारिणी)

करता उस्ताद, ना करता शागिर्द

जो काम का अभ्यास करता रहता है, वही असली उस्ताद है; जो नहीं करता, वह उस्ताद होकर भी शागिर्द के समान है।

कर तो डर, न कर तो खुदा के गज़ब से डर

बुरा काम करे या न करे, पर हर हालत में ईश्वर के कोप से तो डरना ही चाहिए।

(इसकी एक कथा है कि किसी जगह दो साधु थे। एक बार एक ने कहा—'कर तो डर, न कर तो भी डर'। दूसरा बोला—'मैं करूं नहीं तो डरूं क्यों ?' पहला बिना कुछ कहे चला गया। इसके कुछ दिनों पश्चात राजा के महल में

चोरी हुई। चोरों का नियम था कि वे चोरी के माल में से कोई एक वस्तु किसी साधु को भेंट किया करते थे। अतएव उन्होंने एक सोने का हार ले जाकर उस दूसरे साधु के गले में डाल दिया। उस समय वह आंखें मूंदकर ध्यान-मग्न था। इस कारण उसे इसका कुछ पता नहीं चला। दूसरे दिन जब उसके गले में हार पाया गया, तो उसे चोर समझकर फांसी की सज़ा दी गई। सिपाही जब उसे फांसी देने के लिए ले जा रहे थे, तो रास्ते में वही पहला साधु मिल गया। उसे देखते ही उसने कहा—देखो भाई, मेरी बात ठीक निकली या नहीं और उसने कहावत का अगला अंश दुहरा दिया।)

करदनी खेश, आमदनी पेश, न की हो तो कर देख
जैसा करोगे वैसा ही पाओगे, न देखा हो तो करके देख लो।

करना चाहे आशक़ी ओर मामा जी का डर
जब इश्क ही करने चले तो फिर डर किस बात का ? *(मुसलमानों में मामा-फूफा की लड़की से विवाह करना धर्म-संगत माना जाता है।)*

करनी करे तो क्यों डरे, करके क्यों पछताय।
बोवे पेड़ बबूल के, आम कहां से खाय।
बुरे काम का परिणाम तो भोगना ही पड़ेगा। उसके लिए पछताने से क्या होता है? बबूल का पेड़ बोकर कोई आम कैसे खाएगा।

करनी ख़ाक की बात लाख की
निकम्मे और बातूनी के लिए क.।

करनी ना करतूत, कहलाएं पूत सपूत
न काम के न काज के, कहलाते हैं सपूत।
निकम्मा लड़का।

करनी ना करतूत, चलियो मेरे पूत
दे. ऊ.।

करनी ना करतूत, लड़ने को मज़बूत
व्यर्थ का दंगा-फसाद करने वाला। प्रायः निकम्मे लड़के से क.।

करनी ना धरनी, नाम गुलबिया
नाम अच्छा, पर करनी कुछ नहीं।

करने को चाकरी, सोने को घर, (पू.)
जो घर में पड़ा-पड़ा अपना समय नष्ट करता रहे और बाहर जाकर कोई काम-धंधा न करना चाहे, उसके लिए व्यंग्य में क.।

कर पानी, न मुंह पानी
ऐसा गंदा लड़का जो कभी न हाथ धोता है, न मुंह।

कर भला, हो भला, अंत भले का भला
भला करने वाले का अंत में भला ही होता है।

करम के बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया
भाग्यहीन के लिए कहा जाता है कि वह जिस काम में हाथ डालता है, वही बिगड़ जाता है।
(भाग्यवादी कहावतों का सिलसिला नीचे भी है।)

करम रेख अमिट है
भाग्य का लिखा होकर रहता है।

करम रेख ना मिटै, करै कोई लाखों चतुराई
दे. ऊ.।

करमहीन खेती करै, बैल मरै या सूखा परै
भाग्यहीन जो काम करता है, वही गड़बड़ हो जाता है।

करमहीन जब होत है, सभी होत हैं बाम।
छांह जान जहं बैठते, तहां होत है घाम।
भाग्य विपरीत होने पर कोई साथ नहीं देता।

करमहीन सागर गए, जहां रतन का ढेर।
कर छूअत घोंघा भए, यही करम का फेर।
अभागे को अपने सब कामों में निराश होना पड़ता है। यहां तक कि वह रत्न को भी हाथ लगा दे तो वह घोंघा बन जाता है।

कर लै सो काम, भज लै सो राम
संसार में आकर मनुष्य जितना भी काम कर ले और जितना भी राम का भज ले, उतना ही अच्छा।

कर सेवा, खा मेवा
सेवा का फल अच्छा मिलता है।

करा और कर न जाना, मैं होती तो कर दिखाती, (स्त्रि.)
कोई स्त्री पर-पुरुष से प्रेम करके विपत्ति में पड़ गई। उसके प्रति किसी चतुर स्त्री का कथन कि—तूने काम किया और करते न बना। मैं होती तो करके दिखाती कि यह काम कैसे किया जाता है। ऐब करना और फिर छिपा लेना, हरेक के वश का नहीं।

करिया बाह्मन, गोर चमार; तेकरा संग न उतरे पार
इनका विश्वास नहीं करना चाहिए।
तेकरा=तिन के।

करिए मन की, सुनिए सब की
बात सब की सुने, पर करे वही, जो अंतःकरण कहे।

करें कल्लू भरें लल्लू (पू.)
करे कोई, दंड कोई भोगे।

करें परपंच, कहलाए पंच
छल-कपट करने वाले पंचों पर व्यंग्य।

करे एक, भरें सब

एक की भूल का प्रायश्चित्त पूरे समाज को करना पड़ता है।

करेगा सो भरेगा

जो करेगा सो भुगतेगा।

(मराठी में भी है—करील सो भरील)

करे दाढ़ी वाला, पकड़ा जाए मूछों वाला

बड़ों की भूल के लिए छोटे जिम्मेदार बनाए जाते हैं।

करो खेती और बोओ बैल, (कृ.)

खेती के काम में बैल नष्ट हो जाते हैं।

अथवा खेती करना चाहते हो, तो अच्छी नस्ल के बैल पैदा करो।

करो खेती और भरो दंड, (कृ.)

किसान को लगान और सिंचाई आदि का जो रुपया देना पड़ता है, उससे अभिप्राय है। अथवा खेती में बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं।

करो तो सवाब नहीं, न करो तो अज़ाब नहीं

ऐसा काम, जिसके करने या न करने से न कुछ भलाई हो न बुराई।

कर्ज़ काढ़ मेहमानी की, लौंडों मार दिवानी की

किसी ने ऋण लेकर अतिथि-सत्कार किया। नतीजा यह हुआ कि लड़कों ने मार-मार कर अक्ल ठीक कर दी। मतलब यह कि पिता के कर्ज़ को लड़के पसंद नहीं करते, क्योंकि उसका बोझ उन्हें वहन करना पड़ता है।

(सं.—ऋणकर्ता पिता शत्रुः।)

कर्ज़ की क्या मा मरी है ?

अर्थात क्या मुझे कहीं कर्ज़ मिलेगा नहीं ? तुम नहीं दोगे, दूसरी जगह से ले लूंगा।

कर्ज़दार छाती पर सवार

जिसे किसी से अपना रुपया लेना होता है, वह हमेशा उसे परेशान करता है।

कर्ज़ा काढ़ करै व्यवहार, मेहरी से जो रूठे भतार।
बे-बुलावत बोलै दरबार, ये तीनों पशम के बार।

जो कर्ज़ लेकर व्यापार करे, जो अपनी स्त्री से रूठे और जो बिना पूछे राज-दरबार में बोले, उसे महान मूर्ख समझना चाहिए।

कल का लीपा देव बहाय, आज का लीपा देखो आय, (स्त्रि.)

जो हुआ सो हुआ, अब आज का काम देखो, अर्थात वर्तमान की चिंता करो।

कल किसने देखी है ?

कल क्या हो, कौन जानता है, इसलिए जो करना है, उसे आज ही कर डालो।

कलवारी की अगाड़ी और कसाई की पिछाड़ी

कलवार की दूकान के सामने का और कसाई की दूकान के पीछे रखा माल खरीदना चाहिए।

(कलवार अपने ग्राहकों को पहले चोखी शराब देता है, इसलिए वह उसे दूकान में सब से आगे रखता है, और खराब या पानी मिली शराब पीछे रखता है, इसी तरह कसाई बासी मांस पहले बेच देने के लिए दूकान में सामने रखता है और ताजा मांस पीछे।)

कलहारी कलकल करै, दूहारी छू होय।
अपनी अपनी बान से, कभी न चूकै कोय।

लड़ाकू औरत हमेशा लड़ा करती है, और झगड़ा कराने वाली आपस में झगड़ा कराकर चंपत हो जाती है। जिसकी जो आदत होती है वह छूटती नहीं।

कलाल की दूकान पर पानी भी पीओ, तो शराब का गुमान होता है

बुरे स्थान पर जाने मात्र से ही लोग संदेह करने लगते हैं कि यह भी बुराई में शामिल है।

(मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ)

कलाल की बेटी डूबने चली, लोग कहें मतवाली

कोई अपनी मुसीबत में मर रहा है, लोग उसका मज़ाक उड़ाते हैं।

कलेजा टूक-टूक, आंसू एक भी नहीं

झूठी सहानुभूति दिखाना।

कल्लर का खेत, जैसे कपटी का हेत, (कृ.)

ऊसर की खेती वैसी ही है, जैसे कपटी की मित्रता। उससे कोई लाभ नहीं होता।

कल्ला चलै, सत्तर बला टलै

आदमी के लिए भोजन बड़ी चीज़ है। उसके मिलते रहने से बहुत-सी परेशानियां अपने-आप दूर होती हैं।

कल्ला=(फा. कल्लः) जबड़ा; कल्ला चलना यानी भोजन मिलना।

कश्मीरी बेपीरी, लज्ज़त न शीरीं

बेमुरब्बत कश्मीरी। उनमें कोई लज्ज़त और मिठास नहीं होती।

यह किसी का संस्कार रहा होगा।

कश्मीरी से गोरा सो कोढ़ी
कश्मीरी बहुत गोरे होते हैं। उनसे कोई अधिक गोरा हो, तो उसे कोढ़ी ही समझना चाहिए।

क़सम खाने ही के लिए है
झूठी क़सम खाने वालों के प्रति व्यंग्योक्ति।

कसाई की घास को कटड़ा खा जाए?
कसाई की घास को भैंसा चर जाए, यह हो नहीं सकता। टेढ़े से सब भय खाते हैं।

कसाई की बेटी दस वर्ष की उम्र में बच्चा जनती है
मतलब टेढ़े व्यक्ति के सब काम जल्दी होते हैं। अथवा उससे सब भय खाते हैं।

कसाई के भरोसे शिकार पालना
शिकरे को मांस की जरूरत होती है। उसके लिए यदि स्वयं मांस का प्रबंध न किया जाए और उसे कसाई के भरोसे छोड़ दिया जाए, तो वह जो भी शिकार पकड़कर लाए, उसे कसाई के यहां ही ले जाएगा।
शिकरा=बाजपक्षी, जिसे लोग पक्षियों के शिकार के लिए पालते हैं।

कहना आसान, करना मुश्किल
किसी काम के लिए मुंह से कहना आसान होता है, पर करना कठिन।

क़हरे दरवेश, बर जाने दरवेश, (फा.)
ग़रीब का गुस्सा स्वयं उस पर ही उतरता है। वह किसी को हानि नहीं पहुंचा सकता।

कहां जाऊं ? चूहे का बिल नहीं मिलता
किसी का बहुत निराश और परेशान होकर क.।
(इस वाक्य का प्रयोग प्रायः मज़ाक में ही होता है।)

कहां बीबी, कहां बांदी
मालिक और नौकर की बराबरी कैसे हो सकती है ?

कहां बुढ़िया? कहां राजकन्या?
एक बूढ़ी गरीब औरत के साथ राजकन्या की तुलना क्या?

कहां राजा भोज, कहां कंगला तेली?
भोज जैसे प्रतापी सम्राट के सामने एक गरीब तेली की क्या बिसात?
(यह कहावत—'कहां राजा भोज कहां गंगू तेली' इस रूप में ही अधिक प्रचलित है। यह गंगू तेली गांगेयतेलप का अपभ्रंश बताया जाता है, जिसे राजा भोज ने युद्ध में पराजित किया था।)

कहां राम-राम, कहां टेंटें
एक श्रेष्ठ वस्तु के साथ निकृष्ट वस्तु की तुलना क्या ? अथवा असली वस्तु तो असली ही रहेगी, कोई नकली वस्तु उसकी बराबरी कैसे कर सकती है ?
(पालतू तोतों को राम-राम कहना सिखाया जाता है, पर वे वास्तव में टें-टें ही किया करते हैं।)

कहा न अबला करि सकै, कहा न सिंधु समाय?
कहा न पावक में जरे, कहा काल न खाय?
अर्थात अबला सब कुछ कर सकती है, समुद्र में सब कुछ समा जाता है, अग्नि में सब कुछ भस्म हो जाता है और काल सब को खा जाता है।
इसके उत्तर में किसी ने कहा है—
सुत नहिं अबला करि सके, मन नहिं सिंधु समाय।
धर्म न पावक में जरै, नाम काल नहिं खाय।

कहानी जैसी झूठी नहीं, बात जैसी मीठी नहीं
कहानी सुनते समय क.।
इसके आगे प्रायः इतना और जुड़ा रहता है 'घड़ी घड़ी का विश्राम, को जाने सीता राम'।

कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा, भानभती ने कुनबा जोड़ा
कोई बिल्कुल ही बे-सिर पैर काम।
(भानुमती राजा भोज के समय की एक जादूगरनी बताई जाती है)

कहीं डूबे भी तिरे हैं?
जो एक बार बिल्कुल बिगड़ चुकता है, उसके संभलने की आशा फिर नहीं करनी चाहिए।

कहीं तो सूहा चुनरी, और कहीं ढेले लात
कहीं तो किसी स्त्री को रंगीन साड़ी पहनने को मिलती है, और कहीं लातें-घूंसे खाने को मिलते हैं।
(अपना-अपना भाग्य। अथवा समय-समय की बात।)

कहीं नाखून भी गोश्त से जुदा हुआ है
घर का आदमी हमेशा घर का ही रहेगा।

कहीं सूखे दरख़्त भी हरे हुए हैं
बिल्कुल बिगड़ी हुई हालत नहीं सुधरती।

कहूं तो मां मारी जाए, न कहूं तो बाप कुत्ता खाए
हर प्रकार से संकट।
(कथा है—किसी स्त्री ने भूल से अपने पति के लिए बकरे के मांस के स्थान पर कुत्ते का मांस पका दिया। उसके पुत्र को किसी प्रकार इसका पता चल गया। पिता जब भोजन करने बैठा और मांस परोस दिया गया, तो वह बड़ी चिंता

में पड़ गया। भेद खोल देने से मां पर मार पड़ती और चुप रहने से बाप को कुत्ते का मांस खाने का पाप लगता। असमंजस की इसी अवस्था में उसने उपर्युक्त बात कही।)

कहें खेत की, सुने खलिहान की

कहा जाए कुछ और समझा जाए कुछ।

कहें ज़मीन की, सुने आसमान की

दे. ऊ.।

कहे से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता।

कोई आदमी अपनी खुशी से भले ही कोई काम करता रहे, पर कहने से न करे, तब कहा जाता है।

कहे से कोई कुएं में नहीं गिरता

हर आदमी स्वयं सोच-विचार कर ही कोई काम करता है। दूसरे के कहने मात्र से कोई अपने को विपत्ति में नहीं डालता।

कांटा बुरा करील का, औ बदली का घाम।
सौकन बुरी है चून की, और साझे का काम।

करील का कांटा और बदली का घाम दुखदायी होता है। सौत भी दुखदायी होती है, फिर भले ही वह चून की हो, और साझे का काम भी दुखदायी होता है।

कांधे धनुष, हाथ में बाना, कहां चले दिल्ली सुलताना?
बन के राव विकट के राना, बड़न की बात बड़े पहचाना।

बड़ों की बात बड़े ही समझ सकते हैं।

(इस तुकबंदी का अंतिम चौथा चरण ही कहावत के रूप में प्रयुक्त होता है। इसकी कथा है कि कोई एक धुनकर हाथ में धुनौटा और कंधे पर धुनकी लिए जंगल में होकर जा रहा था। इतने में एक सियार की नज़र उस पर पड़ी। यह समझकर कि यह धनुष-बाण लिए कोई सिपाही है, वह डर गया और उसकी खुशामद करते हुए उसने कहावत के प्रथम दो चरण कहे। धुनकर ने भी उसे जंगल का राजा शेर समझा और उसके प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए अंतिम अंश कहा।)

काका काहू के न भये

जब उम्र में कोई बड़ा अपने को धोखा दे, तब व्यंग्य में क.।

काका की भैंसी, भतीजे की तोंद

संतानहीन व्यक्ति का पैसा उसके भाई-भतीजे उड़ाते हैं।

काका ना करे साका

चाचा से भतीजे को विशेष सहायता की आशा नहीं करना चाहिए, क्योंकि चाचा तो अपने पुत्रों पर ही अधिक खर्च करना चाहेगा। चाचा की बराबरी के किसी दूसरे मनुष्य से किसी मामले में निराश होने पर भी कह सकते हैं।

साका=यश, भलाई।

कागज की नाव (या पनगुड्डी) आज न डुब्बी, कल डुब्बी

धोखा-धड़ी का काम बहुत दिनों नहीं चलता। क्षणस्थायी वस्तु के लिए भी कह सकते हैं।

कागज की नाव नहीं चलती

दे. ऊ।

कागज के घोड़े दौड़ाते हैं

कोरी कागजी कार्यवाही करना।

कागा, कौवा और खरगोश, ये तीनों नहिं माने पोस।

जंगली कौवा, कौवा और खरगोश, उन्हें पालतू नहीं बनाया जा सकता।

(जंगली कौवा या काग बिल्कुल काला होता है और कौवे की गर्दन भूरी होती है, दोनों में इतना ही अंतर है।)

कागा बोले, पड़ गए रोले

कौवे सूर्योदय के होते ही बोलना शुरू कर देते हैं। उनके बोलते ही सारी दुनिया जाग उठती है।

कागा रौल

कौवों की तरह का शोरगुल।

कागै काग न भिखारी भीख

सूम के लिए कहावत, जो न तो कौवे को बलि देता है और न भिखारी को भीख।

काग=कागौर या काक बलि जो श्राद्ध के दिनों में भोजन के अंश के रूप में कौवों को दी जाती है।

काजल की कोठरी

ऐसी जगह जहां जाने से अपयश के सिवा और कुछ हाथ न लगे। ऐसे काम को भी कहते हैं, जिसे करने से बदनामी हो।

काजल की कोठरी में जाएगा तो धब्बा लगेगा ही

बुरे स्थान में जाने से या बुरे की संगत करने से कुछ न कुछ बदनामी अवश्य होती है।

(काजल की कोठरी में कैसो हू सयानो जाए
काजल की एक रेख लागिहै पै लागि है।)

काजल गया बिहार, बहुरिया निहुरे ही है, (पू.)

बहू काजल की प्रतीक्षा में झुकी खड़ी है कि अब आता है अब आता है, किंतु काजल गया है बिहार, इतने शीघ्र क्यों आने चला?

जब नजदीक से ही आने वाली किसी वस्तु की प्रतीक्षा करते-करते कोई थक जाए, तब क.।

काजल तो सब लगाते हैं, पर चितवन भांत भांत, (स्त्रि.)
बनाव-शृंगार तो सब करते हैं, पर निजी सौंदर्य एक अलग ही चीज होती है।
(वह चितवन औरे कछु जिहि बस होत सुजान।)

काज़ी-ए-दल्लाल
काज़ी का दलाल। शरारती आदमी। वह आदमी जो काजी को रिश्वत खिलाए।

काज़ी का प्यादा घोड़ सवार
काज़ी का नौकर हर काम की ऐसी जल्दी मचाता है, मानो घोड़े पर सवार है। दफ्तर के बाबू लोगों ओर चपरासियों पर कटाक्ष, जो अपने को साहब से कम नहीं समझते।

काज़ी की मूंज
जब एक बार किसी को कोई वस्तु देकर हमेशा उसका एहसान बताया जाए, तब क.।
(कथा है—किसी जिले में नए अफ़सर आए। उन्हें एक दिन मूंज की रस्सी की जरूरत पड़ी। काज़ी ने लाकर तुरंत दे दी। साथ ही माल विभाग के रजिस्टर में उसकी कीमत अफसर के नाम चढ़ा दी। दाम तो कभी नहीं दिए गए, पर उतनी रकम अफ़सर के नाम प्रतिवर्ष खाते में निकलती रही।)

काज़ी की लोंडी मरी, सारा शहर आया; काज़ी मरे कोई न आया
काज़ी की लोंडी के मरने पर सारा शहर मातमपुर्सी के लिए गया, लेकिन स्वयं काज़ी के मरने पर कोई उनके दरवाजे नहीं गया। मतलब यह कि बहुत से काम बड़े आदमियों को खुश करने के लिए ही किए जाते हैं। उनके मरने पर उन्हें कोई नहीं पूछता; क्योंकि फिर उनसे कोई काम नहीं बनने का।

काज़ी के घर के चूहे भी सयाने
हाकिम के घर का छोटे-से-छोटा आदमी भी चालाक होता है।
(मुग़ल ज़माने में अदालत के अफ़सर को काज़ी कहते थे। कहावत में उन अफ़सरों पर व्यंग्य भी छिपा है।)

काज़ी के मूसल में नारा
क़ाजी (पेजामे में) मूसल से इज़ारबंद डालने को कहता है। बड़ा हाकिम चाहे जैसा उल्टा-सीधा काम करवाए, उससे कोई कुछ नहीं कह सकता।

काज़ी जी खाना आया, हमें क्या ? तुम्हारे लिए ही है, फिर क्या ?
बेमतलब बोलने वाले से क.। जब कोई अपने मतलब की बात स्पष्ट न कहे, तब उससे भी क.।

काज़ी जी दुबले क्यों ? शहर के अंदेशे से
जब कोई व्यर्थ दूसरों की चिंता करे।

काज़ी न्याव न करेगा, तो घर तो आने देगा
किसी के सामने जाकर अपनी बात तो हमें स्पष्ट कहना ही चाहिए, कोई अगर नहीं मानता, तो उससे स्थिति में कोई अंतर नहीं पड़ता।

काज़ी बहुतेरा हारा रहे, पर बंदा न हारा
मूर्ख और जिद्दी।

काटने वाले को थोड़ा बटोरने वाले को बहुत, (कृ.)
फसल कट चुकने के बाद खेत में पड़ा अन्न बटोरने वालों को फसल काटने वाले मज़दूरों की अपेक्षा अधिक मिल जाता है।
(जिन्होंने वास्तव में काम किया, उन्हें कम और फालतू आदमियों को अधिक मिल जाए, तब के लिए क.।)

काटा और उलट गया
दुष्ट मनुष्य के लिए कहते हैं जो सर्प की तरह काटकर पलट भी जाए।
(कहते हैं सर्प अगर काटकर पलट जाए तो उसका ज़हर और भी तेज़ चढ़ता है। यहां पलट जाने के दो अर्थ हैं—(1) उलट जाना; और (2) किसी काम को करके मुकर जाना।)

काटे कटे, न मारे मरे
बहुत ज़िद्दी और धृष्ट के लिए क.। ऐसे व्यक्ति के लिए कह सकते हैं जिससे किसी प्रकार पिंड न छूट रहा हो।

काटे बार, नाम तलवार का, लड़े फौज नाम सरदार का
काम तो दूसरे लोग करते हैं, पर यश बड़ों को मिलता है। बार=वार, आघात।

काटो तो खून नहीं
बहुत डर जाना। सन्न हो जाना।

काठ का उल्लू
वज्र मूर्ख

काठ का घोड़ा नहीं चलता
(1) पैसे के बिना कुछ नहीं होता।
(2) बुद्धिहीन मनुष्य से कोई काम नहीं लिया जा सकता।

काठ का घोड़ा, लोहे की ज़ीन, जिस पर बैठे लंगड़दीन
बच्चों की तुकबंदी, जिसमें लाठी या बैसाखी के सहारे चलने वाले लंगड़े से मतलब है।

काठ की हांड़ी बार-बार नहीं चढ़ती
छल-कपट का व्यापार हमेशा नहीं किया जा सकता, पहली बार में ही लोग सचेत हो जाते हैं।

काठ के घोड़े दौड़ते हैं
ऐसा काम करना जिसका कोई परिणाम नहीं निकलने का।

काठ छीलो तो चिकना, बात छीलो तो रूखी
(1) बात को बढ़ाना ठीक नहीं।
(2) आपसी मामले में बहुत बहस नहीं करनी चाहिए।

काढ़ में या दाढ़ में
पैसा या तो दूसरों को देने में खर्च होता है या खाने-पीने में।
काढ़=निकास।
दाढ़=जबड़ा, मुंह।

कातक कुतिया, माह बिलाई, चैत चिड़िया, सदा लुगाई
कातिक में कुतिया, माघ में बिल्ली, चैत में चिड़िया और स्त्री हमेशा कामातुर रहती है।

कातक जो आंवर तर खाय, कुटुम सहित बैकुंठे जाय
कार्तिक के महीने में जो आंवले के नीचे भोजन करे, वह कुटुम्ब सहित वैकुंठ जाता है।
(कार्तिक सुदी 9 को आंवला नवमी होती है। इस दिन हिंदुओं में आंवले के वृक्ष का पूजन और उसके नीचे जाकर भोजन करना शुभ माना जाता है।)

कातक, बात कहां तक
कार्तिक का महीना बात करते बीत जाता है।
(क्योंकि इस महीने में त्यौहार बहुत होते हैं और खुशी के दिन जाते मालूम नहीं होते।)

काता और ले दौड़ी
किसी थोड़े से काम को करके बताते फिरना कि देखो मैंने यह किया।

काता सूत परेतन को, पक्की रोटी जुड़यावे को, (स्त्रि.)
लिपटे हुए सूत को वह उकेल सकती है, और सिकी हुई रोटी को तहाकर रख सकती है। निकम्मी औरत।

कान कहत नहिं बैन ज्यों, जीभ सुनत नहिं बैन
कानों में बोलने की शक्ति नहीं होती और जीभ में सुनने की। जिसका काम उसी से होता है।
(पूरा दोहा इस प्रकार है—
ब्रह्म बनाए बन रहे, ते फिर और बनैन।
कान कहत नहिं बैन ज्यों, जीभ सुनत नहिं बैन।
(वृन्द)

कान पर एक जूं नहीं चलती, (ग्रा.)
किसी की बात पर बिल्कुल ही ध्यान न देना।

कान प्यारे तो बालियां, जोरू प्यारी तो सालियां
प्रिय वस्तु से संबंधित सभी वस्तुएं प्रिय लगती हैं।

कान में ठेंठियां दे ली हैं।
किसी की बात न सुनना।

कान में तेल डाले बैठे हैं
किसी बात की कोई खबर ही नहीं।

कढ़ाही चाटेगा तो तेरे ब्याह में मेह बरसेगा
मां का बच्चे से कहना।
(लोगों का विश्वास है कि बच्चे के कड़ाही चाटने से उसके ब्याह में मेह बरसता है।)

काना कुत्ता पीच ही से आसूदा
काना कुत्ता मांड़ से ही संतुष्ट हो जाता है। अयोग्य या निकम्मा थोड़ी चीज में ही प्रसन्न हो जाता है।

काना कौवा
एक गाली। काले और बदशकल आदमी से भी क.।

काना टट्टू, बुद्धू नफर
एक तो काना घोड़ा, और फिर साईस भी मूर्ख। दोनों एक से।
अधूरे या टूटे-फूटे साज-सरंजाम वाले के लिए क.।

काना मुझको भाय नहीं, काने बिन सुहाय नहीं, (स्त्रि.)
कोई चीज जब पसंद न आए और उसके बिना काम भी चलता नजर न आए, तब क.।

काना, याना, लाड़ला, तीनों हट की खान।
अंधा, गूंगा, केंयड़ा, हैं पूरे शैतान।
स्पष्ट।
याना=अयाना, नादान, बालक।
केंयड़ा=तिरछी आंख वाला।

काना रग्गी
काना ज़िद्दी होता है।

कानी अपना टेंट न निहारे और की फुल्ली निहारे
दे—अपना टेंटर देखें नहीं...।

कानी आंख मटर का बिया, वह भी आंख मटर का बिया, (पू.)
दे.—एक आंख...।

कानी के ब्याह को सौ जोखों
जिस काम में पहले से ही कोई त्रुटि हो, उसमें विघ्न भी बहुत आते हैं।

कानी को काना प्यारा, रानी को राना प्यारा
(1) अपनी वस्तु हरेक को प्रिय होती है, फिर वह कैसी ही क्यों न हो।

(2) जिसके भाग्य में जो बदा है, वह उसमें ही संतुष्ट रहता है।

कानी को कौन सराहे, कानी का मियां

अपनी वस्तु को सब सराहते हैं, फिर दूसरों की दृष्टि में वह कितनी ही बुरी क्यों न हो।

पाठा.—कानी कौ कौन सराहे, कानी की मां।

कानी गाय के अलगे बथान

कानी गाय अलग बंधती है, अथवा सबसे अलग रहना चाहती है, क्योंकि घास चरने में उसे कठिनाई होती है, दूसरे ढोर उसे मारते भी हैं।

जब कोई व्यक्ति सबसे अलग निराला काम करना चाहता है, तब क.।

कानी गाय बाम्हन के दान, (पू.)

निकम्मी चीज दूसरे के मत्थे मढ़ना।

काने के एक रग सिवा होती है

काने प्रायः कुटिल होते हैं।

रग=नस।

कापर करूं सिंगार पिया मोर आंधर, (स्त्रि.)

मेरे पति तो अंधे हैं, शृंगार किसके लिए करूं।

(जहां कोई गुणग्राहक न हो, वहां गुणी का मन अपना करतब दिखाने में नहीं लगता।)

काबुल गए मुग़ल बन आए, बोलन लागे बानी।
'आब' 'आब' कर मर गए, सिरहाने रहा पानी।

दे.—'आब' 'आब' कर...।

काबुल में क्या गधे नहीं होते ?

मूर्खों की कहीं कमी नहीं।

काबुल में मेवा भई, बृज में भई करील

जहां जो वस्तु होनी चाहिए, उसका वहां न होना।

प्रकृति का मनमौजीपन।

(यह पूरा दोहा इस प्रकार है—
कहूं कहूं गोपाल की गई सिटल्ली भूल।
काबुल में मेवा दई, बृज में दई करील।)

काम करे नथ वाली, पकड़ी जावे चिरकुट वाली, (स्त्रि.)

बड़े आदमी से कोई अपराध होने पर हमेशा गरीब पकड़ा जाता है।

चिरकुट वाली=चिथड़े वाली, गरीब।

काम का न काज का, दुश्मन अनाज का

निठल्ला आदमी।

काम का न काज का, सेर भर अनाज का

दे. ऊ.।

काम को 'अहां' और खाने को 'हां'

प्रायः निठल्ले लड़के से कहते हैं।

काम को काम सिखाता है

काम करने से ही आता है। मनुष्य अनुभव से सीखता है।

काम कोढ़ी, मुंह बज्जुर

काम के लिए जी चुराना और खाने के लिए मुस्तैद रहना।

कोढ़ी=आलसी से मतलब है।

बज्जुर=वज्र जैसा।

काम, क्रोध, मद, लोभ की, जौ लौं मन में खान।
का पंडित, का मूरखा, दोऊ एक समान।

स्पष्ट।

काम चोर, निवाले हाजिर

काम से जी चुराए, खाने के वक्त आ जाए। अकर्मण्य।

काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं है

काम से जी चुराने वाले लड़के या नौकर से कहा करते हैं।

काम सरा, दुख बीसरा, छाछ न देत अहीर

काम निकल जाने पर फिर कोई नहीं पूछता।

(कथा है कि—एक अहीर बीमार पड़ा। जब तक वैद्य की चिकित्सा कराता रहा, तब तक नित्य उसके घर छाछ भेजता रहा। पर नीरोग हो जाने पर छाछ देना बंद कर दिया।)

कायथ का बेटा, मरा भला या पढ़ा भला

कायस्थ का बेटा या तो पढ़ा-लिखा हो, या फिर मर जाए सो अच्छा।

(कायस्थों का काम पढ़ना-लिखना माना जाता था।)

कायथ का हतियार कलम है

कायस्थ कलम से दूसरों की गर्दन काटते हैं।

(कायस्थ अधिकांश में दफ्तरों में नौकरी करते हैं, जहां उनसे नित्य साधारण जनता का काम पड़ता है।)

कायथों का छोटा, और भांड़ों का बड़ा, दोनों की खराबी

(केवल कायस्थों में ही नहीं, हिंदू घरों में जो सबसे छोटा होता है, उसे ही सबसे अधिक काम करना पड़ता है। छोटा समझकर हर आदमी उससे काम के लिए कहता है। उसी तरह भांड़ों में बड़े को चूंकि नकल करनी अच्छी आती है, इसलिए सब से अधिक श्रम उसे ही करना पड़ता है।)

काया कष्ट है, जान जोखों नहीं

बीमारी में रोगी को ढाढ़स देने के लिए कहते हैं।

काया पापी अच्छा, मन पापा बुरा

शरीर से भले ही पाप करे पर मन का पापी अच्छा नहीं।

तु.—कपटी से कोढ़ी अच्छा।

काया माया का क्या भरोसा ?

शरीर और धन का कुछ भरोसा नहीं, न जाने कब चले जाएं।

काया रखे धर्म, पूंजी रखे व्यवहार

शरीर के बने रहने से ही धर्म की रक्षा हो सकती है, और पूंजी बनी रहने से ही व्यापार चल सकता है। अथवा धर्म शरीर की रक्षा करता है और व्यापार धन की।

काल, कढ़ाऊ, किसान का खाऊ, (कृ.)

सूखा (अवर्षण) और कर्ज़ा दोनों ही किसान के लिए दुखदायी हैं।

काल का साग, गरीब का भाग

मौत गरीब को ही अधिक सताती है। अथवा अकाल में गरीबों को ही अधिक कष्ट भोगना पड़ता है।

काल के आगे किसी का बस नहीं चलता

स्पष्ट।

काल के आगे सब लाचार हैं

स्पष्ट।

काल के मुंह में सब हैं

एक दिन सबको मरना है।

काल के हाथ कमान, बूढ़ा बचे न जवान

मृत्यु किसी की रू-रिआयत नहीं करती।

काल कोठरी

खतरनाक जगह।

काल जुआड़ी

मौत से खिलवाड़ करने वाला।

काल टले, कलाल न टले

मौत टल सकती है, पर शराब नहीं छूटती।

काल न छोड़े राजा, न छोड़े रंक

मौत अमीर या गरीब किसी की रियायत नहीं करती।

काल सबको खाए बैठा है

सब मौत के मुंह में जा चुके हैं।

काला कोयला

कोयले जैसा काला और बदशक्ल आदमी।

काला मुंह, करील के दांत

काला, बदशक्ल आदमी।

करीला=एक कटीली झाड़ी।

काला मुंह, नीले हाथ पांव

घृणित व्यक्ति।

काली गाय बाम्हन को दान

श्रेष्ठ वस्तु दूसरे को देनी चाहिए।

(काली गाय हिंदुओं में शुभ मानी जाती है।)

काली घटा डरावनी और धौली बरसनहार

काले बादल केवल भय दिखाते हैं, बरसते भूरे या मटमैले ही हैं। असली और दिखावटी चीज में बड़ा अंतर होता है।

(जो गरजते हैं वे बरसते नहीं।)

काली जुमेरात का वादा करना, (मु.)

लंबा वादा करना।

(काली जुमेरात कृष्ण पक्ष के आखिरी बृहस्पतिवार को कहते हैं, जो मुसलमानी महीने के अंत में पड़ता है।)

काली भली न सेत, दोनों मारो एक ही खेत

दो वस्तुओं में से कौन अच्छी और कौन बुरी है, इसका जब कोई निश्चय न हो, तब दोनों को ही त्याग देना ठीक है।

(इसकी कथा है कि एक राजा के दो रानियां थीं, जिनमे से वह एक को अधिक प्यार करता था। दोनों जादू जानती थीं। एक दिन वे चील बनकर आपस में लड़ने लगीं। उनमें एक सफेद और दूसरी काली थी। राजा को जब पता चला कि ये दोनों मेरी रानियां ही हैं, जो लड़ रही हैं, तो उसने उनमें से एक को मार डालने का निश्चय किया। किंतु वह यह तै नहीं कर सका कि इनमें से किसे खतम किया जाए ? काली को या सफेद को। मंत्री से जब इस विषय में सलाह ली, तो उसने जवाब दिया—'काली भली न सेत, दोनों मारो एक ही खेत'। इस पर राजा ने उन दोनों को मार डाला।)

काली हांड़ी पीछे

किसी अत्याचारी हाकिम के मरने या अलग होने पर कहावत।

(कुछ छोटी जातियों में प्रथा है कि घर में किसी की मृत्यु होने पर घर की पुरानी हांड़ी फोड़ दी जाती है। उसी से कहावत बनी।)

काले का काटा पानी नहीं मांगता

काले सर्प का काटा बचता नहीं।

(धूर्त्त के लिए कहा गया है कि उसका मारा बच नही सकता।)

काले की सी एक लहर आ जाती है

अत्याचारी के लिए कहा गया है कि काले सर्प की तरह एक लहर उसके मन में उठती है।

काले के आगे चिराग नहीं जलता

जबर्दस्त के सामने किसी की नहीं चलती।

(लोगों का विश्वास है कि काले सर्प के मणि होती है, जिसके प्रकाश में दीपक की ज्योति मंद पड़ जाती है।)

काले के काटे का जंतर न मंतर

दे.—काले का काटा...।

काले कोसों

बहुत दूर का स्थान।

काले सिर का एक न छोड़ा

कुलटा के लिए क.।

(काले सिर से मतलब जवान आदमी से है।)

काले सिर का बेढब होता है

मनुष्य एक बेढब प्राणी है।

कासा दीजे, वासा न दीजे

अनजान आदमी को खिला दे, पर घर में जगह न दे।

कासा=कांसा, थाली।

वासा=निवास।

कासा भर खाना, आसा भर सोना

भरपेट खाना, और नींद भर सोना।

आराम की जिंदगी बिताना।

काहे को गूलर का पेट फड़वाते हैं ?

मुझसे क्यों सच-सच सुनना चाहते हैं ? मैं जो कहूंगा वह तुम्हें रुचेगा नहीं।

(गूलर को तोड़ने से कीड़े निकलते हैं, जो ग्लानि उत्पन्न करते हैं।)

किया, पर कर न जाना, मैं होती तो कर दिखाती, (स्त्रि.)

दे.—करा और कर न जाना...।

किरिया और तरकारी खाने ही के वा, (भो.)

सोगंध और तरकारी खाने ही को बनी है। जो बहुत सोगंध खाता है, उससे क.।

किसकी मां ने धौंसा खाया है?

अर्थात मेरे जन्म के अवसर पर मेरी मां ने भी सौंठ खाई है, भूसी नहीं खाई। एक तरह की चुनौती।

धौंसा=दाल को फटकने के बाद बचा हुआ अंश।

किस खेत का बथुआ है?

उपेक्षा में कहते हैं कि तुम हो क्या चीज?

किस खेत की मूली है

दे. ऊ.

किस बाग की मूली है?

दे. ऊ.

किस बिरते पर तत्ता पानी, (स्त्रि.)

आप किस बूते पर गरम पानी मांगते हैं ? करनी-करतूत तो कुछ है ही नहीं।

(कथा है कि किसी स्त्री का पति निखट्टू था। एक दिन सुबह उठकर उसने नहाने के लिए गरम पानी मांगा, तब स्त्री ने ताना मारकर उक्त बात कही।)

किसी का अवा बिगडे, इनका खदाने का खदाना बिगड़ गया

सर्वनाश हो गया

अवा=वह गड्ढा, जिसमें कुम्हार मिट्टी के बर्तन पकाते हैं। ('अवा बिगड़ना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है पूरी की पूरी वस्तु का बिगड़ जाना। खदाना या खदान=वह स्थान, जहां से कुम्हार बर्तनों के लिए मिट्टी खोदकर लाता है।)

किसी का घर जले कोई तापे

किसी की हानि से कोई लाभ उठाए।

किसी का मुंह चले, किसी का हाथ

कोई गाली देता है, तो कोई मार बैठता है। कोई आदमी जब किसी से लड़ता है, तो दूसरा भी अपनी शक्ति के अनुसार उसका जवाब देता है। मार बैठने वाला अक्सर यह कहकर अपनी सफाई देता है।

किसी का लड़का, कोई मिन्नत माने

जो काम स्वयं किसी के करने का है, उसे कोई दूसरा करता फिरे।

मिन्नत माना=दीर्घ जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना।

किसी का हाथ चले, किसी की जबान चले

दे.—किसी का मुंह चले।

किसी की मेहनत जाया नहीं जाती

किसी का परिश्रम विफल नहीं होता।

किसी की साई, किसी को बधाई

बयाना किसी का लिया और बधाई किसी के यहां जाकर बजाई। वादा खिलाफ़ी।

साई=उस पैसे को कहते हैं, जो काम या चीज के लिए किसी को पेशगी दिया जाता है।

किसी के क्या दबैल बसते हैं?

हम क्या किसी के दबे हैं?

किसी के नुकसान का रवादार न हो

किसी के नुकसान से संबंध न रखे। अथवा किसी का नुकसान न चाहे।

किसी को अपना कर लो, या किसी के हो रहो
या तो किसी को अपना भक्त बनाओ, या फिर किसी के भक्त बनकर रहो। तात्पर्य यह कि दुनिया में ऐसा आदमी किसी काम का नहीं, जिसके किसी से आपसी संबंध न हों।

किसी को तवे में दिखाई देता है, किसी को आरसी में
अपनी-अपनी दृष्टि।
(प्रायः व्यंग्य में ही कहते हैं।)

किसी को बैंगन बाय, किसी को पत्थ
कोई एक वस्तु किसी के लिए हानिकर होती है, तो दूसरे के लिए लाभदायक।
बाय=वायुकारक।
पत्थ=पथ्य, अनुकूल भोजन।
पाठा.--किसी को बैंगन बायले, किसी को पत्थ बरोबर।

किसी ने यह भी नहीं पूछा कि तुम्हारे मुंह में दांत हैं
किसी ने हमें टोका तक नहीं। हम बड़े मजे में गए और लौट भी आए।

क़िस्मत के लिखे को कोई नहीं मेट सकता
भाग्य का लिखा होकर रहता है।

क़िस्मत दे यारी, तो क्यों हो ख्वारी
भाग्य अगर साथ दे, तो विपत्ति क्यों भोगनी पड़े?

क़िस्मत न दे यारी, तो क्योंकर करे फौजदारी
भाग्य के अनुकूल हुए बिना मान-सम्मान कैसे मिल सकता है?

कुंआरी को सदा बसंत
व्यंग्य में वेश्या के लिए क.।

कुंआरी खाय रोटियां, ब्याही खाय बोटियां, (स्त्रि.)
कुंआरी लड़की तो सिर्फ रोटियां ही खाती हैं, किंतु ब्याही बाप की बोटियां खा जाती है।
(क्योंकि ब्याह हो जाने के बाद ससुराल जाते समय तथा खुशी के अन्य मौकों पर भी बाप को हमेशा उसे कुछ न कुछ देना पड़ता है।)

कुंजड़न की अगाड़ी और कसाई की पिछाड़ी
कुंजड़िन के पास ताज़ी तरकारी शुरू में ही मिलती है, और कसाई अपना अच्छा मांस बाद में बेचता है। इसलिए अगर अच्छा सौदा लेना चाहो तो कुंजड़िन के पास पहले और कसाई के पास बाद में जाना चाहिए।

कुआं बेचा है, कुएं का पानी नहीं बेचा
बेमतलब की बात पर झगड़ा। जब कुआं बेच दिया तो पानी भरना रोकने में क्या तुक?

कुएं का ब्याह, गीत गावे मसीद का
असंगत काम।
(भारत की कुछ जातियों में अपनी किसी मनोकामना की पूर्ति के लिए कुएं अथवा बागीचे का ब्याह करने की आम प्रथा है।)
मसीद-मस्जिद।

कुएं की मिट्टी कुएं ही में लगती है
किसी काम का लाभ उसी में खर्च भी हो जाता है।

कुएं झांकते हैं
व्यर्थ का काम करते हैं। अथवा इतने परेशान हैं कि कुएं में गिरकर प्राण देना चाहते हैं।

कुएं में भांग पड़ी है
सब की बुद्धि भ्रष्ट है।
(एक जो होय, तो ज्ञान सिखाइए, कूपहि में यहां भांग परी है।--हरिश्चंद्र)

कुचाल संग फिरना, आप मूत में गिरना
बुरे का संग करना, जानबूझकर बुरा बनना है।

कुचाल संग हांसी, जीव जान की फांसी, (स्त्रि.)
बुरे के साथ हंसी-दिल्लगी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे बुराई ही होती है।

कुछ आंसू से पोंछते हैं
झूठी सहानुभूति दिखाते हैं।

कुछ खो ही के सीखते हैं
आदमी ठोकर खाकर ही सीखता है।

कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे
अगर तुम मेरी बात समझ गए, तो मैं भी तुम्हारी बात समझ गया।
एक-दूसरे के मन की बात ताड़ लेना और कुछ कहने की आवश्यकता न समझना।
(इसकी कथा है कि कोई एक राहगीर अपने माल की गठरी सिर पर रखे जा रहा था। पीछे से एक सवार आया। गठरी भारी थी और यात्री कुछ थक भी गया था। इसलिए सवार से उसने अपने बोझ को अगले मुकाम तक घोड़े की पीठ पर रखकर ले चलने के लिए कहा। सवार ने इंकार कर दिया और आगे बढ़ गया। बाद में उसके मन में आया कि उसने व्यर्थ ही हाथ में आए माल को छोड़ दिया। इधर पथिक ने भी सोचा कि चलो अच्छा हुआ जो सवार ने इंकार कर दिया, अन्यथा अगर वह गठरी लेकर चलता बनता, तो मैं

उसे कहां खोजता फिरता ? संयोग से आगे दोनों की फिर भेंट हो गई। इस बार सवार ने जब कहा—लाओ भाई, तुम्हारी गठरी रख लूं, तो पथिक ने जवाब दिया—बस भाई रहने दो, कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे।)

कुछ तो खरबूजा मीठा, और कुछ ऊपर से कंद
अच्छाई में और भी अच्छाई।
कंद=शक्कर

कुछ तो खलल है कि जिससे यह खलल है
कहीं कुछ गड़बड़ी तो जरूर है, जिससे यह सब हो रहा है।

कुछ तो गेहूं गीली, कुछ जिंदरी ढीली
जिससे आटा ठीक नहीं पिस रहा है। मतलब दोनों ओर ही कहीं कुछ त्रुटि है।
जिंदरी=चक्की की कील। अगर वह ढीली हो तो पीसने में दिक्कत होगी।

कुछ तो बावली, कुछ भूतों खदेड़ी, (स्त्रि.)
एक तो स्वयं ही पगली, फिर मुसीबत की मारी। विपत्ति पर विपत्ति।

कुछ दाल में काला है
कहीं कुछ गड़बड़ी है।

कुछ बसंत की भी ख़बर है?
जब कोई व्यक्ति किसी आने वाली मुसीबत से बेख़बर हो कर खुशियां मनाने में लगा हो, तब प्रायः उससे व्यंग्य में कहते हैं। जिसे सचमुच ही किसी शुभ अवसर के आने की ख़बर न हो, उससे भी कह सकते हैं।

'कुछ लेते हो?' कहा—'अपना काम क्या है?'
'कुछ देते हो?' कहा—'यह शरारत बंदे को नहीं आती'
चालाक और खुदगर्ज के लिए क.।

कुछ लोहा खोटा, कुछ लोहार खोटा
दोनों ओर ही त्रुटि का होना।

कुछ स्वार्थी, कुछ परमार्थी
कुछ अपना काम बनाना, कुछ दूसरों का भी हित करना। *(दोनों ओर ध्यान रखना चाहिए।)*

कुतिया के छिनाले में फंसे हैं।
व्यर्थ की खींचातानी में पड़ना।

कुतिया चोरों से मिल गई तो पहरा कौन दे?
जब रखवाला ही बेईमान बन जाए, तो काम कैसे चले ?

कुटनी से तो राम बचावे, प्यारी होकर पत उतरावे, (स्त्रि.)
बुरी औरत से तो ईश्वर बचाए, प्रेम दिखाकर इज्जत उतरवाती है।

कुत्ता के आटा होय तो लिट्टी लगा के खाए, (पू.)
कुत्ते के पास अगर आटा हो, तो वह स्वयं ही उसकी रोटी क्यों न बनाए ?
(आदमी विवश होकर ही दूसरों का आश्रय लेता है।)

कुत्ता घास खाय तो सभी पाल लें
शौक में अगर कुछ खर्च न हो, तो सभी करें।

कुत्ता चौक चढ़ाए, चपनी चाटन जाए
कुत्ते को आदरपूर्वक चौक में बिठाला, फिर भी वह हांड़ी चाटने गया। जिसकी जो आदत होती है, वह नहीं छूटती। *(ब्याह में जब कन्या को मंडप के तले लाकर बिठालते और वरपक्ष की ओर से आए हुए वस्त्राभूषण उसे पहनाते हैं, तो उसे चौक चढ़ाना कहते हैं।)*

कुत्ता न देखेगा, न भौंकेगा
कोई आदमी किसी वस्तु को यदि देखे नहीं, तो वह उसके पाने की इच्छा भी न करेगा।

कुत्ता पाए तो सवा मन खाए, नहीं तो दीया ही चाटकर रह जाए
जब जो मिल जाए, उसी में संतोष कर लेने वाला व्यक्ति।

कुत्ता पाले वह कुत्ता, सास घर जंवाई कुत्ता, बहन घर भाई कुत्ता, सब कुत्तों का वह सरदार, जो रहवे बेटी के द्वार
स्पष्ट। जंवाई=दामाद।

कुत्ता भी बैठता है, तो दुम हिलाकर बैठता है
सफ़ाई जानवरों को भी पसंद है, फिर आदमी को तो होनी ही चाहिए।

कुत्ता भौंके, काफ़िला सिधारे
कुत्ता भौंकता ही रहता है और यात्री अपने रास्ते पर चलते ही रहते हैं। मतलब, समझदार आदमी चुपचाप अपने काम में लगे रहते हैं, दूसरे क्या करते हैं, इस पर ध्यान नहीं देते।

कुत्ता मरे अपनी पीर, मियां मांगे शिकार
कुत्ता तो अपनी मुसीबत में मर रहा है और मियां को पड़ी है शिकार की। दूसरों की सुविधा-असुविधा का कोई विचार न करके केवल अपना स्वार्थ देखना।

कुत्ता मुंह लगाने से सिर चढ़े
ओछे आदमी को मुंह नहीं लगाना चाहिए।

कुत्ते का मग़ज़ खाया है?
जो इतनी बकवास कर रहे हो ?
(कुत्ता बहुत भौंकता है, इसीलिए कहा गया है कि क्या तुमने उसका भेजा खाया है ?)

कुत्ते की दुम बारह बरस नलवे में रखो, तौ भी टेढ़ी की टेढ़ी
कुत्ते की टेढ़ी पूंछ किसी उपाय से भी सीधी नहीं की जा सकती। बुरा आदमी हमेशा बुरा ही रहता है। शिक्षा या सत्संग का कोई प्रभाव उस पर नहीं पड़ता।
(यह कहावत लगभग सभी भारतीय भाषाओं में प्रचलित मिलती है। उदाहरण के लिए बंगला में कहते हैं—कुकुरेर लेज घी दिए डोल्लेओ सोजा हयना। और मराठी में भी है—कुत्र्याचें शेपुट किती ही दिवस नळकांड्यात ठेवलें, तरी अखेरीस वांकडे ते वांकडे। संस्कृत लौकिक—'श्वपुच्छोन्नमन', न्याय के साथ तुलनीय। (सं.)

कुत्ते की नींद
चौकन्नी नींद।

कुत्ते की मौत मरना
बहुत अधिक अपमान और कष्ट से मरना।

कुत्ते के पांव जा, और बिल्ली के पांव आ
शीघ्र ही जाने और शीघ्र वापस आने के लिए क.।

कुत्ते के भौंकने से हाथी नहीं डरता
गंभीर और समझदार व्यक्ति निंदकों की परवाह नहीं करता।

कुत्ते को घी नहीं पचता
(1) ओछे के पेट में बात नहीं रहती।
(2) ओछा थोड़ी भी संपत्ति पाने से इतरा उठता है; कुछ यह अर्थ भी लगाते हैं।
(घी खा लेने पर कुत्ते को वमन की बीमारी हो जाती है।)

कुत्ते को हड्डी भली लगती है
गंदे को गंदी चीज ही अच्छी लगती है।

कुत्ते तेरा मुंह नहीं, तेरे साई का मुंह है
अर्थात कुत्ता अपने मालिक के बल पर ही भौंकता है।
(जब कोई साधारण व्यक्ति किसी बड़े का सहारा पाकर उछलता-कूदता है।)

कुत्तों को दूं पर तुझे न दूं
किसी के प्रति बहुत घृणा प्रकट करना। अथवा किसी को मांगने पर कोई वस्तु उसे न देकर अन्य निकृष्ट व्यक्ति को दे देना।

कुंद-ए-ना-तराश
ऐसी लकड़ी जो छील-काटकर डौलाई न गई हो। ठूंठ। मूर्ख के लिए क.।

कुनबे वाले के चारों पल्ले कीचड़ में हैं
परिवार वाले को हमेशा कोई न कोई मुसीबत लगी रहती है।

कुफ़्र तोड़ा खुदा खुदा करके
ईश्वर का नाम ले-लेकर किसी प्रकार विपत्ति से पार पाया।
(कुफ़्र का मतलब वास्तव में इस्लाम धर्म के विरुद्ध आचरण है और 'कुफ़्र तोड़ना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है, किसी को इस्लाम धर्म में दीक्षित करना या सन्मार्ग पर ले जाना, पर यहां मतलब दुष्ट प्रकृति के आदमी को वश में करने से है।)

कुम्हार का गधा जिन्हीं के चूतड़ मिट्टी देखे, तिन्हीं के पीछे दौड़े, (पू.)
क्योंकि उसी को वह अपना मालिक समझ लेता है। कुम्हार को हमेशा मिट्टी से काम पड़ता है और उसके पीछे मिट्टी लगा रहना स्वाभाविक है।

कुम्हार का गुस्सा उतरे गधे पर
क्योंकि वह उसी को पीट सकता है।

कुम्हार कहे से गधे पर नहीं चढ़ता
दे.—कहे से कुम्हार...।

कुम्हार के घर चुक्के का दुख
एक आश्चर्य की बात, क्योंकि कुम्हार के घर तो चुक्के (कुल्हड़) बनते ही हैं। उनके यहां उनकी क्या कमी ?

कुम्हार के घर बासन का काल
वही भाव है जो ऊपर की कहावत का है।

कुम्हार से पार न बसाय, गधे के कान उमेंठे
जिसने काम बिगाड़ा है, उससे कुछ न कहकर दूसरे कमजोर आदमी पर गुस्सा उतारना।

कुरयाल में गुलेला लगा
मचान पर आराम से बैठे पक्षी को गुलेल लगी। यानी अचानक विपत्ति आ टूटी।
(कुरयाल वास्तव में ऐसे पक्षी को कहते हैं, जो सुखपूर्वक मचान पर बैठा अपने पंखे सहला रहा हो। गुलेला मिट्टी या पत्थर की वह गोली होती है, जिसको गुलेल से फेंककर चिड़ियों का शिकार किया जाता है।)

कुरसी का अहमक
मूर्ख अफसर।
(कुर्सी अवध में एक छोटा कस्बा भी है, जहां के लोग मूर्ख कहे जाते हैं।)

कुरान पर कुरान रखने का क्या मुज़ायका है
दो श्रेष्ठ वस्तुओं को किसी प्रकार भी रखो, वे तो हर हालत में श्रेष्ठ रहेंगी।

कुलेल में गुलेल

रंग में भंग।

(कोई पक्षी आराम से मचान पर बैठा किलकोटें कर रहा था। इतने में उसे गुलेल लगी।)

कुल्हिया में गुड़ नहीं फूटता

बड़े काम को छिपाकर नहीं किया जा सकता।

(गुड़ एक ठोस और मजबूत चीज होती है, कुल्हिया में रखकर फोड़ने से वही फूट जाएगी।)

कुश्ताः कुश्ताः मीकुनद, (फा.)

कुश्ता आदमी को मार डालता है, और कुश्ता आदमी को नया जीवन भी प्रदान करता है।

(कुश्ता धातु घटित औषधि या रसायन को कहते हैं।)

कुसुम का रंग तीन दिन, फिर बदरंग

किसी भी वस्तु का सौंदर्य स्थायी नहीं होता। कुसुम=(सं. कुसुम) एक पौधा, जिसके फूलों से पीला रंग बनता है।

कूंड़े के इस पार या उस पार

आलसी आदमी, जो हमेशा चारपाई पर पड़ा करवटें लेता रहे।

(भंगेड़ियों की उक्ति कि भंग ऐसी छाननी चाहिए कि उसे पीने के बाद या तो कूंड़े के इस पार लोट जाए या उस पार।)

कूंड़ा=भंग घोटने का प्याला।

कूज़े ढलें कि माट?

पहले वृद्ध मरेंगे या जवान, यह कोई नहीं बता सकता।

कूज़ा = छोटा प्याला।

माट=बड़ा मटका।

कूटो तो चूना, नहीं, खाक से दूना

चूना गीला करके जितना ही कूटा जाए, उसमें उतना ही लस आता है, और वह मज़बूत बनता है।

कूत थोड़ा, मंजिल भारी

चलने की ताकत नहीं, और रास्ता लंबा।

कूद-कूद मछली बगुले को खाय

एक अनहोनी घटना। कमजोर सबल को दबा ले।

कूदते-कूदते नचनिया हो जाता है

अभ्यास बड़ी चीज है। अनाड़ी भी अभ्यास करते-करते कलावंत बन जाता है।

कूद मुए कूद, तेरा नालियों में गूद :
निकल गया गूद, तो रह गया मरदूद। (स्त्रि.)

एक प्रकार की गाली। किसी कर्कशा का अपने पति को डांटना।

गूद=गूदा, ताक़त।

मरदूद=निकम्मा, रद्दी।

कूदे फांदे तोड़े तान, ताका दुरिया राखे मान

जो अधिक ढोंग दिखाता है, दुनिया उसी का मान करती है।

कूवत थोड़ी मंजिल भारी

दे.—कूत थोड़ा.. ।

केकर केकेर बरों नांव, कमरी ओढ़ले सारा गांव, (पू.)

किस-किसका नाम लिया जाए, सारा गांव कंबल ओढ़े है। सभी जहां बुरे हों, वहां अलग से किसका नाम लिया जाए?

के करनी करे. केकरा सिर बीते, (पू.)

कोई तो काम बिगाड़े और मुसीबत किसी की आए।

केहू के जेठ पूत, केहू के लेखे कनवा, (पू.)

किसी का तो वह जेठा पूत है, और किसी के लिए केवल छोकड़ा है। अपनी संतान सबको प्रिय होती है, फिर वह कैसी ही क्यों न हो।

(कनवा का अर्थ यहां छोटा लड़का है, पर काना भी उसका अर्थ हो सकता है।)

कै लड़े सूरमा, कै लड़े अनजान

लड़ने का काम बहादुरों का है या फिर जो मूर्ख होता है, वही लड़ाई मोल लेता है।

कै सोवै राजा का पूत, कै सोवै जोगी अवधूत

क्योंकि इन्हें किसी बात की चिंता नहीं रहती।

कोइरी के गांव में धोबी पटवारी

जहां जैसे लोग होते हैं, वहां के कारिन्दा भी वैसे ही होते हैं।

(कोइरी उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल की एक कृषि-जीवी जाति है।)

कोई आंख का अधा, कोई हिये का अंधा

कोई अगर आंख का अंधा है, तो ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो आंखों के रहते हुए भी नहीं देखते।

कोई आईने में देखे, कोई आरसी में

जिसके पास जो वस्तु जैसी होती है, वह उसी से अपना काम चलाता है।

आरसी=(1) छोटा दर्पण। (2) शीशा जड़ा वह कटोरीदार छल्ला, जिसे स्त्रियां दाहिने हाथ के अंगूठे में पहिनती हैं।

कोई इल्म को दोस्त रखता है, कोई रुपए को

किसी को विद्या से प्रेम होता है, तो किसी को धन से।

कोई कहके सुनाए, हम करके दिखाएं
दूसरे केवल बकवास करते हैं, हम काम करके दिखाते हैं। चुनौती।

कोई काम करे दाम से, हम दाम करें काम से
कोई पूंजी लगाकर काम-धंधा करता है, हम काम-धंधे से पूंजी पैदा करते हैं, अर्थात बिना पूंजी के रोज़गार करते हैं।

कोई किसी का कुछ नहीं कर सकता
सभी को अपना-अपना बल-बूता है। अथवा सभी का ईश्वर मालिक है।

कोई किसी की कब्र में नहीं जाता
अपने कर्मों का फल हमें स्वयं ही भुगतना पड़ता है। मरने पर कोई किसी का साथ नहीं देता।

कोई खींचे लांग लंगोटी, कोई खींचे मूछरियां।
कोठे चढ़के दी दुहाई, कोई मत करियो दो जनियां।
दो औरतें रखने वाले पर व्यंग्य।

कोई तौलों कम, कोई मोलो कम
हर आदमी में कोई न कोई कमी होती है, किसी में गंभीरता की, तो किसी में भलमनसाहत की।

कोई दम का दमामा है
मानव शरीर के लिए कहा गया है। वह क्षणभंगुर है। दमामा=नगाड़ा, तमाशा।

कोई दम का मेहमान है
मरणासन्न है।

कोई दम में सरसों फूलती है
अभी नशे में गड़गप्प होता है।
(सरसों फूलना एक मुहावरा है।)

कोई भी मां के पेट से तो लेकर नहीं निकला है, (स्त्रि.)
काम करने से ही आता है। कोई मां के पेट से सीखकर नहीं आता।

कोई मरे, कोई मल्हार गावे
कोई दुख में पड़ा मरता है, तो कोई आनंद के गीत गाता है। संसार की स्वार्थ-परायणता पर क.।

कोई माल में मस्त, तो कोई ख्याल में मस्त
सब अपने-अपने रंग में रंगे हैं। किसी को पैसा प्यारा है, तो किसी को कोई और धुन है।

कोई मुझको न मारे, तो मैं सारे जहान को मारूं
लड़ाकू के लिए क.।

कोई मोल में भारी, कोई तौल में भारी
किसी में सज्जनता अधिक है तो किसी में गंभीरता। अथवा कोई पैसे में बड़ा है तो कोई सज्जनता में।

कोई सुने न सुने, मैं कहता हूं
बकवादी से व्यंग्य में क.।

कोऊ को कलपाए के, कोऊ कैसे कल पाए
दूसरे को दुख देकर कोई स्वयं कैसे सुखी रह सकता है ? कलपाना=सताना।
कल पाना=चैन पाना।

कोख की आंच सही जाती है, पेडू की आंच नहीं सही जाती, (स्त्रि.)
इसके कई अर्थ हो सकते हैं। (1) संतान की मृत्यु सहन हो जाती है, किंतु पति की मृत्यु सहन नहीं होती।
(2) संतान की मृत्यु सही जाती है, किंतु भूख की ज्वाला सहन नहीं होती।
(3) प्रसव-वेदना सहन हो जाती है, पर पेट का दर्द सहा नहीं जाता।

कोख मांग से ठंडी रहे, (स्त्रि.)
संतान और पति का सुख भोगे।
(आशीर्वाद)
पाठा.—कोख-मांग से भरी-पूरी रहे।

कोठी-कुठले से हाथ न लगाओ, घरवार सब तुम्हारा, (स्त्रि.)
झूठा प्रेम दिखाने वाले के लिए क.। घर के ऐसे बड़े व्यक्ति के लिए कह सकते हैं, जो अपने पुत्रों या बहुओं से दुराव रखे।

कोठी धोये कीच हाथ लगे
गरीब को तंग करने से बदनामी ही हाथ लगती है। अथवा व्यर्थ के काम से हानि के सिवा कोई लाभ नहीं होता।
कोठी=अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा कच्चा बर्तन।

कोठी में चाउर, घर में उपास, (पू.)
मूर्ख या कंजूस के लिए कहते हैं कि घर में खाने को होते हुए भी उपवास करता है।

कोठी में से मोठी नहीं निकली
बाप-दादों की पूंजी में से अभी कुछ ख़र्च नहीं हुआ।
अनुभवहीन युवक के लिए भी कहते हैं, विशेषकर ऐसे युवक के लिए; जो स्त्री के संपर्क में न आया हो।

कोठे वाला रोवे, छप्पर वाला सोवे
धनी को पचास चिंताएं लगी रहती हैं, गरीब बेफ़िक्र होकर सोता है।

कोठे से गिरा संभलता है, नज़रों से गिरा नहीं संभलता
गई हुई प्रतिष्ठा फिर नहीं आती।

नज़रों से गिरना=मन से उतरना। किसी की नज़रों में इज्ज़त खो देना।

कोढ़ में खाज

विपत्ति पर विपत्ति।

कोढ़ी कटनियां मुगरी सन आंटी, आर पार बैठे गिरस्त डांटी

जो काटने वाले आलसी हैं, उन्हें तो मोटी-मोटी आंटी मिल रही है, और जिन्होंने एक छोर से दूसरे छोर तक सारा खेत काट डाला है, उन्हें मालिक की डांट सहनी पड़ती है। मतलब, सच्चे काम वाले को कोई नहीं पूछता।

(देहातों में फसल काटने वाले मजदूरों को मजदूरी के रूप में कटी हुई फसल के अनाज लगे जो डंठल एक विशेष परिणाम में दिए जाते हैं, उन्हें आंटी कहते हैं।)

कटनिया=फसल काटने वाला मजदूर।

मुगरी सन आंटी=मोगरी जैसी मोटी आंटी।

गिरस्त=गृहस्थ, यहां खेत के मालिक से मतलब है।

कोढ़ी के जूं नहीं पड़ती

लोगों का विश्वास है कि कोढ़ी के सिर में जुएं नहीं पड़तीं, यानी वे भी उससे दूर रहती हैं।

कोढ़ी को दाल-भात, कमासुत को फुटहा, (पू.)

आलसी को दालभात मिले, कमाऊ को ज्वार के फूले।

(एक अनुचित बात। काम करने वाले का आदर न करना।)

कोढ़ी उराये थूक से

कोढ़ी अपने थूक से भयभीत करता है। नीच आदमी लोगों को तंग करने के लिए घृणित उपाय काम में लाता है, क्योंकि उसके उन उपायों का कोई जवाब नहीं दिया जा सकता।

कोढ़ी मरे संगाती चाहे

बुरा आदमी अपने साथ दूसरों की भी हानि चाहता है।

कोता गर्दन, तंग पेशानी, हरामज़ादे की यही निशानी

छोटी गर्दन और कम चौड़े माथे का आदमी धूर्त होता है।

कोता गर्दन, दुग दराज़

छोटी गर्दन, लंबी पूंछ।

धूर्त्त के लिए क.।

कोदों का भात किन भातों में, ममिया सास किन सासों में

कोदों का भात भी भला कोई भात है? ममिया सास की सासों में क्या गिनती?

दूर के रिश्ते के आदमी के लिए क.।

(कोदों एक अत्यंत साधारण अन्न होता है, जिसे गरीब ही खाते हैं, और ममिया सास (पति या पत्नी) के मामा की स्त्री होती है, जिससे बहुत कम काम पड़ता है, इसीलिए ऐसा कहा गया है।)

कोदों दे के पढ़े हैं

मतलब, पढ़ाई की अच्छी फीस देकर नहीं पढ़े। जब कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति साधारण ज्ञान के मामलों में भी अपनी अज्ञता प्रकट करता है, तब क.।

कोयल काले कौवे की जोरू

जब एक के साथ दूसरा भी बुरा हो, तब क.।

(कोयल कौवे की तरह ही काली होती है।)

कोयल बोली और सेहबंदी डूबी

कोयल बोल उठी और लगान वसूल करने वाले का पता नहीं। मतलब, जिस आदमी को अबतक आ जाना चाहिए था, वह अभी तक नहीं आया।

(ब्रिटिश ज़माने में बहुत पहले रबी और ख़रीफ़ की लगान वसूली के लिए अस्थायी रूप से कर्मचारी नियुक्त होते थे और वे सेहबंदी कहलाते थे। वे वसंत के अवसर पर जब कोयल बोल उठती है, लगान वसूली के लिए निकल पड़ते थे।)

कोयला होय न ऊजला, सज्जी साबुन लाय

जन्म से जिसे जो आदत पड़ी होती है, वह नहीं छूटती।

सर्ज्जी=कपड़ा धोने के काम आने वाली एक क्षारयुक्त मिट्टी।

पाठा.—कोयला होय न ऊजला सो मन...।

कोयलों की दलाली में हाथ काले

बुरे काम से बुराई ही पैदा होती है।

कोरमा बासा भी दाल से बेहतर है, (मु.)

बढ़िया चीज खराब होकर भी मामूली से अच्छी रहती है।

कोरमा=भुना हुआ मांस, जिसमें शोरुबा नहीं होता।

(इसी भाव की कहावत गढ़वाली में भी है—सड़ीं शिकार मसुरे कि दाल बनाकर के निहो।)

कोल्हू काट मोगरा बनाना

किसी एक साधारण चीज को बनाने के लिए बढ़िया कीमती चीज को बिगाड़ डालना।

मोगरा=एक प्रकार का लकड़ी का हथौड़ा, कपड़े कूटने को धोबियों का मोटा डंडा।

कोल्हू का बैल हो गया

जो दिन-रात काम में जुटा रहे, उसके लिए क.।

कोल्हू के बैल की तरह रात-दिन फिरता है

बहुत श्रम करता है।

कोल्हू के बैल को घर ही कोस पचास

ऐसे मनुष्य के लिए कहते हैं, जिस पर काम का बहुत अधिक बोझ हो।

कोल्हू से खल उतरी, भई बैलों जोग

बूढ़े मनुष्य या जो मनुष्य अपने पद से हटा दिया गया हो, उसके लिए क.।

(तेल निकल जाने पर तिलहन का केवल फोक बच रहता है और बैलों के खिलाने के काम ही आता है। इसी तरह बूढ़े होने या अपने स्थान से हटने पर मनुष्य अपना पिछला महत्व खो बैठता है।)

कोस चली न 'बाबा प्यासी', (स्त्रि.)

काम शुरू करते ही थकान की शिकायत करना।

कोसे जियें, असीसे मरें

जिसे कोसा जाता है, वह जीवित रहता है, और जिसे आशीर्वाद दिया जाता है, वह मर जाता है। मतलब, दुनिया का सब काम ईश्वर की मर्जी से ही होता है। मनुष्य उसमें कुछ नहीं कर सकता।

कोड़ी के तीन-तीन हो गए

बर्बाद हो गए। इज्ज़त चली गई। बहुत सस्ती चीज के लिए भी क.।

कौड़ी के वास्ते मस्जिद ढाते हैं, (मु.)

अपने थोड़े-से स्वार्थ के लिए किसी बड़ी चीज को नष्ट कर डालना।

कौड़ी-कौड़ी पर जान देता है

बहुत कंजूस या अर्थलोलुप।

कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, कर वातें छल की।
भारी बोझ धरा सिर ऊपर, किस बिध हो हलकी।

स्पष्ट।

कौड़ी गांठ की, जोरू साथ की

अपना पैसा हमेशा अपनी गांठ में और स्त्री को अपने साथ रखना चाहिए। अथवा पैसा गांठ का ही काम आता है और स्त्री तभी काबू में रहती है, जब अपने साथ रखी जाए।

कौड़ी न रख कफ़न को, बिज्जू की शक्ल बन रह

ऐसे लोगों का मज़ाक, जो पैसे के संग्रह में विश्वास नहीं रखते।

बिज्जू=बिल्ली की तरह का एक जानवर जो मुर्दे खाकर रहता है।

कौड़ी नहीं गांठ में, चले बाग की सैर

बिना पर्याप्त साधन के किसी काम को करने के लिए तत्पर होना।

कौड़ी न हो, तो फिर कौड़ी के तीन-तीन हैं

अपने पास पैसा न हो, तो अपनी कोई कीमत नहीं।

कौड़ी पास नहीं, पड़ी अफ़ीम की चाट

अफ़ीम एक मंहगी चीज है। फिर उसके साथ तर माल भी खाने को चाहिए। कहां से आए ?

कौड़ी पर खून नहीं होता

सामान्य लाभ के लिए बहुत हानि नहीं की जाती।

कौन कहे राजा जी नंगे हैं

बड़ों की बात कहकर कौन उनकी अप्रसन्नता मोल ले।

(इसकी एक प्रसिद्ध कथा है कि एक बार कुछ ठगों ने एक राजा के पास जाकर कहा कि हम ऐसी पोशाक बनाते हैं जिसे वही मनुष्य देख सकता है, जो जीवन में कभी झूठ न बोला हो। राजा को बड़ा कौतूहल हुआ और वह उस पोशाक को बनवाने के लिए तैयार हो गया। उसके लिए ठगों ने जितना भी पैसा चाहा, वह भी दे दिया। इसके कुछ दिनों बाद ठग खाली बक्स लेकर राजा के पास आए और बोले कि लीजिए श्रीमान, यह आपकी पोशाक तैयार हो गई है। अब इसे पहनकर देखा जाए कि कैसी बनी है। कहकर उन्होंने राजा के सब कपड़े उतरवा डाले और उन्हें झूठमूठ ही एक-एक कर के नए कपड़े पहनाने का नाटक किया। जब कि वास्तव में न तो वहां किसी तरह के कोई वस्त्र ही थे और न राजा को उन्होंने कुछ पहनाया ही। ठगों ने जब कहा कि देखिए सरकार, पोशाक कैसी बनी है, तो राजा बड़ा हैरान हुआ; क्योंकि उसे कहीं भी अपने बदन पर कपड़े नजर नहीं आ रहे थे; लेकिन यह सोचकर कि यह पोशाक उसी व्यक्ति को दिखाई देगी, जो कभी झूठ न बोला हो, वह कुछ कह नहीं सका। इसके बाद ठग तो वहां से चुपचाप चलते बने और राजा अपनी पोशाक को दिखाने के लिए दरबार में आया। दरबारियों को जब मालूम हुआ कि यह पोशाक केवल सच बोलने वालों को ही नजर आएगी, तो वे चुप रहे और कुछ कह नहीं सके। किंतु वहां एक छोटा बालक था। उससे नहीं रहा गया। और वह बोल उठा कि अरे राजा जी तो नंगे हैं। तब राजा को पता चला कि वास्तव में वह नंगे हैं और ठग उनको मूर्ख बना गए हैं।)

कौन किसी के आवे जावे, दानापानी खेंच लावे
अन्नजल मुख्य है।

कौन-सा दरख्त है, जिसे हवा नहीं लगी
थोड़े-बहुत कष्ट सभी को भोगने पड़ते हैं।
(हवा लगना एक मुहावरा भी है, जिसका अर्थ होता है 'सुहबत का असर होना'। इस तरह कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि ऐसा कौन-सा मनुष्य है, जिस पर संगत का प्रभाव न पड़ा हो।)

कौन-सी चक्की का पीसा खाया है?
जिससे तुम बहुत मोटे हो गए हो।
हंसी में ही कहते हैं

कौन हर रोज़ अतालीक़ हो समझाने का?
हर रोज़ तुम्हें कौन सबक पढ़ाए?
अतालीक़=गुरु, शिक्षक।

कौन कमाई पर तेल बुकवा? (पू., स्त्रि.)
कमाई-धमाई कुछ न करके शौकीन बने फिरना।
बुकवा=(1) बुक्का, अभ्रक का चूर्ण।
(2) बूकना लगाने के अर्थ में भी आता है।

कौन रूप पर इतना सिंगार? (पू., स्त्रि.)
एक स्त्री का दूसरी से ताना मारकर कहना कि रूप तो कुछ है नहीं, फिर इतना शृंगार किस बात पर?

कौवा कान ले गया
बिना सोच-विचारे दूसरे की बात पर विश्वास कर लेना।
(कथा है कि किसी मूर्ख से एक व्यक्ति ने कह दिया कि तेरा कान कौवा ले गया। सुनते ही वह झट से कौवे के पीछे दौड़ पड़ा। लोगों ने जब पूछा कि क्या बात है, तो उसने जवाब दिया कि मेरा कान कौवा ले गया है। उसे छीनने के लिए मैं उसके पीछे जा रहा हूं। इस पर किसी ने कहा कि कान तो तेरे दोनों लगे हैं। कौवा कहां से ले जाएगा? जब उसने अपने कान टटोल कर देखे, तो वास्तव में दोनों जहां के तहां मौजूद थ [illegible] वह बड़ा लज्जित हुआ।)

कौवा चला हंस की चाल, अपनी चाल भी भूल गया
अपनी चाल छोड़कर बड़ों की नकल करने से सदैव हानि होती है।

कौवा टरटराता ही है, धान सूखते ही हैं, (स्त्रि.)
फालतू आदमियों के विरोध करने से किसी का कोई काम नहीं रुकता। वह तो यथावत चलता ही है।

कौवे की दुम में अनार की कली
(1) किसी बदशक्ल आदमी की बढ़िया पोशाक पहनकर निकलना।
(2) एक निकृष्ट वस्तु के साथ बढ़िया वस्तु का मेल होने पर।

कौवों के कोसे से ढोर नहीं मरते
कोई आदमी अगर अपने स्वार्थवश दूसरे का बुरा चाहे, तो उससे कुछ होता-हवाता नहीं।

कौवों को अंगूरी बाग
अयोग्य को अच्छी वस्तु देना।

क्या आग लेने आए थे?
(1) जब कोई आकर तुरंत जाना चाहे, तब क.।
(2) जब कोई अपने आने के वास्तविक उद्देश्य को न बताना चाहे, तब भी उससे व्यंग्य में क.।

क्या उधार की मां मारी गई है? (पू.)
किसी मनुष्य ने किसी को कर्ज़ देने से इंकार कर दिया। तब उसने कहा कि कर्ज़ की मां नहीं मर गई। मुझे कहीं न कहीं रुपया मिल ही जाएगा।

क्या करेगा दौला, जिसे दे मौला
भगवान ही सब को देता है, दौला उसमें कुछ नहीं करता।
(पंजाब के गुजरात जिले में 17वीं शताब्दी में शाह दौला नाम के एक पहुंचे पहुए फ़क़ीर हो गए हैं। जब कोई उनके पास याचना करने जाता था, तब वह उससे उक्त वाक्य कह दिया करते थे।)

क्या काबुल में गधे नहीं होते?
मूर्खों की कहीं कमी नहीं।

क्या काजी की गधी चुराई है?
मैंने क्या किसी का कुछ बिगाड़ा है, जो तुम मुझे बे-मतलब डरा-धमका रहे हो।

क्या कोयलों की नाव डूब जाएगी?
ऐसी कौन-सी बड़ी हानि हो जाएगी?

क्या खाक तेरी परवाह! चूल्हे में से निकल भाड़ में जा!
तुम्हारी इच्छा की बलिहारी, जो तुम चाहते हो कि मैं चूल्हे में से निकलकर भाड़ में जाऊं, अर्थात और भी गहरी मुसीबत में पड़ जाऊं।

क्या खूब सौदा नकद है, इस हाथ दे उस हाथ ले
कर्मों का फल तुरंत मिलता है।

क्या गोमती का पानी पिया है?
जो इतनी नज़ाकत दिखाते हो?
(लखनऊ वालों के लिए ताने मे क.)

क्या घास में सांप नहीं चलता?
अर्थात क्या अच्छे स्थान में कोई बुराई नहीं हो सकती?
क्या चूड़ियां फूट जाएंगी?
हौले-हौले काम कर रहे हो।
वहुत धीमे काम करने वाले से व्यंग्य में क.।
(यह भी वैसा ही जैसे क्या पांव में मेंहदी लगी है।)
क्या जाने गंवार, घुंघटवा का भार, (स्त्रि.)
गंवार आदमी प्रेम करने चला है, पर वह मूर्ख क्या जाने उसका भेद!
क्या टोटका करने आई थी? (स्त्रि.)
(1) जब कोई आकर तुरंत जाना चाहे, तब क.।
(2) जब किसी के यहां निमंत्रण में जाकर कोई बहुत ही कम भोजन करे, तब भी कहा जाता है।
क्या तमाशे की बात है, जिसका जाए, वही चोर कहलाए
जब कोई आदमी किसी का कुछ नुकसान कर जाए और उसके लिए उसे ही जिम्मेदार ठहराया जाए, जिसका नुकसान हुआ है, तब क.।
(फेलन की उक्त कहावत पर यह टिप्पणी है—'भारतीय पुलिस का यह आम तरीका है कि वह जब चोरी का पता लगाने में असमर्थ रहती है, तब प्रायः चोरी की रपट दर्ज कराने वाले को ही पकड़ती है और उल्टे उस पर यह आरोप थोपती है कि इस सब में तुम्हारी ही कोई शरारत है। उसी से कहावत चली।')
क्या दम का कुछ भरोसा है?
जिंदगी का क्या ठिकाना।
क्या दर्जी का कुछ, क्या मुकाम?
दर्जी का क्या तो सामान, और क्या उसके ठहरने की जगह ?
(ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं, जिसे अपने काम-धंधे के सिलसिले में हमेशा घूमते-फिरते रहना पड़े। यह कहावत उस समय की है, जब सिलाई की मशीनों का आविष्कार नहीं हुआ था और दर्जी घरों पर जाकर सिलाई का काम करते थे। वे प्रायः अपना सूई-धागा लेकर एक गांव से दूसरे में घूमते भी रहते थे।)
क्या दिन जाते देखे
बीते दिनों की याद में क.।
क्या नंगी नहाएगी, और क्या निचोड़ेगी?
निर्धन और सामर्थ्यहीन व्यक्ति।

क्या परदेसी की पीत और क्या फूस का तापना,
दिया कलेजा काढ़ हुआ नहीं आपना, (स्त्रि.)
स्पष्ट। किसी प्रेमिका का अपने कृतघ्न प्रेमी के प्रति उपालंभ।
क्या पांव में मेंहदी लगी है?
जो इतने धीरे चलते हो। पैरों में मेंहदी लगी होने पर स्त्रियां स्वाभाविक रूप से वहुत धीमे चलती हैं।
क्या पानी मथने से भी घी निकलता है?
सूम के प्रति क.। ऐसे काम के लिए भी क. जिससे कोई नतीजा न निकलने वाला हो।
क्या पिदड़ी और क्या पिदड़ी का शोरवा
तुच्छ और उपेक्षणीय व्यक्ति के लिए क.।
(पिदड़ी या पिद्दी बया की जाति का एक छोटा पक्षी होता है। मुहावरे में तुच्छ या कमजोर को पिद्दी कहते हैं।)
क्या बालू की भीत, क्या ओछे की प्रीत।
प्रीत को गंभीर से, जनम जाय है बीत।
स्पष्ट।
क्या भरोसा है जिंदगानी का।
आदमी बुलबुला है पानी का।
जीवन का कोई भरोसा नहीं, पानी के बुलबुले की तरह न जाने कब नष्ट हो जाए।
क्या मक्खी ने छींक दिया?
अर्थात क्या कोई अपशकुन हो गया?
जब कोई व्यक्ति सहसा अपने किसी निश्चय को बदल दे, तब प्रायः उससे व्यंग्य में क.।
क्या मुंह और क्या मसाला?
जब कोई व्यक्ति ऐसी बात कहे अथवा ऐसा काम करे, जिसके कहने या करने योग्य वह न हो, तब क.।
क्या मुंह पर फिटकार बरसती है
तुम्हें धिक्कार है। तुम्हें शर्म नहीं आती, जो तुमने ऐसा बुरा काम किया।
क्या मुंह में घुनघुनियां हैं?
जो बोल नहीं पाते। जब कोई स्पष्ट अपनी बात न कहे, या संकोचवश कह न पा रहा हो, तब क.।
घुनघुनियां=नमक मिर्च पड़े उबले चने।
क्या मुंह में पंजीरी भरी है?
जो स्पष्ट नहीं बोलते।
क्या मुंह से फूल झड़ते हैं।
जब कोई मुंह से बुरे शब्द निकाल रहा हो, तब उससे

व्यंग्य में क.।

क्या मैं तेरी पट्टी के नीचे पैदा हुई हूं, (स्त्रि.)

जो मैं तुमसे दबूं।

पट्टी से मतलब चारपाई से है।

क्या ले गया शेरशाह, क्या ले गया सलीमशाह?

धन-सम्पत्ति सब यहीं पड़ी रहती है। कोई अपने साथ नहीं ले जाता।

(शेरशाह सूर और उसका पुत्र सलीमशाह सूर ये दोनो सन् 1542 और 1554 के बीच दिल्ली के प्रसिद्ध बादशाह हो गए हैं।)

क्या सांप का पांव देखा है?

असंभव बात कहने पर भर्त्सना में क.।

क्या सांप सूंघ गया?

मतलब, चुप क्यों हो? जवाब क्यों नहीं देते?

(सूंघ जाना एक मुहावरा है, जिसका अर्थ सांप के संबंध में काटना होता है। जिसे सांप काट खाता है, वह बोल नहीं पाता।)

क्या सौ रुपए की पूंजी, क्या एक बेटे की औलाद?

थोड़ी पूंजी कभी भी ख़र्च हो सकती है, और एक लड़का मर जाए तो निःसंतान हो जाता है।

क्या शान में जुफ्ते पड़ जाएंगे?

अपने हाथ से कोई काम करने या अपने से छोटे की सहायता करने में मनुष्य का कुछ बिगड़ता नहीं।

जुफ्ता=सिकुड़न, शिकन।

क्या शान में बट्टा लग जाएगा?

दे. ऊ.

(यह तथा ऊपर की कहावत, दोनों उस समय भी प्रयुक्त होती हैं, जब कोई मनुष्य किसी काम के करने में व्यर्थ का हीला-हवाला या अनिच्छा प्रकट करता है।)

क्या हिजड़ों ने राह मारी है?

क्या हिजड़ों ने रास्ता रोक रखा है? अथवा क्या रास्ते में हिजड़े लूट लेंगे। किसी स्थान पर जाने के लिए व्यर्थ के बहाने प्रकट करने पर क.।

क्यों अंधा न्योते और क्यों दो बुलाए?

जानबूझ कर कोई विपत्ति क्यों मोल ली जाए?

(अंधे को अगर न्यौता जाए, तो यह निश्चित है कि वह सहायता के लिए अपने साथ एक और व्यक्ति लाएगा।)

क्यों आंखों में खाक डालते हो?

क्यों सरासर मूर्ख बनाते हो?

क्यों कर री, तू उतरी पार? क्यों कर री तू चाली बाढ़? क्यों कर री तूने यह घर जाना? क्यों कर री, तूने मुझे पहचाना?

(कथा है कि कोई स्त्री अपने घर पर नित्य कढ़ी खाते-खाते ऊब गई थी, इसलिए वह नदी पार अपने एक रिश्तेदार के यहां चलती बनी। दुर्भाग्य से वहां भी उसे कढ़ी खाने को मिली। तब उसे संबोधित करके उसने उपर्युक्त वाक्य कहा। सारांश-मनुष्य जिस बात से बचता है, प्रायः वही उसके सामने आती है।)

क्यों कही, और क्यों कहाई

क्यों किसी से ऐसी बात कही जाए कि बदले में हमें भी वैसी ही (कड़ी) बात सुननी पड़े।

क्यों कांटों में घसीटते हो?

क्यों मुझे लज्जित करते हो।

(कांटों में घसीटना एक मुहावरा, है जिसका अर्थ होता है कि आप मेरी जितनी प्रशंसा कर रहे हैं, मैं उसका पात्र नहीं हूं। मेरी इतनी प्रशंसा करना मानो मुझे कांटों में घसीटना है।)

क्यों चबा-चबा कर बातें करते हो

अधूरी बात क्यों कहते हो? जो कुछ कहना हो स्पष्ट कहो।

क्यों बहिश्त में लातें मारते हो?

(1) हमेशा भोग-विलास में डूबे रहने वाले से क.।

(2) झूठे से भी क.।

(3) जब कोई मनुष्य सहज में मिली किसी सुखभोग की वस्तु को ठुकरा रहा हो, तब भी कह सकते हैं।

क्वांर का सा झल्ला, आया, बरसा, चल्ला

(1) जब कोई सहसा आए और तड़क-भड़क दिखाकर चला भी जाए, तब क.।

(2) सहसा क्रोध आने और तुरंत शांत हो जाने पर भी क.।

(क्वार में प्रायः एकाएक वर्षा होती है और बहुत देर नहीं ठहरती। उसी से कहा. की सार्थकता है।)

क्वांर जाड़े का द्वार

क्वांर के महीने से जाड़ा आरंभ होता है।

ख

खंजर तले टुक दम लिया तो उससे क्या?
आसन्न संकट से क्षणमात्र के लिए छुटकारा मिला, तो उससे क्या?

खग जाने खग ही की भाषा, (तु. रा.)
चालाक ही चालाक की बात समझ सकता है।

खड़ा बहिश्त में गया
अच्छी मौत मरा।

खड़े पीर का रोज़ा रखा है क्या?
जो आने पर अपना आसन ग्रहण न करे, उससे क.।

खड़े रस्सी, बैठे कोस, खाते-पीते तीन कोस
आदमी यात्रा में जितनी देर खड़ा रहता है, उतनी देर में एक रस्सी, जितनी देर बैठता है, उतनी देर में एक कोस, और खाने-पीने में जितना समय नष्ट करता है, उतने में तीन कोस चल सकता है। तात्पर्य—अपना समय नष्ट नहीं करना चाहिए। रस्सी=जरीब, भूमि का एक माप जो गज होता है।

खता करे बीबी, पकड़ी जाए बांदी
क़सूर कोई करे और दंड कोई भोगे।

ख़त्री से गोरा सो पिंड रोगी
जब कोई अपने से अधिक चतुर को धोखा देने का प्रयत्न करे, तब क.।
पिंड रोगी=पाण्डु या पीलिया रोग से ग्रस्त।
(खत्री अपने गोरे रंग और सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं।)

खरब अरब लौं अच्छमी, उदै अस्त लौं राज।
तुलसी हरि की भगत बिन, यह आवे किहि काज।
स्पष्ट।
इसका शुरू इस प्रकार होता है—अरब खरब लौं द्रव्य है, उदै अस्त लौं राज।)

ख़रबूजा चाहे धूप को और आम चाहे मेह।
नारी चाहे ज़ोर को और बालक चाहे नेह।
स्पष्ट।

खरबूज़े को देखकर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है।
समाज में एक आदमी जैसा करता है, वैसा ही दूसरा भी करने लगता है।

खरसा प्यारा बीजना, स्याले प्यारी आग।
वर्षा प्यारी तीन चीज, कंबल, छावा, राग। (ग्रा.)
स्पष्ट।
खरसा=ग्रीष्म ऋतु। बीजना=पंखा। स्याला=जाड़ा। छावा=छप्पर। राग=गाना।

खरा खेल फरक्काबादी
खरा मामला या खरा काम।
(किसी समय फर्रुखाबाद में बहुत खरी चांदी का रुपया बनता था। उसी से कहावत बनी।)

खरादी का काठ काटे ही कटे, (क.)
काम करने से ही होता है।
खरादी=खरादने वाला।

ख़राब ख़स्ता, नाज सस्ता
ऐसा दुर्दशा-ग्रस्त व्यक्ति, जिसे लोग सस्ते अनाज की तरह त्याग दें। अथवा ख़राब और सस्ती चीज।

खरी मजूरी चोखा काम
पूरी और अच्छी मज़दूरी देने से काम भी अच्छा होता है।

खर्चा घना, पैदा थोड़ी।
किस पर बांधू घोड़ा घोड़ी।
बिना आमदनी के कोई शौक भला कैसे किया जा सकता है?

खलक का हलक किसने बंद किया

दुनिया के मुंह को कौन बंद कर सकता है? लोग तो कहते ही रहेंगे।

खलगुड़ एक ही भाव

कुशासन। जहां अच्छे-बुरे की परख न हो।

खलया सास किन सासों में।

कोदों का भात किन भातों में। (पू.)

ऐसे आदमी के लिए उपेक्षा में क., जिसकी वुक़त न हो। खलया सास=मौसेरी सास; जिससे कोई विशेष काम नहीं पड़ता।

कोदों=एक हलका अनाज।

खलीलखां फाख़्ता मारते हैं

(मुहावरा वास्तव में 'फाख़्ता उड़ाना' है, और यह कहावत इस तरह प्रचलित है—वे दिन गए जब ख़लील खां फाख़्ता उड़ाते या उड़ाया करते थे। कहा जाता है कि दिल्ली में कोई ख़लील खां हो गए हैं, जिन्होंने कबूतर की तरह फाख़्ता उड़ाई थी।)

ख़ल्क़ की ज़बान, खुदा का नक्कारा

जनता की राय को ईश्वर का उपदेश समझना चाहिए।

ख़ल्क़ ख़ुदा की, मुल्क बादशाह का

सृष्टि ईश्वर की और ज़मीन बादशाह की है।

(मुग़ल ज़माने में डुग्गी पीटते समय कहते थे।)

खवे से खवा छिलता है

यानी बहुत भीड़ है।

खवा=कंधा

खस कम जहां पाक

बुरे आदमी की मृत्यु पर कहते हैं कि चलो अच्छा हुआ, दुनिया पाक हुई।

खस =कूड़ाकरकट।

ख़सम का खाये, भाई का गाये, (स्त्री.)

किसी का खाना और किसी के गुण गाना!

खसम किया सुख सोने को कि पाटी लग के रोने को, (स्त्रि.)

अभागी लड़की का कहना, जिसका ब्याह बूढ़े के साथ हुआ है। अथवा जिसका पति उसे नहीं चाहता।

खसम देवर दोनों एक सास के पूत, यह हुआ या वह हुआ (ग्रा.)

किसी स्त्री के प्रति व्यंग्य में कहना, जिसका देवर से प्रेम हो गया हो।

(कई जातियों में पति के मरने पर उसके छोटे भाई से ब्याह कर लेने की प्रथा प्रचलित है। कहावत में उस ओर भी संकेत है।)

खसम से छूटे तो यारों के जाए

व्यभिचारिणी स्त्री.।

खांड़ और रांड़ का जीवन रात को

मिठाई और वेश्या का आनंद रात में ही।

खांड़ की रोटी, जहां तोड़ो, वहां मीठी

अच्छी वस्तु हमेशा अच्छी ही रहती है।

खांड़ खूंदेगा सो खांड़ खाएगा।

जो परिश्रम करेगा, उसी को मिलेगा।

खांड़ बिना सब रांड़ रसोई

मिठाई के बिना भोजन का आनंद नहीं आता।

खांड़ा बाजै रन पड़े, दांता बाजै घर पड़े

तलवार चलना लड़ाई के लक्षण और झगड़ा होना घर की बर्बादी के लक्षण।

दांत बजना=(मु.) कलह होना।

खाइए मन भाता, पहनिए जग भाता

जो अपने को रुचे सो खाना चाहिए, जो सब को रुचे वही पहनना चाहिए।

खाई करै कमाई, कप्पड़ करे सिंगार

भोजन से ही परिश्रम होता है, और कपड़ों से बदन सजता है।

खाई भली कि माई भली

खाना मां से प्यारा होता है।

खाई मुग़ल की ताहरी, कहां जाएगी बाहरी

मुगल की ताहरी का स्वाद लग गया, अब जा कहां सकती है?

ताहरी=एक प्रकार की बढ़िया खिचड़ी।

खाऊं तो गेहूं न तो रहूं यूं हूं

जीभ के लालची के लिए क.। जिद्दी के लिए भी क.।

खाक चाट के कहता हूं

अत्यधिक विनम्रता दिखाना।

खाक छानते, बेर बीनते

मारे-मारे फिरना।

ख़ाक डाले चांद नहीं छिपता

यशस्वी पुरुषों की निंदा करने से उनके यश में बट्टा नहीं लगता।

खाक न धूल, बकाइन के फूल

फालतू आदमी या ऐसा जो फालतू बात करे।

बकाइन = नीम की जाति का एक पेड़।

ख़ाकी अंडे की पैदाइश

तुच्छ व्यक्ति।

खाकी अंडों में बच्चे नहीं होते

खोखले आदमी से कोई काम नहीं निकल सकता।

खाके जल्दी चलिए कोस, मरिए आप दैव के दोस

ख़ाकर तुरंत नहीं चलना चाहिए।

खाके पछताता है नहा के नहीं पछताता।

खाने से हानि हो सकती है, पर नहाने से नहीं।

(नहाना हमेशा गुणकारी होता है।)

खात पड़े तो खेत, नहीं तो भूड़ का रेत, (कृ.)

खेत में खाद देने से ही उपज अच्छी हो सकती है।

खाता भी जाए, और बड़बड़ाता भी जाए

स्पष्ट। असंतोषी।

खाते कमाते रहो

आशीर्वाद।

खाते पीते जग मिले, औसर मिले न कोय

सुख के सब कोई साथी होते हैं, दुख में कोई नहीं आता।

खान खाना, जिनके खाने में बताना

(खानखाना का भोजन सोने के थाल में परोसा जाता था। खानखाना से मतलब अकबर के दोस्त और मंत्री बहराम खां से है।—फैलन।)

खाना और ऊंघाना

आलसी के लिए क.।

खाना और ऐंड़ाना

निकम्मे लड़के के लिए क.।

खाना और गुर्राना

कृतघ्नता दिखाना।

खाना न कपड़ा, सेंत का करना, (स्त्रि.)

भरपेट खाने को न मिलने पर क.।

खाना न कपड़ा, सेंत का भतरा, (स्त्रि.)

निकम्मा पति।

खाना पराया है, तो पेट तो पराया नहीं है

माल मुफ्त का है तो क्या हुआ, ज्यादा खाने से तो अपने को ही कष्ट होगा। लोभवश कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिससे अपने को परेशानी हो।

खाना पीना गांठ का, निरी सलाम आलेक

झूठा शिष्टाचार दिखाने पर।

खाना यहां खाओ, तो पानी यहां पीना

जल्दी लौटना।

खाना शराकत, रहना फरागत

मिलजुल कर रहो, मगर हिसाब ठीक रखो। खाने के दांत और, दिखाने के और

(1) ऊपर से प्रेम-भाव और भीतर से कपट।

(2) कहना कुछ और करना कुछ।

खाने को ऊद, कमाने को मजनूं

निकम्मा आदमी।

मजनूं=दुबला-पतला, कमजोर।

खाने को न मिले, खैर, पर नशे को मिले

नशेलची का कहना।

(यहां नशा शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। उसमें गांजा, भांग, चरस, शराब और तमाखू आदि सभी शामिल हैं।)

खाने को पीछे, नहाने को पहले

खाने के पहले नहाना चाहिए।

खाने को 'बिस्मिल्ला', काम को 'इस्तगफिरुल्ला', (मु.)

खाने के लिए तैयार, पर काम के लिए जी चुराना।

(मुसलमानों में कोई कार्य आरंभ करते समय 'बिस्मिल्लाह' अर्थात 'ईश्वर के नाम पर' कहने की प्रथा है, वैसे ही जैसे हिन्दुओं में 'श्रीगणेश'। 'इस्तगफिरुल्ला' का अर्थ है 'ईश्वर बचाए।')

खाने को महुआ, पहिनने को अमौआ

(1) खाने की फिक्र न करना, पर बढ़िया कपड़े पहनना।

(2) झूठी तड़क-भड़क दिखाना।

अमौआ=मूंगिया रंग का एक कीमती कपड़ा, जिसका प्रचार अब बंद हो गया है।)

खाने को शेर, कमाने को बकरी

जो खाए बहुत, पर काम कुछ न करे।

खाने में चटनी, पलंग पर नटनी

खाने में चटनी हो, और पलंग पर नटनी हो।

भोग-विलास वालों के लिए क.।

नटनी=औरत, वेश्या।

खाने में शरम क्या, और घूंसों में उधार क्या?

खाने में संकोच नहीं करना चाहिए, और मार का बदला उसी समय चुका लेना चाहिए।

खाम को काम सिखात है

काम करते अनाड़ी भी होशियार बन जाता है।

खाय कांसा भर, चले आसा भर
आलसी और पेटू पर क.।
कांसा = थाली। आसा = (अ. असा) डंडा।

खाय के बड़ियां, टांग रहे खड़ियां
बड़ियों की प्रशंसा।

खाय के जल्दी चलिए कोस, मरिये आप दैव के दोस
खाकर तुरंत नहीं चलना चाहिए।

खाय चना, रहे बना
चने की प्रशंसा।

खाय तो पछताय, न खाय तो पछताय
ऐसी वस्तु जो वास्तव में अच्छी न हो, पर जिसे अच्छी समझकर सब पाने के लिए लालायित भी हों।
(किसी ठग ने गुड़ के शीरे में लकड़ी के बुरादे को पका कर लड्डू बनाए और यह कहकर वेचना शुरू कर दिया कि ये दिल्ली के लड्डू हैं। नई चीज देखते-देखते बिक गई और ठग पैसा इकट्ठा करके घर चला गया। बाद में जो लोग खरीदने आए, वे लड्डू न पा सकने के कारण पछताते रहे और जिन्होंने खरीदे थे, वे ठगे जाने के कारण पछता कर रह गए।)

खाय न खिलाय, खाला दीदों आगे पाया, (स्त्रि.)
चाची न तो खाती है न खिलाती है, उसकी आंख और पेर दोनों जाते रहें। (कोसना)

खाय नाना का, कहलाय नाना का
खाय किसी का, किसी और का हो कर रहे।
(कृतघ्नता)

खाया-पीया अंग लगा
खाना-पीना सार्थक हुआ।

खायें तो घी से, नहीं जाएं जी से
शौकीन खाने वाले पर क.।

खाये के गाल, नहाये के बाल, नहीं छिपते
ऐसे अवसर पर क., जव आदमी किसी काम को करके छिपाए, पर वह उसके रंग-ढंग या चेहरे से प्रकट हो रहा हो।

ख़ारिश्ती कुतिया और मखमल की झूल
असुंदर वस्तु का शृंगार।
ख़ारिश्ती=जिसे खाज हो, खजैली।

खाला का दम और किवाड़ की जोड़ी, (मु.)
खाला के दम पर गुजर-वसर करते हैं, और घर में किवाड़ की जोड़ी के सिवा कुछ नहीं।
डींग हांकने वाले के लिए क.।

खाला का रुतवा मां के बराबर, (मु.)
चाची या मौसी मां के बराबर होती है।

खाला की मेहमानी, हाथ डाल पछतानी, (मु., स्त्रि.)
कोई लड़की अपनी मौसी के यहां गई। वहां उसे बहुत काम करना पड़ा। तव यह कहावत कही गई।

खाला जी का घर नहीं है, (मु.)
आसान काम नहीं।
(मौसी के यहां सब प्रकार की स्वतंत्रता रहती है। चाहे जो करो। इसीलिए कहा गया है।)

ख़ाली खरीती, पूरी फजीती, (स्त्रि.)
पैसा पास न होने से पूरी खराबी होती है।

खाली घर में कलंदर बैठे
घर हमेशा बंद रखे, नहीं तो फ़कीर रहने लगते हैं।

खाली बनिया क्या करे, इस कोठी का धान उस कोठी में धरे
जब कोई खाली बैठा आदमी व्यर्थ का काम करे, तब क.।

खाली मबाश, कुछ किया कर
आदमी को खाली नहीं बैठना चाहिए। कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।

खाली से वेगार भली
खाली बैठने से तो मुफ्त में किसी का काम करना अच्छा।

खाली हाथ क्या जाऊं, एक संदेसा लेता जाऊं
स्पष्ट बात न कहना।

खाली हाथ मुंह तक नहीं जाता
आदमी को उदार होना चाहिए।

खा ले पहन ले, सो अपना
इसलिए कि पैसे का कुछ ठिकाना नहीं, कव रहे, कब न रहे।

खाविंद राज बुलंद राज, पूत राज दूत राज, (स्त्रि.)
पति के रहते हुए ही स्त्री को सदा सच्चा सुख मिलता है।

खावे घोड़ा या खावे रोड़ा
घोड़ा रखने या मकान वनवाने में वेशुमार ख़र्च होता है।

खावे पान, टुकड़े को हैरान
जिसे पान खाने की लत पड़ जाती है, वह उसका एक टुकड़ा तलाश करता फिरता है। अथवा घर में खाने को नहीं, फिर भी पान का शौक करते हैं।

खावे बकरी की तरह, सूखे लकड़ी की तरह
जो बहुत खाते रहने पर भी दुबला रहता है, उस पर क.।

खावे मूंग, रहे ऊंघ

मूंग खाने से आलस्य आता है।

(मूंग एक हल्का अनाज है। इसी से ऐसा कहा गया है। पर इसका कोई वैज्ञानिक कारण नहीं।)

खावे मोट, तोड़े कोट

मोट या मोठ की दाल पौष्टिक मानी जाती है।

खिंचा-खिंचा वह फिरे जो पराए बीच में पड़े

दे.—इंचा-खिंचा वह...।

खिचड़ी खाते पहुंचा उतर गया

जो बहुत सुकुमार बने उससे व्यंग्य में क.। कार्यारंभ करते ही विघ्न पड़ा, यह अर्थ भी हो सकता है।

खिचड़ी चली पकावन को, चरखा तोड़ जला।
आया कुत्ता खा गया, बैठी ढोल बजा।

जो किसी एक वस्तु को पाने के लिए अपनी एक दूसरी वस्तु नष्ट कर दे या किसी को दे डाले और बाद में उस वस्तु को न पा सके, इसके लिए क.।

दे.—आया कुत्ता खा...।

ख़िज़र मिले जी ख़िजर मिले, (मु.)

इच्छित वस्तु के मिल जाने पर क.।

(मुसलमानों में ख़िजर एक पैगंबर हो गए हैं, जिन्हें अमर माना जाता है।)

ख़िजरी खबर सच्ची होती है

ख़िजरी साहब की बात सच निकलती है।

खिदमत से अज़मत है

सेवा से ही बड़प्पन सिद्ध होता है।

खिलाए का नाम नहीं, रुलाए का नाम

पराए लड़के को चाहे जितना खिलाओ-पिलाओ, उसका कोई यश नहीं मिलता, पर किसी वजह से वह रोने लगे, तो तुरंत शिकायत की जाती है कि हमारे लड़के को रुला दिया।

खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे

कमजोर की खीझ।

खील-बताशों का मेल है

दो एक-सी अच्छी वस्तुओं का मेल।

खील बताशों का मेह

अनहोनी घटना।

(कथा है कि एक बार शेखचिल्ली कोई चीज चुराकर अपने घर लाए। उनकी मां को जब पता चला, तो उसे छिपाकर रख दिया। बाद में यह सोचकर कि कहीं उसके पुत्र की मूर्खता की वजह से चोरी का भेद न खुल जाए, उसने चुपचाप आंगन में खील-बताशों की वर्षा की और शेखचिल्ली को समझा दिया कि ये आसमान से बरसे हैं। बाद में छानबीन होने पर शेखचिल्ली ने मंजूर कर लिया कि हां चोरी उन्होंने ही की है। मां ने तब कहा कि यह तो निरा पागल है। चोरी करना क्या जाने। इससे पूछा जाए कि इसने चोरी किस दिन की। लोगों ने पूछा, तो शेखचिल्ली ने तुरंत उत्तर दिया कि जिस दिन खील-बताशे बरसे। लोग समझ गए कि यह सचमुच पागल है।)

खुटके पर सोना

लकड़ी पर सोना लगा है। मतलब, पैसे वाला है।

खुड़का हुआ चोर उमड़ा,

आहट हुई नहीं कि चोर भाग जाता है।

(अपराधी का मन बड़ा कमजोर होता है।)

खुद करदारा इलाजे नेस्त, (फा.)

अपने किए का क्या इलाज?

खुदाई ख्वार, गधे सवार

खुदा करे तुझे गधे पर सवार होना पड़े। एक गाली।

(पुराने जमाने में दुराचारी को दंड देने के लिए अक्सर गधे पर बिठाकर उसकी सवारी निकालते थे।)

खुदा का दरवाजा हमेशा खुला है।

हमेशा उससे फ़रियाद की जा सकती है।

खुदा का दिया कंधे पर, पंचों का दिया सिर पर

पंचों की आज्ञा ईश्वर की आज्ञा से बड़ी है।

खुदा का दिया सिर पर

इसके दो अर्थ हैं—

(1) खुदा का दिया हमें मंजूर है।

(2) खुदा का दीपक यानी चांद हमारे सिर पर है।

खुदा का मारा हराम, अपना मारा हलाल

जो अपने-आप मर जाता है उसे तो अपवित्र और जिसे स्वयं मारते हैं उसे पवित्र समझते हैं।

खुदा किसी को किसी का मुहताज न करे।

ईश्वर करे हमें कभी किसी का एहसान न लेना पड़े।

खुदा किसी को लाठी लेकर नहीं मारता

मनुष्य स्वयं अपने किए का दंड भोगता है।

खुदा की चोरी नहीं तो बंदे का क्या डर?

ईश्वर सर्वज्ञ है। उससे जब कोई बात छिपी नहीं रह सकती, तब मनुष्य से क्या डरना? यानी कोई काम छिपाकर क्यों किया जाए?

खुदा की बातें खुदा ही जाने
ईश्वर की बातें ईश्वर ही जानता है।
पड़े भटकते हैं लाखों पंडित हजारों मुल्ला करोड़ों स्याने,
जो खूब देखा तो यारो, आखिर खुदा की बातें खुदा जाने।
(नज़ीर)

खुदा की लाठी में आवाज़ नहीं
ईश्वर कब किस तरह दंड देता है, इसका पता नहीं चलता। अथवा मनुष्य स्वयं ही अपने कर्मो का फल भोगता है। ईश्वर तो उपलक्ष है।

खुदा के ग़जब से डरते रहिए
ईश्वर के कोप से डरना चाहिए।

खुदा के घर में चोर का क्या काम? (मु.)
स्पष्ट।

खुदा के घर में सब कुछ, (मु.)
स्पष्ट।

खुदा के घर से फिरे हैं
(1) जो मौत से बच जाए, उसके लिए क.।
(2) जो भविष्यवक्ता होने का ढोंग करे, उसके लिए व्यंग्य में क.।

खुदा के वास्ते बिल्ली भी चूहा नहीं मारती।
ईश्वर के नाम पर कोई बुरा काम नहीं करता।

खुदा को याद करो
ईश्वर का नाम लो।

खुदा खफा हो तो पैदल चलाए, ज्यादा खफा हो तो सिर पर बोझा रखाए, जो खुश हो तो मेंह बरसाए, ज्यादा खुश हो तो बेटा दे
स्पष्ट।

खुदा गंजे को नाखून न दे
क्योंकि नाखून से सिर खुजाकर वह खून निकाल लगा। जब कोई ओछा व्यक्ति ऊंचे पद पर बैठकर बहुत अंधेर करने लगता है, तब क.।

खुदा, जालिम से पाला न पड़े
ईश्वर अत्याचारी से बचाए।

खुदा देखा नहीं तो अक्ल से तो पहिचाना है
भले ही ईश्वर को न देखा हो, पर उसे बुद्धि से तो पहचाना जा सकता है।

खुदा देता है तो छप्पड़ फाड़कर देता है
ईश्वर को जब देना होता है, तो किसी न किसी बहाने देता ही है।

खुदा देता है तो नहीं पूछता–'तू कौन है?'
ईश्वर को जिसे देना होता है उसे देता है, फिर वह कोई भी हो।

खुदा दो सींग भी दे, तो वह भी सहे जाते हैं
ईश्वर का दिया कष्ट भी स्वीकार है।

खुदा ने तो जवाब दे दिया है, बेहयाई से जीते हैं
निर्लज्ज के लिए क..

खुदा भरे को भरता है
जिसके पास पैसा होता है, ईश्वर उसी को और देता है।

खुदा भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं
ईश्वर दिन भर में सबको भोजन देता है।

खुदा महफ़ूज रखे हर बला से
ईश्वर बचाए हर विपत्ति से।

खुदा मेहरवान, तो जग मेहरबान
ईश्वर की कृपा है तो सबकी कृपा है।

खुदा मेहरवान तो कुल मेहरबान
दे. ऊ.।

खुदा रज्ज़ाक है, बंदा कज्ज़ाक है
ईश्वर सबका रक्षक है, मनुष्य भक्षक है।

खुदा लगती कोई नहीं कहता, मुंह देखी सब कहते हैं
लोग खुशामद पसंद करते हैं।
खुदा लगती=बिल्कुल सच बात।

खुदा लड़ने की रात दे, बिछुड़ने का दिन न दे, (स्त्रि.)
ईश्वर वियोग का दिन न दिखाए।

खुदा वास्ते की दुश्मनी है
व्यर्थ का झगड़ा।

खुदा शक्करखोरे को शक्कर ही देता है
ईश्वर सब की इच्छा पूरी करता है।

खुदा सबकी मेहनत स्वारथ करता है, अकारथ नहीं करता
ईश्वर सब का परिश्रम सफल करता है।

खुदा से खैर मांगो
ईश्वर से कुशल मांगो।

खुदा हाज़िर व नाज़िर है
ईश्वर सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है

खुदा हथियार, और किया भतार; किसी के काम नहीं आता (स्त्रि.)
भोथरा हथियार, और किया हुआ पति बेकार है।

खुदी और खुदाई में वैर है
अहंमन्यता और ईश्वर में वैर है।

खुफ्ता रा खुफ्ता के कुनद बंदार, (फा.)
सोता आदमी सोते हुए को कैसे जगा सकता है?

खुर खांसी, तेरी दाई के गले में फांसी
बच्चों की खांसी का टोटका।

खुरचन मथुरा की और सब नकल
स्पष्ट।

खुर्दा न बुर्दा, मुफ़्त दर्द गुर्दा
न खाने को न पीने को, मुफ़्त में पेट का दर्द। मतलब, व्यर्थ की परेशानी।

खुश रह पटानी, निकल गया पानी
काम संतोपजनक होने पर मालिक मजदूर से कहता है।

खुशामद से आमद है
खुशामद से ही पैसा मिलता है।

खुशामदी का मुंह काला
खुशामदी का बुरा हो।

खुश्का खाओ
चावल खाओ।
(एक मुहावरा जिसका अर्थ है—ज़बान बंद करो।)

खून वह जो सिर चढ़के बोले
खून छिपता नहीं। हत्यारे के मुंह से अपने-आप प्रकट होता है।

खूब गुज़रेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो
जब एक-सी प्रकृति के दो व्यक्ति मिल जाते हैं, तो उनकी मज़े में कटती है।

खूब दुनिया को आज़मा देखा, जिसको देखा तो बेवफ़ा देखा
दुनिया में सच्चे मित्र नहीं मिलते।

खूब ही दांत खट्टे हुए
बहुत नीचा देखना पड़ा।

खेत गए किसान, (कृ.)
किसान वही जो खेत पर जाए, अर्थात खेती स्वयं देखे।

खेत बरानी जैसे नियाम राजानी, (कृ.)
बिना सींच का खेत ऐसा है जैसे राजा का इनाम, कोई भरोसा नहीं।
जिन खेतों में सिंचाई का साधन नहीं होता, और जो केवल वृष्टि के सहारे रहते हैं, उनके लिए, क.।

खेत बिगाड़े ख़रतुआ और सभा बिगाड़े दूत, (कृ.)
घासपात और कूड़ाकरकट से खेत इस तरह खराब होता है, जैसे चुगलखोर से सभा।

खेती कर-कर हम मरे, बहुले के कोठे भरे, (कृ.)
कर्ज़दार किसान का क. कि हम तो खेती करके मरते हैं और साहूकार का घर भरता है।

खेती, खसम सेती, (कृ.)
खेती मालिक के देखने से ही ठीक होती है।

खेती, पाती, बीनती, औ घोड़े का तंग।
अपने हाथ संवारिये, चह लाखों हों संग।
स्पष्ट।
अपने हाथ से किया गया काम ही अच्छा होता है।
पाठा.—खेती, पाती, वीनती, और ख़ुजावन खाज। अपने हाथ संवारिये, जो पिय चाहो राज।

खेती राज रजाये, खेती भीख मंगाये, (कृ.)
फसल अच्छी हुई तो लाभ होता है, नहीं तो हानि।

खेदी गिल्लो अंत को पेड़ ही तले आती है
घूम-फिर कर आदमी अंत में घर ही लौटकर आता है।
गिल्लो=गिलहरी।

खेप हारी, जनम नहीं हारा
किसी मज़दूर का कहना कि मैंने काम की जिम्मेदारी ली है, अपनी जिंदगी नहीं बेच दी; अर्थात तुम्हारी गुलामी नहीं कर सकता।
(एक बार में जितनी वस्तु लाई जा सके, उसे खेप कहते हैं।)

खेल खिलाड़ी का, पैसा मदारी का
खेलने वाला खेल दिखाता है, पैसा मदारी को मिलता है।
काम कर्मचारी करते हैं, नाम अफसर का होता है।

खेल खिलाड़ी का, भगत भैय्या जी की,
दे. ऊ.।
(भगत एक शौकिया मंडली होती है, जो भांडों की तरह नक्ल का तमाशा दिखाती है। तमाशा तो खिलाड़ी दिखाते हैं, नाम संचालक का होता है।)

खेल न जाने मुर्गी का, उड़ाने लगा बाज़
साधारण काम जानते नहीं, मुश्किल काम करने चले।

खेल में रोवे सो कौवा
बच्चे खेल में कहते हैं।

खैर का बेड़ा पार है
भले का काम सफल होता है।

खैर की जूती, खैरात का नाड़ा, पढ़ दे मुल्ला अक़्द उधारा, (स्त्रि.)
मांगे की जूती और मांगे का ही पैजामा है, इसलिए मुल्ला तू उधार (बिना कुछ लिए) ब्याह भी करा दे।

खैर ! जो हुआ सो हुआ
हो गया सो हो गया, चिंता न करो।

ख़ैरात के टुकड़े बाज़ार में डकार

(डकार भरपेट खाने का लक्षण है। बाज़ार में डकार लेने से सबको जान पड़ा कि खूब खाकर आए हैं, पर वास्तव में भीख के टुकड़े खाए हैं।)

खोगीर की भर्ती

बेकार चीज़ों या मनुष्यों से जगह भरना।

खोटा पैसा, खोटा बेटा, वक्त पर काम आता है

किसी वस्तु को निकम्मी समझकर मत फेंको। किसी समय वह भी काम आ सकती है।

खोन पाक, खोन पोश पाक, खोल के देखो तो खाक़ ही खाक़, (स्त्रि.)

थाली भी साफ, थाली ढकने का कपड़ा भी साफ, पर खोलकर देखो तो धूल ही धूल।

जहां केवल ऊपरी तड़क-भड़क हो, और असलियत कुछ न हो, वहां क.।

खोन=(फा. ख़्वान) वह थाली, जिसमें भोजन परोसा जाता है।

खोन बड़ा, खोनपोश बड़ा, खोल के देखो तो आधा बड़ा, (स्त्रि)

दे. ऊ.।

यहां बड़ा के दो अर्थ हैं—

(1) खूब लंबा-चौड़ा।

(2) उर्द की पीठी का प्रसिद्ध पकवान।

आधा बड़ा=आधा टुकड़ा बड़े का।

खोल खीसा, खा हरीसा

जेब में पैसे हों, तो चाहे जो खाओ।

हरीसा=(अ. हरीस) खाने की इच्छा रखने वाला लालची, पेटू।

खोल घड़ा, कर बे धड़ा, (व्यं.)

घड़ा खोलकर जल्दी सामान दे।

(ऐसे व्यक्ति के लिए क., जो किसी वस्तु को लेने के लिए बहुत जल्दी मचाए, पर देने के लिए जिसके पास पूरे दाम न हों।)

धड़ा करना=तौलना।

ग

गंग जहां रंग, (हिं.)
जहां गंगा वहीं आनंद।
गंगा कर गौर गरीबन की, (हिं.)
गंगा से प्रार्थना।
गंगा किसकी खुदाई है
एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न। गंगा को खोदने का काम कोई कर नहीं सकता।
गंगा के मेले में चक्की-राहे को कौन पूछे?
गंगा के मेले में चक्की टांकने वाले की क्या जरूरत? (उसकी आवश्यकता तो घर पर ही पड़ सकती है, जहां चक्की है।)
गंगा को आना था, भगीरथ को जस, (हिं.)
जब काम तो आप ही हो जाय और किसी दूसरे को मुफ़्त में यश मिले, तब क.।
पाठा.—गंगा आवनहार भागीरथ के सिर पड़ी।
गंगा गए मुड़ाए सिद्ध, (हिं.)
सुयोग मिलते ही काम कर डालना चाहिए।
गंगा गए मुड़ाए सिर
गंगा अथवा अन्य तीर्थस्थान में जाने पर सिर मुड़ाना पड़ता है।
गंगा नहाए क्या फल पाए,
मूंछ मुड़ाए घर को आए।
ढोंग करने वालों पर व्यंग्य।
गंगा नहाए मुक्त होय, तो मेंढ़क मच्छियां।
मूड़ मुड़ाए सिद्ध होय, तो भेड़ कपछियां।
यदि गंगा नहाने से मुक्ति मिलती हो, तो मेंढ़क और मछलियां भी मुक्ति पा सकती हैं। सिर मुड़ाने से सिद्ध बन सकता हो, तो भेड़ें, मेमने आदि भी सिद्धि-लाभ कर सकते हैं, क्योंकि उनकी भी मुड़ाई होती है।
गंगा बही जाए, कलबारीन छाती पीटे
गंगा का पानी व्यर्थ बहते हुए देखकर कलवारिन 'हाय हाय' करती है, क्योंकि उसे शराब में मिलाने के लिए पानी की बहुत आवश्यकता पड़ती है।
निष्प्रयोजन अफ़सोस करने वालों के लिए क.।
गंजफे के तीनों खिलाड़ी रोते हैं
तीनों कहते हैं कि हमारे पास बुरे पत्ते हैं।
गंजफा=(फा. गंजीफा) एक खेल जो 8 रंग के 96 पत्तों से खेला जाता है।)
गंज बेरंज नहीं
बिना कष्ट के धन नहीं मिलता। अथवा बिना परिश्रम के सफलता प्राप्त नहीं होती।
गंज=(फा.) खज़ाना।
गंजा मरा खुजाते-खुजाते
कोई जब अपने कर्मों का फल भोगता है, तब क.।
गंजी कबूतरी और महल में डेरा
अयोग्य आदमी को ऊंचा स्थान मिलना।
गंजी पनहारी और गोखरू का हंडुवा
गंजी पनहारी और सिर पर खूबसूरत कुंडरी।
(गोखरू गोटे वा बादले का बना एक साज़ होता है, जो ब्याह-शादियों में बढ़िया कपड़ों पर लगाया जाता है। हंडुवा उसे कहते हैं, जिस पर घड़ा रखा जाता है (ऐंडुरी-कुंडरी)। इसके अतिरिक्त गोखरू एक जंगली पौधे का बीज भी होता है, जिसमें बहुत कांटे होते हैं। यदि गोखरू का यह अर्थ लगाया जाए, तो कहा. का अभिप्राय हो जाएगा—गंजी

पनहारी और सिर पर कांटों की कुंडरी। यानी मुसीबत में मुसीबत)

गंजी सत्ती, ऊत पुजारी

जैसे को तैसा।

सत्ती=देवी।

गंजे को खुदा नाखून न दे

दे.–खुदा गंजे को...।

गंदी बोटी का गंदा शोरवा, (स्त्रि.)

खराब साधनों से खराब चीज तो बनेगी ही।

गंदुम अज़ गंदुम बिरीयद, जौ ज़ी जौ, (फा.)

गेहूं से गेहूं और जौ से जौ पैदा होते हैं।

गंवार का हांसा, तोड़े पांसा, (ग्रा.)

गंवार की हंसी दुखदाई होती है।

पांसा=पसली।

गंवार को पैसा दीजे, पर अक्ल न दीजे

मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है, भले ही उसे पैसा दे दिया जाए।

गंवार गाड़ा न दे, भेली दे

गंवार सहज में गन्ना नहीं देता, पर धमकाने से गुड़ दे देता है। आसानी से मूर्ख कोई चीज नहीं देता।

गंवार गों का यार

गंवार भी अपना मतलब दखता है।

गई चौधराहट फिरी है

छिना हुआ अधिकार फिर मिल गया है।

गई जवानी फिर न बहुरे, चाहे लाख मलीदा खाओ

जवानी फिर नहीं लौटती, चाहे जितना माल-मसाला खाओ।

गज भर का हंसुआ, न निगलते बने न उगलते

दे.–गुर, भरा हंसिया। 'गज भर का हंसुआ' अशुद्ध है।

गटरी-बांधी धूल की, रही पवन से फूल।

गांठ जतन की खुल गई, अंत धूल की धूल।

मानव शरीर के बारे में क.।

गठिया खुला, बिटिया पारस

पुत्रवती होने पर ही स्त्री का सम्मान होता है। गठिया खुलना एक मुहावरा है जिसका अर्थ 'गर्भ से होना, या बच्चा होना।'

गढ़ तो चित्तौरगढ़ और सब गढ़ैयां

स्पष्ट।

(चित्तौरगढ़ राजपूतों का प्रसिद्ध किला था, जो सन् 1568 में अकबर द्वारा नष्ट किया गया। पूरी कहावत इस प्रकार है–

ताल तो भोपाल ताल और सब तलैयां।

गढ़ तो चित्तौरगढ़ और सब गढ़ैयां।)

गढ़ कुम्हार, भरे संसार

एक के काम से जब बहुत से लोग लाभ उठाएं, तब क.। कुम्हार गगरी बनाता है, और सब लोग उससे पानी भरते और पीते हैं।

गढ़े के पानी में मुंह धोकर आओ

जाओ अपना काम देखो। डींग हांकने वाले से क.। पहले अपना मुंह साफ कर लो, तब कोई बात करना।

गधा के खाइल खेत, न इहलोक के, न परलोक के, (पू.)

क्षुद्र के साथ नेकी करने से कोई लाभ नहीं।

गधा खरसा में मोटा होता है

(लोगों का विश्वास है कि ग्रीष्म ऋतु में सूखा मैदान देखकर गधा समझता है कि मैंने बहुत खा लिया, इसलिए तगड़ा रहता है; पर वर्षा में चारों ओर हरी घास देखकर उसे यह ज्ञान होता है कि उसने अभी कुछ नही खाया, इसलिए दुबला हो जाता है। किंतु वास्तविकता यह है कि वर्षा की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु गधे की प्रकृति के अधिक अनुकूल बैठती है, इसलिए उन दिनों तंदुरुस्त रहता है। खरसा ग्रीष्म को कहते हैं।)

गधा गिरे पहाड़ से, मुर्गी के टूटे कान

एक असंबद्ध बात।

गधा घोड़ा एक भाव

अच्छी-बुरी चीज का एक ही दामों विकना। अंधेरखाता।

गधा घोड़ा बराबर

अच्छी बुरी चीज को एक-सा समझना।

गधा पानी पिये घंघोल के

गधा भी कूड़ा अलग करके पानी पीता है।

(फैलन ने इसका यही अर्थ किया है। किंतु वास्तव में घंघोलने का मतलब होता है पानी को हिलाकर मैला करना। तब कहावत का अर्थ होगा–गधा गंदा पानी पीना पसंद करता है।)

गधा पीटे घोड़ा नहीं होता

(1) मूर्ख को पीटकर समझदार नहीं बनाया जा सकता।

(2) बुरी चीज से किसी भी प्रकार अच्छी चीज नहीं बनती।

गधा बरसात में भूखा मरे
इसलिए कि वर्षा गधे के अनुकूल नहीं बैठती, फिर कितनी ही घास क्यों न पैदा हो।

गधी भी जवानी में भली लगती है
स्पष्ट।

गधे का जीना थोड़े दिन भला
जिसे हमेशा परिश्रम करना पड़े, वह मरे के तुल्य है।

गधे का मांस, कुत्ते का दांत
ये किसी काम नहीं आते।

गधे की आंख में नोन दिया, उसने कहा 'मेरी आंख फोड़ी'
(1) तुच्छ आदमी एहसान नहीं मानता।
(2) मूर्ख के साथ उपकार करने से वह समझता है कि उसका अहित किया जा रहा है।

गधे की भारी लात की सनसन हट
बुरे की संगत में हानि उठानी पड़ती है।

गधे के खिलाए का पुन न पाप
दे.—गधा के खाइल खेत...।

गधे को अंगूरी बाग
किसी मनुष्य को ऐसी वस्तु देना, जिसके वह योग्य नहीं।

गधे को खुश्का
दे. ऊ.।
खुश्का=मीठे चावल।

गधे को गधा ही खुजाता है
ओछों का काम ओछे ही कर सकते हैं। अथवा ओछों की मित्रता ओछों के ही साथ होती है।

गधे को गुलकंद
अयोग्य को अच्छी वस्तु देना।

गधे को जाफरान
दे. ऊ.

गधे को पूड़ी और हलवा
दे. गधे को गुलकंद।

गधों से हल चले, तो बैल कौन बिसाय, (कृ.)
छोटे से अगर बड़ों का काम होने लगे, तो बड़ों को कौन पूछे ? जब किसी मनुष्य को कोई काम दिया जाए और वह उसे न कर सके, तब क.।

ग़मन दारी बुज़ बखर, (फा.)
अगर तुझे कोई चिंता नहीं तो बकरी खरीद ले। जानवर रखने से बेफिक्र आदमी फिक्रमंद हो जाता है।

गम पश्म, झांट शादी, या हादी ! या हादी !
आबाद या रिन्द नाम के फ़कीरों की आवाज।

गया गांव जहां ठाकुर हंसा, गया रूख जहां बगुला बसा,
गया ताल जहं उपजी काई, गया कूप जहं भई अथाई।
नष्ट हो जाता है वह गांव जहां का प्रधान हंसोड़ हो,
नष्ट हो जाता है वह वृक्ष जिस पर बगुला निवास करे,
नष्ट हो जाता है वह ताल जिसमें काई पैदा हो जाए,
नष्ट हो जाता है वह कूआं जिसकी तली बैठ जाए।
अथाई=अथाह।

गया गुज़रा
बीती बात। हुआ सो हुआ।

गया मर्द जिन खाई खटाई, गई रांड़ जिन खाई मिठाई
खटाई खाने से मनुष्य का पुरुषत्व जाता है और मिठाई खाने से विधवा चरित्रहीन हो जाती है।

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं
समय पर चूकना नहीं चाहिए।

गया सो गया, रहा सो बचा
स्पष्ट।

गये कटक, रहे अटक
जब किसी को कहीं काम पर भेजा जाए, और वह शीघ्र लौट कर न आए या बाहर जाने पर न लौटे।

गये जोबन, भतार
अवसर बीते काम करना।
भतार=पति।

गये थे रोज़ा छुड़ाने, नमाज़ गले पड़ी, (मु.)
एक विद् से बचने गए, दूसरी सामने आ गई।
रोज़ा=वह उपवास, जो मुसलमान रमजान के महीने में तीस दिन रखते हैं। रोज़ा खत्म हो जाने पर ईद के दिन नमाज़ पढ़ने जाते हैं।

गये दक्खन, वही करम के लक्खन
अकर्मण्य का कहीं ठिकाना नहीं।

गये विचारे रोजे रहे, एक कम तीस, (मु.)
तीस में से एक रोज़ा निकल गया। उन्तीस रह गए। मुसीबत कुछ कम तो हुई।

गये वह दिन जब ख़लीलख़ां फ़ाख्ता मारते थे
वह दिन निकल गए, जब ख़लीलखां मौज करते थे।
पाठा.—गए वह दिन जब ख़लीलखां फ़ाख्ता उड़ाते थे।
दे.—खलीलख़ां फ़ाख्ता...।

गरज का बावला अपनी गावे
गरजमंद अपनी ही कहता है।

गरजते हैं वह बरसते नहीं
डींग हांकने वाले काम नहीं करते।

गरज परला से आदमी बुड़बक होला, (पू.)
गरज पड़ने पर आदमी बेवकूफ़ हो जाता है।

गरज बावली है
गरजमंद को अपने काम के सिवा और कुछ नहीं सूझता।

गरजमंद करे या दरदमंद करे
दूसरों की सहायता या तो गरजमंद करता है या दयावान।

गरजमंद बावला है
गरजमंद पागल होता है। अपने ही मतलब की बात करता है।

गरब करते रावन हारे, (हिं.)
गर्व करने वाले रावण को हारना पड़ा।

गरब का सिर नीचा
अहंकारी को नीचा देखना पड़ता है।

गरीब की जवानी, गरमी की धूप, जाड़े की चांदनी अकारथ जाए
स्पष्ट।

गरीब की जोरू और उम्दा खानम नाम, (मु.)
यह नाम बड़े आदमियों की औरतों का होता है।

गरीब की जोरू सबकी भाभी
गरीब से सब अनुचित लाभ उठाते हैं।
(बड़े भाई की स्त्री से हंसी करने की हिंदुओं में प्रथा है। गरीब को सीधा जानकर सब उसकी स्त्री से हंसी-मजाक करते हैं।)

गरीब ने रोज़े रखे, दिन बड़े हुए, (मु.)
गरीब के सभी ख़िलाफ़ जाते हैं।
(मुसलमानों के रोज़े कभी गर्मियों में तो कभी जाड़ों में पड़ते हैं। अब अगर वे गर्मी में पड़ें, तो दिन बड़े होने के कारण कष्टकर हो जाते हैं।)

गरेबां में मुंह डालो
अपनी असलियत देखो।

गर्मियों में कश्मीर ज़िन्नत है
कश्मीर की प्रशंसा।

गर्मी सब्जह रंगों से, और घर में भूनी भांग नहीं
पास में पैसा नहीं, और सुंदर औरतों पर मन चले। सामर्थ्य से बाहर इच्छा रखने वालों के लिए कही जाने वाली कहावत।

गलत-उल आम फ़सीह, (अ.)
जिस भूल को सभी करें, उसे भूल न समझना चाहिए। बोलचाल में जो प्रचलित है, वह व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध होते हुए भी सही माना जाता है।

गले पड़ी बजाए सिद्ध
जब विवश होकर कोई काम करना पड़े, तब क.।
गले में जब ढोलकी पड़ी है, तो फिर उसे बजाना ही चाहिए।

गल्ला चूंअरज़ां शबद, इमसाल सैय्यद मी शबद, (फा.)
इस साल अगर गल्ला सस्ता हो गया, तो मैं सैय्यद बन जाऊंगा, अर्थात बड़ा आदमी हो जाऊंगा।
(सैय्यद मुहम्मद साहब के वंशज हैं। इसलिए मुसलमानों में बड़े माने जाते हैं।)

गवाह चुस्त, मुद्दई सुस्त
सहायकों का तत्पर रहना, और स्वयं लापरवाही दिखाना।

गहेरी लाली देखकर फूल गुमान भये।
केते बाग जहान में लग लग सूख गये।
अपना गहरा सौंदर्य देखकर फूल को घमंड हो गया, पर वह यह नहीं जानता कि इस दुनिया में कितने बाग लगे और कितने उजड़ गए।

गांजा पिये गुर ज्ञान घटै, और घटै तन अंदर का।
खोंखत खोंखत गांड़ फटै, मुंह देखो जस बंदर का।
गंजेड़ियों के लिए कहा गया है कि गांजा नहीं पीना चाहिए, क्योंकि इसमें दुर्गण ही दुर्गण हैं।
दे.—आंख का अंधा...।

गांठ का पूरा मत का हीना
मूर्ख पैसे वाले के लिए क.।

गांठ का पूरा आंख का अंधा
दे. ऊ.।

गांठ खुले न, बहुरिया दुबरस, (पू.)
बहू इतनी दुबली है कि कंकन की गांठ भी नहीं खोल सकती।
(हिंदुओं के यहां विवाह में एक नेग होता है, जिसमें वर-कन्या एक-दूसरे के हाथ में बंधे कंकन की गांठ खोलते हैं। यह कंकन लाल धागे का होता है।)

गांठ गिरह में कौड़ी नहीं, मियां गट्टे वाले हों
गांठ में पैसा नहीं, फिर भी गट्टे वाले को बुलाते हैं कि अरे भाई दे जाना।
गट्टा=एक मिठाई, जो केवल शक्कर की बनती है।

गांठ गिरह से मद पीवे, लोग कहें मतवाला
बुरे काम में पैसा खर्च करके बदनामी मोल लेना।
गांठ न मुट्ठी, फरफराय उट्ठी, (स्त्रि.)
पास में पैसा न हो, पर किसी चीज को खरीदने को मन चले, तब क.।
गांठ में दाम न, पतुरिया देख रुआई आए, (पू.)
दे.—गर्मी सब्ज़ह रंगों से...।
पतुरिया=वेश्या।
गांठ में पैसा नहीं, बांकीपुर की सैर, (पू.)
दे.—गांठ न मुट्ठी...।
गांड़ चले मन बख्लों को
दस्त लगते हैं, पर चना खाने को मन चलता है। सहनशक्ति से बाहर काम करने की इच्छा रखना।
गांड़ न धोए सो ओझा होय, (पू.)
हंसी में ही क.।
ओझा=भूत-प्रेत झाड़ने वाला। (सरजूपारी, मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति भी ओझा कहलाती है।)
गांड़ में गू नहीं और कौवे मेहमान।
झूठी शान दिखाना।
गांड़ में लंगोटी, न सिर पै टोपी
आवारा के लिए क.।
गांडू का हिमायती भी हारा है
कायर की कोई सहायता नहीं कर सकता।
गांव के गंवेरे, मुंह पै खाक, पेट में टेले
ग्रामीणों पर फब्ती।
गांव गया, सोता जागे
सोने वाला कब जागे कहा नहीं जा सकता, उसी तरह बाहर गए आदमी का भी निश्चय नहीं रहता कि कब लौटे।
गांव गए की बात
बाहर जाने पर क्या काम लग जाए, कब लौटें, इस तरह का भाव प्रकट करने के लिए क.।
गांव तुम्हारा, नांव हमारा
झूठमूठ की नामवरी चाहना।
गांव दहा जाए, सिवाने की लड़ाई
हदबंदी की लड़ाई और पूरा गांव नष्ट हो रहा है। साधारण बात पर झगड़ा बढ़ना।
गांव, नांव, ठांव
किसी का पता ठिकाना जानने के लिए क.।
गांव बसंते भूतले, शहर बसंते देव
गांव में रहने वाले भूतों के और शहर में रहने वाले देवताओं के समान हैं।
गांव भागे, पघिया लागे, (ग्रा.)
फसल के शुरू होते ही गांव खाली हो जाता है। लोग फसल काटने चल देते हैं।
गांव में घर न जंगल में खेती
जिसके कुछ नहीं उसका कहना।
गांव में धोबी का छैल
गांव में धोबी का लड़का ही शौकीन बना फिरता है, क्योंकि उसका बाप शहर वालों के जो कपड़े धोने लाता है, वह उन्हें पहनता है, जो गांव वालों को देखने को नहीं मिलते।
गांव में पड़ी भरी, अपनी-अपनी सबको पड़ी
विपद् आने पर सब अपनी-अपनी फिक्र करते हैं।
गांव सदा गंवारन के
गांव में गंवार लोग ही रहते हैं
गाऊं न, गाऊं तो विरहा गाऊं, (स्त्रि.)
या तो कुछ करे ही नहीं, या फिर ऐसा काम करे, जो किसी को पसंद न आए।
(बिरहा एक विशेष अवसर के गीत हैं। हमेशा नहीं गाए जाते।)
गाओ बजाओ, कौड़ी न पाओ, (स्त्रि.)
सूम के लिए क.।
गाओ, बजाओ, बन्ने के लोलो ही नहीं, (स्त्री.)
जिसके लिए यह सब धूमधाम है वही नहीं।
(लोलो ही नहीं, मतलब दूल्हा नपुंसक है।)
गाछ में कटहल, होंठ में तेल, (पू.)
समय के पहले ही किसी काम की तैयारी करना।
(कटहल का दूध हाथ या होंठ में लग जाने पर तेल लगाकर छुड़ाया जाता है। बं.—गाछे कांटाल गोंफे तेल)
गाजर की पूंगी, बजी तो बजी, नहीं तो तोड़ खाई
ऐसे काम के लिए क., जो हो जाए, तो अच्छा; न हो तो भी अच्छा।
गाजी मियां, दममदार, खिच्चड़ पक्का हमतैय्यार, (मु.)
गाजी मियां और शाह मदार की क़सम, मैं खिचड़ी खाने को तैयार हूं।
(गाजी मियां उर्फ सालार गाजी महमूद गज़नवी के भतीजे थे, जिनकी सन् 1033 में बहराइच में मृत्यु हुई। वह

मुसलमानों के प्रसिद्ध पीर हैं। इसी तरह शाह मदार को भी मुसलमान अपना पीर मानते हैं। मकनपुर में उनका मक़बरा है। उनकी मृत्यु सन् 1433 में हुई।)

गाडर आनी ऊन को, बैठी चरै कपास, (ग्रा.)
जब लाभ के लिए कोई काम किया जाए, और उसमें हानि हो, तब क.।

गाड़ी को देख लाड़ी के पांव फूले
आराम सब चाहते हैं। गाड़ी को देखकर लौंडी के पैर में भी दर्द होने लगा।
(यहां लाड़ी का अर्थ लड़ंती भी हो सकता है। फैलन ने Slave girl *लिखा है।)*

गाते-गाते कलावंत हो जाते हैं
अभ्यास करने से ही आदमी दक्ष बनता है।

गाना और रोना, किसको नहीं आता?
सबको आता है।

गाना उत्तम, बजाना मध्यम
गाना सबसे श्रेष्ठ कला है, उसके बाद बजाना।

गाना न बजाना, याद-याद के रिझाना
जब कोई गंदा हंसी-मजाक करके समय बिताए, तब क.।

गाय का दूध सो माय का दूध
गाय का दूध माता के दूध के समान होता है।

गाय का लबारा मर गया तो खलड़ा देख पनहाय
जब किसी मनुष्य का अपने किसी प्रिय जन से वियोग हो जाता है, तो उससे मिलती-जुलती आकृति के मनुष्य को देखकर उसके मन में प्रेम का उद्रेक हो उठता है। इसी विचार को प्रकट करने के लिए कहावत का प्रयोग होता है।
(गाय का बछड़ा जब मर जाता है, तो उसकी खाल में भूसा भर के रख लेते हैं। दुहने के समय उसी को गाय के सामने रखते हैं, जिसे वह अपना जीवित बछड़ा समझकर दूध देने लगती है।)
पनहाना=स्तनों में दूध उतरना।

गाय को अपने सींग भारी नहीं होते
अपने परिवार के लोगों का किसी को बोझ नहीं लगता।

गाय जब दूब से सलूक करे तो क्या खाय?
(1) मेहनताना मांगने में लिहाज किस बात का?
(2) जो जिस वस्तु का व्यापार करता है, उसमें मुनाफ़ा न करे, तो उसका खर्च कैसे चले?

गाय न आवे, बछवे लाज, (पू.)
मां को बेटे की शरम नहीं होती। अथवा इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि मां को तो लाज नहीं आती, पर बेटा लज्जित हो रहा है।

गाय न बाछी, नींद आवे आछी
किसी चीज की चिंता न होने पर नींद अच्छी आती है।

गाय न हो तो बैल दुहो
कुछ न कुछ धंधा करते रहो।

गालवाला जीते, मालवाला हारे
बातूनी हमेशा जीतता है। उसके सामने पैसे वाले को हार माननी पड़ती है।

गाली और तरकारी खाने ही के वास्ते हैं
गाली सुनकर क्रोध न करने के लिए क.।
(खाने के यहां दो अर्थ हैं, भोजन करना और सहन करना।)

गाले हाथ गोपालक माय, (पू.)
गोपाल की मां का हमेशा गाल पर हाथ रहता है।
जो स्त्री सदा प्रसन्न चित्त रहे, उसके लिए क.।
(स्त्रियां गाते समय प्रायः गाल पर हाथ रखती हैं।)

गिन पोई, संभाल खाई, स्त्रि.)
गिनकर रोटियां बनाना और संभाल कर खाना। कमखर्ची में जीवन व्यतीत करना। धन उड़ाओ मत।

गिनी गाय में चोरी नहीं हो सकती
संभालकर रखी हुई चीज घट-बढ़ नहीं सकती।

गिनी डालियां हैं
संभालकर रखी गई चीज है।

गिनी बोटी, नपा शोरबा, (मु.)
(1) कठोर मितव्ययी के लिए क.।
(2) जो सदा एक से ढंग से रहे, उस पर भी क.।
(3) जिसे उतनी ही तनख्वाह मिलती हो, जितने में उसका खर्च मुश्किल से चलता हो, उस पर भी क.।
(4) जिसे तनख्वाह के अलावा कोई ऊपरी आमदनी न हो, उसे क.।

गिने गिनावे, टोटा पावे
अंधविश्वास, बहुतों की ऐसी धारणा है कि रोज-रोज माल को संभालने से उसमें घाटा हो जाता है।

गिरगिट की दौड़ बिटौरे तक
जिसकी जहां तक पहुंच होती है, वह वहीं तक जा सकता है।

गिरगिट के से रंग बदलता है
ऐसे मनुष्य के लिए क., जिसकी बात का कोई ठीक न हो।

गिर पड़े ही हर गंगा
जब अनायास किसी से कोई काम बन जाए, और वह कहे कि मैंने जानबूझकर किया है; तब क.। यश मिलते देख समेट लेना।
पाठा.—रिपट पड़े की...

गिरहकट का भाई गठकट
धूर्त्त-धूर्त्त सब एक से। चोर-चोर मौसेरे भाई।

गिरह का दीजे, पर अकल न दीजे
मूर्खों को गांठ से पैसा भले दे-दे, पर अकल न दे।

गिरह में कौड़ी नहीं और बाज़ार की सैर
पास में पैसा न होते हुए भी चीजें खरीदने को मन होना।

गिरे का क्या गिरेगा
जिसकी हालत बहुत बिगड़ी हुई हो, उसके लिए।

गिरे खंभ पलान भारी
मकान का एक खंभा गिरने से छप्पर भारी हो जाता है, वह टिक नहीं सकता।
समाज या परिवार के एक प्रमुख व्यक्ति के न रहने से सब पर संकट आ जाता है।

गिरे पड़े वक्त का टुकड़ा
(1) समय पर काम आने के लिए बचाकर रखा गया पैसा।
(2) सुयोग्य और कमाऊ लड़का।

गिलहरी का पेड़ ठिकाना
जिसका जहां सुभीता होता है, वह वहीं रहता है।

गीदड़ की शामत आय तो गांव की तरफ भागे
जब कोई मनुष्य जानबूझ कर अपनी हानि करे या ऐसी जगह जाए, जहां उसे कष्ट पहुंचे, तब क.।

गीदड़ गिरा झिरे में 'आज यहीं रहेंगे'
जब कोई मनुष्य अपनी किसी विपद को छिपाना चाहे और कहे कि 'नहीं, मैं तो खूब मजे में हूं।'

गीदड़ भभकी
झूठा रौब दिखाना।

गीदी गाय गुलेंदा खाय, बेर बेर महुआ तर जाय, (पू.)
जब कोई मनुष्य किसी चीज के लालच से बार-बार कहीं जाए, तब क.।
गीदी गाय=लपकी गाय।
गुलेंदा=महुए का फल।

गीली लकड़ी सीधी हो सकती है
बच्चे को सब सिखाया जा सकता है।

गीली-सूखी सब जलती हैं
अच्छी-बुरी सब चीज काम आ जाती है। अथवा आग में सब जलता है।

गुंडे चले बज़ार, बिनौले ढक रखियो
गुंडे और बदमाशों से होशियार रहना चाहिए।

गुज़र गई गुजरान, क्या झोंपड़ी, क्या मैदान
किसी ऐसे मनुष्य का कहना, जो जीवन के सुख-दुख भोग चुका है और जाने को तैयार बैठा है।

गुज़श्त ऊंचे गुज़श्त, (फा.)
बीती बात का विचार नहीं करना चाहिए।

गुज़श्ता रा सलवात, (फा.)
जो हुआ सो अच्छा हुआ।

गुड़ खाएं, गुलगुलों से परहेज
कोई एक बुरा काम करके उसी तरह के दूसरे बुरे काम से बचने का ढोंग करना।

गुड़ खायें पुये में छेद करें
दे. ऊ.।

गुड़ खाएगी तो आएगी
बदचलन औरत के लिए क.।

गुड़ चुरावे तो पाप, तेल चुरावे तो पाप
हर हालत में चोरी तो चोरी ही कहलाएगी।

गुड़ दिए मरे तो ज़हर क्यों दीजे
मिठास से काम चल जाए तो सख्ती क्यों की जाए।

गुड़ न दे तो गुड़ की-सी बात तो करे
किसी को कुछ न दे, न सही; पर बात तो मीठी करे।

गुड़ भरा हंसिया, खाते बने न उगलते, (पू.)
जब कोई ऐसा काम सामने आ जाए, जिसे न करते बने, न छोड़ते, तब क.।

गुड़ से बैंगन हो गए
जब कोई सस्ती चीज महंगी हो जाती है, तब क.।

गुड़ियों के ब्याह में [illegible]चियों की बेल, (स्त्रि.)
जैसा काम वैसा साज-सामान।
बेल=भेंट।

गुदड़ी से बीबी आई, 'शेखजी किनारे हों,' (स्त्रि.)
जब कोई ओछा आदमी प्रतिष्ठा पाकर इतराने लगे, तब क.।
गुदड़ी=वह बाजार, जहां पुरानी चीजें बिकती हैं।

गुन सीख के औगुन सीखता है
पढ़े-लिखे लड़के से क., जब वह बुरे मार्ग पर चले।

गुनियां तो गुन कहे, निर्गुनियां देख घिनाय

समझदार तो समझदारी की बात कहता है, मूर्ख दूर भागता है।

गुरु कीजे जान के, पानी पीजे छान के

गुरु देखभाल कर बनाना चाहिए, पानी छानकर पीना चाहिए।

गुड़ गुड़ ही रहे, चेले चीनी हो गए

चेला गुरु से भी आगे बढ़ गया। प्रायः व्यंग्य में क.।

गुरु-गुरु विद्या, सिर-सिर ज्ञान

सबके पास न तो एक-सी विद्या होती है, और न सबकी समझ एक-सी होती है।

गुरु जी ! चेले बहुत हो गए; बच्चा, भूखों मरेंगे तो आप चले जाएंगे

किसी जगह आवश्यकता से अधिक आदमी इकट्ठे हो गए हों, और वे जाना नहीं चाहते हों, तब क.।

गुरु तो ऐसा चाहिए, ज्यों सिकलीगर होय।
जनम जनम का मोरचा, छिन में डारे खोय।

स्पष्ट।

सिकलीगर=लोहे पर धार रखने वाला। पालिश करने वाला।

गुरु बड़ा कै चेला ?

व्यंग्य में प्रश्न।

गुरु बिन व्याकुल चेलवा, कंठ बिन बाउर गीत

गुरु के बिना चेला वैसे ही निकम्मा होता है, जैसे बिना अच्छे गले के बाउर का गीत।

बाउर=एक गायक भिक्षु संप्रदाय।

गुरु बिन मिले न ज्ञान, भाग बिन मिले न संपत्ति

गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता, भाग्य में लिखे बिना धन-संपत्ति नहीं मिलती।

गुरु, बैद और जोतसी, देव, मंत्रि, अरु राज।
इन्हें भेंट बिन जो मिले, होय न पूरन काज।

गुरु, वैद्य, ज्योतिषी, देवता, मंत्री और राजा इनके पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिए।

गुरु, शुक्र की बादरी, रहै सनीचर छाय।
कहै घाघ सुन घाघनी, बिन बरसे नहिं जाय।

लोक-विश्वास। यदि बृहस्पति और शुक्रवार को बादल हों और वे शनिवार तक बने रहें, तो अवश्य वर्षा होती है।
[घाघ अकबर के समय में (सन् 1542-1605) हिंदी के एक कवि हुए हैं। उनकी कृषि संबंधी कहावतें प्रसिद्ध हैं।]

गुरु से कपट, मित्र से चोरी।
या हो निर्धन, या हो कोढ़ी।

स्पष्ट।

गुरु से पहले चेला मार खाए

(1) गुरु से पहले चेला माल उड़ाता है क्योंकि वही भीख मांगकर लाता है और रसोई बनाता है।

(2) गुरु से पहले चेला पिटता है, क्योंकि वही सब काम से बाहर जाता है।

गुलाम की जात से वफा नहीं

नौकर पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

गुलाम साथ, तो भी नाथ

गुलाम अक्सर भाग जाया करता है, इसलिए साथ में रहे, तो भी उसकी नकेल अपने हाथ में रखे।

नाथ=नकेल।

गुस्सा बहुत, जोर थोड़ा, मार खाने की निशानी

स्पष्ट।

कमजोर से कहते हैं, जिसे गुस्सा बहुत आता है।

गुस्सा हराम है

क्रोध बुरी चीज है।

गुस्से में अक्ल मारी जाती है

क्रोध में मनुष्य विवेक खो बैठता है।

गुस्से में बुराई-भलाई नहीं सूझती

क्रोध में बुरा-भला नहीं दिखाई देता।

गूंगा, अंधा, घुगदढ़िया और काना, कहैं कबीर सुनो भाई साधो, इनको नहिं पतयाना

गूंगे, अंधे, छोटी दाढ़ी वाले और काने का विश्वास नहीं करना चाहिए।

गूंगी जोरू भली, गूंगा नारियल न भला

गूंगी औरत अच्छी, पर ऐसा हुक्का जो पीने से बोले नहीं, किसी काम का नहीं।
(पहले नारियल के हुक्के बनते थे, इसलिए यह शब्द हुक्का के लिए रूढ़ हो गया है।)

गूंगे का गुड़ खाया है?

जो बोलते नहीं।

जब कोई व्यक्ति किसी बात का उत्तर नहीं देता, या किसी विषय में बिल्कुल चुप रहता है, तब क.।
(गुड़ खाने पर गूंगा उसका स्वाद नहीं बता सकता।)

गूंगे का गुड़, खट्टा न मीठा

क्योंकि गूंगा मुंह से बोल नहीं सकता। जब किसी बात की

असलियत का पता न चले, तब क.। जब किसी की कोई बात समझ में न आए, तब भी क.।

गूंगे ने सपना देखा, मन ही मन पछताय

उसे दुख होता है कि वह अपना सपना किसी को सुना नहीं सकता।

गू का कीड़ा गू ही में खुश रहता है

बुरे को बुरी सुहबत में ही बैठना अच्छा लगता है, या गंदे को गंदगी ही पसंद आती है।

गू का टोकरा सिर पर उठाता है

बहुत निंदनीय काम करने वाले से क.।

गू का पूत नौसादर

बुरे घर में भी सपूत पैदा हो सकता है।

(लोगों की धारणा है कि नौसादर विष्ठा को जलाकर बनाया जाता है। उसी से कहा. बनी। नौसादर पेट साफ करने के काम आता है। इसलिए भी उसे मल का पूत कहा जा सकता है।)

गू की दारू भूत और भूत की दारू गू

जैसे का तैसा इलाज।

गूगा बड़ा, क्या भगवान

गूगे के सामने भगवान क्या चीज।

(गूगा एक पीर हो गए हैं, जिनका नाम लेकर सर्प का ज़हर उतारते हैं। यहां 'गूगा' के स्थान पर 'गूंगा' भी हो सकता है। वह अधिक ठीक जान पड़ता है। जो आदमी बोल ही नहीं सकता, वह भगवान से भी बड़ा है।)

गूजर से ऊजड़ भली, उजड़ से भली उजाड़।
जहां गूजर को देखिए, दीजे उसको मार।

स्पष्ट।

गूजर प्रायः जंगल उजाड़ डालते हैं। इसीलिए ऐसा कहा गया है।

गूदड़ में गिंदौड़ा

जब कोई धनी आदमी मलीन वेश में रहे, तब क.। किसी अशिक्षित परिवार में जब कोई पढ़ा-लिखा और बुद्धिमान लड़का हो, तब क.।

गिंदोड़ा=एक मिठाई।

गूदड़ में लाल नहीं छिपता

श्रेष्ठ वस्तु बुरी जगह में भी नहीं छिपती।

गू दर गू, मुर्गी का गू

बहुत ही खराब वस्तु।

गू नहीं छी-छी

बुरी वस्तु हर हालत में बुरी ही रहेगी। नाम बदलने से उसका गुण नहीं बदलता। बच्चों से बात करते समय मल के लिए छी-छी या छि-छि शब्द का प्रयोग करते हैं।

गू में कौड़ी गिरे, तो दांतों से उठा ले

इतना कंजूस !

गू में न ढेला डाले, न छींटे पड़ें

न बुरे काम में हाथ लगाओ, और न बदनामी उठानी पड़े। जब कोई आदमी किसी नीच से झगड़ा या हंसी-दिल्लगी कर रहा हो, तब प्रायः उसे मना करने के लिए क.।

गू से घिनौना कर दूंगा

बुरी हालत बना दूंगा।

गूलर का पेट क्यों फाड़ते हो?

ढकी-मुंदी बात क्यों प्रकट करवाना चाहते हो?

गूलर का फूल, पीपल का मद, घोड़ी की जुगाली, कभी न पावे, और पावे तो रैन दिवाली

लोगों का विश्वास है कि गूलर का फूल, पीपल का मद और घोड़ी की जुगाली, ये चीजें दिवाली की रात को ही देखने को मिल सकती हैं। पर यह कोरा अंधविश्वास है। गूलर का फल छोटे-छोटे फूलों का समन्वय मात्र है। मद बहुत से पेड़ों में नहीं बहता और सभी जानवर जुगाली भी नहीं करते।

गृहस्थ धर्म बराबर कोई धर्म नहीं

स्पष्ट।

गेंठी संभाल, मधुरी चाल, आज न पहुंचब, पहुंचब काल, (पू.)

गठरी संभाले रहो, मज़े की चाल चलो, आज नहीं तो कल पहुंच ही जाएंगे। किसी काम में जल्दीबाज़ी नहीं करनी चाहिए। धैर्यवान को सफलता मिलती है।

गेंड़े की ढाल और बिजली की तलवार

सर्वोत्तम होती है।

(तलवार बनाने वाले कहा करते हैं कि वे बिजली से तलवार पर पानी चढ़ाते हैं।)

गेंवड़े आई बरात, बहू को लगी हगास, (स्त्रि.)

ऐन मौके पर जब कोई कहीं चला जाए, तब.।

गेंवड़ा=गांव के बाहर का हिस्सा, गांव की सीमा।

गेंवड़े खेती, सिखा सांप, भाई भयकरन, बादी बाप, (ग्रा.)

गांव के बिलकुल पास की खेती, छप्पर का सांप, भयकारी भाई, और झगड़ालू बाप, ये अच्छे नहीं होते।

गेहूं की बाल नहीं देखी

अनाड़ी से क.। जो बहुत भोलाभाला बने, उससे व्यंग्य में

भी कह सकते हैं।

गेहूं की रोटी को फौलाद का पेट चाहिए

गेहूं की रोटी गरीबों को नहीं मिलती। वही लोग खा सकते हैं, जिनके पास पैसा आता है। गेहूं को हज़म करना एक मुश्किल काम है; यही भाव है।

(साधारण जनता की हालत गिरी हुई थी। इस कहावत से यही प्रमाणित होता है।)

ग़ैब का हाल ख़ुदा जाने

भविष्य की बातें ईश्वर ही जान सकता है।

ग़ैर का सिर कद्दू बराबर

जब दूसरे का माल खर्च करने में कोई जरा भी न हिचके, तब क.।

ग़ैर के लिए कुआं खोदेगा, तो आप ही गिरेगा।

दूसरे की हानि चाहने वाला स्वयं हानि उठाता है।

ग़ैर ग़ैर ही है, अपना अपना है

समय पर अपना आदमी ही काम आता है।

गोंद पंजीरी और ही खाए, जचहा रानी पड़ि करहायें, (स्त्रि.)

जिन्हें जरूरत है, उन्हें तो कोई चीज न मिले और दूसरे मोज उड़ाएं, तब क.। गोंद और मसाले की पंजीरी बच्चा होने पर प्रसूता को दी जाती है।

जचहा रानी=जच्चा, प्रसूता।

गोज़-ए-शुतर, न जमीन का न आसमान का

दे.—ऊंट का पाद...।

गोझे का घाव, रानी जाने या राव, (स्त्रि.)

मर्म की बात या मर्म का घाव कोई जान नहीं सकता।

गोद का खिलाया गोद में नहीं रहता

अपना लड़का भी काम नहीं आता। ब्याह होने पर बहू के वश में हो जाता है।

गोद का छोड़ पेट के की आस, (स्त्रि.)

गोद के लड़के को छोड़कर गर्भ में जो लड़का है, उसकी आशा करना। वर्तमान छोड़कर भविष्य पर निर्भर होना।

गोद में लड़का शहर में ढिंढोरा

लड़का गोद में और शहर में ढिंढोरा पीट रहे हैं कि हमारा लड़का खो गया। जब कोई चीज पास ही रखी हो और इधर-उधर ढूंढ़ता फिरे, तब क.।

गोदी का लड़का मर जाए, पेट आग बुझाये, (स्त्रि.)

(1) गोद के लड़के के मर जाने पर इस आशा से दुख कम हो जाता है, कि फिर लड़का होगा।

(2) जब गोद का लड़का मर जाता है, तो पेट उसके दुख को भुला देता है, अर्थात आदमी कामकाज में लगकर दुख भूल जाता है।

गोदी में बैठ के आंख में उंगली

कृतघ्न मनुष्य के लिए क.।

गोदी में बैठ के दाढ़ी नोंचे

दे. ऊ.।

गोधन, गजधन, कनकधन, रतनखान, बहुखान।
जब आया संतोष धन, सब धन धूल समान।

स्पष्ट।

संतोष सबसे बड़ा धन है।

गोबर की सांझी भी पहरी-ओढ़ी अच्छी लगती है, (स्त्रि.)

सजावट बड़ी चीज है।

(सांझी गोबर या मिट्टी की बनी उस प्रतिमा को कहते हैं, जिसे लड़कियां क्वांर के महीने में खेल और पूजा के लिए बनाती हैं।)

गोबर गनेश

बुद्धू के लिए क.।

गोर चमाइन गरमे मातल, (पू.)

गोरी चमारिन अपने रूप के गर्व में उन्मत्त रहती है। ओछा आदमी ऐश्वर्य पाकर इतरा जाता है।

ग़ोर में छोटे-बड़े सब बराबर

सब मिट्टी हो जाते हैं।

ग़ोर=कब्र।

ग़ोर में पांव लटकाए बैठी है

मरने को है।

गोरी का जोबन चुटकियों में

(1) रूपवती स्त्री का यौवन छेड़छाड़ में ही खत्म हुआ जा रहा है।

(2) किसी का यौवन हमेशा नहीं रहता। देखते-देखते समाप्त हो जाता है।

(3) अच्छी चीज थोड़ी-थोड़ी करके ही खत्म हो जाती है।

(अंगूठे और पास की उंगली से किसी चीज को पकड़ना चुटकी भरना या लेना कहलाता है। सुंदर लड़कियों को सब कोई दुलार से चुटकी लेता है। किसी वस्तु की थोड़ी मात्रा को भी चुटकी कहते हैं। फिर 'चुटकियों में' एक मुहावरा भी है, जिसका अर्थ होता है शीघ्र, आनन-फानन। कहावत को इन तीनों अर्थों में देखने की आवश्यकता है।)

गोरी तेरे संग में, गई उमरिया बीत।
अब चाली संग छोड़के, यह ना रीत पिरीत।

मरणासन्न व्यक्ति का अपनी आत्मा से कहना है। शब्दार्थ स्पष्ट ही है।

गोरी मत कर गोरे रंग का गुमान,
यह है कोई दिन का मेहमान।
रूप और यौवन का गर्व नहीं करना चाहिए। वह क्षणभंगुर है।

गोरे चमड़े पर न जा, वह ही छछूंदर से है बदतर
वेश्याओं से बचे रहने के लिए लड़के को सीख।

गोयठा जले गोबर हंसे
कंडे को जलता देखकर गोबर हंसता है। वह भूल जाता है कि अब उसकी भी बारी आएगी। मूर्ख के लिए क.।

गोला बारूद कहीं जाए, तलब से काम
आलसी या कृतघ्न नौकर के लिए क.।
तलब=वेतन
(तलब के स्थान पर 'धमाका' शब्द का भी प्रयोग करते हैं।)

गोश्त खाए गोश्त बढ़े, घी खाये बल होय।
साग खाए ओझ बढ़े, तो बल कहां से होय।
मांस खाने से मांस बढ़ता है, घी खाने से बल बढ़ता है और साग खाने से पेट बढ़ता है, बल नहीं होता।

गोश्त खाए गोश्त बढ़े, साग खाए ओझरी
दे. ऊ.।

गोश्त खा लेते हैं हड्डियां फेंक देते हैं
जो चीज हमें अच्छी लगे वही लेना चाहिए।

गोश्त नाखून से कहीं जुदा होता है
आपस में रिश्ते नहीं टूटते।

गौरा रुठेगी तो अपना सुहाग लेगी, भाग तो न लेगी
अपनी आत्मनिर्भरता प्रकट करने के लिए एक ऐसे व्यक्ति का कहना, जिसका मालिक या आश्रयदाता उससे अप्रसन्न हो गया हो, और अलग कर देने की धमकी दे रहा हो।
गौरा=पार्वती। यहां अभिप्राय देवी से है।
सुहाग=भेंट।
भाग=भाग्य।

ग्रह अपना फल कर ही जाते हैं
फलित ज्योतिष में विश्वास रखने वाले का कथन।

ग्वार खाए गंवार
स्पष्ट।
(ग्वार की फलियों की तरकारी बनती है और दाल भी होती है।)

ग्वालिन अपने दही को खट्टा नहीं कहती
कोई अपनी चीज को बुरा नहीं बताता।

ग्वाले की दही, महतो की भेंट
गरीब की चीज बड़े हड़पते हैं।
महतो=गांव का ज़मींदार या बड़ा।

घ

घटत छिन-छिन, बढ़त पलपल, जात न लागत बार।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सपना है संसार।
स्पष्ट।

घड़ी भर की बेशरमी, सारे दिन का आधार
(1) संकोच छोड़कर किसी को किसी काम के लिए नाहीं कर देने से बहुत आराम रहता है।
(2) वेश्याओं के लिए भी क.।
('आधार' की जगह 'आराम' का प्रयोग भी कहा. में करते हैं।)

घड़ी में औलिया, घड़ी में भूत
जिसकी मानसिक स्थिति घड़ी-घड़ी बदलती रहे, उसके लिए क.।
औलिया=संत।

घड़ी में गांव जले, नौ घड़ी भद्रा, (हिं.)
गांव में आग लग गई है, पर नौ घड़ी तक भद्रा नक्षत्र है, जिसमें कोई काम नहीं किया जाता। इसलिए अब आग कैसे बुझे?
आवश्यक कार्य के लिए टालमटोल करने पर क.। ज्योतिषियों पर व्यंग्य भी कहावत में है। वे हर काम शुभ घड़ी में ही करने को कहते हैं।
पाठा.–घड़ी में घर...।

घड़ी में घड़ियाल है
बस, घंटा बजने ही वाला है। मतलब, समय तेजी से बीत रहा है। कब क्या हो, पता नहीं।
घड़ियाल लोहे या कांसे के उस मोटे पत्तल को कहते हैं, जो समय बताने के लिए बजाया जाता है।

घड़ी में तोला, घड़ी में माशा
जिसका चित्त ठिकाने न हो, ऐसे व्यक्ति के लिए क.।

घड़े में घड़ा नहीं भरा जाता, (व्यं.)
खाली घड़े को तो कुएं से ही भरकर लाया जाना चाहिए, यदि एक खाली बर्तन को दूसरे बर्तन की चीज से भर दिया, तो उससे लाभ क्या हुआ ? एक बर्तन तो खाली रहेगा ही।

घप घोड़ा, रूठा चाकर, इनका इतबार नहीं
सवारी में न निकला हुआ घोड़ा और नाराज नौकर, ये मौके पर धोखा देते हैं।

घपे की मेरी, तवे की तेरी
जो आग पर नीचे सिंक रही है, वह मेरी, और तवे की तेरी। स्वार्थी के लिए क.।

घर आई लक्ष्मी को लात मारना, (हि.)
अनायास मिलते हुए धन या मिलती हुई सुख-सुविधा को छोड़ना।

घर आया नाग न पूजे, बांबी पूजन जाय, (हि.)
कोई काम जब बहुत आसानी से हो रहा हो, तब न करके बाद में उसके लिए कष्ट उठाना।

घर आए कुत्ते को भी नहीं निकालते
(1) घर आए आदमी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए।
(2) मौके पर कोई आ जाए, तो उसे आश्रय देना चाहिए।

घर आए बैरी को भी न मारिए
स्पष्ट।

घर कर, घर कर, सत्तर बला सिर कर
घर-गृहस्थी एक जंजाल है।

घर का आटा कौन गीला करे
घर की चीज कौन बिगाड़े?

घर का और दिल का भेद हरेक के सामने न कहे
स्पष्ट।

घर का घुरवाहा कर दिया
घर का सत्यानाश कर दिया।
घुरवाहा=घूरा।

घर काज, बहू गींदों को, (स्त्रि.)
मौके पर ग़ायब हो जाना।
(फैलन ने गींदों का अर्थ आंगन किया है। 'घर में काम और बहू आंगन में।')

घर का जोगी जोगना, आन गांव का सिद्ध, (हिं.)
घर के आदमी की क़द्र नहीं होती।

घर का भेद जब ही पाया, चौक पूरन को ढकना आया, (पू.)
घर की हालत का पता उसी समय चल गया जब चौक पूरने के लिए मिट्टी के सकोरे में आटा आया। आदमी के रहन-सहन और व्यवहार से उसकी आर्थिक स्थिति का ज्ञान हो जाता है।

घर का भेदी लंका ढावे, (हि.)
आपस की फूट से घर का नाश हो जाता है। राम ने जब लंका पर चढ़ाई की, तो रावण का भाई विभीषण उनसे जाकर मिल गया था। तभी लंका का नाश हुआ।

घर की आधी भली, बाहर की सारी कुच्छ नहीं
(1) अपने पास जो कुछ हो उसी में गुजर करनी चाहिए, दूसरे पर निर्भर करना ठीक नहीं।
(2) ऐसे निकम्मे व्यक्ति का कथन भी हो सकता है, जो बाहर जाकर परिश्रम नहीं करना चाहता।

घर की पुटकी, बासी साग
बहुत शेख़ी मारने वाले के लिए क.। घर में चुटकी भर आटा और बासी साग के सिवा कुछ नहीं, फिर भी बात बनाते हैं।

घर की बला घर ही में
घर की मुसीबत घर में ही रही।
(कुछ जातियों में बड़े या छोटे भाई की विधवा से ब्याह कर लेने की प्रथा प्रचलित है। उसी से मतलब है।)

घर की बिल्ली और घर ही में शिकार
जब घर का ही कोई आदमी या अपने आश्रित रहने वाला व्यक्ति धोखा दे, तब क.।

घर की बीबी हांडनी, घर कुत्तों जोग, (स्त्रि.)
जिस घर की स्त्री हमेशा बाहर घूमती रहती है, वह घर बर्बाद हो जाता है।

घर की मुरगी दाल बराबर
घर की चीज की क़द्र नहीं होती।

घर की मूंछें ही मूंछें हैं
किसी स्त्री का अपने निकम्मे पति के संबंध में कहना कि 'बस शेख़ी मारते हैं काम कुछ नहीं करते।'

घर के खीर खायें और देवता भला मानें, (हिं.)
देवता के नाम से हम स्वयं ही खीर-पूड़ी खाते हैं, और चाहते यह हैं कि उससे देवता प्रसन्न हो जाएं।

घर के जले बन गए, और बन में लागी आग।
घर बिचारा क्या करे, जो कर्मों लागी आग।
बहुत प्रयत्न करने पर भी जव कोई आदमी सफल-मनोरथ नहीं होता, तब.।
('घर के जले' के स्थान पर प्र.पा.—'घर के दाहे' है।)

घर के पीरों को तेल का मलीदा, (मु.)
जब घर वालों की अपेक्षा बाहर के लोगों के साथ अधिक अच्छा वर्ताव किया जाए, तव क.।

घर के रोवें, बाहर के खाएं, दुआ देत कलंदर जाएं
घर के लोगों को न पूछना, और बाहर वालों का आदर-सत्कार करना।

घर के ही मर्द हैं
ऐसे आदमी के लिए, जो काम-धंधा कुछ नहीं करता, और व्यर्थ स्त्री पर रौब जमाया करता है।

घर खीर तो बाहर भी खीर
(1) जो घर में अच्छा खाते हैं, उन्हें बाहर भी अच्छा खाने को मिलता है।
(2) दूसरों को जितना अच्छा खिलाओगे, उतना ही अच्छा वे तुम्हें भी खिलाएंगे।
(3) घर में अगर अच्छा खाने को मिलता है, तो बाहर भी मिले, यह आवश्यक नहीं।

घर खोदे, ईंधन बहुत
घर खोदने से काठ-कबाड़ बहुत मिल जाता है।
घर को बर्बाद करने पर ही कोई उतारू हो, तो उसके लिए खर्च की क्या कमी ?

घर घर का, साथ नर का
किराए के मकान में न रहे, स्त्री का साथ न करे।

घर-घर के जाले बुहारती फिरती है
(1) जो औरत घर-घर फिरती रहे।
(2) जो हमेशा घर बदलती रहे। या
(3) जो हरेक की खुशामद करती फिरे; उसके लिए क.।

घर-घर पीत न कीजे तो गांव-गांव तो कीजे
अगर हर घर में एक मित्र न हो सके, तो हर गांव में तो एक मित्र होना ही चाहिए।

घर-घर यही मटियाले चूल्हे हैं, (स्त्रि.)
सब घरों का एक-सा हाल है। सब जगह कुछ न कुछ परेशानियां हैं (घरोघर मातीच्या चूला। म.)।

घर घर वाली से
स्पष्ट। (सं.)—गृहिणी गृहमुच्यते।

घर-घर यही लेखा, (स्त्रि.)
दे.—घर घर यही मटियाले...।
(पूरी कहावत इस प्रकार है—ऊंचे चढ़ के देखा, घर-घर में ही लेखा। मराठी में भी है—घरोघरी एकच परी, न सांगेल तीच बरी।)

घर-घर शादी, घर-घर ग़म
सभी घरों में दुख-सुख लगा है।

घर-घर शादी, घर-घर चैन
सब जगह अमन-चैन।
अच्छे शासन के लिए भी क.।

घर, घोड़ा, गाड़ी, इन तीनों के दाम खड़ाखड़ी
घर, घोड़ा और गाड़ी इन तीनों के दाम नक़द ले लेना चाहिए। अथवा ये तीनों चीजें अपने स्थान पर ही बिकती हैं, यानी जहां वे देखी जा सकें।

घर घोड़ा, नखास मोल
घोड़ा तो घर में है, ओर बाजार में उसका मोल करते फिरते हैं। जब कोई बिना माल दिखाए ही उसके दाम कहे, तब क.।

घर चैन तो बाहर चैन
घर में आदमी को सुख है, तो बाहर भी मिलता है।

घर छोड़ हज़ीरा क़ायम, (स्त्रि.)
घर छोड़ घूरे पर रहना। मूर्ख के लिए क.।

घर जल गया, तब चूड़ियां पूर्छीं, (स्त्रि.)
काम बिगड़ जाने पर जब कोई सुध ले, तब क.।
(कथा है कि किसी स्त्री ने नई चूड़ियां पहनीं। वह चाहती थी कि लोग उन्हें देखें और प्रशंसा करें। किसी का ध्यान उनकी ओर न जाते देख एक दिन उसने घर में आग लगा दी। लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई। जब उसने हाथ उठाकर जलते हुए घर की ओर इशारा किया, तो किसी की नज़र चूड़ियों पर पड़ गयी। उसने प्रश्न किया—अरे, चूड़ियां तुमने कब बनवाईं। तब स्त्री ने उत्तर दिया कि 'यह प्रश्न अगर तुमने पहले ही पूछ लिया होता, तो मैं अपने घर में आग क्यों लगाती?')

घर जले, घूर बतावे
घर तो जल रहा है, कहता है धुआं है।
अपने-आपको या दूसरे को धोखे में रखना।

घर जले, गुंडा तापें
किसी का नुकसान हो रहा हो, और दूसरे फालतू आदमी उससे लाभ उठाएं, तब क.।

घर जले तो जले, घाल न बिगड़े
पुरातन पंथियों के लिए क.।

घर तंग, बहू जबरजंग
(1) मोटी-ताज़ी स्त्री के लिए मज़ाक में कहते हैं।
(2) जब किसी गरीब घर में कोई खर्चीली औरत आ जाए, तब भी कह सकते हैं।

घर न वर, (स्त्रि.)
लड़की के लिए क. कि उसके लिए दो में से कोई चीज अच्छी नहीं मिल रही है, न घर, न वर।

घर न बार, मियां मुहल्लेदार, (स्त्रि.)
शेख़ीबाज़ के लिए क.।

घर फूंककर बिर्रा मारना, (पू.)
थोड़े से लाभ के लिए बड़ा नुकसान करना। घर में जब बर्र छत्ता बना लेती है, तो उसे भगाने के लिए छत्ते में आग लगा देते हैं।

घर फूंक तमाशा देखना
(1) कोरी दिखावट के लिए किसी काम में बेहिसाब पैसा खर्च कर देना।
(2) शान-शौकत में औकात से बाहर खर्च करना।

घर फूटे, गंवार लूटे
घर की आपसी लड़ाई से दूसरे फ़ायदा उठते हैं।

घरबार तुम्हारा, कोठी-कुठले के हाथ न लगाना (स्त्रि.)
झूठा प्रेम दिखाना। दिखावटी आदर-सत्कार।

घर बैठल आधा भला, (पू.)
घर बैठे थोड़ा भी मिले, तो अच्छा। क्योंकि बाहर जाकर रहने से खर्च जो अधिक होता है।

घर भर हंसिया न निगलने का, न थूकने का
यह अशुद्ध है। (दे.—गुड़ भरा हंसिया।)

घर भाड़े, हाट भाड़े, पूंजी को लगे ब्याज;
मुनीम बैठा रोटियां झाड़े, दिवाला झाड़े काईं लाज। (व्यं.)
घर भी किराए पर, दूकान भी किराए पर, पूंजी पर ब्याज चढ़ रहा है, मुनीम मुफ्त की तनख़्वाह पा रहा है, तब दिवाला निकालने में शर्म किस बात की? बिना पूंजी के रोज़गार करने वाले के लिए क.।

घर भी बैठो, और जान भी खाओ, (स्त्रि.)
किसी स्त्री का अपने निकम्मे लड़के या निखट्टू पति से क.।

घर मिलता है तो वर नहीं मिलता; वर मिलता, तो घर नहीं मिलता, (स्त्रि.)
लड़की के विवाह का कहीं ठीक न पड़ना।

घर में आई जोय, टेढ़ी पगड़ी सीधी होय, (स्त्रि.)
घर में स्त्री के आ जाने पर सब अकड़ निकल जाती है, क्योंकि गृहस्थी का बोझ सिर पर आ जाता है। टेढ़ी पगड़ी गुंडे ही बांधते हैं। इसलिए कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि गृहस्थ बन जाने पर आदमी की इज्जत बढ़ जाती है।

घर में खरच नहीं, औंठी पहिरती पुखराज जड़ल सौख डाहाये, (पू. स्त्रि.)
घर में खर्च के लिए पैसा नहीं, फिर भी पुखराज-जड़ी अंगूठी पहनने का शौक चर्राया है।

घर में खरच ना, ड्योढ़ी पर नाच, (पू.)
झूठी शान दिखाना।
(म.—घरांत नाहीं दाणा व मला श्रीमंत म्हणा।)

घर में खांये नहीं, अटारी पर धुआं, (भो.)
घर में खाने को नहीं, फिर भी अटारी पर धुआं कर रहे हैं, जिससे कोई समझे कि भोजन बन रहा है!

घर में घर, लड़ाई का डर, (स्त्रि.)
एक ही घर में अगर दो परिवार रहते हों, तो उनमें लड़ाई का डर रहता है।

घर में चने का चून नहीं, गेहूं की दो पो लइयो
झूठी शान दिखाने वाले के लिए क.।

घर में चिराग़ नहीं, बाहर मशाल
झूठी तड़क-भड़क दिखाना।

घर में जोरू का नाम बहू बेगम रख लो
अपने घर में चाहे जो कर लो।

घर में जो शहद मिले तो काहे बन को जाय
अगर घर बैठे सब चीज मिल जाए, तो उसके लिए कोई कष्ट क्यों उठाए?

घर में दवा 'हाय हम मरे'
घर में चीज होते हुए भी उसके लिए इधर-उधर भटकते फिरना। एक मूर्खतापूर्ण काम।

घर में दिया, तो मस्जिद में दिया, (स्त्रि.)
पहले अपना घर संभालना चाहिए, फिर बाहर।

घर में दिया न बाती, मुंडो फिरें इतराती
झूठी शान दिखाने पर क.।
मुंडो=ऐसी स्त्री, जिसका सिर घुटा हो। एक गाली।

घर में देखो चलनी न छाज, बाहर मियां तीरंदाज़, (स्त्रि.)
झूठी शान दिखाने वाले पर व्यंग्य।

घर में धान न पान, बीबी को बड़ा गुमान, (स्त्रि.)
गरीब होते हुए भी घमंड करना।

घर में नहीं तागा, अलबेला मांगे पागा, (ग्रा.)
स्पष्ट।
पागा = पगड़ी

घर में नहीं दाने, बुढ़िया चली भुनाने
स्पष्ट।
(ऊपर की पांचों कहावतों का एक ही अभिप्राय है।)

घर में नहीं बूर, बेटा मांगे मोतीचूर, (स्त्रि.)
जब कोई ऐसी वस्तु मांगे, जिसके देने की सामर्थ्य न हो, तब क.।
बूर=शक्कर।

घर में पक्के चूहे और बाहर कहे 'पय'
झूठा दिखावा करना। घर में चूहे पके हैं, कह रहे हैं, दूध उबल रहा है।

घर में बिलौटा बाघ
घर में सब शेर हो जाते हैं।

घर में भूनी भांग नहीं, और नेवते साठ, (स्त्रि.)
शक्ति से बाहर काम करना।

घर में रहे न तीरथ गए, मूड़ मुड़ाकर जोगी भये
जीवन का कोई ध्येय पूरा न कर पाना। एक काम छोड़कर दूसरा करना, उसमें भी असफल रहना।

घर में रहे ना तीरथ गए, मूंड़ मुड़ा फजीहत भये
दे. ऊ.।

घर में हल न बल्दया, मांगे ईख हल्दया, (ग्रा.)
घर में न तो हल है न बैल, फिर भी हरवाहा खेत जुताई की मजदूरी में ईख मांगता है। जब किसी से कभी कोई काम ही न लिया गया हो, फिर भी वह आकर झूठ-मूठ ही मजदूरी मांगे, तब.।

घर यार के, पूत भतार के
घर तो यारों का है, और लड़का पति का। दुश्चरित्रा के लिए क.।

घर रहे घर की खाय, बाहर रहे बाहर को खाय
घर में रहता है, तो घर वालों को परेशान करता है, बाहर रहता है, तो बाहर वालों को। निठल्ला आदमी।

घर वाले का एक घर, निघरे के सौ घर
घर वाले को घर की चिंता रहती है। घर छोड़कर जा नहीं सकता। पर घरहीन स्वतंत्र रहता है। कहीं भी जाकर रह सकता है।

घर सुख तो बाहर चैन
दे.–घर चैन तो...।

घर से खोयं, तो आंखें होयं
जब आदमी का घर से कुछ जाता है, तब उसकी आंखें खुलती हैं। नुकसान होने पर होश आता है।

घर से बाहर भला, (स्त्रि.)
(1) निकम्मे या लड़ाकू पति के लिए क.।
(2) घर से बाहर इसलिए भी अच्छा कि आदमी चिंताओं से मुक्त रहता है और काम-धंधा भी कर सकता है। यह अर्थ भी हो सकता है।

घर ही में वैद, मरे कैसे?
घर में होशियार आदमी के रहते हुए भी काम बिगड़ जाए, तब क.।

घाई की मेरी, तवे की तेरी, (स्त्रि.)
स्वार्थी के लिए क.।
दे.–घये की मेरी...।

घाट-घाट का पानी पिया है
ऐसे मनुष्य के लिए क., जिसने बहुत कुछ भरा-भुगता हो।

घायं-घायं तोरा, मन हां बाजे मोरा, (स्त्रि.)
भीतर से वह तेरा बना रहे, पर लोग तो उसे मेरा ही जानते हैं।
किसी ऐसी स्त्री का, जिसके पति का दूसरी स्त्री से संबंध है, उससे ताना मार कर कहना।

घायल की गत घायल जाने
जिस पर बीतती है, वही जानता है।

घास खाए दिन कटे, तो सब कोई खाय
जिस चीज की आवश्यकता होती है उसी से वह पूरी होती है।

घास में क्या सांप नहीं फिरता?
अच्छी जगह क्या दुष्ट नहीं होते?

घी कहां गया? खिचड़ी में; खिचड़ी कहां गई? प्यारों के पेट में, (स्त्रि.)
ऐसी स्त्री के लिए कही गई है, जिसका पर पुरुष से प्रेम है और जो उसे घर का माल-टाल खिलाती रहती है।
जब कोई वस्तु स्वयं अपने काम आ जाए, तब भी क.।

घी का लड्डू टेढ़ा भी भला
(1) स्वभाव से जो वस्तु अच्छी है, वह अच्छी ही रहेगी, फिर देखने में कैसी ही क्यों न हो।
(2) प्रायः लड़के के लिए क. कि वह कैसा ही हो, पर है तो अपना लड़का ही।

घी के कुप्पे से जा लगा है
जब किसी पैसेवाले से किसी की मैत्री या संबंध हो जाए, तब क.।

घी-खिचड़ी में दाव है
घर की मिल्कियत चाहते हैं। जब कोई मनुष्य, जितना उसे मिलना चाहिए, उतना पा लेने के पश्चात भी और आगे अपना अधिकार जताए, तब क.।

घी-खिचड़ी हो रहे हैं
दोनों एक हो रहे हैं।

घी गिर गया, मुझे रूखी भाती है
झेंप मिटाने के लिए बहाना।

घी जाट का, तेल हाट का
घी गांव का और तेल दूकान का अच्छा होता है, क्योंकि गांव का घी ताजा होता है और दूकान पर तेल कई दिन का होने के कारण साफ मिलता है।

घी भी खाओ और पगड़ी भी रखो
खर्च भी करो और इज्जत भी बनाए रखो।

घी संवारे काम, बड़ी बहू का नाम, (स्त्रि.)
साधन। काम तो पैसे से ही होता है, यश करने वाले को मिलता है।

घुटने नवेंगे तो पेट को ही
घर का आदमी घर वालों की तरफ ही झुकता है।

घूंसों में उधार क्या?
घूंसे का बदला तुरंत दिया जाता है।

घोंघे में पकाया, सीपी में खाया
गरीबी की हालत में रहना।

घोड़ा और फोड़ा, जितना रोलों उतना ही बढ़े
घोड़ा और फोड़ा, इनको जितना ही सहलाओ उतना ही

बढ़ते हैं। मतलब, फोड़े को सहलाना ठीक नहीं। यहां घोड़े के संबंध में सहलाने का अर्थ खुजौरा करने से है।

घोड़ा चाहिए बिदायगी को, जरा फिरते से आइयो, (हि.)
दूल्हा के लिए घोड़ा अभी चाहिए और कहते यह हैं कि थोड़ी देर में आकर ले जाना। जरूरत पर चीज न दी जाए और उसके लिए टाल दिया जाय, तब क.। पाठा.—घोड़ा चाहिए बिन्नायकी को...।

घोड़े का गिरा संभलता है, नजरों का गिरा नहीं संभलता
गई हुई प्रतिष्ठा नहीं लौटती।

घोड़े की दुम बढ़ेगी तो अपनी ही मक्खियां हिलाएगा
जब किसी एक व्यक्ति की उन्नति से दूसरों को कोई हित साधन होने की संभावना न हो, तब क.।

घोड़े की सवारी चलता जनाज़ा
(1) घोड़े पर धीरे-धीरे चलना चाहिए, जैसे जनाज़ा चलता है।
(2) घोड़े की सवारी खतरनाक है। गिरकर आदमी मर सकता है।
जनाज़ा=अर्थी।

घोड़े की हंसी और बालक का दुख जान नहीं पड़ता
क्योंकि ये बोल नहीं सकते।

घोड़े को लात, आदमी को बात
घोड़े को ऐड़ से काबू में किया जा सकता है और आदमी को बात से।

घोड़े-घोड़े लड़ें, मोची का जीन टूटे
बड़ों की लड़ाई में छोटों की हानि होती है।

घोड़े पर सिर से कफ़न बांध के बैठना चाहिए
इसलिए कि गिरकर मरने का डर रहता है।

घोड़े बेचकर सोए हैं
बेफिक्र हैं।

घोड़े भैंसे की लाग
दो एक-से व्यक्तियों की टक्कर।

घोड़े मर गए, गधों का राज आया
योग्य व्यक्तियों के न रहने पर मूर्खों की बन आती है।

घोड़ों को घर कितनी दूर?
क्योंकि घर की ओर वह तेजी से चलता है। काम करने वाले को काम में देर नहीं लगती।

च

चंचल नार की चाल छिपे नहीं, नीच छिपे न बड़प्पन पाय
जोगी का भेक नीक धरो, कोई करम छिपे ना भभूत रमाय।
स्पष्ट।
भेक=भेष।

चंचल नार छैल से लड़ी, खन अंदर, खन बाहर खड़ी
दुश्चरित्रा के संबंध में।
खन=क्षण।

'चंडी, घर लीपेगी?' 'नहीं निगोड़े, खोदूंगी।'
'चंडी, घर खोदेगी', 'नहीं, निगोड़े लीपूंगी।' (स्त्रि.)
ऐसी कलह-प्रिय औरत के लिए कहा गया है, जो हमेशा उलटा काम करती है। उससे घर लीपने को कहा गया, तो कहती है, नहीं, खोदूंगी। जब कहा गया कि अच्छा खोद डाल, तो कहती है, लीपूंगी।

चंदग्रहन में चक्की राहे का क्या काम?
चंद्रग्रहण के मेले में चक्की टांकने वाले की क्या आवश्यकता? उसकी जरूरत तो घर पर ही पड़ती है, जहां चक्की है।

चंदन की चुटकी, ना गाड़ी भर काठ
अच्छी चीज थोड़ी ही अच्छी होती है। निकम्मी चीज़ बहुत-सी भी हो, तो क्या लाभ?

चंदन पड़ा चमार के, नित उठ कूटे चाम।
रो-रो चंदन महि फिरे, पड़ा नीच से काम।
स्पष्ट।
महि=पृथ्वी।

चंदे आब, चंदे महताब
चंद्रमा की तरह सुंदर, सूर्य की तरह उज्ज्वल।
(किसी रूपवती की प्रशंसा में)

चंपा के दस फूल, चमेली की एक कली।
मूरख की सारी रात, चातुर की एक घड़ी।
चंपा के दस फूलों के मुकाबले में चमेली की एक कली बहुत है। मूर्ख का सारी रात का काम चतुर की एक घड़ी के काम के बराबर होता है।

चंबेली चाव में आई, बखत्यारे साथ लाई।
चमेली लाड़ में आई, तो घर भर को (दावत में) लेकर आई। जब कोई अपने थोड़े-से आदर का लाभ उठाने लगे, तब क.।

चंबेली चाल में आई, बख्शावर रेवड़ियां बांटे, (स्त्रि.)
चमेली को चाव लगा, तो रेवड़ियों का प्रसाद बांटने लगी। जब कोई सूम खुशी में बाहर खर्च करने लगे, तब क.।
बख्शाव रेवड़ियां = मनौती की रेवड़ियां।

चकमक दीदा, खाय मलीदा, (स्त्रि.)
दुराचारिणी के लिए क.।

चकरया चाकरी करके आप अपने हाथ बिकता है
स्पष्ट।
चकरया=चाकरी करने वाला।

चकवा चकवी दो जने, इन मत मारो कोय।
यह मारे करतार के, रैन बिछोहा होय।
सताए हुए को नहीं सताना चाहिए।
(कवियों का विश्वास है कि चकवा-चकवी का रात्रि के समय वियोग हो जाता है। एक नदी या तालाब के इस पार रहता है तो दूसरा उस पार। वहीं से वे एक-दूसरे को करुण स्वर में पुकारा करते हैं।)

चक्की तले घर तेरा, निकल सास, घर मेरा, (स्त्रि.)
किसी उद्धत बहू का कहना।

चक्की में कौर डालोगे तो चून पाओगे, (स्त्रि.)
पैसा खर्च करने से ही कुछ मिलता है।

चख डाल माल धन को, कौड़ी न रख कफ़न को;
जिसने दिया है तन को, देगा वही कफ़न को।
फक्कड़ का कहना।

चचा चोर, भतीजा काज़ी
(1) घर का एक आदमी अच्छा, दूसरा बुरा।
(2) न्याय में पक्षपात का डर हो, तब कहा जाता है।

चचा बना के छोड़ूंगा
मतलब, हम आपकी अक्ल दुरुस्त कर देंगे। व्यंग्य में क.।

चचेरे, ममेरे बड़तले बहुतेरे
बड़े आदमियों के बहुत रिश्तेदार बन जाते हैं।

चट मंगनी, पट ब्याह; टूट गई टंगड़ी, रह गया ब्याह
होनहार के लिए क.।

चटोरा कुत्ता, अलोनी सिल
चटोरे आदमी को जो मिल जाए, वही बहुत है। अथवा चटोरे आदमी को जब कहीं निराश होना पड़े तब भी कह सकते हैं।

चटोरा खाये अपना घर, बटोरा खाये दोऊ घर
चटोरा तो अपना ही घर खाता है, पर मुफ़्तखोरा अपना और पराया, दोनों ही घर खा लेता है।

चटोरी ज़बान, दौलत की हान
चटोरा आदमी घर बर्बाद कर देता है।

चढ़ जा बेटा सूली पर, भगवान भली करेंगे
(1) बैठे-ठाले जब कोई अपने को किसी मुसीबत में डाल दे, तब उससे व्यंग्य में क.।
(2) जब कोई आदमी किसी को ऐसी सलाह दे, जो खतरे से भरी हो, तब भी (सलाह देने वाले से) क. कि आपको क्या, 'चढ़ जा बेटा...' मरेंगे तो हम।

चढ़ती कला, जागती जोत
देवी की ज्योति के लिए क.। आशीर्वाद भी है।

चढ़ती दरगाह
संत पुरुष के लिए कहते हैं कि वह चलती मस्जिद है।

चढ़ते बरसे आर्द्रा, उतरत बरसे हस्त।
कितना राजा डांड ले, रहे अनंद गृहस्त। (कृ.)
आर्द्रा नक्षत्र के आरंभ में और हस्त के अंत में यदि वर्षा हो, तो इतनी अच्छी पैदावार होती है कि राजा कितना ही दंड क्यों न ले, किसान को फिर भी लाभ रहता है।
(आर्द्रा वर्षा का नक्षत्र है। आषाढ़ में लगता है और हस्त क्वार में। डांड़ लेने से मतलब यहां लगान से है।)

चढ़ मार, गूलर पक्के
बढ़ो, हाथ मारो, यही मौका है।

चढ़ी कढ़ाई तेल न आया, तो कब आएगा? (स्त्रि.)
मौके पर कोई चीज न मिले तो कब मिलेगी?

चढ़ेगा सो गिरेगा
काम करने पर असफलता होती ही है।

चढ़े, पर न चढ़ आव; सिर दीखे न पांव
काम किया और कर नहीं जाना। अनाड़ीपन पर क.।

चना और चुगल मुंह लगा बुरा
चना खाने में और चुगल की बात भी सुनने में अच्छी लगती है; पर बाद में दोनों से ही कष्ट होता है।

चना और चुगल मुंह लगा छूटता नहीं
एक बार जब चना खाने और चुगल की बात सुनने की आदत पड़ जाती है, तो वह छूटती नहीं।
(नोट—चुगलखोर खुशामदी होता है और यहां चुगल की बात सुनने से ही अभिप्राय है।)

चना कहे, मेरी ऊंची नाक, एक घर दलिए, दो घर हांके।
जो खावे मेरा एक टूक, पानी पीवे सौ-सौ घूंट।
चना खाने से प्यास बहुत लगती है।
(यहां नाक के दो अर्थ हैं—(1) चने में जो नोक निकली रहती है वह। (2) इज़्ज़त। (मेरी ऊंची नाक अर्थात मेरी बड़ी इज़्ज़त है।)

चना मर्द नाज है
चना बहुत पुष्टिकर होता है।

चने का मारा मरता है
आदमी की जब मौत आती है, तो अत्यंत साधारण कारण से भी मर जाता है।

चने के साथ कहीं घुन न पिस जाए
बड़े के साथ कहीं ग़रीब की शामत न आ जाए।

चने चबाओ या शहनाई बजाओ
दो काम एक साथ नहीं किए जा सकते।

चने चिरौंजी हो गए, गेहूं हो गए दाख।
घर में गहने तीन हैं, चरखा, पीढ़ी, खाट। (स्त्रि.)
चने तो चिरौंजी की तरह अलभ्य हो गए हैं और गेहूं किशमिश की तरह। घर में अब तीन ही कीमती चीजें बची हैं—चरखा, पीढ़ी और खाट, और सब बिक गया। किसी ऐसे व्यक्ति की स्थिति का वर्णन, जो पहले अच्छी हालत में था, किंतु अब गरीब हो गया है।

चपनी भर पानी में डूब मरो।
मतलब तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

चपनी लिखकर सिर पर धरी,
निकल पड़ा या निकल पड़ी। (मु.,स्त्रि.,लो.वि.)
(लोगों का विश्वास है कि उक्त तुकबंदी को शेख़ फ़रीद के नाम के साथ एक चपनी पर लिखकर प्रसूति के सिर पर रख देने से शीघ्र प्रसव हो जाता है।)

चपरासी बे सताए नहीं रहते
कुछ लिए विना नहीं मानते।

चबोकड़ सो लबोकड़, (स्त्रि.)
वहुत बातूनी झूठा होता है।
चबोकड़=मुंह चलाने वाला, 'चाब' से बना है।
लबोकड़=लबरा, झूठा।

चमगीदड़ों के घर मेहमान आए, हम भी लटकें, तुम भी लटको
समाज जैसा करे, वैसा ही करो।

चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए
कंजूस के लिए क.।

चमड़े की ज़वान है, भूल-चूक हो ही जाती है
जब किसी के मुंह से कुछ-का-कुछ निकल जाए, तब क.।

चरसी यार किसके, दम लगाया खिसके
नशेबाज को अपने नशे से मतलब रहता है। दम लगाया और खिसक गए।

चर्बी छाई आंखों में तो नाचन लागी आंगन में
मदांध औरतों के लिए क.।
(आंखों में चर्बी छाना, एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है, बेशर्म बन जाना या गर्वोन्मत्त होना।)

चल चकहे, मेरे मुंह मत लग, (स्त्रि.)
मुझसे बात मत कर। (फटकार)

चल छांव, मैं आई हूं, जुमला पीर मनाई हूं, (स्त्रि.)
किसी वहुत नज़ाकत-पसंद औरत का कहना, जिसे रास्ता चलने में कठिनाई हो रही है। अपनी छाया से कहती है कि तू चल, मैं अभी आई । मैंने सब पीरों को मना रखा है। उनकी मदद से मैं बात की बात में तेरे पास पहुंच जाऊंगी।

चलत फिरत धन पैये, बैठे देगा कौन?
उद्यम से ही धन मिलता है, बैठे रहने से नहीं।

चलता फिरता ना माल, बैठा ऊ मर जाय, (पू.)
(1) परिश्रमी भूखा नहीं मरता, आलसी ही मरता है।
(2) होनहार के लिए भी क.।

चलती का नाम गाड़ी, गाड़ी का नाम उखड़ी
दुनिया के उलटे ढंग पर क.। जो चलती है, उसे तो गाड़ी कहते हैं और जो जमीन में गड़ी है, उसे उखड़ी।
(केवल 'चलती का नाम गाड़ी' भी कहते हैं जिसका अर्थ दूसरा होता है; यानी जिसकी चल जाए, वही सब कुछ है, बाकी टापा करें।)
उखड़ी=उखली।

चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना
चालू काम में विघ्न डालना।

चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय।
संसार की नश्वरता पर क.। धरती और आसमान के बीच में जो आएगा, उसे मरना ही होगा।

चलती में कौन कसर लगाता है?
हर आदमी अपने रोब और दबदबे से पूरा फ़ायदा उठाता है।

चलती हवा से लड़ती है
जो हर आदमी से बात-बात में लड़े। लड़ाकू स्त्री के लिए क.।

चलते चोर लंगोटी लाभ
चोर को भागते समय जो मिले वही बहुत। पाठा.—भागते चोर की लंगोटी भली।

चलते बैल के घूतड़ में लकड़ी करना
काम करते हुए आदमी को छेड़ना।

चलते हाथ-पांव उठा ले
ईश्वर से प्रार्थना करना, जिससे अशक्त होकर न मरे।

चलते हाथ-पांव सलूक कर लो
जीते-जी भलाई कर लो।

चल न सकूं, मेरा कूदन नाम
डींग हांकने वाले पर क.।

चलना भला न कोस का, बेटी भली न एक।
देना भला न बाप का, जो प्रभु राखे टेक।
सवारी का न होना, अकेली बेटी और पिता का ऋण, ये तीनों अच्छे नही।
(यह बंगला में भी है—चला भाल नय एक क्रोश, बेटी भला नय एक। भागा भाल नय बापेर काछे यदि विधि राखे टेक।)

चलना है, रहना नहीं, चलना बिस्वे बीस।
ऐसे सहज सुहाग पर, कौन गुंधावे सीस।
संसार में आकर जब एक दिन जाना ही है, तब सुख-भोग

के साधनों को इकट्ठा करने से क्या लाभ?

सहज सुहाग=थोड़ी देर का सुहाग।

चलनी चम्मा, घोड़ लगम्मा, कायथ गुलम्मा, ये तीनों नहीं कोई कम्मा।

चलनी का चमड़ा, घोड़े की लगाम, और नौकरी करने वाला कायस्थ, ये तीनों किसी काम के नहीं होते। यानी उनसे और कोई काम नहीं हो सकता।

चलनी दूसे सूप को, जिसमें बहत्तर छेद

जब कोई अपने बड़े ऐब न देखकर दूसरों के साधारण से ऐब देखता फिरे, तब क.।

(बंगला में भी है—'चालनी बले छूंच तोरे पोंदे केन छेद। आपन दोष देखे ना जार सर्व्वागेई बेंधा।')

चलनी में गाय दुहें, करमों को क्या दोष? (स्त्रि.)

जानबूझकर मूर्खतापूर्ण काम करके भाग्य को दोष देना। चलनी में गाय दुहने से तो सब दूध बाहर निकल ही जाएगा।

चल बसे जो लोग थे इस्लाम के, रह गए बाकी मुसलमान नाम के

स्पष्ट।

चल मरघट को लकड़ियां सस्ती हैं।

कंजूस से हंसी में क.।

चल मेरे चरखे चर्रखचूं, कहां की बुढ़िया, कहां का तू

अपने ही मन की कहे जाना, दूसरे की न सुनना।

(इसकी एक मनोरंजक कहानी है, जो अक्सर बच्चों को सुनाई जाती है—किसी जंगल में एक बुढ़िया शेर, चीता, भालू आदि हिंसक जंतुओं से घिर गई। जब वे उसे खाने को तैयार हुए, तो बुढ़िया बोली—अभी तो मैं बहुत दुबली हूं। अभी मैं अपनी लड़की के यहां जा रही हूं। तुम लोग कुछ दिनों ठहरो। जब मैं वहां से खा-पीकर खूब मोटी-ताजी होकर आ जाऊं, तब मुझे खा लेना। सब ने बुढ़िया की बात मान ली और उसे छोड़ दिया। बुढ़िया जब लौटी, तो अपने साथ एक चरखा लेती आई और उसी के अंदर बैठ गई। जानवर जब उससे कहते—आ बुढ़िया, अपना वादा पूरा कर। तो वह चरखे के भीतर से ही जवाब देती 'चल मेरे चरखे चर्रखचूं, कहां की बुढ़िया, कहां का तू।' यह सुनकर जानवरों ने समझा कि यह तो बुढ़िया नहीं, कुछ और मुसीबत है, और डर के मारे वहां से भाग गए। इस तरह बुढ़िया ने अपनी जान बचा ली। कहानी से शिक्षा यह मिलती है कि बल से बुद्धि बड़ी है।)

चला-चली का सौदा प्यारे, भला-भली कर लेओ

संसार में आकर एक दिन जाना है, कुछ भलाई कर लो।

चला-चली की राह में भला-भली कर लेओ

दे. ऊ.

चली चली आई सौत के पीहर, (स्त्रि.)

जब कोई जानबूझकर बरबादी के रास्ते पर चले, तब क.।

(सौत के मायके जाने पर आदर-सत्कार तो दूर रहा, गालियां सुनने को मिल सकती हैं और मार भी पड़ सकती है।)

चली चली बी माखों आईं

जब कोई अफवाह उड़ते-उड़ते किसी जगह पहुंचे, तब क.।

चलै न जाने, आंगन टेढ़ा, (स्त्रि.)

जब किसी काम को करने की युक्ति न जानता हो, पर उसके लिए साज-सरंजाम को दोष दे, तब क.।

पाठा.—नाच न जाने आंगन टेढ़ा।

चलै रांड़ का चरखा और चलै बुरे का पेट

गरीब रांड़ पेट के लिए चरखा चलाया करती है और बुरे आदमी का कुपच के कारण पेट चलता रहता है। जब कोई किसी से चलने के लिए कहता है, और वह नहीं जाना चाहता, तब वह प्रायः हंसी में उपर्युक्त वाक्य कहकर टालता है।

चलौ न जाए, गठरी मुड़ायछो, (पू., स्त्रि.)

चलते बनता नहीं, ऊपर से गठरी सिर पर।

शक्ति से बाहर काम करने पर क.।

चलौ सखी चलिए वहां, जहां बसें ब्रजराज।

गोरस बेचत हरि मिलें, एक पंथ दो काज।, (स्त्रि.)

स्पष्ट।

(इस दोहे की अंतिम अर्द्धाली 'एक पंथ...' ही कहावत के रूप में प्रयुक्त होती है।)

चश्म बद्दूर, आंखें मोतीचूर

इन मोती जैसी सुंदर आंखों पर किसी की बुरी नजर न पड़े, एक तरह की शुभकामना।

चश्मे या रोशन, दिले मा खुश, (फा.)

आंखों की रोशनी, दिल की खुशी। लड़के के लिए क.।

चसका लगा बुरा

किसी चीज की लत बुरी होती है।

चसका दिन दस का, पराया खसम किसका?

पराई चीज अपनी नहीं हो सकती।

चहार चीज अस्त तोहफ-ए मुल्तान; गर्द, गरमा, गदा ओ गोरिस्तान, (फा.)
मुलतान की चार चीजें मशहूर है—धूल, गरमी, फ़कीर और क़ब्रें।

चहार शम्बह नदारद, (फा.)
चहार शम्बह फारसी में बुधवार को कहते हैं और हिंदी में बुध (बुद्धि) अक्ल को कहते हैं। जब किसी को व्यंग्य में मूर्ख बनाना होता है, तब क.।

चांद आसमान चढ़ा सबने देखा
वैभव पर सबकी नजर जाती है। बढ़ते हुए को सब देखते हैं।

चांद का टुकड़ा
सुंदर वस्तु।

चांद को गहन लग गया
जब किसी सच्चरित्र की कीर्ति में धब्बा लगे, तब क.। जब कोई रूपवती लड़की किसी कुरूप से व्याही जाए, तब भी क.।

चांद चढ़े कुल आलम देखे
चंद्रमा का उदय होने पर सारा संसार देखता है। बात खुल जाने पर सबको ज्ञात हो ही जाती है।

चांदनी मार गई।
घोड़े के लिए कहते हैं, जिसकी पीठ कमजोर हो।

चांदनी में फस्त खुलवाना मना है
नस छेदकर शरीर के दूषित रक्त को बाहर निकलवाने को फस्त खुलवाना करते हैं। यह काम शुक्ल पक्ष में नहीं करवाया जाना चाहिए।

चांदनी में शहद नहीं होता
शुक्ल पक्ष में मधुमक्खियां मधु इकट्ठा नहीं करतीं। एक लोक-विश्वास।

चांद ने खेत किया
एक मुहा.,—चंद्रमा उदय हुआ।

चांद पै खाक डालने से नहीं छिपता
सज्जनों की सज्जनता को उनकी बुराई करने से कोई आंच नहीं आती।

चांद में मैल नहीं !
(1) चांद एक साफ चीज है।
(2) खोपड़ी साफ यानी गंजा है।

चांदी का चश्मा लगाते हैं।
रिश्वत लेने वाले के लिए क.।

चांदी का जूता सिर पर
किसी को रिश्वत देने पर क.।
(मराठी में है—चांदीचा जोड़ा लोखंडास नरम करतो।)

चाक को तकदीर के मुमकिन नहीं करता रफ़ू। सूज़ने तदबीर सारी उम्र गो सीती रहे।
भाग्य के छेद को बंद करना संभव नहीं। तदबीर की सूई से तुम चाहे सारी उम्र उसे सीते रहो।

चाक़-चौबंद, टका नालबंद
बढ़िया घोड़ा, और नाल बंधाई एक टका। ग़लत मितव्ययिता।

चाकर के आगे कूकर, कूकर के आगे पेशख़ेमा
जब नौकर से किसी काम के लिए कहा जाए, और वह उसे स्वयं न करके किसी दूसरे को उसे करने के लिए भेजता है, तब क.। काम को एक-दूसरे पर टालना।
पेशख़ेमा=वह तंबू, जो पहले से आगे भेज दिया जाता है।

चाकर को उज्र नहीं, कूकर को उज्र है
कुत्ते को किसी काम के करने में उज्र हो सकता है, पर नौकर को नहीं होता।
(भावार्थ=नौकर की अपेक्षा कुत्ता अधिक स्वतंत्र होता है। नौकर जब नाराज़ हो, उसका दृष्टिकोण)

चाकर से कूकर भला, जो सोवे अपनी नींद
नौकर से कुत्ता अच्छा होता है, जो अपनी नींद सोता है।

चाकर है तो नाचा कर, ना नाचे तो ना चाकर
नौकरी करनी है तो मालिक का हुक्म मानो, हुक्म नहीं मानना है, तो नौकरी मत करो।

चाकरी में आकरी क्या?
नौकरी में हीला-बहाना क्या?

चाकी फेरी, हुई चून की ढेरी, (ग्रा.)
चक्की चलाई नहीं कि चून तैयार है। परिश्रम से ही काम होता है।

चातुर का कर्ज़ मन में निस्तार
(1) कर्ज़ समझदार आदमी से ही लेना चाहिए। अथवा
(2) समझदार आदमी को ही कर्ज़ देना चाहिए।

चातुर का काम नहीं, पातुर से अटके। चातुर का काम यही, लिया दिया सटके।
समझदार आदमी वेश्या के फंदे में नहीं पड़ते।
वेश्या का काम ही लोगों को मूर्ख बनाकर पैसा खींचना है।

चातुर की चेरी भली, मूरख की नार से
मूर्ख की स्त्री होने से चतुर की दासी होना अच्छा।

चातुर को चौगुनी, मूरख को सौगुनी

(1) चतुर को दूसरे की संपत्ति चौगुनी और मूर्ख को सौगुनी दिखाई देती है। (2) चतुर अगर अपनी बुद्धि को चौगुना समझता है, तो मूर्ख सौगुना।

चातुर तो बैरी भला, मूरख भला न मीत।
साध कहै हैं, मत करो, कोइ मूरख से प्रीत।

मूर्ख मित्र से चतुर दुश्मन अच्छा। मूर्ख से मित्रता नहीं करनी चाहिए।

चातुर नार नरकूढ़ से, ब्याह होय पछताय।
जैसे रोगी नीम को, आंख मींच पी जाय।

चतुर स्त्री मूर्ख के साथ ब्याह होने पर मन ही मन पछताती है, पर कुछ कह नहीं सकती। रोगी जैसे नीम के कड़ुए घूंट को चुपचाप पी जाता है, उसी तरह वह भी कष्ट सहन करती है।

चापलूसी का मुंह काला

चापलूसी अच्छी चीज नहीं।

चाम का घर कुत्ता लिये जाता है

(1) जहां मुफ्त का खाने को मिलता है, वहां सब इकट्ठे होते हैं। अथवा (2) घर मजबूत बनवाना चाहिए, जिससे शीघ्र नष्ट न हो जाए।

(कुत्ते को चमड़ा विशेष प्रिय होता है।)

चाम का चमोटा, कूकर रखवाल

चमड़े की चीज की रखवाली के लिए यदि कुत्ते को छोड़ दिया जाए, तो वह तो उसे लेकर चम्पत हो जाएगा।

चाम के चंडू चलल पहाड़, पीछल टंगड़ी टूटल कपार

दुबले पतले आदमी ने पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश की, तो टांग पीछे हुए और सिर फट गया।

(सामर्थ्य से बाहर काम नहीं करना चाहिए।)

चाम के दाम

चमड़े के भाव अर्थात बहुत सस्ती चीज।

(मुहम्मद तुगलक ने सन् 1330 में सोने-चांदी के अभाव में तांबे का सिक्का चलाया था। कहावत में उसी ओर संकेत है।)

चार अफ़ीमी और तीन हुक्का

लड़ाई की जड़। चार अफीमचियों का तीन हुक्कों में काम कैसे चल सकता है ?

चार गोड़वा बांधा जाए, दो गोड़वा न बांधा जाए

चार पैर के पशु को कहीं भी बांध रखो, पर दो पैर के मनुष्य को नहीं बांधा जा सकता।

चार घर चौ भैया, तेकरा बीच में भीखन भैया, (स्त्रि.)

चार घरों में चार भाई रहते हैं और उनके बीच में रहते हैं भीखन भाई। जब कोई विरोधियों के बीच में अकेला पड़ जाए, तब क.।

चार चोर चौरासी बनिया, एक-एक करके लूटा

चार चोरों ने चौरासी बनियों को एक-एक करके लूट लिया।

(कथा है कि चौरासी बनिए कहीं जा रहे थे। चार चोरों ने उन्हें देख लिया। उन्होंने जब एक बनिए को लूटा, तो बाकी उसकी मदद न करके खड़े तमाशा देखते रहे। तब चोरों ने एक-एक करके उन सब की लुंजिया-पुंजिया छीन लीं। शिक्षा यह कि एका न होने से हानि उठानी पड़ती है।)

चार जात गावें हरबोंग, अहीर, डफाली, धोबी, डोम

ये चार जातियां बेतुका गाती हैं—अहीर, डफाली, धोबी और डोम।

चार दिन का रंगचंग, छोड़ डाढ़ीजरवा मोरा संग, (स्त्रि.)

मुझे चार दिन का यह रंगचंग नहीं चाहिए, दाढ़ीजले, मेरा साथ छोड़ !

अपने दुष्ट पति से किसी स्त्री का कथन।

चार दिन की आइयां, और सोंठ बिसाइन जाइयां

अभी चार दिन आए नहीं हुए, और सोंठ खरीदने जा रही हैं !

जब कोई नई विवाहिता प्रौढ़ की तरह बात करे, तब क.।

(सोंठ की आवश्यकता बच्चा होने पर ही पड़ती है।)

चार दिन की चमक चौदस

चार दिन की चांदनी। थोड़े दिनों का राग-रंग।

चार दिन की चमर जोतिस

फैलन ने इसका यह अर्थ दिया है कि 'चार दिन पहले चमार था, वह अब ज्योतिषी बन गया।' किंतु यह कहावत बुंदेलखंड में भी प्रचलित है और उसका यह अर्थ लगाया जाता है कि कोई चमार यदि ज्योतिषी बन जाए, तो उसका वह ज्योतिष-ज्ञान दो-चार दिन ही चल सकता है। इस प्रकार ऊंची जाति के लोगों ने ज्ञान पर अपना एकाधिकार जताया, जब कि ज्ञान सब के लिए है, यदि वह ज्ञान है तो।

चार दिना की चांदनी, फेर अंधेरा पाख

वैभव स्थायी नहीं रहता।

चार पांव का घोड़ा चौंकता है, दो पांव का आदमी क्या बला है ?
मनुष्य से सब डरते हैं।

चार पाए बरो किताबे चंद, (फा.)
पशु के ऊपर किताबें लदी हुई। पढ़े-लिखे मूर्ख के लिए क.।
(यह 'गुलिस्तां' के वाक्य से है।)

चार बेद और पांचवां लबेद
डंडे के सामने सब हार मानते हैं।
बहुत अफलातूनी छांटने वाले से क.।
लवेद=लबोदा, छड़ी।

चार महीने हाल का, चार महीने ताल का, चार महीने पाल का
वर्षा ऋतु में ताजा, जाड़े में तालाब का और गर्मियों में घड़े में रखा पानी पीना चाहिए।

चार साल बुरा हवाल
घोड़े के लिए कहा गया है कि उसके शुरू के चार साल अच्छे नहीं होते।

चार हाथ पांव सबके हैं
सब में कुछ न कुछ करने का बूता है।

चारू सो भारू
जो बहुत खाते हैं, वे अधिक बोझ भी ढो सकते हैं।
बैल के लिए कहा गया है। कहा. का यह अर्थ भी हो सकता है कि जो बहुत खाता है, वह भार-स्वरूप बन जाता है।

चारों रास्ते मुंह खुले
जो करना हो करो, सब रास्ते खुले हैं।

चालीस बरस का रेज़ा
जब कोई अपनी उम्र बहुत कम बताए।
रेज़ा=लड़का

चालीस सेरा ऊत
पूरा मूर्ख।

चालीस सेरी बात कहते हैं
पक्की या नपी तुली बात क.।

चाव घटे नित के घर जाए।
भाव घटे कुछ मुख के मांगे।
रोग घटे कुछ ओखद खाए।
ज्ञान घटे कुसंगत पाए।
नित्य किसी के घर जाने से प्रेम कम होता है; मुंह से कुछ मांगने से इज्ज़त कम होती है, दवा खाने से रोग कम होता है और कुसंगत में बैठने से ज्ञान में कमी आती है।

चावल पचे टावल
चावल शीघ्र हज़म होता है।

चाह करूं, प्यार करूं, चूतड़ तले अंगार करूं, जल जाए तो मैं क्या करूं, (स्त्रि.)
दिखावटी प्रेम जताने पर क.।

चाह करे जाकी चाकरी कीजे।
ना करे ताका नाम न लीजे।
जो तुमसे प्रेम करे, उसकी नौकरी भी कर लो; जो प्रेम न करे, उसका नाम भी न लो।

चाह चमारी चूहड़ी, सब नीचन की नीच
चाह रूपी चमारी और भंगिन सब नीचों में नीच है। लोभ बुरी चीज है।

चाहत की चाकरी कीजे।
अनचाहत का नाम न लीजे।
दे.—चाह करे...।

चाहने के नाम गधी ने भी खेत खाना छोड़ दिया था
प्रेम ऐसी चीज है कि एक बार गधी ने भी उसके चक्कर में पड़कर खाना-पीना छोड़ दिया था।

चाहले की भैंस
ऐसे मनुष्य की स्त्री, जो उसे खूब लाड़-प्यार से रखता हो। मोटी-ताज़ी औरत के लिए क.।

चाहे कोदों दला ले, चाहे मंडुवा पिसा ले, (स्त्रि.)
तू जो कहेगा, वही करूंगी। अथवा एक काम कुछ भी करा ले। कोदों और मंडुवा हलकी क़िस्म के अनाज होते हैं।

चिंडाल न छोड़े मक्खे, न छोड़े बाल, (हिं.)
ऐसे मनुष्य के लिए क., जो सब तरह की चीजें खा ले।
चिंडाल=चंडाल।

चिंता ज्वाल सरीर, बन, दाह लगे न बुताय।
प्रकट धुआं न देखिए, अंदर ही धुंधुआय।
स्पष्ट।

चिकनयां फ़कीर, मखमल का लंगोट, (स्त्रि.)
जब कोई साधारण मनुष्य हैसियत से बाहर शौक करे।

चिकना घड़ा, बूंद पड़ी और ढल गई
निर्लज्ज के लिए क.।

चिकना घड़ा हो गया है
बेशर्म बन गया है।

चिकना देख फिसल पड़े, (स्त्रि.)
(1) किसी के रूप-यौवन पर मुग्ध हो जाने पर क.।
(2) पैसे के लालच में आ जाने के लिए भी कह सकते हैं।

चिकनी-चुपड़ी बातों से पेट नहीं भरता
कोरी बातों से काम नहीं चलता।

चिकनी बातें जिन पतयाओ
मीठी बातों में मत आओ।

चिकने घड़े पर पानी
निर्लज्ज के लिए क., जिस पर कोई बात असर नहीं करती।

चिकने गलवा मलवा के, (ग्रा.)
माल-टाल खाने वाले के चिकने गाल होते हैं।

चिकने गाल तिलनियां के और जरे-बुरे भुरजिनिया के, (स्त्रि.)
तेली की स्त्री तेल का काम करती है, इसलिए उसके गाल चिकने रहते हैं, और भड़भूंजिन चूंकि भाड़ झोंकती है, इसलिए उसके गाल काले-कलूटे रहते हैं।
(आदमी की चाल-ढाल पर उसके व्यवसाय का असर पड़ता है।)

चिकने मुंह को सब ताकते हैं
बड़े आदमी को सब खुशामद करते हैं।

चिट्ठी न परवाना, मार खाये मुल्क बेगाना
जब कोई विना कहे-सुने किसी की चीज हथिया ले, तब क.।
बेगाना=पराया।

चिड़ा मरन, गंवार हांसी
एक का नुकसान, और दूसरा हंसता है।
चिड़ा=चिड़िया, नरपक्षी।

चिड़िया अपनी जान से गई, खाने वाले को स्वाद न आया
परिश्रम से किए गए काम की जब सराहना न की जाए, तब क.।

चिड़िया अपनी जान से गई, लड़का खुश न हुआ, (स्त्रि.)
दे. ऊ.।

चिड़िया और दूध
असंभव व्यापार। चिड़िया के दूध नहीं होता।

चिड़िया करे खोंचा, चिड़ा करे नोंचा
चिड़िया तो एक-एक तिनका लाकर घोंसला बनाती है और चिड़ा नोंच-नोंच कर फेंकता हे।
(जब घर का एक आदमी तो परिश्रमपूर्वक संचय करे और दूसरा बेरहमी से खर्च करे।)

चिड़िया की चोंच में चौथाई हिस्सा
कमज़ोर या सीधेसादे को थोड़ा हिस्सा ही मिलता है।

चिड़िया की जान गई, लड़के का खिलौना
किसी के दुख की परवाह न करके जब कोई उल्टा उस पर हंसे।

चिड़िया को शाहीन से क्या काम?
स्पष्ट।
शाहीन=एक प्रकार का बाज़ पक्षी।

चिड़ीमार टोला, भांत-भांत का पंछी बोला
जहां किसी मजमे में हर आदमी अपनी अलग राय दे रहा हो, वहां क.।
(आगरे में चिड़िमार टोला नाम का एक बाजार है, जहां शाम को सब तरह के आदमी दिखाई देते हैं, और बहुत शोरगुल और बकझक रहती है।)

चिड़िमार हमेशा भूखे नंगे रहते हैं
स्पष्ट।

चित भी मेरी, पट भी मेरी
हर तरह से अपना ही लाभ चाहना।

चिराग गुल, पगड़ी गायब
जहां ऐसे बदमाश इकट्ठे हुए हों कि थोड़ी-सी भी असावधानी से भले आदमियों को हानि पहुंचने का डर हो। कुव्यवस्था के लिए भी क.।

चिराग जला, दांव गला
चोरों के लिए क.। चिराग जलने से उनका दांव नहीं लगता।

चिराग तले अंधेरा
जहां विशेष न्याय, सुरक्षा अथवा विचार की आशा हो, वहां ही जब कोई अनहोनी बात हो जाए, तब क.।
जैसे—पुलिस चौकी के पास ही चोरी हो जाना या पढ़े-लिखे से कोई ऐसी भूल हो जाना, धार्मिक स्थान में दुराचार, जो नहीं होना चाहिए।

चिराग में बत्ती और आंख पै पट्टी, (स्त्रि.)
जो शाम से ही सोने की तैयारी करे, उसके लिए क.।

चिराग रोशन मुराद हासिल, (मु.)
(1) पीरों की दरगाह में दीए जलाकर रखो और अपनी मनोकामना पूरी करो।
(2) नकशबंदी नाम के फकीरों की टेर, जो हाथ में दीपक लेकर भीख मांगा करते हैं। उनकी इस टेर का मतलब होता है कि हमारा दीपक जल गया। हमें भीख देकर अपनी मुराद पूरी करो।
(3) रात में दीपक जलने के बाद ही चोर-उचक्कों की

मुराद पूरी होती है, तब वे चोरी कर सकते हैं। कहावत का यह मतलब भी हो सकता है।

चिल्लड़, घमोकन, चिथड़ा, ये तीनों विपत का बखेड़ा
जुएं, मार खाना और चिथड़े, ये तीनों गरीब के हिस्से में पड़ते हैं।

चिल्लड़ चुनने से भगवा हलका होवे, (स्त्रि.)
कोरे दिखावटी प्रयास से कहीं सिद्धि मिलती है।
(कहावत का मतलब यह है कि कोई साधु अगर चाहे कि कपड़ों को चीलरों से युक्त रखने से ही उसके पापों का बोझ हलका होगा, तो यह संभव नहीं।)
भगवा=साधुओं के गेरुए वस्त्रों को कहते हैं।

चिल्लड़ मारे, कुत्ता खाए
जुएं को मार कर अलग करना और कुत्ता खा जाना। छोटी-सी चीज के विषय में अपने को पाक-साफ बताकर बड़ी चीज हड़प जाना।

चिह निस्बत खाक़ रा व आलमें पाक, (फा.)
पृथ्वी और आकाश में क्या संबंध?

चींटी का बिल नहीं मिलता, कहां छिपूं
कहीं गुजारा नहीं।

चींटी की आवाज़ अर्श पर
निर्बल की भगवान सुनता है।
अर्श=आसमान, स्वर्ग।

चींटी की जो मौत आनी होती है, तो पर निकलते हैं
जब कोई छोटा आदमी बहुत इतराकर चलने लगता है, तब क.।

चींटी के घर नित मातम
चींटियां नित्य मरती हैं। साधारण आदमी को कोई न कोई कष्ट लगा ही रहता है।

चींटी के पर निकले और मौत आई
दे.—चींटी की जो मौत...।

चींटी को मौत ही की बला बस है
गरीब के लिए थोड़ा-सा कष्ट भी बहुत होता है।

चींटी दल
बड़ी भीड़।

चींटी चाहे सागर थाह
सामर्थ्य से बाहर काम करने का धृष्ट प्रयास करना।

चींटी ससरने को जगह नहीं
बहुत संकीर्ण जगह।
ससरना=निकलना, रेंगना।

चीज न राखे आपनी, चोरों गाली देय, (स्त्रि.)
किसी विषय में स्वयं सावधान न रहकर दूसरों को दोष देना।

चीड़फाड़ के अंग्रेज़ डाक्टर उस्ताद हैं
स्पष्ट।

चीरा है जिसने वही नीरेगा, (हिं.)
जिसने मुंह दिया है, वही भोजन भी देगा।
नीरेगा=नीर यानी पानी देगा।

चीरे चार, बघारे पांच
किसी सास का अपनी बहू के संबंध में कहना कि यह तरकारी के चार टुकड़े काटकर पांच बघारती है।
(व्यंग्य में ऐसे आदमी के लिए कहते हैं, जो बात अधिक करे, पर काम करे थोड़ा।)

चील का मूत
ऐसी वस्तु जो मिल न सके।

चील के घर में पारस होता है
चील के घर में सोना मिलता है।
(चील अक्सर सोने के गहने उठा ले जाती है। लोगों का विश्वास है कि वह ऐसा इसलिए करती है कि जब तक सोना नज़दीक न हो, तब तक उसके बच्चे आंखें नहीं खोलते।)

चील के घर मांस कहां?
चील के घोंसले में मांस नहीं होता, क्योंकि वह जो कुछ लाती है, सब खा लेती है। जब कोई किसी के पास से ऐसी वस्तु पाने की आशा करे, जो उसके पास कभी रहती ही न हो; तब क.।

चील के घर में मांस की धरोहर
एक मूर्खतापूर्ण कार्य। चील के घर में मांस होने से वह तुरंत खा जाएगी।

चील बैठे तो एक खड़ ले ही उड़े
चील जहां बैठती है वहां से एक तिनका लेकर ही उड़ती है। कार्यशीलता का उदाहरण।

चील-सा मंडराया और कबूतर-सा बींदता फिरता है
हमेशा इस ताक में रहता है कि जो मिले, वही उठा ले।
बींदना=फुदकना।

चुंगल भर आटा साईं का, बेटा जीवे माई का
भीख मांगने वाले फ़कीरों की टेर।

चुगलखोर खुदा का चोर, (मुं.)
चुगलखोर ईश्वर का शत्रु होता है।

मतलब—बुरा आदमी होता है।

चुगला बैठा नीम पै, दे साले के तीन सै

स्पष्ट।

बच्चों की तुकबंदी।

चुटके का खैये, उकटे का न खैये

गरीब आदमी के यहां भले ही खा ले, पर ऐसे के यहां न खाए, जो खिलाकर एहसान जताए।

चुटका=चुटकी मांग पर पेट भरने वाला, ग़रीब।

उकटा=एहसान जताने वाला।

चुटिया को तेल नहीं, पकौड़ी को जी चाहे, (स्त्रि.)

साधारण चीज के लिए पैसा नहीं, महंगी के लिए मचलना।

चुड़ैल पर दिल आ गया तो फिर परी क्या चीज है

प्रेमी रूप-कुरूप नहीं देखता। प्रेम अंधा है।

चुड़ैल पर दिल आ जाए, तो वह भी परी है

कुरूप से कुरूप स्त्री से भी अगर प्रेम हो जाए, तो वह भी फिर सुंदर लगती है।

चुनिए, खुदिए, पोसलों धिया।

आइल दमदा, ले गैल धिया।

मां का बेटी के संबंध में कहना कि मैंने उसे खिला-पिलाकर बड़ा किया, और दामाद आकर ले गया।

चुप आधी मर्ज़ी

दे.—अल ख़ामोशी नीम रज़ा।

(स.—मौनं सम्मति लक्षणम्।)

चुप की दाद ख़ुदा देगा

चुपचाप कष्ट सहन कर लेने वाले की सहायता ईश्वर करता है।

चुपड़ी और दो-दो

बढ़िया माल और बहुत-सा। प्रायः ऐसे मनुष्य के संबंध में कहते हैं, जिसे अच्छे अधिकार प्राप्त हों और वेतन भी ऊंचा मिलता है।

चुराये नथवाली, नाम लगे चिरकुट वाली का, (स्त्रि.)

बड़े के अपराध के लिए छोटा पकड़ा जाए।

चिरकुट=चीथड़ा।

चुल्लू-चुल्लू साधेगा तो दुआरे हाथी बांधेगा

जो थोड़ा-थोड़ा संचय करेगा, वह दरवाजे पर हाथी बांध सकता है।

(भंगेड़ी भी इसे कहा करते हैं।)

चुल्लू पानी, तंग जिंदगानी

आर्थिक कष्ट में रहने वाले का कहना।

चुल्लू-उल्लू, लोटे में गड़गप्प

भंगेड़ियों का कहना।

चूका और गया

जो चूकता है, वह हानि उठाता है।

चूका और मरा

दे. ऊ.।

(बंदर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग मारते समय यदि चूक जाए, तो वह नीचे गिरकर मर जाता है, उसी से आशय है।)

चूचियों में हाड़ टटोलना

जो वस्तु जहां है ही नहीं, वहां उसे तलाश करना।

चूतड़ से कान गांठते हैं

(1) जो आदमी दरवाजे से कान लगाकर दूसरे की बात सुने, उसके लिए क.।

(2) किसी बात के सिर-पेर को एक करने को भी क.।

चूतड़ों से सुपारी फोड़ना

सुख-चैन में दिन काटना।

चूतिया मर गए, औलाद छोड़ गए

यानी आप जैसा मूर्ख हमने नहीं देखा।

जब कोई किसी को मूर्ख बनाना चाहे, तब उसकी ओर से भी क.।

चूतियों ने गांव मारा है?

मूर्खों ने भी कभी कोई काम किया है?

चून खाए मुसंड होवे, तला खाए रोगी

रोटी खाने से आदमी तगड़ा होता है और तली हुई चीजें खाने से रोगी।

चूना और चमार, कूटे पर ठीक रहता है

स्पष्ट।

(चूने को पानी मिलाकर जितना कूटा जाता है, उतना ही उसमें लस आता है और वह मज़बूत बनता है।)

चूना, चूची, दही, ये बंगाला नहीं

बंगाल का चूना और दही अच्छा नहीं होता। वहां की स्त्रियों के स्तन भी छोटे होते हैं।

चूनी कहे 'मुझे घी से खा'

(1) चूनी कहती है कि घी के साथ खाने से ही मैं स्वादिष्ट बन सकती हूं।

साधारण अन्न को भी अच्छा बनाकर खाने में पैसा खर्च होता है।

(2) चूनी जैसे साधारण अन्न का यह दंभ कि वह चाहता

है कि उसे घी के साथ खाया जाए। यह अर्थ भी होता है।
चूनी=मटर का आटा।

चूमचाट के खा लिया
(1) चटोरपन में पैसा साफ कर देना।
(2) किसी को बिल्कुल बर्बाद कर देना।

चूमा झाड़ खाओ, लड्डू न तोड़ो
ब्याज या मुनाफ़ा खा लो, पूंजी बर्बाद न करो।

चूल्हा छोड़ भंसार में जाओ
हमें कोई मतलब नहीं; तुम चाहे जो करो।
भंसार=भनसार, भाड़।

चूल्हा झोंके चांवर हाथ
चूल्हा झोंक रहे हैं और पंखा हाथ में लिए हुए हैं। गर्मी से बचने के लिए। काम में नज़ाकत दिखाना।

चूल्हे आग न घड़े पानी, ऊपर ही ऊपर जा ग़ैबानी, (स्त्रि.)
एक स्त्री का दूसरी को कोसना कि तेरे चूल्हे में न तो आग रहे, न घड़े में पानी, और तू ऊपर ही ऊपर जहन्नुम में जा।

चूल्हे का राव लाव ही लाव पुकारे, (स्त्रि.)
चूल्हे का देवता हमेशा लाओ, लाओ, और लकड़ी लाओ ही पुकारता रहता है।
पेट अथवा पेटू के लिए क.।

चूल्हे की न चक्की की, (स्त्रि.)
ऐसी औरत जो गृहस्थी का कोई काम न जानती हो।

चूल्हे चक्की, सब ही काम पक्की (स्त्रि.)
चतुर गृहिणी के लिए क.।

चूल्हे पीछे सोवें और टेहरी को टोपवें, (स्त्रि.)
चूल्हे के पीछे सोते हैं और मटकी टटोलते रहते हैं। आर्थिक कष्ट भोगने वाले के लिए क.।

चूहा बजावे चपनी और जात बतावे अपनी
काम से आदमी की जात परख ली जाती है।

चूहा बिल में समाता न था, कानों बांधा छाज, (स्त्रि.)
जब कोई स्वयं अपनी देखभाल न कर पाए, ऊपर से कोई झंझट मोल ले ले, तब उसके लिए क.।

चूहा बिल्ली का शिकार है।
स्पष्ट।

चूहे का बच्चा बिल ही खोदेगा
सहजात स्वभाव नहीं छूटता।

चूहे का बिल ढूंढ़ना
शर्म से कहीं छिपने की कोशिश करना।

चूहे हाथ लगी हल्दी की गिरह, पंसारी ही बन बैठा, (स्त्रि.)
चूहे को एक हल्दी की गांठ मिल गई, उसे लेकर वह अपने को पंसारी समझ बैठा।
जब कोई थोड़े-से पैसे से अपने को धनी अथवा थोड़ी-सी विद्या से अपने को विद्वान समझ ले, तब क.।

चेना जी का लेना, चौदह पानी देना, ब्यार घले तो लेना न देना, (कृ.)
चेना की खेती के संबंध में कहा गया है कि वह एक मुसीबत की चीज है। बहुत पानी देना पड़ता है और अगर गरम हवा चल जाए तो मामला साफ है
(चेना एक हलकी किस्म का अनाज है। वनस्पतिशास्त्र में उसे Punicum miliaceum कहते हैं।)

चेने के बंस में सपूत भये माड़हा, (पू.)
जब किसी निकम्मे घर में थोड़ा-बहुत होशियार लड़का पैदा हो जाता है, तब व्यंग्य में क.।
(माड़हा या माढ़ा चेने की तरह ही एक हल्की किस्म का अन्न होता है।)

चेरी सबके पांव धोवे, अपने धोती लजावे
अपने हाथ से अपना काम करने में लोगों को शर्म आती है, फिर वे उसी प्रकार का दूसरों का काम भले ही करें।

चेले चीनी हो गए, गुरु गुड़ ही रहे
दे.—गुरु गुड़ ही रहे...।

चेले लावें मांगकर, बैठा खाए महंत।
राम भजन का नाम है, पेट भरन का पंथ।
महंतों और साधुओं के संबंध में लोकज्ञान का निचोड़।

चोट लगी पहाड़ की, और तोड़ें घर की सिल, (स्त्रि.)
जब कोई बाहर का गुस्सा घर में उतारता है।

चोट्टी कुतिया, जलेबियों की रखवाली
भक्षक का ही रक्षक होना।

चोट और मोट, कसके बांधे के चाहे, (पू.)
चोर ओर गठरी को मज़बूती से बांधना चाहिए।

चोर और सांप की बड़ी धाक होती है
उनसे सब डरते हैं।

चोर और सांप दबे पै चोट करता है
चोर और सांप को जब निकलने का रास्ता नहीं मिलता, तो वे चोट करते हैं।

चोर का जी कितना ?
चोर डरपोक होता है।

चोर का भाई गठकटा

जो जैसा होता है उसके यार-दोस्त भी वैसे ही होते हैं।

चोर का भाई गट्ठीचोर

दे.ऊ.।

गट्ठीचोर=अमानत में ख़यानत करने वाला, विश्वासघाती।

चोर का मन बकचे में

चोर की नजर गठरी पर ही रहती है।

चोर का माल सब कोई खाए। चोर की जान अकारथ जाए।

चोर का माल दूसरे उड़ाते हैं, और चोर बेचारा मुफ्त में फंसता है।

चोर का मुंह चांद-सा

क्योंकि (1) चेहरे से वह अपने को निर्दोष साबित करता है।

(2) उसके चेहरे पर चांद की तरह स्याही पुती रहती है, जिससे उसका चोर होना साबित हो जाता है।

चोर का शाहिद चिराग

चोर की गवाही चिराग़ ही दे सकता है, और चोर रोशनी में चोरी नहीं करता।

चोर का सिर नीचा

चोर किसी के सामने आंख उठाकर नहीं देख सकता।

चोर का हाल, सो मेरा हाल

अपनी सफ़ाई में कहते हैं कि यदि मैंने कोई गलती की हो तो मुझे वहीं दंड दिया जाए, जो चोर को दिया जाता है।

चोर की और सांप की धाक बड़ी होती है

दे.—चोर और सांप की...।

चोर की ज़मानत नहीं होती

चोर की कोई ज़मानत नहीं करता। कोई उसका हिमायती नहीं होता।

चोर की जोरू कोने में सिर देकर रोती है

चुपचाप रोती है। खुलकर कैसे रो सकती है? लोग यदि रोने का कारण पूछें, तो क्या बताएगी?

चोर की दाढ़ी में तिनका

किसी भी तरह के इशारे को अपने ऊपर समझकर जब कोई व्यक्ति तिनक उठता है।

(इसकी कथा है कि एक काज़ी किसी चोरी के मामले पर विचार कर रहा था। जिन मनुष्यों पर भी संदेह था वे सब उसके सामने खड़े थे। जब असली अपराधी के संबंध में वह कुछ निर्णय नहीं कर सका, तो उसने कहा—'चोर वह है जिसकी दाढ़ी में तिनका लगा है।' उसके ऐसा कहने पर सब ज्यों के त्यों खड़े रहे, पर जो चोर था वह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरकर देखने लगा कि कहीं मेरी ही दाढ़ी में तो तिनका नहीं है। यह देख काज़ी ने उसे ही चोर ठहराया और उसके पास से चोरी का माल भी बरामद हुआ।)

चोर की नज़र गठरी पर

चोर हमेशा चोरी की ताक में रहता है।

चोर की मां कोठी में सिर देकर रोती है

दे—चोर की जोरू...।

चोर के ख़्वाब में बकचे

चोर सपने में भी चुराने के लिए गठरियां देखता है।

चोर के घर में छिछोर

चोर के घर से भी कोई चोरी कर ले, तब क.।

चोर के घर मोर

जब चालाक के साथ भी कोई चालाकी करे, तब क.।

(कथा है कि एक चोर कहीं से सोने का हार चुराकर लाया, जिसे एक मोर ने निगल लिया। चोर बेचारा पछताता रह गया।)

चोर के पेट में गाय, आप ही आप रंभाय

आदमी का अपराध उसकी बातों से ही प्रकट हो जाता है।

चोर के पैर नहीं होते

चोर कभी खड़ा नहीं रहता, तुरंत भाग जाता है।

'चोर के पैर कितने' भी क.।

चोर के मन में चोरी बसे

जिसकी जो आदत होती है, वह छूटती नहीं।

चोर के हाथ में दीया

उसके लिए सहायक भी हो सकता है और उसे पकड़वा भी सकता है।

दीया=दीपक।

चोर को अंगारी मीठ, (भो.)

अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने के लिए चोर जलता अंगारा भी जीभ पर रख लेता है।

(अपने बुरे काम को भी वह भला समझता है। प्राचीन काल में यह निर्णय करने के लिए कि किसी व्यक्ति ने कोई अपराध किया है या नहीं, उसकी जीभ या हाथ पर जलता अंगारा रखने की प्रथा प्रचलित थी। इसे दिव्य परीक्षा कहते थे। कहावत उसी पर आधारित है।)

चोर को चोर ही पहचाने

जैसे को तैसा ही पहचान सकता है।

चोर को चोर ही सूझे

जो जैसा होता है, वह दूसरे को भी वैसा ही समझता है।

चोर को चोरी ही सूझे

बुरे को बुरा काम ही सूझता है।

चोर को चौकीदार करना

निरी मूर्खता है। वह तो सब चुरा ले जाएगा।

चोरी को पकड़िए गांठ से, छिनाल को पकड़िए खाट से

नहीं तो अपराध प्रमाणित करना मुश्किल होता है।

गांठ से=मालसहित।

खाट से=पलंग पर।

चोर को पनहई दूर ही से सूझे है, (पू.)

चोर को जूता दूर से नजर आ जाता है।

(हमेशा उसे मार खाने का भय बना रहता है।)

चोर गठरी ले गया, बेगारियों को छुट्टी हुई

जब बेमन से कोई काम किया जा रहा हो, और कारणवश उससे छुटकारा मिल जाय, तब क.।

चोर चकार चूके, लेकिन चुगल न चूके

चोर या उठाईगीरा भले ही चूक जाए, लेकिन चुगल नहीं चूकता। वह चुगली करके ही रहता है।

चोर चुरावे गर्दन हिलावे

चोर चोरी करके इंकार करता है।

चोर-चोर मौसेरे भाई

समान व्यवसाय या स्वभाव वाले व्यक्ति आपस में शीघ्र मिल जाते हैं। जब एक के बुरे काम का दूसरा समर्थन करे।

चोर चोरी कर गया, मूसलों ढोल बजा

चोर खुलेआम चोरी कर ले गया। कुप्रबंध की हद।

चोर चोरी से गया तो क्या हेराफेरी से भी गया, (स्त्रि.)

बुरी आदतों को कितना ही दबाया जाए, पर वे रह-रह कर प्रकट हो उठती हैं।

हेराफेरी=चीजों को इधर से उधर करना।

(कथा है कि एक चोर अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए साधु हो गया। पर उसकी पुरानी आदत ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। रात में अपने सब साथियों के सो जाने पर चोरी करने की प्रबल इच्छा उसके मन में जाग्रत हो उठती। तब वह अपने एक साथी के सिर के नीचे की गठरी निकालकर दूसरे के सिर के नीचे और दूसरे की पहले के नीचे रख देता। इस प्रकार चोरी करने की अपनी हवस को मिटा लेता, साथ ही चोरी के दुष्कर्म से भी बचा रहता।

चोर जाते रहे कि अंधियारी

दे.–अंधियारी गई कि चोर...।

चोर न जाने चोर की सार

चोर ही चोर के तौर-तरीके जानता है।

चोर न जाने मंगनी के बासन ?

चोर को तो चुराने से काम, उसे इससे क्या मतलब कि वे तुम्हारे अपने हैं या दूसरे के।

चोर, जुआरी, गठकटा, जार और नार छिनार।
सौ सौगधें खाएं जो, भूल न कर इतबार।

स्पष्ट।

जार=पराई स्त्री से प्रेम करने वाला पुरुष।

इतबार=विश्वास

चोर, ढोर, दोनों हाज़िर हैं

माल समेत चोर पकड़ा गया।

चोर लाठी दो जने, हम बाप-पूत अकेले

चोर ने लाठी लेकर बाप-बेटे पर हमला कर दिया और जो कुछ उनके पास था छीन लिया। तब लड़के ने बात बनाई कि हम करते क्या, चोर और लाठी दो जने थे और हम बाप-बेटे अकेले थे ! जब कोई अपनी कमजोरी छिपाने के लिए अनर्गल बात कहे, तब क.।

चोर ले न साधु पूछे

चोर को चोरी से काम। फिर चाहे चीज किसी साधु की हो अथवा किसी और की।

चोर ले न साह छुए

अचल संपत्ति के लिए क., जिसे न चोर चुरा सकता है और न साहूकार ही ले सकता है। सुरक्षित चीज।

चोरवा के मन बसे ककड़ी का खेत

चोर हमेशा चोरी की ताक में रहता है।

चोर सब घर ले मरे

पकड़े जाने पर वह अपने सब साथियों के नाम बता देता है, यहां तक कि निरपराधियों को भी फंसा देता है।

चोर से कहे 'तू चोरी कर' और साह से कहे 'तू जागता रहियो'

ऐसे व्यक्ति के लिए क., जो लड़ाई में स्वयं अलग रहकर दोनों पक्षों को उकसाता रहता है।

चोर हथेली पै जान लिये फिरता है

मरने से नहीं डरता।

चोर और चोरी कभी बंद नहीं होती
दुनिया बनी तब से चली आई है।

चोरी और मुंहजोरी
क़सूर भी करे और जवाब दे।

चोरी और सरहंगी
तुम चोर हो या सिपाही, जो उल्टा हमें डांटते हो ?

चोरी और सिरजोरी
एक तो क़सूर करे ओर ऊपर से रौब दिखाए।

चोरी और सीनाजोरी
दे. ऊ.।

चोरी करके साहू बनते हो
स्पष्ट।

चोरी का गुड़ मीठा
मनुष्य-प्रकृति है कि उसे बाहर की अथवा मुफ्त की चीज अच्छी लगती है।
प्रायः पराई स्त्री से संबंध रखने वाले से क.।

चोरी बे-थांग नहीं होती
भेद बिना चोरी नहीं होती।

चोरी बेसुराग नहीं निकलती
बिना सुराग के चोरी का पता नहीं चलता।

चोली-दामन का साथ है
घनिष्ठ संबंध के लिए क.।

चौकी गांव वालों को लूट खाती है
पुलिस के कर्मचारियों पर व्यंग्य।
(चौकी से मतलब पुलिस की चौकी या थाने से है।)

चौदह विद्यानिधान
सब विद्याओं में निपुण। प्रायः व्यंग्य में कहते हैं।

चौदहवीं रात के चांद को गहन लगा
पूर्ण चंद्र को ग्रहण लगा। जब किसी का ऐसा अनिष्ट हो जाए, जो होना नहीं चाहिए था; तब क.।

चौबे गए छब्बे होने, दुबे ही रह गए
लाभ की आशा से कोई काम किया जाए और उसमें उल्टी हानि हो जाए, तब क.।

चौबे मरें तो बंदर हों, बंदर मरें तो चौबे हों
मथुरा के चौबों पर व्यंग्य में क.। वहां चौबे और बंदर दोनों ही बहुत हैं।

छ

छः चावल और नौ पखाल पानी
साधारण काम के लिए बहुत आडंबर।
पखाल=मशक।
छः महीने मिमयानी, तो एक बच्चा बियानी, (ग्रा.)
शोरगुल बहुत, पर काम थोड़ा।
छछूंदर के सिर में चमेली का तेल !
जब कोई बहुत क्षुद्र व्यक्ति बढ़-चढ़कर बातें करे।
(अजब तेरी कुदरत, अजब तेरा खेल।
छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।)
छछूंदर छोड़ना
ऐसा काम करना, जिससे दो आदमियों में झगड़ा हो।
छज्जू गेले छः जना, छज्जू एले नौ जना, (भो.)
छज्जू छः आदमियों के साथ गए और नौ के साथ लौटे।
(1) व्यर्थ अपने मित्रों की संख्या बढ़ाने पर क.।
(2) किसी काम में मुनाफ़े के साथ लौटने के लिए भी कह सकते हैं।
छज्जे की बैठक बुरी, परछावन की छांह।
दोरे का रसिया बुरा, नित उठ पकरे बांह।
छज्जे का बैठना, पराए घर की छांह, और पड़ोस का रसिया बुरा होता है; वह हमेशा तंग करता है।
छटी का खाया-पिया सब निकल गया
बुरी तरह असफल हुए। अक्ल ठिकाने आ गई।
छटी (छठी)=जन्म के छठे दिन का संस्कार।
छटी का दूध याद आ गया
बहुत परेशान हुए। अक्ल ठिकाने आ गई।
छटी के पोतड़े अब तक नहीं धुले
अभी तक बच्चे ही हैं।
पोतड़े=मल-मूत्र के कपड़े।
छटी के रज्जा
छठी के दिन ही राजा बन गए। व्यंग्य में क.।
(राजतिलक तो बड़े होने पर ही होता है।)
छट्टी न चिल्ला, हराम का पिल्ला
तेरी न छठी हुई है और न चालीसा, तू हराम का बच्चा है। गाली।
चालीसा=मुसलमानों में जन्म के चालीसवें दिन का संस्कार।
छत्तरपती, घटे पाप बढ़े रती, (हिं.)
बच्चों के छींकने पर क.।
रती=शोभा, यश।
छत्तीस प्रकार के भोजन में सत्तर-दो बहत्तर रोग भरे हैं, (हिं.)
भोजन से नाना प्रकार के रोग भी होते हैं।
छत्री का भगत, न मूसल का धनुक, (हिं.)
मूसल का धनुष नहीं बन सकता, उसी प्रकार क्षत्रिय कभी भक्त नहीं बन सकता। जाति-विद्वेषमूलक न कि सत्य, पर उस समय की धारणा।
छत्री का शोहदा, कायथ का बोदा, बामन का बैल, बनिया का ऊत
क्षत्रिय शोहदा, कायस्थ बोदा, ब्राह्मण मूर्ख और बनिया ऊत होता है। (कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि क्षत्री अगर शोहदा, कायस्थ बोदा, ब्राह्मण मूर्ख और बनिया ऊत हो, तो ये किसी काम के नहीं।)
छदाम में लड़ाई, पैसे में सुघड़ भलाई, (स्त्रि.)
छदाम के झगड़े को पैसा देकर निपटाना चाहिए।
मतलब—व्यर्थ का झगड़ा ठीक नहीं।
छदाम=पैसे का चौथाई भाग।

छप्पर पर फूंस नहीं रहा

बिल्कुल दिवाला निकल गया।

छब गठरी में, जोबन रकाबी में, (स्त्रि.)

खूबसूरती अच्छे वस्त्रों से होती है और यौवन अच्छे भोजन से।

(गठरी से अभिप्राय पहनने के कपड़ों से है, जो गठरी में बंधे रहते हैं और रकाबी से अभिप्राय उसमें रखे जाने वाले भोजन से है।)

छब्बे होने गए थे, दुबे भी न रहे, (हिं.)

जब लाभ के स्थान पर उल्टी हानि हो, तब क.।

छल का फल बुरा होता है

स्पष्ट।

छल्लो, छल आई

जो स्त्री दूसरों को बहुत छला करती थी, वह स्वयं ही छलकर आ गई !

छल्लो=छलने वाली स्त्री, एक तिरस्कार-सूचक संबोधन।

छहत्तर बोर का तवा बांध कर आना

अच्छी तरह तैयार होकर आना। एक तरह की चुनौती। *(छहत्तर बोर की बदूक होती है। मतलब यह है कि तुम इतना मोटा तवा बांधकर आना, जो हमारी छहत्तर बोर की बंदूक की गोली को सह सके।)*

छाज बोले सो बोले, चलनी भी बोले, जिसमें बहत्तर सौ छेद, (स्त्रि.)

जब कोई स्वयं अपनी त्रुटियां न देखकर दूसरे की आलोचना करे, तब क.।

चलनी=आटा छानने की चलनी।

छाज=सूप।

छाजा, बाजा, केश, तीन बंगाले देश।
चूना, चूची, दही, तीन बंगाले नहीं।

स्पष्ट।

छाजा=छज्जा, छत।

छाती का जमा

कष्टदायक आदमी।

छाती का सौदा है।

हिम्मत का काम है।

छाती छलनी होना

बहुत दुख पाना।

छाती पर मूंग दलते हैं

निकट रहकर परेशान करते हैं।

छाती पै कोई नहीं धर देगा

मरने पर सब यहीं पड़ा रहेगा।

छाती पै धर के कोई नहीं ले जाता

दे. ऊ.।

छाती पै बाल नहीं, भाल से लड़ाई

सामर्थ्य न होते हुए भी बड़े काम का बीड़ा उठाना। छाती पर बाल होना बहादुरी का चिह्न माना जाता है।

भाल=भालू, रीछ।

छान का क्या घर? और मेंढक का क्या डर?

स्पष्ट।

छान=छप्पर।

छानी पर फूस नहीं, ड्योढ़ी पर नाच, (पू.)

झूठी शान।

छाया हुवा घर पाया, और बांधी पाई टट्टी।
दूसरे का जनमा लड़का पाया, चुम्मा लें के चट्टी।

किसी ने ऐसी विधवा से ब्याह कर लिया, जिसके पास खूब पैसा था और एक पुत्र भी था। उसी को लक्ष्य कर के कहावत कही गई है। जब किसी को मुफ़्त का माल मिल जाए, तब प्रयोग।

छाया बड़ी माया है, (हिं.)

आश्रय बड़ी चीज है।

छावत मंड़वा, गावत गीत; पिया बिन लागत सब अनरीत, (स्त्रि.)

प्रियतम के बिना घर बनाना या गीत गाना नहीं सुहाता।

छिटांक चून, चौबारे रसोई, (स्त्रि.)

झूठा आडंबर।

चौबारा=चौपाल।

छिटांक सतुआ, मथुरा में भंडार

गांठ में केवल एक छटांक सतुआ, और मथुरा में जाकर साधुओं को भोज देंगे। वही झूठा आडंबर।

छिनाल का बेटा 'बबुआ रे, बबुआ !', (स्त्रि.)

(1) छिनाल के लड़के को सब दुलराते हैं, इसलिए कि उसकी मां से बात करने का मौक़ा मिलेगा।

(2) कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि छिनाल अपने लड़के को दुलराती है 'बबुआ' कह कर। देखो इसके ढंग।

छिनाल लुगाई, चातुर सिपाही
ये छिपते नहीं।
छींकत नहाइए, छींकत खाइए, छींकत रहिए सोय।
छींकत पर घर न जाइए, चाहे सर्व सुवर्ण का होय। (हि.)
छींक के संबंध में अंधविश्वास कि छींकते नहाना, भोजन करना और सोना अच्छा होता है। पर छींक आने पर दूसरे के घर नहीं जाना चाहिए, चाहे वह सोने का ही क्यों न हो।
छींकते गए, झींकते आए
छींकते गए और रोते आए। फलित ज्योतिष के अनुसार छींक आने पर चलना अशुभ माना जाता है। उसी से मतलब है। पर अर्थ यह भी हो सकता कि खाली हाथ आए।
छींकते ही नाक कटी
छींकते ही काम बिगड़ा।
(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है कि 'छींकते की नाक नहीं काटी जाती', जिसका अर्थ है कि छींकने से यद्यपि अपशकुन होता है, किंतु उसके लिए किसी की नाक नहीं अलग की जाती।)
छींके ही पै रक्खी मिलेगी
यथास्थान रखी मिलेगी।
छींका=रस्सियों का जाल, जो खाने-पीने की चीजें रखने के लिए छत से लटकाया आता है।
छीली छाली टैंया-सी
साफ-सुथरी, सुडौल।
(टैंया बड़ी कौड़ी को कहते हैं।)
छीले चार, बघारे पांच, (स्त्रि.)
दे.—चीरे चार...।
छुआ और मुआ
दुष्ट के लिए क. कि जिसे वह छू देता है, वह फिर बचता नहीं।
छुओं न छांव, अलगहे नांव
आज तक मैंने कभी किसी को छुआ भी नहीं, फिर भी मेरा नाम 'अलगहा' रख दिया गया है। अर्थात मुझे व्यर्थ बदनाम कर रखा है।
(अलगहा झाड़-फूंक करने वाले को कहते हैं।)
छुपे रुस्तम
व्यंग्य में चालाक आदमी के लिए क.।
(यों रुस्तम फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान हो गया है।)
छुरी ख़रबूज़े पर गिरी तो ख़रबूज़े का ज़रर, ख़रबूज़ा छुरी पर गिरा तो ख़रबूज़े का ज़रर
हर हालत में जब एक की हानि हो रही हो, तब क.। (दो आदमियों के झगडे में निर्बल ही पिसता है, कहावत का यह भाव भी है।)
छुरी तले दम लो
अंत तक धैर्य से काम लो।
छुरी पर कद्दू, कद्दू पर छुरी
हर हालत में बात वही है। कद्दू ही कटेगा।
छुरी पाता हूं, तो आपको नहीं पाता।
आपको पाता हूं, तो छुरी नहीं पाता।
किसी के प्रति अपना तीव्र रोष और विद्वेष प्रकट करना।
छुरी भली न कटारी, (स्त्रि.)
दोनों ही प्राण-लेवा हैं।
छूंछा का संग न साथी, महल्ला दुआरे झूमले हाथी, (भो.)
गरीब का कोई साथ नहीं देता, पर भले आदमी के दरवाज़े हाथी झूमता है।
छूंछी कढ़ाई, मजीर का फोरन
खाली कढ़ाही को मोरचा ही खा लेता है।
बेकार पड़े रहने से चीज खराब हो जाती है।
छूंछी हांड़ी बाजे टन-टन
खाली बर्तन अधिक आवाज करता है।
बुद्धिहीन बहुत बोलता है। अथवा कम पैसे वाला अधिक दिखावा करता है।
छूछे फटके उड़-उड़ जाए
खाली या घुने हुए अनाज में कोई वजन नहीं होता। फटकने पर वह उड़ जाता है।
(1) मूर्ख साधनहीन से किसी प्रकार की सहायता की आशा नहीं करनी चाहिए।
(2) कम बुद्धिवाला मनुष्य परीक्षा में बहुत कम खरा उतरता है।
(3) जो जितना कम जानता है, वह उतना ही दंभ भी करता है।
छूट भलाई, सारे गुन, (स्त्रि.)
भलाई छोड़कर और सब गुण हैं।
बुरे मनुष्य के लिए क.।

छूटल घोड़ा भुसौले ठाढ़, (पू.)

(1) किसी चीज को पाने की लालसा, जब आदमी घूम फिरकर फिर उसी जगह पहुंच जाए, जहां वह चीज मिल रही है, तब क.। वच्चे प्रायः खाने-पीने की वस्तु के लोभ से बार-बार रसोईघर का चक्कर लगाते हैं, तब मां कहा करती है।

(2) जव किसी मनुष्य का कहीं ठिकाना न हो और वह घूम फिरकर उसी जगह आ जाए, तब भी क.।

भुसौला=भुस रखने की जगह।

(प्र. प्रा.—छुटी घोड़ी भुसैले खड़ी।)

छूटौ बैल भुसौरी में

दे.ऊ.।

छेरी जी से गई, खाने वालों को सवाद न आया, (स्त्रि.)

किसी के आत्म-त्याग या परिश्रम की जव प्रशंसा न की जाए, तो क.।

छैल छींट, बगल में ईंट

(1) ऐसा व्यक्ति जो बहुत शौकीनी से रहता हो, पर जिसके पल्ले कुछ न हो।

(2) वेतुके शौक के लिए भी कह सकते हैं।

छोटा घर, बड़ा समधियाना, (स्त्रि.)

जहां स्थान की संकीर्णता की वजह से कोई काम अच्छी तरह न किया जा सके, अथवा लोग बैठ न सकें, वहां क.। *(समधियाना लड़की या लड़के के ससुर के घर को कहते हैं। पर समधियाना वह दस्तूर भी कहलाता है जो समधियों या समधिनों के पहली बार मिलने पर होता है। यह बड़े गाजे-बाजे के साथ किया जाता है और इस अवसर पर सभी सगे-संबंधी और सजातीय स्त्रियां बुलाई जाती हैं। उसी से कहावत बनी। यह बुंदेलखंड में 'सकरे में समधियाना' इस रूप में प्रचलित है।)*

छोटा मुंह बड़ा निवाला

(1) सामर्थ्य से बाहर काम करने की चेष्टा करना।

(2) किसी की ऐसी चीज को हथियाना, जो हज़म न हो सके।

(3) बेजोड़ संवंध के लिए भी कह सकते हैं।

निवाला=कौर।

छोटा मुंह बड़ी बात

बड़ों के सामने धृष्टता दिखाना।

छोटा सब से खोटा

छोटा सब से ख़राब।

(प्रायः हंसी में ही कहते हैं।)

छोटा सो मोटा

ठिंगना आदमी तगड़ा होता है।

छोटी ननद अंगिया का बंद, बड़ी ननद बिजली बसंत, (स्त्रि.)

किसी ऐसी स्त्री का कथन, जो अपनी छोटी ननद को प्यार करती है, पर बड़ी से घबराती है।

छोटी बूंद बरसे चौंकाए, आलस सभी मिटाए

किसी चिंताग्रस्त या उद्विग्न मनुष्य के लिए कहा गया है कि छोटी बूंद बरसने से ही वह चौंक उठता है और सतर्क हो जाता है। पति के आने की प्रतीक्षा में बैठी विरहिणी के लिए कह सकते हैं।

छोटी-मोटी कामनी, सब ही विष की बेल।
बैरी मारे दांव से, यह मारे हंस खेल।

स्पष्ट।

कामनी=कामिनी, स्त्री।

दांव से=मौक़ा पाकर।

छोटी-सी गौरैय्या, बाघों से नज्जारा, (पू.)

जब कोई सामान्य मनुष्य बड़ों का मुकावला करे, तब क.।

गौरैय्या=चिड़िया विशेष जो घरों में रहती है।

छोटी-सी बछिया, बड़ी-सी हत्या, (हिं.)

जो पाप बड़ी गाय के मारने से लगता है, वही छोटी वछिया के मारने से भी। बुरा कर्म तो हर हालत में बुरा ही रहेगा।

छोटे मियां तो छोटे मियां, बड़े मियां सुभान अल्लाह

प्रायः हंसी में ही कहते हैं कि छोटे मियां जो हैं, सो तो हैं ही, पर वड़े मियां उनसे भी बढ़-चढ़कर हैं।

छोटे-से गाजी मियां, बड़ी-सी दुम

यह एक तुकबंदी का अंश है। प्रायः लड़कों से हंसी में उस समय कहते हैं, जब वे कोई बहुत ढीला-ढाला वस्त्र पहन लेते हैं।

छोड़ चले बंजारे की सी आग

किसी ऐसी स्त्री का कथन, जिसका प्रेमी उसे छोड़कर चला गया है।

बंजारे घुमक्कड़ जाति के लोग हैं। वे जहां ठहरते हैं, वहां भोजन बनाकर और खा-पीकर फिर आगे बढ़ जाते हैं। भोजन के लिए वे जो आग सुलगाते हैं, वह वहीं पड़ी रहती

है। उसी से कहावत में अभिप्राय है। पर आग से मतलब यहां 'प्रेम की आग' से भी है।

छोड़ जाट, पराई खाट

जब कोई मनुष्य किसी के साथ बहुत अत्याचार कर रहा हो। उदाहरण के लिए ज़बर्दस्ती किसी की चीज पर कब्जा कर लिया हो।

छोड़ झाड़ मुझे डूबन दे, (स्त्रि.)

ऐ झाड़। मुझे मत पकड़। मैं तो डूबकर ही रहूंगी। जब कोई आदमी ग़लत काम करने का इरादा करके उसे न करना चाहे और उसके लिए कोई बहाना बनाए कि अब मैं अमुक कारण से ऐसा नहीं कर रहा हूं।

(कथा है कि एक स्त्री आत्महत्या करने के इरादे से तालाब में कूद पड़ी। पर बाद में घबराई और प्राणरक्षा के लिए उसने झाड़ी पकड़ ली। लोग जब उसे बचाने दौड़े तो वह चिल्लाई—'नहीं नहीं, मैं तो डूबकर ही रहूंगी। छोड़ झाड़, मुझे डूबने दे।')

छोड़े गांव का नाम क्या?

जिससे अब कुछ प्रयोजन ही नहीं, उसकी चर्चा से क्या लाभ?

छोड़े गांव से नाता क्या?

छोड़े हुए स्थान से अब हमें मतलब क्या?

छोड़ो, बी बिल्ली, चूहा लंडूरा ही जाएगा, (स्त्रि.)

किसी बिल्ली ने चूहा पकड़ लिया। उसकी दुम कट गई। तब कहा जा रहा है कि 'बिल्ली रानी, चूहे को छोड़ो। उसकी दुम कट गई, कोई बात नहीं। वह बिना दुम के ही जिएगा।' अभिप्राय यह कि—'बस बहुत हो गया, अधिक ज्यादती न करो।'

ज

जंगल जाट न छेड़िए, टट्टी बीच किराड़।
भूखा तुर्क न छेड़िए, हो भूखे जाए जी का झाड़।
जंगल में जाट को, दूकान में दूकानदार को और भूखे तुर्क को नहीं छेड़ना चाहिए, नहीं तो ये जान की आफत कर देते हैं।

जंगल में खेती नहीं, बस्ती में नहीं घर
कहीं कुछ न होना।

जंगल में मंगल, बस्ती में कड़ाका
जंगल में भोज, नगर में उपवास। उल्टा काम है।

जंगल में मंगल, बस्ती में बीरान।
जा घर भांग न संचरे, वह घर भूत समान।
भंगेड़ियों का भंग छानने की प्रशंसा में कहना।

जंगल में मोती की क़द्र नहीं
वहां कौन मोती की परख करे?

जंगल में मोर नाचा, किसने जाना?
अपनी योग्यता, धन-संपत्ति या वैभव को ऐसे स्थान पर दिखाने से क्या लाभ, जहां अपना कोई परिचित मौजूद न हो अथवा जहां उसकी कोई क़द्र न कर सके।

ज़ख़्मी दुश्मनों में दम ले तो मरे, न दम ले तो मरे
दोनों तरह से संकट। शत्रुओं को अगर मालूम हो जाए कि अभी यह जिंदा है, तो वे मार डालेंगे। और सांस लेना बंद कर देने से तो मर ही जाएगा।

जग जला तो जलने दे, मैं आप ही जलती हूं, (स्त्रि.)
स्वयं मुसीबत में हूं, दूसरे की मुसीबत क्या देखूं।

जग जानी देस बखानी
ऐसी बात, जिसे सब जानते हों।

जग जीता मोरी कानी, वर ठाढ़ होय तब जानी
जब एक आदमी दूसरे को धोखा दे, लेकिन दूसरे ने भी उसे धोखा दे रखा हो, तब क.।
(कथा है कि कुछ लोगों ने धोखा देकर एक कानी लड़की का ब्याह एक लड़के के साथ ठीक किया। वर पक्ष के लोगों को जब इसका पता चला, तो वे एक लंगड़े को दूल्हा बनाकर ले गए। ब्याह हो जाने पर कन्यापक्ष के लोगों ने कहा—'जग जीता मोरी कानी', तब वर पक्ष की ओर से जवाब मिला 'वर ठाढ़ होय तब जानी।' अर्थात दूल्हा जब खड़ा हो, तब तुम्हें पता चलेगा कि जीत किसकी रही; तुम्हारी कानी लड़की की या हमारे लंगड़े वर की।)

जग दर्शन का मेला है
यह संसार मिलजुल कर ही रहने की जगह है।

जगन्नाथ का भाता, जिसमें झगड़ा न झांसा
ऐसा काम, जिसमें शंका की गुंजाइश न हो।
(जगन्नाथपुरी के मंदिर में भात का प्रसाद बंटता है। उसे जात-पांत का विचार किए बिना सब लोग सहर्ष स्वीकार करते हैं। कहा. उसी पर आधारित है।)

जगन्नाथ के भात को किनने न पसारो हाथ?
ऊ. दे.।
जगन्नाथ जी के प्रसाद की महिमा में कहा गया है।
(प्र. प्रा.—जगन्नाथ के भात को जगत पसारे हाथ।)

जग में देखत ही का नाता
(1) संसार के सब नाते झूठे हैं।
(2) जब तक मनुष्य जीता है, तभी तक सब नाते हैं।

ज़च्चा और बच्चा दोनों जियें, (स्त्रि.)
आशीर्वाद।

जड़ काटते जायं, पानी देते जायं
(1) जब कोई आदमी किसी चीज को बनाने जाकर अपनी मूर्खता से उसे बिगाड़ रहा हो।

(2) धोखेबाज़ मित्र के लिए भी कह सकते हैं

जड़ को पकड़ो, शाखाओं को क्यों पकड़ते हो?

मूल चीज की ओर ही ध्यान देना चाहिए।

जतने के तीन रोटी, ततने की टिकड़ी।

अलग करो तीन रोटी, एने लावा टिकड़ी, (पू., स्त्रि.)

जितने (आटे) की तीन रोटियां बनी हैं, उतने की एक टिकड़ी बनी है। तीन रोटियां अलग करो, टिकड़ी ही लाओ। इसलिए कि एक मोटी रोटी खाने से तो एक ही रोटी मानी जाएगी और तीन खाने से तीन रोटियां की गिनती की जाएगी।

जनती न ढोल बजता, (स्त्रि.)

किसी स्त्री का अपने मूर्ख पुत्र के संबंध में कहना, जिसके कारण घर की बदनामी हो रही है।

(लड़का पैदा होने पर ढोल बजता है। साथ ही ढोल बजने का अर्थ ढिंढ़ोरा पिटना या बदनामी होना भी है।)

जनना और मरना बराबर है, (स्त्रि.)

प्रसव में स्त्री को बड़ा कष्ट होता है।

जनम के कमबख़्त, नाम बख़्तावरसिंह

गुण के विरुद्ध नाम।

जनम के दुखिया, नाम सदासुख

दे. ऊ.।

जनम के दुखिया, करम के हीन, तिनका देव तिलंगवा कीन

स्पष्ट।

(फौज का सिपाही कभी घर पर नहीं रह पाता, इसलिए ऐसा कहा गया है।)

जनम के मंगता, नाम दाताराम

दे. ऊ.।

(इस तरह की सब कहावतों का यह अर्थ नहीं है कि वे गुण के विरुद्ध नाम होने पर ही प्रयुक्त की जाती हों। वास्तव में वे व्यंग्य में किसी को नीचा बताने के लिए ही कही गई हैं।)

जनम के साथी हैं, करम के साथी नहीं

(1) बुरे कामों का कोई साथी नहीं होता।

(2) भाग्य में कोई हिस्सा नहीं बंटा सकता। सब अपना-अपना भोगते हैं।

जनम-जनम को छूट गई

(1) जन्म-जन्मान्तर के लिए छुटकारा पाया।

(2) जन्म-जन्मान्तर के लिए कलंक धुल गया।

जनम न देखा बोरिया, सपने आई खाट

(1) झूठी शान दिखाने वाले के लिए क.।

(2) साधारण स्थिति में रहकर बड़ी-बड़ी चीजों का स्वप्न देखने वाले के लिए भी क.।

बोरिया=टाट का बोरा।

जनमपत्र सब देखते हैं, करमपत्र कोई नहीं देखता

भाग्य-लिखा कोई नहीं जान सकता।

जनम पत्र की विध तो मिला लो

जल्दी न करो, पहले देख तो लो कि यह काम होगा कैसे?

(हिंदुओं के यहां विवाह में वर और कन्या की जन्मपत्री देखी जाती है। जब उनके गुण ज्योतिष के अनुसार परस्पर मिल जाते हैं, तभी विवाह पक्का होता है।)

जने-जने का मन रखते, वेश्या हो गई बांझ

सबको प्रसन्न रखना बड़ा कठिन है। इस तरह के प्रयास में वेश्या का जीवन ही अकारथ जाता है।

ज़फ़ा क़फ़ा राजाओं पर पड़ती आई है

विपत्ति सब पर पड़ती है।

जब अपना उतार लो तो दूसरे की उतारते क्या लगता है?

जिस आदमी ने अपनी इज्ज़त की परवाह नहीं की, वह दूसरे की इज्ज़त की परवाह क्यों करने चला?

(उतारने का मतलब इज्ज़त उतार लेने से है।)

जब आंखें चार होती हैं मुहब्बत आ ही जाती है

(1) आपस में मिलने पर प्रेम उत्पन्न हो ही जाता है। अथवा

(2) मिलने पर लिहाज करना ही पड़ता है।

जब आया देही का अंत, जैसा गदहा वैसा संत

मृत्यु के लिए सब बराबर है।

जब आवे बरसन का घाव, पछवा गिने न पुरवा बाव, (कृ.)

बरसने वाले बादल बरस कर ही रहते हैं, फिर चाहे पश्चिम की हवा चले या पूरब की।

(वैसे पश्चिम की हवा चलने पर ही वर्षा होती है।)

जब ऐसे हों, तब ऐसे हो

जब तुम्हारे ऐसे (बुरे) कर्म हैं, तभी तुम्हारी ऐसी (बुरी) दशा है।

जब करी आस, तब आए तेरे पास

तुमसे आशा करके ही हम आए हैं।

('जब करें आस, तब आएं तेरे पास' इस प्रकार भी यह कहावत सुनी जाती है।)

जब चने थे तब दांत न थे, जब दांत हुए तब चने नहीं
साधनों के रहते उनका उपयोग नहीं किया जा सका और जब उनका उपयोग करने के योग्य हुए, तब साधन नहीं।

जब जैसा, तब तैसा
जब जैसा समय हो, तब वैसा ही काम करना चाहिए।

जब तक ऊंट पहाड़ के नीचे नहीं आता, तब तक वह जानता है 'मुझसे ऊंचा कोई नहीं'
जब तक किसी मनुष्य का अपने से अधिक योग्य व्यक्ति से मुकाबला नहीं पड़ता, तब तक वह अपने को ही सबसे बड़ा समझता है। अंधेरे में रहना।

जब तक करूं 'बाबू, बाबू' तब तक करूं अपने काबू (स्त्रि.)
जब तक 'बाबू, बाबू' अर्थात् खुशामद करती रहती हूं, तब तक वह मेरे काबू में रहता है।

जब तक गंगा जमुना बहे
जब तक पृथ्वी रहे।

जब तक चांद सूरज हैं
जब तक यह सृष्टि है।
(ऊपर के दोनों वाक्य आशीर्वाद देने के लिए प्रयुक्त होते हैं।)

जब तक जीना, तब तक सीना, (स्त्रि.)
जब एक आदमी ज़िंदा रहता है, तब तक उसे संसार के कामों में लगा ही रहना पड़ता है।

जब तक तंगदस्ती है, परहेज़गारी है
आर्थिक कठिनाई जब तक रहती है, तब तक आदमी संयम से काम लेता है।

जब तक दम है, तब तक ग़म है
जीवन में एक न एक दुख लगा ही रहता है।

जब तक पहिया लुढ़कता है, तभी तक गाड़ी है
(1) जब तक कोई वस्तु काम में आती रहे, तभी तक उसके नाम की सार्थकता है। अथवा
(2) अवसर का उपयोग कर लेना चाहिए।
(पहिए का लुढ़कना बंद होने पर गाड़ी, फिर निकम्मी हो जाएगी, उससे काम नहीं लिया जा सकेगा।)

जब तक पहिया लुढ़के लुढ़काए जाओ
जब तक भी काम चलता रहे, चलाते रहना चाहिए। बीच में थककर मत बैठो।

जब तक बहू कुंआरी, तब तक सास बारी। बहू आई गौद में, लाड़ गया हौद में। (स्त्रि.)
जब तक बहू पुत्रवती नहीं होती, तभी तक सास का उस पर लाड़-प्यार रहता है। पुत्रवती होने पर वह प्यार लड़के पर केंद्रित हो जाता है।

जब तक रकाबी में भात, तब तक मेरा तेरा साथ
स्वार्थमय प्रेम।

जब तक सांस, तब तक आस
(1) सांस जब तक रहती है, तब तक (मरणासन्न आदमी के) जीवन रहने की आशा भी रहती है।
(2) आशा अंत तक मनुष्य का साथ नहीं छोड़ती या अंत तक आशा रखो।

जब तीर छूट गया, तो फिर कमान में नहीं आ सकता
(1) मुंह से निकली बात फिर लौट नहीं सकती। इसलिए सोच-विचार कर बात करे।
(2) एक बार जो काम हो जाता है, वह फिर व्यर्थ नहीं जा सकता।

जब तू न्याय की गद्दी पर बैठे तो अपने मन से तरफ़दारी, लालच और क्रोध को दूर कर
स्पष्ट। नीति वाक्य।

जब तेरे पेट में खुड़िया लगे, तब मीठा और सलोना क्या रे?
भूख में मीठा और नमकीन सब बराबर।
खुड़िया=क्षुधा।

जब दांत न थे, तब दूध दियो, जब दांत भये का अन्न न देयगो
ग़रीबी में ईश्वर पर भरोसा रखने के लिए कहा गया है।

जब दिन आए भले, तब लड्डू मारे, चले, (पू.)
अच्छे दिन आने पर लड्डू अपने-आप खाने को मिलने लगते हैं। किसी भाग्यवादी का कथन।
('मारना' एक मुहा. है, जिसका अर्थ बिना परिश्रम के बहुत-सी चीज़ प्राप्त करना होता है।)

जब दिया दिल तो फिर अन्देशा-ए रुसवाई क्या?
जब प्रेम ही किया, तो फिर बदनामी का क्या डर?

जब देखो तब नाज़िर मियां नत्थू का टाला
जब देखो तब मियां नत्थू मौजूद।
(ऐसे मुफ़्तखोरे के लिए क., जो हमेशा दरवाजे पर आ जाया करता हो।)
टाला=आना-जाना, घूमना।

जब देना होता है, तो छप्पर फाड़कर देता है
ईश्वर को जब देना होता है, तब वह देने का रास्ता निकाल ही लेता है। भाग्यवादी की उक्ति।

जब नटनी बांस पर चढ़ी, तो घूंघट क्या ?
जब किसी काम को करने पर उतारू ही हो गए, तो फिर

उसमें संकोच से क्या लाभ ?

(नटनी यानी नट की स्त्री बांस पर चढ़कर तरह-तरह की कलाबाज़ियां दिखाती है। अब यदि वह घूंघट से अपना मुंह छिपा ले, तो फिर खेल कैसे दिखाएगी?)

जब नाचने निकली, तो घूंघट क्या?

दे. ऊ.।

(इस कहावत का भाव भी लगभग ऊपर की कहावत जैसा ही है। पर मुहावरे में नाचने का अर्थ निर्लज्ज बनकर काम करना भी होता है। इसलिए यहां उसका यह अभिप्राय लगाना अधिक ठीक होगा कि किसी बुरे काम को भी करने का इरादा यदि किया, तो उसे अच्छी तरह ही करना चाहिए।)

जब प्रजा नहीं, तो राजा कहां?

प्रजा से ही राजा होता है।

जब फेंको तब पांचे तीन

जब पांसा फेंकते हैं, तब पांच और तीन ही पड़ते हैं। किसी काम में हमेशा सफल होना।

(चौसर के खेल में पांच और तीन के पांसे अच्छे माने जाते हैं। उनसे गोटों के चलने में सुभीता होता है।)

जब बिगड़े तब सुघड़ नर, क्या बिगड़ेगा कूढ़।
मट्ठे का क्या बिगड़ना, जब बिगड़े जब दूध।

जब बिगड़ता है, तब चतुर आदमी ही बिगड़ता है। मूर्ख क्या बिगड़ेगा। मट्ठा नहीं बिगड़ता, जब बिगड़ता है, तब दूध ही बिगड़ता है।

जब भये सौ, तब भाग गया भय, (व्य.)

कर्ज़ की रकम सौ पर पहुंच जाने पर अधिक चिंता नहीं रहती। (तब फिर साहूकार को ही फिक्र रहती है कि वह किसी तरह वसूल हो जाए।)

जब साजन को होय लुगाई,
तोरे कोट और फांदे खाई।

दुराचारिणी को बुरे मार्ग पर जाने से कोई रोक नहीं सकता।

जब भी तीन और अब भी तीन, जब पाए तब तीन ही तीन

स्थिति में कोई परिवर्तन न होना।

जब भूख लगी भड़ुवे को, तंदूर की सूझी
और पेट भरा उसका तो फिर दूर की सूझी, (स्त्रि.)

(1) स्त्री का अपने निकम्मे पति के संबंध में कहना।

(2) दिखावटी प्रेम करना।

जबर की जोय महतारी होय, निबल की जोय मेरी साली, (पू.)

ज़बर्दस्त की स्त्री को मां समझते हैं, और कमजोर की स्त्री को साली बनाते हैं।

निर्बल को सब सताते हैं।

ज़बर्दस्त का ठेंगा सिर पर

ज़बर्दस्त के आगे सबको दबना पड़ता है।

ज़बर्दस्त की बीसों बिस्वा

ज़बर्दस्त की सब बात ठीक।

बिस्वा=बीघे का बीसवां भाग।

'बीसों बिस्वा' एक मुहावरा भी है, जिसका अर्थ है निश्चित, निस्संदेह, सही।

ज़बर्दस्त को लाठी सिर पर

दे.—ज़बर्दस्त को ठेंगा...।

ज़बर्दस्त मारे और रोने न दे

ज़बर्दस्त कमजोर को हर तरह से दबाता है।

ज़बर्दस्त सबका जंवाई

सब उससे दबते हैं।

जब लग पैसा गांठ में तब लग उसका भार।
साईं इस संसार में, स्वारथ का त्यौहार।

स्पष्ट।

जब लग साक़ी, तब लग आस

स्पष्ट।

साक़ी=(1) वह जो दूसरों को शराब पिलाता है।

(2) प्रेमिका या प्रिय के लिए प्रयुक्त होने वाला एक शब्द।

जब लागी चाट, तब सूझा हलवाई को हाट

चटोरे के लिए क.।

जब ले सखा के भाव आई, तब ले पूत के आंखी जाई, (पू.)

जब तक ओझा के सिर देवता आएंगे, तब तक लड़के की आंखें ही चली जाएंगी। मतलब—जब तक सहायतार्थ प्रतीक्षा करेंगे, तब तक काम ही बिगड़ जाएगा।

(कुछ समय पहले तक ग्रामीण जनता अज्ञान के कारण साधारण रोगों को चिकित्सा के लिए भी झाड़-फूंक और टोना-टोटका की शरण लिया करती थी। ओझा या गुनिया के सिर देवता आते थे, और वह जैसा कहता था, वही किया जाता था। कहावत उसी प्रथा पर आधारित है। किसी के लड़के की आंखों में दर्द है। पर ओझा के सिर देवता आने में देर हो रही है। तब उपर्युक्त बात उसने कही।)

जब लौ कुठला में नाज, तब लौ जलहटू को राज, (पू.)

साधारण आदमी के पास जब तक खाने को रहता है, तब तक वह किसी की परवाह नहीं करता।

जब सती सत पर चढ़े, तो पान खाना रस्म है।
आबरू जग में रहे, तो जान जाना पश्म है।
सती जब अपने पति के साथ चिता में चढ़ने लगती है, तो उसे पान खाने को मिलता है। संसार में प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए प्राण भी देना पड़े, तो कोई बात नहीं।

जब सब पनहारी तो पनहारी कहाई
जब और सब काम करके हार गई, तब पनहारी बनी। पनहारिन की निंदा।

जब से उगे बाल, तब से यही हवाल, (स्त्रि.)
जब से बड़े हुए, तब से यही हाल है। प्रायः बुरे लड़के के लिए क.।

ज़बान के आगे लगाम ज़रूर चाहिए
मुंह से बात संभालकर निकालनी चाहिए।

ज़बान के आगे लगाम नहीं
जब कोई न कहने योग्य बात कहे, तब क.।

ज़बान के नीचे ज़बान है
दो भिन्न प्रकार की बात करना।

ज़बान क्या चली, दो हल चल गए
जो मन में आए सो कह दे, उसके लिए क.।

ज़बान जने एक बार, मां जने बार-बार
ज़बान से जो बात निकली सो निकली, उसे पलटना नहीं चाहिए।

ज़बान मत फेरो
कही हुई बात की रक्षा करो।

ज़बान शीरीं, मुल्कगीरी, ज़बान टेढ़ी, मुल्क बांका
मीठी बोली से आदमी सबको वश में कर लेता है। कड़वे वचन बोलने वाले के सब शत्रु बन जाते हैं।

ज़बान से खंदक पार
डींग हांकने वाले के लिए क.। केवल बातों से ही खंदक पार।

ज़बान से बेटा-बेटी पराये होते हैं।
ज़बान देकर बदलना नहीं चाहिए। जिसे ज़बान दे देते हैं, उसी के यहां लड़के-लड़की का संबंध करते हैं।

ज़बान ही हलाल है, ज़बान ही मुरदार है
जीभ ही न्याय करती है और जीभ ही अन्याय।

ज़बान ही हाथी चढ़ावे, ज़बान ही सिर कटवावे
बातों से ही हाथी चढ़ने को मिलता है, और बातों से ही आदमी मारा भी जाता है। इसलिए बात सोच-समझ कर करना चाहिए।
(बातों हाथी पाइये, बातों हाथी पांव।)

ज़बानी जमा ख़र्च बताना
कोरी बात करना।

जमना किनारे घर किया, क़र्ज़ काढ़ के खायं।
जब आवे कोई मांगने, गड़प जमुना में जायं।
जो उधार लेकर खाए और न दे, उसके लिए क.।

जम से बुरी जनेत, (हिं.)
बराती यम से भी बुरे होते हैं, क्योंकि लड़की वाले को उनपर खर्च करना पड़ता है।

जमात करामात
संगठन में ही बल है।

जमा लगै सरकार की और मिरज़ा खेलें फाग
दूसरे के पैसे पर मौज करना।

ज़मींदार की जड़ हरी
ज़मींदार हमेशा मौज करता है।

ज़मींदार को किसान, बच्चे को मसान
ज़मींदार के लिए किसान वैसा ही है, जैसा बच्चों के लिए प्रेत।
(मसान एक प्रेत होता है।)

ज़मींदारी दूब की जड़
हमेशा फलती-फूलती रहती है।
दूब=एक घास, जो बहुत फैलती है।

ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाते हैं
बहुत बातूनी या झूठे के लिए क.।

ज़मीन सख़्त और आसमान दूर है
कहां जाकर शरण लूं? किसी विपदग्रस्त का कथन।

ज़र का जायल करना जी से जी मरना है।
धन को बर्बाद करना जीते-जी मरना है।

ज़र का ज़ोर पूरा है और सब अधूरा है
पैसे का बल ही बड़ा बल है।

ज़र का तो ज़र्रा भी आफ़ताब है, बेज़र की मट्टी ख़राब है।
धन का तो एक कण भी सूर्य के समान है, धनहीन की बर्बादी होती है।

ज़र को ज़र ही खेंचता है।
धन से धन पैदा होता है।

ज़र गया ज़र्दी छाई, ज़र आया सुर्खी आई
बिना पैसे के आदमी उदास नज़र आता है, पैसे से खुश दिखाई देता है।

ज़र, ज़मीन, ज़न, झगड़े की जड़
जब झगड़ा होता है, तब संपत्ति, ज़मीन और स्त्री को लेकर।
ज़र, ज़ोर ख़ुदादाद है
धन और बल ईश्वर की देन है। भाग्यवादी का कथन।
ज़रदार का सौदा है, बेज़र का ख़ुदा हाफ़िज़
धनी ही हर चीज ख़रीद सकता है, धनहीन का तो ईश्वर मालिक है।
ज़र दीजे हज़ार मगर दिल न दीजे, उलफ़त बुरी बला है, किसी से न कीजे
रुपया दे दे, पर दिल न दे। प्रेम बुरी चीज है, किसी से न करे।
ज़र नेस्त इश्क टें-टें
बिना पैसे के इश्क नहीं होता।
ज़र फैलाया और कार बराया
पैसा खर्चा और काम बना।
ज़र बल न ज़ोर बल
(1) न धन-बल, न शरीर-बल।
(2) धन-बल ही सच्चा बल है, शरीर का बल उसके सामने कुछ नहीं।
ज़र हज़ार जेब लगाता है, बेज़र बिगड़ा नज़र आता है।
धन से हज़ार काम संभलते हैं, धनहीन बिगड़ा नज़र आता है।
जर है तो नर है, नहीं तो खंडहर है
पैसे के बिना कोई नहीं पूछता।
ज़र है तो नर है, नहीं तो पंछी बेपर है
पैसे से ही आदमी का महत्व बढ़ता है।
ज़रा ज़रा-सा कर लिया, और अपना पल्ला भर लिया
थोड़ा-थोड़ा संचय करने से बहुत हो जाता है।
जरा न ज़दूर, गांठ मेरी भरपूर
पास में कुछ नहीं और कहते हैं मैं मालदार हूं। ज़दूर=सर्पात्त।
ज़रा-सा खावे बहुत बतावे, वह है बहू सुघड़ैली।
बहुत खावे कम बतलावे, वह बहुत अड़ बिगड़ैली।
जो बहू थोड़ा खाए और बहुत बताए, वही सुघड़ है, जो बहुत खाए और थोड़ा बताए, वह बिगड़ैल है।
ज़रा-सा मुंह बड़ा-सा पेट
बहुत खाऊ या द्वेष रखने वाले लड़के के लिए क.।
ज़रा-सा मुंह बड़ी बातें
लड़के के लिए क.।
जरे जायें, सूझे सुक्कर, (पू.)
मरने जा रही है, फिर भी शुक्र देख रही है।
(शुक्र एक अशुभ ग्रह माना जाता है। कहावत का अभिप्राय यह है कि पति के साथ चिता में जलने जा रही है, किंतु शुभ-अशुभ नक्षत्र की चिंता कर रही है।)
जलते की जाई, ग़रीब के गले लगाई
अभागे की लड़की ग़रीब को व्याही।
जैसे को तैसा मिलना।
जलमय भगवान है
स्पष्ट।
जल में खड़ी प्यासों मरे, (स्त्रि.)
अभाव न होते हुए भी कष्ट भोगना।
जल में बसे कमोदनी, और चंदा बसे अकास।
जो जन जाके मन बसे, सो जन ताके पास।
स्पष्ट।
जल में मछली, नौ-नौ कुटिया बखरा
मछली अभी पानी में है फिर भी लोग उसे नौ नौ टुकड़े करके आपस में बांट रहे हैं।
काम पूरा हुआ नहीं, फिर भी हिस्सेदार अपना हिस्सा लगा रहे हैं।
जल सूर बामन, रनसूर छत्री, कलम सूर कायथ, गंड सूर खत्री।
ब्राह्मण नहाने में, क्षत्रिय लड़ाई में, कायस्थ कलम चलाने में बहादुर होता है। खत्री कायर होता है। यह सब धारणाएं हैं, जिनका आधार तो होगा ही, पर चिर-सत्य नहीं।
जलाने को फूस नहीं, तापने को कोयला
ऊंचा दिमाग रखने वाले को क.।
जले को जलाना, नमक-मिर्च लगाना
पीड़ित को और कष्ट देना।
जले घर की बलेंडी
ऐसा व्यक्ति जो परिवार में अकेला बचा हो।
बलेंडी=वह लंबी लकड़ी जिसके सहारे छप्पर रखा जाता है।
जले पराई धी और हंसे बटाऊ लोग
दूसरे की हानि होते देख प्रसन्न होना।
धी=लड़की। बटाऊ=राहगीर।
जले पांव की बिल्ली, (स्त्रि.)
ऐसी स्त्री जो लड़ाई-झगड़ा करती फिरे।

जले फफोले फोड़ते हैं
किसी पर अपना गुस्सा उतारना, कोसना, गाली देना।

जलेबियों की रखवाली और चोट्टी कुतिया
अविश्वसनीय आदमी को किसी चीज की रखवाली का काम सौंप देना।

जले हुए तो पत्थर मारा करते हैं।
ईर्ष्या-द्वेष से कुढ़ा बैठा आदमी पत्थर तो फेंकेगा ही। मतलब किसी न किसी तरह अपना गुस्सा उतारेगा ही।

जले हुए यों ही कहा करते हैं
स्पष्ट। दे. ऊ.।

जवान जाय पताल, बुढ़िया मांगे भतार, (पू.)
जवान तो मरी जा रही है और बुढ़िया ब्याह किया चाहती है। असंगत बात पर क.।

जवान डरावे भागने से, बूढ़ा डरावे मरने से
स्पष्ट।

जवान रांड, बूढ़े सांड़
दे.—जवान जाय पताल...

जवानी और उस पर शराब, दूनी आग लगती है
स्पष्ट।

जवानी दीवानी
जवानी में आदमी पागल हो जाता है। उसे अच्छा-बुरा नहीं सूझता।

जवानी में गधे पर भी जोबन होता है
युवावस्था में कुरूप मनुष्य भी सुंदर लगता है।

जवानों को चला-चली, बुढ़िया को ब्याह की पड़ी
उल्टा काम।

जवाब तुर्की-बतुर्की
जैसे को तैसा जवाब।

जवाबे जाहिलां बाशद ख़ामोशी, (फा.)
मूर्ख की बात का जवाब मौन है।

जस किया तस पाया
जैसा किया, वैसा फल मिला।

जस केले के पात में, पात पात में पात।
तस ज्ञानी की बात में, बात बात में बात।
केले के पौधे में पत्ते ही पत्ते होते हैं, उसी प्रकार बना हुआ ज्ञानी कोरी बातें करता है।

जस दूलह तस बनी बराता
जैसा आदमी वैसे ही उसके साथी भी।

जस मुकुंद तस पावल घोड़ी, बिधना आन मिलावल जोड़ी
जैसे मुकुंद हैं, वैसी ही उन्हें घोड़ी भी मिल गई। ईश्वर ने स्वयं आकर जोड़ी मिलाई। जैसा आदमी वैसा ही उसका साज-सरंजाम या साथी भी हो, तब क.। दे.—जस दूलह...।

जहां का मुरदा तहां ही गोर
जहां का मुरदा होता है वहीं गड़ता है। जहां की चीज वहीं ठिकाने लगती है।

जहां कुत्ता होता है, वहां नेकी का फ़रिश्ता नहीं आता
स्पष्ट।
मुसलमानों का एक विश्वास।

जहां के मुरदे तहां ही गड़ते हैं
स्पष्ट।
दे.—जहां का मुरदा...।

जहां ख़र्च नहीं, वहां हर एक गांठ का पूरा
जहां पैसे की जरूरत नहीं, वहां हरेक की जेब भरी रहती है—जहां जरूरत होती है, वहां जेब खाली हो जाती है।

जहां खाना, वहां सबका ठिकाना
जहां आदमी की गुज़र-बसर हो, वहीं उसका ठिकाना भी समझना चाहिए।

जहां गंग, वहां रंग
गंगा-स्नान करने वाले का कहना कि गंगा के साथ रंग भी है।

जहां गंज वहां रंज
जहां पैसा होता है, वहां परेशानियां भी बहुत होती हैं। गंज=ढेर, धनराशि।

जहां गढ़ा होगा, वहां पानी भरेगा
अर्थात कीचड़ होगा। गोसाईं तुलसीदास जी ने कहा है—अंतहु कीच तहां जहं पानी।

जहां गुड़ होगा, वहां मक्खियां आएंगी
जहां पैसा होगा, वहां खाने-पीने वाले भी पहुंचेंगे।

जहां जाय भूखा, वहां पड़े सूखा
दुखिया को सब जगह दुख है

जहां जाएं वाले मियां, तहां जाए पूंछ
जब कोई हमेशा किसी के साथ लगा रहता है, तब क.।

जहां जिसके सींग समाएं, वहां निकल जाएं
जहां जिसकी गुज़र हो, वहां चला जाए, ऐसा भाव प्रकट करने को क.।

जहां डर, वहां हमारा घर
निडर का कहना।
जहां ढाक वहां डाकू
ढाक के जंगल में डाकू ज्यादा रहते हैं।
जहां तुम्हारा पसीना गिरे, वहां हम खून गिराएं
मतलब—तुम्हारा अच्छी तरह साथ देंगे।
जहां दल, तहां बादल
जहां लोगों की भीड़ होती है, वहीं धूल उड़ती है।
जहां देखी रोटी, वहां मुंड़ाई चोटी, (स्त्रि.)
जिससे कुछ मिलने की आशा हुई, उसी के चेला बन गए अथवा उसी की खुशामद करने लगे।
जहां देखें गुना पुड़ी, तहां जाएं लुरही लुरही, (स्त्रि.)
जहां खाने-पीने का डौल देखा, वहीं पहुंच गए।
गुना=एक तरह का पकवान, जो प्रायः व्याह में बनता है।
जहां देखे तवा-परात, वहां गाये सारी रात, (स्त्रि.)
स्पष्ट ।
दे. ऊ.
जहां न जाको गुन लहे, तहां न ताको पांव।
धोबी बसकर क्या करे, दिगंबरन के गांव।
जहां अपने गुण की कद्र करने वाला कोई न हो, वहां नहीं रहना चाहिए।
जहां न जाए सूई, वहां भाला घुसेड़ते हैं
(1) गुंजाइश से अधिक की आशा करना।
(2) अतिशयोक्ति से काम लेने पर भी क.।
जहां पड़े मूसल, वहां खेम कूसल
जहां मूसल से अनाज कुटता रहे, वही समझो क्षेम-कुशल है।
जहां बड़ी सेवा, तहां ओछे फल
जहां बहुत खुशामद करनी पड़ती है, वहां नतीजा भी कुछ अधिक अच्छा नहीं मिलता।
जहां बहू का पीसना, वहीं ससुर की खाट
एक आपत्तिजनक बात।
(हिंदू घरों में बहू ससुर से परदा करती है। तब जहां ससुर लेटा है, वहां बैठकर वह पीसेगी कैसे?)
जहां बालक तहां पेखना, जहां गोरस तहं धोर।
जहां राजा मिठ बोलना, बसें घनेरे लोग।
जहां बालक होते हैं वहीं खिलौने भी होते हैं, जहां दही होता है, वहीं दही का शर्बत भी होता है, जहां राजा मिष्टभाषी होता है, वहीं अधिक लोग बसते हैं।
जहां बालों का बैठना, वहां भूतों का बास
दे.—जहां बहू का पीसना...।
(कहावत का यह अभिप्राय भी हो सकता है कि जहां बालक होते हैं, वहीं प्रेतबाधा भी अधिक होती है।)
जहां मुरगा नहीं होता, वहां क्या सबेरा नहीं होता?
किसी के बिना कोई काम रुका नहीं रहता।
जहां रुख नहीं, तहां अंड रुख
जहां कोई विद्वान, गुणवान या धनी व्यक्ति नहीं होता, वहां बहुत कम विद्या, गुण या धन वाला व्यक्ति ही बड़ा माना जाता है।
जहां सेर, वहां सवैया
थोड़े के लिए कोई काम क्यों बिगड़े, ऐसा भाव प्रकट करने को क.।
जहां सौ, वहां सवा सौ
दे. ऊ.।
जहाज का कौवा
जिसका कहीं ठिकाना न हो, जो घूम-फिरकर अपनी ही जगह पर आए, उसके लिए क.।
जाओ नेपाल, साथ आये कपाल, (पू.)
(1) कहीं भी जाओ, भाग्य साथ नहीं छोड़ता।
(2) अकर्मण्य कहीं कुछ नहीं कर सकता।
जाओ पूत दक्खिन, वही करम के लच्छन, (स्त्रि.)
दे. ऊ.।
मां को अपने निकम्मे लड़के से क.।
(गुजराती में भी कहते हैं—अखण गया दख्खण गया, पण लख्खन नहि गया।)
जाकी आछी सास, वाका ही घर वास।
जाकी सास नकारा, वाका नहीं गुजारा। (स्त्रि.)
जिसकी सास अच्छी, वही सुखी रहती है; जिसकी सास बुरी, वह दुख भोगती है।
जाके कारन पहरी सारी, वही टांग रही उघारी, (स्त्रि.)
जिस कष्ट से बचने (या लाज-शरम को ढकने)
के लिए इतना झंझट मोल ली, वह ज्यों का त्यों ही बना रहा।
(साड़ी पहनने से मतलब व्याह करने से है।)
जाके पास रहिए, ताही की-सी कहिए
जिसके पास रहे, उसी का पक्ष लेना चाहिए।

जाको जां स्वारथ सधे, सोई ताह सुहात।
चोर न प्यारी चांदनी, जैसे कारी रात।
जिस चीज से जिसका काम बनता है, उसे वही अच्छी लगती है फिर वह बुरी ही क्यों न हो।

जाको जौन स्वभाव, जाय नहीं ज्यू से।
नीम न मीठा होय, सींच गुड़ ध्यु से।
कितना ही उपाय क्यों न करो, किंतु जिसका जो स्वभाव है, वह नहीं मिटता।

जाको डंडा ताकी गाय, मत करो कोई हाय-हाय
जमाना ताकत वाले का है, इसके लिए हाय-हाय करना व्यर्थ है।

जाको राखे साइयां, मार न सक्के कोय
ईश्वर जिसका रक्षक है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

जाका राम रच्छक, ताको कौन भच्छक, (हि.)
स्पष्ट। दे. ऊ.
भच्छक=भक्षक। मारने वाला।

जाको लोह, ताको सोह
(1) जिसका हथियार, उसी को शोभा देता है।
(2) जिसके हाथ में हथियार है, उसी का सब कुछ है।

जाग जगन्ते पहरुवा, लाग लगन्ते और
पहरुए पहरा देते रहते हैं, पर काम करने वाले तो दूसरे होते हैं, जो अपना मतलब गांठ ले जाते हैं।

जागते की कटिया और सोते का कटड़ा
जागने वाले को भैंस और सोने वाले को भैंसा मिलता है। अर्थात जागने वाला हमेशा मुनाफ़े में रहता है। दे.—जो सोवे उसका पड़वा...।

जागियो ! जागना भला हैगा
स्पष्ट। दे. नीचे।

जागेगा सो पावेगा, सोवेगा सो खोवेगा
सावधान रहने से लाभ होता है।

जाट कहे सुन जाटनी, याही गांव में रहना।
ऊंट बिलैया ले गई, तो हांजी हांजी कहना।
जाट अपनी स्त्री को समझा रहा है कि 'देखो हमें इसी गांव में रहना है। इसलिए अगर कोई कहे कि बिल्ली ऊंट को उठाकर ले गई, तो कहना चाहिए—'हां, बिलकुल ठीक है, बिलकुल ठीक है।'

'जाट रे जाट तेरे सिर पर खाट' 'तेली रे तेली तेरे सिर कोल्हू'—'तुक तो मिली ही नहीं?' 'बोझों तो मरेगा'
किसी तेली ने जाट से कहा—'तेरे सिर पर खाट'। जाट ने जवाब दिया—'तेरे सिर पर कोल्हू'। तेली बोला—'तुक तो मिली ही नहीं।' जब जाट ने कहा—तुक नहीं मिले न सही, 'पर तू बोझ से तो मरेगा।' मूर्ख काव्य या भाषा की विशेषता तो क्या समझे? वह तो अपनी सीमित बुद्धि के अनुसार ही हर बात का अर्थ लगाता है।

जाड़े में रुई या दुई
जाड़े में या तो रुई से या दो से सर्दी कटती है।

जात का बैरा जात, काठ का बैरी काठ
जाति वाले से ही जाति वाले का नुकसान होता है। यदि कुल्हाड़ी में काठ की बेंट न हो, तो केवल कुल्हाड़ी से काठ नहीं कट सकता।

जात की बेटी जात ही के जाती है
उच्च कुल की लड़की उच्च कुल में ही ब्याही जाती है।

जात के बुलाइये बराबर बिठाइये, कम जात के बुलाइये नीचे बिठाइये
स्पष्ट। यह सब जातपांत वालों की धारणा है, नहीं तो हर नागरिक बराबर है, कोई नीचे क्यों बैठे?

जात खुदा की बे-ऐब है
ईश्वर ही ऐसा है, जिसमें कोई दोष नहीं।

जात गंवौलों, पेट न भरल
किसी छोटी जाति वाले के यहां भोजन करके जाति खो दी या जाति भी गंवाई और पेट भी न भरा। भोजन से जाति नहीं जाती, पर यह धारणा तब भी थी, जब छुआछूत को धर्म मानते थे। ईमान भी हाथ से खोया और कोई विशेष लाभ नहीं हुआ।

जात-भांत पूछे नहिं कोई, कुर्ती पहिन तिलंगवा होई
वर्दी पहनने से ही सिपाही बन जाता है। फिर कोई नहीं पूछता कि तुम कौन जात हो।

जात-भांत पूछे नहिं कोई, जनेऊ पहिन के बामन होई
स्पष्ट।

जात-भांत पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई
स्पष्ट।
(ऊपर की तीनों कहावतों में 'जात-भांत' के स्थान पर प्र. पा.—जात-पांत है।)

जात मद पिये मालूम होय
किसी ने शराब पी रखी हो, तो उससे उसकी जाति का पता लग जाता है।

जात में तुरुक और बाज में हुड़क
ये दोनों बहुत शोर मचाने वाले होते हैं।

हुडुक=एक प्रकार का छोटा ढोल।

जान का मुंह नहीं करते, रुपए का मुंह करते हैं
जान का ख़्याल नहीं करते, रुपए का ख़्याल करते हैं।
जब कोई आदमी बीमार पड़ने पर अथवा किसी और मुसीबत में पैसा खर्च न करे, तब क.।

जान का सदका माल, इज़्ज़त का सदका जान
जरूरत पड़े, तो जान बचाने के लिए माल और इज़्ज़त बचाने के लिए जान—न्यौछावर कर देना चाहिए।

जान की जान गई, ईमान का ईमान
हर तरह से घाटे में रहना।

जान के साथ जेवड़ा
मरते दम तक गले का यह फंदा नहीं छूटेगा।
जब कोई अपनी स्त्री या अपने पति से बहुत दुखी रहता हो, प्रायः तब क.।

जान जाय, माल न जाय
कंजूस के लिए क.।

जानता चोर गांव उजाड़े
भेद जानने वाला चोर अधिक हानिकारक होता है।

जानते का दिल, अनजानते का कलेजा, (स्त्रि.)
समझदार आदमी दयावान होता है।
(यहां दिल से मतलब आत्मा से है।)

जान न पहचान, खाला बड़ी सलाम, (स्त्रि.)
बिना परिचय के ही रिश्ता जोड़ना।

जानन वाले जानिए, मूरख मन पछताय।
करनी भूली आपनी, औरों दोष लगाय।
मनुष्य अपने कर्मों का फल भोगता है। दूसरों को दोष लगाता है।

जान बची, लाखों पाए
किसी काम से छुटकारा मिला, तो मानो लाखों की संपत्ति मिल गई।

जान मारे बनिया, पहचान मारे चोर
दूकानदार जान-पहचान वालों को ही अधिक ठगता है, क्योंकि संकोचवश वे कुछ कह नहीं सकते और चोर भेद पाकर ही चोरी करता है।

जान में जान आ गई
झंझट से छुट्टी पाई। प्राण बचे।

जान सबको प्यारी है
किसी को सताना नहीं चाहिए।

जान सब में बराबर है
दे. ऊ.।

जान से हाथ धो बैठे हैं
जीने की उम्मीद नहीं।

जान है तो जहान है
दुनिया का सब हाल-चाल जान के साथ है। मरने पर फिर किसी से कोई संबंध नहीं रहता।

जाना अपने बस, आना पराये बस
जाना अपनी इच्छा पर निर्भर करता है, पर आना दूसरे की इच्छा पर।

जाना है रहना नहीं, जाना बिस्वे बीस।
ऐसे सहज सुहाग पर, कौन गुधावे सीस।
स्पष्ट। संसार की नश्वरता पर यह कहा गया है।
(कहा जाता है, यह दोहा मरते समय अमीर खुसरो ने कहा था।)

जाना है रहना नहीं, मोह अंदेसा और।
जगह बनाई है नहीं, बैठेगा किस ठौर।
संसार में रहकर मनुष्य यदि अच्छे कर्म न करता रहे, तो परलोक में फिर उसका कहीं ठिकाना नहीं लगता।

जानेला चिलम जिनका पर चढ़ेला अंगारी, (पू.)
चिलम ही जानती है कि आग को सहन करना क्या चीज है।
जिसे कष्ट होता है, वही उसकी पीड़ा को जानता है।

जाने वाले के हज़ार रास्ते हैं, ढूंढ़ने वाले का एक
भागने वाला न मालूम किस रास्ते से चला जाए, पर ढूंढ़ने वाला तो एक ही रास्ता देखता है।
(भागना आसान, ढूंढ़ना कठिन।)

जाने वाले सिपाहिया के के रोकला? (पू.)
जाने वाले आदमी को कौन रोक सकता है?

जा बिध राखे राम, ताही बिध रहिए
दुख में धैर्य और संतोष से काम लेना चाहिए।

ज़ामिन दुनिया पाप है, त्रिया है महापाप।
दोनों को तू फूंक दे, नाम निरंजन जाप।
स्पष्ट। ज़ामिन कवि ईश्वर-भजन का उपदेश देते हैं।

ज़ामिन दे या दिलाए
जो किसी की ज़मानत देता है, उसे या तो गांठ से रुपया देना पड़ता है या दिलाना पड़ता है।

ज़ामिन न हूजिए, गिरह का दीजिए
किसी का ज़मानतदार होना ठीक नहीं। गांठ से रुपया भरना पड़ता है।

ज़ामिन मत हो चोर का और सींग पकड़ मत चोर का
स्पष्ट।

ज़ामिन होना, धन का खोना

स्पष्ट।

जामिनी पोदनी की क्यार

किसी छोटे आदमी की ज़मानत देना ठीक नहीं।

पोदनी=एक छोटी चिड़िया।

जाय ईमान, रहे सब कुछ

(1) अगर और सब बचता है, तो ईमान जाने दो।

(2) ईमान ही साथ जाता है और सब यहीं छूट जाता है।

(3) स्वार्थी के लिए भी कह सकते हैं, जो ईमान की परवाह नहीं करता।

जाय उस्ताद खाली

उस्ताद की नज़र से कोई ग़लती चूक जाए, यह कैसे हो सकता है ? व्यंग्य में क.।

जायगा साहू का, रहेगा साहू का

नफ़ा, नुकसान मालिक का होगा, मैं क्या करूं?

जाय जान, रहे ईमान

स्पष्ट।

जाय लाख, रहे साख, (व्य.)

भले ही लाखों बर्बाद हो जाएं, पर अपनी साख बनाए रखना चाहिए।

ज़ालिम का ज़ोर सिर पर

अत्याचारी के आगे किसी की नहीं चलती।

ज़ालिम की उम्र कोता

अत्याचारी की उम्र कम होती है, क्योंकि न मालूम लोग कब उसे मार डालें।

कोता=कोताह, छोटा।

ज़ालिम की जड़ भी उखड़ जाती है

अत्याचारी का भी अंत में नाश हो जाता है।

जालिम की रस्सी दराज़ है

अत्याचारी अधिक दिनों जीता है, क्योंकि उसे मारना कठिन होता है।

जासे जाको काम, सोई ताको राम

जिसका-जिसका काम पड़ता रहता है, वही उसके लिए ईश्वर तुल्य है।

ज़ाहिद का क्या खुदा है, हमारा खुदा नहीं?

ईश्वर सबका है।

ज़ाहिद=संत।

ज़ाहिर आबाद, बातीन ख़राब

देखने में भला, पर बातचीत में बुरा।

जाहिर रहमान का, बातीन शैतान का

देखने में ईश्वर का भक्त, पर बातों में शैतान का चेला।

ज़ाहिल फ़कीर शैतान का टट्टू

मूर्ख साधु के सिर पर हमेशा शैतान सवार रहता है।

जाही तें कुछ पाइए, करिए ताकी आस

जिससे कुछ मिल सकता हो, उसी की आशा करनी चाहिए।

जिगर-जिगर है, दिगर-दिगर है

अपना-अपना है, और पराया-पराया।

जिजमान चाहे स्वर्ग को जाए, चाहे नरक को; मुझे दही-पूड़ी से काम

केवल अपना स्वार्थ देखना।

(हिंदुओं में मृतक के क्रिया-कर्म के लिए जो ब्राह्मण आता है, और जिसे विशेष रूप से दान-दक्षिणा तथा भोजन से तृप्त किया जाता है, उसका कहना कि हमें तो पकवान खाने से मतलब, मरने वाला चाहे स्वर्ग जाए चाहे नरक। पुरोहित को पता है कि उसे क्या मिला, बाकी किसी को कुछ भी मिले।)

जिठानी का भैंसा अगड़धोंधों

जिठानी का भैंसा भी खूब तगड़ा रहता है।

(क्योंकि घर में उसी की चलती है।)

जितना ऊपर, उतना नीचे

सब तरह से चालाक; पूरा चालाक। जैसे आठों गांठ कुम्भेत।

जितना करम में लिखा है, उतना मिलेगा।

स्पष्ट।

जितना गरमाएगा, उतना ही बरसेगा, (कृ.)

बादल जितना गरमाता है, उतना ही बरसता है।

जितना गुड़ डालेंगे, उतना ही मीठा होगा

(1) जितना अधिक पैसा खर्च किया जाएगा, चीज उतनी ही अच्छी मिलेगी।

(2) जितनी ज्यादा मजदूरी दी जाएगी, काम उतना ही अच्छा होगा।

जितना छानो, उतना ही किरकिरा

जितनी जांच-पड़ताल करोगे, उतने ही अधिक दोष निकलते आएंगे।

जितना छोटा, उतना ही खोटा

स्पष्ट।

जितना तपेगा, उतना बरसेगा, (कृ.)

दे.—जितना गरमाएगा...।

जितना देगा, उतना पाएगा

दिया व्यर्थ नहीं जाता।

जितना मड़वे में आवेला, उतना कोहबर में न आवे, (पू.)

मंडप के नीचे जितने लोग बैठते हैं, उतने कोहवर में नहीं जाते।

(कोहबर=वह स्थान, जहां विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते हैं। इस स्थान पर घर के खास-खास सगे-संबंधी ही बैठते हैं। कहावत में केवल एक लोकप्रथा की ओर संकेत है। फिर भी उसका यह भाव भी हो सकता है कि सब स्थान सब आदमियों के बैठने योग्य नहीं होते।)

जितना रला है सो चुगलो, (पं.)

जो तुम्हारा है सो ले लो और उसी में संतोष करो।

जितना सयाना, उतना दीवाना

जो जितना चतुर होता है, वह उतना ही परेशान भी होता है।

जितना सस्ता, उतना खराब

सस्ती चीज खराब होती है।

जितना सांप लंबा, उतना ही गोह चौड़ी

कोई किसी बात में बढ़कर है, तो कोई किसी बात में। दोनों एक से (धूर्त)।

जितनी आमद, उतना लोभ

आमदनी के हिसाब से लोभ भी बढ़ता जाता है।

जितनी आमदनी, उतना खर्च

स्पष्ट।

जितनी चादर देखो, उतने ही पैर पसारो

सामर्थ्य के अनुसार ही खर्च करना चाहिए।

जितनी दौलत उतनी ही मुसीबत

स्पष्ट।

जितनी मियां की लंबी दाढ़ी, उतना गांव गुलज़ार

मियां की दाढ़ी जितनी ही बढ़ती है, उतना ही गांव को गुलज़ार समझना चाहिए।

(भाव यह कि मियां को गांव में मुफ़्त का खान को मिल रहा है, जिससे उनकी दाढ़ी अब चिकनी-चुपड़ी हो रही है, और उससे गांव की स्थिति का पता लगाया जा सकता है।)

जितना लाभ, उतना लोभ

स्पष्ट।

जितने काले, उतने बाप के साले

जितने शातिर या बदमाश हैं, वे सब मेरे बाप के साले हैं, यानी मेरी मुट्ठी में हैं।

जितने घने, उतने भले

(1) अक्षर जितने घने लिखे जाएं, उतने ही अच्छे लगते हैं। कहते भी हैं--घने अक्षर बेगरी पांत, सो जाने लिखने की भांत।

(2) जितने लड़के हों उतना ही अच्छा, यह भाव भी निकलता है।

जितने मुंड, उतने पिंड, (हिं.)

जितने लड़के होंगे, पितरों का उतना ही अच्छा श्राद्ध होगा।

जितने मुंह, उतनी ही बातें

(1) किसी एक बात का नाना प्रकार से कहा जाना।

(2) अफ़वाह फैलाना।

जिधर जलना देखें, तिधर तापें

दूसरे की हानि से लाभ उठाना।

जिधर मोला, उधर आसफ़उद्दौला

ईश्वर की मर्ज़ी के खिलाफ तो आसफ़उद्दौला भी नहीं जा सकते।

(आसफ़उद्दौला लखनऊ के प्रसिद्ध नवाब हो गए हैं। यह बड़े दानी थे। कहते हैं, एक बार किसी फ़कीर ने उनके पास आकर एक हज़ार रुपए मांगे। इस पर नवाब ने उसे दस रुपए देकर कहा--'तुम्हारे भाग्य में इतना ही बदा है।' फ़कीर ने जब रुपए लेने से इंकार किया, तब नवाब ने कहा--'कल आना।' दूसरे दिन फ़कीर के आने से पहले ही नवाब ने एक रुपयों की, और एक पैसों की थैली भरवा कर रख दी। फ़कीर आया और रुपए मांगने लगा। नवाब ने उन दो थैलियों में से एक उठा लेने को कहा। दुर्भाग्यवश फ़कीर ने पैसों ही की थैली उठा ली। नवाब ने तब कहा--'तुम्हारे भाग्य में था, सो मिल गया।' उक्त कहावत इसी घटना पर आधारित है।)

जिधर रब, उधर सब

ईश्वर जिसका साथी है, उसके सब साथी हैं।

जिनका मुंह नहीं देखते, उनका पांव छूना पड़ता है।

गर्ज़ पड़ने पर छोटे आदमियों के भी हाथ-पैर जोड़ने पड़ते हैं।

जिनकी बोली में दग़ा, उनके दिल में क्या दग़ा नहीं होगी?

कुछ लोगों में पठानों के लिए कहा जाता है; क्योंकि वे 'दग़ा दग़ा' बहुत कहा करते हैं, जिसका अर्थ उनकी भाषा में होता है 'इसको' 'इसको'। साथ ही दग़ा का एक अर्थ धोखा तो है ही।

जिनकी यहां चाह, उनकी वहां भी चाह

सज्जन पुरुषों की मृत्यु पर कहते हैं कि ईश्वर भी उन्हें चाहता है और अपने पास जल्दी बुला लेता है।

जिनको चाव घनेरा, उनको दुख बहुतेरा

जिनको जितनी अधिक आकांक्षाएं होती हैं, उनको उतना ही अधिक दुख भी होता है।

जिन जाए, उन्हीं लजाए

जिन्होंने पैदा किया, उन्हें ही शर्मिंदा किया।

अयोग्य लड़के के लिए क.।

जिन ढूंढा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ।
बक बिचारा क्या करे, रहे किनारे बैठ।

लाभ तभी होता है, जब कुछ परिश्रम किया जाए और जोखम भी उठाया जाए।

(कबीर का प्रचलित दोहा इस प्रकार है—जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ। हौं बौरी ढूंढ़न गई, रही किनारे बैठ।)

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीत बहार।
अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार। (बिहारी)

जिन दिनों (तूने) वे (सुंदर तथा सुगंधित) फूल देखे थे, वह बहार (वसंत ऋतु) तो बीत गई। हे भ्रमर! अब तो गुलाब के वृक्ष में बिना पत्ते की कंटीली डाल रह गई है।

इसलिए तू अपना दुख छोड़ दे ओर सुख की आशा मत कर।

(यह किसी ऐसी स्त्री पर, जो अपना यौवन खो चुकी है या किसी ऐसे मनुष्य पर जिसने अपना सर्वस्व खो दिया है, अन्योक्ति है।)

जिन पायंन पनही नहीं, तिन्हें देत गजराज।
बिख देते बीखा मिले, साहब ग़रीबनवाज।

ईश्वर बड़े दयावान हैं। उनकी कृपा होने से ऐसे व्यक्ति को भी, जिसके पैरों में जूते नहीं, हाथी बैठने को मिलता है और विष खिलाए जाने की जगह लड़की से विवाह होता है।

(कथा है कि किसी धनाढ्य सेठ के पास एक भिखारी नित्य भीख मांगने आया करता था। उससे तंग आकर सेठ ने अपने आढ़तिये को चिट्ठी लिखी कि इसे बिख (यानी विष) दे दो। आढ़तिये की लड़की का नाम बीखा या विषया था। इसलिए यह समझ कर कि सेठ जी ने उसे ही देने के लिए लिखा है, उसने भिखारी का बड़ा आदर-सत्कार किया और अपनी कन्या का उसके साथ ब्याह करके उसे हाथी पर चढ़ाकर विदा कर दिया।)

जिन बरहा हार चरौ, सौ कैसे चरें प्वांर? (कृ.)

जिन जानवरों ने हरी-हरी घास चरी है, वे भला सूखा प्वांर कैसे चरेंगे।

(सुख भोग चुकने के बाद दुख मुश्किल से भोगा जाता है।)

प्वांर=धान का सूखा भुस।

जियत पिता की पूछी न बात,
मरे पिता को दूध और भात।

(1) कपूत के लिए क.।

(2) हिंदुओं के श्राद्धकर्म पर भी व्यंग्य।

जिए न मार्ने पितृ और मुए करें श्राद्ध

दे. ऊ.।

जिसका आंडू बिके, वह बधिया क्यों करे? (व्यं.)

जो चीज जिस हालत में है, उसी तरह बिक जाए, तो उसमें किसी तरह का परिवर्तन करके बेचने का कष्ट क्यों उठाया जाए?

आंडू=बिना बधिया किया गया बैल।

जिसका काम उसी को छाजे।
और करे तो मूरख बाजे।

जिसका जो काम हैं, वह उसी को शोभा देता है।

जिसका खाइये अनपानी, उसकी कीजे अबादानी, (स्त्रि.)

जिसका अन्न खाए, उसकी भलाई चाहनी चाहिए।

जिसका खाइए, उसका गाइए

जिसका अन्न खाए, उसका पक्ष ले।

जिसका खून उसी की गर्दन पर

हत्या करने का पाप हत्या करने वाले को ही लगता है।

जिसका गुइयां नहीं उसका कूकर गुइयां, (स्त्रि.)

जिसका कोई मित्र नहीं, उसका कुत्ता ही मित्र।

अर्थात कुत्ता मनुष्य का एक अच्छा मित्र है।

जिसका चिकना देखा फिसल पड़े

जहां कुछ मिलने का डौल देखा, वहीं खुशामद करने बैठ गए।

स्वार्थी और मुंहदेखी कहने वालों के लिए क.।

जिसका चिकना देखा=जिसका चिकना मुंह देखा, अर्थात जिसे मालदार देखा।

जिसका चुन्न, उसका पुन्न

दान में जो खर्च करता है, उसी को पुण्य मिलता है

चुन्न=आटा।

जिसका चुएगा, सौ छवा लेगा

जिसका घर (बरसात में) टपकेगा, सो आप छवाता फिरेगा।

(जिसे जो कष्ट होता है, वह आप ही उसकी चिंता करता है।)

जिसका जावे वही चोर कहाए

पुलिस वाले जब चोर का पता नहीं लगा पाते, तब प्रायः वे जिसका माल जाता है, उसी को चोर बनाते हैं। कहावत में उनकी इस आदत को लेकर ही कटाक्ष किया गया है।

जिसका डर, वही नहीं घर, (स्त्रि.)

जब पति घर में नहीं तो चाहे जो करे। परम स्वतंत्र।

जिसका तेज, उसका भेज, (कृ.)

जबर्दस्त ही किराया या मालगुज़ारी (अथवा कर्ज़) जल्दी वसूल कर पाता है।

भेज=पावना।

जिसका पल्ला भारी, वही झुके

(1) जिसके पास पैसा है, वही दे सकता है।

(2) भले आदमी को ही दबना पड़ता है।

(तराजू में भारी पलड़ा ही झुकता है। वहीं से रूपक लिया गया है।)

जिसका पाप, उसका बाप

पाप मनुष्य का बाप है, अर्थात वह उसके सिर पर सवार रहता है।

जिसका फ़िक्र, उसका ज़िक्र

जिस बात की चिंता रहती है, उसकी चर्चा भी की जाती है।

जिसका बनिया यार, उसको दुश्मन की क्या दरकार

बनियों पर ताना।

जिसका मड़वा, उसका गीत, (स्त्रि.)

परिस्थिति के अनुसार ही काम किया जाता है।

मड़वा=मंडप, विवाह।

जिसका यार कोतवाल, उसे डर काहे का

पुलिस वालों पर व्यंग्य। कोतवाल का, जो एक पुलिस अफ़सर होता है, सब जगह बड़ा रौब रहता है, इसीलिए ऐसा कहा गया है।

जिस कारन पहनी सारी, वही टांग रही उघारी

जिस उद्देश्य से किसी काम को करने का कष्ट उठाया, वही पूरा नहीं हुआ। सुख से जीवन बिताने के लिए विवाह किया, पर कपड़े भी पहनने को नहीं मिले।

जिस कारन मूंड़ मुड़ाया, सो दुख आगे आया

जिस दुख से पीछा छुड़ाने के लिए हानि सहकर कोई काम किया, उस दुख से फिर भी पीछा नहीं छूटा।

(कोई मनुष्य मजदूरी करके अपना पेट पालता था। पर नित्य प्रति कठिन परिश्रम करना उसे बहुत खलता था। इसलिए सिर मुड़ाकर साधु हो गया। उसका खयाल था कि साधु बन जाने पर कोई परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। पर दरवाजे-दरवाजे जाकर भीख मांगना उसे और भी कठिन जान पड़ा और तब उसने उक्त वाक्य कहा।)

जिसकी आंख में तिल, वह बड़ा बेसिल

जिसकी आंख में तिल होता है, वह बड़ा बेमुरौव्वत होता है।

(यह एक विश्वास है जिसका सच होना जरूरी नहीं।)

बेसिल=शीलहीन, हृदयहीन।

जिसकी खइये चंदिया, उसकी हूजिये बंदिया, (स्त्रि.)

जिसका खाए उसकी ताबेदारी करे।

चंदिया=रोटी।

जिसकी गोद में बैठे, उसकी दाढ़ी नोचे

कृतघ्न के लिए क.।

जिसकी जीभ चलती है, उसके नौ हर चलते हैं

लंबी-चौड़ी हांकने वाले की सब बात सच।

जिसकी जूती, उसी का सिर

किसी की ख़ातिर उसी के पैसे से करना या किसी की कही बात से खुद उसी को परास्त कर देना।

जिसकी जोरू अंदर, उसका नसीबा सिकंदर

अंग्रेज़ों के जमाने में मेहतर लोग आपस में कहा करते थे। तात्पर्य यह कि जिस मेहतर की औरत आया बनकर अंग्रेज़ के घर घुस गई, उसकी तकदीर खुल गई।

जिसकी तेग, उसकी देग

जिसके हाथ में ताकत है, उसी की सब चीज।

तेग=तलवार।

देग=भोजन पकाने का बर्तन।

जिसकी देग, उसकी तेग

जिसके पास खाने को है, उसी की फ़तह होती है।

(सिपाही उसी की मदद करते हैं।)

जिसकी न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई?

वह दूसरे के उस कष्ट को नहीं समझ सकता, जिसे स्वयं वह कष्ट नहीं हुआ।

बिवाई=एक पीड़ा, जिसमें जाड़े के दिनों में पैरों के तलुए का चमड़ा फट जाता है।

पाठा.—पांव जाके न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।

जिसकी बीवी से काम, उसकी लौंडी से क्या काम?
जब बड़ों तक पहुंच है, तब छोटों की खुशामद करने की क्या जरूरत ?
(जड़ को ही पकड़े।)

जिसकी महल में मैया, मांगे पैसा मिले रुपैया
बड़े आदमी के बेटे को किस बात की कमी?

जिसकी लाठी, उसकी भैंस
बलवान की जीत होती है।

जिसकी सीरत अच्छी, उसकी सूरत भी अच्छी
अच्छे स्वभाव का व्यक्ति देखने में भी अच्छा लगता है।
जिसको सीरत अच्छी नहीं, उसकी सूरत को क्या देखना? जिसका स्वभाव अच्छा नहीं, उससे बात क्या करनी; भले ही उसकी शक्ल अच्छी हो।

जिसके कारन जोगिन भई, वह सइयां परदेस, (स्त्रि.)
जिस के लिए सब छोड़ बैठे, वही उपलब्ध नहीं।

जिसके घर भोज, उसको भात नहीं
क्योंकि वह आदर-सत्कार में लगा रहता है और भोजन करने का समय नहीं पाता।

जिसके चार पैसे लो, उन्हें हलाल करके खाओ
जिससे पैसे लो, उसका काम ईमानदारी से करो।

जिसके चार भैय्या, मारें धौल छीन लें रुपैया
जिसके चार आदमी सहायक होते हैं, वह सब कुछ कर सकता है।

जिसके दिल में रहम नहीं, वह कसाई है
स्पष्ट।

जिसके धी नहीं उसकी देहली धी, (हिं.)
जिसके लड़की नहीं होती, वह देहली को ही लड़की समझता है, अर्थात उसे यदि कुछ देना होता है, तो दरवाजे पर जो आता है, उसे ही देता है।
देहली=द्वार की चौखट दहलीज।

जिसके नहीं पूत, वह क्या जाने माया, (स्त्रि.)
जिसके लड़का नहीं, वह माता की ममता क्या जाने?

जिसके पास ढिबुआ, वही हमारा बबुआ
ज़ो खाने को दे, वही हमारा मालिक। जिसके पास पैसा है, उसकी सब खुशामद करते हैं।
ढिबुआ=(1) दाल-तरकारी परोसने का चम्मच।
(2) रुपया।

जिसके पास नहीं पैसा, वह भलामानस कैसा?
पैसे से ही भलमनसाहत है। पैसा ही प्रधान है।

जिसके पेशे में 'बान', उसका गुरु शैतान; 'हां, मेहरबान'।
ऐसे कई पेशे हैं, जिनके अंत में 'बान' आता है; जैसे फीलबान, कोचबान, शुतरबान वगैरह। किसी ने जब कहा कि जिनके पेशे में 'बान' आता वे सब बड़े शैतान होते हैं तो दूसरे ने जवाब दिया 'जी हां, मेहरबान'।

जिसके पैसा नहीं हो पास, उसको मेला लगे उदास
क्योंकि मेले में पैसों की जरूरत पड़ती है।

जिसके बारह बीघा बांगा।
उसकी कमर में नहीं तागा।
परिस्थिति की बात। अथवा कंजूस के लिए भी कह सकते हैं।
बांगा=कपास का खेत।

जिसके मां बाप जीते हों, वह हराम का नहीं कहलाता
जब किसी के निर्दोष होने का स्पष्ट प्रमाण मौजूद हो, तब उस पर झूठा दोष लगाना ठीक नहीं; क्योंकि वह दोष चलेगा नहीं।

जिसके लिए चोरी की, वही कहे चोर
जिसकी ख़ातिर बदनामी मोल ली, वही बुराई करे।

जिसके वास्ते रोये, उसकी आंखों में आंसू नहीं
जिसके लिए कष्ट उठाया, उसने कोई सहानुभूति भी नहीं दिखाई। कृतघ्नता।

जिसके सबब लड़ाई हो वह आदमी नहीं।
कांटा है घर में सेई का, या गुल कनेर का।
जिसके कारण घर में लड़ाई हो, वह मनुष्य न होकर सेई का कांटा या कनेर का फूल है।
(लोक-विश्वास है कि जिस घर में सेई का कांटा या कनेर का फूल होता है, वहां हमेशा लड़ाई-झगड़ा होता रहता है।)

जिसके सिर पर जूता रख दिया, वही बादशाह हो गया
किसी लफंगे फ़कीर का कहना।

जिसके सिर पर पड़ती है, वही जानता है
अपनी मुसीबत आदमी आप ही जानता है।

जिसके हाथ में डोई, उसका सब कोई
जिसके हाथ में सत्ता होती है, उसकी सब खुशामद करते हैं।
डोई=लकड़ी का बड़ा चमचा।

जिसके होवें अस्सी, वह करे खस्सी
रुपए से सब को वश में किया जा सकता है, अथवा सब काम किया जा सकता है।
खस्सी करना=बधिया करना। नपुंसक बनाना।

जिसको खुदा बचाये, उस पर कभी न आफ़त आए
ईश्वर जिसकी रक्षा करता है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

जिसको राखे साइयां, मार न सक्के कोय।
बाल न बांका कर सके, जो जग बैरी होय।
स्पष्ट। दे. ऊ.।

जिस पर नाड़ी फूड़ी, वह घर जानो कूड़ी
जिस घर में फूहड़ औरत हो, वह कभी खुशहाल नहीं रह सकता।

जिस घर बूढ़ा न बड़ा, वह घर डिग्गम डिग्गा
बड़े-बूढ़े के बिना घर का प्रबंध नहीं हो पाता।

जिस घर में खायें, उसी में छेद करें
कृतघ्नता।

जिस घर में संपत नहीं, तासूं भला विदेस
घर में ग़रीबी भोगने की अपेक्षा तो विदेश में रहना अच्छा।

जिस घर होव कुछ कुचलिया नारी, सांझ, भोर हो उसकी ख्वारी।
बदचलन औरत घर का नाश कर देती है।

जिस घर होय पुरुष कुचलिया, उस घर होवे खीर का दलिया।
बदचलन आदमी से भी घर का नाश होता है।

जिस टहनी पर बैठे, उसको काटे
जिसके आश्रित रहे, उसी का अनिष्ट करना।
कृतघ्नता।

जिस तन लागे, वही जाने
जिस पर बीतती है, वही जान सकता है कि कैसी बीत रही है।

जिस दरख़्त के छाएं में बैठे, उसी की जड़ काटे
दे. ऊ.।

जिसने की बेहयाई, उसने खाई दूध मलाई
बेशर्म सुख-चैन से रहता है।

जिसने की शरम, उसके फूटे करम
संकोच या लिहाज करने वालों को नुकसान उठाना पड़ता है।

जिसने कोड़ा दिया, वह घोड़ा भी देगा
आलसियों या भाग्यवादियों की उक्ति।

जिसने चीरा वही नीरेगा
जिस (ईश्वर) ने मुंह दिया वह नीर (अन्न-जल) भी देगा। आलसियों का कहना। जब कोई कठिन अर्थ-संकट में पड़ जाता है, तब उसे धीरज बंधाने के लिए भी क.।

जिसने दिया उसने पाया।
जो दूसरों को देता है उसे मिलता भी है।

जिसने न देखा हो बाघ, वह देखे बिलाई।
जिसने न देखा हो ठग, वह देखे कसाई।
स्पष्ट। 'वह देखे नाई' भी पाठ है।

जिसने न देखी हो कन्या, वह देख ले कन्या का भाई
भाई-बहन रूप-रंग में अक्सर एक से होते हैं, इसलिए क.।

जिसने बेटी दी, उसने क्या रखा?
अर्थात उसने सब-कुछ दिया।
विवाह में कन्यादान से मतलब है।

जिसने बेटी दी, उसने सब कुछ दिया
स्पष्ट। दे. ऊ.।

जिसने रंडी को चाहा, उसे भी ज़वाल और जिसको रंडी ने चाहा, उसकी भी तबाही।
हर हालत में वेश्या का संग बुरा।

जिसने लगाई, वही बुझावेगा
(1) जिसने झगड़ा उठाया, वही उसे खत्म करेगा।
(2) दैवी विपत्ति को दैव ही दूर कर सकता है।
(3) प्रायः भिक्षुक भीख मांगते समय कहा करते हैं कि जिसने पेट में भूख की ज्वाला पैदा की, वही (ईश्वर) उसे शांत भी करेगा।

जिस बन सुआ न सायरा, वहां कागा खायं कपूर
जिस बन में सुआ या कोयल नहीं होती, वहां कौए ही कपूर खाते हैं। जहां कोई योग्य पुरुष नहीं होता, वहां अयोग्यों की ही पूजा होती है।

जिस बर्तन में खाना, उसी में छेद करना
कृतघ्नता।

जिस मुंह से पान खाइए, उस मुंह से कोयले न चबाइए
(1) एक बार जिसकी प्रशंसा कर चुके, फिर उसकी बुराई नहीं करनी चाहिए।
(2) जहां सम्मानपूर्वक रह चुके हों, वहां अपमान सहकर नहीं रहना चाहिए।

जिस राह ही नहीं चलना, उसके कोस गिनने से क्या काम
जो काम करना ही नहीं, उसका जिक्र क्यों करना?

जिस शहर में फूल बेचिए, वहां धूल न उड़ाइए
जिस जगह इज्ज़त से रहे हों, वहां बेइज्ज़त होकर नहीं रहना चाहिए।

जिस हांडी में खाए, उसी में छेद करे
जिसका आश्रित रहे, उसी का बुरा तकना।

जिसे खाने को मिले यों, वह कमाने जाए क्यों?
अकर्मण्य के लिए क.।
जिसे ख़ुदा रखे, उसे कौन चखे
जिसका ईश्वर रक्षक है, उसका कोई क्या विगाड़ सकता है?
जिसे पिया चाहे, वही सुहागन; क्या सांवरी क्या गोरी
(1) विवाहित जीवन उसी स्त्री का सफल है, जिसे उसका पति चाहे।
(2) जिस पर मालिक की नज़र होती है, वही उच्च स्थान पर पहुंच जाता है, चाहे उसमें गुण न हो।
जिसे हया नहीं, उसे ईमान नहीं
बेशर्म बेईमान होता है।
जी कहीं लगता नहीं, जब जी कहीं लग जाय है
स्पष्ट।
'जी' कहो, 'जी' कहलाओ
दूसरों का सम्मान करो, तो दूसरे तुम्हारा सम्मान करेंगे।
जी का बैरी जी
(1) जीव जीव का भक्षक है।
(2) स्वयं मनुष्य अपना शत्रु है।
जी के बदले जी
(1) जान के बदले जान।
(2) प्रायः उस समय भी कहते हैं, जब कोई रुपया उधार लेकर माल गिरवी रख देता है।
जी चाहे बैराग को और कुनबा फाड़ेगा।
जी तो वैराग्य लेने को चाहता है, पर गृहस्थी के झंझटों ने मुसीबत कर रखी है।
जीजा के माल पर साली मतवाली, (स्त्रि.)
एक मूर्खता की बात। जीजा के माल से साली को कोई मतलब नहीं।
जी जाय, घी न जाय
कंजूस के लिए क.।
जीत की हवा भी अच्छी
जीत का तो नाम भी अच्छा।
जीता सो हारा और हारा सो मुआ
अदालतों की मुकदमेबाजी के संबंध में क.। जो आदमी मुकदमा जीतता है, वह भी हारे के तुल्य हो जाता है, क्योंकि मुकदमों में बहुत पैसा और समय नष्ट होता है।
जीती मक्खी नहीं निगली जाती
(1) जानबूझकर कोई विष नहीं खाता, अथवा ग़लत काम नहीं करता।
(2) स्वेच्छा से कोई विपत्ति में नहीं पड़ता।
(3) स्पष्ट सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता।
जीते आसा, मुए निरासा
जीवन के साथ आशा लगी है। मरने पर सब समाप्त हो जाता है।
जीते का घर और मुए की गोर बता
संसार में कहीं किसी का कुछ नहीं। जिनके घर थे, उनके घरों का पता नहीं, जिनकी कब्रें थीं, उनकी कब्रों का पता नहीं।
जीते के खून में हीरा धुंधला होता है
लोक-विश्वास है।
इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि जिंदा आदमी के खून की गर्मी के सामने हीरे की चमक कोई चीज नहीं।
जीते चाव, चाव, मुए दाब-दाब
जीते जी सब चाव (प्रेम) करते हैं, मरने पर गाड़ने की फ़िक्र पड़ती है।
जीते-जी का नाता है
अपने किसी आत्मीय के मरने पर जब कोई बहुत शोक करता है, तब उसे धैर्य बंधाने के लिए कहते हैं।
जीते-जी का मेला है
आदमी जब तक जिंदा है, तभी तक मिलना-जुलना है, फिर तो अकेले जाना है।
जीते तो हाथ काला, हारे तो मुंह काला
जुआरियों के लिए क.।
जीते न पूछे, मुए धड़धड़ पीटे
जीते-जी बात नहीं पूछी, मरने पर छाती पीटकर रोते हैं।
(1) कृतघ्न संतान।
(2) आदमी की क़द्र मरने पर जानी जाती है।
जीते रहे तो लानत कहना
किसी को कोसना; शाप देना।
जीते हैं न मरते हैं सिसक-सिसक दम भरते हैं
(1) बहुत कष्टमय जीवन बिता रहे हैं।
(2) मरणासन्न हैं।
जीना थोड़ा, आसा बहुत
छोटे-से जीवन के साथ आशाएं बहुत लगी रहती हैं।
जीने से दूर, मरने के नज़दीक
(1) जीवित रहते हुए भी मरे के समान हैं।
(2) एक पैर कब्र में लटकाए हैं।

जी बहुत चलता है, मगर टट्टू नहीं चलता।
बुढ़ापे की अशक्त अवस्था के लिए क.।

जीभ जने एक बार, मां जने बार-बार
मुंह से एक बार जो निकल गया, सो निकल गया; उसे फिर वापस नहीं लिया जा सकना।

जीभ जली, न स्वाद आया
(1) कोई चीज बहुत थोड़ी खाने को मिले, तब क.।
(2) कष्ट उठाकर कोई काम किया जाए, पर उसका कोई अच्छा नतीजा न निकले, तब भी क.।

जीवन मरन, बिधना के हाथ है
जीना-मरना ईश्वर के हाथ है।

जीवे मेरा भाई, गली-गली भौजाई, (स्त्रि.)
ननद का अपनी भावज से ताना मार कर कहना कि तू घमंड किस बात का करती है, मेरे भाई के रहते तेरी जैसी बहुत-सी भावजें मिल जाएंगी।

जी है तो जहान है
जीवन से ही सारी चीजें लगी हैं।

जुआ बड़ा व्योहार, जो इसमें हार न होती
जुआ बड़ी बढ़िया चीज थी, अगर इसमें हार न होती।

जुआरी को अपना ही दाव सूझता है
स्वार्थी के लिए क.।
(तु.—सूझ जुआरिंह आपन दाऊ।)

जुआरी हमेशा मुफ़लिस
जुआरी हमेशा कंगाल रहता है।

जुए में बैल भी हारे हैं
स्पष्ट। जुए से बैल भी परेशान रहते हैं। यहां जुआ शब्द के दो अर्थ हैं
(1) हल, बखर या गाड़ी के आगे की वह लकड़ी, जिसमें बैल जोते जाते हैं।
(2) रुपए-पैसे की बाज़ी लगाकर खेला जाने वाला खेल।

जुग टुटा, नर्द मरी
एका ही में बल है, अलग हुए और पिटे।
(वाक्य चौसर के खेल से लिया गया है। चौसर में जब दो गोटियां एक घर में इकट्ठी हो जाती हैं, तो विपक्ष का खिलाड़ी उन्हें मार नहीं सकता, किंतु अलग होने से पिट जाती हैं।
फूटे ते नर्द उठ जात बाजी चौपड़ की। आपस के फूटे कहो कौन को भलो भयो। गंग)
नर्द=चौसर की गोट।

जुड़ती नहीं धुर की टूटी, धरी रहे सब दारू बूटी
आयु के पूरे हो जाने पर कोई दवा काम नहीं करती।
धुर=शीर्ष स्थान।

जुत-जुत मरें बैलवा, बैठे खायं तुरंग, (कृ.)
(1) ग़रीबों के परिश्रम पर धनवान मौज करते हैं।
(2) कर्मचारी खटते हैं, अफ़सर बैठे खाते हैं।
(3) कुछ लोग खटते हैं, कुछ मौज करते हैं।

जुमा छोड़ सनीचर नहाए, उसका सनीचर कभी न जाये
जो शुक्रवार को न नहा कर शनिवार को नहाता है, उसकी विपत्तियां कभी दूर नहीं होतीं। मुसलमानों का लोक-विश्वास। शुक्रवार नमाज का दिन होता है, और उस दिन नहाना आवश्यक माना जाता है।

जुलाहा चुरावे नली नली, खुदा चुरावे एक्के बेरी, (पू.)
जुलाहा थोड़ा-थोड़ा करके सूत चुराता है, पर ईश्वर एक बार में सब चुरा लेता है, अर्थात जुलाहे का कभी इकट्ठा नुकसान हो जाता है और चोरी का सब नफ़ा निकल जाता है।
ईश्वरीय न्याय।

जुलाहा जाने जौ काटे?
जुलाहा जौ काटना क्या जाने?
(कथा है कि किसी जुलाहे पर बहुत कर्ज़ हो गया था। तब महाजन ने उससे काम करा कर रुपए वसूल करने चाहे। जुलाहा राज़ी होकर खेत में जौ काटने गया। पर जौ काटने के स्थान पर वह उसकी झुकी हुई बालों को इस प्रकार सुलझाने लगा जैसे महीन सूत को सुलझाते हैं। जुलाहे कहावतों में अपने बुद्धूपन के लिए प्रसिद्ध माने गए हैं। यहां उसी पर कटाक्ष है।)

जुलाहे का तीर न हो
ऐसे अवसर पर कहावत का प्रयोग करते हैं, तब किसी विषय पर जानबूझकर उपेक्षा करने से उसका बुरा परिणाम निकल सकता हो।
(कथा है कि किसी जुलाहे की जांघ में तीर लग गया। तब उसे निकाल फेंकने का कोई उपाय न करके वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि हे भगवान, ऐसा कर कि इस तीर का लगना झूठ साबित हो। उसी से कहा. चली।)
पाठा.—जुलाहे को लगा था तीर ख़ुदा भली (या झूठ) करे।

जुलाहे का बेगारी पठान
एक अनहोनी बात। पठान कभी जुलाहे जैसे साधारण या सीधे-सादे आदमी के यहां जाकर बेगर नहीं करेगा।

जुलाहे की जूती, सिपाही की जोय, धरी-धरी पुरानी होय
जुलाहे की जूती और सिपाही की स्त्री, दोनों काम में न आने के कारण व्यर्थ ही जाती हैं।
(इसलिए कि जुलाहा करघे पर बैठे-बैठे ही काम करता है, जूते पहनने की उसे कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ती और सिपाही हमेशा फौज़ की नौकरी की वजह से बाहर रहता है, स्त्री के पास आ नहीं पाता।)

जुलाहे की तरह ईद-बकरीद को पान खा लेते हैं, (मु.)
(1) कभी-कभी शौक कर लेते हैं।
(2) कंजूसी करते हैं।

जुलाहे की मसखरी मां-बहिन से
जुलाहे के बुद्धूपन पर क.।

जूं के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती
साधारण परेशानी के डर से कोई अच्छा लाभ का काम नहीं छोड़ दिया जाता।

जूठा खैये मीठे के लालच
ओछा काम भी अच्छे लाभ की आशा से करना पड़ता है।
(मराठी में है--तुपाचें आशेने उष्टें खावे।)

जूता पहने साई का, बड़ा भरोसा ब्याई का।

जूता पहने नरी का, क्या भरोसा करी का।
जूता फरमाइश देकर बनवाना चाहिए, अर्थात मजबूत जूता पहनना चाहिए, और विवाहिता स्त्री पर ही निर्भर करना चाहिए, (क्योंकि समय पर वही काम आती है)। घटिया दाम के जूते नहीं पहनना चाहिए, और रखैल औरत का विश्वास नहीं करना चाहिए; (न जाने कब धोखा दे दे)।
नरी का=बकरी के चमड़े का।
करी का=रखेल का।

जेकर पुरखा न देखल पोई, तेका घर खुरबंदी होई
जिसके पुरखों ने कभी पोई का साग नहीं देखा, उसके घर घोड़ों के नाल बंधे रहे हैं, अर्थात घोड़े बंधे हुए हैं।
(जो अपने पुरुषार्थ से धन कमाकर बड़ा आदमी बन गया हो, अथवा जो साधारण हैसियत से ऊंची जगह पर पहुंच कर घमंड करने लगे, उसके लिए क.।)

जेकर भैया पूआ पकावे, तेकर धिया लिलके, (भो.)
किसी ग़रीब ब्राह्मणी के संबंध में कहा गया है, जो रसोई बनाने का काम करती है। मोची के लड़के को जिस प्रकार जूता और दर्जी के लड़के को अच्छे कपड़े पहनने को नहीं मिल पाते, उसी प्रकार उसकी लड़की भी उन पूओं के लिए तरसती है, जिन्हें वह दूसरों के लिए बनाती है।

जेकरा बीघा भर कपास, तेकरा डाड़े डरा ना, (भो.)
जिसके पास वीघा भर कपास का खेत है, उस पर जुर्माना किया जा सकता है। (क्योंकि वह दे सकता है।)

जेकरा होरी अइसन ठाकुर, तेकरा जम के डर? (पू.)
जिसके ऐसे देवता, उसे यमदूत का क्या डर ? व्यंग्य में क.।

जेकरी जोय तेकरे पास, देखनहारा ताके आस, (भो.)
जिसकी औरत है वह उसके पास है (अर्थात उसके कब्ज़े में है) दूसरा केवल ताकता है।

जेकरे घुड़वा बैठिन, तेकरे आंड़ दानिन, (भो.)
जिसके घोड़े पर वैठें, उसी के आंड़ दागें। जिसका खाएं, उसी का नुकसान करें।

जेठ के भरोसे पेट
दूसरों पर आश्रित रहना अथवा दूसरे के भरोसे कोई काम करना।
(कहावत किसी ऐसी गर्भवती स्त्री के संबंध में कही गई है, जिसका पति बिल्कुल अकर्मण्य है, और जो प्रसव आदि की व्यवस्था के लिए अब अपने जेठ पर निर्भर करती है)।

जेठ-जेठे, असाढ़ हेटे
जेठ में दिन बड़े होते हैं, आषाढ़ में छोटे होने लगते हैं। अथवा जेठ में मौसम अच्छा रहता है, आषाढ़ में बुरा।

जेठे लड़का-लड़की की शादी जेठ में नहीं करते
लोकमान्यता, जिसका कोई युक्तिसंगत कारण नहीं।

जे पांडे के पत्रा में, सो पंडयाइन के अंचरा में, (पू.)
पांडे की अपेक्षा पंडयाइन अधिक चतुर है।
पत्रा=पंचांग, तिथिपत्र।
अंचरा=अंचल।

जे पूत परदेसी भइले, देव पितर सबसे गइले, (पू.)
जो घर से बाहर जाकर रहता है, उसका नियम-धर्म सब नष्ट हो जाता है।

जेब में नहीं खीली की डली, छैला फिरै गली-गली
कोरी शान बघारते फिरना।
खीली की डली=सुपारी का टुकड़ा।

जे बहुत धंधला सो आगे में पड़ेला, (भो.)
जो बहुत अनाचार करता है, वह अंत में हानि उठाता है।
धंधलाना=(1) धांधलेबाजी करना।
(2) धुआं उगलना, जलना।

जे मुंह चीरेला, से तो आहार देले चाहे, (भो.)
जिस (ईश्वर) ने पैदा किया, वह खाने को देगा ही।
मुंह चीरेला=मुंह चीरा है।

जे मोरा लाल के न, से कीना काम के, (भो.)
जो वस्तु मेरे लड़के के पास नहीं (वह अगर औरों के पास है) तो निकम्मी है।
अपना या अपने लड़के का बड़प्पन दिखाना।

जेरों से शेर होते हैं
छोटे कमजोर बच्चे से ही बड़ा ताकतवर आदमी बनता है।

जेवड़े से नाड़ा घिसना है, (स्त्रि.)
(1) जिसका कोई इलाज नहीं, वह तो सहन करना ही होगा। (2) व्यर्थ ही दुख भोगना है।
(गाय भैंस आदि पालतू जानवर जिस जेवरी (रस्सी) से बंधे रहते हैं, उसी से अपनी गर्दन घिसते रहते हैं। बंधन से मुक्त होने में असमर्थ रहते हैं। उसी से रूपक लिया गया है। प्रायः स्त्रियों के लिए क.।)
नाड़ा=गर्दन।

जैसन को तैसन, सुकटी को बैंगन, (पू.)
किसी दुबली-पतली लड़की का मोटे-ताजे लड़के के साथ विवाह हुआ। उसी पर व्यंग्य में कहा गया है कि जोड़ खूब मिल गया जैसे, सूखी मछली के साथ बैंगन।
सुकटी=सूखी पतली लकड़ी को भी कहते हैं।

जैसन देखे गांव की रीत, तैसन करे लोग से प्रीत, (पू.)
जैसी गांव की चाल-ढाल देखे, वैसा ही लोगों में व्यवहार करे।

जैसा ऊंट लंबा, वैसा गया खवास
एक-सी जोड़ी मिल जाना।
(लंबा आदमी मूर्ख समझा जाता है, उसी से कहावत में भाव यह है कि ऊंट जैसा अहमक है, वैसा ही खवास भी उसे गधा मिल गया।)
खवास=नाई, नौकर।

जैसा कन भर, वैसा मन भर
जैसा किसी चीज का एक टुकड़ा वैसी ही पूरी चीज, कोई अंतर नहीं पड़ता।

जैसा करोगे, वैसा पाओगे
कर्म का यथोचित फल मिलता है।

जैसा करोगे, वैसा भरोगे
किए का दंड भुगतना पड़ता है।

जैसा काछ काछै, तैसा नाच नाचे
जैसा वेष हो, उसी के अनुसार काम करो।

जैसा किया, वैसा पाया
बुरे काम का बुरा फल मिलता है।

जैसा तेरा खोट रुपैया, तैसा मेरा खोखर पैसा
जैसा बर्ताव तुमने मेरे साथ किया, वैसा मैंने तुम्हारे साथ किया।

जैसा तेरा घूंघर बिया, तैसी हींग हमारी
जैसी (बुरी) चीज तुमने मुझे दी, वैसी ही मैंने तुम्हें भी दी।
(किसी ठग ने एक-दूसरे ठग को ऐसी हींग दी, जिसमें मिट्टी ही मिट्टी थी। तब दूसरे ने भी उसके बदले में उसे मटर की ऐसी फलियां दीं, जिनके भीतर बिल्कुल घुने हुए दाने थे।)

जैसा तेरा देना-लेना, वैसा मेरा गाना-बजाना
जैसा तुमने दिया, वैसा मैंने काम कर दिखाया।

जैसा तेरा नोन-पानी, वैसा मेरा काम जानी
दे. ऊ.।

जैसा दुद्ध, वैसा बुद्ध
मां का दूध जैसा पीने को मिलता है, वैसी ही बुद्धि विकसित होती है।

जैसा दूध धौला, वैसी छाछ धौली
ऊपरी दिखावट से धोखे में पड़ना।
धौला=सफेद।

जैसा देवता, वैसी पूजा, (हि.)
जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है।

जैसा देवे वैसा पावे; पूत भतार के आगे आवे, (पू., स्त्रि.)
जो जैसा करता है, वैसा पाता है।
(कथा है कि किसी स्त्री ने उक्त कहावत की सत्यता की परीक्षा के लिए दो रोटियों में विष मिलाकर किसी साधु को दे दीं। उसने उन रोटियों को अपनी कुटी में ले जाकर रख छोड़ा। संयोग से उसी स्त्री का पति और लड़का कहीं से थके-हारे उस स्थान पर आ पहुंचे और साधु से पानी मांगा। साधु ने उन्हें भूखा जानकर वे दोनों रोटियां उन्हें खिला दीं, और पानी पिला दिया। वे दोनों रोटियां खाकर मर गए।)

जैसा देस, वैसा भेस
जिस देश में रहे, वहां जैसी रीति बरते।

जैसा बो, वैसा काट, (कृ.)
जैसा करोगे, वेसा पाओगे।

जैसा मन हराम में, तैसा हरि में होय।
चला जाय बैकुंठ को, रोक सके ना कोय।
स्पष्ट।

जैसा भान, वैसा दान
हैसियत के अनुसार दान किया जाता है।

जैसा मुंह, वैसा थप्पड़
(1) जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।
(2) उपयुक्त दंड या मुंहतोड़ जवाब।

जैसा राजा, वैसा प्रजा
राजा के अनुसार ही प्रजा होती है।

जैसा सुई चोर, वैसा बज्जुर चोर
चोरी-चोरी सब बराबर। जैसी छोटी चीज की, वैसी ही बड़ी चीज की।
वज्जुर=वज्र फौलाद; यहां हथौड़े से अभिप्राय है।

जैसा सूत, वैसी फेटी; जैसी मां, वैसी बेटी, (स्त्रि.)
(1) लड़की मां जैसी ही होती है, अर्थात लड़की में मां के गुण आते हैं।
(2) जैसों के तैसे होते हैं।
फेटी=सूत या रेशम की लच्छी।

जैसा सोता, वैसी धारा
नदी का स्रोत जैसा होगा, वैसी ही नदी भी होगी। संतान अपने मां-बाप जैसी ही होती है।

जैसी करनी, वैसी भरनी
कर्मानुसार फल भोगना पड़ता है।

जैसी करनी वैसी भरनी; होवे न होवे, करके देख
दे. ऊ.।

जैसी गई थीं वैसी आईं, हक़ महर का बोरिया लाईं
किसी स्थान पर बहुत आशा से जाने पर कुछ न मिले, तब क.।
बदक़िस्मती।
(कोई स्त्री ससुराल से मायके गई, और जब फिर ससुराल वापस आई, तो कुछ लेकर नहीं आई। उसी पर कहा गया है कि जैसी गई थी, वैसी ही आई, अपने साथ विवाह के हिस्से का बोरा लेकर आई, अर्थात खाली हाथ आई।)

जैसी तेरी तानी बनिये, वैसा मेरा बुनना
जैसे के बदले तैसा।

जैसी तेरी तानी, वैसी मेरी भरनी
तूने जैसी चीज दी, मैंने वैसा ही काम कर दिया।
तानी=कपड़ा बुनने में ताने का सूत।
भरना=बाना।

जैसी तेरी तिल चावली, वैसा मेरा गीत, (स्त्रि.)
जैसी मजूरी (या भेंट) वैसा काम।
(विवाह या पुत्र-जन्म जैसे शुभ अवसरों पर गाने के लिए जो स्त्रियां आती हैं, उन्हें तिल-चावल दिए जाते हैं।)

जैसी तेरी फाफड़ कोदों, वैसी मेरी हींग, (मु.)
दे—जैसी तेरी तानी...।
फाफड़=घुने हुए, छूछ।

जैसी तेरी भगत, वैसा मेरी आशीर्वाद
जैसा तूने मेरा सत्कार किया, वैसा मैंने आशीर्वाद भी दिया।

जैसी दाई आप छिनार, वैसी जानै सब संसार, (स्त्रि.)
कोई स्त्री दूसरी को गाली देकर कह रही है। जो जैसा होता है, वह दूसरों को वैसा ही समझता है।

जैसी नीयत, वैसी बरकत
जैसी नीयत होती है, वैसा ही मिलता है।
नीयत=इच्छा, उद्देश्य, मंशा, संकल्प।

जैसी फूहड़ आप छिनार; तैसी लगावै कुल व्योहार
दे—जैसी दाई...।

जैसी बंदगी, वैसा इनाम
जैसी सेवा, वैसा फल।

जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजै, (गिरधर)
अवसर या रुख देखकर काम करना चाहिए। मौका या अवसर से लाभ उठाना भी।

जैसी माई वैसी जाई, (स्त्रि.)
जैसी मां, वैसी बेटी।

जैसी रूह, वैसी फरिश्ते, (मु.)
जैसी रूह होती है, वैसे ही फ़रिश्ते उसे लेने आते हैं।
(भाव यह है कि हर मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है। जब दो एक-सी वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का जोड़ मिलता है, तब व्यंग्य में क.।)

जैसी होत होतव्यता, वैसी उपजे बुद्ध।
होनहार हिरदे बसे, बिसर जात सब सुद्द।
स्पष्ट।
होतव्यता=होनहार।
सुद्द=सुध, खबर।

जैसे ऊधो वैसे यान; न उनके चोटी, न उनके कान
दोनों एक से निकम्मे।

जैसे एक बार, वैसे हजार बार
जैसे कोई (बुरा) काम एक बार किया, वैसा हजार बार किया, कोई अंतर नहीं आता।

जैसे कंथा घर रहे वैसे रहे विदेश।
जैसे ओढ़ी कामली, वैसा ओढ़ा खेस। (स्त्रि.)

निकम्मे आदमी का घर और बाहर रहना एक-सा।

कंथा=कंत, पति।

कामली=कंबल।

खेस=गाढ़े की मोटी चादर।

जैसे की सेवा करे, तैसी आसा पूर, (पू.)

जैसे मनुष्य की सेवा करोगे, वैसी ही इच्छा पूर्ति होगी।

जैसे को तैसा

(1) जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

(2) जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।

(3) जो जैसा होता है, उसे दूसरे भी वैसे ही दिखाई देते हैं।

जैसे को तैसा, परखने को पैसा

जैसे के साथ तैसा व्यवहार करे, पैसा आखिर परखने के लिए ही है। दे. ऊपर भी।

जैसे को तैसा, बाबू को भैंसा

जो जैसा हो, उसका वैसा ही सम्मान करना चाहिए।

(यहा बाबू से मतलब बड़े आदमी से है।)

जैसे को तैसा मिले, ज्यूं बामन को नाई।
इसने कहीं आशीर्वाद, उन आरसी काढ़ दिखाई।

जैसे को तैसा मिल जाता है, जैसे ब्राह्मण को नाई मिल गया। ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया—नाई ने भी उसके बदले में आरसी निकाल कर दिखला दिया।

(ब्राह्मण जब किसी को आशीर्वाद देता है, तो दक्षिणा की आशा करता है, नाई भी जब विशेष अवसरों पर दर्पण दिखाता है, तो उसे इनाम दिया जाता है। कहावत में दोनो ने एक-दूसरे को सूखा टरका दिया, यही उसमें मज़ा है।)

जैसे को तैसा मिले, सुन रे राजा भील।
लोहे को चूहा खा गया, लड़का ले गई चील।

(इसकी प्रसिद्ध प्राचीन कथा है जो बौद्ध जातक में मिलती हे। एक मनुष्य अपना लोहे का कुछ सामान अपने एक मित्र को सौंपकर परदेस चला गया। कुछ वर्षों बाद आया, तो मित्र से अपनी धरोहर मांगी। उसने जवाब दिया—तुम्हारा सब लोहा तो चूहे खा गए। यह सुनकर वह चुप रह गया, पर इसका बदला लेने का अवसर खोजने लगा। एक दिन जब उसके उसी मित्र का छोटा लड़का बाहर मैदान में खेल रहा था, तो उसे उठाकर उसने घर में छिपा लिया। जब उसका मित्र लड़के को खोजता हुआ उसके पास आया और पूछने लगा कि तुमने मेरा लड़का तो नहीं देखा ? तो उसने उत्तर दिया—हां, उसे तो चील ले गई। मित्र ने कहा—यह कैसे हो सकता है कि लड़के को चील उठा ले जाए। तब वह बोला कि यह उसी तरह संभव है, जिस तरह चूहा लोहा खा गए। सुनकर वह सारी बात को ताड़ गया। उसने सब लोहा निकाल कर दे दिया। उसे अपना लड़का भी वापस मिल गया। यह 'कूट वणिक जातक' है।)

जैसे गंगा नहाए, वैसा फल पाये

श्रद्धा के अनुसार फल मिलता है।

जैसे चिड़ियों में ढेल

क्रूर व्यक्ति।

ढेल=बाज़ पक्षी।

जैसे दाम, वैसा काम

जैसी मजदूरी दोगे, वैसा ही काम होगा।

जैसे नागनाथ, वैसे सांपनाथ

जैसे यह वैसे वह अर्थात दोनों एक से।

जैसे नीमनाथ, तैसे बकायन नाथ

दोनों में कोई अंतर नहीं। नीम भी कड़वा, बकायन भी कड़वा।

(नीम और बकायन एक ही समान हैं।)

जैसे मियां काठ, वैसी सन की दाढ़ी

किसी का मज़ाक उड़ाया गया है।

जैसे मुर्दे पर सौ मन मट्टी, वैसी हजार मन, (मु.)

क्योंकि मुर्दे पर उसका कोई असर नहीं पड़ता।

जैसे साजन आए, तैसे बिछौना बिछाए

साजन जैसे आए (अर्थात जिस तरह ख़ाली हाथ आए) वैसा ही उनका सत्कार भी किया गया।

जैसे हरगुन गाये, तैसे गाल वजाए

सेवा में व्यर्थ समय नष्ट किया; कोई फल नहीं निकला। प्राय: उस समय कहते हैं जब कोई मनुष्य अपने किसी नौकर के काम की कद्र न करे। गाल वजाना सिर्फ शिव की पूजा में ही होता है। पर यहां इसका दूसरा अर्थ—व्यर्थ की बकवास भी हे।

जैसे हसन, वैसे हुसैन, (मु.)

दोनों एक से।

(हसन और हुसैन एक ही पिता अली के पुत्र थे और समान मान से पूजे जाते हैं। पर यहां ये दोनों नाम

सामान्य व्यक्तियों के नामों के रूप में ही प्रयुक्त हुए हैं।)

जो अपने काम न आए, सो चूल्हे भाड़ में जाए
स्वार्थी और झंझट से बचने वाले लोगों का कहना।

जो आंख से दूर, वह दिल से दूर
आदमी जब तक सामने रहता है, तभी तक उससे प्रेम भी रहता है।

जो कबीर काशी में मरिहैं, रामहिं कौन निहोरा?
हिंदुओं का विश्वास है कि काशी में मरने से मुक्ति होती है। कबीर कहते हैं कि अगर किसी को काशी में मरने के कारण मुक्ति मिलती है, तो उसमें ईश्वर का क्या एहसान ?
(जब कोई मनुष्य किसी के पास काम में कुछ सहायता मांगने जाए और वह यह कहकर टाल दे कि इसमें क्या है, इसे तो तुम्हीं कर सकते हो। तब इस अर्थ में कहावत का प्रयोग होता है कि हम तो कर ही लेंगे, लेकिन उसमें फिर तुम्हारी क्या तारीफ?)

जो कहते हैं, वह करते नहीं
बकवास करने वालों से काम नहीं होता।

जो काम हिकमत से निकलता है, वह हुकूमत से नहीं निकलता
बुद्धि से जो काम बनता है, वह बल से नहीं।
हिकमत=युक्ति; तदबीर; चतुराई का ढंग।

जो किसी का बुरा चेतेगा, उसका पहले बुरा होगा।
स्पष्ट।

जो कोई कलपाय है, सो कैसे कल पाय है?
जो दूसरों को सताता है, उसे शांति नहीं मिलती।

जो कोई खाय चने का ढूंक, पानी पीवे सौ-सौ घूंट
चने रूखे होते हैं, और उनके खाने से प्यास लगती है।

जो कोई खाय निबाह के ज्वार, मूल बने वह मूढ़ गंवार
जो जन्म भर केवल ज्वार खाता है, वह सदा मूर्ख और गंवार बना रहता है।
(शायद इसलिए कि ज्वार बहुत पौष्टिक नहीं होती। घटिया अनाज खाने वालों के लिए धनियों की घृणा भी इससे व्यक्त होती है।)

जो खुदा सिर पर सींग दे, तो वह भी सहने पड़ते हैं।
किसी धैर्यवान और संतोषी पुरुष का क.।

जो गंवार पिंगल पढ़े, तीन बस्त से हीन।
बोली चाली बैठकी, लीन विधाता छीन।
गंवार चाहे जितना पढ़-लिख जाए, फिर भी उठने-बैठने और बोलने का सलीका उसे नहीं आ पाता।
यह भी एक दंभ है एक वर्ग का।

जो गदहे जीतें संग्राम, तो काहे को ताज़ी को खरचे दाम
मूर्खों से यदि बड़े कार्य सिद्ध होने लगें, तो फिर पढ़े-लिखों की जरूरत ही क्या रहे ?
ताज़ी=घोड़े की एक नस्ल; अरबी घोड़ा।

जो गरजते हैं, वह बरसते नहीं
डींग हांकने वालों से काम नहीं होता।

जो गिरा खाई के अंदर, सो पड़ा फेरी में
जो किसी बुरे काम में (या झंझट में) फंस जाता है, वह मुश्किल से उबरता है।

जोगी का लड़का खेलेगा तो सांप से
संपेरे का लड़का सांप से ही खेलता है। बाप के गुण (या दुर्गुण) लड़के में भी आते हैं।

जोगी किसके मीत?
जोगी किसी के मित्र नहीं होते।
(उन्होंने तो दुनिया त्याग रखी है।)

जोगी की पीत क्या?
किसी वीतराग से प्रेम करना व्यर्थ है।

जोगी की-सी फेरी
भूल से कभी-कभी आ जाना।

जोगी केहके मीत, कलंदर केहके साथ?
हिंदू साधु जोगी और मुसलमान फ़कीर कलंदर कहलाते हैं। ये किसी के मित्र नहीं होते, क्योंकि वे तो हमेशा घूमते-फिरते रहते हैं।

जोगी को बैल बला
जोगी को बैल दिया जाए, तो वह तो उसके लिए एक विपत्ति ही सिद्ध होगा। वह उसे कहां रखेगा, कहां बांधेगा ?

जोगी जुगत जानी नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ
किसी काम को अच्छी तरह सीखे बिना केवल भेष बदलने से काम नहीं चलता।
जुगत=युक्ति, योग की क्रिया।

जोगी जोगी लड़े, खप्परों का खौर
क्योंकि उनके पास लड़ने के लिए और रखा ही क्या?
(बड़ों की लड़ाई में छोटे पिसते हैं।)
खप्पर=जोगियों का भिक्षापात्र।
खौर=हानि।

जोगी या सो उठ गया, आसन रही भभूत
आदमी के मरने पर केवल उसका नाम रह जाता है।
(जोगी शब्द आत्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है।)

जोगी मारे छार हाथ
ग़रीब को मारने से कोई लाभ नहीं।
छार=(1) वह राख, जो जोगी अपने शरीर पर चढ़ाए रहते हैं। (2) धूल।

जो गुड़ खाय, सो कान छिदाय
जो मीठा खाना चाहे, वह कष्ट उठाए।
(उपर्युक्त वाक्य कान छेदते समय बच्चों से क.।)

जो चढ़ेगा, सो गिरेगा
(1) जो काम करता है, वह असफल भी होता है।
(2) महत्वाकांक्षी हानि उठाता है।

जो चप-चप कर आंख झपावे, वह कैरन में सेल चलावे
आलसी आदमी जो आंख मिचमिचाता रहता हो, वह युद्ध में बरछा क्या चलाएगा?

जो चोरी करता है, सो मोरी भी रखता है
चोरी या बदमाशी करने वाला अपने बचने का उपाय भी पहले से सोच रखता है।
मोरी=मुहरा, निकलने का रास्ता।

जो छावे, सो पावे
जो प्रयत्न करता है उसे मिलता है।
छाना=घर पर छप्पर चढ़ाना।

जो जाए कलकत्ते, वह खे खाए अलबत्ते
इसके दो अर्थ हैं—
(1) जो कलकत्ते जाता है, उसे गू यानी विष्ठा अवश्य खानी पड़ती है। यह इसलिए कहा गया है कि जब बहुत शुरू में कलकत्ते में पानी की कल नहीं थी, तब तमाम शहर का मैला गंगा में बहाया जाता था और वही पानी सबको पीना पड़ता था।
(2) जो कलकत्ते जाता है, वह खे खाता है। अर्थात कुछ और काम न मिले तो नाव खेकर ही अपना पेट भर सकता है, क्योंकि कलकत्ता एक बड़ा बंदरगाह जो है।

जो जीवे सो खेले फाग, मुआ सो लेखे लोग
जो जीवित है, उसी के लिए जीवन का आनंद है; जो मर गया, उसका तो हिसाब-किताब ही पूरा हो चुका।

जो टका देगा, उसका लड़का खेलेगा
जो पैसा खर्च करता है, वही लाभ उठाता है।
(किस्सा है कि कोई मनुष्य परदेस जा रहा था। पड़ोसियों ने उससे तरह-तरह की चीजों की फ़रमाइश की। पर एक आदमी ने दो पैसे (टका) देकर कहा कि इसका झुनझुना ले आना। उसने जवाब दिया—'बस तेरा ही लड़का खेलेगा'।)

जोड़-जोड़ मर जाएंगे, माल जंवाई खाएंगे।
जंवाई भी न होगा, तो खालसे लग जाएंगे।
कंजूस के लिए क.।
(महाराज रणजीतसिंह के शासनकाल में जब कोई लावारिस मरता था, तो उसकी संपत्ति खालसा-सरकार में ज़ब्त कर ली जाती थी। 'खालसे लग जाएंगे' का यही अभिप्राय है कि धन खालसा-सरकार में चला जाएगा।)

जोड़ियां संयोग हैं
विवाह के लिए क. कि लड़के-लड़की का संबंध तो भाग्य पर निर्भर है।

जोड़ी बलवान है
दे. ऊ.।

जो तिल हद से ज्यादा हुआ, सो मस्सा हुआ
हद से बाहर कोई चीज अच्छी नहीं लगती।
(छोटा तिल चेहरे पर अच्छा मालूम देता, है पर वही जब बढ़कर मस्सा हो जाता है तो चेहरे की रौनक बिगाड़ देता है।)

जो तैरेगा, सो डूबेगा
जो प्रयास करेगा, वह कभी-कभी असफल भी होगा। प्रयास न करने वाले के लिए असफलता का प्रश्न ही नहीं।

जो दम गुज़रे, सो ग़नीमत है।
आनंद से जितना समय बीत जाए, सो ही अच्छा।

जो देखा, सो पेखा
दोनों में कोई अंतर नहीं। 'देखा' का जो अर्थ है वही 'पेखा' का।

जो धन जाता देखिये तो आधा दीजे बांट
यदि पूरी संपत्ति नष्ट हो रही हो, तो आधी दूसरों को देकर यश लूट लेना चाहिए।

जो धरती पै आया, उसे धरती ने खाया
जो धरती पर जन्म लेता है, वह धरती में ही फिर मिल भी जाता है।

जो धावे सो पावे, जो सोवे सो खोवे
जो परिश्रम करेगा, वही (धन) पाएगा; जो आलस्य करेगा, वह गांठ का भी खो बैठेगा।

जो निकले सो भाग धनी के
जो कुछ भी मिलेगा, सो मालिक का भाग्य, अर्थात हमें क्या, हम कौन कहीं ले जाएंगे।
(प्रायः खेती के काम में सहायता करने वाले चोट्टे और लापरवाह मजदूर कहा करते हैं।)

जो पहले मारे सो मीर

जो पहले मारता है, सो जीतता है।

(शतरंज के खेल में जो पहले मुहरा मारना शुरू कर देता है, वही फायदे में रहता है। उसी संदर्भ में वाक्य कहा गया है।)

जो पारस से कंचन उपजे, सो पारस है कांच।
जो पारस से पारस उपजे, सो पारस है सांच।

सच्चा महापुरुष वही है, जो दूसरों को भी अपने जैसा बना ले।

पारस=वह प्रसिद्ध कल्पित पत्थर जिसके संबंध में कहा जाता है कि यदि लोहा उससे छुवाया जाए, तो वह सोना हो जाता है। स्पर्शमणि।

जो पूत दरबारी भये, देव पितर सबसे गए

जो सरकारी नौकरी करते हैं, वे देव-पितरों के काम के नहीं रहते, अर्थात अंग्रेजी सभ्यता के प्रभाव से अपने धर्म में निष्ठा खो बैठते हैं।

(पुरातनपंथी हिंदुओं की धारणा।)

जो प्याज काटेगा, सो आप रोयेगा

जो उपद्रव करेगा, वह उसका दंड भी भोगेगा।

(प्याज काटने से उसका झाग आंखों में आता है, और आंसू निकलने लगते हैं। उसी से मतलब है।)

जो फल चक्खा नहीं, वही मीठा

जो वस्तु कभी चखी नहीं होती, उसके लिए मन ललचाता है, फिर वह कैसी ही क्यों न हो?

जो बंदा नवाज़ी करे, जान उस पर फ़िदा है।
बैफ़ैज अगर यूसफ़े सानी है, तो क्या है?

जो मेरे साथ अच्छा बर्ताव करे, उस पर जान न्योछावर कर सकता हूं, पर जिसके हृदय में मेरे लिए आदर नहीं, ऐसा दूसरा यूसुफ़ भी अगर मिले, तो उससे मुझे कोई सरोकार नहीं।

(यूसुफ़ हजरत याक़ूब के पुत्र थे, जिन पर मिस्र की जुलेखा आसक्त हो गई थी। वह बड़े रूपवान थे। उन्होंने मिस्र पर बहुत दिनों तक राज्य किया।)

जोबन था तब रूप था, ग्राहक था सब कोय।
जीवन रतन गंवाय के, बात न पूछे कोय।

जब मेरे पास यौवन और रूप था, तब सब मुझे चाहते थे। पर योवन रूपी रत्न को (अब) जब मैं खो बैठी हूं, तब कोई मुझसे बात नहीं करता।

जो बर देख ताप मुझे आवे, सोई बर मुझे ब्याहन आवे, (पू., स्त्रि.)

(1) जिस वस्तु से अत्यधिक घृणा थी, वही पल्ले पड़ी। अथवा

(2) जो काम करना नहीं चाहते थे, वही विवश होकर करना पड़ रहा है।

वर=वर, दूल्हा।

जो बहुत करीब, सो ज़्यादा रक़ीब

नजदीक ही के लोग दुश्मन होते हैं।

रक़ीब=प्रेमिका का दूसरा प्रेमी।

जो बहुत धवला, सो आगे में पड़ेला, (भो.)

जो बहुत अनाचार करता है, वह हानि उठाता है।

धधलाना=(1) धांधली करना।

(2) धुंधुआना, आग उगलना।

जो बात है सो खूब है, क्या बात है आपकी?

व्यंग्य में क. कि आपकी क्या तारीफ़ की जाए? आपकी हर बात निराली है।

जो बामन की जीभ पर, सो बामन की पोथी में

ब्राह्मण अपने मतलब की व्यवस्था ही पत्रा देखकर देता है, अर्थात अपने यजमान को वह वैसी की सलाह देता है, जिससे उसे दान-दक्षिणा मिल सके।

जो बामन की पोथी में, सो यारों की ज़बान पर

(1) ब्राह्मण पत्रा देखकर जो कुछ बताएगा, उसे हम पहले से जानते हैं; अथवा

(2) ब्राह्मण जो बताएगा, वही हमारे यार लोग भी बताएंगे।

(खाने-पीने की बात)।

जो बिन सहारे खेले जुआ, आज न मुआ, कल हुआ

जो बिना अनुभव के जुआ खेलता है, वह कभी न कभी दचका खाता है।

जो बोवेगा, सो काटेगा

(1) जैसा करेगा, वैसा पाएगा।

(2) जो उद्योग करेगा, वह उसका फल भी पाएगा।

जो बोले सो कुंडा खोले

पुकारने से जो बोले, वही कुंडा खोले।

(घर के दरवाजे की कुंडी जब भीतर से बंद रहती है, तो पुकार कर खुलवाना पड़ती है। भीतर से जो जवाब देता है, उसी को प्रायः दरवाजा खोलने जाना पड़ता है। भलमनसाहत का नतीजा।)

जो बोले सो घी को जाय

इस कहावत की दो विभिन्न कथाएं प्रसिद्ध हैं, और उन दोनों के अलग-अलग दो अर्थ निकलते हैं। पहली कथा इस प्रकार है–

(1) एक बार चार मूर्खों ने मिलकर रसोई बनाने का इरादा किया। अब इस बात को लेकर उन चारों में झगड़ा होने लगा कि घी कौन लाए। अंत में उन्होंने तै किया कि जो पहले बोलेगा, उसी को घी लाने जाना पड़ेगा। जब वे चारों मौन साधे बैठे थे, तब एक पहरेदार वहां आ गया। उसने पूछा–तुम लोग कौन हो ? यहां क्या कर रहे हो ? कहां से आए हो ? इत्यादि।

अपने प्रश्नों का कोई उत्तर न पाकर पहरेदार उन्हें पकड़ कर कोतवाली ले गया। वहां कोतवाल के पूछने पर भी जब उन लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया, तो उन्हें कोड़े लगाने का हुक्म मिला। उनमें से एक, जो कोड़ों की मार नहीं सह सका, जोर से रो उठा। तब वे तीनों बोल उठे–बस तुम्हीं घी लेने जाओ। इससे कहावत का अर्थ है किसी काम में मूर्खतापूर्ण हठ।

(2) एक दूसरी कथा है कि एक बार चार मनुष्यों ने मिलकर खिचड़ी पकाई। जब वे खाने बैठे तो एक ने कहा–तुम लोग खिचड़ी में घी डालना भूल गए। इस पर तीनों बोल उठे हां हां, तुम्हीं जाकर ले आओ। इससे कहावत का मतलब हुआ कि जो सलाह दे, वही उस काम को करे भी।

जो भादों से बरखा होय, काल पछोकर जाकर रोय

भादों में वर्षा होने से अकाल रोता है, अर्थात पैदावार अच्छी होती है।

जो भूखे को देत है, जया शक्ति जो होय।
ता ऊपर सीतल बचन, लखे आस्मा सोय।

जो भूखे को भोजन देता है, वही सच्चा दयावान पुरुष है।

जो मन में बसे सो सुपने दसे

मन में जो इच्छा होती है, वह सपने में (पूरी हुई) दिखाई देती है।

जो मां से सिवा चाहें सो डायन

मां से अधिक प्रेम कोई कर नहीं सकता। उचित से अधिक स्नेह कोई दिखावे, तो समझना चाहिए कि वह बनावटी है।

जो मेरे सो तेरे, काहे दांत निपोरे

ईश्वर ने सबको एक-सा पैदा किया है। जैसे भीतर से हम नंगे हैं, वैसे ही तुम भी हो; इसमें हंसने की कौन-सी बात?

जो मेरे है सो राजा के नहीं

धन संपत्ति का अभिमान करने वाला।

ज़ोर की लाठी सिर पर

ज़बर्दस्त की लाठी सिर ही पर पड़ती है।

ज़ोर के आगे जर्ब नहीं चलती

ज़बर्दस्त को चोट से कोई हानि नहीं पहुंचती।

ज़ोर थोड़ा, गुस्सा बहुत

कमज़ोर को बहुत गुस्सा आता है।

ज़ोर न ज़ुल्म, अक्ल की कोताही

ज़ोर या ज़ुल्म इतना कष्टदायक नहीं होता, जितना मूर्ख होता है।

जोरू का धबला बेचकर तंदूरी रोटी खाई है, (मु.)

स्वार्थीपन या पेटूपन की हद।

धबला=लहंगा।

जोरू का मरना और जूती का टूटना बराबर है

जूती पुरानी हो जाने पर नई खरीदी जा सकती है, उसी तरह औरत के मरने पर दूसरी शादी भी फौरन की जा सकती है।

(पुरुष-प्रधान समाज की बौखलाहट भरी उक्ति।)

जोरू का मरना, घर का ख़राबा

स्त्री के मरने से घर बर्बाद हो जाता है।

जोरू का मुरीद

औरत का गुलाम।

जोरू खसम की लड़ाई क्या

होती ही रहती है।

जोरू खसम की लड़ाई, दूध की मलाई

पति-पत्नी का झगड़ा तो एक मजे की चीज है, कोई विशेष बात नहीं।

जोरू टटोले गठरी, और मां टटोले अंतड़ी

जोरू को यही फ़िक्र रहती है कि मेरे पति के पास कितना धन है और मां यही देखती रहती है कि मेरे लड़के का पेट अच्छी तरह भरा है या नहीं। आशय यह कि स्त्री धन चाहती है और मां अपने पुत्र का स्वास्थ्य।

जोरू न जाता, अल्लाह मियां से नाता

अविवाहित या फक्कड़ के लिए क.।

जो सादी चाल चलता है, वह हमेशा खुशहाल रहता है

सादगी से रहने वाला सदा सुखी रहता है।

जो साधु की माने बात, रहे अनंद वह दिन रात

सज्जन पुरुष की बात माननी चाहिए।

जो सिर उठाकर चलेगा, सो ठोकर खाएगा
अहंकारी को नीचा देखना पड़ता है।

जो सेवा करे सो मेवा पावे
सेवा का मीठा फल मिलता है।

जो सोवे उसका पड़वा, और जागने वाले को पड़िया
सोने वाले को पड़वा, और जागने वाले को पड़िया मिलती है, जो कीमती होती है।
सचेत रहने वाला मुनाफ़े में रहता है।
दे.–जागते की कटिया...।

जो हांड़ी में होगा सो रकाबी में आवेगा
मन की बात प्रकट होकर रहेगी। अथवा जो बात सामने आने को है, वह तो आकर ही रहेगी, उसके लिए परेशान होने की जरूरत क्या?

ज़ौक में शौक, दस्तूरी में लड़का
ख़ुशी में शौक और मुफ़्त में लड़का। जब केवल आनंद के लिए कोई काम किया जाए और उसमें लाभ भी हो, तब क.।
ज़ौक=किसी वस्तु से प्राप्त होने वाली प्रसन्नता।

जौ के खेत कंडुआ उपजे
जब किसी घर में कोई लड़का बहुत अयोग्य निकले, तब क.।
कंडुआ या कुंडुआ=जौ गेहूं आदि की एक बीमारी, जिसमें दाना सड़कर काला पड़ जाता है।

जौ को गए, सतुआनी को आए, (पू.)
कोई दूसरे के यहां से जौ मांग कर लाया, तो वह उसके यहां सत्तू खाने आ गया।
(अपनी कोई थोड़ी चीज देकर बदले में बहुत चाहना।)

जौ फ़रोश, गंदुमनुमा, (फा.)
बेचता जौ और दिखलाता गेहूं है। धूर्त मनुष्य।

जौ ले दलिद्दर दादा छीपा लावत, तब ले हमरा भुई में दो
जब तक दारिद्र्य देव छीपा लाते हैं, तब तक हमें जमीन में ही (खाने को) दो।
बहुत ग़रीबी।
छीपा=बांस का थालीनुमा बर्तन।

जौहर को जौहरी पहचाने
गुण की परख गुणी ही कर सकता है।

ज्यादा जीकर क्या आक़बत के बोरिये समेटोगे?
ज्यादा जीकर क्या और भी पाप कमाओगे?
(बूढ़े आदमी से, जिसे जीने की ज़्यादा हवस हो, व्यंग्य में क.।)
आक़बत=मरने के बाद की स्थिति, परलोक।

ज़्यारते बुज़ुर्गा कफ़ारह-ए-गुनाह
बड़े-बूढ़ों का सम्मान करने से पापों का क्षय होता है।

ज्यों-ज्यों बाव बहे पुरवाई, त्यों-त्यों घायल अति दुख पाई
पुरवाई चलने पर घाव या चोट का दर्द बढ़ता है।

ज्यों-ज्यों भीजे कामरी, त्यों-त्यों भारी होय
(1) जब किसी आदमी पर कर्ज बहुत हो जाता है, और वह उसका ब्याज भी नहीं दे पाता, तथा कर्ज का बोझ बढ़ता ही जाता है, तब क.।
(2) ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है, त्यों-त्यों पापों का बोझ भी बढ़ता जाता है, यह अर्थ भी होता है।

ज्यों-ज्यों मुरगी मोटी हो, त्यों-त्यों दुम सुकड़े
कंजूस के पास जितना धन बढ़ता जाता है, उसकी कृपणता भी उतनी ही बढ़ती जाती है।

ज्यों-ज्यों लिया तेरा नाम त्यों-त्यों मारा सारा गांव
ज्यों-ज्यों मैंने आपका नाम लिया, त्यों-त्यों गांव वालों ने मुझे और भी मारा।
(किसी अत्याचारी अफ़सर के संबंध में कहा गया है।)

ज्यों ही कहा, त्यों ही किया
तुरंत आदेश मानना।

ज्ञान बढ़े सोच से, रोग बढ़े भोग से
चिंतन से ज्ञान बढ़ता है, और आहार-विहार में असंयम से रोग।

झ

झगड़ा झूठा, कब्ज़ा सच्चा

अधिकार ही सच्चा है। कानून की दृष्टि मे भी चीज जिसके अधिकार में होती है, उसी की मानी जाती है।

झगड़े की तीन जड़, ज़र ज़मीन और जोरू

दुनिया के जितने भी झगड़े हैं, वे सब ज़मीन, जायदाद और स्त्री इन तीन चीजों को लेकर ही होते हैं।

झटपट की धानी, आधा तेल आधा पानी

जल्दी का काम अच्छा नहीं होता।

झड़बेरी का कांटा

जो ऐसा चिपटे कि उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाए। *(झड़बेरी का कांटा बड़ा तेज और टेढ़ा होता है और चुभ जाने पर बहुत कष्ट देता है।)*

झड़बेरी के जंगल में बिल्ली शेर

क्योंकि कांटों की वजह से उसे वहां कोई आसानी से पकड़ नहीं सकता।

झांट उपाड़े से मुरदा हलका नहीं होता

नाम मात्र के प्रयत्न से कोई वडी मुसीबत दूर नहीं होती!

झाड़ बिछाई कामली और रहे निमाने सोय

फ़कीरों की आवाज़।

निमाने=नीचे।

झाड़ भी बनिये का बैरी है

क्योंकि वहां चोर छिपे रहते हैं। बनिये से सब नाराज रहते हैं।

झींगुर बैठे बगुचा पर, कहस हम ही मालिक हैं, (पू.)

झींगुर सूती कपड़ों को बड़ी हानि पहुंचाता हैं। अनधिकारी ढंग से कब्ज़ा।

बगुचा=कपड़े की गठरी।

झुके जो कोई उससे झुक जाइए, रुके आपसे उससे रुक जाइए

जो विनम्र बने, उसके साथ और विनम्र बन जाना चाहिए; जो झगड़ा करने से स्वयं ही हाथ खींच ले, उसके साथ फिर झगड़ना नहीं चाहिए।

झूठ कहे सो लड्डू खाय, सांच कहे सो मारा जाय

दुनिया में झूठों की ही क़द्र है।

झूठ की नाव मझधार डूबती है।

झूठ का अंत में भंडाफोड़ होता है।

झूठ के पांव नहीं होते

झूठ परीक्षा में ठहरता नहीं। कलई खुल जाती है।

झूठ न बोले तो अफर जाय

झूठे से क. कि क्या झूठ बोले बिना तुम्हारा काम नहीं चलता ?

अफरना=भर जाना, फूल उठना।

झूठ न बोले तो पेट फट जाए

दे. ऊ.।

झूठ बराबर पाप नहीं

स्पष्ट।

झूठ बोलना और खे खाना बराबर है

झूठ बोलना एक वहुत घृणित कार्य है।

खे=विष्ठा, मल।

झूठ बोलने में रखा क्या है ?

झूठ बोलना व्यर्थ है

झूठ बोलने में सर्फ़ा क्या

(1) झूठ ही बोलना, तो उसमें किफायत क्या?

(2) झूठ बोलने में कुछ खर्चा नहीं होता, यह अर्थ भी होता है।

सर्फ़ा=कम-ख़र्ची।

झूठ बोलने वालों को पहले मौत आती थी, अब बुखार भी नहीं आता

झूठ बोलने वाले से मज़ाक में क.।

झूठ बोलूं तेरे मुंह पर

मेरी इतनी हिम्मत नहीं कि तुम्हारे सामने झूठ बोलूं।

झूठ से काम नहीं चलता, (व्य.)

झूठा सफल नहीं होता।

झूठा जूठ से बुरा जो सोने का होय

झूठ से ही शहर गंदा रहता है।

झूठी बात बना ले, पानी में आग लगा ले

बहुत धूर्त आदमी।

झूठ का मुंह काला, सच्चे का बोलवाला

झूठे की हमेशा हार होती है, सच्चे की जीत।

झूठे की कुछ पत नहीं, सज्जन कुछ न बोल।
लखपती का झूठ से, दो कोड़ी हो मोल।

झूठे का कोई विश्वास नहीं करता।

झूठे की नहीं बह बढ़ती

झूठा कभी तरक्की नहीं करता।

झूठे के आगे सच्चा रो मरे

झूठे के आगे सच्चा हार मान लेता है।

झूठे के मुंह में बू आती है

झूठा घृणित जीव है।

झूठे को घर तक पहुंचाना चाहिए

(1) जिसमें उससे फिर पाला न पड़े। अथवा

(2) झूठे को तभी छोड़े, जब उसके मुंह से सच निकलवा ले।

झूठे घर को घर कहें, सच्चे घर को गोर।
हम चाले घर आपने (और) लोग मचावें शोर।

स्पष्ट। वैराग्य की उक्ति।

झूठे जग पतयाय

(1) इस संसार में झूठों का ही लोग विश्वास करते हैं। अथवा

(2) झूठे संसार को लोक पतयाते हैं, अर्थात सच्चा करके मानते हैं।

(वेदांतियों का यह सिद्धांत है कि संसार माया है।)

झूठे हाथ से कुत्ता भी नहीं मारता

कंजूस के लिए कहना।

(झूठे हाथ में भोजन का कुछ-न-कुछ अंश लगा रहता है। इसलिए भाव यह है कि भोजन के बाद हाथ में जो अन्न लगा है, कंजूस को उसके भी नष्ट होने का डर रहता है। कहावत का रूप यह भी हो सकता है कि झूठे हाथ से कुत्ता भी नहीं मारना चाहिए, जो ठीक जान पड़ता है।)

झूठों का घर नहीं बसता

झूठा कभी खुशहाल नहीं हो पाता।

झूठों का बादशाह

बहुत झूठा।

झोंपड़ी में रहे, महलों का ख़्वाब देखे

अपने बूते के बाहर के ऊंचे ख्याल बांधना।

झोटे-झोटे टक्करें लड़े, झुंडियों का नाश हो

भैंसे तो लड़ें, पौधों का नाश हो।

बड़ों की लड़ाई में छोटे व्यर्थ मारे जाते हैं।

ट

टंटा मत कर जब तलक बिन टंटे हो काम।
टंटा विस की बेल है, या का मत ले नाम।
बिना झगड़े के काम बन जाए, तो झगड़ा नहीं करना चाहिए। झगड़ा बुरी चीज है।

टका कराई, और गंडा दवाई
दवा कराने के लिए तो (वैद्य को) एक टका दिया, पर दवा केवल पांच ही कौड़ी की मंगाई।
(जहां करना चाहिए, वहां खर्च न करके दूसरी मद में अधिक खर्च करना।)

टका रोटी अब ले, चाहे तब ले
इतना कभी ले लो। इससे अधिक की आशा मत करो।

टका-सा जवाब दे दिया
साफ़ इंकार कर दिया।

टका हो जिसके हाथ में, वह बड़ा है ज़ात में
पैसे वाले का ही सम्मान सब जगह होता है।

टका का सारा खेल है
दुनिया के सब काम पैसे से ही होते हैं।

टके की मुर्गी, छः टके महसूल
जितने की चीज नहीं, उतने से अधिक उस पर खर्च हो जाना।

टके की लौंग, बाननी खाय, कहो घर रहे कि जाय?
बनियों पर ताना है। वे प्राय: कंजूस होते हैं। उनकी स्त्री अगर दो पैसे रोज़ की लौंग खा जाए, तो काम कैसे चलेगा?

टके तीतर गइला पर, पांच रुपैया भइला पर
ग़रीब को कोई चीज दो पैसे में भी उतनी ही महंगी जान पड़ती है, जितनी अमीर को पांच रुपए में
गइला पर=न होने पर। भइला पर=होने पर।

टट्टर खोल निखट्टू आया, (स्त्रि.)
अकर्मण्य पति के लिए उसकी स्त्री का कहना।

टट्टी की ओट शिकार खेलते हैं
धोखा देते हैं। छिपकर बुरा काम करते हैं।

टट्टू को कोड़ा और ताजी को इशारा
मूर्ख मुश्किल से समझता है, समझदार इशारे से ही समझ जाता है।
ताजी=घोड़ों की एक किस्म; अरबी घोड़ा।

टपके का डर है
बारिश में घर के टपकने का डर है। जब किसी के मन में कोई ऐसा ख़ास डर समा जाए कि जिसकी वजह से वह कोई काम न कर सके, तब क.।
(इसकी कथा है कि एक बूढ़ा सिपाही, जिसने कभी भले दिन देखे थे, अपने सड़ियल टट्टू पर सवार हो कहीं जा रहा था। शाम को वह एक जंगल में जहां शेर, भालू आदि हिंसक जंतुओं का डर था, एक बुढ़िया की झोंपड़ी में ठहर गया और पूछने लगा कि यहां किसी बात का डर तो नहीं है। बुढ़िया बोली—सरकार, डर तो किसी बात का नहीं है, अगर है तो टपके का है। झोंपड़ी के पीछे एक शेर खड़ा यह सब सुन रहा था। उसने समझा कि 'टपका' कोई मुझसे भी ज़बर्दस्त जानवर है, जिसके सामने मेरे डर की कोई परवाह ही नहीं की गई। संयोगवश आधी रात को पानी बरसा, जिससे सिपाही का घोड़ा खूंटे से छूट गया। सिपाही अंधेरे में घोड़ा खोजने गया तो उसके हाथ शेर पड़ गया। वह उसे ही टट्टू समझ बांधकर झोंपड़ी ले आया और खूंटे से बांध दिया। शेर भी 'टपका' समझ उससे

कुछ न बोला। सुबह होते ही यह बात तमाम में फैल गई कि किसी ने एक शेर को रस्सी से बांध रखा है। राजा ने जब यह ख़बर सुनी तो वह स्वयं उस दृश्य को देखने आए और सिपाही पर इतने प्रसन्न हुए कि उसे बहुत-सा इनाम देकर फ़ौज का सरदार बना दिया।)

टहल करो फ़कीर की, देवे तुम्हें असीस।
रैन दिना राज़ी रहो, चुग में विस्वा बीस।

स्पष्ट।

टहल करो मां-बाप की, हो संपूरन आस।

या

टहल से जो फिर नरक उन्हीं का वास।

स्पष्ट।

टहल न टकोरी, लाओ मजूरी मोरी

काम कुछ न करना, मुफ्त का मांगना।

टहलिए को टहल सोहे, बहलिये को बहल सोहे

जिसका काम उसी को शोभा देता है।

टांका पाना मिल गया

समझौता हो गया, दो आदमियों में आपस का झगड़ा ख़त्म हो गया और वे फिर मित्र बन गए। टांका पाना=कपड़े का जोड़ सीवन।

टांकी बज रही है

मकान तैयार हो रहा है। किसी की उन्नति देखकर क.। *(टांकी से पत्थर काटते-छांटते हैं और उसकी आवाज़ होती है।)*

टांग उठे ना, चढ़ल चाहे हाथी

शक्ति से बाहर काम करने का प्रयास करना।

टांग के नीचे से निकाल दिया

नीचा दिखा दिया; काबू में कर लिया।

टांग पकड़ कर लाये और पूंछे पकड़ के बहा दिया

किसी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करना।

टांटे से नाटा भला, जो देवे तुरत जवाब।
वह टांटा किस काम का, जो बरसों करे खराब।

टंटा (झगड़ा) करने वाले से तो नट जाने वाला अच्छा। वह झगड़ा किस काम का जिससे समय नष्ट हो।

नाटा=वादे से पलट जाने वाला।

टाट, कामला, दोलड़ा, तीनों जात गुलाम,
जिस चाहे तित बैठकर, तुरत करो बिसराम। (ग्रा.)

टाट, कंबल और दोहर तीनों बड़े काम की चीजें हैं, जहां चाहे बिछा लो और आराम करो। *(इनके खराब होने का डर भी नहीं रहता।)*

टाट कामले घर मां घाले, बाहर बतावे शाले दुशाले, (ग्रा.)

झूठी शेखी बघारने वाले के लिए क.।

कामले=कंबल।

घर मा घाले=घर में खाने को नहीं।

टाट के अंगिया, मूंज की तनी, देख मेरे देवरा मैं कैसी बनी? (स्त्रि.)

(1) जब कोई औरत अपनी भद्दी पोशाक सबको दिखाती फिरे, तो उसको ताने में...।

(2) भद्दे और बेतुके काम के लिए भी व्यंग्य में कहा जा सकता है।

टायर, टट्टू, गज, गऊ, पूत, मीत, धन माल।
कोऊ संग न जात है, जब लै जिऊ निकाल।

मरने पर कुछ भी साथ नहीं जाता।

टायर=घोड़ा।

टायर भला न लांगड़ा रूख भला न झांगड़ा

लंगड़ा घोड़ा अच्छा नहीं, और न कंटीला पेड़ ही।

टायर न भूखे को कभी, जो दे तुझे खुदा।
आधी में से पास जो, उसे बांट कर खा।

स्पष्ट।

टाल बजा के मांगे भीख; उसका जोग रहा क्या ठीक?

जो घंटा बजाकर भीख मांगे उसकी साधना तो व्यर्थ है। *(घंटा बजाकर मांगने वाले साधुओं पर व्यंग्य)*

टाल बता उसको न तू, जिससे किया करार।
चाहे हो बैरी तेरा, चाहे होवे यार।

किसी के साथ वायदा करके उसे फिर धोखा नहीं देना चाहिए, चाहे वह शत्रु हो या मित्र।

टालमटोल मत करे, किये बचन भुगताय।
जो नर वचनों से फिरे, वह पत देत गंवाय।

वचन देकर पूरा करना चाहिए, टालना ठीक नहीं। वादाखिलाफी करने वाले पर से लोगों का विश्वास उठ जाता है।

'टिकटिक' समझे 'आआ' समझे; कहे सुने से रहे खड़ा।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, अस मानुस के बैल भला।

जड़ बुद्धि मनुष्य के लिए क.।

टिकुला सेंदुर गैल तो खाने में भी बज्जुर पड़ब, (स्त्रि.)

कोई और आराम न मिले तो क्या भरपेट अन्न भी न मिलेगा? स्त्री अपने अकर्मण्य पति से कह रही है; कोई नौकर भी मालिक से कह सकता है।

टिड्डी का आना काल की निशानी, (कृ.)

क्योंकि टिड्डी जहां जाती है, वहां फसल नष्ट कर देती है।

टीमटाम की पगड़ी बांधी, वह भी सदक़ा जोरू का।
नेक पाक का चौका दीना, गोबर गाय-गोरू का।

जोरू के दहेज में से कपड़ा लेकर बांकी पगड़ी बांध रखी है, और गाय के गोबर से लीपकर जगह को पवित्र करते हैं।

(अ-हिंदुओं का हिंदुओं पर कटाक्ष।)

टुक जिया तो क्या जिया

थोड़े दिनों का जीवित रहना किस काम का?

टुक-टुक करके मन भर खावे, तनक बेगमा नाम बतावे, (स्त्रि.)

नाम तो सुकुमार वेग़म है, पर थोड़ा-थोड़ा करके मन भर खा जाती है।

टुकड़ा तोड़ जवाब देना

(1) संक्षेप में जवाब देना। (2) साफ़ इंकार कर देना। (3) ऐसा जवाब देना कि फिर कुछ कहा ही न जा सके।

टुकड़े खाए दिल बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए, (स्त्रि.)

ऐसा काम करना, जिससे केवल खाने को मिलता रहे; और कुछ लाभ ही न हो।

टुकड़े दे दे बछड़ा पाला, सींग लगे जब मारन आया

कृतघ्न व्यक्ति।

टुकड़ों का पाला है

किसी के प्रति उपेक्षा और घृणा से क.।

टूंट न रख ले बालके, सबसे मिलकर चाल।
टूंटा ढोबर देत हैं गांव गली में डाल।

सबसे मिलकर चलना चाहिए, बिगाड़ करना ठीक नहीं। जो टूट (बिगाड़) करता है, उसे लोग इस तरह त्याग देते हैं, जैसे टूटी हांडी गली में फेंक दी जाती है।

टूटले तेली, तो कमर में अधेली

बिगड़ी हालत में भी तेली की कमर में अधेली रहती है। *(तेली प्रायः संपन्न होते हैं।)*

टूटा मत रह टोल सूं, राह भीर के बीच।
एक अकेले मनुख को, सूझे ऊंच न नीच।

यात्रा में या लड़ाई में अपने साथियों का संग नहीं छोड़ना चाहिए। अकेला एक आदमी सब तरह के भले-बुरे की जांच नहीं कर सकता।

भीर=भीड़, विपत्ति, झगड़ा।

टूटी कमान से डरें नौ जने

टूटे हथियार से भी लोग डरते हैं।

टूटी का क्या जोड़ना ? गांठ पड़े और न रहे

टूटी वस्तु कभी जुड़ती नहीं। (जोड़ने से) गांठ पड़ जाती है और फिर जुड़ने के बाद भी उसकी मज़बूती का क्या ठिकाना? मित्रों में झगड़ा हो जाने पर मेल फिर मुश्किल से होता है।

टूटी की क्या बूटी?

टूटी चीज जुड़ती नहीं। मौत की दवा नहीं।

टूटी की बूटी बता दो, हकीम जी।

दे. ऊ.।

टूटी टांग, पांव न हाथ, कहे 'चलूं घोड़ों के साथ'

ऐसा काम करने की चेष्टा करना, जिसे अधिक समर्थ भी न कर सकें।

टूटी बांह गले पड़े

बांह जब टूट जाती है, तो उसे डोरी व पट्टी के सहारे बांध कर गले में लटका लेते हैं।

(जब कोई घर का आदमी अथवा सगा-संबंधी बिल्कुल गिरी हालत में हो जाता है, और उससे किसी तरह पिंड भी नहीं छूटता।)

टूटी है तो किसी से जुड़ती नहीं, और जुड़ी है तो कोई तोड़ सकता नहीं

(1) मैत्री या पारस्परिक हित-संबंध के लिए कहते हैं कि दो आदमियों के बीच अगर वह टूट गया है, तो फिर जुड़ता नहीं और नहीं टूटा तो उसे कोई तोड़ नहीं सकता। (2) असाध्य रोगी को धैर्य बधाने को भी कहते हैं कि यदि आयु शेष है, तो कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

टूम कापड़े जिस घर पावें, एक छोड़ दस बइयर आवें

जहां पहनने-ओढ़ने को मिले, वहां एक क्या दस औरतें आ जाती हैं।

टूम कापड़ा=गहना कपड़ा। बइयर=स्त्री।

टूम बइयर की पत बंधावे, टूम तुझे धनवंत कहावे

गहनों से ही स्त्री की शोभा होती है, गहनों से ही लोग धनवान कहलाते हैं।

टेंट आंख में, मुंह खुरदीला, कहे 'पिया मोरा छैल छबीला'

कोई एक स्त्री दूसरी दूसरी स्त्री के पति को लेकर ताना मार रही है। अपनी चीज की बहुत डींग हांकना।

टेंट, बेरवा काल के मीत, खावें किसान और गावें गीत, (कृ.)

जंगली फलों की प्रशंसा में, जिनसे दुर्भिक्ष में ग़रीबों का काम चलता है।

टेंट=करील नामक वृक्ष का फल, टेंटी।
बेरवा=बेर।

टेक उन्हीं की रक्खे साईं,
गरब, कपट नहिं जिनके माहीं।
भगवान उन्हीं की सहायता करता है, जिनमें अहंकार और कपट नहीं होता।

टेर-टेर के रोवे, अपनी लाज खोवे
अपने नुकसान की बात किसी से न कहे, उससे इज्ज़त घटती है।

टोटा करदे मुंह नूं काला, टोटे बाल जगत दा साला, (पं., व्य.)
घाटा होने से मुंह काला होता है, अर्थात बदनामी होती है। जिसका दिवाला निकल जाता है, उसे सभी लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

टोटा टाला ना टले, जब लग मिटे न लेख।
साध कहे रै बालकै, लाख यतन कर देख।
स्पष्ट।

टोटे मारा बानिया, भर जोगी का भेस।
हांडे भिक्षा मांगता घर-घर देस-बिदेस।
बनिए को जब व्यापार में घाटा होता है, तो वह लोगों का रुपया देने के डर से साधु बन जाता है।

टोटे से हो घर का टीबा, टोटा गया तो खुला नसीबा
टोटे से घर बर्बाद हो जाता है, जब टोटा जाता रहता है, तो समझ लो; अब अच्छे दिन आ गए।

टोना टामक, टोटरू, छाने रहैं न भूल।
यूं परगट हो जगत मां, ज्यूं लश्कर की धूल।
टोना-टोटका या जादू-मंत्र छिपे नहीं रहते।

टोलन मां घर टोल भला, सब बाजन मां ढोल भला
सब मुहल्लों में घर का मुहल्ला ही अच्छा, अर्थात जहां अपना घर है वह मुहल्ला, और सब बाजों में ढोल अच्छा। गांव के उन आलसी व्यक्तियों का कहना, जो घर छोड़कर कहीं जाना पसंद नहीं करते।

ठ

ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है

क्रोधी के सामने शांत प्रकृति वाले मनुष्य की हमेशा जीत होती है।

ठंडा है बरफ से भी, मीठा है जैसे ओला।
कुछ पास है तो दे जा, नहीं पी जा राहे मौला।

पानी पिलाने वाले कहा करते हैं।

ठंडी छांव जो बैठती, जल जाता वह रूख।
जलती बलती मैं फिरूं, बन में देती कूक। (स्त्रि.)

किसी वियोगिनी अथवा बहुत ही बदनसीब की उक्ति।

ठग न देखे, देखे कलवार

ठग देखना हो तो कलवार देख लें। अर्थात कलवार पक्का ठग होता है। वह शराब में पानी मिलता है।

कलवार=शराब बेचने वाला।

ठग न देखे, देखे कसाई, शेर न देखे, देखे विलाड़

इनकी प्रकृति एक-सी होती है। जैसा ठग वैसा कसाई, जैसा शेर वैसी बिल्ली।

ठठेरे ठठेरे बदलाई, (क.)

लेने-देने के मामले में, अथवा साधारण तौर से भी जब कोई व्यक्ति दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करता है, जैसा दूसरे ने उसके साथ किया; तब यह कहना कि भाई, यह तो ठठेरे-ठठेरे बदलाई की बात है।

(एक ठठेरा आवश्यकता पड़ने पर दूसरे को बर्तन दे देता है और बदले में दूसरा बर्तन ले लेता है, मुनाफ़ा नहीं लेता। उसी से कहा. बनी।)

ठांव गुन काजल, ठांव गुन कालख

एक ही वस्तु, किसी एक स्थान पर अच्छी और दूसरे स्थान पर बुरी जान पड़ती है। जो धुआं काजल बनकर नेत्रों की शोभा बढ़ाता है, वही घर में जम जाने पर कालिख समझा जाता है और साफ कर दिया जाता है।

(प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर ही शोभा पाती है।)

ठाकुर पत्थर, माला लक्कड़, गंगा जमुना पानी।
जब लग मन में सांच न उपजे, चारों वेद कहानी।

अगर मन में विश्वास न हो, तो देवता पत्थर हैं, माला लकड़ी है, और गंगा-जमुना का पानी साधारण पानी है। बिना श्रद्धा के धार्मिक आस्था काम नहीं देती। धर्म में आस्था प्रधान है।

ठाली बनिया क्या करे, इस कोठी के धान उस कोठी में धरे

जब कोई केवल समय काटने के लिए व्यर्थ का काम करे, तब क.।

ठीक नहीं ठेके का काम; ठेका दो मत खोवो दाम

ठेके का काम अच्छा नहीं होता।

ठीकरा हाथ में होगा और भीख मांगता फिरेगा

एक प्रकार का शाप। किसी को कोसना।

ठीकरा हाथ में और उसमें बहत्तर छेद

कोसना। दे. ऊ.।

(उर्दू के मशहूर शायर मिर्ज़ा ग़ालिब ने ठीकरे के बारे में एक रोचक घटना लिखी है। उन्होंने एक दिन अपने नौकर को ठीकरे में से अंगारे उठाकर चिलम में रखते देखा। वह अपने मालिक के लिए तमाखू भर रहा था और बड़बड़ाता जाता था। मिर्ज़ा साहब ने उससे पूछा कि तू ठीकरे के सामने क्या कह रहा था? नौकर बोला—यही कह रहा था कि आठ महीने से तनख्वाह नहीं मिली, मैं खाऊं क्या? मिर्जा साहब ने फिर पूछा—ठीकरे ने तुझे क्या जवाब दिया? नौकर बोला—ठीकरे ने मुझसे कहा कि कोई फ़िक्र नहीं, मैं

तुम्हारे साथ हूं। अर्थात मुझे हाथ में लेकर भीख मांगना।)

ठीकरे का सुख, खरची का दुख

रहने को जगह तो बहुत, पर पैसे की तंगी।

(प्रायः वेश्याएं कहा करती हैं, जब उन्हें पूरी उज़रत नहीं मिलती।)

ठेंगा थाम, लबेदे हजार, (पू.)

मोटे डंडे को ही संभालना चाहिए, पतले बेंत तो हज़ारों मिल जाएंगे। मज़बूत का सहारा लेना चाहिए।

ठेका ले उस काम का, जो तुझसे हो ठीक

जिस काम को ठीक तौर से किया जा सके, उसी की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

ठेके का काम फीका

स्पष्ट।

ठेस लगे, बुद्ध बढ़े

नुकसान होने पर ही अक्ल आती है।

ठैर ठैर के चालिए, जब हो दूर पड़ाव।
डूब जात अधियाव में, दौड़ चलती नाव।

काम सावधानी से धीरे-धीरे करना चाहिए, जल्दबाज़ी से हानि होती है।

अधियाव में=आधे रास्ते में।

(इस संबंध में कछुआ और खरगोश की कहानी प्रसिद्ध है। कछुआ धीमी चाल से चलकर बाजी जीत गया और खरगोश, जो दौड़कर चला था; हार गया।)

ठोंगे मार किया सिर गंजा, कहै 'मेरे हैं हाथ न पंजा'

डंडे मारकर सिर गंजा कर दिया और कहता है—मेरे हाथ और पंजे ही नहीं हैं। जब कोई अपनी हरकत से किसी को नुकसान पहुंचाए और यह कहकर कि मैं यह काम कर ही नहीं सकता, अपने को निर्दोष भी साबित करे; तब क.।

ठोंट चितेरा मन में झींके

लूला चित्रकार मन में पछताता है कि मैं तस्वीर नहीं बना सकता। जब कोई आदमी कारणवश किसी ऐसे काम को करने से वंचित हो जाता है, जिसे वह बहुत अच्छी तरह कर सकता है, अथवा जो उसके मन के बहुत निकट है; तब क.।

ठोक बजा ले वस्तु को, ठोक बजा दे दाम।
बिगड़त नाहीं बालके, देख भाल का काम।

हर चीज देखभाल कर लेनी चाहिए, और देखभाल कर ही दाम देना चाहिए।

ठोकर खावे, बुद्ध पावे

दे.—ठेस लगे...।

ठोकर लगी पहाड़ की, तोड़ें घर की सिल

जब कोई मनुष्य बाहर से चोट खाकर आए और घर में अपनी स्त्री अथवा दूसरे लोगों पर उसका गुस्सा उतारे, तब क.।

ड

डढ़ियाला धन, (स्त्रि.)

लंवी दाढ़ी वाले पर व्यंग्य। पुत्र के लिए भी कहा जाता है।

डर न दहशत, उतार फिरी ख़िशतक, (स्त्रि.)

निर्लज्ज औरत।

ख़िशतक=(फा. ख़िश्तक) पायजामा।

डरा सो मरा

अक्सर छूत की बीमारियां फैलने पर लोगों को साहस बंधाने के लिए क.।

डरिए, रंडी, तेरे दीदे से

गाली।

दीदा=आंख।

डरें लोमड़ी से, नाम दिलेर खां

कायर आदमी।

डरें लोमड़ी से, नाम शेर खां

दे. ऊ.।

डल्लू का दहसेरा

सवसे निराली चाल

(डल्लू नाम का कोई बनिया था, जो पसेरी की जगह दससेरा रखा करता था।)

डांड़ा सी पूंछी, बुड़हाने का रास्ता

(लोमड़ी की) बांस की तरह लंवी पूंछ है और बुड़हाने का रास्ता बहुत खराब है, कैसे तै किया जा सकेगा? काम करने के अयोग्य।

(बुड़हाना किसी स्थान का नाम है।)

डाढ़ी खुदा का नूर है, (मु.)

मुसलमानों में दाढ़ी पवित्र मानी जाती है; इसी से क.।

डाबर डूबे जग तिरे, जग डूबे डाबर तिरे, (कृ.)

जव डावर बरसात के कारण पानी से भर जाते हैं, तो संसार तर जाता है, अर्थात फसल अच्छी होने से लोग सुखी होते हैं, और जव जग डूवता है, अर्थात अकाल पड़ता है, तब डाबर तर जाते हैं; यानी उनमें फसल अच्छी होती है।

भाव यह है कि नीची जमीन के खेत ही हमेशा अच्छे होते हैं।

डायन को बच्चा सौंपना

महान मूर्खता है। वह तो उसका भेजा और कलेजा खा जाएगी।

डायन को भी दामाद प्यारा

अपनी लड़की के कारण। आशय यह कि मां को लड़की बहुत प्यारी होती है।

डायन खाय तौ मुंह लाल, न खाय तौ मुंह लाल

क्योंकि उसके मुंह से खून तो लगा ही रहता है, अथवा उसके चेहरे से भयानकता तो टपकती ही रहती है। वदनाम आदमी के लिए। चाहे बुरा काम करे या न करे, पर हर मौके पर बुराई उसे मिलती ही है।

डायन भी दस घर छोड़कर खाती है, (स्त्रि.)

दुष्ट से दुष्ट आदमी भी अपने पड़ोसियों का लिहाज करता है। जव कोई अपने ही लोगों को धोखा देता है।

डाल का चूका बंदर और बात का चूका आदमी, ये फिर नहीं संभलते

हानि उठाकर रहते हैं।

बात का चूका=जो वचन देकर पालन न करे।

डाल का टूटा
बिलकुल ताज़ा (फल)।
डालते देर नहीं, सिर पर कोतवाल
ग़लत काम करते ही पकड़ा जाना।
डील डौल गुम्बज, आवाज़ दर फिस्स
देखने में मोटे-ताजे, पर आवाज़ बहुत धीमी।
डुग-डुग बाजे, बहुत नीकी लागे; नौआ नेग मांगे उठा बैठी लागे, (स्त्रि.)
विवाह में जब ढोल बजता है, तब तो बहुत अच्छा लगता है; पर नाई जब अपना हक मांगता है, तो बगलें झांकते हैं।
डूबते को तिनके का सहारा
डूबता आदमी तिनके को भी पकड़ लेता है।
विपद्ग्रस्त को थोड़ा भी सहारा बहुत होता है।
डूबा बंस कबीर का उपजा पूत कमाल
ऐसी संतान का उत्पन्न होना, जो अपने पूर्वजों की चालढाल या धर्म को छोड़ दे।
(कहते हैं कबीर ने अपने पुत्र कमाल को बचपन में यह उपदेश दिया था कि सब मनुष्यों को अपना भाई और सब स्त्रियों को मां, बहन और लड़की के समान समझना चाहिए।
जब कमाल बड़े हुए, तो पिता ने उनसे विवाह करने के लिए कहा। कमाल ने उत्तर दिया—संसार में मुझे मां, बहन और बेटी छोड़कर और कोई स्त्री नहीं दीखती, जिसके साथ मैं विवाह करूं। उन्होंने फिर विवाह नहीं किया और कबीर का वंश लोप हो गया। यह भी कथा है कि कमाल कबीर के वचनों का बहुत खंडन भी किया करते थे। उसी पर किसी ने उपर्युक्त बात कही है।)
डूबी, कंथ, भरोसे तेरे, (स्त्रि.)
जब किसी के भरोसे रहे, और उससे सहायता न मिलने के कारण हानि हो जाए; तब क.।
कंथ=कंत; नाथ।
डूबेगा भाडू का भाडू, रात समय ने देसै झाडू, (लो. वि.)
रात में झाडू नहीं देनी चाहिए, हानि होती है।
डूढ़ ईंट की मस्ज़िद जुदी ही बनाते हैं, (मु.)
(1) अपने मन की करते हैं। अथवा
(2) निराली चाल चलते हैं।
डेढ़ चावल अपने जुदे ही पकाते हैं
दे. ऊ.।
डेढ़ पाव आटा, पुल पर रसोई, (स्त्रि.)
व्यर्थ का दिखावा।
डोम और चना, मुंह लगा बुरा
इसलिए कि डोम धृष्ट होता है और चना आदमी खाते-खाते बहुत खा जाता है, जिससे हानि होती है।
डोम के घर ब्याह, मन आवे सो गा
डोम एक गाने-बजाने वाली याचक जाति है। अकसर ये लोग बड़े अश्लील गीत गाते हैं। इसीलिए कहा गया है।
डोम डोली, पाठक प्यादा
डोम तो डोली में और पुरोहित पैदल। एक अशोभन कार्य। उस समय भी कहा जाता है, जब किसी मूर्ख मालिक को समझदार नौकर मिल जाए।
डोमनी का पूत चपनी बजाय,
अपनी जात आप ही जताय।
किसी का जातिगत स्वभाव नहीं जाता। डोमनी के लड़के को ढोलकी बजाने को नहीं मिली, तो वह मिट्टी की चपनी ही बजाने लगा।
(जातपांत पर आधारित विश्वास।)
डोमनी की लौंडी
गाली।
डोली आई डोली आई, मेरे मन में चाव;
डोली में से निकल पड़ा, भोंकड़ा बिलाव।
बच्चों की तुकबंदी।
बहू जब सयानी और कुरूप आती है, तब क.।
डोली न कहार, बीबी भई हैं तैयार, (स्त्रि.)
कोई सवारी नहीं आई, कोई बुलाने नहीं आया, फिर भी बीबी जाने को तैयार।
किसी के यहां बिना बुलाए जाना।

ढ

ढड्ढो आई बाल थुतराए

गंदी और बेढंगी औरत।

ढटींगर काहे मोटा, लाहा गने न टोटा

बेफिक्र के लिए क.।

ढटींगर=उद्धत, आवारा।

लाहा=लाभ।

ढलती फिरती छांह है

मनुष्य की परिवर्तनशील स्थिति के लिए क.।

ढाल तले की फूहड़ महुवे तले की सुघड़, (स्त्रि.)

जो ढाक तले जाए, वह तो फूहड़ है और जो महुआ तले जाए वह सुघड़; क्योंकि ढाक के नीचे न तो छाया मिलती है और न कोई खाने योग्य पदार्थ, जब कि महुआ तले ये दोनों प्राप्त होते हैं।

ढाके के बंगाल, कूजे के कंगाल, (पू.)

जहां जो चीज बहुतायत से होती हो, उसका अभाव होना। एक अनहोनी बात।

(ढाका मिट्टी के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध है।)

कूजा=झज्झर, सुराही।

ढाल तलवार सिरहाने, और चूतड़ बंदीखाने, (पू.)

कायर आदमी। हथियार तो पास में, पर लड़ने की हिम्मत नहीं।

ढाल बांधूं तलवार बांधूं, कसकै बांधूं फेटा।
बीच बजार में डाका मारूं तो बाप का बेटा।

चंट आदमी।

ढूंढ लाओ, बता देंगे

बेवकूफ़ बनाना। टालमटोल करना।

ढेंढ़स और कद्दू, लानत ब हर दू, (फा.)

दोनों पर लानत।

जब दो आदमी आपस में लड़ रहे हों, और वे दोनों ही एक से बुरे हों, तब क.।

ढोरे मरे, न कौवा खाय।

न तो ढोर ही मरे, और न कौवा उन्हें खा ही सके। व्यर्थ की आशा।

ढोल के भीतर पोल

(1) (किसी स्थान पर) ऊपरी ठाट-बाट तो अच्छा पर भीतर धांधलेबाजी।

(2) ऊपरी शान शौकत बहुत, पर भीतर खोखलापन।

ढाल न ढफ, हर हर गीत

बिना साज-सामान के काम।

ढोलबाज दमामे बाजे, (स्त्रि.)

किसी मनुष्य के बुरे चालचलन की पहले थोड़ी और बाद में बहुत बदनामी होना।

ढोवे के टोकरी, गावे के गीत, (पू.)

(1) हैसियत से बाहर काम करना।

(2) छोटे होकर बड़े की बराबरी करना।

त

तंगी के साथ फराखी और फराखी के साथ तंगी लगी हुई है
दुख के साथ सुख और सुख के साथ दुख लगा हुआ है।
तंगी=संकीर्णता। गरीबी।
फराखी=विस्तार। अमीरी।

तंगी गई, फराखी आई
गरीबी गई, अमीरी आई।

तई की तेरी, खपड़ी की मेरी
तवे की रोटी तेरी, बर्तन की मेरी।
अपना ही मतलब देखना।

तक तिरिया को आपनी, पर तिरिया मत ताक।
पर नारी के ताकने, पड़ै सीस पर खाक।
पराई स्त्री को बुरी नज़र से मत देखो।

तकदीर के आगे नहीं तदबीर की चलती
भाग्य के आगे उद्यम काम नहीं करता।

तकदीर के लिखे को तदबीर क्या करे।
गर हाकिम खफ़ा हो, वज़ीर क्या करे।
स्पष्ट।

तकदीर सीधी है तो सब कुछ है
भाग्य अनुकूल होने से सब काम बनते हैं।

तकदीरों बाज़ी है
(1) जिसका भाग्य प्रबल होगा उसी की जीत होगी। अथवा (2) देखें जीत किसकी होती है।

तकले का-सा बल निकल गया
जब पिटने या सजा पाने पर किसी की अक्ल ठिकाने आ जाए, तब क.।
तकला=चरखे में लोहे की वह सलाई जिस पर सूत लिपटता है।
बल=ऐंठन।

तकल्लुफ़ में रेल चल दी
ज्यादा तकल्लुफ़ से नुकसान होता है।
(इस पर चुटकुला है कि दो शरीफ़ आदमी कहीं बाहर जाने के लिए स्टेशन पर पहुंचे और टिकट कटा लिए। रेल भी प्लेटफ़ार्म पर आ पहुंची। एक ने दूसरे के प्रति शिष्टाचार दिखाने के लिए कहा—हज़रत सवार हूजिए। दूसरे ने कहा—नहीं, क़िबला पहले आप। पहले ने कहा—नहीं, नहीं, पहले आप बैठिए, तब मैं बैठूंगा। आपस के इस शिष्टाचार में तब तक रेल छूट गई।)

तकल्लुफ़ में है तकलीफ़ सरासर
स्पष्ट। दे. ऊ.।

तकाज़े का हुक्का भी नहीं पिया जाता
हुक्का भी मांगकर नहीं पीना चाहिए। उधार की चीज बुरी होती है।

तका पराया हाथ और गया नरक
(1) दूसरे के पैसे पर नज़र डालना बुरा है। अथवा
(2) दूसरे का सहारा अच्छा नहीं।

तख़्ती पर तख़्ती मियां जी की आई कमबख़्ती, (लो. वि.)
तुकबंदी। मक़तब में पढ़ने वाले लड़के कहा करते हैं। पट्टी पर पट्टी रखे जाने को लड़के मास्टर के लिए हानिकारक समझते हैं।

तजल्ली को तक़रार नहीं
प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की ज़रूरत नहीं।

तड़के उठ कर खाट से, छोड़-छाड़ सब काम।
माला लेकर हाथ में, जप साईं का नाम।
स्पष्ट।

तड़के का भूला सांझ को आए, तो भूला नहीं कहलाता

(1) सबेरे की भूली हुई बात अगर शाम तक याद आ जाए, तो वह भूली नहीं कहलाती; अथवा

(2) सबेरे का खोया हुआ आदमी शाम तक घर लौट आए, तो वह खोया हुआ नहीं कहलाता। जब कोई मनुष्य बुरे रास्ते पर जाकर बाद में संभल जाए, तब क.।

ततड़ी ने दिया, जनम जली ने खाया, जीभ जली न सवाद पाया, (स्त्रि.)

जब दो एक से अभागे एक-दूसरे की सहायता करने बैठें, तो उससे कोई लाभ नहीं होता।

(जब कोई बहुत कम चीज खाने को दे, तब भी क.।)

ततड़ी=जली हुई; दुख से पीड़ित।

तत्ता कौर निगलने का न उगलने का

धर्मसंकट में पड़ना।

तत्ती खिचड़ी घी न पाया, अब का सियाला यूं ही गंवाया

अब का जाड़ा यों ही बीत गया, गरम-गरम खिचड़ी के साथ घी खाने को नहीं मिला। किसी ऐसे मनुष्य का कथन जो खाने का शौकीन हो, पर पैसे से तंग हो।

तन उजला, मन सांवला, बगुले का सा भेक।
तोसें तो कागा भला, बाहर भीतर एक।

स्पष्ट। धूर्त या कपटी।

तन कसरत में, मन औरत में

दो परस्पर विपरीत काम एक साथ नहीं हो सकते। अथवा नहीं करना चाहिए।

तन का वैरी ताप है, मन का बैरी नेह।
जिस तन में ये दो रमें, तो गए जी अरु देह।

स्पष्ट।

ताप=ज्वर।

तन की कर ले तुनतुनी और मन के कर ले तार।
फिर जस गा हरिनाम के, जो तुरत मिले करतार।

अपने शरीर रूपी इकतारे में मन रूपी तार लगाकर ईश्वर का गुणगान कर, तो भगवान तुझे शीघ्र मिलेंगे। भक्तों का कहना।

तन की तनक सराय में, नेक न पावो चैन।
सांस नकारा कूंच का, बाजत है दिन रैन।

मौत कब आ जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता।

तनक=छोटी।

नकारा=नगाड़ा।

तन को कपड़ा, न पेट को रोटी

बहुत दयनीय हालत।

तन गुदड़ी, मन धागा, कोई कुछ ही लखे, मन लागा

फक्कड़ों का कहना।

तन तकिया मन बिसराम, जहां पड़ रहे वहीं आराम

शरीर तो तकिया है, और तन है सराय, बस जहां लेट रहे, वहीं आनंद है। फक्कड़ों का कहना।

तन ताजा तो कलंदर राजा

जब पेट भरा होता है, तो फकीर भी अपने को राजा समझता है। कलंदर एक प्रकार के मुसलमान फकीर होते हैं।

तन दे, मन ले

मेहनत से काम करो, तो दूसरा आदमी प्रसन्न होगा।

तन्दुरुस्ती हज़ार न्यामत है

सबसे अच्छी वस्तु है।

तन पर चीर न घर मां नाज, दद-ससुरे का रोपा काज

बदन पर कपड़ा नहीं और घर में अनाज नहीं, फिर भी ददिया ससुर का श्राद्ध करने की ठानी है। सामर्थ्य से बाहर काम करना।

तन पर सोहे कपड़ा और रन सोहे रनजीत।
वीर पुरुष वो ही भला (जो) सबसे राखे प्रीत।

कपड़ा शरीर पर शोभा देता है, और बहादुर लड़ाई के मैदान में। सच्चा वीर वही है, जो सब से प्रेम रखे।

तन पिंजरा, मन तीतरा; सांस जीव का मूल।
जब तीतर उड़ जात है, तो होजा पिंजर धूल।

स्पष्ट।

तन पुतला है ख़ाक़ का, इसे देख मत भूल।
इक दिन ऐसा होयगा, मिले धूल में फूल।

शरीर क्षणभंगुर है।

तन फूहड़ का भैंस सूं भारी; कहे 'कहो मोहे नाजो प्यारी', (ग्रा.)

देखने में तो फूहड़ औरत भैंस जैसी है और कहती है कि मुझे 'नाजो प्यारी' कहकर बुलाओ। अपने रूप-सौंदर्य का झूठा गर्व।

नाजो प्रायः दुबली-पतली और सुकुमार लड़की से ही कहते हैं।

तन मिला तो क्या हुआ, मन की बुझी न प्यास।
जैसे सीप समुद्र में, करे त्रास त्रास।

स्पष्ट।

तन लगी घुपड़ी तो बला छाए झुपड़ी

जरूरत के वक्त ही किसी चीज की कमी महसूस होती है।

(कथा है कि एक बुढ़िया रात में जाड़ा लगने पर रोज सोच लेती थी कि सुबह होते ही झोंपड़ी छा लूंगी, पर सुबह होने पर जब धूप निकलती तो वह अपना इरादा बदल देती।)

तन सीतल हो सीत सूं, और मन सीतल हो मीत सूं

स्पष्ट।

सीत=शीत; ठंडक।

तन सुखाय पिंजर करें, धरैं रैन दिन ध्यान।
तुलसी मिटे न बासना, विना बिचारे ज्ञान।

ज्ञान के बिना वासनाएं नहीं मिटतीं।

तन सुखी तो चैन है, ना तो दुख दिन रैन है

शरीर के स्वस्थ रहने से ही मन प्रसन्न रहता है। तन सुखी तो मन सुखी।

दे. ऊ.।

तन सूखा, कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर जीन धरो बाबा।
अब मौत नकारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।

वुढ़ापे के लिए कहा गया।

तनूरवाज़ी और अल्लाह राजी, (मु.)

तंदूर वाले से रोटी मांगकर खाना और मौज करना। फकीरों का कहना।

(मुसलमान फकीर प्रायः नियम से तंदूर वाले के पास जाकर रोटी मांगते हैं। उसी से कहावत की सार्थकता।)

तनूर=तंदूर, रोटी सेंकने की एक प्रकार की भट्टी।

तपे जेठ तो बरखा हो भरपेट, (कृ.)

जेठ (जून) में खूब गर्मी पड़ने से वर्षा अच्छी होती है।

तपे नखत मृगशिरा जोय, तब बरखा जग पूरन होय, (कृ.)

मृगशिरा नक्षत्र में अगर खूब गर्मी पड़े, तो वर्षा ज्यादा होती है। (मृगशिरा एक चान्द्र नक्षत्र है, जो जुलाई-अगस्त में लगता है।)

तब लग झूठ न बोलिए, जब लग पार बसाय

जब तक वश चले झूठ नहीं बोलना चाहिए। विवशता की बात दूसरी है।

तमाचा मारे मुंह लाल रखते हैं

ऊपरी हालत को ठीक रखकर अपनी हीन स्थिति को छिपाने की कोशिश करना।

तमा रा सेह हरफ अस्त हर सेंह तिही, (फ़ा.)

तमा (ईर्ष्या) शब्द में तीन अक्षर हैं और तीनों ही नुक़्तों से शून्य हैं।

फ़ारसी में 'तमा' शब्द के तोय, मीम, और ऐन इन तीनों अक्षरों में नुक्ता नहीं लगता। उससे कहावत का भाव यह हुआ कि लोभी या ईर्ष्यालु मनुष्य के पास कभी पैसा इकट्ठा नहीं होता।

तरकश में तो तीर नहीं, पर शरमा-शरमी लड़ते हैं।

सफलता की आशा न होने पर भी अपनी शर्म रखने के लिए कोई काम करना। उर्दू के किसी शायर ने यह वास्तव में आंखों के संबंध में कहा है।

तरवर आछा छांवला, और रूप सुहाना सांवला

वृक्ष छायादार अच्छा, और रूप सांवला।

सांवला=न बहुत गोरा न बहुत काला; गेहुंआ।

तराजू से खड़े होकर न तोलो, बरकत जाती है, (लो. वि.)

तराजू से खड़े होकर नहीं तोलना चाहिए, हानि होती है।

तल धार, ऊपर धार

मूसलाधार पानी वरसना।

तल मुंड़िया, पताल, ढुंढ़िया

नीचा सिर किए पाताल खोजता है।

बहुत बड़े धूर्त के लिए क., जो हमेशा कुछ-न-कुछ शरारत सोचा करता है।

तलवरिया वाको मत कहो, जो खांड़ा लेकर हाथ।
रन से भागे एकला, छोड़ टोल का साथ।

जो लड़ाई के मैदान से अपने साथियों को छोड़कर भागे, उसे सिपाही नहीं कहना चाहिए।

तलवरिया=तलवार पकड़ने वाला; योद्धा।

तलवरिया वो ही भला, जो रन में हाथ दिखाय।
बैरी के टुकड़े करे, और आप साफ बच जाय।

स्पष्ट।

तलवार का खेत हरा नहीं होता

(1) लड़ाई से जो खेत नष्ट हो जाता है, वह फिर हरा नहीं होता।

(2) सिपाही की खेती कभी सफल नहीं होती। क्योंकि उसे फ़ौज में रहना पड़ता है, खेत कौन देखे?

(3) पशुबल में बरकत नहीं।

तलवार का घाव भरता है, बात का घाव नहीं भरता

कोई ऐसी बात कह दे, जो मन पर असर कर जाए; तो वह कभी नहीं भूलती।

तलवार की आंच के सामने कोई बिरला ही ठहरता है।

कठिन परीक्षा का मुकाबला थोड़े लोग ही कर पाते हैं।

तलवार मारे एक बार, अहसान मारे बार-बार

क्योंकि जिसका भी अहसान लो, वह हर मौके पर अहसान जताकर दबाता है।

तलवों की-सी कहूं या जीभ की-सी

(किस्सा है कि किसी हाकिम ने एक मुकदमे में वादी और प्रतिवादी, दोनों ही से रिश्वत ले ली। एक ने उसे मिठाई और फल भेंट किए और दूसरे ने चुपके से उसके पैर तले एक अशर्फी खिसका दी। तब वह बड़ी चिंता में पड़ गया और ऊपर की बात सोचने लगा।)

रिश्वत या घूस खाने वाले अकसर इस तरह की कठिनाई में पड़ जाते हैं। कहा. उसी पर लागू होती है।

तलवों से लगी, सिर में से निकल गई

क्रोध से भड़क उठना।

तलवों से लगी है

(1) बहुत गुस्से में हैं, चैन नहीं पड़ रहा है, बात दिल पर असर कर गई है।

(2) वेश्या के लिए भी प्रयुक्त कि वह पीछा नहीं छोड़ती।

तले का दम तले रह गया, ऊपर का ऊपर

कोई बुरी खबर सुनकर स्तब्ध रह जाना।

तले के दांत तले रह गए, ऊपर के ऊपर

मुंह खुला ही रह गया, आश्चर्यचकित हो गए।

तले घेरा, ऊपर सेहरा

कोरी शान।

(घेरा से यहां मतलब साफ मैदान से है।)

तले टांग, ऊपर मांग

बुरी हालत हो जाना।

मांग=सिर; स्त्री के सिर से मतलब है, जिसमें मांग कढ़ी होती है।

तले धरती, ऊपर राम

किसी असहाय का कहना।

तले पड़ी का मोल क्या

(1) सरल स्वभाव की स्त्री का कहना।

(2) जो वस्तु अपने अधिकार में होती है, उसका कोई मूल्य नहीं होता।

(3) गई-गुजरी बात की चर्चा में समय नष्ट करना ठीक नहीं।

तवा चढ़ा और जीव बढ़ा

भोजन मिलने की उम्मीद हुई और चित्त प्रसन्न हुआ।

तवा चढ़ा बैठी मिसरानी, घर में नाज़, अगन नां पानी

बिना साज-सरंजाम के ही काम की तैयारी।

मिसरानी=भोजन बनाने वाली ब्राह्मणी।

तवा, तगारी, आग, जल, अन, ईंधन जित होय।
बारा दून उजाड़ में भूखे मनुख न रोय।

घने जंगल में भी यदि ये सब चीजें मिल जाएं, तो वहां भी मनुष्य भूखों नहीं मर सकता।

तगारी= चूल्हा।

तवा न कुंडा न चुलहारी, कहै नार मैं हूं भटियारी, (स्त्रि.)

न तो तवा है, न कुंडा है, न चूल्हा ही है, फिर भी औरत अपने को भटियारिन बताती है।

(1) कोरी शेख़ी,

(2) अपने विषय में झूठी बात।

तवा न तगारी, काहे की भटियारी

स्पष्ट। दे. ऊ.।

तवायफ़ के बिछौने पर बना है काम सोने का।
न ठहरेगा, मुलम्मा है, अबस है ज़र के खाने का।

वेश्या के संबंध में कहा गया है।

अबस=(अ.) व्यर्थ। ज़र=संपत्ति; धन।

तवे की तेरी, तगारी की मेरी

अपना ही मतलब देखना।

तवे की तेरी, हाथ की मेरी

दे. ऊ.।

तवे पर की बूंद

क्षणस्थायी, अथवा ऐसी वस्तु जो किसी काम की न हो।

(भोजन बनाते समय स्त्रियां तवा गरम हुआ या नहीं, यह जानने के लिए उस पर पानी की बूद डालती हैं। यदि वह बूंद छन्न होकर तुरंत सूख जाए तो तवा गरम हुआ समझा जाता है। उसी से उक्त मुहावरा बना।)

तवेले की बला बंदर के सिर

सब की मुसीबत किसी एक के सिर।

(लोगों का विश्वास है कि तबेले अर्थात अस्तबल में यदि बंदर बांध दिया जाए, तो घोड़ों के सब रोग बंदर को लग जाते हैं, और घोड़े तंदुरुस्त रहते हैं। इस उद्देश्य से बड़े अस्तबल में प्रायः बंदर बांध देते हैं; उसी प्रथा पर कहा. आधारित है।)

तसबीह फेरूं, किस को घेरूं, (मु.)

माला फेर रहे हैं, और मन में सोच रहे हैं, आज किसकी जेब तराशूं? बगला भगत की उक्ति या उस पर व्यंग्य।

तस मुकुंद तस पादन घोड़ी, विध ने आन मिलाई जोड़ी, (पू.)

दोनों एक से (ऐब वाले)।

तसलवा तोर कि मोर

तसला तेरा है या मेरा? ज़बर्दस्ती किसी की चीज पर कब्ज़ा जमाना।

(कहते हैं कि किसी समय मिथिला में घोर अकाल पड़ा। लोग एक-दूसरे का छीनकर खाने लगे। कोई अगर भात बनाता, तो दो-चार आदमी उसके पास आकर कहते थे कि 'तसला तोर कि मोर' यदि वह 'तोर' अर्थात 'तेरा' कहता था, तो उसे माफ कर देते, अन्यथा ('मोर' कहने से) छीन कर खा लेते थे।)

तांत बाजी, राग पाया

तार बजा और राग समझ में आ गया।

(आदमी के मुंह से बात निकलते ही उसकी योग्यता या उसके मन की स्थिति का पता चल जाता है।)

तांत=सारंगी का तार।

तांत-सी देह, पांव न हाथ, लड़न चली सूरन के साथ

शक्ति से बाहर काम करने का दुस्साहस।

तांबा देखे चीतना, मन देखे व्योपार, (व्य.)

पैसा देखकर ही सौदा तै होता है, और आदमी देखकर ही व्यापार किया जाता है।

ताक झांककर चाल मत, यह है बुरा सुभाव।
जार कहें या चोरटा, या फिर ऊदबिलाव।

स्पष्ट।

जार=परस्त्रीगामी।

ताकत कमर में चाहिए औलाद के लिए।
रखते नहीं हैं सिर्फ़ भरोसा मदार का।

अपने बूते से ही सब काम करना चाहिए, किसी का भरोसा नहीं।

(मदार साहब मुसलमानों के एक पहुंचे हुए संत हो गए हैं। मकनपुर में उनकी समाधि है।)

ताक पर बैठा उल्लू, मांगे भर-भर चुल्लू

ऐसे नीच आदमी के लिए क., जो किसी बड़े ओहदे पर पहुंच कर अपने से बड़ों पर हुक्म चलाए।

ताज़ी को मारा और तुरकी कांपा

एक पर रोब जमा लेने से दूसरे पर भी रोब जम जाता है।

(ताजी और तुरकी घोड़ों की जातियां हैं।)

ताजी मार खाय तुरकी आश पाय

योग्य पुरुष कष्ट उठाए और नालायक मौज करें।

आश=(फा.) भोजन।

ताज़ी में कारीगरां मुआफ़, (फा.)

कारीगर अगर किसी का अदब करना भूल जाए, तो उसका ख्याल नहीं करना चाहिए।

ताता, तीता, आमला, तीनों धात बिनास

गरम, चरपरी और खट्टी चीजें स्वास्थ्य को हानि पहुंचाती हैं।

धात=धातु, शरीर को बनाए रखने वाले पदार्थ।

ताते दूध बिलार नाचे

गरम दूध देखकर बिल्ली नाचती है। परेशान होती है, क्योंकि गरम दूध पी नहीं सकती।

ताना बाना, सूत पुराना

ताना और बाना दोनों ही पुराने सूत के हैं। व्यर्थ का परिश्रम।

तानाशाह दीवाना, जिसके चिट्ठी न परवाना

(1) तानाशाह मूर्ख हैं, जो अपना ठीक हिसाब नहीं रखते, बाद में फिर झंझट में फंसते हैं; अथवा

(2) तानाशाह दीवान को चिट्ठी या परवाना लिखने की जरूरत नहीं पड़ती। उनका ज़बानी हुक्म ही परवाना है।

तानी घाट कि बानी घाट?

ताने (के सूत) में कमी हो गई या बाने में? त्रुटि किस ओर है? दोनों ओर या एक ओर?

तामझाम लगे

लाओ तामझाम।

झूठी या व्यर्थ की शान दिखाना।

(कथा है कि एक मूर्ख को कहीं से एक पालकी मिल गई। वह हर काम के लिए उसका उपयोग करता। यहां तक कि बाज़ार में सौदा लेने जाता, तो पालकी पर बैठकर। उसकी स्त्री जब कहती : 'मिर्च नहीं है' तो वह कहता—'तामझाम लगे।' वह जब फिर कहती—'नमक मंगाना तो भूल ही गई।' तो वह तुरंत कहता—'तामझाम लगे।' प्रायः मूर्खतापूर्ण दंभ के लिए कहावत का प्रयोग होता है।)

ताल उझल कर उझले क्यार, जब बरसा हो पूरंपार, (कृ.)

खूब जोर की वर्षा होने पर तालाबों और खेतों में पानी बह निकलता है।

अथवा तालाबों और खेतों में जब पानी उमड़ पड़े, तो समझो कि खूब जोर की वर्षा हुई।

ताल तो भोपाल ताल और सब तलैयां

भोपाल के ताल की प्रशंसा में

(भोपाल वर्तमान मध्यप्रदेश की राजधानी है। वहां का ताल प्रसिद्ध है। उक्त कहावत पूरी इस प्रकार है—ताल तो

भोपाल ताल और सब तलैया। गढ़ तो चित्तौरगढ़ और सब गढ़ैयां। राजा तो छत्रसाल और सब रजैयां। रानी तो कमलापत और सब रनैयां।

ताल न तलैया, सिंघाड़े भैया, (कृ.)

विना साधन और सामान के काम।

ताल में चमके ताल मछरिया रन चमके तरवार।
तंवुआ चमके सैयां पगड़िया, सेज पै बिंदिया हमार।

ताल में तो मछली चमकती है, और युद्धक्षेत्र में तलवार, (लड़ाई के) तंबू में तो स्वामी की पगड़ी चमकती है, और सेज पर मेरे माथे की बिंदी। अपने-अपने स्थान पर सब वस्तुएं शोभा पाती हैं।

ताल सूख पटपर भयो, हंसा कहीं न जाय।
मरे पुरानी पीत को, चुन-चुन कंकड़ खाय।

स्पष्ट। सच्ची लगन का उदाहरण।

पटपर=समतल, चोरस।

ताल से तलैया गहरी, सांप से संपोला ज़हरी

कभी-कभी बेटा बाप से भी बढ़कर निकलता है।

तालियां बजा ले वन्नो, ब्याह होगा

किसी बात की खुशी मनाने के लिए हंसी में बच्चों से क.।

ताली दोऊ कर वाजे

दो के विना लड़ाई नहीं होती।

दे.—एक हाथ...।

ताली बिन कैसा ताला, जोरू विन कैसा साला

स्पष्ट।

तावल मत कर कार मां धीरा धीर वना।
ताता भोजन वालके देवत जीभ जला।

काम में उतावली नहीं करनी चाहिए।

तावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा

उतावले को पागल समझना चाहिए। जो धैर्य से काम ले, वही गंभीर है।

ताश पर मूंज का बखिया, (स्त्रि.)

असंगत काम।

ताश=एक प्रकार का सलमे-सितारे का रेशमी कपड़ा।

तित्तर बित्तर हो गए, सगर डोम के काम।
निमड़ गए जजमान, जब गांठ गिरह के दाम।

पैसे के विना सब काम गड़बड़ हो रहा है, किसी डोम याचक का अपने जजमान से क.।

तिनका उतारे का अहसान होता है

छोटे से छोटे काम का अहसान माना जाता है। सिर पर से कोई तिनका अलग कर दे, तो उसका भी अहसान है।

तिनका गिरा गयद मुख, नेक न घटो अहार।
सो ले चली पिपीलिका, पालन को परिवार।

हाथी के मुंह से तिनका (भोजन का कण) नीचे गिरने पर उसके आहार में कोई कमी नहीं हो जाती। चींटी उसे उठाकर ले जाती है, जिससे उसके परिवार का पालन होता है। बड़े आदमियों के लिए जो बेकार हो जाती है, छोटों का उसी चीज से काम चलता है।

गयंद=हाथी। पिपीलिका=चींटी।

तिनका हो तो तोड़ लूं, पीत न तोड़ी जाय।
पीत लगत टूटत नहीं, जब लग मौत न आय।

स्पष्ट।

तिनके की ओट पहाड़

आंख के सामने तिनका रखने से पहाड़ भी छिप जाता है।

(1) कभी-कभी बहुत छोटे कारण से ही बड़ी कठिनाई पैदा हो जाती है।

(2) छोटी चीज के पीछे कोई बड़ा रहस्य छिपा रहता है।

तिनके की चटाई, नौ वीघा फैलाई

जितना काम किया, उससे अधिक करने का दिखावा करना।

तिरिया चरित्र और चोर की घात; पाई पड़े ना, कह गए नाथ

स्पष्ट।

तिरिया चरित्र जाने नहिं कोय, खसम मार के सत्ती होय

स्त्री के चरित्र को समझना बड़ा कठिन है, वह अपने पति को मार कर फिर उसके साथ सती होती है, अपनी निर्दोपिता सिद्ध करने के लिए।

(यह पुरुष-प्रधान समाज की कहावत है। पुरुष भी ऐसे होते हैं।)

तिरिया जात कमान है, जित चाहे तित तान

स्त्रियां धनुप की तरह होती हैं, उन्हें जहां चाहो, वहां झुका लो या जितना चाहे उतना झुका लो।

(यह पुरुषों का दंभ सूचक है।)

तिरिया तुझ में तीन गुन, अवगुन हैं लख चार।
मंगल गावे, सत रचे, और कोखन उपजें लाल।

स्त्री में तीन गुण और लाखों अवगुण भरे हैं। वह मंगलगीत गाती है, पति के साथ सती होती है और उसकी कोख से वीर पुत्र उत्पन्न होते हैं।

तिरिया तुझसे जो कहे, मूल न तू वह मान।
तिरिया मत पर जो चले, वह नर है निरज्ञान।
स्त्री जो कुछ कहे, उसे कभी नहीं मानना चाहिए। जो स्त्री की सलाह पर चलता है, वह मूर्ख है। *(पुरुष-प्रधान समाज की मूर्खतापूर्ण मान्यता।)*
मूल=बिलकुल।

तिरिया तेरह, मर्द अठारह
लड़की की उम्र अगर तेरह हो, तो लड़के की अठारह होनी चाहिए। विवाह के लिए यह जोड़ ठीक रहता है।

तिरिया तो है शोभा घर की, जो हो लाज रखावा नर की
स्पष्ट।

तिरिया थिरकत जो चले, वाको भला न जान।
जैसे हाथ लिखेर का, कांपत हो नुक़सान।
स्पष्ट।
लिखेर=लिखने वाला; चितेरा।

तिरिया पुरख विन है दुखी, जैसे अन बिन देह।
जले बले है जीवड़ा, ज्यों खेती बिन मेह।
स्पष्ट।
पुरख=पुरुष।
जीवड़ा=जी; हृदय।

तिरिया बिन तो नर है ऐसा, राहबटाऊ होवे जैसा
स्त्री के बिना पुरुष वैसा ही है जैसा राह-चलता रास्तागीर। वह बेठिकाने का होता है।

तिरिया बिस की बेल है, या सूं बचकर घाल।
याका नेहा खोडत है, दीन, धरम, धन माल।
स्पष्ट। (पुरुष-प्रधान समाज की दंभोक्ति।)

तिरिया भली वही है भाई, जो पुरुषा संग करे भलाई
स्पष्ट।

तिरिया भी नर बिन है ऐसी, बिना धनी के खेती जैसी
पुरुष के बिना स्त्री वैसे ही है जैसे बिना मालिक के खेती नष्ट हो जाती है।

तिरिया रोवे पुरुष बिना, खेती रोव मेह बिना, (कृ.)
स्पष्ट।

तिल की ओझल पहाड़
दे.—तिनके की...।

तिलगुड़ भोजन, तुरक मिताई, आगे मीठ पाछे कडुवाई।
तिल और गुड़ के भोजन और मुसलमान की मित्रता ये पहले तो अच्छे लगते हैं, पर बाद में कड़वाहट पैदा करते हैं। (*यह कहावत मुसलमान मित्र पर कोई चिरंतन सत्य नहीं। हिंदू मित्र भी धोखेबाज़ हो सकते हैं।)*

तिलचोर सो बज्जुर चोर
चोरी-चोरी सब बराबर। छोटी चीज चुराने वाले को भी शातिर चोर समझना चाहिए।
बज्जुर=वज्र जैसा, अर्थात बहुत बड़ा

तिल, तीखुर, दाना, घी शक्कर में साना; खाय बूढ़ा हो जवाना
तिल, तवाखीर और पोस्तदाना इन तीन को घी शक्कर के साथ खाने से बूढ़ा भी जवान हो जाता है।
(स्वास्थ्य का नुसखा।)

तिल रहे तो तेल निकले
तेल तो तिलों से ही निकलता है; अर्थात पूंजी के सुरक्षित रहने से ही कोई व्यापार चल सकता है।
(ग्राहक जब किसी चीज के दाम कम करना चाहता है और उसमें कमी की गुंजाइश नहीं होती, तब प्रायः दूकानदार कहा करते हैं।)

तीज पड़े खेत में बीज, (कृ.)
सावन की तीज को खेत में बीज पड़ता है।
(सावन अर्थात जुलाई के महीने में खरीफ़ की बुवाई होती है।)

तीतर के मुंह लच्छमी
हाक़िम की जबान में सब कुछ है; वह जो कहेगा, वही होगा, ऐसा भाव प्रकट करने को क.।
(तीतर की बोली से शकुन विचारते हैं। उसी से कहावत बनी।)

तीतर बायें बोल जा तो सगर कार हो ठीक।
दाहने बोलत ना भला, सांच जान यह सीख।
(लो. वि.)
पक्षी शकुन। तीतर का बाईं ओर बोलना शुभ और दाहिनी ओर बोलना अशुभ होता है।

'तीन कचौरी, नौ बराती, खाओ चूरमचूर।'
'अये, घरबसी, तेरे ब्याह है या लूटमलूट।'
'बंदी जब करती है जब ऐसा ही करते,
किसी के यहां ब्याह है, मालकिन कहती है—'नौ बराती, और तीन कचौड़ियां हैं, लो, खूब डटकर खाओ।' तब उसकी यह उदारता देखकर दूसरी औरत कहती है कि 'अए घरबसी ! तेरे यहां ब्याह है या लूट मची है यानी तू इतना अनापसनाप खर्च कर रही है।' तब वह जवाब देती है कि 'मैं तो जब करती हूं, तब ऐसा ही करती हूं।'
(इन पंक्तियों में किसी कंजूस के घर की दावत का मज़ाक उड़ाया गया है।)

तीन का टट्टू तेरह का जीन

जितने की कोई चीज नहीं, उसके लवाज़मे में उससे ज्यादा का खर्च।

तीन गुनाह खुदा भी बख़्शता है, (मु.)

अपराध करके जब कोई माफ़ी मांगे, तब प्रायः वह कहता है। वख़्शता है=माफ़ करता है।

तीन टांग की घोड़ी, नौ मन की लदनी

किसी अयोग्य को कोई बड़ा काम सौंप देना।

तीन तिकट महा बिकट, चार का मुंह काला, पांच हों तो भाला।

स्त्रियों का विश्वास। तीन और चार की संख्या बुरी होती हे, पांच तो बहुत ही बुरी संख्या है।

तीन तिरहुतिया मिले, पकना रह गया

जहां तीन तिरहुतिये इकट्ठे हो जाए, वहां भोजन नहीं बन पाता।

(मैथिल ब्राह्मणों में छुआछूत बहुत मानते हैं, उसी पर कटाक्ष है।)

तीन तिताला, चौथे का मुंह काला

बच्चों की तुकबंदी।

तीन तेरह हो गए

तितर-बितर हो गए। बर्बाद हो गए।

तीन थान, चौथा मैदान

स्थान की कमी होने पर क.।

थान=ढोरों के बंधने की जगह; स्थान।

तीन थान, चौथी जान, उनका अल्लाह निगहवान

तीन लड़के, चौथा मैं, उनकी ईश्वर रक्षा करे।

अपनी असहाय अवस्था प्रकट करने को कह रहा है।

(थान का अर्थ अदद भी होता है, जैसे कपड़े के तीन थान। यहां लड़कों से अभिप्राय है।)

तीन दिन क़ब्र में भी भारी होते हैं, (मु.)

स्पष्ट।

(मुसलमानों का विश्वास है कि मरने के बाद तीन दिन तक मृतक को ईश्वर के सामने अपनी ज़िंदगी का हिसाब देना पड़ता है। इसलिए कहा गया है कि क़ब्र में तीन दिन मुसीबत के होते हैं।)

तीन दिन के छोकरा, हमें सिखावत बात।
जबले वह लिहें ठीकरा, तब ले मारब लात। (भो.)

तीन दिन का छोकड़ा, मुझे सिखाने चला है। जब तक वह (मुझे मारने को) पत्थर उठाएगा, तब तक मैं खींचकर लात मारूंगा।

(धृष्ट लड़के के संबंध में बूढ़े की उक्ति)।

तीन दिए और तेरह पाए, कैसे लोभ ब्याज का जाय

सूदखोरों पर व्यंग्य।

तीन नरी में तेरह गज

तीन बकरियों का चमड़ा फैलाने से तेरह गज़ हुआ। एक अद्भुत बात।

तीन पाव की तीन पकाई, सवा सेर की एक।
जेठ निपूता तीनों खा गया, मैं संतोखन एक।

सबसे अधिक ले लेने पर भी यह कहना कि हमने तो बहुत ही कम लिया। तीन पाव की तीन रोटियों में से एक सवा सेर की ज्यादा भारी है ही।

तीन पाव भीतर, तो देवता और पीतर, (हिं.)

पेट भरा होने पर ही धर्म-कर्म सूझता है।

तीन बुलाए तेरह आए, देखो यहां की रीत।
बाहर वाले खा गए (और) घर के गावें गीत।

जब किसी जगह बिना बुलाए बहुत से फालतू आदमी पहुंच जाएं, तब क.।

तीन बुलाए तेरह आए, दे दाल में पानी

दे. ऊ.।

तीन बुलाए तेरह आए, सुनो ज्ञान की बानी।
राघव चेतन यों कहें, तुम देव दाल में पानी।

दे. ऊ.।

(यह ऊपर की कहावत का ही पूरा रूप है।)

तीन में न तेरह में, न सेर भर सुतली में, न करवा भर राई में

ऐसा व्यक्ति जो किसी गिनती में न हो।

(किस्सा है कि किसी वेश्या ने अपने प्रेमियों को अलग-अलग कई श्रेणियों में बांट रखा था। पहली श्रेणी में तीन व्यक्ति थे, जिन्हें वह सबसे अधिक चाहती थी; फिर तेरह थे; फिर वे थे, जिनकी गिनती उसने सुतली में गांठें लगाकर कर रखी थी; सबसे अंत में थे वे साधारण व्यक्ति, जिनके नाम का राई का एक दाना वह एक करवे में डाल दिया करती थी। एक बार उसके यहां एक व्यक्ति आया और बोला कि मैं पहले भी आया करता था और तुम्हें बहुत द्रव्य मैंने दिया है। पर वेश्या ने उसे नहीं पहचाना और अपने नौकर से कहा कि देखो यह किसमें है। तब उसने उक्त जवाब दिया।)

तीन लोक से मथुरा न्यारी

नियम या परंपरा के विरुद्ध काम करने पर क.।

तीन हैं साह किसान के झांद, जाल और कैर, (कृ.)
दुर्भिक्ष पड़ने पर झांद, जाल और कैर इन तीन से किसान अपना पेट पालते हैं।
झांद=एक तरह की टोकनी, जिससे मछली पकड़ते हैं।
जाल=चिड़ियां और जंगली जानवर फंसाने का जाल।
कैर=खैर, जंगली लकड़ी, जो ईधन के काम आती है और जिससे कत्था बनता है।

तीनों त्रिलोक दिखाई दे गए
बहुत आनंद आ गया। कष्ट के लिए भी कह सकते हैं।

तीर, कव्वे, तीर
धूर्त को सावधान करने के लिए क.।

तीर जुदाई आ लगा, दिया कलेजा छेद।
पी अपना परदेश मां, किससे कहिए भेद।
किसी विरहिणी की उक्ति। स्पष्ट।

तीर, तुरमती, इसतिरी, छूटत बस ना आयं।
झूट जो माने यह बचन, वे नर कूढ़ कहायं।
तीर, बाज ओर स्त्री, ये हाथ से बाहर निकलने पर फिर काबू में नहीं आते।

तीरथ गए मुड़ाए सिद्ध
तीर्थ स्थान में जाने पर मुंडन करा ही लेना चाहिए।
(1) किसी एक काम से किसी जगह जाने पर यदि दूसरा काम भी बन रहा हो, तो उसे अवश्य कर लेना चाहिए।
(2) किसी काम को अगर हाथ में ले, तो उसे फिर अच्छी तरह पूरा करना चाहिए, ख़र्च का मुंह नहीं देखना चाहिए।

तीरथ, मूरत पूजकर, मत ना उमर गंवाय।
पूजा कर करतार की, जो तुरत मुक्त हो जाय।
स्पष्ट। कबीरपंथी साधुओं का कहना।

तीर न कमान, काहे के पठान, (मु.)
झूठी शेखी हांकने वाले से क.।
पठान से मतलब सिपाही से है।

तीर न कमान, मियां का अल्लाह निगहवान
दे. ऊ.।

तीर न कमान, मेरे चाचा खूब लड़े
दे. ऊ.।

तीवन बिन ना रोटी सोहे, गूंधे बिन ना चोटी सोहे
बिना चटनी के रोटी अच्छी नहीं लगती, बिना गुंधी चोटी भी अच्छी नहीं लगती।

तीसमारखां बने फिरते हैं
जो अपने को बहुत समझता और झूठी शेख़ी हांकता फिरता है, उससे क.।
(कथा है कि किसी स्त्री का पति बड़ा निकम्मा और आलसी था। वह उससे रोज़ कहा करती थी कि तुम घर बैठे रहते हो, कुछ काम-धंधा क्यों नहीं करते। स्त्री की बातों से तंग आकर उसने एक दिन नौकरी की तलाश में बाहर जाने का इरादा किया। उसकी स्त्री ने एक महीने के खाने लायक उसे लड्डू बना दिए। पर गलती से उनमें कोई ज़हरीला कीड़ा मिल गया, जिससे सब लड्डू ज़हरीले हो गए। घर से चलकर जब वह पहली ही मंजिल में ठहरा, तो तीस चोरों ने उसे घेर लिया, पर उसके पास तीस लड्डुओं के सिवाय और कुछ नहीं निकला। चोरों ने तीसों लड्डू आपस में एक-एक बांट खाया। उनको खाते ही वे सब के सब मर गए। जब उस व्यक्ति ने उनको मरा देखा, तो उन सबकी नाक काटकर अपने पास रख ली। सुबह होते ही यह बात चारों ओर फैल गई कि किसी आदमी ने तीस चोरों को मार डाला है। जब उस देश के राजा ने यह बात सुनी तो, पूरे किस्से की छानबीन की। पता चला कि वही तीस चोर थे, जिन्होंने बहुत दिनों से राज्य में उपद्रव मचा रखा था और जो पकड़ाई नहीं दे रहे थे। जब उस व्यक्ति ने राजा के पास जाकर कहा कि इन चोरों को मैंने मारा है और ये उनकी नाकें हैं, जो मैंने काट ली थीं, तो राजा उसकी बहादुरी से बड़ा खुश हुआ और उसे तीसमारखां की उपाधि देकर अपना वज़ीर बना लिया।)

तीसी के खेत में जुलाहा मुतलाने, (पू.)
अलसी के खेत में जुलाहे रास्ता भूल गए। जुलाहे अपनी सिधाई के लिए प्रसिद्ध हैं।
(कथा है कि कुछ जुलाहे कहीं जा रहे थे। रास्ते में अलसी का खेत मिला। उसे नदी समझकर वे पार करने की तैयारी करने लगे। तब तक एक घुड़सवार वहां आ गया, जिसने उन्हें किसी तरह समझाया कि यह तो अलसी का खेत है, नदी नहीं। तब वे उस रास्ते से निकले।)

तुई तो मुई, न तुई तो मुई
(गाय का) गर्भपात हो गया तो भी मरेगी, न हुआ ता भी मरेगी। हर हालत में खराबी।

तुख़्म तासीर, सोहबत का असर
बीज का गुण और सोहबत का असर नहीं जाता। खोटे की खोटी संतान होती है और भले की भली।

तुझ पर पड़े जो औदसा, दिल बिच मत घबराय।
जब साई की हो दया, काम तुरत बन जाय। (ग्रा.)
विपत्ति में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

तुझे पराई क्या पड़ी, अपनी निबेड़ तू

अपना काम छोड़कर व्यर्थ दूसरे के झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए।

तुनतुनी बजाते मियां खाते शक्कर घी, नौकरी की ऐसी तैसी, अव के बचे जी

किसी फक्कड़ सिपाही का कहना, जो लड़ाई पर जा रहा है।

तुम अंत गए, हम अंत कर आयो, मड़ो चून कुत्तन ने खाओ, (पू.)

तुम एक रास्ते से गए, हम दूसरे से गए, तब तक गुंधा हुआ चून कुत्तों ने खा लिया। परिवार के लोगों में झगड़ा होने पर दूसरे लाभ उठाते हैं।

अंत=दूसरी जगह।

तुम काटो मेरी नाक और कान;
मैं न छोड़ूं अपनी बान, (स्त्रि.)

हठी आदमी या औरत।

तुम किस खेत के बथुए हो?

मैं तुम्हें कोई चीज़ नहीं समझता।

(बथुआ एक बहुत साधारण साग होता है।)

तुम किस खेत की मूली हो?

दे. ऊ.।

तुमको हमसी अनेक हैं, हमको तुम-सा एक।
रवि को कमल अनेक हैं, कमलन को रवि एक। (स्त्रि.)

प्रेमिका का कहना अपने प्रेमी के प्रति।

तुम क्यों फटे में पांव देते हो

क्यों पराए झगड़े में पड़ते हो?

तुम जानो तुम्हारा काम जाने

हमारी बात नहीं मानते, तो चाहे जो करो।

तुम डाल-डाल, हम पात-पात

हमारे सामने तुम्हारी चालाकी नहीं चलने की। हम तुमसे ज्यादा होशियार हैं।

तुम तो अकल के पीछे लट्ठ लिए फिरते हो

उसे भगाने के लिए। जब कोई बिना सोचे-विचार मूर्खतापूर्ण ढंग से काम करता है, तब क.।

तुम तो कुछ जानते ही नहीं, औंधे मुंह दूध पीते हो

जब कोई भोला और अनजान बने, तब क.।

तुम तो जब मां के पेट से भी नहीं निकले होंगे

तुम तो तब पैदा भी नहीं हुए होंगे, फिर तुम्हें क्या खबर कि उस वक्त क्या हुआ?

तुम तो मुझे छेड़ोगे

झूठमूठ का नख़रा करना। कोई व्यक्ति यदि किसी से बोलने (या किसी को छेड़ने) के लिए तैयार नहीं, तो भी प्रकारान्तर से उसके मन में बोलने (या छेड़ने) की इच्छा जाग्रत करना।

(कथा है कि किसी स्त्री की, जो अपने सिर पर एक खाली घड़ा रखे जा रही थी, एक पुरुष से भेंट हो गई, जो अपने दोनों हाथों में दो कबूतर लिए आ रहा था। स्त्री ने उसे देखते ही कहा—देखो जी, मुझे छेड़ना नहीं। पुरुष ने कहा—मैं यह कैसे कर सकता हूं। मेरे हाथों में तो कबूतर हैं। स्त्री ने जवाब दिया—उन्हें तुम मेरे घड़े में रख दोगे। और फिर मुझे छेड़ोगे।)

तुम थूकते हो, हम थूकते भी नहीं

किसी ने कहा—हम ऐसे काम पर थूकते हैं, अर्थात बहुत घृणा करते हैं। दूसरे ने जवाब दिया—तुम थूकते हो, हम वह भी नहीं करते। अर्थात हम ऐसे काम से तुमसे भी अधिक घृणा करते हैं।

तुम दाता दुख भंज हो, सुनो नाथ मोर गुहार।
हों अपराधी जनम को, नख सिख भरो विकार।

स्पष्ट।

तुमने उड़ाई, हमने भून-भून खाई

तुमने (बातें) उड़ाई, अर्थात मेरे बारे में झूठी बातें कहीं, मैंने उन्हें भून-भून कर खाया, अर्थात उनकी कतई परवाह नहीं की।

तुम बड़ा नान्हा कातती हो, (स्त्रि.)

बहुत बारीकी करती हो। जब कोई देने-लेने में बहुत कंजूसी करे, तब क.।

तुम बिन ऐसी गत भई, सुन मेरी अब पीय।
जैसे खाल लुहार की, सांस लेत बिन जीय।

स्पष्ट। कोई विरहिणी कहती है।

तुम भी कहोगे 'कोई मुझे जोरू करे'

जो अपने को बहुत होशियार समझे, उससे क.।

तुम भी कहोगे 'मुझे चरखा ले दे'

अर्थात तुम औरतों का ही काम कर सकते हो। मूर्ख से क.।

तुम भी कोरे चालीस सेरे ऊत हो

निरे मूर्ख हो। कोई कसर नहीं।

चालीस सेर=पूरा एक मन।

तुम रूठे, हम छूटे, (स्त्रि.)

जब कोई बहुत नाराज हो जाए और मनाने से भी न माने, तब क.। चलो अच्छा है, तुम नहीं मानते, हमने भी छु पाई।

तुम सरीखे सैकड़ों फिरते हैं
अर्थात मैं तुम्हारी कोई परवाह नहीं करता।
तुम्हारी जूती और तुम्हारा ही सिर
तुम जो खर्च कर रहे हो, वह तुम्हारे माथे ही जाएगा।
तुम्हारी बराबरी वह करे, जो टांग उठाकर मूते
अर्थात तुम तो कुत्ते हो। तुम से कौन बात करे? डींग हांकने वालों से व्यंग्य में क.।
तुम्हारी बराबरी वह करे, जो दौड़ते हिरन को पकड़े
दे. ऊ.।
तुम्हारी बात उठाई जाय, न धरी जाय
अर्थात तुम्हारी बात समझ में नहीं आती।
तुम किसी मशरफ़ (उपयोगी) की बात नहीं करते।
तुम्हारी बात का एतबार क्या?
बहुत झूठ बोलने वाले से क.।
तुम्हारी बात थल की न बेड़े की
तुम्हारी बात न ज़मीन की, न पानी की, अर्थात बेहूदी।
तुम्हारी बात में बंद क्या?
तुम्हारी बात का भरोसा क्या?
वंद=बांधने की चीज, अर्थात दृढ़ता।
तुम्हारे घाटे तो रूख भी नहीं रहे हैं
धूर्त्त मनुष्य। जिसके पीछे पड़ गया, उसे बर्बाद करके छोड़ा।
(टिड्डियां जिस पेड़ पर बैठ जाती हैं, उसे चाटकर साफ कर देती हैं। उसी से मुहावरा लिया गया है।)
तुम्हारे पान का उगाल, हमारे पेट का आधार
ग़रीब का अमीर से कहना कि हम तो आपकी जूठन खाकर ही रहते हैं। अत्यंत विनम्रता दिखाना।
तुम्हारे पेट में चींटे की गांठ है
तुम बहुत कम खाते हो।
तुम्हारे फरिश्तों को भी खबर नहीं है, (मु.)
फिर तुम कैसे जान सकते हो ? अर्थात तुम्हें किसी बात का पता ही नहीं
(मुसलमानों के अनुसार हर मनुष्य के साथ दो फरिश्ते रहते हैं, जो उसके प्रत्येक कार्य को देखते रहते हैं।)
तुम्हारे बैल, हमारे भैंसा, तुम्हारा हमारा फिर साथ कैसा?
बैल भैंस से जल्दी चलता है, इसलिए दोनों का साथ निभ नहीं सकता। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्य एक साथ नहीं रह सकते।
तुम्हारे भतार न हमारे जोय, अस कुछ करो कि बेटवा होय, (पू.)
रंडुए का ख़ूबसूरती के साथ विधवा से कहना कि मैं तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता हूं।
(दो निठल्ले आदमी एक-दूसरे से कह सकते हैं कि भाई कुछ ऐसा किया जाए, जिससे पेट का धंधा चले।)
तुम्हारे मरे देस खाक, हमारे मरे देस पाक
तुम्हारे मरने से देश बर्बाद हो जाएगा, हमारे मरने से धरती का बोझ कम होगा।
बहुत अधिक विनम्रता दिखाना।
तुम्हारे मरे देस पाक, हमारे मरे देस ख़ाक
मूर्खतापूर्ण दंभ।
तुम्हारे मुंह का उगाल, हमारे पेट का आधार
दे.–तुम्हारे पान का उगाल...।
तुम्हारे मुंह में कै दांत हैं, यह तो कोई पूछता ही नहीं
आप हैं कौन, कोई यह भी नहीं पूछता।
तुम्हारे मुंह में घी शक्कर
जब कोई अच्छी खबर सुनाए, तब क.।
तुम्हारे लड़के भी घुटनियों चलेंगे? (स्त्रि.)
तुम कभी अपना वादा भी पूरा करोगे? अथवा क्या तुम कभी सच भी बोलोगे?
तुरई कद्दू, लानत हरदू
दोनों पर लानत। दोनों ही निकम्मी।
तुरक काके मीत, सरप से का प्रीत
स्पष्ट। जाति-विद्वेष भरी बात।
तुरक, ततैया, तोतरा, ना यह किसी के मीत। भीड़ परत मुंह फेर लें, राखें ना परतीत। (ग्रा.)
मुसलमान, बर्र और तोता ये किसी की मुरब्बत नहीं करते। जाति-विद्वेषमूलक।
तुरक हू हुए तौ भी ना, (ए.)
मुसलमान भी हुए, तो भी नाहीं करती है, अर्थात तो भी अभीष्ट सिद्ध नहीं हुआ।
तुरकी तमाम हुई
तुरकी छांटना बंद हो गया। घमंड दूर हो गया।
तुरकी पीटे ताज़ी कांपे
एक को दंड देने से दूसरा भी सावधान हो जाता है।
तुरकी पीटे, ताज़ी के कान हों
दे. ऊ.।

तुरक की पोई तुरक ही खाओ;
बासी खा मत ओझ बढ़ाओ
ताजी रोटी ही खानी चाहिए। बासी से तोंद बढ़ती है।

तुरत दान महा कल्यान, (हि.)
किसी को कुछ देना हो, तो तुरंत देकर छुट्टी पानी चाहिए।

तुरत दान महा पुन्न
दे. ऊ.।

तुरत फतेह हो उसके ताई, जिसका हामी होवे साई
भगवान जिसके सहायक होते हैं, उसकी जीत होती है।

तुरत फुरत हो वह भी कार, मदद करे जिसकी सरकार
स्पष्ट।

तुरत फुरत हों सगरे काम, जब होवे मुट्ठी में दाम
गांठ में पैसा होने से सब काम जल्दी होते हैं।

तुरत भलाई वह नर पावे, जो धन दाता नाम लुटावे
जो ईश्वर के नाम पर खर्च करता है, उसे तुरंत यश मिलता है।

तुरत मजूरी जो परखावे, बाका कार तुरत हो जावे
जो मजदूरी तुरंत चुकाता है, उसका काम जल्दी होता है।

तुरता फुर्ती काम में, अच्छी नाहीं जान;
सांच कहा है साधने, जल्दी मां नुकसान।
काम में जल्दबाज़ी ठीक नहीं। उससे नुकसान होता है।

तुरफतुल-एन में
पलक मारते; फौरन।

तुलसी अच्छर करम के, मेट न सक्के कोय।
मेटे तो अचरज नहीं, पर समझ किया है जोय।
भाग्य का लिखा नहीं मिटता, अगर मिट भी जाए तो समझो; भगवान ने वैसा सोच-विचार कर ही किया होगा।

तुलसी अपने राम को, भजिए जैसे लूट।
यह तन घड़ा है कांच का, छिन में जैहे टूट।
स्पष्ट।

तुलसी अपने राम को, रीझ भजो के खीज।
खेत पड़ें सब ऊपजें, उल्टे सीधे बीज।
स्पष्ट। ईश्वर का ध्यान किसी प्रकार भी करो, उस सब का फल मिलता है।

तुलसी अपनो जान के, कीनी थी परतीत।
धोखो दे न्यारे भये, भली निवाही रीत।
स्पष्ट।

तुलसी आम कुलीन है, नवे बड़प्पन जान।
ओछा पेड़ अरंड का, रहे सीस धर तान।
स्पष्ट।

तुलसी आह ग़रीब की, हरि से सही न जाय।
मरी खाल की फूंक से, लोह भसम हो जाय।
स्पष्ट।
(मरी खाल से अभिप्राय लुहार की धौंकनी से है।)

तुलसी ऐसी पीत कर, जैसे भोर तला।
झोलझाल के पी लिया, फेर लगा गला।
प्रेम तो ऐसा करना चाहिए, जैसे कि सबेरे के तालाब की काई। पानी पीने के लिए लोग उसे अलग करते हैं, लेकिन वह फिर जुड़ जाती है।

तुलसी ऐसे जीव की, कहा करे कोई साख।
लेके दे चाहत नहीं, किरिया करत है लाख।
स्पष्ट।
किरिया=सौगंध।

तुलसी ऐसे जीव क्यों, नरक कुंड ना जायं
मन के कपटी मित्र हैं, पाग उतारे चायं।
स्पष्ट।
पाग उतारें चायं=पगड़ी उतारना चाहते हैं; इज्ज़त लेना चाहते हैं।

तुलसी ऐसे नरन की, कैसे गत मत होय।
बाप ने राखी पातुरी, ताकि ढिंग रहं सोय।
स्पष्ट।
कैसे गत मत होय=कैसे मुक्ति मिल सकती है।
पातुरी=वेश्या।

तुलसी ऐसे नरन से, मन फाटे जस दूध।
नीके काम को ना चलें, बुरे को हरदम ऊध।
स्पष्ट।
ऊध=ऊर्ध्व, ऊंचे, तैयार खड़े।

तुसली ऐसे पतित को, बारबार धिक्कार।
राम भजन को आलसी, खाने को तैयार।
स्पष्ट।

तुलसी ऐसे मित्र के, कोट फांद के जाय।
आवत ही तो हंस मिले और चलत रहे मुरझाय।
ऐसे मित्र के यहां तो दीवार लांघकर, अर्थात सब तरह के कष्ट उठाकर जाना चाहिए; जो आते ही हंसकर मिले, और चलते समय दुख प्रकट करे।
कोट=ऊंची दीवार, परकोटा।

तुलसी कधी न छांड़िये, छिमा, सील, संतोस।
ज्ञान, ग़रीबी, हरिभजन, कोमल वचन अदोस।
स्पष्ट।

कधी=कभी।

(फैलन ने अधिकांश स्थलों पर कभी के स्थान पर कधी का प्रयोग किया है।)

तुलसी कर से कर्म कर, मुख से भज ले राम।
ऐसो समय न पायगो, जो लाखो खरचो दाम।

स्पष्ट।

तुलसी कलयुग के समय, देखो यह करतूत।
रामनाम को छोड़ के, पूजत हैं अब भूत।

स्पष्ट।

तुलसी कहत पुकार के, सुनो सकल दे कान।
हेमदान, गजदान से, वड़ा दान सनमान।

दूसरे का उचित सम्मान ही सबसे बड़ा दान है।

हेमदान=स्वर्ण का दान। गजदान=हाथी का दान।

तुलसी का पत्ता कौन छोटा कौन बड़ा? (हिं)

सभी पत्ते समान रूप से पवित्र और पूजनीय होते हैं।

जहां कई पूज्यजन मौजूद हों, वहां क.।

तुलसी कारी कामरी, चढ़े न दूजा रंग

स्वाभाविक प्रवृत्ति नहीं बदलती।

तुलसी काहू चोर ने, चोरी जाय करी।
मूसमास के धन लियो, पूरी नाह परी।

चोरी के धन से कभी किसी का भला नहीं होता।

मूसमास के=चुराकर।

तुलसी चंदन बिटप बस, बिन बिख भयो न भुजंग।
नीच निचाई ना तजे, जो पावे सतसंग।

स्पष्ट।

बस=बसकर; रह कर।

बिख=विष; ज़हर।

तुलसी छलबल छांड़ के कीजे राम सनेह।
अंतर पति से है कहा, जिन देखी सब देह।

स्पष्ट।

अंतर=भेद, दुराव; छिपाव।

पति=स्वामी; परमात्मा।

तुलसी जग में आय के, औगुन तज दे चार।
चोरी, जारी, जामिनी, और पराई नार।

स्पष्ट।

जारी=जार कर्म; परस्त्री गमन

जामिनी=ज़मानत देना। य ां अभिप्राय झूठ की ज़मानत से है।

तुलसी जग में आय के, निश्चय भजिये राम।
मनुख मजूरी देत हैं, क्यों राखें भगवान।

स्पष्ट।

तुलसी जग में आय के, सीख ऊब से लेव।
जो तुझको अनरस करे, रस वाको तू देव।

स्पष्ट।

अनरस=रस-रहित।

तुलसी जग में जस रहे, या रहे राम का नाम।

स्पष्ट।

तुलसी जपे तो राम जप, और नाम मत लेय।
राम नाम शमशीर है, जम के सिर में देय।

स्पष्ट।

शमशीर=तलवार।

तुलसी तव ही जानिये, परमेश्वर सों प्रीत।
हरख उठे, आदर करे, आवत देख अतीत।

स्पष्ट।

अतीत=अतिथि, साधु।

तुलसी तहां न जाइये, जहां जनम का ठांव।
आवभगत जाने नहीं, धरें पाछिलो नांव।

जन्मस्थान में नहीं जाना चाहिए। वहां आदर नहीं होता। *(तुम चाहे जितने योग्य बन जाओ, लोग वहां बचपन के नाम से ही पुकारते हैं।)*

तुलसी तहां न जाइए, जहां न वर्ण विवेक।
रांग, रूप, रूआ, भुआ, सेत सेत सब एक।

जहां सफेद रंग की सब चीजें लोगों के लिए एक हों; जहां गुण-अवगुण का कोई विचार न हो, वहां नहीं जाना चाहिए। रांगा, चांदी, रूई, सेमर (या आक) का भुआ, ये सब चीजें सफेद होती हैं, यद्यपि इनके गुण-धर्म में बहुत अंतर है।

तुलसी तुम तो कहत हो, संगत में सब होत।
बीच ऊख रामसर तेहि रस काह न होत।

सत्संग में बड़ा प्रभाव है, फिर भी मनुष्य के जन्मजात स्वभाव को नहीं बदला जा सकता; ऊख के खेत में लगे सरकंडे में रस पैदा नहीं होता, वह रूखा का रूखा ही रहता है।

तुलसी दया न छांड़िये, जब लग घट में प्रान।
कबहुं तो दीनदयाल के, भनक परेगी कान।

दया के संबंध में कहा गया है।

तुलसी धीरज के धरे, हाथी मन भर खाय।
टूक टूक के कारने, स्वान घरे घर जाय।
स्पष्ट ।
मन भर=एक मन। जी भरकर।
तलसी पर घर जायके, दुख न कहिये रोय।
भरम गंवावे आपनो, बांट न सक्के कोय।
स्पष्ट।
भरम गंवावे=भेद खुल जाता है, अपनी बात दूसरों को मालूम हो जाती है।
तुलसी पिछले पाप से, हरि चर्चा न सुहाय।
जैसे जुर के अंत में, भूख बिदा हो जाय।
स्पष्ट।
जुर=ज्वर; बुखार।
तुलसी पैसा पास का, सब से नीको होय।
होते के सब कोय हैं, अनहोते की जोय।
गांठ का पैसा ही काम आता है। बहन और बाप सब लोग धन के ही साथी होते हैं। केवल स्त्री ही निर्धनता में साथ देती है। (यह द्रष्टव्य है कि दूसरी कहावतों में स्त्री की निंदा की गई है। सत्य निकल पड़ा है।)
तुलसी प्रतिमा पूजिवो, ज्यों गुड़ियों का खेल।
भेंट भई जब पीव से, धरो पिटारी भेल।
प्रतिमा का पूजन तो गुड़ियों के खेल की तरह है। जब स्वयं प्रियतम से ही भेंट हो गई, तो (गुड़ियों की) पिटारी को अलग रख देना चाहिए।
(उपासना के संबंध में।)
तुलसी विदेस जु जात हैं, करें समान अनंत।
ना जानूं परलोक को, कैसे नर निश्चंत।
स्पष्ट।
तुलसी बिरवा बाग के, सींचतहू कुम्हलाय।
राम भरोसे जो रहें, पर्वत पर हरयाय।
स्पष्ट।
बिरवा=वृक्ष।
सींचतहू=सींचने पर भी।
तुलसी बुरो न मानिए, जो गंवार कह जाय।
सावन कैसे नरदुआ, बुरो-भलो बह जाय।
नासमझ के कहने का बुरा नहीं मानना चाहिए।
नरदुआ=नावदान।
तुलसी भरोसे राम के, लिए पाप भर भोट।
ज्यों व्यभिचारी नार को, बड़ी खसम की ओट।
स्पष्ट। नार=नारी; स्त्री।
ओट=आड़।
तुलसी मीठे बचन से, सुख उपजे चहुं ओर।
बसीकर यह तंत्र है, तज दे बचन कठोर।
स्पष्ट।
तुलसी मूढ़ न मानिहैं, जब लग खता न खाय।
जैसे बिधवा इसतिरी, गरभ रहे पछताय।
स्पष्ट।
खता=धोखा; ठोकर।
इसतिरी=स्त्री।
तुलसी या संसार में, पांच रतन है सार।
साधु मिलन अरु हरिभजन, दया, धर्म, उपकार।
स्पष्ट।
तुलसी या संसार में, पाखंडी को मान।
सीधों को सीधा नहीं, झूठों को पकवान।
स्पष्ट।
मान=सम्मान।
सीधा=अन्न; भोजन।
तुलसी या संसार में, सबसे मिलिये धाय।
ना जाने किस भेष में, नारायन मिल जाय।
स्पष्ट।
तुलसी राम की भगति बिन, धिक दाढ़ी, धिक मूंछ।
पशू गढ़ंते नर भयो, भुल्यो सींग अरु पूंछ।
स्पष्ट।
तुलसी वह दोऊ गए, पंडित और गृहस्थ।
आते आदर ना कियो, जात दिया ना हस्त।
स्पष्ट।
जात दिया ना हस्त=हाथ से कुछ दिया नहीं।
तुलसी वेश्या देख के, करन लगे तकझांक।
आवत देखो संत को, मुंह लीन्हों झट ढांक।
स्पष्ट।
तुलसी सरन है राम की, सुन ले मेरी टेर।
गज को छुड़ायो ग्राह से, मेरी बार क्यों देर।
स्पष्ट।
(पुराणों में गज-ग्राह में युद्ध की कथा प्रसिद्ध है। दोहे में उसी का उल्लेख है।)
तुलसी हरि की भगति बिन, ये आवे किहि काज।
अरब खरब लौं लच्छमी, उदय अस्त लौं राज।
स्पष्ट।
तुलू और गुरूब के वक्त सिजदा मना है, (लो. वि.)
ठीक सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सिजदा नहीं करना

चाहिए। मुसलमानों की मान्यता।
सिजदा=ईश्वर की प्रार्थना।

तूं कित्थों दा खक्खा साब-एं? (पं.)
तू कहां का खां साहब है? कहां का बड़ा आदमी है?

तू कन के लानें फिरत क्यों मन में पछतायो।
जिसने जैसा दियो है, तिसने तैसो पायो।
जो जैसा करता है, वैसा पाता है।
कन=अन्न। धन।
लाने=लिए।

तू कर अपना काम, तबलया भूसन दे, (पू.)
तू अपना काम देख, कुत्ते को भूंकने दें।
तवलया=तबेले में बैठा हुआ। कुत्ते से अभिप्राय है।

तू कहे सो सच है बुड्ढी, तू कहे सो सच
किसी की सच बात को भी अनसुनी करना।
(इसकी कथा है कि एक बार होली के अवसर पर कुछ चोरों ने एक बुढ़िया के घर का सब सामान लूट लिया और उसे एक चारपाई से बांधकर रास्ते-रास्ते घुमाते फिरे। बुढ़िया तो चिल्ला-चिल्ला कर कहती थी कि इन लोगों ने मुझे लूट लिया, पर चोर उसकी बात को अनसुनी करने के लिए ऊपर का वाक्य कहते जा रहे थे। होली का मौका होने की वजह से लोगों ने उसे एक स्वांग समझा और उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया।)

तू खोल मेरा मकना, मैं घर संभालूं अपना, (स्त्रि.)
नवविवाहिता स्त्री पहली वार ससुराल आते ही कह रही है कि हटाओ मेरा यह घूंघट, मैं अपना घर संभालूंगी। तेज-तर्रार औरत के लिए क.।

तू गधी कुम्हार की तुझे राम से कौथ
तू कुम्हार की गधी, तुझे राम से क्या मतलब?
जब कोई फ़ालतू आदमी किसी काम में व्यर्थ हस्तक्षेप करे, तव क.।

तूम गोर खोद मोकों, मैं गाड़ आऊं तोकों
भरपूर बदला चुकाना।
ग़ोर=कब्र।

तू चाह मेरी जाई को, मैं चाहूं तेरी खाट के पाए को, (स्त्रि.)
सास का दामाद से कहना। यह भाव प्रकट करने के लिए कही जाती है कि तुम हमारे साथ अच्छा व्यवहार करोगे, तो हम भी तुम्हारे साथ उतना ही अच्छा व्यवहार करेंगे।
जाई=बेटी।

तू छुए और मैं मुई, (स्त्रि.)
बहुत सुकुमारता प्रकट करना।
(प्रसव वेदना से पीड़ित होकर कोई कह रही है।)

तूती चुगे तो ऊंच चुग, नीची चुगन मत जाह।
कुले लजावे आपने, कहें अकब्बर साह।
किसी का अहसान ही लेना हो तो बड़े आदमी का लेना चाहिए; ओछे का अहसान लेना ठीक नहीं।

तूती पालें चूतिया, और आशक पालें लाल।
कबूतर पालें चोट्टा, जो तकें पराया माल।
तूती बेवकूफ़ पालते हैं, आशक-मिजाज़ लाल पालते हैं और चोर कबूतर पालते हैं; जो दूसरों का माल उड़ाने की फ़िक्र में रहते हैं।

तू तेजी का बैल, तुझे क्या सैर, लगा रह घानी से
तू तो तेली का बैल है, तुझे मौज-मजा से क्या मतलव। घानी पेरता रह।
(जो चौबीसों घंटे काम में जुटा रहे, उससे व्यंग्य में क.।)

तूने की रामजनी, मैंने किया रामजना
स्त्री का अपने परस्त्री गामी पति से गुस्से में कहना कि तुमने अगर औरत रख ली, तो मैंने भी आदमी रख लिया है।
तूने जब ऐसा किया, तो मैंने भी ऐसा किया, यह भाव प्रकट करने को क.।

तूफ़ान, शैतान, अल्लाह निगहबान
तूफ़ान और शैतान इन दोनों से ईश्वर वचाए।

तू भी रानी, मैं भी रानी; कौन भरे कुएं का पानी? (स्त्रि.)
जहां सभी आदमी अपने को बड़ा समझ रहे हों, और किसी कार्य को अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझ कर उसे करने में हीला-हवाला करें, वहां क.।

तू मुझको, तो मैं तुझको
समान व्यवहार।

तू मेरा लड़का खिला, मैं तेरी खिचड़ी पकाऊं, (स्त्रि.)
दे.—ऊ.।

तू मेरे बारे को चाहे, तो मैं तेरे बूढ़े को चाहूं
दे. तू मुझको...।

तू रह ़री हौं ही लखूं, चढ़ न अटा ब्रज बाल।
बिना समय ससि के उदय, पर्दहें अरघ अकाल।
यह बिहारी का प्रसिद्ध दोहा है। नायिका ने गणेश चतुर्थी का व्रत किया है। चंद्रमा को देखने के लिए वह बार-बार अटारी पर जाती है। सखी उसका श्रम बचाने के निमित्त

उसको फिर चढ़ने से रोकती है, पर यह कह कर नहीं कि निराहार रहने के कारण तुझे श्रम होगा, बल्कि उसके रूप की प्रशंसा करती हुई यह कहकर रोकती है कि तेरा मुख चंद्रमा के समान प्रकाशमान है, इसलिए उसे ही चंद्रमा समझकर स्त्रियां चंद्रमा के उदय के बिना ही अकाल में अर्घ्य दे देंगी। (जो ठीक नहीं है।)

तूल, तेल तापना, जाड़ मास हो अपना

रूई के कपड़े, तेल और तापने को मिले तो फिर जाड़ा अपना ही है।

तू सच्चा, तेरा गुरु सच्चा

व्यंग्य में झूठे से क.।

तेतरी बेटी राज रजावे, तेतरा बेटा भीख मंगावे, (लो. वि.)

दो लड़कों के बाद लड़की का होना अच्छा होता है, दो लड़कियों के बाद लड़का होना अच्छा नहीं।

तेते पांव पसारिये, जेती लांबी सौर

धन के अनुसार ही काम करना चाहिए।

तेरहवीं सदी में शरह की बातें कोई नहीं मानता, (पु.)

आजकल धार्मिक नियमों को कोई नहीं मानता।

(तेरहवीं सदी से यहां मतलब हिजरी सन् की तेरहवीं सदी अर्थात वर्तमान समय से ही है।

यह ईस्वी सन 622 में चालू हुआ। हिजरी सन् की 14वीं सदी चल रही है।)

तेरा किया तेरे आगे आवे

शाप देना।

तेरा ढका रहे, मेरा बिक जाय, (व्यं.)

तेरी चीज रखी रहे, मेरी बिक जाय। अपना मतलब देखना।

तेरा पानी मैं भरूं, मेरे भरे कहार, (स्त्रि.)

झूठा बड़प्पन दिखाना।

तेरा पी तोमें बसे, ज्यों पत्थर में आग।
देखा चहे दीदार को, चकमक होके लाग।

स्पष्ट।

दीदार=आमने-सामने। दर्शन।

चकमक=आग निकालने का चकमक पत्थर।

तेरा माल सो मेरा माल, मेरी माल सो हें हें

जो दूसरे की चीज तो हथिया ले, पर अपनी चीज़ न छूने दे।

तेरा हाथ और मेरा मुंह, (स्त्रि.)

कमाओ और मुझे खिलाओ।

स्वार्थी के लिए क.।

तेरा है सो मेरा था, बराय खुदा टुक देखने दे, (स्त्रि.)

सास का कहना बहू के प्रति, जिसने उसके लड़के को (अपने स्वामी को) पूरी तरह काबू में कर रखा है।

तेरी आन या तेरे गुसइयां की

एक स्त्री का दूसरी से कहना कि मैं तेरी सौगंध खाऊं या तेरे स्वामी की।

तेरी आवाज मक्के मदीने में, (स्त्रि.)

शुभ समाचार सुनाने वाले को आशीर्वाद।

जब कोई बहुत या चिल्ला कर बात करे।

तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे।

हममें से हरेक अपने कर्मों का फल भोगेगा।

मैंने तुम्हारे साथ जो कुछ किया (अर्थात जो भलाई की) और उसके बदले में तुमने जो कुछ किया (अर्थात मेरे साथ जो बदी की), उसे ईश्वर जानता है, ऐसा भाव प्रकट करने के लिए क.।

तेरी कुदरत के आगे कोई ज़ोर किसी का चले नहीं,
चींटी पर हाथी चढ़ बैठे तब वह चींटी मरे नहीं।

स्पष्ट। ईश्वर की लीला विचित्र है।

तेरी कुदरत के कुरबान

हे ईश्वर ! तेरी अद्भुत लीला की बलिहारी।

तेरी गोद में बैठूं और तेरी ही दाढ़ी नोचूं

धृष्ट और कृतघ्न आदमी के लिए क.।

तेरे जौ, तेरी दरांती, चाहे जैसे काट

मुझे कुछ मतलब नहीं।

दरांती=हंसिया।

तेरे दया धरम नहिं मन में, मुखड़ा क्या देखे दरपन में

पाखंडी। निर्दयी।

तेरे बैंगन मेरी छाछ

अपनी छोड़ी वस्तु के बदले में दूसरे की बहुत चाहना। चतुराई से काम लेना।

तेरे मुंह में घी शक्कर

खुशखबरी सुनाने वाले से क.।

शुभकामना करने वाले से भी।

तेरे मेरे सदके में उसकी जोरू पेट से

किसी नपुंसक की स्त्री को गर्भ रह गया, तब मजाक में कहा जा रहा है।

तेल की जलेबी मुआ दूर से दिखाय, (स्त्रि.)

आशा तो बहुत देना, पर करना कुछ नहीं।

तेल जल चुका

(1) जिंदगी खत्म हो चुकी।

(2) पैसा उड़ गया, खर्च के लिए अब कुछ नहीं।

तेल जले घी, घी जले तेल

तेल बहुत पकने से घी जैसा हो जाता है और घी तेल जैसा।

(स्त्रियों की ऐसी धारणा है।)

तेल डाल कमली का साझा

किसी के किसी काम में नाममात्र की सहायता करके अपने को उसका साझीदार समझने लगना।

(किसी गड़रिये ने एक कंबल तैयार करके उसे चिकना करने के लिए एक-दूसरे आदमी से उस पर तेल मलने को कहा। जब उसने तेल से कंबल को चिकना कर दिया, तो बोला कि इसमें मेरा भी साझा है और इसे बेचने से जो दाम आए, उसमें से आधा मुझे देना, क्योंकि इसे चिकना मैंने ही किया है।)

तेल तिलों ही में से निकलेगा, (व्य.)

कोई अपनी गांठ से नुकसान नहीं देगा। मुनाफ़ा तो लागत में से ही निकलेगा। प्रायः दूकानदार ग्राहक से कहता है।

तेल देखो, तेल की धार देखो

प्रत्येक कार्य धीरज के साथ सोच-समझकर करना चाहिए।

(कथा है कि किसी राजकुमार के चार मित्र थे—सिपाही, ब्राह्मण, उंटेरा और तेली। जब वह पिता के मरने पर गद्दी पर बैठा, तो उन चारों को अपना मंत्री बनाया। पड़ोस के एक राजा ने जब उसे मूर्ख मंत्रियों से घिरा और भोग-विलास में डूबा पाया, तो उस पर चढ़ाई कर दी। राजकुमार ने तब अपने चारों मंत्रियों को बुलाया और उस बारे में उनकी राय मांगी। जो सिपाही था, उसने तुरंत लड़ने को कहा। ब्राह्मण ने कहा—जैसे भी हो सुलह कर लो। उंटेरे ने कहा—जल्दी किस बात की है। देखिए, ऊंट किस करवट बैठता है। तेली ने तब उसी का समर्थन करते हुए कहा—घबड़ाइए नहीं, अभी तेल देखिए, तेल की धार देखिए, अर्थात उतावली मत कीजिए।

तेल न मिठाई, चूल्हे धरी कढ़ाई, (स्त्रि.)

बिना साधन के काम की तैयारी।

तेलन से क्या धोबन घाट, इसके मूसल उसके लाट, (स्त्रि.)

दोनों एक से विकट, कोई किसी से कम नहीं।

घाट=घट, कम।

मूसल=कपड़े कूटने की मोगरी।

लाट=कोल्हू के बीच में लगा मोटा लट्ठ, जिससे तेल पिरता है।

तेली का काम तमोली करे, चूल्हे में आग उठे

जिसका काम उसी को शोभा देता है। कोई दूसरा करे, तो उसे हानि उठानी पड़ती है।

तेली का तेल गिरा हीना हुआ, बनिए का नोंन गिरा दूना हुआ

तेल गिरा तो जमीन सोख गई, और नोंन गिरा तो उसके साथ मिट्टी मिल गई, जिससे वजन बढ़ गया।

किसी को अपनी हानि से ही लाभ होता है।

तेली का तेल जले, मसालची का दिल जले

एक को खर्च करते देख दूसरा परेशान हो।

पाठा.—तेली का तेल जले, मसालची के पोद फटें।

तेली का तेल, भगत भैय्या जी की

खर्च कोई करे, नाम किसी का हो। तेली ने मंदिर में जलाने के लिए तेल दिया, पर नाम पुजारी का हुआ।

तेली का बैल ले के कुम्हारिन सत्ती होय, (स्त्रि.)

व्यर्थ की सहानुभूति।

तेली का बैल हो गया

रात-दिन काम में लगे रहने वाले से क.।

तेली के तीनों मरें और ऊपर से टूटे लाठ

दोनों बैल और तीसरा हांकने वाला, तेली के ये तीनों मरें, मुझसे क्या मतलब?

(किसी से कोई प्रयोजन न होना।)

तेली के बैल को घर ही कोस पचास

जिसे घर में ही दिन-रात काम करना पड़े, उसके लिए क.।

तेली क्या जाने मुश्क की सार

जिसने जो चीज कभी देखी ही नहीं, वह उसकी कद्र क्या जाने !

तेली खसम किया और रूखा खाया, (स्त्रि.)

समर्थ का आश्रय पाकर भी कष्ट में रहना। एक मूर्खता।

तेली जोड़े पली-पली रहमान उड़ावें कुप्पे

(1) घर में जब एक आदमी तो कमाने वाला हो, और दूसरा लुटाए, प्रायः तब क.।

(2) कहावत का यह भाव भी है कि मनुष्य यत्नपूर्वक जो काम करता है, ईश्वर उस पर एक बार में ही पानी फेर देता है।

तेली रोवे तेल को, मकसूदन रोवें खली को

सबको अपने-अपने स्वार्थ की पड़ी रहती है।

मकसूदन=नाम विशेष। यहां तेली के नौकर से मतलब है।

तैराक ही डूबते हैं

कर्मठ व्यक्ति ही सफल होते हैं। जो कुछ काम ही नहीं करता, उसके लिए सफलता-असफलता का प्रश्न क्या?

तैरेगा सो डूबेगा

स्पष्ट। दे. ऊ.।

तोको न भुनाऊं, तोरा भइया और बंधाऊं, (पू.)

कंजूस के प्रति व्यंग्य में, जब वह किसी काम में खर्च नहीं करना चाहता।

(किस्सा है कि कोई पुरविया रुपया भुनाने के लिए बाजार गया, पर उसे भुनाने में बड़ा कष्ट हो रहा था। वह कई दूकानों पर गया, पर रुपया उससे नहीं छोड़ा गया। मुट्ठी के बंद रहने के कारण उसके हाथ में जब पसीना आने लगा, तो उसने समझा कि रुपया मुझसे जुदा होने की बात सोच कर रो रहा है। इसी पर उसने कहावत के उपर्युक्त शब्द कहे।)

तोको लेवन मैं चाली, तू मोहें घेर लिया।
अब तू मोको छोड़ दे, मैं तोहे छोड़ दिया। (स्त्रि.)

मैं जब तुमसे कोई मतलब नहीं रखना चाहता, तो तुम भी मेरा पिंड छोड़ो।

तोड़ डाल तागा, तू किस भड़ुवे के मुंह लागा, (स्त्रि.)

ऐसी स्त्री के पति से कहा जा रहा है जो विवाह होते ही कुपथगामिनी हो गई है। दुष्ट का साथ छोड़ने के लिए भी। तागा से मतलब विवाह-सूत्र से है।

तोड़ने आए चारा और खेत पर इजारा

घास काटने आए और खेत पर कब्जा करने लगे। अनुचित दावा।

तोते की-सी आंख फेर लेता है

बेमुरव्वत आदमी। तोते को चाहे जितनी अच्छी तरह से रखो, पर ज्यों ही मौका पाता है; उड़ जाता है।

तोतेचश्म आदमी

दे. ऊ.।

तोरी बनत-बनत बन जाई, तू हरि से लागा रहु भाई

तू भगवान का भजन करता रह, धीरे-धीरे तेरा काम बनेगा।

(तुझे मुक्ति मिलेगी।)

तोरी होयलो मूली, खरपतवा भइलो साग।
अगवारे पछवारे बैठ लो, सोहो भइलो सरदार। (पू.)

मूली तो (उसके लिए) तुरई हो गई, और खर-पतवार हो गया साग; जो आदमी इधर-उधर बैठा करता था, वह अब सरदार बन गया। किसी साधारण मनुष्य ने बड़प्पन दिखाया, तब उससे कहा जा रहा है।

तोला के पेट में घुंघची

बड़े के पेट में छोटा समाता है।

तोला भर की आरसी, नानी बोले फ़ारसी

लंबी-चौड़ी बात करना।

तोला भर की चार कचौड़ी खुरमा माशे ढाई का,
लाला जी ने व्याह रचवाया धवला बेच लुगाई का।

किसी कंजूस के यहां के व्याह का मज़ाक। यह पूरी तुकबंदी इस प्रकार है—

तोला भर की चार कचौड़ी, खुरमा माशे ढाई का,
घर में रोवें बहिन-भानजी, बाहर रोवे नाई का,
धीरे-धीरे जीमों पंचों देखो गज़ब खुदाई का,
लाला जी ने व्याह रचाया, लहंगा बेच लुगाई का।

तोले भर की तीन चपाती, कहे जिमाने चालो हाथी

झूठी शान।

तोहरा बूते कन भूसा एकौ न छूटी, (पू.)

तुझसे कोई काम नहीं होने का।

तौबा कर बंदे इस गंदे रोज़गार से, (मु.)

इस गंदे रोज़गार को मत करो, भाई।
किसी बुरे काम से रोकने के लिए क.।

तौबा का दरवाज़ा खुला है, (मु.)

अपने कसूर की आदमी हमेशा क्षमा मांग सकता है।

तौबा बड़ी सिपर है गुनहगार के लिए, (मु.)

अपराधी के लिए प्रायश्चित्त बड़ी ढाल है।

त्रेता के बीजों को पहुंच गए।

त्रेता के युग में पहुंच गए, अर्थात बहुत ईमानदार और सच्चे बन गए।

थ

थकल पैराकू फेन चाटे, (पू.)

थका तैराक फेन चाटता है।

(1) मनुष्य की जब सारी संपत्ति नष्ट हो जाती है, तो वह विवश होकर थोड़े पर ही संतोष करता है।

(2) परिस्थितियों से वाध्य होकर मनुष्य को ओछे से ओछा काम करना पड़ता है।

थका ऊंट सराय तकता है

(1) दिन भर के परिश्रम के बाद मनुष्य आराम से लेटने की जगह चाहता है।

(2) थके मजदूर को अपना घर याद आता है।

थके बैल, गौन भई भारी, अब क्या लादोगे ब्यापारी?

वृद्धावस्था के लिए कहा है कि शरीर शक्तिहीन हो गया, पापों का बोझ भी बढ़ गया है, ठहर कर क्या होगा? चलना चाहिए।

गौन=एक प्रकार का दोहरा थैला, जिसमें सामान भरकर बैलों पर लादते हैं।

थाली गिरी, झनकार सबने सुनी

जब कभी कहीं कोई लड़ाई-झगड़ा या कोई विशेष घटना होती है, तो उसका पता पड़ ही जाता है।

थाली पर से भूका नहीं उठा जाता

जब कोई आदमी किसी वजह से नाराज़ होकर भोजन छोड़े, तब क.।

थाली फूटी न फूटी, झनकार तो सुनी

(1) किसी पर झूठा संदेह करना। किसी ने कहा कि अमुक व्यक्ति ने थाली तोड़ दी, पर जब उसे साबुत थाली लाकर दिखा दी गई, तो उसने कहा—थाली टूटी हो या न टूटी हो, पर गिरने की आवाज तो मैंने सुनी।

(2) दो मनुष्यों में झगड़ा हो जाए, तब भी। तात्पर्य यह कि उनमें आपस में बिगाड़ हुआ हो या न हुआ हो, पर यह तो सभी जानते हैं कि उनमें तू-तू मैं-मैं हो गई। भाइयों के संबंध में क.।

था सोच जो कुछ अव्वल, आखिर वही पेश आया

जिस बात का पहले से संदेह था, आखिर वही सामने आई।

थूक कर चाटना

कहकर बदल जाना।

थूक दाढ़ी, फिटे मुंह

किसी को धिक्कारना।

थूक बिलोना

बेहूदी बात करना।

थूकों सत्तू नहीं सनता

जहां अधिक पैसे की जरूरत है, वहां कम में काम नहीं चल सकता।

थैलियां भी सिला लीं

जब कहीं से कोई झूठमूठ ही रुपए मिलने की आशा लगाए बैठा हो, तब उससे व्यंग्य में क.।

थैली में रुपया, मुंह में गुड़

पास में रुपया हो और ज़बान मीठी हो, तो इन दो ही से मनुष्य सुखी रहता है।

थोड़ मोल की कामली, करे बड़ों का काम।
महमूदी और बाफ़्त, सबके रखे मान।

कंबल बड़े काम की चीज है, वह दूसरे कीमती कपड़ों की इज्ज़त रखता है, उसकी वजह से वे खराब नहीं हो पाते।

महमूदी=एक प्रकार की मलमल, बोलचाल की भाषा में

इसे मामद कहते हैं।

बाफ़्ता=एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

थोड़ा आपको, बहुत ग़ैर को

(1) अपने लिए चाहे थोड़ा करे, पर दूसरों के लिए बहुत करना चाहिए, अर्थात हमेशा दूसरों का ध्यान रखे।

(2) जो अपने घर वालों के साथ तो कम, पर बाहर वालों से अधिक अच्छा व्यवहार करे, उसके प्रति भी कह सकते हैं।

थोड़ा करें गाज़ी मियां, बहुत करें डफाली

संत-महात्माओं की अपनी शक्ति तो थोड़ी ही होती है, पर उनके शिष्य उसे बहुत बढ़ा दिया करते हैं।

(गाज़ी सालार उर्फ गाज़ी मियां महमूद गज़नवी के भतीजे थे। सन् 1033 में बहराइच में इनकी मृत्यु हुई। जहां इनकी मृत्यु हुई, वहां इनकी समाधि है। ये मुसलमानों के बड़े पीर माने जाते हैं।)

डफाली=डफ या ढोल बजाने वाला ।

थोड़ा खाना और इज़्ज़त से रहना

फ़िजूलख़र्ची नहीं करनी चाहिए।

थोड़ा खाना और बनारस में रहना

प्रायः ऐसे अवसर पर कहते हैं, जब कोई मनुष्य थोड़ी आमदनी से संतुष्ट रहकर घर में ही रहना पसंद करे।

थोड़ा खाना जवानी की मौत

थोड़ा खाने से तो आदमी दुबला होकर जल्दी मर जाता है।

(यह एक विश्वास है। अगली कहावत में इसके विरुद्ध बात कही गई है।)

थोड़ा खाना, सुखी रहना

संतोषी का कहना।

थोड़ा-थोड़ा करके ही बहुत हो जाता है

स्पष्ट।

थोड़ा देना बहुत आरजू करना

मिले थोड़ा, पर बिनती बहुत करनी पड़े।

थोड़ी आस मदार की, बहुत आस गुलगुलों की

कुछ मिलने की आशा से ही लोग बड़े आदमियों के पास जाते हैं।

(शाह मदार, मुसलमानों के एक बड़े पीर हो गए हैं, जिनकी मृत्यु 1432 में हुई। मकनपुर में उनकी दरगाह है। प्रतिवर्ष वहां मेला लगता है और प्रसाद में गुलगुले बंटते हैं उसी से कहावत का मतलब यह कि मदार साहब के दर्शनों के लिए तो लोग कम ही जाते हैं, पर गुलगुलों के लालच से अधिक।)

थोड़ी पूंजी खसमों खाय

थोड़ी पूंजी दूकानदार को नष्ट कर देती है, क्योंकि माल कम होने से मुनाफ़ा थोड़ा होता है, और ख़र्च के कारण अंत में नुकसान होता है।

थोड़े धन में खल इतराय

ओछा आदमी थोड़ा धन पाकर घमंड करने लगता है।

(क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई।
जिमि थोरे धन खल बौराई। तुलसी।)

थोड़े पानी में उभरे फिरते हैं

थोड़ा पैसा पाकर ही जब कोई दंभ से फूल उठे, तब क.।

थोथा चना, बाजे घना

अकर्मण्य बात बहुत करता है।

थोथे फटके उड़-उड़ जायं

पोला या घुना अनाज फटकने से उड़ जाता है।

(1) मूर्ख या झूठा आदमी परीक्षा करने से ठहरता नहीं।

अथवा

(2) मूर्ख आदमी गंभीर नहीं होता।

द

दक्खन गए न बहुरे, रहे चंदेरी छाया, (स्त्रि.)
ऐसे आदमी के लिए कहते हैं जो घर छोड़कर विदेश में रह जाए।
(औरंगज़ेब की फ़ौज के संबंध में कहा जाता है कि वह 12 वर्ष तक चंदेरी का घेरा डाले पड़ी रही।)

दखल दर माकूलात करना
उचित काम में हस्तक्षेप करना।

दबक शीरे के मटके में
अनायास कोई सुयोग किसी के हाथ लग जाए, तब कहते हैं—जाओ लाभ उठाओ; मिठाई के मटके में मुंह मारो।

दबते को सब दबाते हैं
कमज़ोर पर सब रोब जमाते हैं।

दबा पाई गूजरी, 'गहरा बासन लाओ'
किसी को अपने अधीन जानकर जब अनुचित लाभ उठाया जाए, तब क.।
गूजरी=ग्वालिन।

दबा बनिया पूरा तोले
बनिए को किसी से कोई भय हो, तो वह उसे पूरा तौलता है।

दबा हाकिम महकूम के ताबे
रिश्वतखोर हाकिम अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से डरता है।

दबी बिल्ली चूहों से कान कटावे
किसी व्यक्ति में यदि जब किसी प्रकार की कमज़ोरी हो, तो उसे अपने से छोटे आदमियों के सामने भी दबना पड़ता है।

दबे पर चींटी भी चोट करती है
सताने से कमज़ोर भी बदला लेता है।

दबे पर सब शेर हैं
जो दबता है उस पर सभी ज़बर्दस्त बन जाते हैं।

दम का क्या भरोसा है? आया, न आया?
जिंदगी का कोई ठिकाना नहीं, न जाने कब सांस निकल जाए।

दम का दमामा है
जिंदगी का ही सारा खेल है।
दम=सांस।
दमामा=ढोल।

दम गनीमत है
आदमी जब तक जिंदा है, तभी तक ग़नीमत है।

दमड़ी का पोस्ती
निकम्मे आदमी के लिए क.।
पोस्ती=(1) अफ़ीमची।
(2) बच्चों के खेलने का गुड्डा, जिसका सिर अफ़ीमची की तरह हिलता रहता है।

दमड़ी की अरहर, सारी रात खड़हर, (स्त्रि.)
जरा-से काम को बहुत करके दिखाना।

दमड़ी की गुड़िया, टका डोली का, (स्त्रि.)
जितने की चीज़ नहीं, उस पर उतने से अधिक ख़र्च।

दमड़ी की घोड़ी, छः पसेरी दाना, (स्त्रि.)
दे. ऊ.।

दमड़ी की चूं-चूं
निकम्मी चीज।

दमड़ी की दाल, आप ही कुटनी, आप ही छिनाल, (स्त्रि.)
किसी वस्तु का इतना कम होना कि उससे एक आदमी का भी काम न चले।

दमड़ी की दाल 'बुआ पतली न हो', (स्त्रि.)
जो जरूरत से ज्यादा कंजूसी करे, उसके लिए क.।
दमड़ी की निहारी में टाट के टुकड़े, (स्त्रि.)
थोड़े पैसों में कोई अच्छी चीज कैसे आ सकती है?
निहारी=नाश्ता, कलेवा।
दमड़ी की पाग, अधेली का जूता
उल्टा-सीधा काम।
पाग के दाम जूते से अधिक होने चाहिए।
दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुंड़ाई
दे.—दमड़ी की घोड़ी...।
दमड़ी की बुलबुल, टका छुटाई
किसी काम में मुनाफ़ा कम और खर्च अधिक।
छुटाई=पंखों की सफाई।
दमड़ी की मुर्गी, नौ टका निकयाई, (पू.)
दे. ऊ.।
निकयाई=पंखों के अलग करने की मजदूरी।
दमड़ी की लाई बनैनी खाय, 'ये घर रहे कि जाय', (पू.)
वनियों की कृपणता पर।
दमड़ी की हांड़ी लेते हैं, तो ठोंक बजा कर लेते हैं
हर चीज देखभाल कर लेनी चाहिए।
दमड़ी की हांड़ी गई, तो कुत्ते की जात पहचानी
नुकसान हुआ सो हुआ, पर किसी एक आदमी के स्वभाव का पता तो चल गया।
दमड़ी के पान बनैनी खाय, कहो 'ये धर रहे कै जाय'
दे.—दमड़ी की लाई...।
तथा—टके की लौंग...।
दमदमे में दम नहीं, ख़ैर मांगो जान की
निराश अवस्था में कहते हैं।
दम दरूद न होना
सांस बंद हो जाना। अंतिम सांस लेना।
दम नहीं बदन में, नाम ज़ोरावर खां
बहुत दिखावा करने वाले के लिए क.।
दम नाक में आ गया
बहुत परेशानी की हालत में होना।
दम बना रहे
आशीर्वाद। चिरायु होओ।
दम बना रहे, फूंक निकल जाय
जब ऊपर से कोई किसी का भला चाहे, पर भीतर से हानि पहुंचाने की चेष्टा करे, तब क.।
दम भर की ख़बर नहीं
अगले क्षण क्या हो, ठीक नहीं।
दम मारने की जगह नहीं
जब काम से बिल्कुल फुर्सत न मिले तब क.।
दम में हजार दम
एक के सहारे बहुतों की गुज़र होती है।
दम है, जब तक गम है
जब तक ज़िंदगी है, तब तक परेशानियां भी हैं।
दम है तो क्या गम है?
जिंदा अगर हैं, तो फिर चिंता किस बात की?
दमा दम के साथ
दमा दम के साथ ही जाता है।
दमा=श्वास संबंधी एक रोग।
दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लग घट में प्रान।
स्पष्ट।
दया बिन संत कसाई
स्पष्ट।
दर-दर मांगते फिरते हैं
किसी की गिरी हुई हालत के लिए क.।
दर-बदर, खाक बसर फिरा है
सिर पर धूल डालकर दरवाजे-दरवाजे फिरता है।
बहुत शोचनीय स्थिति में है।
दरगा को कूज़े में भरना
गागर में सागर भरना।
(1) थोड़े में बहुत कह जाना।
(2) असंभव को संभव बनाना।
दरया पै जाना और प्यासे आना
एक मूर्खतापूर्ण कार्य। जहां आसानी से अपना कार्य सिद्ध हो रहा हो, वहां से खाली हाथ लौटना।
दरया में रहना और मगरमच्छ से बैर
जिसके आश्रित रहे, उससे बैर करना ठीक नहीं।
दरवाज़े पर आई बारात, समधिन को लगी हगास, (स्त्रि.)
काम के समय ग़ायब हो जाना।
(दरवाज़े पर बरात आने पर समधिन की सबसे पहले आवश्यकता पड़ती है।)
दरे तौबा बाज़ है, (मु.)
भूल के लिए कभी भी खेद प्रकट किया जा सकता है।

दरोगा को फ़रोग नहीं
झूठा फलता-फूलता नहीं।
दरोग गो को हाफ़िज़ा नहीं होता
झूठे की स्मरणशक्ति कमज़ोर होती है। वह भूल जाता है कि उसने कब क्या कहा।
दरोग ब गर्दने-रावी, (फ़ा.)
झूठ का पाप झूठ बोलने वाले के सिर पड़ता है।
दर्जी की सुई, कभी ताश में, कभी टाट में
दर्जी की सुई कभी रेशम की सिलाई करती है तो कभी टाट की।
परिस्थितियां कभी एक-सी नहीं रहतीं।
दर्द को वह समझे, जो खुद दर्दमंद हो
दयावान ही दूसरे के दुख को समझ सकता है।
दर्शन के नैना लोभी
स्पष्ट।
दर्शन थोड़े नाम बहुत
जब किसी में ख्याति के अनुसार गुण न पाए जाएं, तब क.। कहावत का प्रचलित पाठ—'नाम बड़ा दर्शन थोड़े' है।
('नाम बहुत' पहले कर देने से कहावत को इस स्थान से हटाना पड़ेगा। इसलिए फैलन ने जैसा लिखा है वैसा ही रहने दिया।)
दर्शन मोटा, पैंड़ा खोटा, (हिं.)
दर्शन तो अच्छे, पर मार्ग बुरा।
(जैसा बद्रीनाथ की यात्रा का है।)
दलिद्दर घर में नोंन पकवान, (स्त्रि.)
कंजूस के घर में नमक ही पकवान माना जाता है।
(बोलचाल में दालिद्री का अर्थ कंजूस होता है।)
दवा ओर दुआ दोनों
एक साथ सब काम साधना। दवा भी हो और ईश्वर-प्रार्थना भी हो।
दवा की दवा, गिज़ा की गिज़ा
ऐसी वस्तु, जो दवा का भी काम करे ओर जिससे पेट भी भरे।
गिज़ा=भोजन।
दवा के लिए ढूंढ़ो तो नहीं मिलती
बहुत दुर्लभ चीज।
दवात कलम
कोरी दवात कलम है। क[illegible]ज में रोकड़ नहीं है।
दस नकटों में नाकवाला नक्कू
जैसे समाज में रहे, वैसी ही चाल चले। दस नकटों में अगर कोई नाक वाला पहुंच जाए, तो वे 'नक्कू' कहकर उसकी खिल्ली उड़ाएंगे।
(नक्कू के यहां दो अर्थ हैं 'नाकवाला' और 'बदनाम'।)
दसों उंगलियां, दसों चिराग़, (मु. स्त्रि.)
सब तरह से चतुर और काम करने वाली स्त्री के लिए क.।
दस्तरख़ान की बिल्ली, (मु.)
ऐसा व्यक्ति जो हर जगह दावत में बिना बुलाए खाने पहुंच जाए। मुफ्तखोर, ख़ुशामदी।
दस्तरख़ान की मक्खी, (मु.)
मुफ़्तखोर के लिए घृणापूर्वक क.।
दस्तरख़ान के बिछाने में सौ ऐब, न बिछाने में एक ऐब, (मु.)
कोई काम अगर किया जाए, तो उसे अच्छी तरह करना चाहिए; अन्यथा उसे न करना ही अच्छा। काम न करने पर केवल यही बदनामी होगी कि नहीं किया। पर उसे यदि ढंग से न किया गया, तो अधिक बदनामी होने की संभावना रहती है।
दस्तार, गुफ्तार अपनी ही काम आती है
पगड़ी और बात अपनी ही काम आती है। किसी से कुछ कहना है, तो स्वयं ही कहना चाहिए, दूसरे से कहलवाना ठीक नहीं।
दस्तार, गुफ़्तार, रफ़्तार जुदी-जुदी
पगड़ी बांधने, बोलने और चलने का ढंग, सबका अलग-अलग होता है।
दह दर दुनिया, सद दर आखरत, (मु.)
इस लोक में दस देने से परलोक में सौ मिलते हैं। मुसलमान फ़कीरों की टेर।
आख़रत=(आख़िरत) क़यामत। परलोक।
दह 'पोइस' खलीता भारी
एक ओर हटो, बोझ बहुत है।
(सड़क पर भारी बोझ लेकर चलने वाले मजदूर 'पोइस' 'पोइस' चिल्लाते जाते हैं।)
दही की गवाही चूड़ा, (पू.)
दोनों का जोड़ है। दही और शक्कर के साथ चूड़ा खाया जाता है।
दही बेचन चलीं, पीठ पिछाड़ महोदया, (स्त्रि.)
जब कोई अपना काम करने में शर्माए, तब क.।

(दही तो बेचने जा रही है और मटकी पीठ के पीछे छुपा रखी है, जिससे कोई देख न ले।)

दही भात का मूसल

हर काम में हस्तक्षेप करने वाला। व्यर्थ बीच में बोलने वाला। दही भात दोनों ही मुलायम चीजें हैं। उनके लिए मूसल की आवश्यकता नहीं पड़ती।

(यह कहावत 'दही भात में मूसल' अधिकतर इस प्रकार की प्रचलित है। दाल-भात में मूसल या मूसलचंद भी क.)।

दांड़ा बाला, जाड़ा ढाला, (ग्रा.)

लक्कड़ जलाने से जाड़ा भाग जाता है।

(प्रयास करने से कार्य सिद्ध होता है।)

दांत काटी रोटी है

गहरी दोस्ती के लिए क.।

दांत कुरेदने को तिनका नहीं बचा

अग्नि में सब स्वाहा हो गया। अग्निकांड की भीषणता को प्रकट करने के लिए क.।

दांत गिरे और खुर घिसे, पीठ न बोझा लेय।
ऐसे बूढ़े बैल को, कौन बांध भुस देय।

(1) बहुत बूढ़े और कमजोर बैल के लिए कहते हैं; उससे कोई काम नहीं लिया जा सकता।

(2) निकम्मे आदमी के लिए भी व्यंग्य में क.।

दांत पर मैल नहीं

बहुत ग़रीबी की हालत में होना।

दाई के सिर पान फूला, (मु. स्त्रि.)

पुत्र उत्पन्न होने की ख़ुशी में दाई से क.।

(बच्चे आंख-मिचौनी के खेल में इस वाक्य का प्रयोग करते हैं। वहीं से लिया गया है। पान फूल एक गहना भी होता है।)

दाई चंबेली के मिरज़ा मोगरा

जब कोई तुच्छ आदमी अपना झूठा बड़प्पन दिखाए, तब व्यंग्य में क.।

(चमेली और मोगरा फूलों के नाम हैं। वे मनुष्यों के नाम भी होते हैं।)

दाई जाने अपनी हाई, (स्त्रि.)

दाई अपने जैसी ही स्थिति सबकी समझती है। जब कोई दूसरे के कष्ट को कम करके बताए, तब क.।

(बच्चा जनाते समय दाई प्रसूता की पीड़ा की ओर ध्यान नहीं देती और धैर्य बंधाने के लिए यही कहा करती है कि 'अरे व्यर्थ चिल्लाती हो, क्या बात है।' कहावत में उसी का जवाब है।)

दाई दाई ऊंटनी, सवा घड़ी मुतनी

बच्चों की तुकबंदी।

दाई री दाई ! तेरे सात हों भाई

बच्चों की तुकबंदी।

दाई से पेट छिपाना, (स्त्रि.)

किसी मनुष्य से ऐसी बात छिपाना, जो पहले से ही भेद जानता है।

दाई से पेट नहीं छिपता

जिस आदमी को रोज़ जो काम करना पड़ता है, उससे उस संबंध की कोई बात छिपती नहीं।

दाई हो मीठी, दादा हो मीठा, तो स्वर्ग कौन जाए?

यह लूं या वह लूं। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर क.।

दाग लगाए लंगोटिया यार

क्योंकि वह तुम्हारा कच्चा चिट्ठा जानता है।

तुम अगर उसे कोई नुकसान पहुंचाओगे, तो वह तुम्हारा भेद ख़ोल देगा।

दागे के सांड तो दाग ले लोहार, (पू.)

सांड को दगवाना है, तो लोहार ही दाग सकता है। जिसका जो काम है, वही करता है।

दागना=लाल गरम लोहे से जानवर की पीठ पर निशान बनाना।

दाता की नाव पहाड़ चढ़े

दानशील के सभी काम सफल होते हैं।

दाता के घर लच्छमी, ठाड़ी रहत हजूर।
जैसे गारा राज को, भर-भर देत मजूर।

दानशील जितना दान करता है, ईश्वर उसे उतना ही देता है।

गारा=चूने और पानी का गाढ़ा मिश्रण, जो मकान बनाने के काम आता है।

राज=कारीगर।

दाता के तीन गुन, दे, दिलावे, छीन ले, (हिं.)

ईश्वर के लिए कहा गया है कि वही देता है, वही दिलाता है और वही छीन भी लेता है। राजा या मालिक के लिए भी कह सकते हैं।

दाता को राम छप्पर फाड़ के देता है

ईश्वर दाता को कहीं-न-कहीं से देता है।

दाता दाता मर गए और रह गए मक्खीचूस।
देने लेने को कुच्छ नहीं लड़ने को मौजूद।

किसी याचक का कहना, जिसे कुछ मिला नहीं।

दाता दातार, सुथनी उतार, (स्त्रि.)

(1) कोई स्त्री अपने पति की दानशीलता से ऊबी हुई है और खीझकर कहती है कि वह हज़रत इतने उदार हैं कि मेरा पैजामा भी उतार कर दे सकते हैं। (2) कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि दाता तो वही है, जो अपनी बीवी की सुथनी तक उतार कर दे दे।

दाता दे कंजूस झूर-झूर जाए

दाता को देते देख कंजूस दुखी होता है।

दाता दे भंडारी का पेट फटे

जब मालिक तो देना चाहे, पर जिसके हाथ में कुंजी है, वह देने में आनाकानी करे, तब क.। मराठी में भी है—खरचणाराचें खरचतें, कांठा वाळूयाचें पोट दुखते।

दाता दे, भंडारी पेट पीटे

दे. ऊ.।

दाता देवे और शरमावे, बादल बरसे और गरमावे

दाता देकर शर्माता है कि मैंने कम दिया, इसी तरह बादल बरस कर शर्माता है, अर्थात और अधिक बरसना चाहता है। वर्षा में वायुमंडल का गरम होना और ज्यादा वर्षा का सूचक है।

दाता पुन्न करे, कंजूस झुरझुर मरे

दे.—दाता दे कंजूस...।

दाता सदा दलिद्री

क्योंकि वह अपने पास कुछ नहीं रखता।

दादा कहने से बनिया गुड़ देता है

(1) हर आदमी खुशामद-पसंद है। अथवा

(2) खुशामद बड़ी चीज है।

दादा जान पराए बरदे आज़ाद करते थे

अर्थात हम ऐसे आदमी नहीं, जो अपनी गांठ से कुछ खर्च करेंगे। हम तो मुफ्त की वाहवाही लूटने वाले आदमी हैं। *(पराए बरदे आज़ाद करने का अर्थ होता है, दूसरों का ख़र्च कराकर स्वयं नेकनामी लूटना।)*

दादा पड़दादा के राज की बातें करता है

लंबी-चौड़ी हांकने वाले के लिए क.।

दादा मरिहैं तो भोज करिहैं, (पू.)

किसी काम को अनिश्चित काल के लिए टालना। अथवा उसके लिए कोई ऐसी शर्त लगाना, जिससे वह पूरा हो ही न सके।

दादा मरेंगे, जब बैल बंटेंगे

दे. ऊ.।

दादा मरेंगे, जब मीरास बंटेगी

दे.—दादा मरिहैं...।

मीरास=संपत्ति।

दादा मरेंगे तो पोता राज करेंगे, (स्त्रि.)

स्पष्ट।

(ऊपर की चारों कहावतों का लगभग एक-सा भाव है।)

दादू दुनियां बावरी, फिर-फिर मांगे दान।
लिक्खनहारा लिख गया, मेटनहारा कान।

दादू कहते हैं कि ईश्वर से बार-बार कोई प्रार्थना करना व्यर्थ है। भाग्य में जो लिखा है, वही होगा।

दादे राज न खाय पान, दांत दिखावत गए प्रान, (पू.)

साधारण आदमी दिखावा करे, तब क.।

दान वित्त समान, (हिं.)

सामर्थ्य के अनुसार दान देना चाहिए।

दाना खा मोठ का, पानी पी सोंठ का

मोठ की दाल वायुकारक होती है, इसलिए उस पर सोंठ का पानी पीना चाहिए।

सोंठ वायुनाशक मानी जाती है।

दाना खाय न पानी पीवे, वह आदमी कैसे जीवे?

आदमी से अगर काम लेना है, तो उसे खाने को भी मिलना चाहिए।

दाना जल्दबाजी नहीं करते

सोच-विचार कर काम करे।

दाना छितराना तहां जाना जरूर है, (पू.)

जहां अन्नजल है, वहीं आदमी को जाना पड़ता है।

दाना दुश्मन नादान दोस्त से बेहतर

बुद्धिमान शत्रु मूर्ख मित्र से अच्छा।

दाना न घास, खरहरा छः-छः बार

(1) आवश्यक वस्तु न देकर व्यर्थ की चीज देने पर क.।

(2) झूठी सेवा-सुश्रूषा करने पर भी क.।

दाना न घास, घोड़े तेरी आस

किसी चीज के रख-रखाव में कुछ खर्च न करके यह आशा करे कि वह वक्त पर काम आएगी, तब क.।

दान न घास, पानी छः-छः बार

दे.—दाना न घास खरहरा...।

दाना न घास, हिन-हिन करे

घोड़े को अगर दाना और घास न दिया जाए तो वह हिनहिनाएगा। भूखा आदमी शोर मचाता है।

दानी की भाखा खाली न जाय
सज्जन पुरुष की बात खाली नहीं जाती।
दाने को टापे, सवारी को पादे
खाने को तैयार, पर काम से मुंह चुराना।
दाने-दाने को मोहताज है
बहुत गिरी हालत में है।
दाने-दाने पर मुहर है
बिना भाग्य के एक दाना भी नहीं मिलता।
दाने-पानी के इख़्तियार है
भाग्यवादी की उक्ति।
दाने-पानी के हाथ है
दे. ऊ.।
दाम आवे काम
पैसा वक़्त पर काम आता है।
दाम करे सब काम
पैसे से ही सब काम होता है।
दाम दीजे, काम लीजे
पैसा दो और काम कराओ।
दामों टेरी या हाड़ों ढेरी
या तो पैसा इकट्ठा करो या हड्डियों का ढेर बनो। यानी बिना पैसे के बेमौत मरो।
दामों रूठा, बातों से नहीं मानता
जिसे अपना पैसा लेना है, वह खाली बातों से नहीं मानता। उसे तो पैसा चाहिए।
दारू ये-ग़ज़ब ख़ामोशी, (फ़ा.)
क्रोध की सबसे अच्छी दवा मौन है। अर्थात चुप करने से क्रोध शांत हो जाता है।
दाल-भात, खिचड़ी
किसी चीज का गड्डमगड्ड।
दाल में काला है
कुछ गड़बड़ है।
दावत नहीं, अदावत है
दावत नहीं, मुसीबत है।
(खिलाने-पिलाने में ख़र्च होता है, इसी से क.।)
दासी करम कहार से नीचे, (हिं.)
नौकरानी का पेशा सबसे बुरा।
दाहना धोवे बायें को, और बायां धोवे दायें को
परस्पर सहयोग से ही काम चलता है।
दिन अच्छे होते हैं, तो कंकड़ जवाहर हो जाते हैं
समय अच्छा आने पर सब काम बनते हैं।
दिन ईद और रात शबेबरात, (मु.)
हमेशा मौज-मजे में रहने वाला।
दिन की ऊनी-ऊनी, रात को चरखा पूनी, (स्त्रि.)
दिन में अलसाती है और रात में चरखा-पूनी लेकर बैठती है।
(समय पर काम न करके बेवक्त करे, तब क.। बंगला में है—दिन गेल हेसे खेले रात होले बउ कापास डले। यानी दिन तो हंस-खेलकर बीत जाता है, रात को वह रूई सहलाती है यानी मजे ही मजे हैं।)
दिन को शर्म, रात को बग़ल गर्म
जब कोई स्त्री दिन में अपने पति या अपने किसी प्रेमी से बहुत शर्म करे तब क.।
दिन खसा, मजदूर हंसा
इसलिए कि काम से छुट्टी मिलेगी।
दिन जब बुरे आते हैं, तो सोने पै हाथ डालो मट्टी हो जाता है
स्पष्ट।
दिन जब भले आते हैं तो मट्टी में हाथ डालो सोना होता है
स्पष्ट।
दिन जाते देर नहीं लगती
स्पष्ट।
दिन दस आदर पाय के, करनी आप बखान।
जौ लग काग सराध पख, तौ लग तो सन्मान।
थोड़े दिनों की प्रतिष्ठा मिलने पर जब कोई उसी पर अभिमान करने लगे, तब क.।
दिन दीवाली हो गए
बहुत आनंद उत्सव मनाया जाना।
दिन दूनी रात चौगुनी
तेजी से वृद्धि के लिए क.। आशीर्वाद में क.। दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती हो।
दिन नीके बीते जाते हैं, फेर नहीं वह आते हैं
अच्छा समय फिर नहीं आता।
दिन भर चले अढ़ाई कोस
आलसी आदमी।
दिन भले आएंगे तो घर पूछते चले आएंगे
उन्हें बुलाना नहीं पड़ता।
दिन में सोवे, रोज़ी खोवे, (लो. वि.)
दिन में सोना अच्छा नहीं।

दिमका के खाइल पेंड़, सोच के मारल देह कवनों काम के न रहे
दीमक का खाया पेड़ और चिंता का मारा शरीर किसी काम का नहीं रहता।
दिया तो चांद था, न दिया तो मुंह मांद था
किसी की इच्छा पूरी कर दो, तो प्रसन्न हो जाता है। न करो तो नाराज़ रहता है।
दिया दान मांगे मुसलमान, (हिं.)
दिया हुआ दान मुसलमान ही वापस लेते हैं।
(मुसलमानों में यह प्रथा है कि लड़की के मरने पर दहेज में दिए धन को फिर वापस मांग लेते हैं। यह स्त्री के फायदे के लिए है, पर इसका उल्टा अर्थ लगाया गया।)
दिया दूर से, लागी साथ खाने, (स्त्रि.)
मांगने पर किसी को कोई चीज दे दो, तो वह धृष्ट बन जाता है। फिर मांगने लगता है।
दिया न वाती, मुंडो फिरे इतराती, (स्त्रि.)
कोरा घमंड।
दिया फ़ातिहा को, लगे लुटाने, (पु.)
किसी चीज का दुरुपयोग। फ़ातिहा वह चढ़ावा कहलाता है, जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाता है।
दिया वस्त अनूप है, दिया कहे सब कोय।
धरा वस्त ना पाइये, जो पाये दिया न होय।
स्पष्ट।
दिया के यहां दो अर्थ हैं। (1) दी हुई वस्तु, अर्थात दान; तथा (2) दीपक। पाये=पास।
इस दोहे का शुद्ध रूप इस प्रकार है–
दिया वस्तु अनूप है, दिया करो सब कोय।
धरी वस्तु ना पाइए, जो कर दिया न होय।
दिया लिया ही आड़ी आता है
अच्छे कर्म ही अंत समय काम आते हैं।
दिया हाथ, खाने लगा साथ
किसी को थोड़ा सहारा देने पर जब वह गले पड़ जाए, तब क.।
दिया है तो देख ले
(1) दान दिया है तो फल मिलेगा।
(2) हाथ में दीपक हो, तो उससे सब देखा जा सकता है।
दिये की रोशनी महशर तक, (स्त्रि.)
यहां दिए के दो अर्थ हैं–
(1) दीपक और (2) दान। दीपक का प्रकाश जग में फैलता है, पर दान का प्रकाश स्वर्ग तक।
दिए तले अंधेरा
दे.–चिराग़ तले...।
दिल का दिल आइना है
एक के हृदय की बात दूसरे से छुपी नहीं रहती।
दिल का मालिक ख़ुदा है
वह जिससे भी जैसा काम करवा ले।
दिल की थी मैं सादी, जिसका पाती उसका खाती
किसी भोली स्त्री का कहना कि जातपांत का कोई भेद मैंने नहीं किया, जिसका मिल जाता उसी का खा लेती।
दिल को दिल से राह है
एक हृदय से दूसरे के लिए हमेशा रास्ता रहता है।
इसका शुद्ध रूप 'दिल को दिल से राहत है'।
राहत=आराम।
दिल को हो करार तो सब सूझें त्योहार
मन निश्चिंत होने पर ही त्योहार अच्छे लगते हैं।
दिल में आई को रखे सो भड़वा
मन में आई बात को छिपाना न चाहिए।
दिल में नहीं डर, तो सबकी पगड़ी अपने सिर
सच्चे और ईमानदार आदमी की सब इज़्ज़त करते हैं।
दिल लगा गधी से तो परी क्या चीज है?
प्रेम में रूप-कुरूप नहीं दिखाई देता।
दिल लगा मेंढकी से तो पद्मिनी क्या चीज है ?
दे. ऊ.।
दिल सोज़, खाना तराश
दिल की आग, घर का चाकू।
बुरा लड़का या बुरी पत्नी।
दिलेरी मर्दों का गहना है
वीरता से ही मनुष्य की शोभा है।
दिल्ली की कमाई, दिल्ली ही में गंवाई
नौकरी में कुछ बचा न पाना।
दिल्ली की बेटी, मथुरा की गाय; करम फूटे तो बाहर जाय
यदि दिल्ली जैसे बड़े शहर की लड़की या मथुरा जैसे पुनीत स्थान की गाय किसी दूसरी जगह जाए, तो यह तो उसके लिए एक दुर्भाग्य की ही बात है।
प्रचलित रूप–गोकुल की बेटी।
दिल्ली के दिलवाली, मुंह चिकना पेट खाली
शहर के छैल-चिकनियों के लिए। खाने को चाहे न हो, पर ऊपर साफ़-शौकीन बने रहते हैं।

दिल्ली ग़दर पहले चमन बनी हुई थी।
मुग़लों के जमाने की याद में किसी का कहना।

दिल्ली दूर है
अभी रास्ता बहुत तै करना है।

दिल्ली से मैं आऊं, ख़बर कहे मेरा भाई
(1) जब कोई आदमी किसी जानी हुई बात को स्वयं न कहकर किसी दूसरे से पूछने के लिए कहे, जिसे उसका कोई ज्ञान नहीं, तब क.। (2) जब जानी हुई बात को कोई दूसरा सुनाने आए, तब भी कह सकते हैं।

दिल्ली से हींग आई, तब बड़े पक्के
दिल्ली से हींग आने पर बड़े तैयार हुए।
(1) व्यर्थ का आडंबर।
(2) किसी काम में आवश्यकता से अधिक विलंब लगना।

दिवाल रहेगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे, (स्त्रि.)
जान बचेगी तो शरीर पर मांस भी चढ़ जाएगा।
लेव=लेप, पलस्तर।

दिवालिए की साख पताल में
दिवालिए की कोई साख नहीं होती।

दीदारबाजी और मौला राज़ी।
खूबसूरत औरतों से नज़रबाजी करने में ईश्वर नाराज नहीं होता, यह शोहदों का कहना है।

दीन दुनिया की दम-बदम कीजे, किसकी शादी वो किसका ग़म कीजे
अपने लोक-परलोक को बनाना चाहिए, दूसरों के झगड़े में कोई कहां तक पड़ सकता है?

दीन व दुनिया में उसका होय बुरा, जो किसी का कोई बुरा चीते
जो दूसरों का बुरा चाहता है, उसका लोक-परलोक दोनों जगह बुरा होता है।

दीन से दुनिया रखनी मुश्किल है
(1) धर्म-पालन करके दुनिया में रहना मुश्किल है।
(2) ईश्वर को प्रसन्न किया जा सकता है, पर दुनिया को प्रसन्न रखना कठिन है।

दीन से दुनिया है।
धर्म के सहारे ही संसार टिका है।

दीवाना बकारे खुद हुशियार
(1) पागल, पर अपने काम में होशियार।
(2) पागल भी अपने काम में होशियार होता है।

दीवाना है वह लेकिन बात कहता है ठिकाने की
दिमाग़ ठीक नहीं, लेकिन बात पते की कहता है।

दीवानी आदमी को दीवाना कर देती है
दीवानी के मुकदमे आदमी को पागल बना देते हैं। वे वर्षों चलते हैं।

दीवाने को बात बताई, उसने ले छप्पर चढ़ाई
नासमझ से कोई भेद की बात नहीं कहनी चाहिए।

दीवाने से आंख नहीं मिलाइए
ऊटपटांग आदमी से बात न करना ही ठीक है।

दीवानों के क्या सिर सींग होते हैं
जब कोई बेसिर-पैर की बात कहे।

दीवार के भी कान होते हैं
गुप्त बात को किसी से कहते समय बहुत सतर्क रहना चाहिए, ऐसा न हो कोई दूसरा सुन ले।

दीवार खाई आलों ने, घर खाया सालों ने
आलों से दीवार कमज़ोर होती है। और सालों से घर नष्ट होता है, क्योंकि बहन की वज़ह से वे मनमाना खाते-पीते हैं।

दीवाली की कुल्हिया
देखने में अच्छी, पर किसी काम की नहीं।
(दीपावली में रंग-बिरंगे कुल्हड़ और मिट्टी के अन्य बर्तन बनाए जाते हैं। वे देखने में सुंदर होते हैं, पर बाद में किसी उपयोग में नहीं आते।)

दीवाली की रात को बूटी बूटी पुकारती है, (लो. वि.)
दीवाली की रात में लोग जड़ी-बूटियां खोदकर लाते हैं। विश्वास किया जाता है कि इस दिन खोदकर लाई गई जड़ी-बूटी अधिक गुण दिखाती है।
उसी से आशय है।

दीवाली के दिए चाटकर जायेंगे
मुफ़्तखोरे के लिए क.।

दीवाली जीत, साल भर जीत, (लो. वि.)
स्पष्ट। दीवाली में जुए में जीतना शुभ मानते हैं।

दीवाली बरस में एक दिन
शुभ दिन या उत्सव का दिन रोज-रोज नहीं आता।

दुआ और दवा, नित करनी चाहिए
बीमारी की हालत में ईश्वर से नित्य प्रार्थना भी करनी चाहिए और दवा भी खानी चाहिए।

दुआर धनी के पड़ रहे, धका धनी का खाय
धनी के पास रहने और उसकी खुशामद करते रहने से

कुछ-न-कुछ लाभ होता ही है। पूरा दोहा इस प्रकार है—
द्वार धनी के पड़ रहे, धका धनी के खाय।
कबहूं धनी नेवाजहीं, जो दर छांड़ि न जाय।
यह दूसरी पंक्ति इस प्रकार भी सुनने में आती है—
एक दिन ऐसा होयगा आप धनी है जाए।

दुखते चोट, कनौड़े भेंट
चोट लगी, और काने से भेंट। जिस आदमी से बचना चाहते हों, उसी का मिल जाना।
काने का रास्ते में मिलना अपशकुन मानते हैं।

दुखते दांत को उखाड़ना ही चाहिए
जिससे निरंतर कष्ट मिले, उसे अलग ही कर देना चाहिए।

दुख भरें बी फ़ाख़्ता, कौवे मेवे खायें
कोई तो मेहनत करे, और कोई उसका फल भोगे।
फ़ाख़्ता=एक चिड़िया।

दुख में सुख की क़दर होती है
स्पष्ट।

दुख में हर को सब भजे, सुख में भजे न कोय।
जो सुख में हर को भजे, तो दुख काहे को होय।
स्पष्ट।

दुख सुख निस दिन संग है, मेट सके ना कोय।
जैसे छाया देह की, न्यारी नेक न होय।
जीवन में सुख-दुख हमेशा लगे रहते हैं। उन्हें अलग नहीं किया जा सकता।
नेक=ज़रा भी।

दुख सुख बहिन भाई हैं
दुख-सुख का जोड़ा है।

दुख सुख सबके साथ लगा हुआ है
दुनिया में सभी सुख-दुख भोगते हैं।

दुखिया दुख रोवे, सुखिया जेब टोवे, (स्त्रि.)
यह देखने के लिए कि वह अपना क्या मतलब गांठ सकता है। (फैलन की टिप्पणी है कि यह वकीलों के लिए कही जाती है।)

दुखिया रोवे, सुखिया सोवे
स्पष्ट।

दुधैल गाय की दो लातें भी सही जाती हैं
जब किसी से कुछ मिलने की आशा होती है, तो उसके नाज़-नखरे भी उठाने पड़ते हैं।
विन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ करवे बैन।
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धैन। (वृंद)

दुनियां खैये मक्कर से, रोटी खैये शक्कर से
दुनिया का चालाकी से लाभ उठाए और अपनी रोटी शक्कर से खाए। मतलब, दुनिया में सीधे आदमी की गुज़र नहीं।
प्रचलित पाठ—'दुनिया ठगिए मक्कर से' भी है।

दुनिया चंद रोज़ा है
दुनिया कुछ दिनों की है।

दुनियां जाए उम्मेद है
दुनिया नष्ट हो जाए, पर आशा फिर भी रहती है। वह कभी नहीं मिटती।

दुनियां जाहिरपरस्त है
दुनिया दिखावट को पसंद करती है।

दुनियां दुरंगी, मकारा सराय,
कहीं ख़ैर-खूबी, कहीं हाय-हाय
स्पष्ट।
मकारा सराय=धोखोबाज़ों की जगह।

दुनियां धुंध का पसारा है, (हिं.)
संसार एक माया है, अथवा असार है।

दुनियां धोखे की टट्टी है
संसार मिथ्या है।

दुनियां बउम्मेद कायम है
संसार आशा पर टिका है।

दुनियां बेसबात है
संसार नश्वर है।
बेसबात=जिसकी स्थिरता न हो। क्षण-स्थायी।

दुनियां मुर्दा पसंद है, (मु.)
दुनिया मरे हुओं की ही प्रशंसा करती है। जीवित को कोई नहीं पूछता।

दुनियां में ऐसे रहिए, जैसे साबुन में तार
अर्थात दुनिया में उससे अलग होकर इस तरह रहना चाहिए, जैसे साबुन में तार रहता है। साबुन को काटते समय तार उससे बिल्कुल अलग हो जाता है। साबुन से चिपकता नहीं।

दुनियां में च्यार पैसे बड़ी चीज है
स्पष्ट।

दुनियां में दो ही चीज हैं; बेटा, बेटी
जब किसी को लड़के की आकांक्षा रही हो, और लड़की पैदा हो, तब उसे संतोष देने के लिए क.।

दुनियां में साढ़े तीन दल हैं
चींटी, टीढ़ी और बादल, ये तीन दल कहलाते हैं। आधे में सारी दुनिया है।

दुनियां है और खुशामद
खुशामद से ही आप अपना काम बना सकते हैं और रह सकते हैं।

दुनियां है और मतलब
मतलब के सिवा दुनिया में कुछ नहीं हर आदमी मतलब चाहता है।

दुबला कुनबा, सराप की आस
कि कमज़ोर घर के लोगों को अगर कोई सताए तो उनके पास सिवा कोसने और गाली देने के और कोई सहारा नहीं होता।

दुबले कलावंत की कौन सुने?
ग़रीब गायक का गाना कोई नहीं सुनता। दुर्बल की सब उपेक्षा करते हैं।

दुबले मारे शाह मदार
शाह मदार भी दुर्बल को ही सताते हैं।
(सं.-दैवो दुर्बल घातकः।)

दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम
संशय की स्थिति में होना। दो में से कोई काम न कर पाना।

दुम दबा के भागना
डरपोक कुत्ते की तरह भागना।

दुम में नमदा बांध के चांदनी को सौंप दिया
किसी का मज़ाक उड़ाने के लिए क.।
नमदा=जमाए हुए कंबल या कपड़े का टुकड़ा।

दुरंगी छोड़ दे, एक रंग हो जा।
सरासर मोम हो या संग हो जा।
दुनिया में रहकर दुहरा व्यवहार ठीक नहीं, या तो मोम की तरह नरम होकर रह, या पत्थर की तरह सख़्त।

दुलारी बिटिया, ईंटे का लटकन, (पू.)
बेढंगा शृंगार।
लटकन=कान का एक गहना।

दुशाले में लपेट कर मारना
मीठे शब्दों में डांटना।

दुश्मन की निगाह जूती पर
अर्थात दुश्मन कभी चेहरे की तरफ़ नहीं देखता।
(शायद इस डर से कि कहीं आप उसे जूता उतार कर मार तो नहीं रहे हैं।)

दुश्मन के दिल में जगह करने को हुनर चाहिए
दुश्मन के दिल को जीतने के लिए बड़ी होशियारी चाहिए।

दुश्मन को कम न समझिए
शत्रु की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

दुश्मन के मन का चेता हुआ
दुश्मन जो चाहते थे, वही हुआ।

दुश्मन कौन? कि 'मां का पेट'
सगे भाई के बराबर दुश्मन कोई नहीं।
(संपत्ति के लिए भाइयों में झगड़ा होता है, उसी से अभिप्राय है।)

दुश्मन सोये न सोने दे
स्पष्ट।

दुश्मनों में यूं रहिए, जैसे बत्तीस दांतों में ज़बान
दुश्मनों के बीच संभलकर रहना चाहिए।

दुष्ट न छांड़े दुष्टता, कैसी हू सिख देय।
धोये हू सौ बार के, काजर स्वेत न होय।
स्पष्ट।

दूध का जला, छाछ फूंक-फूंक कर पीता है
एक बार धोखा खाने पर मनुष्य भविष्य के लिए सावधान हो जाता है।

दूध का दूध, पानी का पानी
सही न्याय।

दूध का-सा उबाल है, आया चला गया
बहुत क्रोधी स्वभाव का होना, पर जल्दी शांत भी हो जाना।

दूध की अभी बू आती है
अर्थात अभी तुम्हारा बचपन दूर नहीं हुआ।

दूध की-सी मक्खी निकाल कर फेंक दी
तिरस्कारपूर्वक अलग कर दिया, कोई संबंध नहीं रखा।

दूध के दांत भी अभी नहीं टूटे हैं
अभी तुम लड़के हो।

दूध पूत क़िस्मत से
धन और पुत्र भाग्य से मिलते हैं।

दूध भी धौला, छाछ भी धौली
दो चीजें ऊपर से देखने में भले ही एक-सी हों, पर उनके गुण में अंतर होता है।

दूध में की मक्खी किसने चक्खी?
घृणित की परीक्षा किसने ली? भोजन में अगर मक्खी गिर

जाए तो उस भोजन को ही फिर अलग कर देते हैं।

दूधों नहाओ, पूतों फलो, (स्त्रि.)
आशीर्वाद।

दूर के ढोल सुहावने, (स्त्रि.)
दूर की सब चीजें अच्छी लगती हैं अथवा अच्छी मानी जाती हैं।

दूल्हा के पत्तल न, बजनिए के थार, (पू.)
वास्तव में जिसे मिलना चाहिए, उसे कुछ न मिले और ऊपर वाले उड़ा ले जाएं।

दूल्हा गयल बरात
दूल्हा के चलने पर ही (उसके पीछे) बरात चलती है।

दूल्हा ढाई दिन का बादशाह है
क्योंकि ब्याह में सब तरह से उसकी इज्जत होती है।

दूल्हा दुल्हिन पाय, सहबाला लातें खाय
स्पष्ट।
सहबाला=(शहबाला) वह छोटा लड़का, जो दूल्हे के साथ बरात में जाता है।

दूल्हा दुल्हिन मिल गए, झूटी पड़ी बरात
जो दो आदमी अपने-अपने समर्थकों को लेकर आपस में लड़ रहे हों, पर बाद में उनमें तो आपस में समझौता हो जाए और उनके साथियों को मूर्ख बनना पड़े, तब क.।

दूसरी बात दूसरे कहते हैं
अर्थात दूसरे कुछ कहें, मैं हमेशा सच कहता हूं।

दूसरे का सेंदुर देख अपना लिलाट फोड़े, (पू.)
दूसरे की बढ़ती देख ईर्ष्या करना।

दूसरों का ऐब बड़ी जल्दी देख सकते हैं
पर अपना ऐब कोई नहीं देखता।

देखता है सो कहता नहीं, कहता है सो देखता नहीं
आंख और जीभ पर कहा गया है। आंख देखती है, पर कह नहीं सकती, जीभ कह सकती है, पर देख नहीं सकती।
(तु.—गिरा अनयन नयन बिन बानी।)

देख तिरिया के चाले, सिर मुंडा मुंह काले।
देख मर्दों की फेरी, मां तेरी कि मेरी।
(कथा है कि कोई चालाक औरत बीमारी का बहाना करके लेट गई और अपने पति से बोली कि जब तक तुम अपनी मां को सिर मुड़ाकर गधे पर सवार कराके नहीं लाओगे तब तक मैं अच्छी नहीं हो सकती। पति भी बड़ा होशियार था। वह अपनी ससुराल पहुंचा और सास से बोला कि तुम्हारी लड़की बहुत बीमार है। अब अगर तुम सिर मुड़ाकर और गधे पर सवार होकर उसके सामने पहुंचो तब तो वह अच्छी हो सकती है, अन्यथा नहीं। मां बेचारी सीधी-सादी थी। लड़की की ख़ातिर उससे जैसा कहा गया वैसा ही उसने किया। जब वह उसके दरवाज़े पर आई तो लड़की यह देखकर मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुई कि उसकी चालाकी काम कर गई, और उसने कहावत की प्रारंभ की पंक्ति अपने पति को सुनाई, किंतु जब जवाब में उसके पति ने दूसरी आधी पंक्ति कही, तो वह बहुत निराश हुई और लज्जित होकर रह गई।)
कहावत का कोई विशेष अर्थ नहीं, सिवा इसके कि स्त्री अगर चालाक होती है तो पुरुष भी इस मामले में उससे कम नहीं।

देखती आंखों मक्खी नहीं निगली जाती
देखने-सुनने में बुरा हो, तो जानबूझकर कोई अवांछनीय काम नहीं किया जाता।
दे.—जीती मक्खी नहीं...।

देखन के अतीत हैं, बेस्वा से रहे फंस।
माथे तिलक लगाए हैं, माला गल में दस।
स्पष्ट।
अतीत=संन्यासी; यति; साधु।

देखना सो पेखना, (स्त्रि.)
दोनों एक ही बात हैं।

देखने और सुनने में बड़ा फ़र्क है
सुनी हुई बात झूठ हो सकती है, पर देखी हुई नहीं।

देखने को बुलबुल निगलने को डुमरिया बड़, (पू.)
देखने में दुबला-पतला पर काम में मज़बूत।
डुमरिया बड़=जंगली वटवृक्ष।

देखने में न, सो चखने में क्या?
जो वस्तु देखने में अच्छी नहीं, वह चखने में क्या अच्छी हो सकती है?

देख पड़ोसन जल मरी
ईर्ष्यालु के लिए क.।

देख पराई चूपड़ी गिर पड़ बेईमान।
एक घड़ी की बेहयाई दिन भर का आराम
मुफ्त का माल खाने के लिए मिले तो छोड़ना नहीं चाहिए।

देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जी।
मिस्सी कुस्सी खाय के ठंडा पानी पी।
स्पष्ट।

मिस्सी=चने की रोटी।

देख-भाल के पांव रखना चाहिए

स्पष्ट।

देखादेखी साधे जोग, छीजे काया बाढ़े रोग

दूसरों का ग़लत अनुकरण ठीक नहीं।

देखा न भाला, सदके गई ख़ाला, (स्त्रि.)

विना देखे ही किसी की प्रशंसा करने लग जाना।

सदका=न्योछावर

सदके जाना=न्योछावर होना।

देखा भाला तोपची और चपरा सैयद होय

सव जानते हैं कि वह एक मामूली तोपची है, पर सैयद वना फिरता है।

झूठा बड़प्पन दिखाना।

देखा मोरदाद तेरा रंबा, गाजरों की रेलपेल, रोटियो का चंबा

मियां मीरदाद, तुम्हारे हल की करामात हमने देख ली। गाजरें तो वहुत हुई, पर रोटियों का पता नहीं, अर्थात गेहूं हुए ही नहीं, जिनसे पेट भरता। कहावत का भाव वहुत स्पष्ट नहीं। फेलन ने चंबा का अर्थ 'अभाव' किया है, जो स्पष्ट नहीं है।

देखा शहर बंगाला, दांत लाल, मुंह काला

वंगाली पान वहुत खाते हैं, शायद इसीलिए कहा गया है। पर यह कोरी तुकबंदी है, कोई विशेष अर्थ नहीं जान पड़ता।

देखा सो खाया, न मुंह पांव जोगा, (पू., स्त्रि.)

जो मिला सो खा लिया, मुंह-पांव की ओर नहीं देखा, अर्थात उनके लिए कुछ बचाया नहीं।

देखिए ऊंट किस कल बैठता है?

देखें, अंत में क्या होता है?

(कथा है कि किसी कुम्हार और कुंजड़े ने एक ऊंट किराए पर किया। एक ओर कुम्हार ने अपने मिट्टी के बर्तन लादे और दूसरी ओर कुंजड़े ने अपनी शाक-भाजी। रास्ते में ऊंट ने कुंजड़े की शाक-भाजी पर मुंह मारना शुरू कर दिया। तब यह देखकर कुम्हार खुश हुआ कि उसका कुछ नुकसान नहीं हो सकता, क्योंकि ऊंट बर्तन नहीं खा सकता। इस पर कुंजड़े ने कहा—घबराओ नहीं, देखें कि ऊंट किस करवट बैठता है। जब ठिकाने पर पहुंचे तो ऊंट उसी करवट बैठ गया, जिधर कुम्हार के बर्तन रखे थे। हुआ यह कि बर्तन सब दबकर चकनाचूर हो गए। इससे शिक्षा यह मिलती है कि किसी भी वात का अंतिम परिणाम देखे बिना उसके संबंध में अपना फैसला नहीं देना चाहिए।)

देखिए कसाई की नज़र और खिलाइए सोने का निवाला

बच्चों के लालन-पालन के संबंध में कहा गया है कि उनका ज्यादा लाड़-प्यार नहीं करना चाहिए। उन्हें खूब अच्छा खिलाए-पिलाए, और पहनाए, पर उन पर कड़ी नज़र भी रखनी चाहिए।

देखी ठोक बजा के दुनिया तालिब ज़र की

दुनिया में सभी धन की इच्छा रखते हैं।

देखी तेरी कालपी, बावन पुरा उजाड़

कोरा नाम असलियत कुछ नहीं।

(कालपी उत्तर प्रदेश में जमुना किनारे जालौन जिले का एक पुराना नगर है। यहां मुग़ल जमाने के खंडहर बहुत हैं। उसी से कहावत चली।)

देखी पीर तेरी करामात, (स्त्रि.)

अर्थात कोरा नाम ही नाम, करतूत कुछ नहीं।

देखी राम ! तेरी करतूत, (स्त्रि.)

देख लिया कि तुमने क्या किया?

देखे बौरहया आवे पांचों पीर, (स्त्रि.)

देखने में पागल है, पर पांचों पीर सिर आते हैं, अर्थात वड़ी चालाक है। मुसलमानों के पांच प्रसिद्ध पीर हज़रत मुहम्मद, अली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन। पर इनके अलावा और भी कई पीर हुए हैं। उनमें से किसी भी पांच से यहां आशय है।

देखे को बुड्ढ, काम को आंधी, (स्त्रि.)

देखने में कमज़ोर पर काम में फुर्तीली।

देखे-भाले शेखजी और चिड़ियें सैय्यद होंय

शेख जी को सव जानते हैं कि वे कैसे हैं, पर चिड़ियों को पकड़ने के लिए संत बनते हैं, अर्थात लोगों को अपने जाल में फंसाने के लिए भलमनसाहत का जामा पहनते हैं।

देखे राही, बोले सिपाही

कहीं लूटमार होने पर राहगीर तो खड़ा-खड़ा तमाशा देखता है, पर बोलता तो सिपाही ही है। अर्थात सामने तो हिम्मत वाला ही आता है।

देखो मियां के छंदबंद, फाटा जामा तीन बंद, (स्त्रि.)

कोरे शौक़ीन के लिए क.।

(मियां के जामे में सिर्फ तीन बंद हैं, होने चाहिए आठ या नौ।)

देखो रे, अहरिनियां के डोठा,
छंटलास चावर, परोसलल पीठा, (पू., स्त्रि.)

इस अहीरनी की ढिठाई तो देखो, चावल तो इसने अलग कर लिए और मांड़ परोसा है। चालाक औरत के लिए।

देता भले, न लेता

अहसान करना तो अच्छा, पर किसी का अहसान लेना अच्छा नहीं।

देता भूले, ना लेता, (व्य.)

कर्ज़दार कर्ज़ का रुपया देना भूल जाता है, पर लेने वाला नहीं भूलता।

दे दाल में पानी, पैगा बह चले चौहानी, (पू.)

डालो दाल में इतना पानी कि चारों तरफ धार बह चले।
(1) जब खाने वाले अधिक आ गए हों, और शाक-भाजी कम पड़ रही हो, तब हंसी में।
(2) कंजूस के लिए भी कह सकते हैं।
चौहानी=चोमुहानी।

दे दिलावे, दे दे करे, सो प्रानी भव सागर तरे, (हिं.)

स्पष्ट।
दान के संबंध में कहा गया है।

दे दुआ समधियाने को, नहीं फिरती दो-दो दाने को, (स्त्रि.)

किसी औरत को समधियाने का मुफ़्त का माल मिल गया, इस पर कोई दूसरी औरत मौका पाकर कहती है कि समधियाने की कुशल मनाओ कि जो तुम्हारी माली हालत सुधर गई, नहीं तो अभी भूखों मर जाती।
(औरतें आपसी झगड़ों में प्रायः इस तरह की तानेबाज़ी किया करती हैं।)

दे दे बारूद में आग, किसकी रही और किसकी रह जाएगी?

अर्थात खूब ख़र्च करो, उड़ाओ खाओ, कंजूसी किसलिए?

देना ओर मरना बराबर है

किसी का देनदार होना बड़े अपमान की बात है।

देना थोड़ा, दिलासा बहुत

जो वक्त पर मदद तो कम करे पर बात बहुत, उससे क.।

देना भला न बाप का, बेटी भली न एक।
चलना भला न कोस का, साईं राखे टेक।

किसी का भी कर्ज़दार होना अच्छा नहीं, बेटी एक भी अच्छी नहीं, और एक कोस भी पैदल चलना पड़े, तो यह भी अच्छा नहीं।

देना लेना काम डोम-डाढ़ियों का, मुहब्बत बड़ी चीज है

किसी का लेकर जो नहीं देते हैं, उनकी उक्ति में क.।
(डोम और डाढ़ी राजपूताने की दो छोटी याचक जातियां हैं।)

देनी पड़ी बुनाई और घटा बतावे सूत

जब बुनाई देनी पड़ी, तब कहते हैं 'सूत कम हो गया।' देने में जो हीला-हवाला करे, उसके लिए क.।
(कहावत उस समय की है जब लोग चरखे से सूत कात कर जुलाहों को बुनने के लिए दे दिया करते थे। किसी ने बुनने के लिए सूत दिया, पर जब मज़दूरी देने का वक्त आया, तो यह बताया कि हमारा सूत घट गया।)

देने के नाम तो दरवाज़े के किवाड़ भी नहीं देते

किसी कंजूस या ना-देनदार के लिए कहा गया है कि वह तो देने का नाम ही नहीं जानता। और तो और, घर के किवाड़ भी नहीं देता। यहां देने से मतलब लगाने या भेड़ने से है।

देने वाले से दिलाने वाले को ज्यादा सवाब है

परोपकारी की अपेक्षा परोपकार कराने वाले को अधिक पुण्य मिलता है।

देबी दिन काटें, लोग परचौ मांगे, (हिं.)

देवी दिन काट रही हैं, और लोग उनकी महिमा देखना चाहते हैं।
जब कोई स्वयं विपत्ति में हो, और उससे सहायता मांगी जाए तब क.।

देबी मदार का कौन साथ?

देवी हिंदुओं की है और मदार साहब मुसलमानों के पीर हैं दोनों अनमेल का साथ हो कैसे सकता है?
(कट्टर लोगों का कहना है, जब कि जनता इस तरह के भेदभाव नहीं मानती।)

देर आए दुरुस्त आए

जो काम देर से होता है, वह ठीक होता है।
(फ़ा.—देर आयद दुरुस्त आयद।)

देवता वासना के भूखे हैं, (हिं.)

देवता प्रेम और भक्ति चाहते हैं।

देव न मारे डींग से कुमति देत चढ़ाय

ईश्वर किसी को डंडे से नहीं मारता, मनुष्य की कुबुद्धि ही उसे ले डूबती है।
(डींग का अर्थ फैलन ने 'डंडा' किया है, पर खुल्लम-खुल्ला अथवा 'शेखी' भी उसका अर्थ यहां हो सकता है।)

देवेगा सो पावेगा, बोवेगा सो काटेगा

स्पष्ट।

देस चोरी न, परदेस भीख

ऐसी जगह रहकर, जहां सब लोग जानते हों, चोरी करने की अपेक्षा बाहर जाकर भीख मांगना अच्छा, क्योंकि वहां कोई पहचानेगा नहीं और उसमें शर्म की कोई बात नहीं होगी।

देस चोरी, परदेस भीख

ऐसे आदमी के लिए कहते हैं, जिसका चोरी या भीख के सिवा गुज़र-बसर का और कोई ज़रिया नहीं। घर रहकर वह चोरी करके काम चलाता है, क्योंकि यह काम चुपचाप किया जा सकता है और बाहर जाकर भीख मांगता है, क्योंकि वहां वैसा करने में कोई कठिनाई नहीं।

देस पर चढ़ाव, सिर दुक्खे न पांव

घर आने के लिए कितना ही रास्ता तै करना पड़े, पर न सिर दर्द करता है, न पैर। घर की ममता का प्रमाण।

देसा-देसा चाल, कुला-कुला व्योहार

अपने-अपने देश के रीति-रिवाज और अपने-अपने कुल के व्यवहार अलग-अलग होते हैं।

देसी गधा, पंजाबी रेंक

अपनी रहन-सहन या भाषा छोड़कर जब कोई दूसरे की रहन-सहन या भाषा बरते, तब क.।

देसी गधा, पूर्वी चाल

दे. ऊ.।

देसी घोड़ी मराठी चाल

दे. ऊ.।

देसी मुर्गी, विलायती बोली

दे. ऊ.।

(ऊपर की चारों कहावतों का लगभग एक ही आशय है।)

देह धरे के दंड हैं, (हिं.)

संसार में आकर नाना प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं।

देह में अनेक रोग भरे हैं, (हिं.)

स्पष्ट।

(सं.—शरीरं व्याधि मंदिरम्।)

देह में न लत्ता, लूटे के कलकत्ता, (पू.)

पास में पैसा नहीं, फिर भी कलकत्ते को जाकर लूटेंगे। दुस्साहस।

दैव न मारे डेंग से, कुमति देत चढ़ाय

ईश्वर किसी को डंडे से नहीं मारता। समय बुरा आने पर आदमी की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वही उसे ले डूबती है।

दो आदमियों की गवाही से तो फांसी होती है

तब फिर साधारण मामलों में तो दो मनुष्यों की गवाही या उनकी सलाह मानी ही जानी चाहिए।

दो कसाइयों में गाय मुरदार, (मु.)

दो कसाइयों में तो गाय अपने-आप ही मर जाती है। फिर वह खाने के काम की नहीं रहती। मुसलमानों में ज़िबह किए गए जानवर का मांस ही खाते हैं।

दो खसम की जोरू, चौसर की गोट

जिसका दांव लगा, उसी ने कब्ज़ा कर लिया।

दो घर मुसलमानी, तिसमें भी आनाकानी

मुसलमानों के केवल दो तो घर, और वे भी आपस में लड़ते रहते हैं। सजातीय लोग थोड़े हों और वे भी लड़ें, तब क.।

दो चून के भी बुरे होते हैं

दो का मुकाबला करना मुश्किल होता है।

दो जोरू का खसम, चौसर का पासा

कभी इधर से कभी उधर से ढकेल दिया जाता है।

दो दिल राज़ी, तो क्या करेगा काज़ी? (मु.)

किसी मामले में अगर दोनों पक्ष राजी हैं, तो उसमें फिर कोई कुछ नहीं कर सकता।

दोनों खोये जोगिया, मुद्रा और आदेस, (हिं.)

जोगी ने अपना तिलक-छाप भी खोया और मान-सम्मान भी। जब कोई व्यक्ति अपने धर्म व कर्तव्य से च्युत होकर बदनाम और अपमानित होता है, तब क.।

आदेस=प्रणाम, नमस्कार।

दोनों दीन से गए पांड़े, हलवा मिला न मांड़े

जब कोई आदमी अपने नियतित कर्म को छोड़कर कोई दूसरा काम करने लगता है, और उसमें सफल नहीं हो पाता, साथ ही अपने पहले काम से भी हाथ धो बैठता है, तब क.।

मांड़े=मैदा की बनी एक प्रकार की बहुत पतली रोटी, जो तवे पर ही सेंकी जाती है, आग पर नहीं सिकती।

दोनों बेर जो घूमे फिरे, तीन काल जो खाय।
सदा निरोगी चंग रहे, जो प्रातः उठ नहाय।

स्पष्ट। स्वास्थ्य संबंधी उपदेश।

दोनों वक्त मिले नहीं सीते, सूरज की आंख फूट जायगी, (लो. वि.)

एक अंधविश्वास। संध्या समय सिलाई का काम नहीं करना चाहिए। उससे सूरज अंधा हो जाता है।

दोनों हाथों ताली बजती है
दो आदमियों में जब लड़ाई होती है, तो उसमें किसी एक का अपराध नहीं होता। दोनों दोषी होते हैं।

दोनों हाथों पगड़ी संभालनी पड़ती है
अर्थात उसे कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा है।

दोनों हाथों संभाले नहीं संभलती
इज्ज़त बचाना मुश्किल हो रहा है।
(कहावत में पगड़ी से मतलब है।)

दो प्याले पी तो लें, हरामज़दगी तो पेट में है
दो प्याले (शराब के) पीने में क्या हर्ज है? इस पेट के अंदर तो न जाने कितने ऐब भरे हैं।

दो मुल्लों में मुर्गी हराम, (मु.)
दो आदमियों की बहस से जब कोई काम ही आगे न बढ़ सके, तब क.।
(मुसलमानों में जानवर को खाने के लिए जिबह करते वक्त इस तरह उसकी गरदन पर छुरी फेरते हैं कि उसकी श्वास नली, अन्न नली और रक्त की नाड़ी एक साथ कट जाए। अगर इन तीन में से एक भी कटने से रह जाए, तो उस जानवर के मांस को खाना हलाल या धर्मसंगत नहीं माना जाता। यह काम एक ही आदमी करता है। अब यदि दो मुल्ला एक साथ मुर्गी को ज़िबह करने बैठें, तो यह स्वाभाविक है कि उसकी गर्दन एक ही झटके में नहीं कटेगी और वह खाने के योग्य नहीं मानी जाएगी।)
हराम=विधि विरुद्ध; निषिद्ध।

दो में तीसरा, आंखों में ठींकरा
दो के बीच में तीसरे की उपस्थिति खटकती है।

दो रक़ाबा घोड़ा बख़्शी का दामाद
बख़्शी का दो रक़ाबा घोड़ा क्या है, उनका दामाद है। मतलब, उसके भी ठाट-बाट निराले हैं।
बड़े आदमी की कृपादृष्टि जिस पर हो, उसके लिए क.।

दो लड़ेंगे तो एक गिरेगा भी
स्पष्ट।

दोस्त मिलें खाते, दुश्मन मिलें रोते
एक सहज कामना। आशीर्वाद के रूप में भी क.।

दोस्तों का हिसाब दिल में
स्पष्ट।

दो ही चीज हैं, बेटा या बेटी
जब कोई लड़का होने की उम्मीद कर रहा हो, और उसके लड़की पैदा हो, तब यह कहते हैं कि भई क्या किया जाए...।

दो ही चीज हैं, हार या जीत
जब कोई हार जाए, तब उसके मन को तसल्ली देने के लिए क.।

दौड़कर चलेगा तो गिरेगा
जल्दबाजी करने वाला हानि उठाता है।

दौड़ चले न औंधा गिरे
दे. ऊ.।

दौड़ चले न चौपट गिरे
दे. ऊ.।

दौलत अंधी होती है।
(1) धनी आदमी ग़रीबों का ख्याल नहीं करता।
(2) दौलत यह नहीं देखती कि वह किसके पास रहे और किसके पास न रहे।

दौलत का खेल है
पैसे से चाहे जो कर लो।

दौलत के पर लग गए
देखते-देखते ग़ायब हो गई

दौलत के पांव लग गए।
दे. ऊ.।

दौलत खर्च के वास्ते दी गई है
उसे बंद करके रखना ठीक नहीं।

दौलतमंद की डेवढ़ी को सब सिज़दा करते हैं
रुपए वाले की डेवढ़ी पर सब सिर झुकाते हैं। अर्थात सब उसकी खुशामद करते हैं।

ध

धड़ी धड़ी करके लूटा

अच्छी तरह लूटा, एक पैसा पास नहीं बचने दिया। धड़ी भर का सिर हिला दिया, पैसा भर की जबान न हिलाई गई। जब कोई जवाब में 'हां' या 'ना' करने के लिए केवल सिर हिला देता है और मुंह से कुछ नहीं बोलता, तब क.। (कहावत का प्रयोग प्रायः बच्चों के लिए उस समय होता है, जब वे रूठकर बैठ जाते हैं, और केवल सिर हिलाकर 'हां', 'हूं' करते हैं।)

धधायगा सो बुतायगा, (स्त्रि.)

धधकती आग फौरन बुझ जाती है। जो बहुत जुल्म करता है, उसका विनाश भी जल्दी हो जाता है। अथवा दंभ बहुत दिनों नहीं ठहरता।

धन और गेंद खेल की, दोऊ एक सुभाव।
कर आवत छिन एक में, छिन में कर से जाय।

धन और खेल की गेंद इन दोनों का एक स्वभाव है, कभी हाथ में आ जाते हैं, कभी चले जाते हैं। तात्पर्य, पैसा चलती-फिरती चीज है।

धन का धन गया और मीत की मीत गई

किसी ने अपने मित्र को पैसा उधार दिया। वह वापस नहीं मिला। तब वह मनुष्य कहता है।

मीत=मित्रता।

धन के पंद्रह, मकर के पचीस, चिल्ला जाड़े दिन चालीस

पंद्रह दिन धनु के और पचीस मकर के, यह चालीस दिन खूब कड़ाके की सर्दी पड़ती है। इसी को चिल्ला जाड़ा क.। लगभग 15 दिसंबर से 10 फरवरी तक सूर्य क्रम से धनु और मकर राशि में रहता है।

धन चाहे तो धरम कर, मुक्त चाहे भज राम

स्पष्ट।

धन दे जी को राखिए और जी दे राखे लाज, (नी. वा.)

धन देकर प्राणों की रक्षा करें और प्राण देकर इज्ज़त बचानी चाहिए।

धन नाती हुक्का, पोसाक नाती जुल्फ, (पू.)

धन के नाम केवल हुक्का है और पोशाक के नाम केवल जुल्फें। (बहुत गरीब।)

धन में धन, तीन आंठी सन

नहीं के बराबर।

धनवंती के कांटा लगा, दौड़े लोग हज़ार।
निर्धन गिरा पहाड़ से, कोई न आया कार।

धन के सब हितैषी बनते हैं, निर्धन का कोई नहीं।

धन्ना सेठ के नाती बने हैं

अपने को बहुत बड़ा समझते हैं।

धवले में खाक

लहंगे पर धूल। गाली।

धमकाय पाया बनिया, घर दोड़ सेरी

बनिए को सीधा जानकर उससे सेर की जगह डेढ़ सेर तुलवा लिया। किसी की सिधाई से अनुचित लाभ उठाने पर क.।

धमधूसर काहे मोटा, बंज करे न आवे टोटा

धमधूसर मोटा क्यों? व्यापार नहीं करता, इसलिए टोटे का सवाल नहीं। मतलब, बेफ़िक्र रहता है।

धमधूसर का अर्थ ही मोटा-ताज़ा आदमी है।

धर चल सिर कोल्हू की लाट, मत चल साथ कुचाल के बाट

सिर पर कोल्हू की लाट रखकर भले ही चले, पर बुरे की संगत न करे।

धर जा, मर जा

ऐसे आदमी के लिए क., जो दूसरों की रकम हज़म कर लिया

करता है। वह यही चाहता है कि कोई मनुष्य उसके पास धरोहर रख जाए और मर जाए, तो माल उसका हो जाए।

धरती माता बोझ संभाले

अनाचरी के लिए क.।

धरती की मां सांझ, (हिं.)

संध्या धरती की माता है। दिन के परिश्रम के बाद सबको उसकी गोद में शांति मिलती है।

(यहां धरती का अर्थ धैर्यवान भी हो सकता है।)

धरम की जड़ सदा हरी, (हिं.)

धर्म के मार्ग पर चलने वाला हमेशा फलता-फूलता है।

धरम रहे तो उस्सर में जुरे

ईमानदार और सच्चे आदमी की खेती ऊसर में भी सफल होती है।

धरम हार धन कोई खाय, (हिं.)

(1) बेईमानी से कोई भी पैसा कमा सकता है।

(2) बेईमानी से कोई पैसा नहीं कमा सकता, यह अर्थ भी होता है।

धाओ, जो बिध लिखा सा पाओ, (हिं.)

कितनी ही दौड़धूप करो, मगर मिलेगा वही जो भाग्य में लिखा है। आलसियों की उक्ति।

धाओ, धाओ, करम लिखा सो पाओ, (स्त्रि.)

स्पष्ट। दे. ऊ.।

धान का गांव पुआल से जाना जाता है, (कृ.)

अगर गांव में बहुत पुआल नज़र आए, तो उससे पता चल जाता है कि यहां धान की खेती होती है।

मनुष्य के ऊपरी व्यवहार और रहन-सहन से उसकी स्थिति जानी जाती है।

धान, पान, पनियाव ले, नान्ह जात लतियावले, (कृ.)

धान और पान अच्छी तरह सींचने से और नीच लतियाने से ठीक रहता है।

धान, पान, पानी, कातिक सवाद जानी, (स्त्रि.)

धान, पान और पानी का सवाद कार्तिक में ही मिलता है। कार्तिक में धान पक जाता है, पान में भी कुरकुरापन आ जाता है और पानी भी निर्मल बन जाता है।

धान पान हो रही है

कुम्हला रही है। सुकुमार स्त्री के लिए क.।

धान विचारे भल्ले, जो कूटा, खाया, चल्ले, (पू.)

धान बहुत अच्छी चीज है। कूटा, खाया और अपना रास्ता लिया। व्यंग्य में क.। वास्तव में धान कूटकर भात बनाना इतना आसान नहीं है। कहावत अधूरी है। इसकी कथा है, जिससे कहावत का भाव स्पष्ट होता है।

(किसी जगह दो यात्री ठहरे हुए थे। उनमें से एक के पास सत्तू और दसूरे के पास थोड़े धान थे। जब परस्पर खाने की चर्चा चली, तो पहले ने कहा कि मेरे पास तो सत्तू है, उसको चटपट खाकर यात्रा आरंभ कर दूंगा। दूसरे ने कहा—तुम्हें बहुत देर लगेगी। मेरे पास धान हैं, अभी कूटकर और खाकर चल दूंगा। सत्तू मन भत्तू जब घोलो तब खाओ, धान विचारे भल्ले, कूटा खाया चल्ले। पहला आदमी बहुत सीधा था। दूसरे की बातों में आ गया और धान के साथ अपना सत्तू बदल दिया। तब वह तो सत्तू घोलकर और खा-पीकर चलता बना ओर पहला विचारा धान कूटता ही रह गया।)

धान सूखता है, कौवा टरटराता है, (स्त्रि.)

(1) किसी के चीखने-चिल्लाने से कोई काम नहीं रुकता।

(2) जहां खाने को होता है, वहां मुफ्तखोर इकट्ठे होते हैं।

धावेगा सो पावेगा, (हिं.)

जो मेहनत करेगा उसे मिलेगा।

धिया, ताको कहूं, बहुरिया, तू कान धर

कोई सास अपनी बहू पर रोब जमाने के लिए लड़की और बहू दोनों को डांट रही है कि 'धी' तुझ से भी कहती हूं और बहू तू भी ध्यान से सुन...। आगे के लिए सावधान रह।

धिया पूत के न गाती, विलैया के गाती, (स्त्रि.)

लड़के और लड़की के लिए तो कपड़े नहीं, बिल्ली के लिए कपड़े। बिल्ली से यहां मतलब रखेल औरत से है।

धींगा धींगी, बल्लू का राजा

बहुत अंधेर के लिए क.।

(कहा जाता है बल्लू एक जाट राजा था, जिसके राज में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत चरितार्थ होती थी।)

धींवर के बस परी, (स्त्रि.)

बुरे के हाथ पड़ी हूं। पति के अत्याचार से पीड़ित किसी स्त्री का कथन।

धी छोड़ दामाद प्यारा

(1) लड़की से दामाद प्यारा। उल्टी बात। अथवा (2) यह एक सहज उक्ति भी हो सकती है कि लड़की से दामाद प्यारा होता है। वह लड़के का स्थान ले लेता है।

धी, जंवाई, भानजा, ये तीनों नहिं आपना

क्योंकि विवाह के बाद लड़की पराई हो जाती है, दामाद तो पराया लड़का है ही और भानजे से कोई विशेष संबंध नहीं रहता।

धी न धियाना, आप ही कमाना, आप ही खाना, (स्त्रि.)
उसके न लड़की है न दामाद, जो कुछ कमाता है सो खा लेता है।
खाऊ उड़ाऊ के लिए क.।

धी न धौंकड़, अल्ला मियां का नौकर
(1) मोटे और आलसी मनुष्य के लिए क.।
(2) अलमस्त, फक्कड़ के लिए भी कह सकते हैं।

धी न बेटी, उढ़ल गई समधेरी, (स्त्रि.)
लड़की है ही नहीं, फिर भी यह कहना कि लड़की की ननद घर से निकल गई। एक बेसिर-पैर की बात।

धी पराई, आंख लजाई
(1) बहू जब कोई गलत काम करे, तब क., कि पराई लड़की ने मेरी आंख नीची करवाई।
(2) विवाह हो जाने पर लड़की लज्जाशील बन जाती है।
(3) विवाह कर देने पर लड़की को ससुराल वालों से दबना पड़ता है।

धी बेटी अपने घर भली, (स्त्रि.)
विवाह के बाद लड़की का अपने (पति के) घर रहना ही अच्छा है।

धी मारूं, पुतोह ले त्रास
लड़की को मैं इसलिए पीटती हूं कि बहू पर मेरा रोब जम जाए। किसी सास का कथन।
नए आदमी को यह बताना कि हम बहुत ही टेढ़े स्वभाव के आदमी हैं।

धी मुई, जंवाई चोर, (स्त्रि.)
लड़की मरने पर जंवाई चोर के समान हो जाता है। उसकी फिर कोई क़द्र नहीं रहती।

धीरज, धर्म, मित्र अरु नार।
आपत काल परखिए चार।
धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री इनकी परीक्षा विपत्ति पड़ने पर होती है।

धीरा काम रहमानी, शिताब काज शैतानी
धीमा काम अच्छा और जल्दी का बुरा होता है।

धीरा सो गंभीरा
धैर्यवान गंभीर होता है। किसी काम में जल्दबाज़ी नहीं करता।

धूंधू कार मेह बरस रहा है
खूब जल बरस रहा है।

धूनी पानी का संजोग है, (हिं.)
जब दो अपरिचित व्यक्ति, खासकर दो साधु कहीं मिल जाते हैं, तब क.।

धूप पढ़त जो दायं चलावे, रास नाज वह तुरत उठावे, (कृ.)
धूप पड़ने पर जो दायं करता है, उसे अनाज शीघ्र मिल जाता है।
(कटी हुई फसल से दाना प्राप्त करने के लिए उसे बैलों की सहायता से कुचलने की जो क्रिया की जाती है, उसे दायं चलाना या करना कहते हैं।)

धूप में बाल सफ़ेद नहीं किए हैं
उम्र यों ही नहीं गंवाई है। दुनिया का अनुभव है।

धूल की रस्सी बंटना, (ग्रा.)
असंभव कार्य करने की चेष्टा करना। हवाई-घोड़े दौड़ाना।

धूलकोट का खरबूजा, जैसे मिस्री का कूजा
धूलकोट का खरबूज़ा बहुत मीठा होता है।
(यह धूलकोट दिल्ली के पास तक कछार की भूमि है।)

धेला सिर मुंड़ाई, टका बदलाई
सिर मुंड़ाई का तो अधेला ही देना पड़ा, पर रुपए भुनाई का बट्टा दो पैसा लग गया।
मुख्य काम में तो कम खर्च हो, पर ऊपरी अधिक खर्च हो जाए, तब क.।

धोई-धोई भेड़ी पंके लागी, (पू.)
भेड़ को धो-धाकर साफ किया, पर वह फिर कीचड़ में चली गई। किया-कराया काम फिर चौपट हो गया।

धोके की टट्टी
भ्रम में डालने वाली वस्तु। दिखाऊ वस्तु।

धोती थी दो पांव, धोने पड़े चार पांव, (स्त्रि.)
(1) विवाहित जीवन से ऊबी हुई स्त्री का कहना। पहले तो उसे केवल दो ही पैर धोने पड़ते थे, पर अब दो अपने और दो पति के धोने पड़ते हैं।
(2) किसी ऐसी स्त्री का भी कथन हो सकता है, जिसका पति बहुत आलसी है।

धोती में सब नंगे
अंदर से सब एक से। सब में कुछ-न-कुछ दोष हैं।

धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का
बठिकाने का आदमी।

धोबी का छैला, एक उजला एक मैला
धोबी के लड़के को अपने ग्राहकों के मुफ्त के कपड़े पहनने को मिलते हैं। इसलिए जैसे मिले, वैसे ही पहन लिए, उजले और मैले की कोई परवाह नहीं करता।

धोबी के घर ब्याह, गधे का छुट्टी भेल, (पू.)
धोवी के घर ब्याह होने पर गधे को छुट्टी मिल जाती है। वह भी खुशी मनाता है।

धोबी के ब्याह, गधे के माथे मोर
धोवी के यहां व्याह होने पर गधे की भी इज्ज़त होती है।

धोबी छोड़ सक्का किया, रही ख़िजर के घाट, (स्त्रि.)
धोबी छोड़कर भिश्ती से ब्याह किया, फिर भी पानी से पिंड न छूटा। मुसीबत ज्यों-की-त्यों रही।
(ख़्वाजा ख़िज़र मुसलमानों में पानी के देवता माने जाते हैं।)

धोबी पर धोबी, खेंधड़े में साबुन
(1) कोई धोबी अगर दूसरे धोबी से अपने कपड़े धुलवाए, तो वह वैसा ही जैसे गुदड़ी में साबुन लगाना। अथवा (2) धोबी पर धोबी बदलना, वैसा ही जैसे गुदड़ी...। मतलब घड़ी-घड़ी नौकर बदलना ठीक नहीं।

धोबी पर बस न चला, गधैया के कान मरोड़े
कमज़ोर पर गुस्सा उतारना।

धोबी बेटा चांद-सा, सीटी और पटाक
धोबी का लड़का अपने ग्राहकों के धुले-धुलाए कपड़े पहन कर चांद-सा बना रहता है। उसके पास अपनी दो ही चीजें होती हैं। 'सीटी' और 'पटाक'। धोबी कपड़े धोते समय पत्थर पर पटाक से पछाड़ते हैं, साथ ही सीटी भी बजाते जाते हैं। जो दूसरों के पैसे पर साफ-शौकीन बने फिरते हैं, उनके लिए क.।

धोबी रोवे धुलाई को, मियां रोवें कपड़ों को
धोवी अपनी धुलाई का तकाजा करता है और ग्राहक अपने कपड़ों का। दोनों ही अपनी-अपनी जगह रोते हैं।
(जब दो व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे को अपने नुकसान का कारण बताकर रोएं।)

धोला बाल मौत की निशानी
बाल सफेद होने पर बुढ़ापा आ जाता है, और बुढ़ापा आया तो समझ लो कि मरने के दिन नज़दीक आ गए।

न

नंग धड़ंग

जिसे न किसी का डर हो, न किसी की लाज हो, और चाहे जिसके आड़े आ जाए।

(1) बिल्कुल नंगा। (2) बेशर्म।

नंगा खड़ा उजाड़ में, है कोई कपड़े ले

जिसके पास कुछ है नहीं, उसकी कोई क्या हानि करेगा?

नंगा ख़ुदा से बड़ा

नंगे को किसी बात का भय नहीं होता।

नंगा नाचे फटे क्या

जिसके पास कपड़े ही नहीं उसका फटेगा क्या?

नंगा मादरज़ाद

बिल्कुल नंगा; जैसा पैदा हुआ था, वसा ही।

नंगा साठ रुपए कमाए, तीन पैसे खाए

ऐसे व्यक्ति के लिए क., जिसके घर-गृहस्थी न हो, और उस वजह से आमदनी की अपेक्षा खर्च बहुत कम हो।

नंगी क्या नहाएगी और क्या निचोड़ेगी?

जिसके पास कुछ है ही नहीं, वह क्या अपने पर ख़र्च करेगा और क्या दूसरों पर।

नंगी ने घाट रोका, नहावे न नहाने दे

दूसरों को उसके पास जाने में शर्म लगती है, पर वह निर्लज्ज होकर नहा रही है। बेशर्म से सब घबराते हैं।

नंगी भली कि छींके पांव

नंगी अच्छी या छींके से उल्टे पैरों लटकी अच्छी। दो बुरी चीजों में से कम बुरी चीज ही पसंद की जा सकती है।

नंगी भली कि टेटक मचवा, (स्त्रि.)

नंगी अच्छी या टंटा मचाना।

इसका भाव भी ऊपर की कहावत जैसा ही है।

नंगी हो के काता सूत, बुड्ढी होकर जाया पूत, (स्त्रि.)

यदि पहले ही लड़का जनती तो बुढ़ापे के लिए आराम न हो जाता। समय निकल जाने पर काम करना।

नंगों को भूखों ने लूट लिया

अनहोनी बात।

न ईट डालो, न छींटो भरो

न किसी से बुरा कहोगे न सुनोगे।

नई धोसन और उपलों का तकिया

अटपटा शौक।

नई जवानी मांझा ढीला

स्पष्ट।

नई नाइन और बांस की नहरनी

नहरनी लोहे की होती है। बांस की नहीं। जब कोई नौसिखिया ऊटपटांग ढंग से काम करता है।

नई नागन टंगे पर फन

सांप का बच्चा और फन पूंछ पर।

दे. ऊ.।

नई नौ दाम, पुरानी छः दाम

नई चीज तो महंगी मिलेगी ही।

नई फ़ौजदारी और मुर्गी पर नक्कारा

किसी नए नियम या कायदा-कानून के संबंध में अपना असंतोष—निरादर प्रकट करने के लिए कोई कह रहा है।

नई बहू टाट का लहंगा

दे.—नई भाइन...।

नई बस्ती और अरंडी का फुलेल

नया और ऊटपटांग शौक।

नउवा के घर चोरी भेल, तीन चोंगा बार गेल, (पू.)

नाई के घर चोरी हुई, तीन चोंगा बाल गए। उस के यहां

और रखा क्या था?

नउवा देख ले कांखे बार, (भो.)

नाई को देखकर कांख में बाल हो आए। चीज सामने देखकर उसके उपयोग की इच्छा हो आती है।

नकटा जीवे बुरा हवाल

सब उसकी तरफ उंगली उठाते हैं। नकटा के यहां दो अर्थ हैं (1) जिसकी नाक कटी हो, और (2) जो समाज में बदनाम हो।

नकटा बूचा सबसे ऊंचा

व्यंग्य में ही क.।

बूचा=जिसका कान कटा हो।

नकटी मैया पानी पिला, 'पूता इन्हीं गुनन', (पू., स्त्रि.)

नकटी औरत से किसी ने यह कहकर पानी मांगा कि नकटी मैया पानी पिला। उसने जवाब दिया--बेटा, क्या तुम्हारी इसी तरह की बोली से?

नकटे का खाइए, उकेटे का न खाइए, (स्त्रि.)

बदनाम आदमी के यहां जाकर भले खा लें, पर ओछे के यहां जाकर न खाए। इसलिए कि वह बार-बार खिलाने का अहसान जताएगा।

नकटे की नाक कटी, सवा गज और बढ़ी

बेशर्म के लिए क.।

नकद को छोड़ नफ़े को न दौड़िए

किसी मुनाफ़े के लोभ से गांठ के नक़द पैसे को नहीं छोड़ना चाहिए।

नकद हू हुरमत हू, (अ.)

नकद दो और साख रखो।

न कोई आता था घर में, न कोई जाता था।
न कोई गोद में लेकर मुझे सुलाता था।

(कथा है कि कोई मनुष्य अपनी स्त्री को घर पर छोड़कर विदेश चला गया। उसकी अनुपस्थिति में एक दिन उसके पुत्र ने पूछा--कौन आया था ? स्त्री ने उत्तर दिया--न कोई आया, न कोई गया। पुत्र ने यही समझा कि इसका नाम 'न कोई' है। जब कुछ दिनों बाद वह मनुष्य घर लौटा तो वह लड़के को गोद में लेकर प्यार करने लगा और थपथपाकर सुलाने लगा। लड़के से जब उसने पूछा कि मेरे पीछे तुम्हें इस तरह कौन सुलाता होगा, तो उसने ऊपर की कहावत कही। बाप तो यही समझा कि मेरे लड़के को प्यार करने वाला कोई नहीं था। पर लड़के ने तो असली बात कह ही दी थी।)

नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है?

बड़ों के आगे ग़रीब और असहायों की बात कोई नहीं सुनता।

नक्कारे बाजे दमामे बाज गए

बड़े ढोल भी बज गए और छोटे भी। अर्थात दुनिया में न जाने कितने लोग आए और अपनी तड़क-भड़क दिखाकर चले गए।

नक़्ल रा चे अक़्ल, (फ़ा.)

नक़ल में अक़्ल की क्या ज़रूरत?

नक़्ले कुफ़् कुफ़् न बाशद, (फ़ा.)

काफ़िर की नक़ल करने से कोई काफ़िर नहीं होता।

नख से शिख तक

नीचे से ऊपर तक।

न खुदा ही मिला, न विसाले सनम।
न इधर के हुए, न उधर के हुए।

किसी निराश फ़कीर का कहना।

विसाले सनम=प्रेमी से भेंट।

न गाड़ी भर आशनाई, न जौ भर नाता

मुझे किसी से कोई मतलब नहीं, अथवा मुझे किसी से कोई मतलब नहीं रखना।

न गाय के थन, न किसान के भांड़े

न गाय के थन हैं और न किसान के पास बर्तन।

(जब किसी काम का कोई सिलसिला ही न हो, तब क.।)

न गू में ढेला डालो, न छींटे उड़ें

न बुरा काम करो, न बुराई हाथ लगे।

न जीने की शादी, न मरने का ग़म

किसी ऐसे मनुष्य का कथन, जो दुनिया से उदास है।

नट विद्या पाई जाय, जट विद्या न पाई जाय

जाट बड़े चतुर होते हैं।

(इसकी कथा यों है--एक राजा ने किसी नटनी को वचन दिया कि अगर नट-विद्या में उसे कोई नहीं जीत सकेगा, तो मैं उसे अपना राज दे दूंगा। उस जगह एक देहाती जाट खड़ा था। उसने नटनी के लोहे के दस्ताने हाथों में पहन लिए और झट बांस पर चढ़ गया। ऊपर जाकर उसने चारों ओर घूमकर पेशाब करना शुरू कर दिया। उसका यह तमाशा देखकर नटनी ने हार मान ली और राजा का राज्य भी बच गया।)

न तेल तली, न ऊपर पली, (स्त्रि.)

न नीचे बर्तन में तेल, न ऊपर पली।

जब किसी को बहुत थोड़ी चीज दी जाए।

नदिया, नाव, घाट बहुतेरा, कहैं कबीर नाम के फेरा

चीज एक ही होती है, पर उसके नाम अनेक होते हैं। ईश्वर के लिए कहा गया है।

नदी किनारे रूखड़ा, जब तब होय विनास

खतरे का काम करने वाला कभी भी हानि उठा सकता है।

नदी तू घर्राती क्यों, मैं पांव ही नहीं रखता

किसी का ऐसे व्यक्ति से कहना जो बहुत रोब और घमंड दिखाता है।

नदी नाव संयोग

दो आदमियों का अचानक कहीं मिल जाना।

नदी में जाना और प्यासे आना

साधनों के मौजूद रहते हुए अपने उद्देश्य को पूरा न कर पाना।

न दौड़ चलेंगे, न टस लगेगी, (पू.)

काम धैर्यपूर्वक करना चाहिए।

ननद का ननदोई, गले लाग रोई, (स्त्रि.)

जिससे कोई संबंध ही नहीं, उससे प्रेम दिखाना।

न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी

जब कोई आदमी किसी काम को न करना चाहे, और अपने इस इरादे को छिपाने के लिए किसी ऐसी शर्त पर उसे करने को तैयार हो, जिसे पूरा करना लगभग असंभव हो।

(कहा जाता है कि किसी जगह राधा नाम की एक वेश्या थी, जो नाचने के लिए बहुत प्रसिद्ध हो गई थी। पर वास्तव में उसे उतना अच्छा नाचना नहीं आता था। वह भी इस बात को जानती थी। इसलिए जब कोई उसे नाचने के लिए बुलाता, तो वह यही कहती कि नौ मन तेल के चिराग़ जलाओ, तब नाचूंगी। लोग न नौ मन तेल इकट्ठा कर पाते और न उसका नाच गाना ही हो पाता। कहावत में कृष्ण की राधा से कोई मतलब नहीं। वह केवल एक नाम विशेष है।)

नन्हें होकर रहिये, जैसे नन्हीं दूब

आदमी को विनम्र बनकर रहना चाहिए।

नपूती का घर सूना, मूरख का हृदय सूना, दरिद्री का सब कुछ सूना

स्पष्ट।

नफ़री में झगड़ा क्या?

जो हमें मिलना चाहिए उसमें झगड़ा क्या?

नफ़री=दैनिक वेतन।

नमाज़ छुड़ाने गए थे, रोज़े गले पड़े, (मु.)

दे.–गए थे रोज़ा छुड़ाने...।

(कहा जाता है कि एक बार मुसलमानों ने मूसा पैग़म्बर से कहा कि खुदा से सिफ़ारिश करके पांच वक्त की नमाज़ से छुटकारा कराइए। खुदा मजहब में उनकी ऐसी लापरवाही देखकर बड़े अप्रसन्न हुए और सज़ा के तौर पर उन्हें साल मे एक महीने तक रोज़ा रखने को कहा।)

नमाज़ी का टका, (मु.)

(कथा है कि एक शरारती लड़के को यह आदत पड़ गई थी कि जब कोई मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ता, तो वह पीछे से जाकर उसका पेर पकड़कर घसीट लेता। जब एक बूढ़े नमाज़ी के साथ उसने ऐसा किया, जो उसने लड़के को एक टका दिया। इससे लड़के की हिम्मत बढ़ गई और उसने इस बार एक पठान की टांग पकड़कर खींची। इस पर पठान ने घूमकर उसे ऐसे घूंसे जमाए कि वह वहीं ख़त्म हो गया।)

न मारे मरे, न काटे कटे

घर के ऐसे उद्धत लड़के के लिए क., जिससे लोग परेशान रहते हों।

न मूद बे मूद, (फ़ा.)

कोरी दिखावट, तब कुछ नहीं।

न मैं कहूं तेरी, न तू कहे मेरी, (स्त्रि.)

न मैं तेरी बुराई करूं, न तू मेरी कर।

न मैं जलाऊं तेरी, न तू जला मेरी, (स्त्रि.)

न मैं तेरा नुकसान करूं, न तू मेरा कर। यहां जलाने से मतलब लकड़ी जलाने से भी हो सकता है और छाती जलाने से भी।

नया अतीत, पेडू पर अलाव, (हिं.)

जब कोई नौसिखिया ऊटपटांग ढंग से काम करता है, अथवा किसी बेतुकी चीज से काम लेता है, तब क.।

(साधु लोग सहारे के लिए काठ का एक साधन बनाकर रखते हैं, जिसे बैरागिन कहते हैं। वे उस पर हाथ रखकर एक ही आसन से दिन भर बैठे रहते हैं और थकते नहीं। अब अगर इस 'बैरागिन' को कोई पेडू का सहारा देकर बैठे तो उससे वह और थक जाएगा।)

यहां अलाव का अर्थ आग के लिए इकट्ठा किया गया ईंधन भी हो सकता है।

अतीत=साधु।

नया चिकनिया रेंड़ी का कुलेल, (स्त्रि.)
दे. ऊ.।

नया जोगी और गाजर का शंख, (हिं.)
दे.—नया अतीत...।

नया दाना, नया पानी
मालिक के बदल जाने अथवा नई नौकरी कर लेने पर क.।

नया-नया राज, ढब-ढब बाज, (पू.)
जब कोई नया हाकिम, या अधिकारी नई बातें चलाता है, तब व्यंग्य में क.।

नया-नया राज भेल, गगरिल अनाज भेल
नया राज होने पर घड़े अनाज से भर जाते हैं। लोगों को नई नौकरियां मिलती हैं।

नया नौकर मारे हिरना
वह अपनी मुस्तैदी दिखाने के लिए ऐसा करता है।

नया नौकर शेर मारे
दे. ऊ.।

नया नौ गंडा, पुराना छः गंडा, (पू.)
पुरानी की अपेक्षा नई चीज महंगी होती है, अथवा नई की क़द्र अधिक होती है।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन
नई चीज तो थोड़े दिनों ही रहती है। पुरानी पर ही निर्भर करना चाहिए।

नया हकीम, दे अफ़ीम
अनाड़ी हकीम की दया का विश्वास नहीं करना चाहिए। वह कभी ज़हर भी खाने को दे सकता है।

नए नमाज़ी, बोरिए का तहमद, (मु.)
दे.—नया जोगी...।

नए-नए हाकिम, नई-नई बातें
जब हाक़िम नए होते हैं, तो नए-नए कानून भी बनते हैं।

नए नवाब, आसमान पर दिमाग़
नया आदमी थोड़ी भी प्रतिभा पाकर इतराने लगता है।

नए बावर्ची, साग में शोरवा
(1) नयापन दिखाना। अथवा
(2) फूहड़पन के लिए भी कह सकते हैं।

नए सिपाही, मूंछ में ढांटा
बेतुका काम। ढांटा दाढ़ी में बांधा जाता है, जिससे वह बिखरती नहीं।

न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी
जिस वस्तु के रहने से कष्ट होता हो, उसे जड़ से ही नष्ट कर देना चाहिए।
(कहावत में संकेत कृष्ण की बांसुरी की ओर है। गोपियां कृष्ण की बांसुरी को सुनकर इतनी अधिक प्रेम-विह्वल हो उठती थीं कि वे कहने लगती थीं कि उस बांस को ही यदि नष्ट कर दिया जाए, जिससे यह बांसुरी बनती है, तो न उसका स्वर हमें सुनने को मिलेगा और न हमारे हृदय में प्रेम की यह हूक उठेगी। गोपियों के प्रेम का वर्णन करते समय कई हिन्दी कवियों ने इस तरह की बात उनके मुख से कहलाई है।)

न रहे मान, न रहे मानी, आख़िर दुनिया फनाफनी, (मु.)
संसार की नश्वरता पर कहा गया है।

नर्म चोबरा किर्म मी खुरद, (फ़ा.)
नर्म काठ को कीड़े खा जाते हैं। बहुत सीधा होना अच्छा नहीं।

नल का मारा नलवा टूटे
मामूली सरकंडे की चोट से पिंडली टूट जाती है। या रक्त बहने लगता है। साधारण कारण से ही कभी-कभी भारी हानि हो जाती है।

नशा उसने पिया, ख़ुमार तुम्हें चढ़ा
जब कोई आदमी किसी उच्च स्थान पर पहुंच जाए और उसके सगे-संबंधी अपने को वैसा ही बड़ा समझने लगें, तब क.।

न सांप मरे, न लाठी टूटे
काम भी हो जाए और दोनों ओर से कोई हानि भी न हो। आपसी समझौता।

न सूप दूसे जोग, न चलनी सराहे जोग (स्त्रि.)
न सूप की बुराई की जा सकती है, और न चलनी की सराहना। दोनों एक से।
(सूप में भी छेद होते हैं, और चलनी में भी।)

नाई की बरात में सब ही ठाकुर
नाई सबकी बरात में सेवा-टहल करते हैं, पर उनकी बरात में यह कौन करे। जहां सभी अपने को बराबर समझें और कोई छोटा अथवा परिश्रम का काम न करना चाहे, वहां क.। यहां ठाकुर से मतलब बड़े आदमी से है।

नाई, दाई, बैद, कसाई, इनका सूतक कभी न जाई, (हिं.)
इन चार का अशौच कभी नहीं जाता, क्योंकि नाई का मृतक से हमेशा काम पड़ता है, दाई बच्चा जनाती है, बैद का कोई-न-कोई रोगी मरता रहता है और कसाई तो ढोरों का वध करता ही है।

नाई, नाई, बाल कितने? जिजमान आगे ही आते हैं
जो बात स्वयं ही सामने आने वाली हो उसके विषय में किसी से कुछ पूछने की क्या आवश्यकता?

नाई सबके पांव धोये, अपने धोते लजाये
अपना काम अपने हाथ से करने में लोगों को शर्म लगती है, उसी पर क. कही गई है।

नाऊ की-सी आरसी, हर काहू के पास
ऐसी वस्तु जिसका उपयोग हर कोई करे।

नाक कटी बला से, दुश्मन की बद-सगुनी तो हुई
ऐसे व्यक्ति के लिए क., जो अपना नुकसान करके इसलिए ख़ुश होता है कि उससे दूसरों की भी हानि होने वाली है।

नाक कटी मुबारक, कान कटे सलामत, (स्त्रि.)
निर्लज्ज के लिए क.।

नाक के बाल हो रहे हैं
घनिष्ठ मित्र बने हैं।

नाक तो कटी, पर वह खूब ही में मरी
कोई बदनाम ओरत नेकनामी के साथ मरी, उसी पर कहा गया है।
खूब ही=अच्छाई के साथ।

नाक दे, या नहरनी दे
किसी को असमंजस में डालना।

नाक पकड़े दम निकलता है
बहुत कमज़ोर, अथवा सुकुमार।

नाक पर दिया बालकर आए हैं
अर्थात बहुत देर करके आए हैं। रात में आ हैं।

नाक पर सुपाड़ी तोड़ती हैं, (स्त्रि.)
बड़ी तुनुक मिजाज़ है।

नाक हो तो नथिया सोभे, (स्त्रि.)
नथ पहनने को भी अच्छी नाक चाहिए।

नाकों चने चबवाना
बहुत परेशान करना।

नाख़लफ़ बेटे से बेटी भली
अकर्मण्य लड़के से तो लड़की भली।

नाचत आन भेई ना, आंगन बांकड़े,
रांधना भेई ना, ओली लांकड़े, (पू.)
नाचना आता नहीं, आंगन टेढ़ा। रसोई बनाना जानती नहीं, लकड़ी गीली।
(जब कोई आदमी किसी काम को करना न जाने, पर अपनी कमज़ोरी को छिपाने के लिए साधनों को दोष दे।)

नाच न सकूं, आंगन टेढ़ा, (स्त्रि.)
दे. ऊ.।
प्र. पा.—नाच न जाने आंगन टेढ़ा।

नाचने निकली तो घूंघट क्या? (स्त्रि.)
जब किसी काम को करने ही बैठे, तो उसे अच्छी तरह करना चाहिए। उसमें शर्म क्या?

नाचे-कूदे तोड़े तान, वाका दुनिया राखे मान
जो बहुत उछल-कूद मचाते हैं, यानी आत्मविज्ञापन करते हैं, दुनिया उनकी ही इज्ज़त करती है। सीधे को कोई नहीं पूछता।

नाचे-कूदे बानरा, मेरे माल मदारी खायें
परिश्रम कोई करे और मज़ा कोई उड़ाए, तब क.।

नाचेगा सो पावेगा
(1) जो दौड़ धूप करेगा, उसे ही मिलेगा। अथवा (2) जो ख़ुशामद करेगा, वही पाएगा।

नाचे बामन, देखे धोबी
समाज की उल्टी रीति।

नाट का बच्चा तो कलाबाज़ी ही करेगा
(1) वंश या जाति का प्रभाव प्रकट होकर रहता है।
(2) बाप दादे जैसा करते रहे लड़के भी वैसा ही करेंगे।
नाट=नट।

नाटा सबसे टांटा
(1) नाटा सबसे मजबूत होता है।
(2) नाटा सबसे टंटा या झगड़ा करता है।

नाड़ी की कुछ सुरत नहीं है, दवा सभों की करते हैं।
वैदों का क्या जाता है, बीमार बेचारे मरते हैं।
स्पष्ट। अनाड़ी वैद्यों पर।

नात का न गोत का, बांटा मांगे पांथ का, (ग्रा.)
न नाते का, न गोत का, फिर भी पैतृक संपत्ति में हिस्सा बंटाना चाहता है।
अनुचित या बेतुकी मांग पर।

नाता न गोता, खड़ा होकर रोता, (स्त्रि.)
बेमतलब हस्तक्षेप करने वालों पर क.।

नातिन सिखावे आजी को कि बारह ड्योढ़े आठ, (पू., स्त्रि.)
छोटे का बड़े को सीख देना।
आजी=दादी; पिता की मां।

नादान की दोस्ती जी का ज़ियान
मूर्ख की मित्रता प्राणलेवा होती है।

नादान दोस्त से दाना दुश्मन भला
मूर्ख मित्र की अपेक्षा ज्ञानवान शत्रु अच्छा।
नादान बात करे, दाना क़यास करे
मूर्ख कोरी बात करता है, ज्ञानी सोचता है।
नानक नन्हा हो रही, जैसी नन्हीं दूब।
पेड़ बड़े गिर जायेंगे, दूब खूब की खूब।
नम्र होकर रहें। बड़े पेड़ तो गिर जाते हैं, पर दूब जो नीचे होती है, हमेशा हरी बनी रहती है।
नान चुक देवता, तिलक उराय ले, (पू.)
नन्हें से देवता, तिलक लगने में ही खत्म हो गए। किसी का झूठमूठ का आदर-सम्मान किए जाने पर कहावत।
नाना की दौलत पर नवासा ऐंड़ा फिरे
दूसरे के धन पर ऐंठना।
नवासा=बेटी का लड़का।
नाना के टुकड़े खावे, दादा का पोता कहावे
किसी काम का श्रेय जिसे मिलना चाहिए, उसे न मिलकर किसी दूसरे को मिलना।
नानी के आगे ननसार की बातें, (स्त्रि.)
जो अपने से अधिक जानता है, उसके आगे ज्ञानवान बनना।
नानी खसम करे, नवासा चट्टी भरे, (स्त्रि.)
नानी ने खसम किया और नवासा को (बिरादरी में) उसका दंड भरना पड़ा। किसी की भूल का कोई प्रायश्चित करे।
नानी तो क्वांरी ही मर गई और नवासे से साढ़े सत्रह बान
जब कोई छोटा आदमी यकायक धनी बनकर ऐंठ दिखाने लगे, तब उसके लिए क.।
(बान विवाह के समय का एक दस्तूर होता है, जिसमें वर और कन्या को स्नान कराया जाता है। कहावत का अभिप्राय यह है कि नानी ने तो विवाह का स्नान किया ही नहीं और नवासे के एक-दो नहीं, साढ़े सत्रह स्नान हो रहे हैं।)
नानी मरी, नाता टूटा
नानी का दोहते पर बड़ा प्रेम होता है।
नाप न तोल, भर दे झोल
अपने मतलब की कहना, नापो-तोलो नहीं; हमारा झोला भर दो।
नापे सौ गज, फाड़े न एक गज
ऐसे मनुष्य के लिए क., जो हमेशा वादा करता रहे, पर पूरा न करे।
नाम इमरत, पिलाए विष
देखने-सुनने में अच्छा पर व्यवहार में विपरीत।
नाम की नन्हीं, उठा ले जाय धन्नी
अर्थात देखने में छोटी है पर बड़ी चालाक।
नन्हीं=छोटी।
धन्नी=कड़ी; शहतीर।
नाम के बाबा जी, करनी छावर
नाम तो बड़ा पर करनी कुछ नहीं।
छावर=ख़ाक।
'नाम क्या?' 'शकरपारा', 'रोटी कितनी खाई?'
'दस बारा'; 'पानी कितना पिये?' 'मटका सारा'–
काम करने को लड़का बिचारा; (स्त्रि.)
छोटे लड़कों से हंसी में ही क.।
नाम बड़ा ऊंचा, कान दोनों बूंचा, (पू.)
स्पष्ट। इसे तुकबंदी ही समझना चाहिए।
नाम बड़ा और दर्शन थोड़े
जब किसी में उसकी ख्याति के अनुसार गुण न पाए जाएं, तब क.।
नाम बड़ा या दाम?
धन की अपेक्षा कीर्ति बड़ी चीज है।
नाम बसंती, मुंह कूकुर-सा, (स्त्रि.)
नाम के अनुसार गुण न होना।
नाम मेरा, गांव तेरा
किसी ऐसे व्यक्ति का कहना, जो दूसरे की संपत्ति से लाभ उठाना चाहता है।
नाम लेवा न पानी देवा
संतानहीन के लिए क.।
पानी देवा=पितरों का श्राद्ध कर्म करने वाला।
नामी साह कमा खाये, नामी चोर मारा जाए
कहीं नाम हो जाने से लाभ होता है, कहीं हानि। अथवा जब कोई आदमी एक बार बदनाम हो जाता है, तो लोग उसे ही पकड़ते हैं।
(साह का नाम हो जाए, तो उसका लाभ होता है, लेकिन चोर बदनाम हो जाए तो पकड़ा जाता है।)
नाम हीरामल, दमक कंकड़-सी भी नहीं
नाम के विपरीत गुण।
नाम के अनुसार गुण नहीं।
नार ने निकाला दंत, मर्द ने ताड़ा अंत
स्त्री हंसी नहीं कि पुरुष उसका मतलब समझ लेता है।

नार सुलक्खनी कुटुम छकावे, आप तले की खुरचन खावे, (स्त्रि.)

अच्छी स्त्रियां परिवार के लोगों को भरपेट खिलाती हैं, और स्वयं बचाखुचा खाकर ही संतुष्ट रहती हैं।

सुलक्खनी=सुलक्षणी।

नारियल में पानी, नहीं जानते खट्टा कि मीठा

संदेहजनक की स्थिति के लिए क.।

नारी के बस भये गुसाईं, नाचत हैं मर्कट की नाई

स्त्रियों के वश होकर पुरुष बंदर की तरह नाचा करते हैं।

इसका शुद्ध रूप है–

नारि विवश कर सकल गुसाईं।

नाचहि नर मर्कट की नाईं।

नाले मुंज बगड़, नाले देवी दा दर्शन, (पं.)

नाले के किनारे मूंज और बगड़ भी मिलेगी और देवी के दर्शन भी होंगे। एक पंथ दो काज।

(मूंज और बगड़ घास की किस्में हैं, जो रस्सी बनाने के काम आती हैं। ये घासें नदी-नाले के किनारे ही होती हैं, जहां प्रायः देवी-देवताओं के मंदिर भी बने होते हैं।)

नालैन, तहतुलऐन, (अ.)

अपने जूते अपनी नज़र के सामने रखो। नहीं तो वे चोरी चले जाएंगे।

नाव किसने डुबाई? ख़्वाजा ख़िजर ने

अपनी करनी का दोष दूसरे के सिर मढ़ना। ख़्वाजा ख़िज़र मुसलमानों में बाढ़ और जल के देवता माने जाते हैं।

नाहक डंड, पुत्र का सोग, नित उठ पंथ चलें जो लोग
जिन वृद्धा में मर गई नारी, बिन आगो ये जर गये धारी

जिसे समाज ने निरपराध दंड दिया हो, जिसे पुत्र का शोक हो, जिसे नित्य (अपने धंधे से) पैदल चलना पड़े और वृद्धावस्था में जिसकी स्त्री मर गई हो, ये चारों बिना अग्नि के ही (चिंता की आग में) जलते रहते हैं।

निकली हलक़ से, चढ़ी ख़लक़ से

बात मुंह से निकलते ही दुनिया में फैल जाती है।

निकली होठों, चढ़ो कोठों

दे. ऊ.।

निकसो चंदा, तो अंधेरो भयो मंदा

सच के आगे झूठ नहीं टिकता।

निकाह की शर्त करना

ऐसी शर्त रखना कि समझौता मुश्किल से हो पाए।

निकाही न ब्याही, मुंडो बहू कहां से आई, (नु.)

न निकाह हुआ, न विवाह; फिर यह मुंडी बहू कहां से आ गई? झूठ-मूठ का रिश्ता जोड़ना।

निकाह=मुसलमानी प्रथा से किया गया ब्याह।

निकौड़िया गए हाट, ककड़ो देखे जियरा फाट, (पू.)

इसलिए कि खरीदने के लिए पैसा नहीं था।

निकौड़िया=बिना कौड़ी का; जिसकी जेब खाली हो।

जियरा=जी; हृदय।

निखट्टू आवे लड़ता, कमाऊ आवे डरता, (स्त्रि.)

निकम्मा आकर लड़ता है, कमाऊ शांत और विनम्र रहता है।

स्त्रियां प्रायः अपने अकर्मण्य पति के लिए कहती हैं।

निचंट सोवे हेरू, जिसे गाय न गेरू

हेरू बेफ़िक्र सोता है, क्योंकि उसके पास न गाय है; न बछड़ा।

निचंट=निश्चिंत।

निठल्ला बनिया पत्थर तोले

बनिया कभी खाली नहीं बैठता, वह कुछ-न-कुछ करता रहता है। जब कोई बेमतलब का काम करता है, तब यह क. कहते हैं।

नित खोदना, नित पानी पीना

रोज़ कमाना, रोज़ खाना। कठिनाई में जीवन व्यतीत करना।

निन्नानवे के फेर में पड़ गए

(1) घर-गृहस्थी की चिंता में पड़ जाना।

(2) गहरे असमंजस में पड़ना।

(कथा है कि दो बहनें थीं। एक का विवाह धनी के साथ हुआ, दूसरी का ग़रीब के साथ। जो ग़रीब थी उसने अपनी बहन से सहायता मांगी। उसने निन्नानवे रुपए उसे दिए। वह यद्यपि ग़रीब थी, पर अभी तक बहुत संतोषपूर्वक रहती थी। पर निन्नानवे रुपए देखकर वह पूरे सौ रुपए करने की फ़िक्र में पड़ गई और इस प्रकार उसका कष्ट और बढ़ गया। उपदेश निकला कि धन से संतोष अच्छा। (2) इसी प्रकार की एक दूसरी कहानी है। किसी शहर में एक पुरुष और उसकी स्त्री दोनों रहते थे। वे बड़े ग़रीब थे और चार पैसे रोज़ में अपनी गुज़र करते थे। फिर भी वे बड़े संतोषी थे, और उनका जीवन सुखपूर्वक बीतता था। उसकी एक भावज थी, जो बहुत धनाढ्य थी। उससे उनका सुख नहीं देखा गया, और उनको कष्ट पहुंचाने के लिए एक दिन उसने निन्नानवे रुपए एक थैली में रखकर

उनके घर में फेंक दिए। वे बेचारे कठिनाई में तो रहते ही थे। रुपए देखकर बड़े खुश हुए। गिने तो निन्नानवे थे। अब उन्हें इस बात की फ़िक्र हुई कि किसी प्रकार सौ पूरे करें। उन्होंने अपने ख़र्चे में से एक पैसा रोज़ बचाना शुरू कर दिया। इस प्रकार जब पूरे सौ हो गए, तो उन्होंने सोचा कि अगर वे केवल दो पैसे रोज़ में अपना ख़र्चा चलाएं तो कुछ दिनों में इसके दूने हो जाएंगे। उन्होंने वैसा ही करना शुरू कर दिया। ज्यों-ज्यों उनके पास पैसा बढ़ता गया, त्यों-त्यों उनकी चिंता और लालच भी बढ़ता गया। कुछ दिनों में वे बड़े दुर्बल हो गए और उनकी सुख-शांति सदा के लिए बिदा हो गई।)

निपूती का घर सूना, मूरख का हिरदा सूना, दलिद्री का सब कुछ सूना

स्पष्ट।

हिरदा=हृदय।

दलिद्री=(1) दरिद्र। (2) कंजूस।

निपूती के मुंह देख ले साथ उपास, (स्त्रि.)

लोक-विश्वास। वांझ का मुंह सुवह-सुबह देखना बुरा समझा जाता है।

नियारे चूल्हे बलबल जाऊं, सारा खाती, आधा खाऊं, (स्त्रि.)

कोई बहू सास से अलग हो गई है, अलग अपना भोजन बनाती है और कहती है—ऐ न्यारे चूल्हे, मैं तुझ पर न्यौछावर हूं। पहले सास जो कुछ देती थी, वह सब खा लेती थी, फिर भी पेट नहीं भरता था, पर अब मैं इतना अधिक बनाती हूं कि आधा खाती हूं और आधा बचाकर रख लेती हूं।

निर्धन के धन गिरधारी

ग़रीब के सहायक भगवान हैं।

निस दिन खाना, काम को असकताना

कामचोर के लिए क.।

असकताना=आलस्य करना।

निहंग लाड़ला सदा सुखी

स्वच्छंद आदमी हमेशा ही सुखी।

(निहंग लाड़ला ऐसे लड़के को कहते हैं, जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत उद्दंड हो गया हो।)

निहंग=अकेला।

नीक-नीक मोरे भाग, एक-एक मछलिया की दो-दो मछलिया, (स्त्रि.)

मैं कितना खुशकिस्मत हूं, एक ही जगह मुझे दो मछलियां मिल गईं।

(कोई व्यक्ति आशा से अधिक मिल जाने पर अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहा है।)

नीच जात, एक न एक उदमाद

ओछे आदमी एक-न-एक उत्पात करते रहते हैं।

उदमाद=उत्पात।

नीच जातों में अब भी बड़ा एका है

स्पष्ट।

नीचन कूटन, देवन पूजन

(1) ओछा आदमी पिटने से और देवता पूजने से ठीक रहते हैं।

(2) ओछे आदमी पिटते हैं, बड़ों की पूजा की जाती है।

नीच न छोड़े निचाई, नीम न छोड़े तिताई

स्पष्ट।

नीच हंसे, हुलसे रहें, लिए गेंद को पोत।
ज्यों-ज्यों माथे मारिये, त्यों-त्यों ऊंचे होत। (विहारी)

नीच मनुष्य गेंद के स्वभाव को धारण किए हुए प्रसन्न रहते हैं ज्यों-ज्यों वे माथे पर मारे जाते हैं (अपने सिर पर चोट खाते हैं), त्यों-त्यों ऊंचे होते हैं (अपने को श्रेष्ठ समझते हैं)।

(हंसे के स्थान पर शुद्ध पाठ 'हिये' है।)

नीचे से जड़ काटना, ऊपर से पानी देना

ऊपर से भले बनकर भीतर-ही-भीतर हानि पहुंचाना।

नीम न मीठा होय, सींच गुड़ ध्यु से।
जाकौ जीन सुभाव जाय नहिं ज्यु से।

जव कोई बहुत समझाने पर भी वात नहीं मानता।

नीम हकीम ख़तरा-ए-जान।
नीम मुल्ला ख़तरा-ए-ईमान। (फ़ा.)

थोड़ा ज्ञान बहुत हानिकर होता है।

नीयत साबित मंज़िल आसान, (पु.)

जिसकी नीयत अच्छी होती है, उसके सब काम बनते हैं।

नीलकंठ कीड़ा भखें, मुखहिं बिराजें राम।
खोट कपट क्या देखिए दर्शन से है काम।

स्पष्ट। नीलकंठ पक्षी के दर्शन शुभ माने जाते हैं। विजयादशमी के लिए प्रातःकाल विशेष रूप से लोग उसके दर्शनों के लिए बाग-बगीचे छानते फिरते हैं।

नील का टीका, कोढ़ का दाग

ये कभी नहीं छूटते।

नील का टीका लगना=मु.; चरित्र में लगा धब्बा।

कलंक लगाना।

नील का माठ बिगड़ा है।

जब कोई पूरे का पूरा काम नष्ट हो जाए तब क.। *(पुराने जमाने में जब रासायनिक रंगों का आविष्कार नहीं हुआ था, नीला रंग नील से बनता था। इसके लिए नील की जड़ों और डंठलों को काटकर हौज़ में सड़ाते थे। यही नील का माठ कहलाता था। कभी-कभी बिगड़ जाता था, और तब डंठलों और जड़ों से रंग नहीं उतरता था।)*

नीलटांस जिस सिर मंडरावे, मुकट पती सूं लाभ पावे

जिसके सिर पर नीलकंठ पक्षी घूम जाए, उसे राजा से धन-सम्मान मिलता है। *लोक-विश्वास।*

नूनवाले का नून गिरा, उसे उठा लिया।
तेलवाले का तेल गिरा, तो क्या उटा लेगा?

स्पष्ट।

नून वाले का नून गिरा दूना हुआ,
तेली का तेल गिरा ऊना हुआ

नमक वाले का नमक जमीन पर गिरे, तो वह वज़न में दुगुना हो जाएगा, क्योंकि उसमें धूल मिल जाएगी। तेली का तेल गिरे, तो वह कम हो जाएगा, क्योंकि सब उठाया नहीं जा सकेगा।

नेक अंदर बद, बद अंदर नेक, (मु.)

अच्छे आदमी में भी कुछ-न-कुछ बुराई ओर बुरे में भी कुछ-न-कुछ अच्छाई होती है।

नेक नाम बनिया, बदनाम चोर

वाणिज्य करने वाले की साख होती है, चो· की नहीं।

नेक बात का पूछना क्या?

स्पष्ट।

नेकी और पूछ-पूछ

भलाई करने में क्या पूछना। कोई भलाई करना चाहे तो उसे पूछने की क्या जरूरत है?

नेकी कर और दरिया में डाल

किसी का उपकार करके उसे भूल जाना चाहिए।

नेकी करने वाले को नेकी का मज़ा और मूजी को टक्कर का

भले को भलाई का मज़ा मिलता है और बुरे को बुराई का, वह पिटता है।

नेकी करो खुदा से पाओ

भलाई का बदला ईश्वर देता है।

नेकी का बदला बदी

किसी को भलाई का बदला बुराई से दिया जाए, तब क.।

नेकी की जड़ पत्ताल में

भलाई का फल हमेशा मिलता रहता है।

नेकी बर्बाद, गुनाह लाज़िम, (मु.)

नेकी तो चूल्हे-भाड़ में गई, उसके बदले बुराई मिली। *(दे.—व्याख्या के लिए नेकी का बदला बदी।)*

नेकी ही रह जाती है

मनुष्य मर जाता है, पर उसके अच्छे काम जीवित रहते हैं।

नेमी पांडे कमर में जटा

ढोंगी के लिए, क.।

नेमी=नियम से रहने वाले।

नेवतल ब्राह्मण शत्रु बराबर, (पू.)

ब्राह्मण को न्योता दिया और मानो घर में शत्रु बुला लिया। ब्राह्मण बहुत खाने के लिए बदनाम हैं।

नेस्ती में बरखुरदारी

· ग़रीबी में बच्चों का पालन-पोषण एक कठिन काम हो जाता है।

नैन छुपाए न छुपें, पट घूंघट की ओट।
चतुर नार उर सूरमा, करें लाख में चोट।

स्पष्ट।

नैनन को नेह न टूटे, जैसे बेल बिरछ को लिपटे, सूख जाय ना छूटे

स्पष्ट।

बेल=लता।

बिरछ=वृक्ष।

नैना तोहे पटक दूं, टूक-टूक है जाय।
पहले नेह लगाय के, पाछे अलग है जाय।

स्पष्ट।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी, भली-बुरी कह देत।

स्पष्ट

नौ कनौजिया और नब्बे चूल्हे

कान्यकुब्ज ब्राह्मण बहुत छूतछात मानते हैं। उसी पर व्यंग्य में क.।

नौकर आगे चाकर, चाकर आगे कूकर

नौकर का नौकर कुत्ते के समान होता है।

नौकर को चाकर, मड़ई को उसारा, (पू.)

नौकर का नौकर वैसा ही, जैसे झोंपड़ी में बरामदा। शोभा नहीं देते अथवा व्यर्थ होते हैं।

नौकर लाट कपूर के, होंठ मलें और हक़ लें

लाट कपूर के नौकर ज़बर्दस्ती हक लेते हैं। किसी ढीठ याचक का कथन।

(अकबर के समय में लाट कपूर एक प्रसिद्ध गायक हो गए हैं। जब वह किसी अमीर के यहां गाने जाते और उनको कोई इनाम देता और सम्मानपूर्वक यह कहता कि यह आपके नौकरों के लिए है, तो उनके नौकर तुरंत सामने आ जाते और यह कहकर उनके हाथ से वह रकम ले लेते कि यह तो हमें दी गई है।)

नौकरी अरंड की जड़

नौकरी का कुछ ठिकाना नहीं रहता, कब छूट जाए। अरंड वृक्ष की जड़ बहुत कमजोर होती है।

नौकरी की जड़ ज़बान पर

दे. ऊ.।

नौकरी ताड़ की छांव

नौकरी का बहुत कम आसरा करना चाहिए।

नौकरी नित नई

(1) रोज़ कुछ-न-कुछ नया काम करना पड़ता है। अथवा (2) कब नया मालिक आ जाए, इसका कुछ ठीक नहीं रहता।

नौकरी पेशे का घर क्या? कभी यहां कभी वहां

नौकरी में आदमी को मारा-मारा फिरना पड़ता है।

नौकरी है या भाई बंदी

नौकर जब ठीक तौर पर काम न करे, तब क.।

नौ की लकड़ी, नब्बे ढुलाई

जितने का काम नहीं, उस पर उतने से अधिक खर्च हो जाना।

नौ कूंड़े और दस नेगी, (पू.)

जितनी चीज नहीं, उससे अधिक मांगने वाले। *(नेगी वे लोग कहलाते हैं, जिन्हें विवाह के अवसर पर नेग या दस्तूर मिलता है।)*

नौ तेरस बाईस न बताइए

किसी से कहा गया कि नौ और तेरह बाईस होते हैं, पर वह मानने को तैयार नहीं। कहता है, नहीं ऐसा मत कहो। जब कोई व्यक्ति सही बात को न माने और तर्क करे, तब क.।

(आप ज़बर्दस्ती किसी से अपनी बात नहीं मनवा सकते।)

नौ दिन चले अढ़ाई कोस

बहुत सुस्त आदमी के लिए क.।

नौ नगद, न तेरह उधार

उधार तेरह में बेचने की अपेक्षा नक़द नौ में बेचना अच्छा है।

नौ मन तेल खाये, फिर तिलेर का तिलेर

ऐसे लड़के को क., जिसे खूब अच्छा खाने-पीने को मिलता रहे, फिर भी वह दुबला-पतला रहे।

तिलेर=एक पक्षी विशेष।

नौ महीने मां के पेट में कैसे रहा होगा?

चंचल और ऊधमी लड़के के लिए क.।

नौमी गूगा पीर मनाऊं, नाचर खे के हाथ लगाऊं, (स्त्रि.)

काम न करने के लिए जब कोई व्यर्थ का बहाना ढूंढ़े, तब क.। (गूगा नाम के एक पीर हो गए हैं। सन् 1024 में उनकी मृत्यु हुई। भादों बदी नवमी को उनकी याद में मेला लगता है।)

नौ सौ चूहे खा के बिल्ली हज को चली, (मु.)

जिसने जन्म भर बुरे कर्म किए हों, और अंत में वह संत-महात्मा बन बैठे, तब क.।

(बिलार-व्रत की कथा जातक में मिलती है और महाभारत में भी।)

नौह भर खाया तो खाया, मुंह भर खाया तो खाया

थोड़ा खाया तो, बहुत खाया तो, खाने का नाम तो हुआ। चोरी चाहे छोटी हो, चाहे बड़ी कहलाएगी तो वह चोरी ही। नौह भर=नाखून भर। बहुत थोड़ा।

प

पंच कहें बिल्ली, तो बिल्ली ही सही

जो सबकी राय होगी, वही हम मान लेंगे।

(कथा है कि रात के समय किसी बनिए के घर मे चोर घुस गया। बनिए को जब पता चला, तो उसने चुपचाप उठकर उस कोठे के किवाड़ बंद कर दिए और बाहर से कुंडी लगा दी, जिसमें चोर था। चोर भीतर से बिल्ली की तरह म्याऊं-म्याऊं करने लगा। तब बनिए ने कहा कि सवेरे अगर पंच तुझे बिल्ली कहेंगे तो बिल्ली ही समझकर छोड़ देंगे। इस समय तो अब तुम बंद रहो।)

पंच जहां परमेश्वर, (हिं.)

पच परमेश्वर के बराबर होते हैं। जहां पांच आदमी इकट्ठे होकर किसी बात का फ़ैसला र देते हैं, वह ठीक ही होता है।

पंचफूला रानी बनी है, (स्त्रि.)

अपने को बड़ी रूपवती समझती है।

(भारतीय लोककथाओं में पंचफूला रानी का बहुत नाम आता है। वह एक सुंदर राजकन्या थी, जो वज़न में इतनी हल्की मानी गई कि पांच फूलों से तुला करती थी।)

पंच माने खुदा, खुदा माने पंच, (मु.)

पंच और परमेश्वर में कोई अंतर नहीं।

पंच मिल खुदा और खुदा मिल पंच, (मु.)

पंचों में ईश्वर का वास होता है और ईश्वर में पंचों का।

पंच मुख परमेश्वर

पंचों की आज्ञा ईश्वर की आज्ञा होती है।

पंचों का कहना सिर आंखों पर, मगर परनाला यहीं गिरेगा

जब कोई आदमी ऊपर से तो यह कहता जाए कि आप जो कहेंगे वही करेंगे, पर करे अपने मन की।

(किसी मनुष्य के घर की मोरी का पानी उसके पड़ोसी के घर में जाता था। पंचों ने आकर फेसला किया कि वह अपनी मोरी हटाकर दूसरी जगह बनवा ले। किंतु उसने नहीं माना और उत्तर में उसने ऊपर की बात कही।)

पंचों का जूता और मेरा सिर

मैं हर तरह से पंचों की बात मानने को तैयार हूं।

पंचों शामिल मर गए, जानों गए बरात

पंचों के साथ कष्ट भोगना वैसा ही है, जैसा बरात में जाना। सबके साथ जो कष्ट उठाना पड़ता है, वह अखरता नहीं।

पंच ऐब शरई हैं

उसमें पांच ऐब हैं।

पंडियान की मीठी-मीठी बतियां

मीठी बात करके अपना काम बनाने वाली स्त्री।

पंडित पोथी बांचते, मुल्ला पढ़ें कुरान।
लोग दिखावो लख करो, नाहिं मिलें भगवान।

स्पष्ट।

पंडित भये तो क्या भये, गले लपटे सूत।
भाव जगत जानी नहीं, भये जंगल के भूत।

सच्ची भक्ति के बिना ईश्वर नहीं मिलता।

पकले गूलर, कव्वे के नींद आवा ले, (भो.)

गूलर पक रहे हैं, भला कौए को नींद कैसे आएगी? जब किसी अच्छी लगने वाली वस्तु को पाने के लिए कोई बेचैन हो उठे, तब क.।

(कौवे गूलर बहुत खाते हैं।)

पका फोड़ा हो रहा है

बहुत टीस उठ रही है।

कष्टदायक वस्तु के लिए क.।

पकाय सो खाय नहीं, खाय कोई और।
दौड़े सो पाय नहीं, पाय कोई और।
(1) जो मेहनत करे, उसे न मिले; दूसरे मजा उड़ाएं।
(2) जो मेहनत करेगा सो पाएगा, नहीं तो दूसरे उसका लाभ उठाएंगे।

पकी फली नहीं फोड़ता है
बहुत ही आलसी है। कोई काम नहीं करता।

पके आम के टपकने का डर है
बूढ़ा आदमी, न जाने कब चल बसे।

पक्का पान खांसी न जुकाम
नया पान कफ़ पैदा करता है, पक्का नहीं।

पक्का होना चाहे तो पक्के के संग खेल, कच्ची सरसों पेर के, खली होय ना तेल
योग्य बनना चाहते हो, तो योग्य पुरुष के साथ रहो। कच्ची सरसों से तेल नहीं मिल सकता।

पखाल का लादना और डाक का लादना एक-सा
दोनों ही कामों में बोझा लेकर और जल्दी चलना पड़ता है। पखाल=मशक।

पगड़ी अटकी।
इज्ज़त ख़तरे में है।

पगड़ी दोनों हाथों से थामी जाती है
इज्ज़त को बचाने के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए।

पगड़ी भीतर रख
अपनी इज्ज़त बनाए रखो। ऐसा न हो, कोई पगड़ी उछाल दे।

पगड़ी रख घी चख
इज्ज़त से भी रहो, और अच्छा खाओ-पीओ।

पग पवित्र तीरथ गवन, कर पवित्र कछु दान।
मुख पवित्र जब होत है, भज ले श्री भगवान।
तीर्थयात्रा से पैर पवित्र होते हैं, दान से हाथ पवित्र होते हैं और ईश्वर-भजन से मुख पवित्र होता है।

पग बिन कटे न पंथ
बिना चले रास्ता तय नहीं होता। करने से ही काम होता है।

पछवा चले, खेती फले, (कृ.)
पश्चिम की वायु खेती के लिए लाभदायक होती है।

पठान का पूत, घड़ी में औलिया, घड़ी में भूत
घड़ी-घड़ी में जिसका मिज़ाज बदले, उसके लिए क.। औलिया=संत।

पठानों ने गांव मारा, जुलाहों की चढ़ बनी
क्योंकि उन्हें नौकरी मिल जाएगी। कुनबापरस्ती।

पड़ली पिया तोरे बस, जिन्ने चाहा तिन्ने धस, (पू., स्त्रि.)
कोई पतिव्रता स्त्री अपने अत्याचारी पति के प्रति कह रही है।
विवश होकर किसी का अनाचार सहन करना पड़े, तब क.।

पड़वा गमन न कीजिए, जो सोने को होय
पड़वा (प्रतिपदा) को यात्रा नहीं करनी चाहिए; चाहे कितना ही लाभ क्यों न होने वाला हो। हिन्दू ज्योतिष के अनुसार पड़वा को यात्रा के लिए अशुभ मानते हैं।

पड़ोस छोड़ पीत करे
पड़ोसियों को छोड़कर दूसरों को मित्र बनाना। बुरे आदमी के लिए क.।

पड़ोसी के मेंह बरसेगा तो बौछार यहां भी आएगी
धनी के पड़ोस में रहने से किसी-न-किसी तरह का लाभ होगा ही।

पढ़ा न लिखा, नाम विद्याधर
बेशऊर के लिए क.।

पढ़ा न लिखा, नाम मुहम्मद फ़ाज़िल, (मु.)
दे. ऊ.।

पढ़िये भैया सोई, जामें हंड़िया खुदबुद होई, (पू.)
वही विद्या पढ़नी चाहिए, जिससे पेट का धंधा चले।

पढ़ी म, कज़ा की, (मु.)
जो पांच वक्त नमाज़ नहीं पढ़ता, वह पाप करता है। नियत समय पर नमाज़ न पढ़ने के अपराध को कज़ा कहते हैं।

पढ़े के पास बैठिये, दूना लाभ
ज्ञानी के पास बैठने से दुगुना लाभ होता है। समय का सदुपयोग होता है। अच्छी बातें सीखने को मिलती हैं।

पढ़े घर की पढ़ी बिल्ली
शिक्षा का दूसरों पर प्रभाव पड़ता है। जहां एक पढ़ा होता है, वहां दूसरा भी पढ़ जाता है।

पढ़े तोता, पढ़े मैना, कहीं सिपाही का पूत भी पढ़ा है?
सिपाहियों पर फब्ती। वे प्रायः अशिक्षित होते हैं।

पढ़े तो हैं, पर गुने नहीं
विद्या तो पढ़ी, पर उनका मनन नहीं किया। अनुभवहीन पढ़े-लिखे।

पढ़े फ़ारसी बेचें तेल, यह देखो कुदरत का खेल
क़िस्मत की मार से पढ़े-लिखे मनुष्य भी मारे-मारे फिरते हैं।

पढ़ों में अनपढ़ा, जैसे हंसों में कौवा

स्पष्ट।

(सं.—सभा मध्ये न शोभन्ते हंस मध्ये बको यथा)

पढ़ो तो पढ़ो, नहीं तो पिंजरा खाली करो

(1) लड़के जब पढ़ते नहीं, तो उनसे क.।

(2) निकम्मे नौकर से भी क.।

पतुरिया का डेरा, जैसे ठगों का घेरा

क्योंकि वहां भी आदमी जाकर लुटता है।

पतुरिया=वेश्या।

(एक घुमक्कड़ जाति के लोग होते हैं, उनकी स्त्रियों को भी पतुरिया कहते हैं। ये चोरी के लिए बदनाम हैं। यहां उनके डेरे से भी अभिप्राय हो सकता है।)

पतुरिया रूठी, धरम बचा

क्योंकि उसके पास फिर जाएंगे ही नहीं।

(जब कोई किसी काम के लिए इंकार कर देता है; तब क. कि चलो अच्छा हुआ, अहसान से बचे।)

पतोर ताको गजी नहीं, बेसवा ओढ़े खासा

(1) पतिव्रताओं को तो गाढ़ा पहनने को नहीं मिलता, और वेश्याएं रेशम पहनती हैं। अथवा

(2) ऐसे पुरुष के लिए भी कह सकते हैं, जो अपनी स्त्री का ख्याल न करे, ओर किसी दूसरे से प्रेम करे।

पत्थर को जोंक नहीं लगती

(1) निर्दयी के आगे रोने से कोई लाभ नहीं होता।

(2) मूर्ख को शिक्षा नहीं लगती।

पत्थर मारे मौत नहीं आती

(1) घर के लोग जिससे परेशान हों, ऐसे व्यक्ति के लिए क.।

(2) पत्थर मारने से कोई नहीं मर जाता। जब मौत आती है तभी मरता है।

पत्थर मोम नहीं होता

हृदयहीन को दया नहीं आती।

पदनी आइल, न पेठया लागल, (पू.)

किसी दुराचारिणी के विषय में कहा गया है कि न वह आई, न हाट लगी; अर्थात उसके बिना बाजार में रौनक नहीं आई।

पद्मिनी चमारों में होती है

चमारों में भी सुंदर स्त्रियां होती हैं।

पर आसा नित उपासा

दूसरों पर निर्भर करने वाला हमेशा भूखों मरता है।

पर उपकारी, धरमधारी

दूसरों का भला करने वाला ही धर्मात्मा होता है।

परकल घोड़ भुसौले ठाढ़, (पू.)

जहां जिसे खाने को मिलता है, वह उसी जगह बार-बार पहुंचता है।

परकल=लपका हुआ।

पर का धन गौरैया मार, (पू.)

पराए धन को चिड़ियां खा जाएं, हमें क्या मतलब?

पर की खेती, पर की गाय, वह पापी जो मारन जाय

मनुष्य का स्वभाव है कि वह दूसरे की हानि को चुपचाप देखता रहता है, हस्तक्षेप नहीं करता। उसी पर कहा. कही गई है।

दे.—अनकर खेती...।

पर के धन पर चोर रोवे

. चोर मुफ्त का माल चाहता है।

पर को कुआं खोदिए और आप ही डूब-डूब मरिए

जो दूसरों को हानि पहुंचाने की चेष्टा करता है, वह स्वयं हानि उठाता है।

परगट आन, पीछे कह आना।
अधम न एक जग ताहि समाना।

जो मुंह पर कुछ कहे और पीठ पीछे कुछ कहे, उसे बड़ा नीच समझना चाहिए।

पर घर कूदें मूसलचंद

जो बिना बुलाए किसी के घर जाए, अथवा बिना पूछे किसी के काम में हस्तक्षेप करता फिरे, उसके लिए क.।

पर घर नाचें तीन जने, कायथ, बैद, दलाल

क्लर्क, वैद्य, और दलाल, ये अपनी आमदनी के लिए दूसरों पर ही निर्भर करते हैं।

परचे परतीत है

मिलने-जुलने से ही विश्वास उत्पन्न होता है।

परजा मरन, राजा को हांसी

राजा के सुख के लिए प्रजा मरती है। सामंती जमाने में राजा लोग अपने आराम के लिए रिआया से कर्ज लेते थे। उसी से मतलब है।

पर तिरिया पर धन के ऊपर जो कोई सुता धरे है,
जब छूटे हैं प्रान, प्यारे, जाके नरक पड़े हैं

जो पराए धन और पराई स्त्री पर दृष्टि डालता है वह नरक में जाता है।

सुता धरे है=सुर्त करता है। सुर्त से मतलब ध्यान से है।

परदे की बीवी और चटाई का लहंगा
प्रतिष्ठा के अनुकूल पहनावा न होना।
परदे की बीवी=पर्दानशीन औरत। परदे में बड़े आदमियों की स्त्रियां ही रहती हैं।

परदे में ज़र्दा लगाती हैं, (स्त्रि.)
अपना नाम कलंकित करती हैं।
ज़र्दा=धब्बा।

परदेस कलेस नरेशन को, (हिं.)
घर से बाहर जाने पर राजाओं को भी कष्ट होता है, फिर साधारण पुरुषों की तो बात ही क्या?

परदेसी का जी आधा होता है
(1) अजनबी आदमी संकोचशील होता है।
(2) बाहर जाकर आदमी हिम्मत से काम नहीं ले पाता।

परदेसी की प्रीत को, सबका मन ललचाय।
दोइ यात की चोट है, रहे न संग ले जाय। (स्त्रि.)
स्पष्ट।
खोट=कमी; त्रुटि; शंका।

परदेसी बालम तेरी आस नहीं, बासी फूलों में बास नहीं, (स्त्रि.)
परदेसी से प्रेम करना व्यर्थ है, क्योंकि वह न जाने कब छोड़कर चलता बने।

पर नारी पैनी छुरी, कोई मत लाओ संग।
दसों सीस रावन के ढह गए, इस नारी के संग।
स्पष्ट।
(सीता को चुराने के लिए रावण मारा गया था।)

परवत को राई करे, राई परवत मान।
ईश्वर में बड़ी शक्ति है, वह असंभव को भी संभव कर सकता है।

परबस में सुख है नहीं, निसबस ही सुख भोग।
यातें परवस त्याग कें, रहें सुबस बुध लोग।
पराधीनता में सुख नहीं मिलता।

पर मुई सासू, आसों आये आंसू, (स्त्रि.)
सास पारसाल मरी और आंसू इस साल आए। बनावटी दुख।

परहेज़ बड़ी दवा है
खाने-पीने आदि के संयम से बहुत से रोग दूर होते हैं।

परहेज़ भी आधा इलाज है
दे. ऊ.।

पराई जेब से अपनी जेब में धरना मुश्किल है
दूसरे का पैसा लेना आसान नहीं।

पराई तोंद का घूंसा
अपने को उसका कष्ट नहीं होता।

पराई थैली का मुंह सकरा
अपना धन कोई आसानी से नहीं देना चाहता।
दे.—पराई जेब से...।

पराई धी और हंसे बटाऊ लोग
पराई लड़की को देखकर राहगीर हंसते हैं।
(उन्हें हंसना नहीं चाहिए।)

पराई नौकरी करनी और सांप का खिलाना बराबर है
दोनों ही काम खतरे के हैं।

पराई सराय में कौन धुआं करता है?
दूसरे के घर जाकर चूल्हा सुलगाना ठीक नहीं।
(भोजन के लिए।)
अपना निजी काम अपने घर ही करना चाहिए।

परा गन्दह रोज़ी, परा गन्दह दिल, (फ़ा.)
जिसकी नौकरी का ठीक नहीं, उसके दिमाग का भी ठीक नहीं। अर्थात बेरोजगार आदमी अस्थिर चित्त रहता है।

पराधीन सपने सुख नाहीं
जो दूसरे की नौकरी करता है, अथवा दूसरे के अधीन रहता है, उसे कभी सुख नहीं मिलता।

पराया दिल परदेस बराबर
उसका हाल मालूम नहीं रहता।

पराया दिल समंदर के पार
दे. ऊ.।

पराया माल झांट का बाल
पराए माल को तुच्छ समझें।

पराया सिर कद्दू बराबर
दूसरे के माल की परवाह न करना।

पराया सिर कुरान की जगह, (मु.)
क़सम खाने के लिए पराया सिर। पराई वस्तु की वुक़त न करना। *(मुसलमान लोग कुरान की कसम खाते हैं। इसके अलावा अपने अथवा पराए सिर की क़सम भी खाई जाती है। लोक-विश्वास है कि किसी के सिर की झूठी कसम खाने से वह आदमी मर जाता है। इसी पर कहावत आधारित है।)*

पराया सिर पसेरी बराबर
दे.– पराया सिर कद्दू...।

पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड़ डालेंगे, (स्त्रि.)
(1) पराए सौभाग्य पर ईर्ष्या करना। अथवा (2) यह एक

सीधा प्रश्न भी हो सकता है कि क्या हम पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड़ डालेंगे, अर्थात क्या अपनी हानि कर लेंगे? हिंदू स्त्रियां मांग में सेंदुर भरती हैं, जो सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। कहावत में उसी से मतलब है।

पराये गंडों के भरोसे न रहना

अर्थात कार्य तो पुरुषार्थ से ही सिद्ध होता है, गंडे या ताबीज़ से नहीं।

गंडा=मंत्र पढ़कर बनाया गया धागा, जिसे लोग अपनी किसी मनोकामना को पूरा करने अथवा रोग और भूत प्रेतादि की बाधा को दूर करने के लिए गले में पहनते हैं।

पराए धन पर झींगुर नाचे

दूसरे के धन पर ऐंठना।

पराये धन पर लक्ष्मीनारायण, (हिं.)

पराए धन पर मौज करना।

(भोज के प्रारंभ में जय लक्ष्मीनारायण कहने की प्रथा है। जिसका अर्थ होता है कि अब भोजन प्रारंभ किया जाए।)

पराए बरदे औज़ाद करते हैं

दूसरे के नौकरों को छुटकारा दिलाते हैं।

पराए बूते पर परोपकार करना।

बरदे=बैल। (यहां नौकरों से ही मतलब है।)

पराए भरोसे खेला जुआ, आज न मुआ, काल मुआ

पराए भरोसे जुआ खेलने वाला नुकसान उठाकर रहता है। (यहां सट्टा से मतलब है।)

पराए माल पै, या हुसेन, (मु.)

पराया माल खाने को हमेशा तैयार।

दें—पराये धन पर लक्ष्मीनारायण।

पराए हाथ पै शिकरा पालते हो

पराए भरोसे रहना ठीक नहीं। शिकरा एक प्रकार का शिकारी बाज़ पक्षी होता है। उसे इस प्रकार सिखाते हैं कि वह चिड़ियों को पकड़ कर मालिक के पास ले आता है।

पल पखवाड़ा, घड़ी महीने, चौघड़िये का साल।
जिसको लाला 'काल' कहत हैं, उसका कौन हवाल।

वादा खिलाफी करना। काम के लिए रोज टालना।

(लालाजी का एक पल एक पखवाड़े के बराबर, एक घड़ी एक महीने के बराबर, और चार घड़ी एक साल के बराबर होती है। अब अगर वह 'कल' कह दें.तो उसका न जाने क्या हाल होगा।)

पलास के तीन पात

सदा एक-सी हालत में रहना।

पसू का सताना, निरा पाप कमाना

पशु को नहीं सताना चाहिए।

पहली बोहनी अल्ला मियां की आस, (मु. व्य.)

सुबह दुकान पर पहला ग्राहक आने पर मुसलमान दूकानदार कहा करते हैं। दूकानदार सुबह की पहली बिक्री को बड़ा महत्व देते हैं। वे उससे दिन भर की बिक्री का अनुमान लगाते हैं। पहले ग्राहक को वे कभी वापस नहीं करते।

पहले अपनी ही दाढ़ी की आग बुझाई जाती है

पहले अपना ही काम देखा जाता है।

(एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा कि अगर मेरी और तुम्हारी दाढ़ी में आग लग जाए, तो तुम पहले किसकी दाढ़ी बुझाओगे। बीरबल ने जवाब दिया--पहले अपनी ही बुझाऊंगा।)

पहले खाना, पीछे बात करना

पहले सामने का काम पूरा करो।

खाने के समय बहुत बोलने वाले के लिए।

पहले घर में तो पीछे मस्जिद में, (मु.)

पहले घर देखो, फिर बाहर।

पहले चुम्मे गाल काटा

किसी आदमी को पहले-पहल जब कोई काम सौंपा जाए, और वह उसे चौपट कर दे।

पहले पहरे सब कोई जागे, दूजे पहले भोगी।
तीजे पहरे चोरा जागे, चौथे पहरे जोगी।

रात के पहले पहर में सब कोई जागते हैं, दूसरे में भोगी, तीसरे में चोर और चौथे में योगी जागता है।

पहले पीवे जोगी, बीच में पीवे भोगी, पीछे पीवे रोगी

(1) तमाखू पीने के लिए।

(2) भोजन के समय पानी पीने के लिए भी कुछ लोग कहते हैं, पर इस संबंध में यह कहावत कोई अंतिम वाक्य नहीं।

पहले पीवे मकवा, फिर पीवे तमखवा, पीछे पीवे चिलम-चट, (पू.)

तमाखू पीने वालों का कहना है कि पहले तो मूर्ख पीता है, फिर जो तमाखू का मजा जानता है वह पीता है, फिर सबसे बाद में चिलमचट पीता है। शुरू में चिलम में केवल धुआं निकलता है, फिर तमाखू के थोड़ा जल उठने पर उसमें पीने का स्वाद आता है, बाद में केवल राख रह जाती है और कोई मज़ा नहीं रहता, इसी से ऐसा कहा है।

पहले बो, पहले काट, (कृ.)

काम में जो शीघ्रता करेगा, उसका फल भी उसे शीघ्र मिलेगा।

पहले मित्तर, तब देवता पित्तर
पहले पेट पूजा फिर देव पूजा।

पहले मारे सो मीरी
मैदान में जो आगे बढ़कर हाथ मारता है, वही जीतता है। *(शतरंज के खेल में प्यादा यदि आगे बढ़कर दूसरे खिलाड़ी के वज़ीर या बादशाह के खाने में पहुंच जाए, तो वह वज़ीर बन जाता है।)*

पहले सोच विचार, पीछे कीजे कार
काम सोच-विचार कर करना चाहिए।

पहले ही गस्से में बाल आया
पहले ही कोर में बाल आया, अर्थात अपशकुन हुआ। *(भोजन में बाल निकलना अशुभ मानते हैं, और यदि पहले ही कोर में बाल आ जाए, तो फिर भोजन नहीं करते।)*

पहले ही बिस्मिल्ला ग़लत, (मु.)
शुरू मे ही काम बिगड़ा।
(मुसलमानो में कोई कार्य आरंभ करने के समय 'बिस्मिल्लाह अर्रहमानुर्रहीम' कहने की प्रथा है। 'बिस्मिल्लाह' उसी का पूर्वार्द्ध और संक्षिप्त पद है, जिसका अर्थ है—ईश्वर के नाम से।)

पहाड़ की उतराई चढ़ाई दोनों पर लानत
दोनों मे कष्ट होता है।

पहाड़ के अठगन सिलूत, (पू.)
पहाड़ पत्थरों के सहारे टिका है। छोटों से ही बड़ों का बड़प्पन है।
अठगन=अटकन; सहारा।
सिलूत=सिल; पत्थर।

पहाड़ी गधा, पूर्वी रेंक
अपनी चाल-ढाल छोड़कर दूसरों की चाल-ढाल का अनुकरण करना।

पांच जूतियां और हुक्के का पानी
तुम्हें यही मिलना चाहिए।
जब कोई ऐसी मांग करे, जिसके वह बिल्कुल ही योग्य न हो, तब क.।

पांच पंच मिल कीजे काज, हारे-जीते नाहीं लाज
पांच आदमियो से सलाह लेकर काम करना चाहिए। उसमें अगर नुकसान भी हो जाए, तो अपने सिर बदनामी नहीं आती।

पांच महीना ब्याह के बीते, पेट कहां से लाई? (स्त्रि.)
अप्रत्याशित बात।

पांच आम, पचासे इमली
पांच वर्ष में आम और पचास में इमली में फल आता है। पूरी शुद्ध कहावत इस प्रकार है : पांचे आम, पचीसे महुआ, तीस बरस में इमली औ' कहुआ। फैलन ने उक्त वाक्य का अर्थ किया है—आम के पांच पेड़ इमली के पचास पेड़ के बराबर होते हैं।

पांचे मीत, पचासे ठाकुर
मित्र पांच रुपए में और राजा या जमींदार पचास रुपए में मान जाता है।

पांचों उंगलियां घी में, छठा सिर कढ़ाई में
जिसकी खूब दाल गल रही हो, उसके लिए क.। *(इसका शुरू का आधा भाग ही कहावत के रूप में प्रचलित है।)*

पांचों उंगलियां बराबर नहीं होतीं।
(1) सब चीजें सब एक-सी नही होती।
(2) सब मनुष्य एक-से नहीं होते।

पांचों पंडे छठे नरायण
पांचों पाडव ओर छठे श्रीकृष्ण।
ऐसी जगह क., जहा दस-पाच आदमियों के गुट मे अकस्मात ऐसा मनुष्य पहुंच जाए, जो उनका नेतृत्व कर सकता हो और जहां उसकी जरूरत भी हो।
(कहावत का प्रयोग प्रायः व्यंग्य मे ही होता है।)

पांचों सवारों में मिलना
अपने को ऐसे मनुष्यों के बराबर समझना, जो योग्यता मे अपने से बहुत बड़े हों।
(कथा है कि किसी समय चार शाही घुडसवार सजे-धजे और हथियारों से लैस कहीं जा रहे थे। उनके पीछे एक कमजोर-सा निहत्था आदमी एक सड़ियल टट्टू पर सवार हो चल रहा था। जब किसी ने उससे पूछा कि तुम कहां जा रहे हो? तो उसने उत्तर दिया—हम पांचों सवार दिल्ली से आ रहे हैं।)

पांडे जी पछतायेंगे, वही चने की खायेंगे
जब कोई मनुष्य बहुत समझाने पर भी किसी बात को न माने और बाद में अपनी खुशी से वही करे जो कहा गया था, तब कहते हैं।

पांडे दोऊ दीन से गए
(1) जब कोई मनुष्य एक काम को छोड़कर दूसरा काम करने आए और उसमें सफल न हो, और अपने पहले काम से हाथ धो बैठे।

(2) जब कोई किसी बड़ी चीज की आशा से छोटी चीज को छोड़ दे, और बाद में उसे बड़ी भी न मिले, और न छोटी।

(कथा है कि कोई ब्राह्मण मुसलमान हो गया। कुछ दिनों बाद जब उसने अपने इस नए मज़हब में कोई खास तत्व न देखा, तो उसने फिर ब्राह्मण होने की इच्छा प्रकट की। परंतु ऐसा उसके लिए संभव नहीं हो सका; क्योंकि हिन्दू उन दिनों शुद्धि नहीं करते थे और वह दोनों तरफ से मारा गया।)

पांव गोर में लटकाये बैठे हैं

मरने के करीब हैं।

पांव तले की जमीन सरकी जाती है

(1) किसी वहुत झूठी या कुत्सित बात के सुनने पर घृणा या क्षोभ में।

(2) भय या आश्चर्य होने पर भी।

पांव में जूती न सिर पर चपोटी

(1) सिलविल्ला।

(2) वहुत गरीव।

चपोटी=टोपी।

पांव लों विनती, सौ लों गिनती, (हिं.)

जिस प्रकार सो से अधिक गिनती नही होती, उसी प्रकार पेर पड़ने से अधिक कोई बिनती नही हो सकती। जब कोई अपने किसी काम को करने के लिए सब तरह से प्रार्थना करके थक जाए तव क.।

पांसा पड़े, अनाड़ी जीते

पांसा पड़ने से अनाड़ी भी जीतता हे।

पांसा पड़े सो दांव, हाकिम करे सो न्याव

देववशात जो सामने आता है, वह सहना पड़ता है।

(हाकिम की जगह राजा भी कहा जाता है।)

पाक नाम अल्लाह का, (मु.)

पवित्र नाम ईश्वर का है।

पाक रह, बेबाक रह, (मु.)

जिसका दिल साफ है, उसे कोई डर नहीं रहता।

पाजी तो पाजी, वह बड़ा पजोड़ा है

पाजी से भी बड़ा कमीना है।

पात-पात को आप लुटावे, काला मुंह कर ज़ग दिखलावे, तब लालों में लाली पावे

यह पहेली है पलास वृक्ष पर। पहले पलास अपने सब पत्ते गिराता है, अर्थात बिल्कुल नंगा हो जाता हे, फिर उसमें काले रंग की कलियां लगती हैं, अर्थात संसार में बदनाम होकर उसका मुंह काला होता है; बाद में लाल रंग के फूल उसमें लगते हैं, जिससे सारा वन दमक उठता है, अर्थात अपने गुणों से वह सम्मान योग्य बनता है। तात्पर्य यह कि बिना कष्ट झेले मनुष्य को मफलता नहीं मिलती।

पादशाहों और दरयाओं का फेर किसने पाया

राजाओं और नदियों का सच्चा हाल किसने जाना है?

पान और ईमान फेर ही से अच्छा रहता है।

पान और ईमान पलटते रहने से ही ठीक रहते हैं। यहां पलटने के दो अर्थ हैं—(1) लौटना-पलटना। (2) लौट-पलट कर साफ करना।

पान पुराना घृत नया, और कुलवंती नार।
यह तीनों तब पाइये, जब प्रसन्न होय मुरार।

स्पष्ट।

पान पुराना ही अच्छा मान जाता है, जो महंगा मिलता है। घी तो ताजा अच्छा होता ही है। मुरार=मुरारी; कृष्ण भगवान।

पान-सा पतला, चांद-सा चकला

केवल तुकवंदी।

चकला=गोला।

पानी का-सा बुलबुला है

क्षणभंगुर वस्तु। मानव शरीर के लिए क.।

पानी का हगा ऊपर आता है

बुरा कर्म छिपता नही।

पानी दें और जड़ काटें

ऊपर से प्रेम, भीतर से शत्रुता।

पानी पीकर जात पूछते हो

काम कर चुकने के बाद उसका विचार करना।

पानी पी घर पूछनो, नाहिंन भलो विचार। (वृ.)

पानी पी घर पूछना

दे. ऊ.।

पानी पीजे छान के, गुरु कीजे जान के, (हिं.)

पानी छान कर पीना चाहिए और गुरु देखभाल कर करना चाहिए।

पानी पीबें छान के जीव मारें जान के

जैनियों के लिए क.।

पानी बाढ़ा नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सयाना काम।

यदि तिरती नाव में पानी भर जावे और कोई क़र्ज में दब

जावे तो इनसे छुटकारा पाने में देरी नहीं करनी चाहिए। मतलब, आफत का मुक़ाबला तुरत करें।

पानी में पत्थर नहीं सड़ता, (व्य.)

रक़म किसी मातबर आदमी के पास जमा हो, तो वह डूब नहीं सकती।

पानी में पखान, भीगे पर छीजे नहीं।
मूरख के आगे ज्ञान रीझे पर बूझे नहीं।

मूर्ख को शिक्षा देने से कोई लाभ नहीं होता।

पानी में मछली, नौ-नौ टुकड़ा हिस्सा, (पू.)

किसी चीज के हाथ में आने के पहले ही उसका गुंताड़ा लगाने लगना।

पानी से पतला कर डाला

बहुत ज़लील कर डाला।

पानी से पहले पुल बांधते हो

दे.—पानी में मछली...।

पाप उभरे पर उभरे

बुरा काम छिपता नहीं।

पाप का घड़ा भर कर डूबता है

पापी की भले ही पहले उन्नति हो, पर अंत में विनाश होता है।

पाप छिपाये ना छिपे, जस लहसुन की बास

पाप प्रकट होकर रहता है।

पाप भी कभी छिपाये से छिपता है?

स्पष्ट।

पापियों के मारने को पाप महाबली

पापी अपने बुरे कर्मों से ही मारा जाता है।

पापी का माल अकारथ जाय

बुरी कमाई बुरे कामों में ही ख़र्च होती है।

पापी का माल पिराचत जाय, दंड भरे या चोर ले जाय

पापी का माल प्रायश्चित्त में ही खर्च हो जाता है, अर्थात बुरे कर्मों के दंड में आता है।

पापी की नाव डूबे पर डूबे

पापी नष्ट होकर रहता है।

पापी की नाव भर के डूबे

पापी पहले सफल होता है, पर अंत में नष्ट हो जाता है।

पापी के मन में पाप ही बसे

स्पष्ट।

पाबंद फंसे, आजाद हंसे

कैदी को बांधा हुआ देखकर स्वाधीन मनुष्य हंसता है। संसार की रीति यही है।

पायजामे में से क्यों निकले पड़ते हो?

अर्थात क्यों इतने बिगड़ते हो?

पार उतरूं तो बकरा दूं

जब कोई विपत्ति के समय तो देवी-देवता मनावे, पर छुटकारा पाने पर भूल जाए।

(इसकी कथा है कि कोई मुसलमान नाव में बैठकर नदी पार कर रहा था। बीच में पहुंचा, तो बड़े जोर का तूफ़ान आया। उसने किसी पीर की मिन्नत मानी कि यदि सकुशल पार पहुंच जाऊं तो बकरा चढ़ाऊंगा। तूफान जब बंद हुआ, तो उसे बकरे का मोह हुआ और उसने कहा कि अगर बकरा नहीं चढ़ा सका तो मुर्गी अवश्य चढ़ाऊंगा। अंत में जब वह राज़ी-खुशी पार पहुंच गया, तो मुर्गी के लिए भी उसका मन अचकचाने लगा और अपने वादे को पूरा करने के लिए कपड़ों में से एक चीलर निकाल कर मार डाला और बोला—जान के बदले में जान मैंने दी।)

पार कहे सो वार है, वार कहें सो पार।
पकड़ किनारा बैठ रह, यही पार, यही वार।

नदी के इस किनारे के लोग उस किनारे को पार और अपने किनारे को वार कहते हैं। इसी तरह उस किनारे के लोग अपने किनारे को वार और इस किनारे को पार कहते हैं। तू इस पार या उस पार के झगड़े में मत पड़। कोई एक किनारा पकड़कर बैठ रह। इसी में तेरी भलाई है।

पार गए, मोर हो आए

शेख़चिल्ली की गप।

पार वाले कहें वार वाले अच्छे, वार वाले कहें पार वाले अच्छे

मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपनी अपेक्षा दूसरों को सुखी और अपने को दुखी समझा करता है।

(उसी पर कहा गया है।)

पारसनाथ से चक्की भली, जो आटा देवे पीस।
कूढ़ नर से मुर्गी भली, जोक अंडे देवे बीस।

स्पष्ट।

पाल पाल, तेरे जी का होगा काल

जिन्हें तू पाल-पोसकर बड़ा कर रहा है वही तेरे शत्रु बन जाएंगे।

पासंग का चोर तीन जगह दंडाय, झुकता तोले, रूंगन दे, पासंग दिखाये, (व्य.)

झूठे बांट रखने वाला दूकानदार तीन जगह से नुकसान उठाता है। उसे ज्यादा तोलना पड़ता है, रूंगन देना पड़ता

है, और अपनी तराजू दिखानी पड़ती है कि वह ठीक है या नहीं।

(तराजू की दंडी को बराबर करने के लिए उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ बोझ पासंग कहलाता है।

पासंग होना (मु.), तराजू की डंडी बराबर न होना। कहावत का अभिप्राय यह है कि जो दूकानदार तराजू में पासंग रखता है, उसे पकड़े जाने के भय से कभी-कभी ज्यादा तोलना पड़ता है।)

पास का कुत्ता, न दूर का भाई

दूर के भाई से पास का कुत्ता अच्छा; क्योंकि वह काम आता है।

पास कौड़ी, न बाजार लेखा

(1) ऐसा व्यक्ति, जिसे किसी से कुछ देना-लेना न हो।

(2) बेफिक्र आदमी।

पाहन में कौ मारवो, चोखा तीर नसाय, (पू.)

पत्थर पर निशाना लगाने से एक अच्छा तीर खराब जाता है।

पिछली रोटी खाय, पिछली मत आय

स्त्रियों का विश्वास है कि जो सबसे अंत की बनी रोटी खाता है, उसकी बुद्धि कम हो जाती है। इसलिए वे बच्चों को पिछली रोटी नहीं देतीं, जानवरों को खिला देती हैं।

पिटारी में बंद कर रखने के लायक हैं

ऐसे अजीब हैं, या ऐसे भोंदू हैं। मजाक में ही कहते हैं।

पिया की कमाई मोहे नहिं लहना,
मो पै बाजूबंद नहीं और सब गहना। (स्त्रि.)

अनुचित असंतोष।

पिया जिसे चाहे, वही सुहागन

(1) सुहाग उसी का सार्थक है, जिसे पति चाहे।

(2) जिस पर मालिक की कृपादृष्टि होती है, वही बड़प्पन पा जाता है।

पिसनहारी के पूत को चबेना ही लाभ

गरीब को जो मिल जाए, वही बहुत।

पी कारन पीरी भई, लोग कहें पिंड रोग।
छिप छिप लंघन मैं किये, पी मिलन के जोग।

विरहिणी का कहना।

पिंड रोग पांडु रोग; पीलिया।

पी के पातन सिर धरो, धरो चरन पर सीस।
बासा हो बैकुंठ में, फिर तो बिसवे बीस। (स्त्रि.)

स्पष्ट। स्त्री को उपदेश दिया गया है।

पातन=जूता। (फैलन ने यही अर्थ किया है।)

पीच पी, नेमत खाई

मांड़ पिया, बढ़िया-बढ़िया माल-मसाले मैंने खाए।

(किसी ऐसे व्यक्ति का कथन, जो किसी दूसरे के साथ रहते-रहते अथवा नौकरी करते-करते कष्टों से ऊब गया है। कहता है—बस, बहुत हो गई, रहने दो। मुझे अब तुम्हारा कुछ न चाहिए।)

नेमत=नियामत मिली हुई कोई उत्तम वस्तु।

पीछा पीछा ही है

वर्तमान से बढ़कर नहीं हो सकता।

पीठ पीछे कुछ भी हो

मेरे पीछे कुछ होता रहे।

पीठ पीछे डोम राजा

पीठ पीछे डोम भी अपने को राजा समझता है।

पीठ पीछे बादशाह को भी बुरा कहते हैं

स्पष्ट।

पीत करी थी नीच से, पल्ले लागी कीच।
सीस काट आगे धरा, अंत नीच का नीच।

नीच से प्रेम करने पर बदनामी के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगता।

पीत की रीत निराली है

स्पष्ट।

पीत तो ऐसी कीजिए, जैसे रुई कपास।
जीते-जी तो संग रहे, मुये पै होवे साथ।

स्पष्ट।

(जीते-जी शरीर सूत के कपड़ों से ढका रहता है और मरने पर कफ़न में लपेटा जाता है, जो सूत का ही होता है।)

पीत तो ऐसी कीजिए, ज्यो हिंदू की जोय।
जीते-जी तो संग रहे, मरे पै सत्ती होय।

स्पष्ट।

किसी मुसलमान कवि का कहना है।

पीतम तू मत जानियो, भयो दूर कौ बास।
देह, गेह कितहूं रहै, प्रान तिहारे पास।

किसी विरहिणी स्त्री का अपने प्रियतम के प्रति कहना कि यह मत समझो कि तुम मुझसे दूर हो। मेरा शरीर और घर कहीं भी रहे, पर मेरे प्राण तो तुम्हारे ही पास हैं।

पीतम तेरी पीत को, झुक-झुक करूं सलाम।
जब से तो संग नेहा करो, सुनो न सुख को नाम।

कोई स्त्री, जिसे अपने पति के पास सुख नहीं मिला; ताना

मार कर कहती है।

पीतम बसें पहाड़ पर (और) हम जमना के तीर।
अब का मिलना कठिन है (कि) पांव पड़ी जंजीर।

स्पष्ट।

पीने को पानी नहीं, छिड़कने को गुलाब

झूठी शान।

पीपल काटे, पाल बिनास, भगवा भेस सतावे।
काया गढ़ी में दया न व्यापे, जरा मूर से जावे।

जो पीपल का वृक्ष काटता है, घर नष्ट करता है। साधुओं को सताता है, मन में दया नहीं रखता, ऐसे मनुष्य का सर्वनाश होता है। (लो.वि)।

पीपल पूजन मैं चली, निगम बोध के घाट।
पीपल पूजत पी मिले, एक पंथ दो काज।

एक काम में दो काम सिद्ध हो जाना।

पी प्याला, मार भाला

मतलब यह कि सोच-विचार कुछ न करो, वस मारने में जुट जाओ; या बस जाओ, अपना काम सिद्ध करो। प्याले से अभिप्राय शराब के प्याले से है।

पीर आप ही दरमांदह शफाअत किसकी करेंगे

पीर साहब खुद ही बीमार पड़े हैं, फिर इलाज किसका करेंगे? जिसकी सहायता चाहते हैं, वह स्वयं ही विपत्ति में पड़ा है।

पीर को न शहीद को, पहले नकटे देव को, (स्त्रि.)

जो वस्तु दूसरों के लिए तैयार की गई हो, उसे जब कोई बहुत अयोग्य व्यक्ति मांगे, तब क.।

पीर जी की सगाई मीर जी के यहां, (स्त्रि.)

जो जैसा है, उसका व्यवहार वैसे के साथ ही होना।

पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर

ब्राह्मणों पर व्यंग्य।

(एक बार अकबर ने बीरबल से कहा कि लाओ बीरन ऐसा नर, पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर। बीरबल ने एक ब्राह्मण ले जाकर खड़ा कर दिया और कहा कि ये पंडित जी चारों काम कर सकते हैं।)

पीर शव, बिआयोज़, (फ़ा.)

बूढ़े होने पर भी ज्ञान प्राप्त करते रहो।

पीरां न परंद, मुरीदा परांद, (फ़ा)

पीरों के पंख नहीं होते, पंख तो उनके चेले लगा दिया करते हैं। अर्थात संत-महात्माओं की कीर्ति उनके चेलों पर ही निर्भर करती है। वे बाहर जाकर उनका गुणगान कर उल्लू सीधा करते हैं।

पीसने वालियां पीस ले जाएंगी, कुछ हत्था थोड़े ही उखाड़ ले जाएंगी, (स्त्रि.)

एक स्त्री ने दूसरी स्त्री की चक्की से कुछ पीसना चाहा। उसने इंकार कर दिया। तब तीसरी ने उक्त वाक्य पहली स्त्री से कहा कि 'पीस क्यों नहीं लेने देतीं? इसमें तुम्हारा क्या नुकसान है ? वह तुम्हारी चक्की का डंडा तो उखाड़ नहीं ले जाएगी' यह बात तीसरी स्त्री की ओर से बहुत सहज में भी कही जा सकती है और इसलिए भी कि वह केवल उसे उपदेश दे रही है और स्वयं उससे चक्की मांगी जाए, तो वह देना पसंद नहीं करेगी। कहावत का सीधा अभिप्राय यह है कि अपनी कोई हानि किए बिना यदि दूसरे का कोई काम बनता हो, तो उसके लिए इंकार नहीं करना चाहिए।

पीस मुई, पका मुई, आए लौठे खा गए, (स्त्रि.)

किसी स्त्री का अपने निकम्मे लड़के से कहना कि मुझ से आकर कहता है—पीस मुई, पका मुई और आकर खा जाता है; काम-धंधा कुछ नहीं करता।

पीस लूं तो पीटूं, (स्त्रि.)

मां अपने ऊधमी लड़के से कहती है; मत समझो कि तुम बच जाओगे।

पुन्न की जड़ सदा हरी

पुण्यात्मा हमेशा फलता-फूलता है।

पुरख की माया, बिरछ की छाया, (स्त्रि.)

जब तक मनुष्य रहता है, तभी तक उसका नाम-धाम रहता है।

पुरख-सा पखेरू कोई नहीं

मनुष्य जैसा (विलक्षण) जीव कोई नहीं।

पुरख साठा सो पाठा, स्त्री बीसी सो खीसी

मनुष्य साठ वर्ष की उम्र तक भी जवान रहता है, पर स्त्री का यौवन बीस के बाद ढलने लगता है।

पुराना ठीकरा और कलई की भड़क

बूढ़ी औरत और जवानी का-सा बनाव-ठनाव।

पुरवा बहल, सूखल घाव फकंदल, (भोज.)

पुरवाई चलने से सूखा घाव हरा हो जाता है। (लो. वि.)

(पूरब की हवा स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं मानी जाती।)

पुराने गुंबद पर कलई करना

किसी पुरानी वस्तु को नई बनाने की वृथा चेष्टा।

पुराने चावलों में मजा होता है

बूढ़े-पुराने लोगों की बात बड़े काम की होती है।

पुराने ठीकरे पर नई कलई

दे.—पुराने गुंबद पर...।

पुरानों को झिड़की, नयों को प्यार

ऐसा करना ठीक नहीं। बूढ़ों का सम्मान करना चाहिए।

पुल बांधल जाए, बहू कजरी खेले, (पू., स्त्रि.)

पुल बंध रहा है। (सास वहां काम करने गई है।) और बहू कजरी खेल रही है। ऐसी बहू के लिए कहा गया है, जिसे घर के काम-धंधे की फ़िक्र नहीं।

(कजरी श्रावण के महीने का एक त्योहार होता है।)

पूछते-पूछते तो दिल्ली चले जाते हैं

स्वयं अपनी सहज बुद्धि से काम लेकर बहुत-कुछ किया जा सकता है।

पूजले देवता, छोड़ले भूत, (पू.)

पूजो तो देवता, नहीं तो भूत।

पूत करे, भतार के आगे आवे

लड़के के दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त बाप को करना पड़ता है।

पूत की ज़ात को सौ जोखों

लड़के को पचास व्याधियां लगी रहती हैं।

(मतलब यह है कि लड़की की अपेक्षा लड़के को रोग-दोख अधिक सताते हैं।)

पूत कुपूत हो जाय तो हो, पर मां कुमाता नहीं होती, (स्त्रि.)

स्पष्ट।

पूत के पांव पालने में पहचाने जाते हैं

बचपन में ही पता लग जाता है कि लड़का कैसा बनेगा। जब किसी बात के आसार पहले से दीखने लगें।

पूत न भतार, पीछो हो टांय टांय, (स्त्रि.)

उसका न तो लड़का ही लगता है और न पति, फिर भी उसके जाने पर (अथवा उसके मरने पर) वह व्यर्थ ही चीख-चिल्ला रही है। जब कोई किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति, जिससे उसका किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं है, झूठी सहानुभूति प्रकट करता है।

पूत फकीरनी का, चाल अहदियां की-सी

झूठी शान दिखाना। अकबर के जमाने में अहदी उन सरदारों को कहते थे, जिन्हें राज्य की ओर से वज़ीफ़ा मिलता था और कोई विपत्ति पड़ने पर बुलाए जाते थे। ये लोग अपने को बड़ा मातबर समझा करते थे।

पूत भये सयाने, दुख भये बिराने, (स्त्रि.)

लड़के जब कमाने योग्य हो जाते हैं, तो दुख दूर हो जाते हैं।

पूत मांगे गई, भतार लेती आई, (स्त्रि.)

उन स्त्रियों पर व्यंग्य, जो लड़का मांगने के लिए प्रायः फ़क़ीरों के पास जाया करती हैं।

भतार=खसम, पति।

पूत मीठ, भतार मीठ, किरिया केह कर खाऊं, (पू., स्त्रि.)

लड़का भी प्यारा, पति भी प्यारा, सौंगंध खाऊं., तो किसकी खाऊं। दो में से कोई भी एक काम न कर पाना, अथवा दो में से कोई एक चीज न छोड़ पाना। असमंजस में पड़ना।

पूत सपूत तो क्यों संचे, पूत कपूत तो क्यों संचे? (हिं.)

लड़का होशियार होगा, तो धन संचय करने की क्या ज़रूरत है, वह आप ही पैदा कर लेगा और निकम्मा होगा, तो सब उड़ा देगा, इसलिए धन-संचय बेकार है।

पूतों रात दुलंभनी, (स्त्रि.)

लड़का मुश्किल से मिलता है।

दुलंभनी=दुर्लभ।

पूरब जाओ या पच्छम, वही करम के लच्छन

(1) कहीं रहो, भाग्य पीछा नहीं छोड़ता । अथवा

(2) अकर्मण्य व्यक्ति कहीं कुछ नहीं कर सकता, चाहे जहां जाए।

पूरा तोल चाहे महंगा बेच, (व्यं.)

वजन में या नाप में कम नहीं देना चाहिए, दाम चाहे ज्यादा ले ले।

पूरी पड़े तो सपूत कहावे

जो घर का अभाव दूर कर सके, वही सपूत कहलाता है।

पूरा पड़ना=(मु.) सामग्री न घटना, संपन्न होना।

पूरी लपसी घर में खाय, झूठी देवी से आस लगाय

लोग पूड़ी-लपसी स्वयं खाते हैं, और देवी से अपनी मनोकामनाओं के पूरा होने की झूठी आशा रखते हैं।

पूरी से पूरी पड़े तो सभी न पूरी खायें

कोई आदमी हमेशा पूरी खाकर नहीं रह सकता। हमेशा मौज-मजा नहीं किया जा सकता।

पूरे गुरु घंटाल हैं

बड़े घुटे हुए हैं; बहुत चालाक हैं।

पूले तले गुज़रान करते हैं

किसी बहुत गरीब का कहना कि किसी प्रकार झोपड़ी में गुजर-बसर कर रहे हैं।

पूले तले=फूस की छाया के नीचे।

पूले पूले आंच है

घास के हर पूले में आग मौजूद है, अथवा हर पूले में आग लग सकती है। कष्ट सभी को होता है।

पूला=घास की बंधी हुई छोटी मुट्ठी।

पूस कोने घूस

पूस में आदमी सर्दी से बचने के लिए कोने में जाकर बैठता है।

पेट कुई, मुंह सुई

पेट बड़ा, मुंह छोटा। बहुत खाने वाले के लिए क.।

पेट के आगे 'ना' है

जब पेट भरा होता है, तभी 'ना' कहते हैं।

पेट के वास्ते परदेस जाते हैं

पेट के लिए घर छोड़कर बाहर जाना पड़ता है।

पेट चले, मन बख्तों को

दस्त लग रहे हैं और दाल खाने का मन हो रहा है। तब कहते हैं जब कोई विपद्ग्रस्त आदमी ऐसा काम करने की इच्छा करे, जिससे उसकी विपत्ति और बढ़ जाए।

(फ़ैलन ने बख्तों का अर्थ दाल किया है।)

पेट जो चाहे, सो करावे

पेट के लिए न जाने क्या-क्या करना पड़ता है।

पेट पालना कुत्ता भी जानता है

स्वार्थी मनुष्य के लिए कहा., जो दूसरों को खिलाना नहीं जानता।

पेट पिटारी, मुंह सुपारी

(1) जिस लड़के का पेट बड़ा हो, उसके लिए।

(2) बहुत खाने वाले के लिए भी कहा.।

पेट विच्च पड़ी रोटियां, तां सभी गल्लां भोटियां, (पं.)

पेट भरा होने पर सभी को बड़ी-बड़ी बातें सूझती हैं।

पेट बुरी बला है

पेट के लिए सब कुछ करना पड़ता है।

पेट भर और पीठ लाद

खाओ और मेहनत करो।

पेट भरा हो तभी मेहनत हो सकती है।

पेट भरे की बातें

जब कोई आदमी काम के प्रति उपेक्षा दिखाए और किसी काम को करने के लिए उचित से अधिक मजदूरी मांगे। तात्पर्य यह है कि आदमी का जब पेट भरा होता है, तो वह काम नहीं करना चाहता, और सौ तरह की बातें बनाता है।

पेट भरे के खोटे चाले

(1) पेट भरा होने पर बदमाशी सूझती है।

(2) बड़े आदमियों का पैसा प्रायः बुरे कामों में खर्च होता है।

पेट भरे के गुन

(1) किसी आदमी को जब किसी तरह खुश ही न किया जा सके, तब क.।

(2) प्रायः उस समय लड़कों से कहते हैं, जब खाना खा लेने के बाद वे काम में हील-हवाला करते हैं।

पेट भरे रिज़ाले और भूखे भलेमानस से डरिए

नीच का पेट भरा हो तो उससे, और शरीफ़ भूखा हो, तो उससे डरना चाहिए। क्योंकि नीच आदमी धनवान बन कर दुष्टता कर सकता है और इसी तरह भला आदमी गरीब बन जाने पर कष्टप्रद सिद्ध होता है।

पेट भी खाली, गोद भी खाली, (स्त्रि.)

(1) न खाने को है, न बाल-बच्चा ही है।

(2) न बच्चा पेट में है, न गोद में है।

पेट में आंत, न मुंह में दांत

बूढ़े आदमी का कहना कि पेट तो भरना ही पड़ता है और खा नहीं पाते।

पेट में घुसे तो भेद मिले

किसी के मन की बात जानना बहुत मुश्किल है, अथवा किसी के मन की बात उसके घनिष्ठ संपर्क में आने से ही जानी जा सकती है।

पेट में चूहे कलाबाज़ियां खा रहे हैं

बहुत भूख लगी है।

पेट भेंट, कार समेंट

किसी ऐसे व्यक्ति का कहना, जिसे वेतन तो थोड़ा ही मिलता है, पर काम बहुत करना पड़ रहा है। कह रहा है कि यह खूब रहे, जो मुझसे चाहते हैं कि अपना पेट अलग कर दूं और काम करता रहूं।

पेट में पड़ा चारा, कूदने लगा बिचारा, (स्त्रि.)

खाने को मिल जाने पर आदमी को उछल-कूद सूझती है।

पेट में पड़ी बूंद, नाम रखा महमूद, (स्त्रि.)

गर्भ रहते ही निश्चय कर लिया कि लड़का होगा। काम होने के पहले ही उसका गुंताड़ा लगाना।

पेट में पांव हैं

खाना मिलने पर ही आदमी काम कर सकता है।

पेट सब रखते हैं

खाने के लिए सबको चाहिए।

पेट से पांव काढ़े हैं
ऐसा व्यक्ति, जो देखने में सीधासादा, पर वास्तव में धृष्ट हो।
पेटहा चाकर, घसहा घोड़; खाय बहुत काम करे थोड़, (पू.)
बड़े पेट का नौकर और मोटा घोड़ा, खाता तो बहुत, पर काम कम करता है।
पेट है या कुठार?
बहुत खाने वाले के लिए क.।
कुठार=अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बर्तन।
पेट है या बेईमान की क़ब्र
बड़े पेट वाले के लिए क.।
पेटू मरे पेट को, नामी मरे नाम को
पेटू केवल खाने की चिंता करता है और महत्वाकांक्षी यश की।
पेड़ चढ़े यों ही दिखाई देता है
यदि तुम मेरी जगह होते तुम भी वैसा ही करते, जैसा मैं करता हूं।
पेड़ बोये बबूल के तो आम कहां से खाय?
बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है।
पेश-ए-तबीब मराओ, पेश-ए-कार आज़मूदा विराओ, (फ़ा.)
वैद्य के पास मत जाओ, अनुभवी के पास जाओ। ज्ञान से अनुभव बड़ा होता है।
पेशा हबीबुल्लाह, जो न करे सो लानतुल्लाह, (मु.)
ईश्वर काम करने वालों से प्रसन्न और न करने वालों से अप्रसन्न रहता है।
पैदल और सवार का क्या साथ
स्पष्ट।
पैदा हुआ नापैद के वास्ते
जन्म होता है मरने के लिए।
पैसा कभी नहीं टिकता
भाग्य एक-सा नहीं रहता।
लक्ष्मी स्थिर नहीं रहती।
पैसा गांठ का, जोरू साथ की
वक्त पर यही काम आते हैं।
पैसा न कौड़ी, बाजार में दौड़ी
व्यर्थ की उछल-कूद। साधन तो नहीं, फिर भी काम करने की हवस।
पैसा न कौड़ी, बांकीपुर की सैर, (स्त्रि.)
छैल-चिकनियों के लिए क.।
पैसा है नहीं, फिर भी शौक करना चाहते हैं।

पैसा नहीं पास, तो कैसे सूंघें बास
जब पैसा ही नहीं, तो इत्र कहां से लगाएं?
पैसा नहीं हाथ, चले नवाब के साथ
बड़ों की नक़ल करना।
पैसा पास का, घोड़ी रान की
वक्त पड़े पर काम आते हैं।
(रान की घोड़ी से मतलब है ऐसी घोड़ी, जिस पर बराबर सवारी की जाती हो।)
रान=जांघ।
पैसे पै धर के बोटियां उड़ाऊं, तौ भी दर्द न आवे, (स्त्रि.)
मां-बाप का ऊधमी लड़के से क.।
पैसा=चक्की का पाट, सिल।
पोथी तो थोथी भई, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।
स्पष्ट।
पोस्ती की आंच ऊपर को नहीं जाने की
अफ़ीम का धुआं नहीं जाता। कमरे में ही भरा रहता है।
(मतलब यह कि दुखिया की आह व्यर्थ नहीं जाती।)
पौ-बारह हो गए
काम बन गया; जीत हो गई।
(चौपड़ के खेल में पौ-बारह अर्थात एक और बारह का पांसा बहुत अच्छा माना जाता है।)
प्यासा कुएं के पास जाता है, कुआं प्यासे के पास नहीं आता
जिसकी गरज़ होती है, वही जाता है।
प्रातःकाल करो असनाना, रोग-दोष तुमको नहिं आना
स्पष्ट।
प्रीत करें से बावरे, करके तोड़ें छैल।
गल में रस्सा डाल के, ओर निबाहवें बैल।
जो प्रेम करे, वह पागल है, कर के तोड़े, वह गंभीर पुरुष नही; गले में जब रस्सी पड़ जाती है, तो बैल भी अंत तक अपने कर्तव्य का पालन करता है।
प्रीत जो कीजे ईख से, जामें रस की खान।
गांठ-गांठ में रस नहीं, यही प्रीत की हान।
प्रेम तो ईख से करना चाहिए, जिसमें रस ही रस भरा होता है। बस कमी इतनी है कि उसकी गांठों में रस नहीं होता।
प्रीत डगर जब पग रखा, होनी होय सो होय।
नेह नगर की रीत है, तन-मन दोनों खोय।
स्पष्ट।

प्रीत न जाने जात कुजात।
नींद न जाने टूटी खाट।
भूख न जाने बासी भात।
प्यास न जाने धोबी घाट।

प्रीत जात-कुजात नहीं देखती, नींद टूटी खाट नहीं देखती, भूख बासी भात नहीं देखती और प्यास भी अच्छा-बुरा पानी नहीं देखती।

(सं.—क्षुधातुराणां न बलं न बुद्धि;
तृष्णातुराणां न च पात्र शुद्धि;।
कामातुराणां न भयं न लज्जा,
निद्रातुराणां न च भूमिशय्या।)

प्रीत न टूटे अनमिले,
उत्तम मन की लाग।
सौ जुग पानी में रहे,
चकमक तजे न आग।

सच्ची प्रीति कभी छूटती नहीं।

प्रीतम, हर से नेह कर, जैसे खेत किसान।
घाटा दे उर डंड भरे, फेर खेत से ध्यान।

ईश्वर से उसी तरह प्रेम करना चाहिए, जैसे किसान अपने खेत से करता है। हानि उठाता है, लगान भी देता है, फिर भी अपने खेत को नहीं छोड़ता।

प्रीतम प्रीतम सब कहें,
प्रीतम जाने नहिं कोय।
एक बार जो प्रीतम मिलें,
सदा अनंदी होय।

स्पष्ट।

प्रेम कहानी कहत हूं, सुनो सखी री आय।
पी ढूंढ़न को मैं गई, आई आप हिराय।

ऐ सखी ! मेरी प्रेम कहानी सुन। मैं प्रियतम को ढूंढ़ने गई थी, किंतु अपने-आपको खोकर आ गई।

प्रेम पियाला वह पिये, जो सीस दच्छना देइ।
लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेम का लेइ।

प्रेम तो वही कर सकता है, जो सिर काट कर दे सके। वह क्या प्रेम करेगा, जिसे अपने प्राणों का मोह हो।

प्रेम पीत की रीत में, यह अनरीत सुहाय।
बरसें आंखें, सूखे हिया, आग लगे जिय मांह।

प्रेम की रीति में सब से बड़ी उल्टी बात यह है कि आंखें तो बरसती हैं (आंसू निकलते हैं), हृदय सूखता है और छाती (बिरह से) जलती है।

फ

फ़कत ताबीज़ से ही काम नहीं निकलता, कुछ कमर में भी बूता चाहिए

कोई आदमी फ़कीर से लड़का मांगने गया। उसने मंत्र पढ़ कर ताबीज़ दिया, साथ ही उक्त बात कही।

(केवल दैव के भरोसे रहने से काम नहीं चलता, कुछ अपना पुरुषार्थ भी करना चाहिए।)

फ़कीर अपनी कमली में ही खुश है

जो है, उसी में संतोष करता है।

फ़कीर, कर्ज़दार, लड़का, तीनों नहीं समझते

तीनों ही हठी होते हैं।

फ़कीर की ज़बान किसने कीली है

फ़कीर के मुंह को कोई बंद नहीं कर सकता।

कीलना=मेख जड़ना, कील ठोककर बंद करना मंत्र पढ़कर किसी चीज के प्रभाव को नष्ट करना।

फ़कीर की झोली में सब कुछ

फ़कीर सब कुछ दे सकता है।

फ़कीर की सूरत ही सवाल है

फ़कीर को मांगने की ज़रूरत नहीं पड़ती। देखने से ही मालूम हो जाता है कि वह कुछ चाहता है।

फ़कीर को कंबल ही दुशाला

थोड़े में ही संतोष करता है।

फ़कीर को जहां रात हो गई, वहीं सराय है

उसके रहने का कोई ठिकाना नहीं होता।

फ़कीर को तीन चीज चाहिए फ़का, कनात और रियाज़

स्पष्ट।

(फ़ारसी में फ़कीर शब्द तीन अक्षरों से लिखा जाता है—फे., काफ़ और रे जो कि क्रम से फ़ाका (व्रत), क़नात (संतोष) और रियाज़ (अभ्यास) इस तीन शब्दों के प्रथमाक्षर हैं।)

फ़कीर रा व मुज़ादला चे कार? (फ़ा)

फ़कीर को लड़ने से क्या मतलब?

फ़कीरी शेर का बुरका है

फ़कीरों में बड़ी शक्ति होती है।

बुरका=(अ. बुर्क़ः) एक प्रकार का आच्छादन या पहनावा जिससे मुसलमान स्त्रियां सिर से पैर तक अपने को ढके रहती हैं। आवरण।

फजर फजर की 'नाह' कुछ नहीं

सुबह-सुबह कोई ग्राहक जब सौदा लेने से इंकार कर देता है, तब दूकानदार कहा करता है।

(दूकान खुलते ही कोई ग्राहक सौदा लेने आए और यों ही वापिस चला जाए, तो दूकानदार इसे अपशकुन मानते हैं।)

फजर फजर 'न हां' मत करो

दे. ऊ.।

फ़ज़ल करे तां छुट्टियां, अदल करे तां लुट्टियां, (पं.)

दया करने से तो मैं छूट सकता हूं, पर न्याय से तो मेरा सर्वनाश हो जाएगा।

(अपराधी दोष को स्वीकार करता हुआ क्षमा याचना के रूप में कहता है।)

फटाहा तिलक और मधुरी बानी,
दग़ाबाज़ की यही निशानी

पाखंडियों के लिए क.।

तिलक साधु लोग ही लगाया करते हैं।

फटाहा=चौड़ा।

फटे को न सिये और रूठे को न मनाए, तो क्यों कर गुज़ारा होय? (स्त्रि.)

दे.—रूठे को मनाइए नहीं...।

फटे न फूटे, जिउ जान न छूटे

किसी चीज से जी ऊब जाए, तब क.।

फटे में पांव, दफ्तर में नांव

झगड़े में पड़ने ही से अदालत में नाम लिखा जाता है। *(गवाही के वास्ते।)*

फ़तह और शिक़स्त खुदा के हाथ है

हार-जीत ईश्वर के अधीन है।

फ़तह तो खुदा के हाथ है, पर भार भार तो किए जाओ

होगा वही, जो ईश्वर को करना है; पर अपना उद्योग तो किए जाओ।

फ़तह दाद इलाही है

जीत तो ईश्वर की देन है।

फ़रज़ंद वह जो पंद माने, और बाप का कहना फ़र्ज़ जाने

लड़का तो वही, तो उपदेश माने और बाप के कहने पर चले।

फ़रज़ंद वही, जो खलक हो

आज्ञाकारी लड़का ही लड़का है।

फर न फरी, बगीचा के नांव, (पू.)

फल न फली नाम बगीचा।

कोरा दिखावा।

फ़रिया ना सारी, बड़ी सोभा हमारी, (पू., स्त्रि.)

झूठी शेखी बघारने वाला।

फ़रिश्तों के भी पर जलते हैं

ऐसी जगह जहां (काम करने या पहुंचने में) बड़े-बड़े भी घबराते हैं।

फ़रिश्तों को भी खबर नहीं

बहुत ही गुप्त बात।

फ़रीद शकरगंज

मरतुल्ले टट्टू पर जब कोई बूढ़ा आदमी बैठा जा रहा हो, तो लड़के उसे चिढ़ाने के लिए कहा करते हैं।

(फ़रीद शकरगंज के लिए दे. नीचे।)

फ़रीद शकरगंज, न रहे दुख न रहे रंज

फ़रीद शकरगंज करें कि तुम्हें कोई दुख और शोक न हो। फ़रीद शकरगंज मुसलमानों के कोई औलिया हो गए हैं।

फर्ज़ से अदा हो गए

अपना कर्तव्य-पालन कर चुके।

(लड़के-लड़कियों का विवाह कर चुकने के बाद प्रायः मां-बाप कहा करते हैं।)

फल खाना आसान नहीं

फल मुश्किल से खाने को मिलते हैं। पहले पेड़ लगाना पड़ता है, वह बढ़ता है, तब उसमें फल आते हैं।

बिना परिश्रम के कोई काम नहीं होता।

फलसा टूटा, गांव लूटा

फाटक टूटने पर गांव आसानी से लूटा जा सकता है।

फलाने की मां ने खसम किया, 'बहुत बुरा किया'; 'कर के छोड़ दिया' और भी बुरा किया

(1) अव्वल तो कोई काम करना नहीं चाहिए, और यदि करे; तो उसका परिणाम देखे बिना अधूरा छोड़ना नहीं चाहिए। जो कर लिया सो कर लिया।

(2) एक भूल सुधारने के लिए दूसरी भूल कर बैठना।

फलाने की=अमुक की।

फ़ाकाकशी की नौबत पहुंची

माली हालत बहुत खराब हो गई।

फ़ाकामस्ती

जो मिले वही खाकर मस्त रहना।

फाटक टूटा, गढ़ लूटा

फाटक टूटने से किला फ़तह हो सकता है। मोरचा मारा और काम बना।

फाटे से जुड़ते नहीं, कोटन करो उपाय। मन, मोती और दूध रस, इनका यही सुभाव।

एक बार फटने पर फिर नहीं जुड़ते, चाहे जितना उपाय करो; मन, मोती और दूध का यही स्वभाव है।

फटना=दरार पड़ना।

मन फटना=विरक्ति हो जाना, संबंध रखने को जी न चाहना।

दूध फटना=उसका इस तरह बिगड़ जाना जिससे पानी और सार-भाग अलग-अलग हो जाएं।

फ़ातिहा द दरूद, खा गए मरदूद !

निकम्मे कहीं के, बिना फ़ातिहा पढ़े ही खा गए? फालतू आदमी के लिए क.।

फ़ातिहा=प्रार्थना। भोजन के पहले मुसलमानों में ईश्वर की प्रार्थना करने का नियम है।

फातिहा न दरूद, खाने को मौजूद

स्पष्ट। दे. ऊ.।

फ़ारखती लिखवाना

कर्ज़ से छुटकारा पाने के लिए कागज लिखवाने को फ़ारखती लिखवाना कहते हैं।

'जो हमने दिया था, सो सब मिल गया; अब हमारी जान छोड़ो'—ऐसा भाव प्रकट करने के लिए कहावत।

(इस पर एक कहानी है—किसी कर्ज़दार ने अपने महाजन को कर्ज़ा चुकाने के लिए अपने घर बुलाया। जब वह कागज-पत्र लेकर अपना हिसाब चुकाने आया, तब कर्ज़दार ने अपने दरवाजे पर बाजा बजाने का हुक्म दिया। बाजा जब जोर से बजने लगा, तब कर्ज़दार ने महाजन को पीटना शुरू कर दिया और तब छोड़ा जब उसने फ़ारखती लिखवा ली। बाजों के कारण महाजन का चिल्लाना कोई नहीं सुन सका।)

फ़ारसी रा टंग तोड़ा, ताकि ऊ लंगड़ी शबद

फ़ारसी की टांग तोड़ दूंगा, जिससे कि वह लंगड़ी हो जाए।

(कम पढ़े-लिखे फ़ारसीदां के लिए व्यंग्य में क.।)

फ़ाल की कौड़ियां मुल्ला को हलाल

हक़ का पैसा सब को पचता है।

(पांसा या कौड़ियां फेंककर शुभ-अशुभ बताने की क्रिया को फ़ाल कहते हैं।)

फ़ाल ज़बान या फ़ाल कुरान

शुभ-अशुभ या तो (फ़कीर की) ज़बान से या कुरान से जाना जा सकता है, कोई और उपाय नहीं।

फालूदा खाते दांत टूटें तो बला से

फालूदा खाने से दांत तभी टूटेगा, जब वह पहले से ही बिल्कुल सड़ गया हो।

(ऐसी विपत्ति के लिए खेद करना वृथा है, जिससे बचना मुश्किल रहा हो।

फालूदा=गेहूं के सत की बनी एक प्रकार की वस्तु।

फावड़ा न कुदार, बड़ा खेत हमार, (कृ.)

झूठी शेखी बघारना।

फावड़े का नाम गुलसफ्फा

जब किसी आदमी के पीछे बहुत दिनों तक घूमना और खुशामद करना व्यर्थ सिद्ध हो और कोई लाभ की आशा न हो, तब क.।

(कथा है कि कोई आदमी एक फ़कीर की प्रशंसा सुनकर उसका चेला बन गया। किंतु बारह वर्ष तक उसके साथ रहने पर भी उसे कोई बात सीखने को नहीं मिली। इस बीच उसने एक दिन फावड़े के लिए दूसरा शब्द पूछा। इस पर गुरु ने ऊपर लिखा जवाब दिया। वास्तव में गुलसफ्फा का कुछ भी अर्थ नहीं होता।)

फ़िक्र और जिक्र दोनों चाहिए

फ़कीरों को ध्यान और आराधना दोनों ही करनी चाहिए।

फ़िक्र करे क्या होता है, होना था सो हो गया

बीती बात की चिंता नहीं करनी चाहिए।

फ़िक्र बुरा फ़ाका भला, फ़िकर फ़कीरा खाये

चिंता बुरी चीज है, फ़कीरों को भी बीमार बना देती है, इससे फ़ाका अच्छा।

फिट बाका जीना, जो तके पराई आस

स्पष्ट।

फिरनी फालूदा एक भाव नहीं होता

अच्छी-बुरी सब चीज एक भाव नहीं मिलती।

(फिरनी चावल और दूध से बनती है और फालूदा गेहूं तथा दूध से, जो फिरनी से श्रेष्ठ मानी जाती है।)

फिर वे घोड़े यहीं से

किसी को डांट बताकर भगाना।

फिर भी मोची के मोची रहे

जैसे थे वैसे ही रहे, कोई उन्नति नहीं कर सके।

फिर मुड़ली बेल तले, (पू.)

फिर जोखिम में पड़े।

(बेल तले सिर मुड़वाने से सिर फूटने का डर है, क्योंकि बेल का फल बहुत सख़्त होता है।)

फूंक-फूंक के कदम रखते हैं

होशियारी से चलते हैं।

फूंक मशाल, उठा चौपाला

मशाल जलाओ और उठाओ पालकी। अर्थात जल्दी करो।

फूंके के न फांके के, टांग उठा के तापे के, (पू., स्त्री.)

आग को न फूंकना न फांकना, केवल पैर उठाकर तापना।

(स्वार्थी और आलसी आदमी को क.।)

फूई-फूई कर के तालाब भरता है

थोड़ा-थोड़ा इकट्ठा होने से ही बहुत हो जाता है।

फूई-फूई=बूंद-बूंद।

फूटी आंख का तारा

विधवा का इकलौता लड़का।

फूटी देगची, कलई की भड़क

दिखावटी चीज।

फूटी सही, आंजी न सही

आंख जाती रही, मंजूर हुआ; मगर अंजन की जलन सहना

मंजूर नहीं हुआ।

(ऐसे कंजूस के लिए क., जो अपनी किसी कीमती चीज की रक्षा के लिए थोड़ा भी खर्च न करना चाहे।)

फूफी मिस लेना, भतीजे मिस देना

एक रिश्ते से लेना, दूसरे से देना। व्यवहार चुका देना।

फूल आए हैं तो फल भी लगेंगे, (स्त्रि.)

यहां फूल से मतलब स्त्रियों के ऋतुधर्म से है और फल से मतलब बच्चों से। अभिप्राय यह कि जब स्त्री ऋतुमती होने लगी है, तो उसके बच्चा भी होगा।

फूल की डाल नीचे को झुके

भला आदमी सदैव विनम्र होता है।

फूल की बैरन धूप, घी का बैरी कूप

फूल धूप में सूख जाता है और घी कुप्पे में रखा-रखा ख़राब हो जाता है।

फूल झड़े तो फल लगे

(1) फूल गिरता है, तो फल लगता है।

(2) स्त्री ऋतुमती होगी, तो बाल-बच्चा भी होगा।

फूल टहनी में ही अच्छा लगता है

हर चीज अपने स्थान पर ही शोभा देती है।

फूल-फूल कर के चंगेर भरती है

थोड़ा-थोड़ा कर के बहुत हो जाता है।

फूल नहीं, पंखुड़ी ही सही

(1) बहुत नहीं, तो थोड़ा ही सही।

(2) जो मिला, वही बहुत।

फूल सूंघ कर रहते हो

बहुत थोड़ा खाने वाले से क.।

फूला बदन में नहीं समाता

बहुत प्रसन्न है।

फूली-फूली गौने को, ठसक निकल गई रोने को, (स्त्रि.)

विवाह के बाद स्त्रियों को ससुराल आने की बड़ी प्रसन्नता होती है, पर बाद में वहां जब कष्ट होते हैं, तो अपनी सब शान भूल जाती हैं।

फूले-फूले फिरत हैं, आज हमारो ब्याव।
तुलसी गाय बजाय के, देत काठ में पाव।

गृहस्थ-जीवन में फंसना जानबूझकर एक मुसीबत मोल लेना है।

फूहड़ करे सिंगार, मांग ईटों से फोड़े, (स्त्रि.)

फूहड़ का सिंगार भी अजीब होता है। वह सेंदुर की जगह ईंट घिसकर मांग भरती है ईंट घिसने से खून निकल आता है।

फूहड़ का माल सराह-सराह खाइये

मूर्ख का माल खुशामद से खाया जाता है। उसकी प्रशंसा करते जाओ और उससे चाहे जो चीज झटक लो।

फूहड़ का माल हंस-हंस खाइए

स्पष्ट।

दे. ऊ.।

फूहड़ के घर उगी चमेली, गोबर मांड़ उसी पर गेरी, (स्त्रि.)

मूर्ख अच्छी चीज की कद्र करना नहीं जानता।

फूहड़ के घर खिड़की लगी, सब कुत्तों को चिंता पड़ी,
बंडा कुत्ता बांचे सौन, लगी तो है पर देगा कौन।

फूहड़ के घर में खिड़की लगी देखकर सब कुत्तों को चिंता हुई कि अब हम भीतर कैसे जा सकेंगे? इस पर एक दुमकटा कुत्ता बोला कि खिड़की लगी तो है, पर उसे बंद कौन करेगा? अर्थात हम लोग आसानी से भीतर जा सकेंगे। मूर्ख अपनी सुविधाओं से पूरा लाभ नहीं उठाता।

सौन बांचना=शकुन बांचना, सोच-विचार कर बात कहना।

फूहड़ चाले, नौ घर हाले, (स्त्रि.)

फूहड़ बाहर जाती है, तो नौ घर हिल जाते हैं। अर्थात बहुत गंवारू ढंग से चलती है। अथवा, वह जहां जाएगी वहां कुछ-न-कुछ झगड़ा-फ़साद खड़ा करेगी।

फूहड़ जोरुआ, साग में शोरुआ, (मु., स्त्रि.)

फूहड़ के सब काम बेतुके होते हैं, वह हरी सागभाजी का शोरुवा बनाती है।

(सागभाजी सूखी ही बनती है, रसेदार नहीं।)

फूहड़ सीने बैठे, तब सुई तोड़े, (स्त्रि.)

बेशऊर हमेशा भौंडे ढंग से काम करता है, सीने बैठता है, तो सुई तोड़ देता है।

फेरों की गुनहगार है, (हिं.)

उसका अपराध यही है कि वह उसकी भांवर पड़ गई। हिंदू घर की बाल-विधवा के लिए क.। बेचारी अपना दूसरा विवाह नहीं कर सकती।

फौज की अगाड़ी, आंधी की पिछाड़ी

इसको संभालना मुश्किल होता है।

फौज बे वकील, साहब बे फील

बिना दूत की फौज और बिना हाथी का सरदार, ये जंचते नहीं।

ब

बंगाला जादू का घर है

प्राचीन काल में बंगाल और कामरूप जादू-टोने के लिए प्रसिद्ध रहे हैं, इसी से कहावत बनी।

बंगाली जो आदमी, तो प्रेत कहो किसका?

स्पष्ट।

बंगाले की बंगालिन जादू भरी

दे.—बंगाला जादू...।

बंद के जाये बंद में नहीं रहते, (स्त्रि.)

जो पराधीनता में पैदा हुआ हो, वह हमेशा पराधीन नहीं रहता। किसी के दिन सदा एक से नहीं रहते।

बंदगी ऐसी और इनाम ऐसा

इतनी सेवा की और बदले में यह मामूली इनाम!

बंदगी बेचारगी

नौकरी विवश होकर करनी पड़ती है।

बंदर एक निसाचरी लाया कर अपनी अर्द्धंगी।
लालदास रघुनाथ दया से उत्पन्न हुए फिरंगी।

अंग्रेजों के लिए क.।

(किंवदंती है कि भगवान राम ने हनुमानजी की सेवाओं के लिए उन्हें यह वरदान दिया था कि उनके वंशज कलियुग में भारत में राज्य करेंगे। उसी के आधार पर किसी ने उक्त तुकबंदी गढ़ी।)

बंदर का ज़ख़्म (या घाव)

जो जल्दी नहीं भरता।

जो मनुष्य अपने घाव या फोड़े को हमेशा खुजाया या नोचा करता है और उसे जल्दी सूखने नहीं देता, उसके लिए क.।

बंदर का हाल मुछंदर जाने

मुछंदर बंदरों के सरदार को कहते हैं। उनका हाल वही जान सकता है।

किसी का हाल उसका साथी ही अच्छी तरह जानता है।

बंदर की आशनाई क्या?

किसी मामूली आदमी या धूर्त से क्या मित्रता करना?

बंदर की आशनाई घर में आग लगाई

धूर्त से मित्रता करने में हानि उठानी पड़ती है।

बंदर की टोपी

ऐसा आदमी जो क्षण भर के लिए भी शांत न बैठे।

बंदर की तुरत, फुरत, सुरत मशहूर है

बंदर बड़ा चंचल, फुर्तीला और समझदार होता है।

बंदर की दोस्ती, जी का ज़िआन

मूर्ख या नटखट से मित्रता करना अपने लिए एक आफत मोल लेना है।

(यह कहावत प्रायः बच्चों के लिए ही प्रयुक्त होती है।)

बंदर की सेना

शैतान लड़कों का झुंड।

बंदर के गले में मोतियों की माला

अयोग्य या मूर्ख को ऐसी चीज, जो उसकी कद्र न जाने।

बंदर के हाथ आइना

व्यर्थ है, अव्वल तो वह कुरूप होता है, अपना चेहरा क्या देखेगा? फिर वह उसे फोड़ डालेगा।

बंदर के हाथ नारियल

वह क्या समझे कि यह क्या वस्तु है। उसे वह फेंक देगा।

बंदर क्या जाने आदी का सवाद, (पू.)

मूर्ख किसी अच्छी वस्तु की कद्र नहीं कर सकता।

आदी=अदरक।

बंदर नाचे, ऊंट जल मरे

बंदर को नाचते देखकर ऊंट ईर्ष्या से जलता है क्योंकि वह

स्वयं नहीं नाच सकता।
(दूसरों की प्रसन्नता को न देख सकना।)

बंदर भभकी (या घुड़की)
कोरा डर दिखाना।

बंदा आज़िज़ है, (मु.)
(1) मनुष्य एक दुर्बल प्राणी है। अथवा
(2) मैं दुखी हूं।
आज़िज़=(1) दीन, विनम्र। (2) तंग, परेशान।

बंदा जोड़े पली पली, रहमान उड़ाये कुप्पे
जब किसी का बहुत परिश्रम और कंजूसी से इकट्ठा किया गया धन एकदम नष्ट हो जाए, तब क.।

बंदा बशर है
आदमी आखिर आदमी ही तो है।
जब किसी से भूल होती है, तब क.।

बंदी जब शादी करती है, तब ऐसी ही करती है, (स्त्रि.)
किसी के शादी-ब्याह के असंतोषजनक प्रबंध पर चुटकी।

बंदे का चाहा कुछ नहीं होता, अल्लाह का चाहा सब कुछ होता है
ईश्वर की इच्छा ही सब कुछ है।

बंधी मुट्ठी लाख बराबर
(1) मुट्ठी बांध कर किसी को जो दान या इनाम दिया जाता है, उसके विषय में इसका अंदाज़ लगाना कि कितना क्या दिया गया, कठिन है। लेने वाला उसे चाहे जितना बढ़ा कर बता सकता है कि मुझे इतना इनाम मिला।
(2) साधारण आदमी की आर्थिक स्थिति का जब तक लोगों को असली पता नहीं चलता, तब तक लोग धनवान ही समझते रहते हैं। पर एक बार भेद खुल जाने पर वह बात नहीं रहती।

बंधी रहे, न टके बिकाय
(1) चीज रखी भले ही रहे, पर सस्ती नहीं देंगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क.। अथवा
(2) चीज अगर बहुत दिनों रखी रहे, तो बाद में उसे कोई टके में भी नहीं पूछता, यह अर्थ भी हो सकता है।

बकरा मुटाय, तब लकड़ी खाय
बकरा मोटा होता है, तब मार खाता है; क्योंकि वह लड़ाका हो जाता है।
लालची कर्मचारी के लिए क.।

बकरी करे घास से यारी तो चरने कहां जाय?
कोई आदमी अगर मेहनताना मांगने में लिहाज़ करे या जो जिस काम को करता है, उसमें मुनाफ़ा न ले, तो उसका खर्च कैसे चले?

बकरी का-सा मुंह चलता ही रहता है
दिन-रात खाया करता है।

बकरी के नसीबों छुरी है
बकरी के भाग्य में तो मरना ही बदा है। अच्छा काम कर के भी उसका फल न मिलना।

बकरी जान से गई, खाने वाले को मजा न आया
जब कोई दूसरे के लिए मर मिटे, पर वह उसका एहसान न माने, तब क.।

बकरी ने दूध दिया, मेंगनी भरा
जब कोई रो-झींक कर एहसान करे, तब क.।

बकरी या सस्से की तीन ही टांगें
सरासर झूठ बोलना। जब कोई झूठ भी बोले और उसे सच साबित करने के लिए कटिबद्ध भी रहे, तब क.।
दे.—मुरगी की एक ही...।

बकरी से हल चलता तो बैल कौन रखता?
जिसका जो काम है, वह उसी से निकलता है।

बकरे की मां कब तक ख़ैर मनाये
एक-न-एक दिन मारा ही जाएगा।

बख़्त उड़ गए, बुलंदी रह गई
अच्छे दिन निकल गए, केवल नाम रह गया।

बख़्त दें मारी तो कर घोड़े असवारी।
बख़्त न दें मारी तो कर खा चरबेदारी।
भाग्य से ही सब होता है।
बख़्त=वक्त; समय; भाग्य।
चरबेदारी=साईसी।

बख़्तावर का आटा गीला, कमबख़्त की दाल गीली
पर इसमें पहले की कोई हानि नहीं होती, दूसरे की मुसीबत आ जाती है।
बख़्तावर=भाग्यवान, धन-संपन्न।

बख़्तों के बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया
भाग्य के ऐसे बली कि पकाई तो खीर, बन गया दलिया।
बदकिस्मत के लिए क.।

बख़्शी के धग्गड़
बख़्शी का यार।
व्यर्थ का रोब दिखाने वाले से अवज्ञापूर्वक कहना, जैसे 'लाट का साला'।

बख़्शी की बिल्ली, चूहा लंडूरा ही जियेगा

(कथा है कि एक बार एक बिल्ली ने किसी चूहे को पकड़ लिया। बिल्ली से छूटकर चूहा बिल में घुस गया, पर उसकी पूंछ टूटकर बिल्ली के मुंह में रह गई। किंतु बिल्ली तो समूचे चूहे को खाने पर तुली हुई थी। इसलिए चूहे से बोली—'ख़ैर, अब तुम बाहर निकल आओ, मैं तुम्हारी पूंछ जोड़ दूंगी।' इस पर चूहे ने उक्त वाक्य कहा कि 'बस, अब रहने दो, मैं बिना दुम के ही जिऊंगा।')

बगड़ में बगड़ तीन घर, तेली, धोबी, नाई

बुरा पड़ोसी।

बगड़=घिरा हुआ मैदान; आंगन; ढोरों के खड़े होने की जगह।

बगल में ईमान दाब कर बात करते हैं

धोखेबाज़ी की बात करते हैं।

बगल में छुरी, मुंह में राम-राम, (हिं.)

धूर्त।

बगल में तूती का पींजड़ा, 'नबी जी भेजो'

तोते को कोई पढ़ा रहा है कि हे भगवान, भेजो किसी का मुफ्त का माल।

धूर्त या लोभी।

बगल में मुंह डालो

अपनी तरफ देखो। जो बुराई तुम मुझ में देख रहे हो, वह तुम में भी है।

बगल में लड़का, शहर में ढिंढोरा

चीज तो बगल में रखी है, पर उसे इधर-उधर ढूंढ़ना।

बगल में सोंटा, नाम गरीबदास

कहने को सीधे-सादे, पर हैं तेज-तर्रार।

सोंटा=छड़ी।

बगला भगत

(1) धर्म का ढोंग करने वाला।

(2) कपटी, दगाबाज।

(स.—वक; परमधार्मिकः (रामायण)।)

(बगुला मछली पकड़ने के लिए तालाब या नदी के किनारे एक पांव उठाकर खड़ा रहता है, मानो तपस्या कर रहा है, पर ज्यों ही मछली सामने आई, उसे पकड़ लेता है। उसी से मुहा. बना।)

बगला भी धोबी का भाई है

क्योंकि वह भी पानी में खड़ा रहता है।

बगला मारे पंख हाथ

किसी को नुकसान भी पहुंचाया और उससे कुछ लाभ भी नहीं हुआ।

(बगुले में पर ही पर होते हैं, मांस बहुत थोड़ा होता है।)

बगली घूंसा

(1) छिपा हुआ दुश्मन।

(2) धोखे की मार।

बगैर सीखे कुछ नहीं आता

सब काम सीखना पड़ता है।

बचनों का बांधा खड़ा है आसमान

वचन बड़ी चीज है। किसी को वचन देकर तोड़ना नहीं चाहिए।

बच, वे जुम्मा, आंधी आई

आती विपत्ति से सावधान होने के लिए क.।

बचे नर, हजार घर

एक अच्छे आदमी की रक्षा होने से हजार घरों की रक्षा होती है।

बच्चे ते खिला दें दूध ते भात, बड़े हुए तो मार दे लात, (पं.)

बच्चे को दूध-भात खिला कर पालो, पर बड़ा होने पर वह लात मारता है। कृतघ्न लड़कों के लिए लिए क.।

बछड़ा खूंटी ही के बल कूदता है

छोटा आदमी बड़े का सहारा पाकर ही अकड़ दिखाता है।

बजा कहे जिसे आलम उसे बजा समझो।
आवाज़े खलक को नक्कारे ख़ुदा समझो।

जिस बात को दुनिया ठीक कहे, उसे ही ठीक मानना चाहिए। दुनिया की आवाज ईश्वर की ही आवाज है।

नक्कारे खुदा=ईश्वर का डंका।

बजाज की गठरी पर झींगुर राजा

क्योंकि वह कपड़ों को खा डालता है। दूसरों की वस्तु पर घमंड करना।

बजाज बदज़ात

क्योंकि वे अक्सर ठगते हैं।

बजा दे, खनिया ढोलकी, मियां ख़ैर से आए

शायद कोई आदमी किसी कठिन काम को करने का बीड़ा लेकर गया था, पर वह उसे नहीं कर सका, और असफल हो कर लौट रहा है। उसी का मजाक उड़ाया जा रहा है।

खनिया=खना की स्त्री। गाने-बजाने वाली एक याचक जाति।

बजा नक्कारा कूच का उखड़न लागी मेख।
चलनेहारे चल बसे, खड़ा हुआ ते देख।

स्पष्ट।

मेख=खूंटी।

बटिया आऊं, बटिया जाऊं; खेतक चराऊं, न बाली खाऊं, (स्त्रि.)

रास्ते से आती हूं, रास्ते से जाती हूं, खेत चराती हूं, बाली नहीं खाती। दूसरे का सरासर नुकसान कर के अपनी सफाई दे रही है कि में किसी का कुछ बिगाड़ती नहीं। सचमुच ईमानदार।

बटिया की राह, बेनिर्बाह

पगडंडी का रास्ता आदमी को कहीं-का-कहीं ले जाता है।

बटुर हाथ दुश्मनवें लागो, (भो.)

दुश्मन को छोड़ना नहीं चाहिए। जब भी मौका लगे, कड़ी मार मारें।

बटुर हाथ=हाथ बटोर कर मुट्ठी बांध कर।

बड़ तले का भूत

ऐसा व्यक्ति, जिससे आसानी से पीछा न छुड़ाया जा सके। *(भूत-प्रेत श्मशान, नदियों के घाटों तथा बड़े वृक्षों पर रहते हुए माने जाते हैं। उनमें बटवृक्ष का भूत बहुत विकट समझा जाता है। इसीलिए कहा गया है।)*

बड़ रोवे बड़ाई के, छोट रोवे पेट के

वड़ा आदमी नाम के लिए रोता है और छोटा भूखां मरता है, इसलिए रोता है। रोने से किसी को छुटकारा नहीं।

बड़ा जाने किया, बालक जाने हिया

सयाना आदमी काम से खुश होता हे और बच्चा प्यार से। हिया=हृदय।

बड़ा निवाला खाइये, बड़ा बोल न बोलिए

बड़े आदमी बनकर रहो, पर बड़ी बात किसी से न कहो। निवाला=कौर।

बड़ा बोल=अप्रिय या कठोर बात।

बड़ा बोल काज़ी का प्यादा

कड़ी बात कहने वाला काज़ी का प्यादा है, क्योंकि वही उद्दंडता से बोलता है।

बड़ा ही पांच है

बड़ा शातिर है।

बड़ी कमाई पर नोंन बिकवा

(1) बहुत कमाई की तो नमक बेचा। अथवा

(2) बहुत कमाकर भी नमक बेचना।

(नमक बेचना साधारण पंसारियों का काम समझा जाता है।)

बड़ी टेढ़ी खीर है

मामला बड़ा मुश्किल है।

(कथा है कि एक बार किसी मनुष्य ने एक जन्म के अंधे फ़कीर को खीर खिलानी चाही। अंधे तो शक्की मिज़ाज़ के होते ही हैं। इसलिए फ़कीर ने पूछा—'बाबा, यह खीर कैसी होती है ? जवाब मिला=सफेद रंग की। फ़कीर ने फिर पूछा—सफेद रंग कैसा होता है ? जवाब मिला—जैसे बगुला। फ़कीर ने पूछा—बगुला कैसा होता है ? इस पर उस मनुष्य ने बगुले की गर्दन को बताने के लिए अपना हाथ टेढ़ा कर के कहा—देखो ऐसा होता है। फ़कीर ने उसके टेढ़े हाथ को जो टटोला तो बड़ा घबराया और बोला—नहीं बाबा, मैं ऐसी टेढ़ी खीर नहीं खाऊंगा, यह तो मेरे गले में ही फंस जाएगी। इसी से उक्त मुहावरे का जन्म हुआ।)

बड़ी ननद शैतान की छड़ी, जब देखो तब तीर-सी खड़ी?

भावज का कहना ननद के बारे में।

(बड़ी ननद हमेशा भावज पर रोब जमाती है, और उसे डांटने-डपटने से भी नहीं चूकती। इसीलिए भावज ऐसा क.।)

बड़ी नाक वाले, (हिं.)

बड़ी इज्ज़त वाले। व्यंग्य में ही क.।

बड़ी फ़ज़र, चूल्हे पर नज़र

सवेरा हुआ और खाने की फ़िक्र पड़ी।

बड़ी बहू को बुलाओ जो खीर में नून डाले, (हिं.)

जब घर की किसी सयानी स्त्री से कोई भूल हो जाए या जब कोई अपने को बहुत चतुर समझे, तब उसे व्यंग्य में क.।

बड़ी बहू, बड़ा भाग, (हिं.)

वहू की उम्र जब वर से अधिक होती है, तब वर पक्ष के लोगों को तसल्ली देने के लिए क.।

बड़ी भाभी मां के थान का, (हिं.)

बड़ी भावज मां के बराबर होती है।

बड़ी भैंस पर महराई

बड़ी भैंस में अधिक मक्खन होता है।

बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है

(1) बलवान निर्बल को सताता है।

(2) एक जीव दूसरे पर आश्रित है।

मत्स्य न्याय।

बड़े अन्नपूरना बने हैं

बड़े दानी बने हैं। व्यंग्य में क.।

बड़े कड़ाही में तले जाते हैं

किसी ने किसी से कहा कि बड़े का अपमान नहीं करना चाहिए, तो उत्तर में उसने उक्त वाक्य कहा। यहां बड़ा शब्द के दो अर्थ हैं (1) उड़द की पीठी के बड़े, जो कड़ाही में तले जाते हैं;

(2) उम्र या प्रतिष्ठा में बड़ा।

बड़े की बड़ाई, न छोटे की छुटाई

ऐसे व्यक्ति को क., जो बड़े-छोटों का उचित ध्यान नहीं रखता; न बड़ों का सम्मान करता है, और न छोटों से स्नेह।

बड़े घर पड़िये, पत्थर ढो-ढो मरिये

यदि ऐसे घर में ब्याह हो, जहां बड़ा परिवार हो; तो स्त्री को काम बहुत करना पड़ता है। इसीलिए क.।

बड़े चोर का हिस्सा नहीं

क्योंकि उसे जो लेना होता है, वह पहले ही ले लेता है।

बड़े तो थे ही, छोटे सुभान अल्ला

वाक्य का प्रयोग बुरे अर्थ में ही होता है। यह प्रकट करने के लिए कि एक तो धूर्त था ही, पर दूसरा उससे भी बढ़ कर धूर्त है। जब बाप से बेटा या बड़े भाई से छोटा भाई बढ़ कर हो, प्रायः तब क.।

बड़े न बूड़न देत हैं, जाकी पकड़ें बांह।
जैसे लोहा नाव में, तिरत फिरे जल मांह।

बड़े आदमी जिसे सहारा दे देते हैं, उसे वे फिर छोड़ते नहीं।

बड़े-बड़े बहे जायें, गवहा पूछे कितना पानी?

जब किसी काम को एक सामर्थ्यवान पुरुष भी नहीं कर सके, और उसे एक असमर्थ मनुष्य करने का साहस करे, तब क.।

बड़े-बड़े ढह गए, बढ़ई कहे कितना पानी?

दे. ऊ.।

बड़े बर्तन की खुर्चन भी बहुत है

आर्थिक स्थिति बिगड़ जाने पर भी बड़े आदमी के घर में जो निकलता है, वही बहुत होता है।

बड़े बोल का सिर नीचा

अहंकारी नीचा देखता है।

बड़े मियां सो बड़े मियां, छोटे मियां सुभान अल्ला

दे.—बड़े तो थे ही...।

बड़े शहर का बड़ा ही चांद

(1) बड़े शहर की सब बातें बड़ी होती हैं। अथवा (2) बड़े शहर में बड़े ठग भी रहते हैं। व्यंग्य में क.।

बड़ों का बड़ा ही भाग, (स्त्रि.)

बड़ों का भाग्य भी बड़ा ही होता है।

बड़ों का बड़ा ही मुंह

बड़ों की मांग भी बड़ी ही होती है।

बड़ों की बड़ी बात

(1) बड़ों की बातें (या ख्याल) भी बड़े होते हैं।

(2) जब कोई बड़ा आदमी कोई ओछा काम कर बैठता है, तब व्यंग्य में क.।

बड़ों की बात बड़े पहचानें

बड़े आदमी ही बड़ों की बात समझ सकते हैं।

बड़ों के कहे का और आंवलों के खाये का पीछे स्वाद आता है

इनकी अच्छाई बाद में प्रकट होती है, पहले तो ये कड़वे लगते हैं।

बड़ों से रखे आस, न जाये पास

बड़े आदमियों से आशा रखे, पर उनके पास न रहे।

बड़ौ बिखौ बिखधर कौ, चलत सीस नवाय।
थोड़ो बिखौ बिच्छू को, घालत दुम अलगाय।

सर्प में अधिक बिष होता है, पर वह सिर नवाकर चलता है, बिच्छू में कम विष होता है, पर वह पूंछ उठाकर चलता है। छोटा दंभी होता है।

बढ़ें तो अमीर, घटें तो फ़कीर, मरें तो पीर

मुसलमानों के संबंध में हिंदू कहा करते हैं। भाव यह कि वे जीवन की हर स्थिति से लाभ उठाते हैं।

बत्तीस दांत की भाखा खाली नहीं जाती, (स्त्रि.)

(1) किसी भी व्यक्ति का कोसना (अथवा आशीर्वाद देना) व्यर्थ नही जाता।

(2) किसी की प्रार्थना भी व्यर्थ नहीं जाती।

बद अच्छा, बदनाम बुरा

इसलिए कि बदनाम आदमी कोई बुराई न भी करे, तो भी लोगों का ध्यान उसी की ओर जाता है।

बद घोड़े की मेख

बदमाश घोड़े का खूंटा।

बहुत बदमाश आदमी।

बदन में दम नहीं, नाम ज़ोरावरखां

नाम तो बड़ा, पर काम कुछ नहीं।

बदन में नहीं लत्ता, पान खायं अलबत्ता

छैल चिकनियां के लिए क., जिसके पल्ले कुछ नहीं होता।

बद बदी से न जाये, तो नेक नेकी से भी न जाये
(1) बुरा बुराई नहीं छोड़ता तो अच्छा भी भलमनसाहत नहीं छोड़ता।
अथवा (2) बुरा अगर बुराई न छोड़े तो अच्छे को अपनी अच्छाई भी नहीं छोड़नी चाहिए।

बदली की छांव क्या ?
क्षणस्थायी होती है।

बदली की धूप, जब निकले तब तेज
बादलों के बाद की धूप हमेशा तेज होती है।

बदली में दिन न दीसे, फूहड़ बैठी पीसे
बदली के कारण दिन निकल आया या नहीं, इसका पता नहीं चलता, इसलिए फूहड़ दिन को रात जानकर ही चक्की पीस रही है।

बदाऊं के लाला
सिलबिल्ला आदमी।
बदायूं वालों पर व्यंग्य।

बधिया मरी तो मरी, आगरा तो देखा
नुकसान हुआ सो हुआ, पर कुछ नया अनुभव तो हुआ। व्यंग्य में ही क.।
(कथा है कि कोई बंजारा माल बेचने आगरे गया। वहां उसका माल कुछ न बिका, साथ ही बैल मर गया; तब उसने उक्त वाक्य कहा।)

बन आई कुत्ते की, जो पालकी बैठा जाय
नीच को सम्मान मिलने पर क.।

बन आये की फकीरी भी भली।
अगर करते बने तो, अथवा अगर सफलता मिल जाए तो, फकीरी का पेशा भी अच्छा।

बन आए की बात रे ऊधो
(1) सफलता बड़ी चीज है, ऊधो ! अथवा
(2) सब भाग्य की बात है, ऊधो !
ऊधो कृष्ण के सखा थे। पर यहां इस शब्द का प्रयोग साधारण नाम के रूप में ही हुआ मानना चाहिए।)

बन के पात बनहिं के खड़िका, केलि करत बारी के लड़िका, (भो.)
जो जंगलों में रहते हैं, उनके लड़के जंगली पत्तों और खड़िकों से ही खेला करते हैं, जंगल में और रखा ही क्या? खड़िका=पतली लकड़ी।

बनज करेंगे बानिये और करेंगे रीस।
बनज करा था भाट ने, सौ के रह गए तीस।
(1) व्यापार तो बनिए ही कर सकते हैं।
(2) जिसका जो काम है, वही उसे अच्छी तरह कर सकता है।

बनज करे तो टोटा आवे, बैठ खाय धन छीजे।
कहे कबीर सुनो भई संतों, मांग खाय सो जीते।
व्यापार के झगड़े में पड़ने या बैठे-बैठे खाने और धन ख़र्च करने की अपेक्षा मांग कर खाना कहीं अधिक अच्छा।
छीजे=घटता है

बनज में भाई-बंदी क्या?
व्यापार में मुलाहिज़ा नहीं करना चाहिए।

बन परलीन बिलारी, मुसा कहली 'जे हमरी जोय', (पू.)
बिल्ली कहीं जंगल की सैर को चली गई, (तब) चूहा उसे अपनी औरत बताने लगा।
(1) बड़ों के बाहर रहने पर छोटों को मौज हो जाती है।
(2) पीठ पीछे बड़ों को गाली देना आसान होता है।

बन, बालक और भैंस, उखारी, जेठ मास में चार दुखारी, (कृ.)
गरमी में ये चारों कष्ट पाते हैं, सूखते या विकल होते हैं।
बन=कपास का खेत।
उखारी=ऊख का खेत।

बन में उपजे सब कोई खाय, घर में उपजे घर ही खाय
फूट को क.। फूट (ककड़ी की जाति का फल) खेत में पैदा होता है, तो उसे सब कोई खाते हैं, पर यदि फूट (लड़ाई-झगड़ा) घर में हो, तो वह घर ही खा जाती है, अर्थात उससे घर का नाश हो जाता है।
प्र. पा.—खेत में उपजे सब कोई खाय, घर में उपजे घर बह जाय।

बनियां के सुखरज, रजवा के हीन;
बैद के पूत व्याध ना चीन्ह,
भटवा के चुप चुप, बेस्वा के मइल
कहें घाघ पांचों घर गइल।
बनिए का लड़का यदि खर्चीला हो, राजा तेजहीन हो, बैद का लड़का रोग न पहचानता हो, भाट चुप्पा हो और वेश्या मैली हो, तो घाघ कहते हैं कि ये पांचों अपने घर का नाश कर देते हैं।

बनियां देता ही नहीं, कहे 'ज़रा पूरा तौलियो'
ऐसे मनुष्य के लिए क., जिसकी किसी मांग के लिए उसे एकदम इंकार कर दिया गया हो, पर वह उसकी परवा न करके अपनी उस मांग से भी अधिक पाने की इच्छा प्रकट करता जाए।

बनियां भी अपना गुड़ छिपाकर खाता है

(1) अपने घर का भेद किसी को बताना नहीं चाहिए।

(2) जब कोई स्पष्ट रूप से कोई बुरा काम करे, तब भी क.।

बनियां मारे जान, ठग मारे अनजान

बनिया जान पहचान वाले को ही ठगता है, ठग तो अनजान को ठगता है।

बनियां मीत, न बेस्वा सती

बनिया किसी का मित्र नहीं होता, और वेश्या चरित्रवान नहीं होती।

बनियां रीझे हर्रे दे

उसके पास और रखा ही क्या?

बनियों की कृपणता पर क.।

हर्रे=हरे वृक्ष का फल, जो दवा में काम आता है।

बनिये का उल्लू

कोई भी निकम्मी चीज जो बहुत यत्न से रखी जाए। निकम्मे मनुष्य के लिए भी क.।

(कथा है कि किसी मूर्ख बनिए ने बाज़ के धोखे में एक उल्लू खरीद लिया था और उसे वह बाज़ कहकर सब को दिखाता फिरता था।)

बनिए का जी धनिये बराबर

बहुत छोटा होता है।

बनिए का बहकाया और जोगी का फिटकारा

बनिए के बहकावे और जोगी के शाप से बचना मुश्किल है।

(बनिया किस तरह बहकाता है, इस पर एक कहानी है—किसी मनुष्य के पास एक अशर्फ़ी थी, जिसे वह बेचना चाहता था। एक बनिए ने उसे सस्ते दामों में खरीदंना चाहा। उसने अशर्फ़ी का दाम पांच रुपया लगा दिया। जब वह इतने दाम पर देने को राज़ी न हुआ, तब बनिए ने बढ़ते-बढ़ते उसके दाम चौदह रुपए तक लगा दिए। उस मनुष्य को तब संदेह हुआ कि यह अवश्य अधिक दामों की चीज है, तभी तो इसने चौदह रुपए तक इसके दाम लगा दिए। यह सोचकर उसने बनिए से कहा कि मैं इसे सराफ़ को दिखाए बगैर नहीं बेचूंगा। बनिए ने उसका यह रुख देखकर उसके प्रति आत्मीयता दिखाते हुए कहा—यह तीस रुपए का माल है। इससे कम में इसे न बेचना। वह सारे बाजार में उसे लिए फिरा और सब से तीस रुपए दाम कहता, पर इतने में किसी ने उसे नहीं खरीदा। तब अंत में निराश होकर उसने उसी बनिए को चौदह रुपए में वह अशर्फ़ी दे दी।)

बनिए का बेटा कुछ देख ही के गिरता है

बनिया हर काम मतलब से ही करता है।

(कथा है कि एक बनिए का लड़का सिर पर तेल का घड़ा लिए जा रहा था। रास्ते में एक जगह फिसल कर वह गिर पड़ा, साथ ही घड़ा भी गिर पड़ा। किसी ने उसके बाप को जब इस घटना की खबर दी, तो उत्तर में उसने कहा कि मेरा लड़का बेमतलब नहीं गिरा होगा, सड़क पर जरूर उसे कोई चीज पड़ी दिखाई दी होगी। बात ठीक थी। लड़के को एक अशर्फ़ी पड़ी मिली थी।)

बनिए का मुंह ग्राह और पेट मोम

बनिया पेट काटकर रुपया जमा करता है।

ग्राह—मगर।

बनिए का सलाम बेगरज़ नहीं होता

बनिया बिना मतलब के किसी को 'राम राम' भी नहीं करता।

बनिए का साह भड़भुंजा

बनिए पर व्यंग्य।

बनिए की उचापत और घोड़े की दौड़ बराबर

बनिए का (उधार का) हिसाब बहुत जल्दी बढ़ता है।

बनिए से सयाना सो दीवाना

बनिए से अधिक चतुर कोई नहीं होता।

बनी के सब यार हैं

अवसर के सब साथी हैं।

बनी के सौ साले, बिगड़ी का एक बहनोई भी नहीं

पास में अगर पैसा हो, तो सब कोई अपनी बहन ब्याहने को तैयार होते हैं; पर गरीब की बहन से कोई ब्याह नहीं करना चाहता।

बनी तो बनी, नहीं दाऊदखां पनी

अगर एक जगह काम करते नहीं बना, तो दूसरी जगह चला जाऊंगा; मुझे किसी बात की चिंता नहीं; ऐसा भाव प्रकट करने को क.।

दाऊदखां पनी=नाम विशेष।

बनी तो भाई, नहीं दुश्मनयाई

आपस में निभ सके तो भाई, नहीं तो दुश्मनी बनी बनाई।

बनी फिर बेसवा, खोले फिर केसवा, (स्त्रि.)

फिर तू वेश्या बन गई है, फिर तू बाल खोले फिर रही है।

वहू को सास की ताड़ना।
(पुराने हिंदू घरों में बाल खोलकर फिरना अच्छा नहीं मानते।)

बनें सब ही सराहें, बिगड़ें कहें कमबख़्त
(काम में) सफलता मिलने पर सभी सराहना करते हैं, पर असफल होने पर मूर्ख और अभागा वनाते हैं।

बर के न मिले भूखा, बराती मांगें चूंड़ा, (पू.)
ऐसी मांग, जो पूरी न की जा सके।

बरधा एक, गांव दुई जोत, कइल बटिया लागल पोत
वैल एक है और दो गांव में जोत है, किस तरह काम चलाया जाएगा। साधन की कमी।

बर मरे, पटवासी न टूटे
खसम भले ही मर जाए (अथवा भले ही मर गया हो) पर मांग पट्टी काढ़ना नहीं छूटता।
[मांग पट्टी सधवा स्त्रियां ही काढ़ती हैं, इसलिए बदचलन विधवा (अथवा वदचलन औरत) के लिए कहा. का प्रयोग होता है।]

बरमे का काम छिदना नहीं होता
वरमे से दूसरी चीज में छेद होता है, वह आप नहीं छिदता। ठग को कोई ठग नहीं सकता।

बरसे भर में सखी सूम बराबर हो जाते हैं
सूम का किसी-न-किसी तरह नुकसान होता रहता है और दाता को आय होती है, इसीलिए क.।

बरसात वर के साथ, (स्त्रि.)
वर्षा ऋतु तो पति के साथ ही अच्छी तरह कटती है।

बरसात में कड़ाही घर-घर
वरसात में त्योहार बहुत होते हैं, इसलिए घर-घर पकवान बनते हैं।

बरसा थोड़ी भभरौटी बहुत
उछलकूद बहुत, पर काम थोड़ा
भभरौटी=गरज-तरज (बादलों की)।

बरसे असौज, हो नाज की मौज, (कृ.)
क्वार में पानी बरसने से फसल वहुत अच्छी होती है।

बरसेगा, बरसावेगा, पैसे सेर लगावेगा, (कृ.)
वरसात में बच्चे कहा करते हैं।

बरसेगा मेह होंगे अनन्द; तुम साह के साह, हम नंग के नंग
पानी बरसने से अनाज खूब उपजेगा, सबको आराम होगा, किंतु तुम साहूकार हो सो साहूकार रहोगे, और हम नंगे-के-नंगे ही रहेंगे। ग़रीब किसान का व्यवसायियों के प्रति कहना।

बरसे साढ़ तो बन जा ठाट, (कृ.)
आषाढ़ में वर्षा हो, तो मौज हो जाती है।
(क्योंकि ग्रीष्म से सभी आकुल बने हुए होते हैं।)

बरसे सावन, तो हों पांच के बावन, (कृ.)
सावन में वर्षा होने से कृषि को बहुत लाभ होता है।

बरसो राम धड़ाके से, बुढ़िया मर गई फाके से
वर्षा में बच्चों की तुकबंदी।

बरात का छैला, सावन का खैला
बरात में नौजवान लड़के वैसी ही ख़ुशी मनाते हैं (या ख़ुश नज़र आते हैं), जैसे सावन के महीने में अल्हड़ बछड़ा।

बरात की सोभा बाजा, अर्थी की सोभा स्यापा
बरात में वाजे शोभा देते हैं और मृतक के शोक में रोना। अर्थी=जनाज़ा।
स्यापा=मरे हुए के शोक में कुछ समय तक स्त्रियों के प्रति दिन इकट्ठे होकर रोने और शोक मनाने की प्रथा।

बरातियों को खाने की चाह, दुल्हे को दुल्हिन की चाह
हर आदमी अपने मतलव से ही मतलब रखता है।

बराती किनारे हो जाएंगे, काम दूल्हा दुल्हिन से पड़ेगा
बाहर वाले तो झगड़ा करा कर अलग हो जाते हैं, पर सुलझना तो उन लोगों को ही पड़ता है, जिनमें आपस में झगड़ा होता है।

बरेली जाने का काम करते हो
पागलों जैसा काम करते हो। वरेली में वड़ा पागलखाना है। आगरा का भी प्रयोग इसी अर्थ में होता है।

बरेली रूपारेली
बरेली में चांदी बरसती है। जमीन इतनी उपजाऊ है।

बल जाय राज को, मोती लागें प्याज को
ऐसे राज्य को बलिहारी, जिसमें प्याज के लिए मोती खर्च करने पड़ें।

बल तो अपना बल, नहीं तो जाय जल
अपना बल ही काम आता है, दूसरे का नहीं।

बल, बे जुम्मा तेरी धज
बलिहारी रे जुम्मा ! तेरी धज की।
मैं तेरी होशियारी (या सजधज) की बहुत-बहुत प्रशंसा करता हूं। व्यंग्य में ही क.।

बलवान का हल भूत जोतें
ज़बर्दस्त का सब काम मुफ्त में ही हो जाता है। अथवा ज़बर्दस्त का काम लोग दौड़कर करते हैं।

बसंत जाड़े का अंत
बसंत में जाड़ा ख़त्म हो जाता है।

बस कर मियां बस कर, देखा तेरा लश्कर, (स्त्रि.)
शेख़ीबाज़ से व्यंग्य में क.।

बस हो चुकी नमाज़; मुसल्ला बढ़ाइए, (मु.)
काम हो चुका, अब आप तशरीफ़ ले जाइए; ऐसा भाव प्रकट करने को क.।
मुसल्ला=वह छोटा बिछावन, जिस पर बैठ कर नमाज़ पढ़ी जाती है।

बसाव शहर का, खेत नहर का
दोनों अपनी-अपनी जगह अच्छे होते हैं।
नहर का=नहर के किनारे का।

बहता पानी निर्मला, बंधा गंदीला होय।
साधू जन रजता भला, दाग न लागे कोय।
स्पष्ट।

बहते को बह जाने दे, मत बतलावे ठौर।
समझाये समझे नहीं, तो धक्का दे दे और।
जो समझाने से न माने, उससे तो फिर बात नहीं करनी चाहिए।

बहते दरिया में जिसका जी चाहे हाथ धो ले
(1) अवसर से लाभ उठा लेना चाहिए।
(2) किसी का कोई उपकार करते बने, तो करके यश का भागी बन जाना चाहिए।

बह मरें बैल, बैठे खायें तुरंग
बैल तो जुत-जुत कर मरते हैं और घोड़े आराम से बैठे खाते हैं। एक खट कर मरे और दूसरा मौज उड़ाए।

बहरा बहिपूती, अंधा दोज़ख़ी
बहरा अपने कानों से पराई निंदा नहीं सुनता, इसलिए स्वर्ग जाता है। अंधा बेईमान होता है ओर दूसरे की बुराई सुनता है, इसलिए नरक में जाता है।

बहरा सुने धर्म की कथा
एक हास्यजनक बात।

बहरा सो गहरा
क्योंकि वह किसी की कोई बात न तो सुनता है, न जानता ही है।

बहरे आगे गावना, गूंगे आगे गल्ल।
अंधे आगे नाचना, तीनों अल बिलल्ल।
तीनों ही काम मूर्खतापूर्ण हैं, क्योंकि बहरा गीत नहीं सुन सकता, गूंगा बात का जवाब नहीं दे सकता और अंधा नाच नहीं देख सकता।
गल्ल=वार्तालाप।

कहे मेरा बीर प्यारा, काल कहे मेरा है यह चारा
स्पष्ट।
चारा=भोजन। कौर।

बहिन के घर भाई कुत्ता, सासरे जंवाई कुत्ता, कुत्ता पाले वह कुत्ता, सब कुत्तों का वह सरदार, जो बाप रहे बेटी के बार
दे.—कुत्ता पाले वह कुत्ता...।
बार=घर।

बहुत अतातायी जीऊ का काल हा, (ग्रा.)
बहुत उपद्रवी ज़िंदगी के लिए एक विपत्ति है।

बहुत अतीत, मठ खरावा
किसी मठ में अगर बहुत से साधु हों, तो मठ में खराबी आ जाती है। थोड़े साधुओं से ही मठ पवित्र रह सकता है।

बहुत औलाद भी ग़जब है
बहुत संतान भी एक विपत्ति है

बहुत कथनी, थोड़ी करनी
कहना बहुत, करना थोड़ा।

बहुत गई, थोड़ी रह गई
बहुत उम्र बीत गई, थोड़ी बाकी है; इसे ईश्वर इज्जत से काट दे, यही भाव प्रकट करने को क.।

बहुत सोना दलिद्दर की निशानी
बहुत सोना (अर्थात आलस्य करना) दरिद्रता का लक्षण है।

बहुरिया के बड़ दुलार, हांड़ी बसन छुआ ही ना पावस, (स्त्रि.)
बहू पर प्यार तो बहुत, पर हांडी-बर्तन (वह) छूने ही न पाए। दिखावटी प्रेम।

बहू-बेटी सब रखते हैं
जब कोई किसी को मां-बहन की गाली दे अथवा दूसरे की स्त्री को बुरी नजर से देखे, तब उसे भर्त्सना करते हुए क.।

बहू लाली, धन घर घाली
टिमाक से रहने वाली बहू धन और घर दोनों का नाश करती है।

बहू शरम की, बेटी करम की
बहू तो शरमदार और बेटी करमैत (अथवा भाग्यशील) अच्छी होती है।

बांगा में सियार गइले, का ओढ़ अइले, का पहल अइले

कपास के खेत में अगर सियार जाए, तो वह वहां क्या तो ओढ़ेगा और क्या पहनेगा ?

(सियार के लिए कपास किस काम का?)

बांज अच्छी, इकौंज बुरी, (स्त्रि.)

एक लड़के वाली से बांझ अच्छी; क्योंकि एक लड़के के मरने का जो दुख होता है, बांझ उससे बची रहती है।

बांज क्या जाने परसूत की पीड़ा

जिस पर बीतती है वह जानता है।

परसूत=प्रसूति। प्रसव।

बांज बंजौटी, शैतान की लंगोटी, (स्त्रि.)

गाली। एक स्त्री दूसरी से लड़ते समय क.।

बांज ब्यानी, सोंठ उड़ानी, (स्त्रि.)

(1) बांझ के अगर लड़का हो तो उसकी इज्ज़त बहुत बढ़ जाती है। अथवा

(2) जब कोई बात का बतंगड़ बनाए, तब भी क.। बांझ का ब्याना एक गप्प ही हो सकती है। बच्चा होने पर प्रसूता को सोंठ खिलाते हैं।

(भाव यह है कि बांझ के लड़का हुआ, तो उसे सोंठ पर सोंठ खाने को मिलने लगी।)

बांटल भाई पड़ौसी बराबर

अलग रहने वाला भाई पड़ोसी के समान है।

बांदी के आगे बांदी आई, लोगों ने जाना आंधी आई, (स्त्रि.)

नौकर के नीचे जो नौकर होता है, वह बहुत काम करता है, अथवा उससे बहुत काम लिया जाता है, इसीलिए क.।

बांदी के आगे बांदी, मेह गिने न आंधी, (स्त्रि.)

दे. ऊ.।

बांध खीसा, ले हींसा

किसी से व्यंग्य में कहा जा रहा है 'ले अपना हिस्सा और रख ले खीसे में'। वास्तविकता यह है कि उसे कुछ मिलना नहीं है।

बांधे संकेला, फिरे अकेला

हथियारबंद को किसी का डर नहीं।

बांस की जड़ में घमोय जामे हुए, (ग्रा.)

अच्छे घर में कपूत पैदा हुआ।

घमोय पौधों की एक बीमारी होती है, जिससे वे बिल्कुल नष्ट हो जाते हैं।

बांस के बांस मल्लाही की मल्लाही

नाव से पार होते समय जिन बांसों से नाव खेई जाती है, अक्सर उनको चोटें खानी पड़ती हैं। इसी से कहा गया है कि बांस के धक्के खाए और मजदूरी भी देनी पड़ी।

(1) पूरा ख़र्च कर के भी जब परेशान होना पड़े, तब क.।

(2) हर तरह से अपमानित होना।

बांस गुन बसाउर, घमार गुन अघाउर

जैसा बांस होगा, वैसे ही उसके बासन भी बनेंगे; चमार जैसा होशियार होगा, उतना ही अच्छा चमड़ा भी पकेगा। अघाउर=अघौरी, पका हुआ चमड़ा।

बांस चढ़ी गुड़ खाय

नटनी के लिए क.। जो प्रयत्न करता है, उसे फल मिलता है।

(नटनी जब अपना खेल दिखाती है, तो उसके लिए लंबे बांस के सिरे पर गुड़ बांध दिया जाता है, जिस पर चढ़कर वह उसे तोड़ लाती है।)

बांस डूबें, बौरी था मांगे

बांस तो डूब जाते हैं और मूर्ख पानी की थाह लेना चाहता है।

दे.—ऊंट बहे जाएं...।

बांस बढ़े झुक जाय, अरंड बढ़े टूट जाय

सज्जन पुरुष उच्च स्थान पर पहुंचकर विनम्र बनते हैं, छोटे इतराने लगते हैं।

बांह गहे की लाज

सहारा दे कर अंत तक निबाहना चाहिए।

बांह छुड़ाए जात हो, निबल जान के मोहि।
हिरदे में से जाओगे तो मर्द बदूंगी तोहि।

स्पष्ट।

(कहा जाता है कि यह दोहा सूरदासजी ने उस समय कहा था, जब चोरों ने उन्हें कुएं में ढकेल दिया था और श्रीकृष्ण भगवान ने उन्हें बाहर निकाला था।)

बांह पकड़े की ओर निबाहना

दे.—बांह गहे की...।

बाकी का मारा गांव और चिलमों का मारा चूल्हा

ये फिर ठहरते नहीं।

(किसी गांव पर अगर सरकारी लगान बकाया हो, तो सरकारी कर्मचारी वसूली में ज्यादती करते हैं, और लोगों को उससे नुकसान होता है। इसी तरह किसी चूल्हे से बार-बार चिलम के लिए आग ली जाए, तो वह चूल्हा बुझ जाता है।)

बाकी नाम अल्लाह

प्रयत्न करना चाहिए, उसके बाद तो ईश्वर का नाम।

बाग लागल ना, मंगता डेरा देल, (भो.)
बाग लगकर तैयार नहीं हुआ, भिक्षुकों ने डेरा डाल दिया। *(भिक्षुक अक्सर बगीचों में आकर ठहरते हैं।)*

बाघ की मौसी बिलाई
बिल्ली बाघ से भी बढ़कर। अथवा बिल्ली भी बाघ जैसी।

बाघ बकरी एक घाट पानी पीते हैं
बहुत अमन-चैन है।

बाघ मार नदी में डारा, बिलाई देख डरानी
किसी स्त्री ने बाघ मारकर नदी में फेंक दिया, पर बिल्ली देखकर डर गई।

बाघौ के मुंह केहू धोवल है?, (भो.)
शेरों का मुंह किसने धोया?
जो बच्चे अपना मुंह नहीं धोते, अथवा नहीं धुलवाते; प्रायः उनसे हंसी में क.।

बाजार उसका जो ले के दे, (व्य.)
(1) जो अपना देना चुका देता है, बाजार में उसी को सब चीज मिल सकती है।
(2) बाजार में उसी की साख रहती है, जो दूसरों का लेकर दे देता है।

बाजार का सत्तू बाप भी खाय, बेटा भी खाए
वेश्या के लिए क. कि उसके पास कोई भी जा सकता है।

बाजार की गाली किस की? जो फिरके देखे उसकी?
कौन क्या कहता है, इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए।

बाजार की मिटाई, जिसने चाही उसने खाई
दे.—बाजार का सत्तू...।
ऐसी वस्तु जो सब के लिए सुलभ हो।

बाजार की मिटाई से निर्वाह नहीं होता
(1) वेश्याओं के लिए क.।
(2) साधारण अर्थ में भी कह सकते हैं कि घर में रोटी खाए बिना काम नहीं चलता।

बाजार के भाव
बाजार के दामों पर।

बाजार के भाव बेचना
बाजार में जिस चीज के जो दाम हों, उन्हीं दामों में देना।

बाजारी आदमी का क्या इतबार?
स्पष्ट।
बाज़ारी आदमी=चलता-फिरता आदमी, साधारण आदमी।

बाजारू चीज बोदी होती है
बाजार की घटिया चीजें जल्दी खराब होती हैं।

बाटे खाटे कुतिया मरी, नाथ कहे मेरी वाचा फरी, (पू.)
कुतिया तो दैवयोग से रास्ते में या नदी किनारे मर गई। योगी ने कहा कि मेरा वचन सत्य हुआ। दैव-घटना के संबंध में जो लोग कहते हैं कि वह हमारे कहने से हुई, उन पर व्यंग्य।

बाड़ ही जब खेत को खाय, तो रखवाली कौन करे ?
रक्षक ही जब भक्षक बन जाए, तो काम कैसे चले? भ्रष्टाचारी कर्मचारी, विशेषकर पुलिस के लिए क.। *(यह फैलन की टिप्पणी है।)*

बाड़ी में बारह आम, हट्टी में अठारह आम, (पू.)
बगीचे में तो (किसी एक मूल्य पर) बारह आम मिलते हैं और बाजार में अठारह। उल्टी बात। *(बगीचे में आम सस्ते मिलने चाहिए।)*

बाढ़े पूत पिता के धर्मा, खेती उपजे अपनी कर्मा
पिता के धर्म से पुत्र समृद्धिशाली हो सकता है, पर खेती अपने ही प्रयास से सफल होती है।

बात इंसान जब तलक कहता नहीं।
नेक औ बद उसका कहीं खुलता नहीं।
स्पष्ट।

बात कहिये जगभाती, रोटी खाइए मनभाती
बात वह कहे जो दूसरों को अच्छी लगे। भोजन वह करे, जो अपने को अच्छा लगे।

बात कही और पराई हुई
मुंह से बात निकली और सबको मालूम हुई।

बात कहे की लाज
जो बात कहे, उसे पूरा करना चाहिए।

बात का चूका आदमी और डाल का चूका बंदर संभलता नहीं
ये फिर हानि उठाकर रहते हैं।

बात का बतक्कड़ करना
तिल का ताड़ बना देना।

बात की बात खुराफ़ात की खुराफ़ात।
बकरी के सींगों को चर गए बेरी के पात।
बात सही भी और हंसी की भी, बकरी के सींगों को बेरी के पत्ते चर गए। बात असल में यह हुई कि बकरी बेरी के पत्तों को चरने के लिए उचकी तो उसके सींग पेड़ की कांटेदार टहनियों में फंसकर टूट गए। शिक्षा यह कि जो दूसरों को हानि पहुंचाना चाहता है, उसकी स्वयं हानि होती है।

बात की बात में
फौरन ।

बात गई फिर हाथ नहीं आती

(1) मुंह से निकली बात फिर हाथ नहीं आती।

(2) इज़्ज़त एक दफे चली जाने पर फिर जल्दी नहीं मिलती।

बात छीले रूखड़ी, और काठ छीले चीकना

वात छीलने से रूखी, और काठ छीलने से चिकना होता है। किसी वात को बार-बार उकसाना ठीक नहीं।

वात छीलना=वहस करना।

वात जो चाहे आपनी, तो पानी मांग न पी

अगर अपनी वात (या इज़्ज़त) रखना चाहता है, तो पानी भी मांगकर मत पी। अर्थात किसी से कोई चीज मत मांग।

वात पूछे, बात की जड़ पूछे

वहुत खोद-विनोद करने वाले से क.।

वात में बात ऐब है

किसी की बात के बीच में बोलना बुरा है।

बात रह जाती है, वक्त निकल जाता है

जब कोई व्यक्ति किसी से उचित सहायता की आशा करे, और वह उसे न मिले, तब वह क.।

वात लाख की, करनी ख़ाक की

(1) वातें लंबी-चोड़ी करना, पर काम कुछ न करना।

(2) जब कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति कोई निंदनीय कार्य कर बैठे, तब भी क.।

बातें अगली करती हैं ख़्वार

पुरानी बातों की याद मनुष्य को दुखी बनाती है।

बातें करे मैना की-सी, आंखें बदले तोता की-सी

(1) खतरनाक ओरत।

(2) वेश्या से भी क.।

बातें हाथी पाये और बातें हाथी पायें

वातों से ही (इनाम में) हाथी मिलता है और बातों के ही कारण आदमी हाथी के पेर के नीचे कुचलवा दिया जाता है।

पाये=पाता है। पायें=पैरों के नीचे।

बातों चिकना, कामों ख्वार

बातें तो मीठी करे, पर काम कुछ न करे।

बातों-चीतों मैं बड़ी, करतव बड़ी जिठानी

बातचीत में तो में, और काम करने में जिठानी बड़ी है। देवरानी पर कटाक्ष।

बातों बूढ़ा, करतब ख्वार

बातें बड़े-बूढ़े जैसी करे, पर काम में निकम्मा।

बातों से काम नहीं चलता

जब काम करने के समय अथवा किसी का पावना देने के समय कोई कोरी वातों से टाले, तब क.।

बादला मढ़े से नीम नहीं छिपता

अर्थात उसकी कड़वाहट नहीं जाती।

(1) बुरी आदत आसानी से दूर नहीं होती। अथवा

(2) बुरा काम छिपाने से नहीं छिपता।

(बादला एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा होता है, जिस पर सोने या चांदी के तारों का काम कढ़ा होता है।)

बादशाही रिआया से है

प्रजा से ही राज्य टिकता है।

बादशाहों की बातें बादशाह ही जानें

वड़ों की वातें बड़े ही जान सकते हैं।

बान जल गया, पर बल न गए

रस्सी जल गई, ऐंठन न गई।

बरवाद हो गए, पर शेखी न छूटी।

बानवाले की बान न जाय, कुत्ता मूते टांग उठाय

जिसे जो आदत पड़ जाती है, वह नहीं छूटती।

बाप ओझा, मां डायन

दोनों एक से। ऐसे मां-बाप का लड़का भयंकर तो होगा ही, यह भाव छिपा है।

ओझा=झाड़फूंक करने वाला ऐसा व्यक्ति, जिसके वश में भूत-प्रेत माने जाते हैं।

बाप कंटक, पूत हातिम

वाप तो बेहद कंजूस, और लड़का उदार या खर्चीला।

कंटक=विपत्ति; मुसीवत।

वाप करे बाप के आगे आए, बेटा करे बेटे के आगे आए

जो जैसा करता है, उसे उसका वैसा फल मिलता है।

बाप का नाम उआ-पुआ, पूत का नाम जीते खां

साधारण हैसियत का आदमी शेखी बघारे, तब क.।

बाप का नाम दमड़ी, बेटा का नाम छकौड़िया,
नाती का नाम पचकौड़िया, तीन पुरसा बीती,
छदाम न पूरा भया, (स्त्रि.)

अभिप्राय यह कि तीन पीढ़ी के बाद भी परिवार अपनी कोई इज़्ज़त नहीं बना सका। या अपने खर्चे पूरे नहीं कर सका।

दमड़ी=12 कौड़ी; और छदाम=24 कौड़ी; इस प्रकार तीन पीढ़ी का हिसाब 23 कौड़ी हुआ; अर्थात एक कौड़ी फिर भी कम।

बाप का नाम सागपात, पूत का नाम परोर

स्पष्ट।

दे.—बाप का नाम उआ-पुआ...।

परोर=पड़ौरा, एक बेल का फल, जिसका साग बनता है।

बाप की टांग तले आई, और मां कहलाई

बाप की रखैल को भी मां कहना पड़ता है।

सम्मान के योग्य न होते हुए, विवश होकर जिसका सम्मान करना पड़े; उसके लिए व्यंग्य में क.।

बाप की बरात बेटा जाए!

(1) संतान के रहते हुए जब कोई दूसरा विवाह कर लेता है, तब क.।

(2) असंगत बात या काम के लिए भी क.।

बाप कुंजड़ा बेटा शेख़!

स्पष्ट।

बाप के गले में मोंगरे, पूत के गले में रुद्राक्ष

बाप तो ऐयाश, और लड़का साधु !

मोंगरे=मोंगरे के फूलों का हार।

बाप को आटा न मिले, तो ईंधन को भेजे

बदनाम और कामचोर लड़के का कहना :

[बाप को आटा (रसोई के लिए) न मिले, जिससे वह मुझे ईंधन लाने के लिए न भेजे।]

बाप चुपचुप, पूत लपझप

बाप तो चुप्पा या सीधा, लड़का शरारती।

बाप दिखा, या गोर बता

या तो बाप बताओ कहां गया, या फिर उसकी क़ब्र बताओ; (जिसमें अगर वह मर गया है, तो उसका मुझे विश्वास हो जाए।)

या तो मैं जो चीज मांग रहा हूं वह दो या फिर यदि वह नहीं है तो उसका सबूत दो। जब कोई (विशेषकर कोई छोटा लड़का) इस तरह की ज़िद करता है, तब उससे क.।

बाप देवता, पूत राक्षस

बाप बहुत अच्छा, लड़का उसके विपरीत।

बाप न दादे, मार खां ज़ादे

झूठी शेखी मारने वाला।

बाप न दादे, सात पुश्त हरामज़ादे

गाली।

दे. ऊ. भी।

बाप न मारी पीदड़ी, बेटा तीरंदाज

लंबी-चौड़ी हांकने वाला।

पीदड़ी=एक छोटा पक्षी, पिद्दी।

बाप नरकटिया, पूत भगतिया

बाप तो धूर्त या हत्यारा, लड़का भगत। व्यंग्य में क.।

नरकटिया=गर्दन काटने वाला

बाप पंडित, पूत छिनरा

स्पष्ट। व्यंग्य में क.।

बाप पेट में, पूत ब्याहने चला

असंभव या हास्यजनक व्यापार।

बाप बनिया, पूत नवाब

बाप तो कंजूस, लड़का खर्चीला।

बाप बेटों की लड़ाई क्या?

बाप-बेटों में झगड़ा होता ही रहता है, फिर शांति भी हो जाती है।

बाप भला न भैया, सब से भला रुपैया

रुपए के लिए सब नाते टूट जाते हैं।

बाप भिखारी, पूत भंडारी

स्पष्ट। व्यंग्य में क.। अथवा अपना-अपना भाग्य यह सहज अर्थ भी हो सकता है।

बाप मरले कुंअर, माय मरले तुअर, (पू.)

बाप के मरने पर (गरीब घर का) लड़का कुंआरा रहता है, और मां के मरने पर अनाथ हो जाता है; क्योंकि बाप उसकी देखभाल नहीं कर सकता।

बाप मरा घर बेटा भया, इसका टोटा उसमें गया

जितना घाटा हुआ उतना मुनाफा हो गया। प्रायः व्यंग्य में ही क.।

बाप मरिहें तब पूत राज करिहें, (पू.)

बाप के मरने पर लड़कों की मालिकी हो जाती है; उसके रहते उनकी नहीं चलती।

बाप मरे पर बैल बटेंगे

किसी काम के करने का लंबे समय का वादा करना।

बाप मारे का बैर है

जानी दुश्मनी है।

बाप से बैर, पूत से सगाई

बाप से तो दुश्मनी और लड़के से मित्रता।

(जो उचित नहीं, अथवा जो अस्वाभाविक है।)

बापै पूत, पिता पर घोड़ा बहुत नहीं तो थोड़ा-ही-थोड़ा

पुत्र में पिता के और घोड़े में भी अपने पिता के कुछ-न-कुछ

गुण अवश्य आते हैं।

यह कहावत साधारणतः इस प्रकार प्रचलित है :

बापै पूत सिपाह पै घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा।

बाबा आवें ना घंटा बजे

किसी के विना कोई काम रुका पड़ा हो, और उसकी प्रतीक्षा की जा रही हो, तब क.।

बाबा आए न ताली बजे

बहुत कुछ ऊपर की कहावत जैसा ही भाव है।

(ठाकुर जी की पूजा के समय ताली बजाई जाती है; उसी से अभिप्राय है कि न बाबा आएं और न पूजा हो।)

बाबा कमावे, बेटा उड़ावे

खर्चीले लड़के को क.।

बाबा के राजे सतुआ मेंहगल, सैयां के राजे सब सहतल

पिता के घर में सत्तू भी महंगा था, खाने को नहीं मिलता था, पर स्वामी के घर में सब चीज सुलभ है; क्योंकि वहां वह घर की मालकिन है।

बाबाजी का टेवस बड़

बाबा जी का अंगूठा बड़ा है, अर्थात सबको ठेंगा दिखाते हैं। हर चीज के लिए इंकार कर देते हैं।

बाबाजी के बाबाजी, बजंत्री के बजंत्री

(1) बहुत से साधु इकतारे पर भजन गाकर भीख मांगा करते हैं, उन पर व्यंग्य।

(2) ऐसी चीज जिससे दो काम निकलते हों।

बाबाजी चेले बहुत हो गये हैं, बच्चा भूखों मरेंगे तो आप चले जावेंगे

मुफ़्तखोर के लिए क.।

बाबा मरे, निहालू जायें, वही तीन के तीन

बाबा (पितामह) मरे तो नाती जन्मा, फिर वही तीन के तीन रहे, जिनका पेट भरना है।

बामन का बेटा, बावन बरस तक बौंगा

व्यंग्य से पंडिताई करने वाले उन ब्राह्मणों के लिए क., जो केवल दान और भिक्षा पर निर्भर रहते हैं। बौंगा की जगह आमतौर से पोंगा ही कहते हैं।

बामन की बेटी कलमा पढ़े

(1) एक दुखजनक बात; अथवा असंभव बात।

(2) किसी वस्तु की प्रशंसा करने के लिए भी कह सकते हैं कि वह इतनी बढ़िया या सुस्वादु है कि उसे पाने के लिए ब्राह्मण की लड़की अपना धर्म छोड़ सकती है।

बामन के बबुआ कहले, नान जात लतयावले, (भो.)

ब्राह्मण तो सम्मान पाने से और छोटी जाति के लोग पिटने से ठीक रहते हैं। यह कहावत ब्राह्मणों की बनाई होगी।

बामन जीमें ही पतयाय

(1) ब्राह्मण भोजन के बाद ही कोई दूसरी बात सुनता है।

(2) ब्राह्मण जब भोजन कर ले, तभी उसकी बात सुननी चाहिए, क्योंकि तब वह बहुत प्रसन्न हो जाता है।

बामन नाचें, धोबी देखे

एक फ़ज़ीहत की बात।

यहां नाचने से मतलब है निर्लज्जतापूर्ण काम करना।

बामन बचन परमान

ब्राह्मण की बात ही प्रामाणिक मानी जानी चाहिए। प्रायः व्यंग्य में ही क.।

बामन बेटा लोटे-पोटे, मूल ब्याज दोनों घोंटे

(1) ब्राह्मण चिकनी-चुपड़ी बातें करके मूल भी हजम कर लेता है और ब्याज भी; अर्थात दोनों नहीं देता। अथवा

(2) ब्राह्मण जब तक अपना पावना मय ब्याज के वसूल नहीं कर लेता, तब तक नहीं छोड़ता।

बामन मंत्री, भाट खवास, उस राजा का होवे नास

जिस राजा का ब्राह्मण तो मंत्री और भाट निजी सेवक हो, उसका नाश होता है।

बामन से दान मांगते हैं

उल्टी रीति बरतते हैं, ब्राह्मण का काम तो दान लेना है न कि देना, क्योंकि ब्राह्मणों ने ऐसा नियम बनाया।

बामन हुए तो क्या हुए, गले लपेटा सूत

केवल जनेऊ गले में डाल लेने से कोई ब्राह्मण नहीं हो जाता, उसे वैसे कर्म भी तो करने चाहिए।

बारह गांव का चौधरी, अस्सी गांव का राव।
अपने काम न आए तो, ऐसी तैसी में जाव।

कोई कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो, पर उससे अगर कोई अपना मतलब न निकले, तो उसका वह बड़प्पन किस काम का ?

बारह बफ़ात की खिचड़ी आज है तो कल नहीं

ऐसी वस्तु, जो आज तो बहुतायत से मिल रही हो, फिर न मिले।

(बारावफ़ात मुहम्मद साहब के जीवन के उन अंतिम बारह दिनों को कहते हैं, जब वे बहुत बीमार रहे। इसके अगले दिन उनकी मृत्यु हो गई। इस दिन उनकी यादगार में खिचड़ी का फ़ातिहा दिया जाता है, और वह लोगों में बांटी भी जाती है। उसी से कहा. बनी।)

बारह बरस का कोढ़ी, एक ही इतवार पाक
कोई पुराना रोग एक दिन में दूर नहीं होता।
(इतवार सूर्य का दिन माना जाता है। लोगों का विश्वास है कि इस दिन व्रत रखने से चर्म रोग दूर होते हैं।)

बारह बरस काठ में रहे, चलती दफा पांव से गए
छूटने की खुशी में जल्दी के मारे गिर पड़े और पैर टूट गया। दुर्भाग्य की बात।
(प्राचीन काल में अपराधी को दंड देने के लिए उसका पैर लकड़ी के कुंदे में फंसा दिया जाता था, इसी को 'काठ में देना' कहते थे।)

बारह बरस की कन्या, और छठी रात का वर, मन माने सो कर
बालविवाह पर क.।
छठी रात का=छह दिन का।

बारह बरस की पटिया, बीस बरस की टटिया
भारत में स्त्रियां जल्दी बूढ़ी हो जाती हैं। उसी संदर्भ में कहा गया है कि बारह वर्ष की अवस्था में वह युवती थी, पर बीस की होते-होते ठांठ हो गई।

बारह बरस दिल्ली में रहे, भाड़ ही झोंका
व्यर्थ समझ खोया। एक अच्छे स्थान में रह कर भी उससे कोई लाभ नहीं उठा सके।

बारह बरस दिल्ली में रहे, महसूल नहीं दिया, 'क्या करते थे'? 'भाड़ झोंकते थे'।
दे. ऊ.।

बारह बरस पीछे कूड़ी के भी दिन फिरते हैं
समय सदा एक-सा नहीं रहता। कभी-न-कभी अवश्य अच्छे दिन आते हैं।
कूड़ी=घूरा।

बारह बरस सेई कासी, मरने को मग्गह की माटी
अंत बुरा होना।
(हिंदुओं का विश्वास है कि काशी में मरने से मोक्ष मिलता है, और कोई अगर मगहर में जाकर मरे तो वह नरक में जाता है।)

बारह बाट, अठारह पैंड़े
बारह रास्ते और अठारह पगडंडियां; कौन-सा मार्ग ग्रहण किया जाए?
बहुत उलझा हुआ मामला।

बारह बानी का हो गया
फिर नौजवान हो गया।
(बारह बानी विशेषण का प्रयोग खरे सोने के लिए करते हैं। बारह बानी याने द्वादशवर्ण अर्थात सूर्य जैसी चमक-दमक वाला। उसी से उक्त मुहावरा लिया गया।)

बारह में तीन गए तो रही ख़ाक
बारह में से अगर बरसात के तीन महीने सूखे ही निकल जाएं, तो फिर कुछ बचता नहीं, क्योंकि फिर अन्न पैदा नहीं होगा।

बारू जैसी भुरभुरी, धौली जैसी धूप।
मीठी ऐसी कुछ नहीं, जैसी मीठी चूप।
स्पष्ट।
धौली=स्वच्छ।

बालक जाने हिया, मानस जाने किया
बालक प्रेम चाहता है, और उम्र में बड़ा काम।

बालकों को सिखाना बालकपन ही से चाहिए
स्पष्ट।

बाल का कंबल करना
बात का बतंगड़ बनाना।

बाल की खाल, हिंदी की चिंदी
व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना।

बाल जंजाल, पलै तो पाल, नहीं तो मूंछों को टाल
बाल एक मुसीबत हैं, रखे जा सकें तो रखो, नहीं तो मूछों को भी हटाओ।
(मूछें साफ रखने वालों पर व्यंग्य)

बाल जंजाल, बाल सिंगार
बाल एक विपत्ति है और बाल शोभा की वस्तु भी हैं। एक ही चीज कभी सुखकर, कभी कष्टकर होती है।

बाल बांधा गुलाम है
पूरा गुलाम है।

बाल बांधा चोर
बहुत चालाक चोर।

बाल बांध कौड़ी मारता है,
अच्छा निशानेबाज़।

बाल-बाल गुनहगार, (स्त्रि.)
बहुत विनीत भाव से अपना दोष स्वीकार करना।

बाल हठ, तिरिया हठ, राज हठ
ये तीन हठ प्रसिद्ध हैं।

बालू की भीत, ओछे का संग,
पतुरिया की प्रतीत, तितली का रंग
ये स्थायी नहीं होते।

बालों हाथ छिनाला, और कागों हाथ संदेसा, (स्त्रि.)
ये दोनों ही काम सिद्ध नहीं होते।
वालों हाथ=बच्चों की सहायता से।
बावन तोले पाव रत्ती
बिल्कुल ठीक बात।
बाव न बतास, तेरा आंचल क्यों कर डोला।
पूत न भतार, तेरा टेंटा क्यों कर फूला।
कुलटा के लिए क.।
टेंटा=स्तन की बोंड़ी।
बावली को आग बताई, उसने ले घर में लगाई
मूर्ख को कोई खतरे का काम नहीं सौंपना चाहिए। वह उसका जोखिम नहीं जानता।
बावली खाट के बावले पाये; बावली रांड़ के बावले जाये
जैसों के तैसे होते हैं।
वावली=पागल, मूर्ख। खाट के संबंध में टेढ़ी-मेढ़ी से मतलब है।
जाये=लड़के।
बावले की ब्याही गाय, सब मेटी ले वाके धाय, (पू.)
मूर्ख की गाय ब्याई, तो सब उसके यहां मटकी लेकर दौड़े, (दूध लेने के लिए।)
बावले कुत्ते ने काटा है
मूर्खता की बातें करना।
बासी कढ़ी को उबाल आया
(1) समय बीतने पर किसी विपय की चर्चा करना।
(2) अकस्मात क्रोध के लिए भी क.।
बासी फूलों में बास नहीं, परदेसी बालम तेरी आस नहीं, (स्त्रि.)
स्पष्ट।
बासी बचे न कुत्ता खाय
(1) गरीबी हालत के लिए क.। (2) जो मनुष्य बहुत मितव्ययिता से काम ले रहा हो, वह भी कहता है।
बासी भात में अल्ला मियां का कौन निहोरा? (पू.)
जो वस्तु अपने-आप अथवा स्वयं के प्रयत्न से मिल गई हो उसमें किसी का क्या एहसान?
बासी मुंह फीका पानी औगुन करे है, (स्त्रि.)
सबेरे खाली पानी पीना नुकसान करता है।
बाहर के खायें, घर के गीत गायें, (स्त्रि.)
वाहवाही के लिए जो फिजूल खर्च करता है, उससे क.।

बाहर त्याग, भीतर सुहाग
पाखंडी।
बाहर मियां अलल्ले तलल्ले, घर में घहे पर्के, (स्त्रि.)
ऊपरी शान बघारना, या ऊपरी दिखावट।
बाहर मियां छैल चिकनियां, घर में लिबड़ी जोय, (पू., स्त्रि.)
दे. ऊ.।
लिबड़ी=सिलबिल्ली।
बाहर मियां झंग-झंगाले, घर में नंगी जोय, (स्त्रि.)
बाहर मियां पंज हजारी, घर में बीवी करमों मारी, (स्त्रि.)
बाहर मियां सूबेदार, घर में बीवी झोंके भाड़, (स्त्रि.)
बाहर लंबी धोती, भीतर मड़वे की रोटी
दे. ऊ.।
मड़वा कोदों की तरह का एक हल्का अनाज।
बिंध गया सो मोती, रह गया तो पत्थर।
जो काम हो जाए, वही सार्थक है। जो नहीं हुआ, वह व्यर्थ है।
बिख की ओखद क्या?
विष की कोई दवा नहीं।
बिख सोने के बर्तन में रखने से अमृत नहीं होता
किसी का स्वाभाविक गुण नहीं बदलता।
बिगड़ी लड़ाई बख्तरपोशों के सिर
लड़ाई की हार के लिए सिपाहियों को जिम्मेदार ठहराया जाता है, (अफसर के द्वारा)।
बिगाड़ संवार खुदा के हाथ
बनना-बिगड़ना ईश्वर के अधीन है।
बिच्छू का मंतर न जाने, सांप के बिल में हाथ डाले
जिस काम को बिल्कुल ही नहीं करना जानते, उसे करने का साहस करना।
बिजया पीवे, सेज्या सोवे, ताके बैद पिछाड़ी रोवे
भंग पी के जो सो जाता है, उसके लिए वैद्य रोता है, अर्थात वह ऐसा बीमार पड़ता है कि फिर अच्छा नहीं होता।
बिजली कांसी पर गिरती है
स्पष्ट।
दुख बड़ों पर ही पड़ता है।
कांसी=कांसा धातु।
बिजली चमके मेहा बरसे
जब बिजली चमकती है, तो पानी बरसता है।

बिजली मेहमान, घर में नहीं तिनका

गरीब के घर किसी बड़े आदमी का (भोजन आदि के लिए) आना।

बिजुलिक मारल, लुआठ देख भागे, (पू.)

बिजली का मारा सुलगती लकड़ी देखकर भागता है।

(एक बार किसी काम में बहुत हानि हो जाने पर मनुष्य भविष्य में साधारण मामलों में भी बहुत सावधान रहता है।)

विद्या में विवाद बसे

जो जितना जानता है, उतना ही तर्क करता है।

विद्या लोहे के चने हैं

ज्ञान कठिनाई से प्राप्त होता है।

बिन कुटनापे छिनाला नहीं

कोई भी चोरी, व्यभिचार आदि का काम बिचौलिए के बिना नहीं होता।

बिन गां–का बंधना

बिना तली का लोटा।

(1) ऐसा मनुष्य जिसका कोई सिद्धांत न हो।

(2) दुर्बल चरित्र का आदमी।

बिन घरनी घर पादत है, है घरनी घर गाजत है

स्त्री से घर हरा-भरा लगता है।

बिन घरनी घर भूत का डेरा

बिना स्त्री के घर भयावना लगता है।

बिन चूची बारह बरस लड़के को रखता है।

झूठा वादा करने वाले से क.।

बिन चूची=बिना दूध पिलाए।

बिन जने का थनैला हुआ है

बच्चा जने बिना ही स्तन का फोड़ा हो गया।

(1) बेमतलब की झंझट सिर आ जाना।

(2) अकारण ही बदनाम होना।

बिन जाने कौन माने?

स्पष्ट।

बिन जुलाहे ईद

नहीं होती, क्योंकि वह नमाज पढ़ने की दरियां (मुसल्ला) बनाता है।

बिन जुलाहे नमाज़ नहीं, बिन ढोलक तज़ीर नहीं

बिना जुलाहे के नमाज़ नहीं होती, और बिना मुनादी के कोई बड़ी सज़ा नहीं दी जाती।

बिन ताल पखावज नाचे है

बिना तबला और मृदंग के ही नाचता है। व्यर्थ की उछल-कूद मचाता है।

बिन दामों के नौकर हैं

(1) विनम्रता दिखाकर कहना कि हम आपके सेवक हैं।

(2) मुफ्त में किसी की गुलामी करना।

बिन देखा चोर बाप बराबर

जिस मनुष्य को चोरी करते नहीं देखा, उससे कुछ कहा नहीं जा सकता।

बिन परचप परतीत नहीं, (हिं.)

बिना प्रमाण के विश्वास नहीं होता।

बिन पैसा-कौड़ी के तेली साहू, टूटी हांड़ी कांदू साहू

देहातों में तेली और कांदू (भड़भूंजा) इन दोनों को अक्सर साहू कहते हैं। साहू इन लोगों का एक गोत्र भी होता है; इसीलिए कहा गया है।

(तेली और भड़भूंजा, इन दोनों का धंधा ऐसा है कि उसके लिए उन्हें किसी प्रकार की पूंजी की आवश्यकता नहीं पड़ती, इसलिए भी क.।)

बिन बहू प्रीत नहीं

ससुर अपने जमाई को तभी तक प्यार करता है, जब तक उसकी लड़की जीवित रहती है।

बिन विद्या नर नार, जैसे गधा कुम्हार

बिना पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष वैसे ही हैं, जैसा कुम्हार का गधा।

बिन बुलाई डोमनी लड़के-बाले समेत आये, (स्त्रि.)

निर्लज्ज, जो बिना बुलाए किसी जगह पहुंच जाए।

बिन बुलाये अहमक, ले दौड़े सहनक, (स्त्रि.)

(1) बिना बुलाये न्योते में आ जाना।

(2) बेमतलब दूसरे के काम में हस्तक्षेप करना।

सहनक=भोजन करने का थाल।

बिन मांगे मोती मिले, और मांगी मिले न भीख

जो मिलने वाला होता है वह आप ही मिलता है, मांगने से भीख भी नहीं मिलती।

बिन मांगे मिले सो दूध, और मांगे मिले सो पानी

बिना मांगे जो वस्तु मिले, वही अच्छी होती है।

बिना मारे की तोबा करना

(1) व्यर्थ हाय-हाय करना।

(2) मारने से पहले ही रोना।

बिन रुके बैद की घोड़ी न चले

वह उस स्थान पर अवश्य रुक जाती है; जहां वह रोज़ खड़ी की जाती है, अर्थात जहां वैद्य रोगी को देखने जाता है। भाव यह है कि वैद्य बिना बुलाए ही अपने हर रोगी के यहां जाता है, जिसमें उसे मेहनताना मिले या दवा बिके।

बिन रोये तो मां भी दूध नहीं पिलाती

बिना मांगे अपनी इच्छा से कोई कुछ नहीं देता।

बिन लाग खेले जुआ, आज न मुआ कल मुआ

जो बिना युक्ति के जुआ खेलता है, वह हानि उठाता है। *(लोग वास्तव में ऐसी चालाकी को कहते हैं, जो पकड़ में न आ सके अथवा जिसे चालाकी न समझा जाए।)*

बिन होनी होती नहीं, और होनी होवनहार

जो होना होता है, वह होकर रहता है, जो नहीं होना होता, वह नहीं होता।

बिन ठगे काम नहीं मिलता

बिना धोखे के व्यापार नहीं होता।

बिना वसीले चाकरी, बिना बुद्ध की देह।
बिना गुरु का बालका, सिर में डाले ख़ेह।

स्पष्ट।

वसीला=सहारा, ज़रिया।

खेह=धूल, मल।

बिनौलों की लूट में बर्छी का घाव

(1) लाभ थोड़ा, हानि बहुत।

(2) सामान्य अपराध के लिए कड़ा दंड, यह अर्थ भी हो सकता है।

बिपत पड़ी जब भेंट मनाई, मुकर गया जब देने आई

सुख का अवसर आ जाने पर मनुष्य दुख की सब बात भूल जाता है।

भेंट मनाई=देवता को भेंट चढ़ाने का संकल्प किया।

मुकर गया=बदल गया।

बिपत बराबर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय।

क्योंकि उसमें मनुष्य को बहुत अनुभव होते हैं।

बिपत संघाती तीन जने, जोरू, बेटा, आप

विपत्ति में तीन ही जने साथ देते हैं; स्त्री, लड़का और स्वयं।

बिफरे रिजाले और भूखे भलेमानस से डरिये

असंतुष्ट, नीच और भूखे भले आदमी से डरना चाहिए। (वे हानि पहुंचा सकते हैं।)

बिरादर-ए-हक़ीक़ी,
दुश्मन-ए मादरज़ाद है

सगा भाई ही सबसे बड़ा दुश्मन होता है।

बिरछ की माया और पुरुष की छाया, (स्त्रि.)

दे. पुरुष की छाया...।

बिरादरी को न खिलाया, चार कांधी ही जिमा दिए, (हिं.)

किसी व्यक्ति की कंजूसी के लिए शिकायत की जा रही है कि उसने मृतक के क्रिया-कर्म में बिरादरी वालों को भोजन नहीं कराया, केवल अर्थी में कंधा देने वालों को ही न्योत लिया।

बिल्ली और दूध की रखवाली

एक मूर्खतापूर्ण कार्य! बिल्ली दूध की रक्षा करेगी, या उसे पी जाएगी।

बिल्ली के ख़्वाब में चूहे कूदें

जिसे जिस चीज की आवश्यकता होती है; चौबीसों घंटे उसके दिमाग में वही चीज रहती है। जब कोई मनुष्य हर मौके पर अपनी ही मांग सामने रखता है, तब क.।

बिल्ली के ख़्वाब में छीछड़े

दे. ऊ.।

गंदे आदमी को गंदा काम ही सूझता है, यह भाव भी है।

बिल्ली के भागों छींका टूटा, (स्त्रि.)

(1) अचानक कोई ऐसा लाभ हो जाना जिसकी आशा नहीं की गई थी।

(2) अयोग्य को परिस्थितियों के कारण यकायक ऊंचा ओहदा मिल जाना।

बिल्ली खायेगी नहीं, पर फैला तो भी जायेगी

दुष्ट व्यर्थ की हानि करता है।

बिल्ली चूहा ख़ुदा के वास्ते नहीं मारती

लोग दूसरों का भला भी अपने मतलब के लिए ही करते हैं।

बिल्ली भी दबकर हरबा करती है

चीते की तरह, वह पहले जमीन पर झुक जाती है, फिर हमला करती है।

(दूसरों पर काबू पाने के लिए विनम्र बनने की आवश्यकता होती है।)

हरबा=चोट। आक्रमण।

बिल्ली भी मारती है चूहा पेट के लिए

मनुष्य बुरे कर्म करता है जिंदा रहने के लिए।

बिल्ली भी लड़ती है तो मुंह पर पंजा रख लेती है

(1) अपनी रक्षा सब करते हैं। *अथवा*

(2) दूसरों पर हमला करने के पहले अपनी रक्षा का ध्यान रखना चाहिए।

बिसमिल्लाह के गुंबद में बैठे हैं, (मु.)

(1) साधु-संन्यासियों जैसा जीवन व्यतीत करते हैं।

(2) स्वर्गलोक चले गए यह अर्थ भी होता है।

(बिसमिल्लाह का अर्थ है, ईश्वर के नाम पर।)

बिसमिल्लाह ही ग़लत है, (मु.)

काम के शुरू में ही भूल होने पर क.।

(मुसलमानों में कोई कार्य आरंभ करते समय श्रीगणेशायनमः की तरह प्रायः 'बिस्मिल्लाहि-रहमानिर्रहीम' पद का प्रयोग करते हैं, जिसका अर्थ है उस दयालु ईश्वर के नाम से। बिस्मिल्लाह उसी का पूर्वार्द्ध और संक्षिप्त रूप है।)

बिसधर पकड़, ज़हर को चाट।
पर नारी संग चालन बाट।

विषधर (सर्प) को भले ही पकड़े और भले ही उसका ज़हर चाटे, पर पराई स्त्री के साथ कभी रास्ता न चले।

बिसवा बिस की गांठ

(1) वेश्या ज़हर की पुड़िया होती है, उससे बचना चाहिए। *अथवा*

(2) विस्वा, अर्थात जमीन लड़ाई की जड़ है।

(बिस्वा, बीघा के बीसवें हिस्से को कहते हैं।)

बिसुनी बिलार, डबरी में डेरा, (पू.)

लपकी हुई बिल्ली भोजन के बर्तन में आकर बैठती है, अर्थात चुपचाप आकर बैठ जाती है। बिना बुलाए मेहमान के लिए क.। डबरी=(1) मिट्टी का बर्तन, (2) सूखे महुओं को उबाल कर बनाया गया एक विशेष प्रकार का व्यंजन।

बीच के चले जायेंगे, काम दूल्हा दुल्हिन से पड़ेगा

दे.—बराती किनारे हो जाएंगे...।

बीज बोया नहीं, खेत का दुख

काम तो किया ही नहीं और वह सफल होगा या नहीं, इसकी चिंता लग गई।

बी दौलती, अपने तेहे में आप ही खोलती, (स्त्रि.)

जो अपने धन के घमंड में चूर हो, उसके लिए क.। तेहे में=ताव में, आंच में।

बीबी को बांदी कहा हंस दी, बांदी को बांदी कहा रो दी, (स्त्रि.)

नौकर को नौकर कहने से बुरा मानता है।

बीबी खैला, दो चिट्टे, एक मैला, (स्त्रि.)

बीबी खैला के पास दो सफेद और एक मैला (लहंगा) है। ऊपरी दिखावे पर क.।

बीबी खैला, दो जट्टी, एक मेला, (स्त्रि.)

जहां बीबी खैला और जाटनी मिल जाती हैं, वहां मेला हो जाता है।

(जहां दो स्त्रियां इकट्ठी होती हैं वहां या तो बहुत बात करती हैं या लड़ती हैं, इसी से कहा जाता है।)

बीवी नेकबक्त, दमड़ी की दाल तीन वक्त, (स्त्रि.)

कंजूस औरत।

बीबी बकरी नाव में ख़ाक उड़ाती हो

अपना कोई मतलब पूरा करने के लिए बहाना खोजकर ज़बर्दस्ती दूसरों से लड़ना।

(प्रसिद्ध कथा है कि एक भेड़िए ने बकरी पर यह झूठा अपराध लगाकर कि तुम नाव में धूल उड़ा रही हो, उसे खा लिया था। उसी से कहावत चली।)

'बीबी बीवी ईद आई', 'चल हरामज़ादी तुझे क्या'? (स्त्री.)

मालकिन और नौकरानी का वार्तालाप। खर्च की बात बताने से कंजूस चिढ़ जाता है।

'बीवी बीबी ईद आई', 'चल मुरदार, तुझे टिकिये से काम', (स्त्रि.)

अपने स्वार्थ की दृष्टि से कोई बात करना।

दे.—ऊ. भी।

टिकिया=रोटी का टुकड़ा।

बीवी मक्के न गई, लाड़ली हो आई, (स्त्रि.)

बीवी ने कभी कोई अच्छा काम नहीं किया, फिर भी उन्हें लोग प्यार करते हैं। व्यंग्य में क.।

बीबी वारे, बांदी खाय, घर की बला कहीं न जाय

बच्चों की नज़र उतारने या उनकी बीमारी को दूर करने के लिए पकवान या आटे की लोई को सिर पर से घुमाकर बाहर फेंक देने हैं, जहां उसे कुत्ता खा लेता है।

(इसी को 'वारना' कहते हैं। कहा. का अर्थ यह है कि मालकिन ने बला को दूर करने के लिए पकवान 'वारा' और उसे बांदी को ही खिला दिया। इस तरह घर की मुसीबत बाहर न जाकर घर में ही रही। जब कोई व्यक्ति कोई अच्छा कार्य करते समय केवल परिवार के लोगों का ही ध्यान रखता है तथा दूसरों को नहीं पूछता, तब क.।)

बीबी हैं भरमाली, कान पीतर की बाली, (स्त्रि.)

बीवी अपनी पीतल की बालियों में ही भूली फिरती हैं।

अर्थात उनका उन्हें बड़ा नाज़ है।

बीमार की रात पहाड़ बराबर

बीमार की रात मुश्किल से कटती है, इसलिए कि रात में बीमारी प्रायः वढ़ जाती है।

बीस पचीस के अंदर में जो पूत सपूत हुआ, सो हुआ, मात-पिता कुल तारन को, जो गया न गया, सो कहीं न गया।

जो गया जाकर अपने माता-पिता को पिंड नहीं देता, उसका अन्य (तीर्थ) स्थानों में जाना व्यर्थ होता है। (प्रायः तीर्थ स्थानों के पंडे यह कहा करते हैं।)

बीसी खीसी

वीस वर्ष के बाद स्त्री प्रायः बूढ़ी लगने लगती है। भारत के लिए यह वहुत कुछ सत्य है।

बुड़बक एक गए बड़ गांव, डेरा पायन ऊंचे ठांय।

बहे बयार आड़ नहिं पावें, फाटे गांड़ मलार गावे।, (भो.)

गंवार के लिए क.।

बुड़बक की जोरू, सब की भौजाई

सब उसकी स्त्री से मजाक करना चाहते हैं।

बुड़बक गइले मछली मारे, ताप अइले गंवाय, (भो.)

मूर्ख कोई रोजगार करता है तो गांठ की पूंजी ही खो बैठता है। ताप=बंसी, जिससे मछली फंसाते है।

बुड़बकदास गए हरवाई, दुई बैल में एकौ नाई, (भो.)

मूर्खराज खेत जोतने गए, और दो बैलों में से दोनों खो बैठे। (अपनी मूर्खता के कारण)।

बुड़बक देवी के कुल्थी के अच्छत, (भो.)

जैसी देवी वैसी पूजा।

कुल्थी=कोदों की तरह का एक बहुत हलकी जाति का चावल।

बुड़बक धनई का रहे का बास, कोठी में चावर घर में उपास, (भो.)

मूर्ख को धन का क्या सुख? कुठले में चावल रखे हैं फिर भी घर के लोग भूखे हैं। मूर्ख धन का उपयोग नहीं जानता।

बुड़बक बर के सांझे बिछौना, (भो.)

मूर्ख दूल्हा के बिस्तरे शाम से ही लग जाते हैं।

बुड़भस लगी है

(1) बुढ़ापे में जवान बनने का शौक चर्राया है।

(2) दूसरा लड़कपन सवार है।

बुड्ढा ब्याह करे, पड़ौसियों को सुख हो गया

हंसी में ही क.।

बुड्ढा हुआ ऊंट, पर मूंतना न आया

सयाने आदमी को काम का शऊर न होना।

बुड्ढी घोड़ी लाल लगाम

बेतुका काम।

बुड्ढी बकरी और हुंडार से ठट्ठा

कमजोर होकर भी अपने से अधिक ताकतवर से छेड़खानी करना।

बुड्ढी भैंस का दूध शक्कर का घोलना

बुड्ढे मर्द की जोरू गले का ढोलना

बुड्ढा अपनी औरत को बहुत सहेज कर रखता है। ढोलना=तावीज। हार।

बुड्ढी हुई नायका इस हाल को पहुंची।

सिर हिलने लगा छातियां पत्ताल को पहुंची। (नज़ीर)

बुढ़ापा आने पर अंग शिथिल हो जाते हैं।

बुड्ढे की न मरे जोरू, बारे की न मरे मां

क्योंकि बुढ़ापे में स्त्री के मरने से बड़ा कष्ट होता है और बालक भी मां के मरने से अनाथ हो जाता है।

बुड्ढे की सीख, करे काम को ठीक

वड़े बूढ़े की सीख काम आती है।

बुड्ढों ने जो काम सिखाया, धोका भूल न उसमें पाया

स्पष्ट।

बुढ़ापे में अक्ल मारी गई है

मूर्खता के काम करते हैं।

बुढ़ापे में मट्टी खराब

बूढ़ा कष्ट पाता है और लोग उसकी हंसी उड़ाते हैं।

बुढ़िया को पैठ बिना कब सरे?

बुढ़िया को वाजार गए बिना चैन कहां? जब कोई अपनी आदत नहीं छोड़ता तब क.।

बुढ़िया ग़ज़ब की पुड़िया

लड़ाकू बुढ़िया के लिए क.।

बुढ़िया दीवानी हुई, पराये बरतन उठाने लगी

सयाना मूर्ख।

बुढ़िया मर गई तो कुछ ग़म नहीं, पर फ़रिश्तों ने घर देख लिया

अब वे फिर आ सकते हैं।

फ़रिश्ते=मृत्यु के दूत।

बुरा कहने वाले पर तीन हर्फ़, (मु.)

फारसी के लाम, ऐन और नून इन तीन अक्षरों से बने 'लान' शब्द से मतलब है जिसका अर्थ होता है 'धिक्कार' या 'थू'।

बुरा बेटा, खोटा पैसा, वक्त पर काम आ जाता है
बुरी चीज भी कभी-न-कभी काम आ ही जाती है; उसका तिरस्कार करना ठीक नहीं।

बुरा हाकिम, खुदा का ग़ज़ब
बुरा अफसर ईश्वरीय कोप है।

बुरी घड़ी न आवे
किसी पर कभी विपत्ति न पड़े।

बुरे का साथ दे सो भी बुरा
स्पष्ट।

बुरे की बुराई से डरिये
बुरे के बुरे कामों से डरना चाहिए।

बुरे तुझ से डरिये या तेरी बुराई से?
बुरा स्वयं भी दुष्ट होता है।

बुरे भले में चार अंगुल का फ़र्क है
बुरे भले में बहुत अंतर नहीं, वही काम थोड़ी सी सावधानी से सुधरता है, और वही असावधानी से बिगड़ भी जाता है।

बुरे वक्त का अल्लाह बेली
दुख के समय ईश्वर के सिवा कोई सहायता नहीं करता।

बुरे वक्त का कौन है जुज़ खुदा
दे. ऊ.।
जुज़=सिवा।

बुरे से खुदा भी डरता है
अतः उससे बचना चाहिए।

बुरे से देव डरापें
दे. ऊ.।

बुलबुल का-सा चौंडा, (स्त्रि.)
बुलबुल की कलगी की तरह सजाए गए बाल।
(ऐसे बाल, जिन्हें गृहस्थ परिवार की स्त्रियां नहीं सजातीं।)

बुलावे, न चलावे मोर तीन बखरे, (पू.)
किसी ने उसे न बुलाया, न चलाया, फिर भी वह आकर अपने तीन हिस्से मांगती है।
बिना बुलाए निमंत्रण में पहुंच जाना; अथवा बिना पूछे-ताछे बीच में बोलना।

बुलावै न चलावै, मैं तो दुल्हन की चाची
जबर्दस्ती अपना अधिकार बनाना।

बुबद हम पेशा, बाहम पेशा दुश्मन, (फ़ा.)
एक ही पेशे के दो आदमियों में कभी समझौता नहीं हो सकता; क्योंकि वे एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं।

बूंट बड़ा होय तो भनसार न फोड़े
एक चना, कितना ही बड़ा हो, भाड़ नहीं फोड़ सकता।
दे.—अकेला चना...।

बूंद का चूका घड़े ढलकावे
जब कोई मनुष्य मौके पर किसी साधारण मामले में चूक जाए और बाद में अपनी उस भूल को मिटाने का प्रयत्न करता फिरे, तब क.।
(कथा है कि एक गंधी बहुत-सा इत्र लेकर किसी राजा के पास बेचने गया। इत्र दिखाते समय उसकी एक बूंद फ़र्श पर गिर पड़ी। राजा ने तुरंत उसे उंगली से पोंछा और मूंछों से लगा लिया। राजा का यह क्षुद्र कार्य देख गंधी मुस्करा कर रह गया। राजा का मंत्री उसके चेहरे को देख इस बात को ताड़ गया। उसने गंधी का सब इत्र खरीद कर मुंह मांगा दाम दे दिया। राजा को लोभी समझ कर गंधी कहीं दूसरे दरबार में जाकर उसकी हंसी न उड़ाए, इस विचार से उसने फिर वह सब इत्र उस गंधी पर ही डलवा दिया। गंधी भी सब बात समझ गया, और यह कहता हुआ चला गया कि 'बूंद का चूका घड़े ढलकावे, पर उस बूंद से भेंट कहां?' अर्थात राजा का जो हलकापन उस गिरी हुई बूंद को उठाकर सूंघने से प्रकट हो चुका है, वह अब मेरे ऊपर घड़ा भर इत्र लुढ़काने से छिप नहीं सकता।
'बूंद से बिगड़ी हौज़ से नहीं सुधरती'—इस प्रकार भी उक्त कहावत प्रचलित है।)

बूंद-बूंद कर के तालाब भरता है
थोड़ा-थोड़ा संचय करने से बहुत इकट्ठा हो जाता है।

बूंद से गई फिर हौज़ से नहीं आती
दे.—बूंद का चूका...।

बू गई, बूदार गई, रही खाल की खाल
शरीर की नश्वरता पर क.।

बूचा सबसे ऊंचा
ऐसा मनुष्य (या ऐसी वस्तु) जो सबसे अलग दिखाई पड़े।
बूचा=जिसका कान कटा हो प्रायः कान कटे कुत्ते को ही बूचा कहते हैं।

बूड़ा बंस कबीर का उपजे पूत कमाल
दे.—डूबा बंस...।

बूढ़ न सवाद घीव खिचड़ी, (स्त्रि.)
बूढ़ा अच्छी चीज खाना नहीं जानता।

बूढ़ भइलन, नाक लगे रहिलन, (पू.)
बूढ़े तो हो गए, पर नाक लगी हुई है।

जो सयाना होकर भी लड़कों जैसा काम करे, उससे क.।

बूढ़ भइल, बुढ़धौस न छूटल, (स्त्रि.)

बूढ़े हो गए पर लड़कपन नहीं छूटा।

बूढ़ भई गुइयां दिमाग मोर वैसे

बूढ़ी हो गई, पर दिमाग वैसे ही हैं, (जैसे जवानी में थे।)

बूढ़ा कुत्ता पिलवा नाम

रूप-गुण के विरुद्ध नाम।

बूढ़ा घोचला जनाज़े के साथ, (स्त्रि.)

बूढ़ी औरत के नखरे मरने पर ही छूटते हैं।

बूढ़ा जाने किया, बालक जाने हिया

दे.—बालक जाने...।

बूढ़ा बनिया और बेर चुनने जाये !

एक असंभव बात। बनिया ऐसा काम नहीं करेगा, जिसमें उसे कोई लाभ न हो।

बूढ़ा वाला बराबर होता है

बूढ़े और लड़कों की कुछ आदतें एक-सी होती हैं।

बूढ़ी जुरवा, नाम खतीजा

रूपगुण के विरुद्ध नाम।

(खतीजा का अर्थ रूपवती होता है।)

बूढ़े कलावंत की कौन सुने

वूढ़े गवैये का गाना कोई नहीं सुनता।

बूढ़े तोते भी कहीं पढ़ते हैं?

बूढ़े आदमी को कोई काम नए सिरे से नहीं सिखाया जा सकता।

बूढ़े मुंह मुहासे, लोग आये तमाशे

बूढ़ा आदमी अगर जवानों का-सा आचरण करे तो वह एक हंसी की बात हो जाती है।

(मुहासे चेहरे की फुंसियां होती हैं जो जवान लड़कों को ही निकलती हैं। बूढ़ों को निकलें तो लोग निस्संदेह तमाशा देखने आएंगे।)

बूर के लड्डू खाय सो पछिताय, न खाय वह भी पछताय

दे.—खाए तो पछताए।

बेअदब बेनसीब, बाअदब बानसीब, (फ़ा.)

बड़ों का सम्मान न करने वाला अभागा होता है, सम्मान करने वाला भाग्यवान।

बे ऐब ज़ात खुदा की

केवल ईश्वर ही निष्कलंक है।

बेकार मवास कुछ किया कर, कपड़े ही उधेड़ कर सीया कर

बैठे रहने से कुछ-न-कुछ करना अच्छा है।

मवास=(मवाश), मत रह।

बेकारी बिकारी

खाली बैठे रहने से स्वास्थ्य खराब होता है।

बिकारी=(विकारी) विकार उत्पन्न करने वाला।

बेकारी से बेगारी भली

बैठे रहने की अपेक्षा मुफ्त में ही दूसरों का काम कर देना अच्छा।

बेख़र्ची में आटा गीला

अव्वल तो पैसा पास में नहीं, फिर आटा गीला हो गया। अब उसे ठीक करने के लिए आटा कहां से आए। जब कोई ऐसा काम सामने आ जाए, जिस पर पैसा ख़र्च करना बहुत जरूरी है, पर गांठ में कुछ न हो, तब क.।

बेख़ार गुल नहीं

सुख के साथ दुख लगा है।

ख़ार=कांटा।

गुल=फूल।

बेगाना सिर कद्दू बराबर

दे.—पराया सिर कद्दू...।

बेग़ाना सिर पसेरी बराबर

दे.—पराया सिर पंसेरी...।

बेग़ानी आस नित उपास

दे.—पराई थैली...।

बेगाने कारन लूली तोड़ना

दूसरे के खाने के लिए मिठाई बनाना। व्यर्थ का परिश्रम करना।

(लूली जलेबी की तरह की एक मिठाई होती है।)

बेगाने कारन लूली तोड़े टांग, (स्त्रि.)

दूसरे के लिए लंगड़ी अपनी टांग तोड़ती है।

दे.—ऊ.।

बेगाने खत्ते पर झींगुर नाचे

दूसरे की वस्तु पर घमंड करना।

खत्ता=अनाज की खेती।

बेघरनी घर पादत है, है घरनी घर गाजत है, (पू.)

दे.—बिन घरनी...।

बेघरनी घर भूत का डेरा

दे.—बिन घरनी...।

बेच-बेच मेरी पखनी का ब्याह, (स्त्रि.)

लड़की के ब्याह में प्रायः बहुत खर्च करना पड़ता है। उसी पर क. कि बेचो घर की संपत्ति और करो लड़की की शादी।

बेचे के साग, करे मोतियों के दाम, (पू.)
अपनी हैसियत से बाहर बात करना।

बेचे सो बंजारा, रखे सो हत्यारा, (हिं.)
माल को बेचना ही अच्छा है, रख छोड़ना अच्छा नहीं।

बेजड़ा के पीसनहारी, गेहूं के गीत गावे, (स्त्रि.)
(1) असंगत काम।
(2) हैसियत से बढ़कर बात करना।

बेज़र बिसनी भड़ुवे बराबर
(1) बिना पैसे का व्यसनी भड़ुवे के समान है।
(2) बिना पैसे की रंडी भड़ुवे के समान है।
व्यसनी=किसी भी तरह का नशा करने वाला, पान, तमाखू आदि भी उसमें शामिल हैं।

बेटा खाय, बाप लखाय; कलयुग अपना बल दिखलाय
पुत्र जब पिता की सुख-सुविधा का कोई ध्यान न रखे, तब क.।

बेटा बन के सब ने खाया है, बाप बन के कोई नहीं खाता
प्रेम से बोलने वाले को सब चाहते हैं, रोब जमाने वाले को कोई नहीं।

बेटा बेटी बस का अच्छा
आज्ञाकारी लड़का या लड़की ही प्रशंसनीय है।

बेटा मरियो, पर तिस्सर न पड़ियो, (स्त्रि.)
तीसरे लड़के का जीने की अपेक्षा मर जाना अच्छा।
लोक-विश्वास।
(एक के बाद एक तीसरे लड़के का होना बहुत अशुभ मानते हैं।)

बेटा हुआ जब जानिए, जब पोता खेले बार
पुत्र का होना तभी सार्थक है, जब घर में पोता खेलता फिरे; क्योंकि पोता हो जाने से वंश के आगे बढ़ने की आशा हो जाती है।

बेटी और ककड़ी की बेल बराबर होती है
दोनों जल्दी बढ़ती हैं।

बेटी का धन निभाना है, आते भी रुलाये, जाते भी रुलाये
लड़की का होना अच्छा नहीं, उसके पैदा होने पर भी दुख होता है और ब्याह के बाद जब वह ससुराल जाती है, तब भी दुख होता है।

बेटी ने किया कुम्हार, और मां ने किया लुहार।
न तुम चलाओ हमार, न हम चलाएं तुम्हार।
जहां दोनों एक-से बुरे हों, वहां कौन किसकी कहे?

बेटी ससुरा न जाती, मन-मन गाजती, (स्त्रि.)
लड़की (किसी वजह से) ससुराल नहीं जाती, मन-ही-मन क्रोध से उफनती रहती है।
किसी से अपनी बात न कह पाना।

बेटे से नाम चलता है
वंश बढ़ता है।

बे थांग चोरी नहीं होनी
बिना भेद के चोरी नहीं होती।

बेदर्द क़साई, क्या जाने पीर पराई? (स्त्रि.)
हृदयहीन व्यक्ति।

बेदिल नौकर, दुश्मन बराबर
मन लगाकर काम न करने वाला नौकर अच्छा नहीं।

बेधर्मा भई और बेहना के साथ में, (पू., स्त्रि.)
बुरा काम किया और कुछ मजा भी नहीं आया। गुनाह बेलज्ज़त।
बेधर्म=धर्मभ्रष्ट।
(बेहना हलकी जाति का मुसलमान होता है और उक्त बात कहने वाली हिंदू है।)

बेफ़िक्री अजब चीज है
बहुत बढ़िया चीज है।

बे बूझ नगरी, बे बूझ राजा; टके सेर भाजी; टके सेर खाजा
घोर कुप्रबंध और अराजकता।
(कथा है कि किसी समय एक साधु अपने चेले के साथ देशाटन करता एक नगर में पहुंचा। वहां उसने चेले को आटा लेने के लिए बाजार भेजा। चेले ने सभी चीजें एक ही भाव बिकती देखकर मगद, मालपुए खरीद लिए, और प्रसन्न होता हुआ गुरु के पास आया। परंतु साधु ने जब यह देखा तो उसने ऐसे स्थान में रहना पसंद नहीं किया, जहां सब वस्तुएं एक भाव मिल रही हों, और चेले को वहीं छोड़कर वह अन्यत्र चला गया। यहां चेला उस नगर में मौज से रहने लगा और मालटाल खाकर कुछ दिनों में काफी मोटा हो गया। संयोगवश नगर में एक खून हो गया। बहुत तलाश करने पर भी हत्यारे का पता नहीं लग सका। राजा इस पर बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने आज्ञा दी कि नगर में जो भी सबसे मोटा आदमी मिले, उसे पकड़ कर फांसी दे दी जाए। सिपाहियों ने उसी चेले को सबसे मोटा ताजा जानकर पकड़ लिया और फांसी के लिए राजा के सामने ले गए। साधु को जब इसका पता चला तो चेले को बचाने के लिए दौड़े आए। राजा के पास आकर

बोले—खून मैंने किया है। फांसी मुझे मिलनी चाहिए। यह आदमी निरपराध है, इसे छोड़ दीजिए। इस पर सिपाहियों ने चेले को छोड़कर गुरु को पकड़ लिया। पर जब वे उसे फांसी की टिकटी के पास ले गए तो चेला चिल्ला उठा खून तो मैंने किया है। उन्हें छोड़ दीजिए। इस तरह दोनों में विवाद छिड़ गया। एक कहता मैंने खून किया है। दूसरा कहता—नहीं मैंने किया है। इस पर राजा बड़े चक्कर में पड़ गए और उन्होंने दोनों को छोड़ दिया। सारांश कथा का यह है कि जहां सब चीज एक भाव मिलती हों वहां कभी न्याय और सुप्रबंध नहीं हो सकता। इस कथा पर आधारित भारतेन्दु हरिश्चंद्र का 'अंधेर नगरी' नामक एक सुंदर प्रहसन है।)

बे बयाही खाये रोटियां, और ब्याही खाये बोटियां
व्याह हो जाने के बाद लड़की जब ससुराल चली जाती है, तो हमेशा उसे कुछ-न-कुछ भेंट-सौगात देते रहना पड़ती है। इसी से क.।
बोटियां=हड्डियां। खाये वोटियां का भाव यह है कि ब्याह के बाद उस पर और भी अधिक खर्च करना पड़ता है।

बे माघे घी खिचड़ी खाये, बे मेहरी ससुरारे जाये,
बे भादों पेन्हाई पव्वा, कहें घाघ ये तीनों कव्वा।
जो माघ को छोड़कर दूसरे महीनों में घी खिचड़ी खाए, स्त्री के मर जाने पर ससुराल जाए और भादों के सिवा दूसरी ऋतु में झूला झूले। घाघ कहते हैं, ये तीनों ही मूर्ख हैं।

बे मीर बाजी अबतर
फर्जी के पिट जाने पर शतरंज की बाज़ी कमजोर पड़ जाती है। विना मालिक या अफसर के काम गड़बड़ हो जाता है।

बे मेह की डांवरी, घोड़ा बिना लगाम।
बे माथ के लश्कर, तीनों भइल निकाम।, (ग्रा.)
बिना वर्षा के खेत जोतना, बिना लगाम का घोड़ा और बिना नायक की फौज; ये तीनों व्यर्थ हैं।

बे खांसी का घर है
स्पष्ट।

बेरों में गुठलियों का मिलाना
अच्छी वस्तु में निकम्मी का मेल करना।

बेल के मारे बबूल तले, बबूल के मारे बेल तले
बेल के नीचे गए तो उसका फल सिर पर गिरा, बबूल के नीचे गए तो उसके कांटे शरीर में छिद गए। कहीं भी आश्रय न मिलना। अभागा मनुष्य।

बे-लज्जी बहुरिया पर घर नाचै, (स्त्रि.)
निर्लज्ज बहू दूसरे के घर घूमती-फिरती है।

बेल पक्का तो कौवों के बाप को क्या?
माना कि कोई वस्तु बहुत बढ़िया है, पर वह यदि हमें सुलभ नहीं, तो उससे हमें लाभ क्या?
(बेल के ऊपर का छिलका इतना कड़ा होता है कि कौवा उसे अपनी चोंच से तोड़ नहीं सकता और उसका गूदा नहीं खा सकता।)

बेल फूटा राई-राई हो गया
बेल (नीचे गिरकर) फूटा तो टुकड़े-टुकड़े हो गया। आपस की फूट से बहुत हानि होती है।
(राई या सरसों का दाना बहुत छोटा होता है। उसी से मुहावरा राई-राई बना, जिसका ठीक अर्थ छार-छार है।)

बेल बढ़ावे और जड़ काटे
मूर्ख आदमी।
(जो बेल को सींचता और उसकी जड़ को काटता है। धूर्त या कपटी के लिए भी क.।)

बेल, बबूल, ख़ाक और धूल
दोनों ही एक से हानिकारी। एक के नीचे जाने से सिर फूटता है, दूसरे के पास जाने से कांटे छिदते हैं।

बेल मढ़े चढ़ते नहीं दिखाई देती
काम पूरा होते नहीं दिखाई देता।
मढ़े=मंडप पर।

बेवक़्त की शहनाई, मुए कूढ़ ने बजाई, (स्त्रि.)
कोई जब बिल्कुल ही बेमौके की बात करे, तब क.।

बेवारिसी नाव डावांडोल
जहां कोई देखभाल करने वाला नहीं होता, वहां सब काम गड़बड़ हो जाता है।
(प्रायः अनाथ लड़के के लिए क.।)

बेसवा सती, न कागा जती
वेश्या चरित्रवान नहीं होती, और कौवा भी निरामिष-भोजी नहीं होता।

बेसिरी फ़ौज़
बेमालिक या बिना अफसर के कार्यकर्ता।

बेहयाई का बुरका, मुंह पर डाल लिया है
शर्म लाद ली है।

बेहया के नीचे रूख जमा, उसने जाना छांह हुई
ऐसा निर्लज्ज आदमी, जिसे किसी भी बात की शर्म न हो।

बैंगनों का नौकर नहीं हूं, आपका नौकर हूं

ठाकुर-सुहाती कहना।

(कथा है कि एक दिन किसी अमीर ने अपने मुसाहिब से कहा कि बैंगन की तरकारी बहुत अच्छी होती है, वैद्यक में इसकी बड़ी प्रशंसा लिखी है। उसके खाने से भूख बढ़ती है। मुसाहिब ने कहा—जी हां हुजूर, तभी तो उसके सिर पर मुकुट भी बना हुआ है। इसके बाद एक दिन फिर अमीर ने कहा—भाई बैंगन तो बड़ी खराब चीज है। भूख मारता है, और कफ़ भी पैदा करता है। मुसाहिब ने कहा—जी हां हुजूर, तभी तो उसके सिर पर कांटे हैं। अमीर बोला—उस दिन तो तुम बैंगनों की प्रशंसा कर रहे थे, और आज मेरे निंदा करने पर तुम भी निंदा करने लगे; क्या बात है? इस पर मुसाहिब ने जवाब दिया—हुजूर, मैं आपका नौकर हूं, न कि बैंगनों का।)

बैठा बनिया क्या करे? इस कोठी का धान उस कोठी में धरे?

कोई खाली बैठा आदमी व्यर्थ का काम करे, तब क.।

बैठी बुढ़िया मंगल गाय

बूढ़ी औरत को कुछ काम नहीं तो वह गाना ही गाती है। करने वाला कुछ-न-कुछ करता ही है।

बैठे-बैठे तो कारूं का ख़ज़ाना भी खाली हो जाता है

जब कोई उद्योग न करे, और बैठ के ही खाए, तब क. । कारूं=प्राचीन काल का एक बहुत अधिक धनवान जो हज़रत मूसा का बड़ा भाई और बहुत बड़ा कंजूस माना जाता है।

बैठे से बेगार भली

खाली बैठने की अपेक्षा मुफ्त में दूसरों का काम करना अच्छा।

बैद करे बैदाई, चंगा करे खुदाई

(1) वैद्य अपनी वैद्यकी का पैसा लेता है, आराम तो ईश्वर करता है।

(2) वैद्य का तो केवल नाम होता है, आराम ईश्वर ही करता है।

बैद की बैदाई गई, कानी की आंख गई।

दोनों ओर नुकसान का होना—एक को मजदूरी नहीं मिली, दूसरे का काम बिगड़ गया।

बैरी का बोल, बसूले का छोल

दुश्मन की फब्तियां बसूली की तरह कलेजे को छीलती हैं।

बैरी बोल घिनावने, मरिए अपने बोल

मृत्यु तो अपने समय पर ही होती है, पर वैरी के बोल सहे नहीं जाते; कोसने से किसी का कुछ नहीं बिगड़ता, पर कोसना सहा नहीं जाता।

बैरी से बच, प्यारे से रच

दुश्मन से बचकर, और शुभेच्छु से मिलकर रहना चाहिए।

बैल का बैल गया, नौ हाथ का पगहा गया

पूरी हानि हुई।

पगहा=रस्सी, जिससे ढोर बांधे जाते हैं।

बैल न कूदी, कूदी गौन, यह तमाशा देखे कौन?

वैल के ऊपर अनाज से भरी बोरी लादी गई, तो बैल ने तो कोई आपत्ति नहीं की, पर बोरी उछल-कूद मचाने लगी। जब किसी से कोई (चुभती हुई) बात कही जाए और वह तो उसका कोई उत्तर न दे, पर दूसरा आदमी चिढ़कर बोल उठे, तब क.। बिना मतलब बीच में बोल उठना।

बैल, बधिया; साझे अधिया, (कृ.)

साझे की खेती में बैल भी आधे रहते हैं, अर्थात दोनों पक्षों को अपने-अपने बैल देने पड़ते हैं।

बैल सरकारी, यारों की टिटकारी

मुफ्त की चीज का मजा लूटना।

बैसाख, जेठ द्वितीयायाम, उत्तर ऊंचो चांद।
यह निहचे कर जानिए, पृथ्वी मेंह सुलाभ। (कृ.)

यदि बैसाख और जेठ की शुक्लपथ की द्वितीया को उत्तर की ओर चंद्रमा ऊंचा दिखाई दे तो निश्चित रूप से बहुत वर्षा होती है।

बोटी दे कर बकरा लेते हैं

खूब नफ़े का सौदा करते हैं।

बोटी नहीं तो शोरुवा ही सही

जो मिले वही बहुत।

बोया गेहूं उपजा जौ

(1) भलाई के बदले बुराई मिली।

(2) काम कुछ किया, परिणाम कुछ निकला।

बोया न जोता, अल्लाह मियां ने दिया पोता, (मु.,स्त्रि.)

अचानक भाग्य खुल जाने पर क.।

बोये आम, फले भाटा

दे.—बोया गेहूं...।

बोये पेड़ बबूल के, आम कहां से होय?

जैसा किया वैसा पाया।

बोलता चाकर मुनीब के आगे गूंगा

बातूनी नौकर मालिक के आगे घबरा जाता है।

बोलता है जब तलक है बोलता
सांस रुकी और ख़त्म।
बोलती पर सदमा है
इतना गहरा दुख है कि बोल नहीं पाता।
बोलती बंद हो गई
(1) मर गया।
(2) किसी बात का जवाब देते न बने, तब भी क.।
बोलते की आशनाई है
(1) जब तक जीवन है तभी तक मित्रता है। इसलिए उसे क्यों थोड़े समय के लिए तोड़ा जाए; ऐसा भाव प्रकट करने को क.।
(2) मित्र के मरने पर दुख प्रकट करते हुए भी क.।
बोली बोली तो ये बोली 'मेरी जूती बोले', (स्त्रि.)
एक औरत दूसरी से लड़ते समय ताना मार कर कह रही है।
बोले के न चाले कें, मैं तो सूते के भली, (स्त्रि.)
सुस्त और आलसी औरत के लिए क.।
सूते के भली=सोते हुए ही अच्छी।
बोले तो बीवी मेरी, नहीं तो दरकार नहीं तेरी
स्पष्ट।
बीवी=औरत
बोलो तो बोलो, नहीं तो पिंजड़ा खाली करो
या तो अच्छी तरह रहो, या फिर यहां से जाओ।
बोहनी टोनी, रुदुबेला, (व्य.)
बोहनी होने से बला टलती है, बिक्री अच्छी होती है।
बौना जोरू का खिलौना
स्पष्ट।
ठिंगने आदमी को चिढ़ाने के लिए क.।
बौहरे की राम-राम, जम का संदेशा, (हिं.)
क्योंकि आकर तक़ाजा करेगा।
बौहरा=साहूकार।
ब्याज बढ़ावे धन घना, राड़ बढ़ाये छोय।
जैसे गंधक आग में, गिरे तो दूनी होय।
स्पष्ट।
राड़=झगड़ा।
छोय=क्षोभ। क्रोध।
ब्याज मोटा, मूल का टोटा, (व्य.)
अधिक ब्याज पर रुपया लेने से असल भी डूबने का डर रहता है।

ब्याह का असगुन मालूम भये, जब लहकौरे में आये भट्टा, (पू.)
लहकौर में जब (दूल्हा के लिए) आये तो पता चल गया कि ब्याह कैसा होगा, अर्थात बरातियों को क्या खाने को मिलेगा।
लहकौर=एक रस्म, जिसमें कन्यापक्ष की स्त्रियां वर के लिए जनवासे में भोजन लेकर आती हैं।
ब्याह न कराव, झूठ-मूठ का चाव
(1) जानबूझ कर किसी को धोखे में रखना।
(2) झूठी बात करना।
ब्याह नहीं किया, बरातें तो देखी हैं
हमने स्वयं कोई एक काम नहीं किया, तो क्या हुआ, दूसरों को करते तो देखा है।
(जब कोई किसी से ताना मारकर कहे कि तुम इस काम को करना क्या जानो, तब वह जवाब में कहता है।)
ब्याह पीछे पत्तल भारी, (हिं.)
ब्याह हो चुकने पर एक पत्तल का खर्च भी अखरता है। जब उत्सव समाप्त हो जाता है, तब फिर उस संबंध में सामान्य खर्च करना भी एक बोझ मालूम पड़ता है।
ब्याह में खाई बूर, फिर क्या खायगी धूर?
साधनों के रहते भी अगर कष्ट उठाया तो सुख तो फिर कभी मिल ही नहीं सकता।
बूर=लकड़ी का बुरादा, निकम्मी वस्तु।
ब्याह में बीद का लेख
बेमौके की बात। हर काम का एक समय होता है।
बीद=चरागाह।
(फैलन ने यही अर्थ किया है, पर वह समझ में नहीं आता।)
ब्याह हुआ नहीं, गौने का झगड़ा
ब्याह हुआ नहीं, और वहू की विदा के लिए झगड़ रहे हैं।
गौना=ब्याह के बाद की एक रस्म, जिसमें वर वधू को अपने साथ घर ले जाता है।
ब्याही न बरात चढ़ी, डोली में बैठी, न चूं-चूं हुई
किसी बिना ब्याही से ताना मारकर कहा जा रहा है।
ब्याही बेटी का घर रखना और हाथी पालना बराबर है
(जमाई सहित) लड़की को घर में रखने से बहुत खर्च उठाना पड़ता है।
ब्याही बेटी पड़ोसन दाख़ल
क्योंकि फिर वह पराये घर की हो जाती है, और बहुत कम मायके आती है।

भ

भंग कहे 'मैं रंगी जंगी', पोस्त कहे, 'मैं शाहेजहां' अफ़ीम कहे 'मैं चुन्नी बेगम'
नशेबाज़ों की ओर से नशों की प्रशंसा।

भंग, गांजा जिन देहु गंवारन के, हंड़िया भर भात संहारन के, (पू.)
भंग और गांजा गंवारों को नहीं देना चाहिए, अन्यथा वे भोजन का नाश मारेंगे।
(भंग और गांजा दोनों ही भूख बढ़ाने वाले माने जाते हैं। नशे में आदमी यों भी ज्यादा खाता है।)

भंग पीना आसान है, मौजें जान मारती हैं
बिना जाने-बूझे किसी काम को कर डालना आसान है, पर उसका परिणाम भोगना कठिन है।
मौजें=तरंगें, नशे के झोंके।

भइल ब्याह मोर करबा का, (भो.)
(1) काम निकल जाने पर दूसरों को ठेंगा बता देना। *अथवा* (2) वक्ता कह रहा है कि अब तो मेरा काम बन गया, मेरा कोई क्या कर सकता है?

भई अंधियारी, फूली छाती; चीन्ह पड़अई रांड अहबाती
भ्रष्ट विधवा के लिए क.।

भई छछूंदरी सर्प गति, उगलत बने न खात
कठिन असमंजस में पड़ जाना। किसी काम को करते बने न छोड़ते, तब क.।
(लोक प्रवाद है कि सांप अगर छछूंदर को पकड़ कर निगल ले, तो कोढ़ी हो जाता है और अगर उगल दे तो अंधा।)

भकुआ भींगे गांव के गेंवड़े, (पू.)
मूर्ख आदमी गांव के बाहर ही खड़ा भीगता है; उसमें इतनी बुद्धि नहीं कि जल्दी से गांव में चला जाए और किसी घर की छाया में बैठे।
गेंवड़ा=गांव के बाहर का हिस्सा, सीमांत।

भगले चोर कठरिया हाथ, (भो.)
भागते चोर को जो भी चीज मिलती है, वह उसी को ले जाता है।
कठरिया=कठौती। लकड़ी का छोटा बर्तन। यहां मतलब किसी भी रद्दी चीज से है।

भजन और भोजन एकान्त भला
ये दोनों एकांत में करने चाहिए।

भट पड़े वह ज़माना, नतनी को घूरे नाना
जमाने की खूबी पर क.।

भट पड़े वह सोना, जिससे टूटे काना, (स्त्रि.)
जिस वस्तु से हानि हो, उसे अलग कर देना चाहिए, फिर वह कितनी ही अच्छी क्यों न हो।
ऐसे लड़के या संबंधी के लिए क., जिससे बहुत कष्ट पहुंच रहा हो, अथवा जो एक बोझ बन गया हो। जिस धन के उपार्जन में बहुत परिश्रम करना पड़ रहा हो, अथवा जिसके कारण कोई विपत्ति आ सकती हो, उसके लिए भी क.।

भट, भटियारी, वेस्या, तीनों जात कुजात।
आते का आदर करें, जात न पूछें बात।
स्पष्ट।
भट=भाट, याचक ब्राह्मण।

भड़क भारी, खीसा खाली
कोरी शानशौकत।
खीसा=जेब।

भड़भड़िया अच्छा, पेट पापी बुरा
जो तुरंत अपने विचारों को प्रकट कर दे, वह अच्छा, पर

जो किसी बात को मन में रखे (और बाद में बदला लेवे) वह बुरा।

भड़भूजन की लड़की, केसर का टीका

अपनी मर्यादा के भीतर न रहना।

भडुवे को भी मुंह पर भडुवा नहीं कहते

किसी के मुंह पर उसे बुरा-भला नहीं कहना चाहिए।

भर दे भर पावे, काल कंटक पास न आवे

जितना देगा उतना ही पाएगा और सुखी रहेगा। भिखारियों की टेर।

भरम मारे भरम जिआवे

भ्रम से ही आदमी मारा जाता है, भ्रम उसे जीवित भी रखता है।

भरमा भूत, शंका डायन, (हिं.)

भ्रम और शंका दोनों ही हानिकारक हैं।

(इसलिए साहस और समझदारी से काम लेना चाहिए।)

भर हाथ चूड़ी, पट सूं रांड, (स्त्रि.)

सुहागिन है, पर तुरंत रांड़ भी हो गई।

(1) बदचलन औरत के लिए क.।

(2) मक्कार से भी कहा.।

भरा कहार, खाली कुम्हार, तेज जाता है

पानी से भरी बेंगी लेकर धीरे-धीरे चलने में कहार को असुविधा होती है, और खाली कुम्हार तो तेज चलेगा ही, अपने काम की वजह से।

भरा सो धरा

(1) आदमी को जब बहुत घमंड हो जाता है, तो उसे अलग रख दिया जाता है, अर्थात उसे फिर कोई पूछता नहीं। *अथवा*

(2) जो भरा अर्थात योग्य होता है, वह आराम से रहता है।

भरी थाली में लात मारना, (स्त्रि.)

(1) जानबूझ कर अपना लगा हुआ काम छोड़ देना।

(2) मिली हुई सुविधा को अज्ञानवश ठुकरा देना।

भरी बरसात में आबदस्त न लेवे, वह भड़ुवा अलसेटी है

जो वर्षा में भी शौच के लिए पानी न ले, वह सचमुच ही बड़ा गंदा और आलसी है

(किसी चीज के रहते हुए उसका उपयोग न करना।)

भरे को भरता है

ईश्वर धन में धन देता है।

भरे समुंदर घोंघा हाथ

बहुत लाभ की जगह से कुछ न मिलना।

भरे समुंदर प्यासे

जहां सुख के सब साधन मौजूद हों, वहां भी दुख में रहना।

दे. ऊ. भी।

यह कहावत 'भरे समुंदर घोंघा प्यासे' इस रूप में ही प्रचलित है।

भल जनमल, भल पंडित भइल, (पू.)

अच्छे पैदा हुए और अच्छे पंडित हुए। जो घर में खाने को नहीं जुड़ता। किसी पंडित की स्त्री उससे व्यंग्य में कह रही है।

भल भइल पिया के बाघ मारल, जे बेगारी से बचल, (पू. स्त्रि.)

अच्छा हुआ जो (मेरे) स्वामी को बाघ ने मार डाला, वह बेगार से ही बचा।

(किसी ऐसी स्त्री का कथन, जो अपने पति की अकर्मण्यता से शायद बहुत जली-भुनी है।)

भल मरलस, भल पिल्लू पड़ल, (पू.)

अच्छा मरा और अच्छे कीड़े पड़े। दुष्ट के लिए क.।

भल माथ मुड़ौलन, भल बेल गिरलैन, (पू.)

अच्छा सिर मुड़ाया और अच्छा बेल गिरा।

बदकिस्मत आदमी।

भलाई कर, बुराई से डर

स्पष्ट।

भला कर भला हो, सौदा कर नफ़ा हो

फ़कीर कहा करते हैं।

भला किया सो खुदा ने, बुरा किया सो बंदे ने

(1) अच्छा भाई, हमने तुम्हारा बुरा ही किया सही, ऐसा भाव प्रकट करने को क.।

(2) कृतघ्न के प्रति भी क., जो किसी के किए उपकार को नहीं मानता।

भलमानस घर में पड़ा, रिज़ाले ने जाना मुझसे डरा

भलामानस धूर्त के मुंह लगना पसंद नहीं करता, इसलिए चुप बैठता है, पर धूर्त समझता है कि वह मुझसे डर गया।

(इसलिए और भी धूर्तता करता है।)

भला हुआ दीदी गौने गई, दीदी की फरिया मोको भई, (स्त्रि.)

किसी भावज का कहना कि, चलो अच्छा हुआ; ननद ससुराल गई, उसकी साड़ी अब मैं पहनूंगी।

(ननद के जाने पर भावज को थोड़ी स्वतंत्रता मिल जाती है, यही कहावत का भाव है।)

भले आदमी की मुर्गी टके-टके
भला आदमी मुलाहिज़े में मारा जाता है।

भले का जमाना ही नहीं
भलाई का उल्टा नतीजा होता है।

भले का भला
(1) भले का भला होता है। *अथवा*
(2) भले की संतान भी भली होती है।

भले की बातें रस की खान, बुरे की बातें दुख निदान
भले की बातें भलीं और बुरे की बुरी होती हैं।

भले के भाई, बुरे के जंवाई
भले के साथ भले बनो और बुरे के साथ बुरे।

भले घोड़े को एक चाबुक, भले आदमी को एक बात काफ़ी है
भला आदमी इशारे में बात समझ जाता है।

भले दिन आयेंगे, तो घर पूछते चले आयेंगे
भले दिन आने पर हालत अपने-आप सुधर जाती है।

भले बाबा बंद पड़ी, गोबर छोड़ कसीदे पड़ी, (स्त्रि.)
किसी ग़रीब घर की लड़की का कहना, जो बड़े घर में व्याही गई है, कि मैं तो अच्छी आफ़त में पड़ गई। गोबर थापने में आजादी थी, पर यहां घर में बंद बैठी कसीदा काढ़ती रहती हूं।

भलेमानुस की सब तरह खराबी है
स्पष्ट।

भले संग बैठिए, खाइए नागर पान।
बुरे संग बैठिये, कटाइये नाक और कान।
सत्संग से लाभ और कुसंग से हानि होती है।

भलो भयो मेरी मटुकी टूटी, मैं दही बेचन से छूटी, (स्त्रि.)
अच्छा हुआ कि मेरी मटकी फूट गई, दही बेचने (की झंझट) से ही छुट्टी मिली।
(जिस काम को करने की इच्छा नहीं थी, उसे न करने का बहाना मिल जाना।)

भसक्कड़ के दामाद को भात ही मिठाई
पेटू को साधारण चीज भी खाने को (मुफ्त का) मिल जाए, तो वही बहुत बढ़िया।

भांग तो ऐसी पीजिए जैसी कुंज गलिन की कीच।
घर के जाने मर गए (और) आप नशे के बीच।
भंगेड़ियों की उक्ति।

भांड़ों संग खेती की, गा बजा के अपनी की
भांड़ों के साझे में खेती की, उन्होंने गा-बजा के अपनी कर ली।
(लफंगों के साथ काम करने में हानि होती है।)

भाइयों के डंड मलो
जब कोई पहलवान कुश्ती मारता है, तब उसके शागिर्द खुशी में उसके दंड (भुजाएं) मलते हैं।
(उक्त वाक्य का प्रयोग व्यंग्य में उस समय करते हैं, जब कोई मनुष्य शक्ति से बाहर काम करने जाकर असफल हो, अथवा जितनी शेख़ी मारे उतना काम न कर सके।)

भाई अइसन हित ना, भाई अइसन बैरी ना, (भो.)
भाई ऐसा मित्र नहीं, भाई ऐसा बैरी भी नहीं।

भाई भाव करे, तलमारे ऊपर घाव करे
भाई प्रेम भाव दिखाता है, पर (वह) ऊपर से तो प्रेम करता है, भीतर से जड़ काटता है।

भाई भाव का, नहीं अपने दाव का
(1) भाई या तो प्रेम करता है या फिर अपना मतलब गांठता है। अथवा (2) भाई प्रेम चाहता है, नहीं तो फिर अपना स्वार्थ देखता है।

भाई दूर, पड़ौसी नेरे
समय पर भाई काम नहीं आता, पड़ोसी काम आ जाते हैं।

भाई न दे, भाव दे
बाजार भाव से ही चीज दे, किसी को भाई समझ कर कम दामों में न दे।

भाई सा साहू, न भाई सा बैरी
भाई सा सहायक नहीं? भाई सा शत्रु नहीं।

भाई सो भाई, बाकी छींके पर
छींके पर वही वस्तु रखी जाती है जिसकी तत्काल आवश्यकता नहीं होती। यहां भाई शब्द में श्लेष है, जिसका अर्थ है भ्राता और मन-सुहाई। इसलिए कहा. के दो अर्थ हैं—
(1) भाई ही अपना होता है, बाकी सब किनारे रख दिए जाते हैं।
(2) जो वस्तु अच्छी लगी सो खाई नहीं तो छींके पर उठा कर रख दी।

भागते भूत की लंगोटी भी बहुत है
(1) जब सभी कुछ नष्ट हो रहा हो, तो उसमें से जो कुछ बच जाए, वही लाभ है।
(2) जिससे कुछ भी मिलने की आशा न हो, उसे थोड़ा भी मिल जाए, तब भी क.।

भागलपुर के भागलिये, कहलगांव के ठग।
पटने के दिवालिये, तीनों नामज़द।
ये तीनों प्रसिद्ध हैं।
भागलिये=भागलपुर निवासी। यहां व्यापारियों से मतलब है।

भागे हुए लश्कर का मर्द पीछा नहीं करता
जो हार मान लेता है बहादुर आदमी उसे नहीं मारता।

भाजी की भाजी, क्या दूसरे की मुहताजी, (ग्रा.)
जितना दिया था उतना मिल गया, इससे अधिक और क्या चाहिए?

भाड़ लीपती जायं, हाथ काले का काला
भाड़ लीपने से हाथ काला ही रहता है।
बुरे के साथ अच्छाई करने पर भी बुराई ही मिलती है।

भाड़ा, ब्याज, दच्छना; पीछे पड़े कुच्छना
इन तीनों को बकाया नहीं रखना चाहिए, बाद में वे वसूल नहीं होते।
दच्छना=दक्षिणा। शुभकार्य आदि के समय ब्राह्मण को दिया जाने वाला दान।

भात खाते हाथ पिराय, (स्त्रि.)
इतनी सुकुमार है।
पिराय=दर्द करता है।

भात खाने बहुतेरे, काम दुल्हा दुल्हन से
मुफ़्तखोरों के लिए क.।

भात छोड़ा जाता है साथ नहीं छोड़ा जाता
भोजन भले ही छोड़ दे पर (यात्रा में) किसी का साथ मिल रहा हो, तो वह नहीं छोड़ना चाहिए।

भात बिन रह जावे, पिया बिन रहा न जावे, (स्त्रि.)
भोजन के बिना तो (वह) रह सकती है, पर प्रियतम के बिना चैन नहीं पड़ता।

भात होगा तो कौवे बहुत आ रहेंगे
खाने को मिलने पर मुफ़्तखोरे बहुत इकट्ठा हो जाते हैं।

भादों का घाम और साझे का काम
ये दोनों बुरे होते हैं।

भादों का झल्ला, एक सींग गीला एक सूखा, (कृ.)
भादों में वर्षा कम हो जाती है।

भादों की छाछ जूतों को, कातक की छाछ पूतों को, (स्त्रि.)
भादों में छाछ हानिकारक और कार्तिक में गुणकारी मानी जाती है इसीलिए क.।

भादों की धूप में हिरन काले पड़ते हैं
भादों में जब कभी भी धूप निकलती है, तो वह बहुत तेज होती है।
(वास्तव में भादों की जगह क्वार के महीने की ही धूप तेज होती है।)

भादों के मेह से दोनों साख की जड़ बंधती है, (कृ.)
भादों में वर्षा होने से ख़रीफ और रबी, दोनों फसलों को लाभ होता है।
(ख़रीफ की फसल में ज्वार, मक्का, मूंग आदि होती है और रबी में गेहूं, मटर, अरहर, चना आदि।)

भादों दोनों साख का राजा है, (कृ.)
भादों में पानी बरसने से दोनों फसलें बनती हैं इसीलिए क.।

भादों में बरखा होय, काल पंछोकर जाकर रोय, (कृ.)
भादों में वर्षा होने से अकाल का भय नहीं रहता।

भादों से बचे तो फिर मिलेंगे
भादों में अधिक बीमारियां फैलती हैं और मौतें भी बहुत होती हैं, इसीलिए क.।

भार डाल सब भार में सम्मन उतरे पार
जिस झंझट में फंसे थे, उससे किसी तरह छुट्टी पाई।

भारी पत्थर देखा, चूमकर छोड़ दिया
किसी मनुष्य से जब कोई भारी पत्थर नहीं उठा, तो उसे चूमकर छोड़ दिया, यह प्रकट करने के लिए कि हम तो उसे उठा ही नहीं रहे थे, केवल चूम रहे थे।
(जब कोई काम अपने करने योग्य न जंचे, तो होशियारी के साथ उससे अपना हाथ खींच लेना चाहिए।)

भारी ब्याज मूल को खाय, (व्य.)
अधिक सूद पर रुपया देने से असल भी वसूल नहीं होता।

भाव न जाने राव
(1) राजा मुरव्वत नहीं जानता। *अथवा* (2) राजा बाजार भाव क्या जाने?

भाव राव की खबर नहीं
(1) बाजार भाव और राजा के बारे में (कि वह क्या करेगा) कोई कुछ नहीं कह सकता। *अथवा*
(2) इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि तुम्हें किसी बात की कोई खबर नहीं।

भाव राव खुदा के हाथ
बाजार भाव और राजा ये दोनों ईश्वर के हाथ होते हैं,

अर्थात उन पर किसी का काबू नहीं होता।

भावी के बस संसार है

स्पष्ट।

भावी=होनहार।

भिड़ का छत्ता

कोई ऐसा मजबूत या खतरनाक गिरोह या परिवार कि जिसमें अगर किसी एक आदमी को छेड़ दिया जाए तो सब-के-सब हमला कर बैठें।

भीख और पिछोर

भीख तो जैसी मिले वैसी ले लेनी चाहिए।

(मुफ्त की चीज में दोष नहीं निकालना चाहिए। अनुचित मांग करने पर भी क.।)

पिछोर=सूप से फटक कर। साफ करके।

भीख के टुकड़े बाजार में डकार

झूठी अकड़ दिखाना।

भीख मांगे और आंख दिखावे

जब कोई आदमी जबर्दस्ती करके कोई चीज मांगे, तब क.।

कोई नीच आदमी रोब दिखाए तब उससे भी क.।

(बहुत से फ़कीरों की आदत होती है कि अगर उन्हें भीख देने से इंकार कर दिया जाए तो, मुड़चिरापन करने लगते हैं। कहावत उनको लेकर ही बनी।)

भीख मांगे और पूछे गांव की जमा

जब कोई छोटी हेसियत का आदमी ऐसी बातें करे, जिनसे उसे कोई मतलब नहीं हो सकता तब क.।

जमा=मालगुजारी।

भीगा चूहा

ऐसे आदमी के लिए क., जिसकी केवल ठुड्डी पर दाढ़ी हो और जो स्वभाव का भी अच्छा न हो

भीगी बिल्ली

सयाने या धूर्त आदमी के लिए क.।

भीगी बिल्ली बताना

आलस्यवश काम को टालना और बहाना बनाना।

(उक्त वाक्य एक ऐसे आलसी नौकर की कथा पर आधारित है, जो अपने मालिक के हुक्म को कोई-न-कोई बहाना बनाकर हमेशा टाल दिया करता था। एक दिन उसके मालिक ने चिराग़ बुझाने के लिए कहा, तो उसने जवाब दिया, 'आंख बंद कर लीजिए सब तरफ अंधेरा हो जाएगा।' इसी तरह एक बार रात के समय मालिक ने कहा, 'देखो, बाहर पानी तो नहीं बरस रहा है।' नौकर ने कहा, 'हां, बरस तो रहा है।' मालिक ने फिर पूछा, 'तुम्हें मालूम कैसे हुआ?' नौकर बोला, 'एक बिल्ली अभी मेरे पास से निकली थी। उसका बदन मैंने टटोला तो भीगा था।' इसी से उक्त प्रवाद का जन्म हुआ।)

भीत के भी कान होते हैं

मुंह से बाहर बात निकली नहीं कि वह फैल जाती है।

भीत टले पर बान न टले

बुरी आदत किसी तरह नहीं छूटती।

भीतर का घाव रानी जाने या राव

मन की व्यथा तो जो पीड़ित है, वही जान सकता है।

भीत होगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे, (स्त्रि.)

(1) हड्डी रहेगी तो मांस भी बढ़ जाएगा।

(2) पूंजी रहेगी तो धंधा भी बहुत मिल जाएगा।

(3) जड़ रहेगी तो फल-ही-फल हो जाएंगे।

इस तरह का भाव प्रकट करने को क.।

भुई बिस्वा भर नहीं, नाम पृथ्वीपालक

कोरा नाम-ही-नाम।

भुजदंड ही आपके कहे देते हैं

कि आप कितने ताकतवर हैं। कमजोर और निखट्टू से व्यंग्य में क.।

भुस के मोल मलीदा

जब बढ़िया चीज सस्ते दामों में मारी-मारी फिरे तब क.।

भुस पर लीपना

ऐसा काम जो बहुत दिनों टिके नहीं।

भुट्टा का भगवा मूजक डोरी, बीबी दुसोई छत नई हां मोर, (स्त्रि.)

टाट का लंहगा और मूंज की डोरी, बीवी समझती है कि मेरे समान कोई है ही नहीं। कोई एक और दूसरी को बुरा भला कह रही है।

भुस में चिनगी डाल जमालो दूर खड़ी, (स्त्रि.)

लड़ाई-झगड़ा कराने वाला, शरारती, चुग़लखोर, इनके लिए क.।

भूआ की नदी में कौन बहे?

व्यर्थ की शंका में पड़ना। सुख सब चाहते हैं, दुख कोई नहीं चाहता, यह अर्थ भी हो सकता है।

(कथा है कि किसी जुलाहे को रास्ते में संभल का बहुत सा भूआ पड़ा दिखाई दिया। भूआ को नदी समझकर उसने पार नहीं किया और लौट आया। उसी से कहावत का

जन्म हुआ।)

भूआ=(1) रुई जैसा मुलायम टुकड़ा, सेमलवृक्ष की रुई। (2) मैल, फेन

भूख को भोजन क्या और नींद को बिछौना क्या?

भूखे की तृप्ति जैसा भी भोजन मिले, उससे हो जाती है। जिसे नींद आ रही हो, वह भी जैसा बिछौना मिले, उस पर सो जाता है।

भूख गए भोजन मिले, जाड़ा गए कबाय।
जोबन गए तिरिया मिले, तीनों देव बहाय।

समय निकल जाने पर कोई चीज मिले, तो वह किस काम की?

कबाय=गर्म कपड़ा

भूख में किवाड़ पापड़

भूख में जो भी चीज मिले, वह अच्छी लगती है।

भूख में गूलर पकवान

दे. ऊ.।

भूख लगी तो घर की सूझी

भूख लगने पर घर याद आता है। प्रायः लड़कों से क. जो बाहर घूमते रहते हैं, और भोजन के समय आ जाते हैं।

भूख सब से मीठी

भूख लगने पर सब चीज मीठी लगती है।

भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं

ईश्वर सबको खाने को देता है। जितने जीव हैं, उन सबको सुबह से शाम तक खाने को मिल ही जाता है।

भूखा गया जोय बेचने, अघाना कहे बंधक रखो

कोई भूखा धनी के पास अपनी औरत बेचने गया, तो उसने कहा–'गिरवी रखो।'

विपद्रग्रस्त से अनुचित लाभ उठाना।

अघाना=जिसका पेट भरा हो। पैसे वाला।

भूखा जोरू बेचे, राजा कहे उधार लूं

दे. ऊ.।

भूखा तुरक न छेड़िए हो जाय जी का झाड़

भूखे मुसलमान को नहीं छेड़ना चाहिए

भूखा बंगाली भात ही भात पुकारे

क्योंकि भात उसका मुख्य भोजन है। आदत आसानी से नहीं छूटती।

भूखा मरता, क्या न करता

भूखा पेट के लिए नीच-से नीच कर्म करता है।

भूखा मरे कि सतुआ साने

भूखा मरने की अपेक्षा सत्तू ही खाना अच्छा। भूख में जो मिले, वही खा लेना चाहिए।

भूखा सो रूखा

भूखे को जल्दी क्रोध आता है।

भूखे को अन्न, प्यासे को पानी, जंगल जंगल अबादानी

जो भूखे को अन्न और प्यासे को पानी देता है, उसे हर जगह आराम मिलता है।

अबादानी=आबदाना। अन्नजल।

भूखे को क्या रूखा, और नींद को क्या तकिया

स्पष्ट।

दे. भूखे को भोजन क्या...।

भूखे को खिला और नंगे को पहना

स्पष्ट।

भूखे घर में नोन निहारी

भूखे के लिए नमक ही नाश्ते की तरह है। उसे जो मिले वही बहुत है।

भूखे ने भूखे को मारा, दोनों को ग़श आ गया

क्योंकि दोनों एक से कमज़ोर हैं। दो ग़रीब या साधनहीन आदमी आपस में लड़ें, तो दोनों ही मारे जाते हैं।

भूखे बेर, अघाने गांडा, (ग्रा.)

भोजन के पहले बेर और बाद में गन्ना लाभदायक होता है।

भूखे भजन न होय, साधो !

भूख में ईश्वर का भजन भी नहीं होता।

(पाठा.–भूखे भजन न होय गोपाला।)

भूखे भलेमानस से डरिये

क्योंकि नाराज हो जाने पर वह परेशान कर सकता है।

भूखे से कहा, 'दो और दो क्या?' कहा, 'चार रोटियां'

जो जिस चीज की तलाश में होता है, उसे वही सूझती है।

भूखे हो तो हरे हरे रूख देखो

हृदयहीन कंजूस का मंगतों से क.।

भूड़ के हूड़ होते हैं

देहाती मूर्ख होते हैं।

(यह देहातियों की पिछड़ी हुई हालत व्यक्त करता है न कि उनकी वास्तविक सामर्थ्य।)

भूत का पकवान

निस्सार वस्तु।

भूत के पत्थर की चोट नहीं लगती
क्योंकि उसका भौतिक अस्तित्व नहीं होता।
बहुत धूर्त या चालाक के लिए क.।
भूत जान न मारे, सता मारे
दुष्ट के लिए क.।
भून बोया, उपट गया
भूना हुआ अन्न नहीं जमता।
मूर्खतापूर्ण कार्य।
भूनी भांग न कड़वा तेल
ऐसा मनुष्य जिसके पास कुछ न हो।
भूभल में रोटी दाव कर तो नहीं आई है?
कोई स्त्री किसी के यहां जाकर जल्दी आना चाहती है, तब उससे कहा जा रहा है कि आग में रोटी दबाकर तो नहीं आई है, जो जाने की इतनी जल्दी मचा रही है।
भूमियां तो भूमि पै मरी, तू क्यों मरी बटेर?
किसान तो जमीन के पीछे लड़ते हैं, हे बटेर, तू क्यों लड़ती है। जब साधारण मनुष्य बड़ों के झगड़े में पड़े तब क.।
भूरा भैंसा, चंदली जोय, पूस महावट बिरले होय
भूरा भैंसा, गंजी औरत, और पूस में वर्षा वहुत कम देखने को मिलती है।
भूल गई दिन दहाड़ा, मुंडों ने सिहरा बांधा
घमंड से फूल उठी।
जब कोई उन्नति होने पर ग़रीबी के पुराने दिन भूल जाए तब क.।
भूल गई नार, हींग डाल दई भात में, (स्त्रि.)
जल्दी में या घवराहट में कुछ-का-कुछ कर जाना।
भूल गए राग रंग भूल गए छकड़ी।
तीन चीज याद रही नोन तेल लकड़ी।
गृहस्थी का चक्कर।
भूल-चूक का डर नहीं
कभी भी ठीक की जा सकती है।
भूल-चूक लेनी-देनी, (व्य.)
हिसाब चुकाए जाने पर क.।
भूलल भांड़ दिवारी गावे, (भो.)
भूला भांड़ दिवारी गाता है, जब कि उसे गाना चाहिए होली। घबराया हुआ आदमी।
भूला जोगी दूनी लाभ
भुलक्कड़ जोगी एक ही घर में दो बार भीख मांगता है; इस प्रकार लाभ में रहता है।
भूला फिरे किसान जो कातिक मांगे मेह, (कृ.)
वर्षा पूस या माघ की अच्छी होती है; कार्तिक की वर्षा से खेती को कोई लाभ नहीं होता, बल्कि गेहूं आदि की बुवाई में बाधा पड़ती है।
भूली, रे रघुला, तेरी लाल पगिया पर, (स्त्रि.)
जब कोई किसी के ऊपरी ठाटबाट से प्रभावित हो जाए या बाहरी रूप देखकर धोखे में आ जाए, तब क.।
भूले-चूके दंड नहीं
अनजान में हुई भूल क्षमा की जाती है।
भूले बामन गाय खाई, अब खाऊं तो राम दुहाई, (हिं.)
किसी ब्राह्मण ने भूल से गाय का मांस खा लिया, तब वह सौगंध खाकर कहता है कि किया-सो-किया, अब ऐसा नहीं करूंगा।
एक बार कोई भूल करके जव आदमी दुबारा वैसी भूल न करने की प्रतिज्ञा करे तब क.।
भूले बिसरे राम सहाई
भूले-चूके का ईश्वर मालिक है।
भेख से भीख है
(1) दुनिया में दिखावट से ही काम चलता है।
(2) वेशभूषा से ही आदमी की क़द्र होती है।
भेजा खायें, जेर सहलायें
खुशामद भी करे और खोपड़ी भी खाए। फालतू आदमी।
भेड़ की लात घुटने तक
(1) किसी छोटे लेने-देने में थोड़ी ही हानि होती है।
(2) कमजोर की चोट का अधिक असर नहीं होता। ज्यादा-से-ज्यादा इतना कर सकेगा, ऐसा भाव।
भेड़ चाल है
भेड़ों की तरह एक-दूसरे के पीछे चलना। आंख मूंदकर दूसरे का अनुकरण करना।
भेड़ तो जहां जायेगी मुड़ेगी
(1) धनी जहां जाता है वहीं लूटा जाता है।
(2) ग़रीव को हर जगह सताया जाता है।
भेड़ पै ऊन, किसने छोड़ी?
कोई नहीं छोड़ता। सब कोई उसके बाल कतर लेते हैं, क्योंकि वे बहुत कामों में आते हैं।
भेडिया धसान
धांधली।
भैंस का गोबर भैंस के चूतड़ों को लग जाता है
सब दूसरों के काम नहीं आता। बड़े आदमियों के अपने

ही खर्चे बहुत होते हैं। कहावत का यह मतलब है।

भैंस का दूध, नली का गूदा

भैंस का दूध हड्डी के गूदे की तरह होता है, यानी बहुत ताकत होती है।

भैंस के आगे बीन बजे वह बैठी पगुराय, (पू.)

(1) मूर्ख किसी अच्छी वस्तु का महत्व क्या समझे?

(2) मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है।

भैंस को अपने सींग भारी नहीं

अपने घर के लोगों का पालन-पोषण किसी को कष्टकर मालूम नहीं देता।

भैंस दूध जो कढ़वां पीवे, हांगा घटे न जब लग जीवे, (ग्रा.)

जो भैंस का थन-दुहा दूध पीता है, उसका बल कभी नहीं घटता।

भैंस पकौड़े हग गई

किसी मनुष्य के यकायक बहुत समृद्ध हो जाने पर व्यंग्य में क.।

भैंस पै दूध किसने छोड़ा?

किसी ने नहीं। सब उसे पूरा कर लेते हैं।

भैंसा भैंसों में या कसाई के खूंटे में

दे. या भैंसा भैंसों में...।

भैय्या जी बहुतेरे डंड मलवायें, बंदा पहलवान नहीं बनने का

भाई साहब मुझे चाहे जितना कुश्ती लड़ना सिखाएं, पर मैं पहलवान नहीं बनने का।

(मैं अपने दूसरे साथियों की बराबरी नहीं कर सकूंगा। वाक्य से वक्ता का यह भाव प्रकट होता है।)

भोग बिलास, जब तक सांस

मरे पीछे सब समाप्त।

भोग भाग, छत्तीसों राग

जितना भी हो सके, जीवन का आनंद लूट लो।

भोगी सो रोगी

स्पष्ट।

भोगी=भोगों में लिप्त रहने वाला। विषयासक्त।

भोजन न भात, नैहर का समाद, (स्त्रि.)

विधवा के लिए कहा है कि उसका कहीं आदर नहीं होता, न मायके में न ससुराल में।

समाद=समधी का घर, ससुराल।

भोजपुर में जइहा मत, जइहा तो खइहा मत, खइहा तो सोइहा मत, सोइहा तो टोइहा मत, टोइहा तो रोइहा मत, (भो.)

भोजपुर कभी जाओ नहीं, जाओ तो खाओ नहीं, खाओ तो सोओ नहीं, सोओ तो (अपना बसना-बोरिया) टटोलो नहीं, टटोलो तो रोओ नहीं।

(भोजपुरियों की चोरी और ठगी की प्रवृत्ति पर फब्ती।)

भोंदू भाव न जाने, पेट भरन से काम

मूर्ख आदमी को किसी चीज का स्वाद नहीं होता, उसे तो पेट भरने से काम।

भोर का मुरगा बोला, पंछी ने मुंह खोला

सवेरा होते ही चिड़ियां बोलने लगती हैं, अथवा दाना चुगने के लिए उतावली हो उठती हैं।

भोर भया जब जानिये, जब पीले बादल होयं

जब बादल पीले हो उठें, तो समझो सवेरा हो गया।

भोरे भुलाये सांझ घर आये, ऊ भुलाइल न कहावे

सवेरे का भूला सांझ को घर आ जाए, तो वह भूला हुआ नहीं कहलाता।

भौं का गिला आंख के सामने

(1) किसी मनुष्य के निकट संबंधी से ही उसकी शिकायत की जा सकती है। अथवा

(2) किसी के निकट संबंधी से उसकी शिकायत व्यर्थ है, क्योंकि वह तो पहले से उसका सब हाल जानता है।

म

मंगनी की चादर, तापर पचास का आदर, (स्त्रि.)
मंगनी की चादर, वह पचास (लोगों को) भेंट कर रही है। दूसरे की चीज अपनी करके बताना। *अथवा*
दूसरे की वस्तु पर घमंड करना।

मंगनी के बैल के दांत नहीं देखते हैं
मुफ्त में जो चीज मिले वही अच्छी। उसमें कोई मीन-मेख नहीं निकालनी चाहिए।
(गाय-बैल आदि ढोरों की उम्र उनके दांतो से ही जानी जाती है। उम्र के लिए दांतों की परीक्षा करते हैं।)

मंगनी के सतुआ, सास के पिंडा, (स्त्रि.)
सास का श्राद्ध सत्तू से कर रही है, सो भी मांगे का सत्तू।
(अनिच्छा से दूसरे का सम्मान करना।)

मंगाई छींट, लाया ईंट
(1) इच्छा के विरुद्ध काम करना। अथवा
(2) सुनी अनसुनी करना।

मंगाई हींग, लाया अदरक
दे. ऊ.।

मंड़वे के आटे में शर्त क्या?
सस्ती चीज के अच्छे होने की दूकानदार क्या शर्त करे? वह तो जान-मानकर खराब होगी ही।
मंड़वा=एक बहुत हल्की किस्म का आनाज।

मंत्री बिना राज सूना
मंत्री के बिना राजकाज नही चलता।

मक़दूर की मां कौड़ी ही रगड़ती है
आदमी एक-एक कौड़ी का हिसाब रखने से ही धनी बनता है।
मक़दूर=समर्थ, धनवान।

मकर चकर की धानी, आधा तेल और आधा पानी
धूर्त और चालबाज व्यापारियों के लिए क.।

मक्के गए, न मदीने गए, बीच-ही-बीच में हाजी भये, (मु.)
अनायास ही जब किसी का अभीष्ट सिद्ध हो जाए तब क.।

मक्के में रहते हैं, पर हज नहीं करते, (मु.)
सुलभ चीज की क़द्र नहीं होती, अथवा उसे पाने की कोई इच्छा नहीं करता।

मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना
धूर्त के लिए क. जो ऊंचा हाथ मारे।

मक्खी बैठी शहद पर पंख गये लपटाय।
हाथ मले और सिर धुने, लालच बुरी बलाय।
लालची।

मक्खीमार बड़ा चमार
कंजूस के लिए क.।

मग्गह देश कंचन पुरी, देस अच्छा, भाखा बुरी
मगध देश बहुत अच्छा है, पर वहां की भाषा बहुत बुरी है।
(मगध की कर्णकटु बोलियों पर कटाक्ष।)

मग्गह में मरना, अगले जनम में गदहा बनना
मगध में मरने से अगले जन्म में आदमी गधा होता है। हिंदू अंधविश्वास।

मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखाये?
जिसका जो पैतृक गुण है, वह अपने-आप आ जाता है, सिखाना नहीं पड़ता।

मछली तो नहीं कि सड़ जायेगी, (स्त्रि.)
आखिर ऐसी जल्दी क्या?—इस तरह का भाव प्रकट करने को क.।

मजनूं को लैला का कुत्ता भी प्यारा
प्रेमी को अपनी प्रेमिका की खराब-से-खराब चीज भी अच्छी लगती है।

मज़ा मा भज़ा, (अ.)
बीती बात को भूल जाओ।

मट्टी का घड़ा भी ठोक बजाकर लेते हैं, (व्य.)
(1) हर चीज देखभाल कर खरीदनी चाहिए।
(2) बिना सोचे-विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए।

मट्टी में हाथ डाले सोना होय है।
भाग्यवान पुरुष।

मट्ठा मांगन चली और मलैया पीछे लुकाई, (स्त्रि.)
जरूरत पड़ने पर किसी से कोई चीज मांगनी पड़े तो उसमें शर्म की क्या बात?
मलैया=छोटी मटकी। चपिया।

मत कर सास बुराई, तेरे भी आगे जाई, (स्त्रि.)
बहू का कहना सास के प्रति।
(अभिप्राय यह है कि हे सास ! तू मुझे तंग मत कर, क्योंकि तेरे भी लड़कियां हैं, जो ससुराल जाएंगी। तू अगर मुझे कष्ट देगी, तो वे भी इसी प्रकार वहां कष्ट पाएंगी।)

मत बो चापड़, उजड़े टाबर, (कृ.)
पथरीली जमीन में खेती मत करो, परिवार उजड़ता है, अर्थात पैदावार नहीं होती।

मतला साफ हुआ
बात समझ में आ गई। शंका दूर हुई।
मतला=(1) पूर्व दिशा, (2) ग़ज़ल के आरंभ के दो चरण, जिनमें अनुप्रास होता है।

मथरा दे बुंदा, लुभावे दस गुंडा, (पू., स्त्रि.)
दुराचारिणी के लिए क.।
मथरा=माथे पर।

मथवा मदारी का क्या साथ? (ग्रा.)
हिंदू मुसलमान का क्या साथ? यह भी विद्वेषमूलक है।
मथवा=हिंदू नाम विशेष।

मधुरे आंचे रोटी मीठ, (भो.)
धीमी आंच की सिकी रोटी स्वादिष्ट होती है। जो काम धीरे-धीरे और सावधानी से किया जाता है वह अच्छा होता है।

मन उमराव, करम दलिद्री
इच्छाएं तो बड़ी, पर भाग्य खोटा।

मन करबे मोटा, खैबे सोटा, मन करबे मोंही सगरे तोहीं, (भो.)
उदार पुरुष को सब चाहते हैं।
मोटा=संकीर्ण, स्वार्थपूर्ण
मोंही=(1) मेरी ओर। अथवा (2) मोहित करने वाला।

मन करे पहिरन चौतार, करम लिखे भेड़ी के बार, (स्त्रि.)
दे. मन उमराव...।
चौतार=एक प्रकार की बढ़िया मलमल।

मन का अंकुस ज्ञान
ज्ञान से मन वश में रहता है।

मनका फेरत जनम गया, न मन का फेर।
कर का मनका छोड़के, तू मन का मनका फेर।
(कबीर)
हाथ की माला को अलग रखकर ईश्वर का भजन तो सच्चे मन से ही करना चाहिए।

मन की मारी कासे कहूं, पेट मसोसा दे दे रहूं, (स्त्रि.)
किसी दुखिया का क.। अत्यंत दीनता दिखाना।
मसोसा देना=मन-ही-मन रंज करना।

मन के लड्डुओं से भूख नहीं मिटती
केवल विचारने से काम नहीं चलता।

मन के लड्डू फोड़ना
हवाई महल बनाना।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
पारब्रह्म को पाइए, मन ही की परतीत।
स्पष्ट। निराश कभी नहीं होना चाहिए।
परतीत=प्रतीत। विश्वास।

मन चंगा तो कठौती में गंगा
अगर मन शुद्ध है (अथवा अगर शरीर स्वस्थ है) तो घर में ही गंगा है।
(कहते हैं कि एक बार संत रैदास ने कुछ यात्रियों को गंगास्नान के लिए जाते देख, उन्हें कुछ कौड़ियां देकर कहा कि उन्हें गंगा जी की भेंट कर देना, परंतु देना तभी जब गंगा जी साक्षात प्रकट होकर उन्हें ग्रहण करें। यात्रियों ने गंगा के समीप पहुंच कर कहा कि ये कौड़ियां संत रैदास ने दी हैं, आप इन्हें स्वीकार कीजिए। गंगा ने हाथ बढ़ाकर कौड़ियां ले लीं और उनके बदले में एक सोने का कंगन रैदास जी को देने के लिए दे दिया। यात्री वह कंगन रैदास जी के पास न ले जाकर राजा के पास ले गए और उन्हें भेंट कर दिया। रानी उस कंगन को देखकर इतनी विमुग्ध हुई कि उसकी जोड़ का दूसरा कंगन मंगाने का हठ कर बैठीं। पर जब बहुत प्रयत्न करने पर भी उस तरह का

कंगन नहीं बन सका, तो राजा हारकर रैदास के पास गए और उन्हें सब वृत्तांत सुनाया। रैदास जी ने तब गंगा का स्मरण करके अपनी कठौती में से, जिसमें चमड़ा भिगोने के लिए पानी भरा रहता था, उस कड़े की जोड़ी निकाल कर दे दी। इसी कथा से उक्त कहावत का निकास है।)

मन चंचल, करम बलिद्दी

भाग्यहीन।

मन चलता है, पर टट्टू नहीं चलता

इच्छाएं तो बहुत पर शरीर काम नहीं देता।

मन चाहे, मुड़िया हिलावे

झूठमूठ ही इंकार करना। स्त्रियों की ना भी हां होती है।

मन जाने पाप, माई न बाप

अपने किये पाप को अपना मन ही जानता है, मां-बाप नहीं जान सकते।

मन भर का सिर हिलाते हैं, पैसे भर की ज़बान नहीं हिलाते

जब कोई मनुष्य किसी बात का उत्तर मुंह से न दे, विशेष कर प्रणाम आदि का उत्तर न दे और केवल सिर हिला दे, तब क.।

मन भाय तो ढेला सुपारी

जिस वस्तु पर मन जाए, वह बुरी होने पर भी अच्छी लगती है।

(स्त्रियां और लड़के प्रायः सोंधेपन के लिए मिट्टी के टुकड़े सुपारी की तरह मुंह में रख लेते हैं। कहावत उसी पर आधारित है।)

ढेला=मिट्टी का टुकड़ा।

मन भावे, मूंड़ हिलावे

दे.–मन चाहे...।

मन भोगी, करम दलिद्री

दरिद्र होकर भी भोगविलास की इच्छा रखना।

मन मलीन तन सुंदर कैसे,
विष रस भरा कनक घट जैसे। (तुलसी)

कपटी।

मनमानी, अनजानी

मनमानी करना।

मनमाने घर जाने

दे. ऊ.।

मन मिले का मेला, चित्त मिले का चेला

स्पष्ट।

मन में गांती टसटस रोवे; चूहा खसमकर सुख से सोवे

कोई सयानी लड़की छोटे लड़के से ब्याही गई है। उसी पर कहा गया है। लड़की ऊपर से तो रोती है; पर मन में प्रसन्न है कि वह स्वतंत्र रहेगी।

मन में बसे, सो सपने दसे

जो बात मन में रहती है, वही स्वप्न में दिखाई देती है।

मन में मूरख, जून में दुखी कोई नहीं

कोई अपने को मूर्ख नहीं समझता, और किसी को अपना जीवन भारी नहीं होता।

जून=योनि। शरीर। जीवन।

मन में शेख फ़रीद, बगल में ईंट

कपटी मनुष्य।

(इसकी कथा है कि कोई चोर शेख़ फ़रीद नामक एक फ़कीर का चेला हो गया था, और उसने कभी किसी की चीज न छूने की शपथ खा ली थी, पर एक बार ज्योंही उसने रास्ते में एक सोने की ईंट पड़ी देखी, त्योंही उसे उठाकर बगल में छिपा लिया।)

मन मोतियों ब्याह, मन चावलों ब्याह, (स्त्रि.)

ब्याह तो सब एक से ही होते हैं, चाहे मन भर मोतियों से किया जाए, चाहे मन भर चावलों से।

मन मौजी, करम दलिद्री

मन तो मौज करना चाहता है, पर भाग्य साथ नहीं देता।

मन मौजी, जोरू को कहे 'भौजी'

मन में आया तो स्त्री से ही भौजी कहने लगे।

मनवां मर गया, खेल बिगड़ गया

हिम्मत हारने से काम बिगड़ जाता है।

मन हमरा पास, धन अनका पास, (स्त्रि.)

दूसरे के पास धन है, तो हमारे पास मन है। उदार पुरुष का कहना।

मन हुलासा, गावे गीत

चित्त प्रसन्न होने पर गाना सूझता है।

मर गए मरदूद, जिनकी फ़ातिहा न दरूद, (मु.)

दुष्ट मर गया, मरने पर जिसका कोई क्रिया-कर्म नहीं हुआ। एक प्रकार की गाली।

मरज़ीए मौला, अज़ हमद औला, (फा.)

ईश्वर की इच्छा ही बलवान है।

मरता क्या न करता

जो मरने को तैयार है, वह सब कुछ कर सकता है।

मरते के साथ मरा नहीं जाता

मरे हुए के लिए जब कोई बहुत विलाप करे, तब क.।

मरते को मारे शामत ज़दा
जिसकी स्वयं मौत आई हो, वही मरते हुए को छेड़ता है।
मरते को मारें शाह मदार
दुखिया को भगवान और भी दुख देता है।
(सं.—दैवो दुर्बल घातकः।)
मरन चली और शुक सामने, (स्त्रि.)
मरने में शकुन-अपशकुन का विचार क्या?
(हिंदुओं के ज्योतिष के अनुसार शुक्र सामने रहने पर यात्रा वर्जित है।)
मरना जीना सबके साथ लगा है
स्पष्ट।
मरना भला बिदेस का, जहां न अपना कोय
भक्त या त्यागियों का कहना। यह पूरा दोहा इस प्रकार है—
मरना भला बिदेस में, जहां न अपना कोय।
माटी खाय जनावरा, महा महोत्सव होय।
मरने को क्या हाथी-घोड़े जुड़ते हैं
जब चाहे तब मर जाए। उपेक्षापूर्वक कहते हैं। जब कोई मरने की धमकी दे, तब भी क.।
मरने को जो चाहे, कफ़न का टोटा
दे. ऊ.।
मरने जायं मल्हार गावें
अवसर के विपरीत काम।
(मल्हार आनंद का राग है और वर्षा ऋतु में ही गाया जाता है।)
मरने पै डोम राजा
इसलिए कि श्मशान में डोम ही कर लेता है। बाद में कुछ होता रहे।
मर-मर न जाते तो भर घर होते, (स्त्रि.)
घर के लोग मरते नहीं तो घर भरा रहता है।
मरल बछिया, बामन को दान, (पू.)
निकम्मी चीज जब किसी के मत्थे मढ़ी जाए, तब क.।
मरा रावन फ़जीहत हो
बुरे आदमी के मरने पर भी लोग उसे कोसते हैं।
मरिहों, पर टरिहों नाहीं, (पू.)
ज़िद्दी।
मरी क्यों? सांस न आया, (स्त्रि.)
व्यर्थ का प्रश्न करना।
मरीज़े इश्क को दीदार काफी है
प्रेम के रोगी के लिए अपने प्रिय को देख लेना काफी है।
मरे का कोई नहीं, जीते-जी के सब लागू हैं
स्पष्ट।
लागू=साथी । मित्र।
मरे को मर जाने दे, हलवा पूड़ी खाने दे
बच्चों की तुकबंदी, जिसका प्रयोग वे कबड्डी के खेल में करते हैं।
मरे तो शहीद, मारे तो गाज़ी, (मु.)
धर्म की रक्षा के लिए मरने में भी कीर्ति मिलती है और दूसरों को मारने में भी। मुसलमानों की उक्ति।
(मुसलमानों में जो धर्म के शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है, वह गाज़ी कहलाता है।)
मरे न जीये, हुकुर-हुकुर करे
बूढ़े रोगी के लिए कहते हैं, जिसकी सेवा करते-करते घर के लोग थक जाते है।
मरे न, पीछा छोड़े
किसी व्यक्ति से बहुत परेशान होने पर क.।
मरे न माझा ले
न मरता है, न आराम से चारपाई पर ही लेटता है। बहुत तंग आ जाने पर क.। दे. ल.।
(खाट पर मरना हिंदुओं में अच्छा नहीं समझा जाता, इसलिए मरते हुए रोगी को नीचे लिटा देते हैं।)
मरे पै बैद
काम के नष्ट हो जाने पर उपाय।
मर्द औरत राज़ी तो क्या करेगा काज़ी?
किसी मामले में दो आदमियों में अगर समझौता हो जाए, तो उसमें फिर कोई क्या कर सकता है?
मर्द का दिखाया न खाइये, मर्द का लाये खाइए, (स्त्रि.)
स्त्री को पुरुष के सामने नहीं खाना चाहिए, पुरुष जो लाए, वही खाना चाहिए।
मर्द का नहाना, औरत का खाना बराबर है
पुरुष जल्दी नहाते हैं, और स्त्रियां जल्दी भोजन करती हैं, इसीलिए क.।
(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है: मर्द का नहाना औरत का खाना, किसी ने जाना किसी ने न जाना।)
मर्द का नौकर मरे वर्ष भर में, रंडी का नौकर मरे छः महीने में
क्योंकि उसे काम बहुत करना पड़ता है।
मर्द का हाथ फिरा, और औरत उभड़ी
ब्याह के बाद लड़की शीघ्र बढ़ती है।

मर्द की बात और गाड़ी का पहिया आगे को चलता है
भले आदमी अपनी बात नहीं बदलते।
मर्द के चार निकाह दुरुस्त हैं
स्पष्ट।
(हिंदुओं का ताना मुसलमानों के धार्मिक विश्वास पर?)
निकाह=ब्याह।
मर्द को गर्द ज़रूर है
मनुष्य को मेहनत अवश्य करनी चाहिए।
मर्द जेकरा गांठ रुपैया, (पू.)
आदमी वही, जिसके पास रुपया हो।
मर्द मरे नाम को, नामर्द मरे नान को
वीर पुरुष को नाम प्यारा होता है, और क़ायर को रोटी।
मर्दों का एक कौल होता है
मर्द अपनी बात से नहीं हटते।
मल्लाह का लंगोटा ही भीगता है
क्योंकि वह कोई और कपड़ा ही नहीं पहनता।
मल्लाही की मल्लाही दी, बांस के बांस खाये
पैसा भी खर्च करना पड़े और अपमान भी हो, अथवा आराम भी न मिले, तब क.।
(नाव में बैठने पर यात्री को प्रायः उन बांसों या पतवारों की ठोकरें लगती हैं, जिनसे नाव खेई जाती है।)
मल्लाही=नाव से नदी पार होने का किराया।
मशालची अंधा होता है
क्योंकि उसे अपने पैरों तले का नहीं दिखाई देता।
मशालची मरे तो पट-बीजना हो, यहां भी चमके, वहां भी चमके
हंसी में कहते हैं।
पटबीजना=जुगनू।
मसखरी के चूड़ा, भर-भर गाल, (पू.)
केवल बातों में बहलाना, देना कुछ नहीं।
चूड़ा=विशेष प्रकार के भुने चावल, जो दही या दूध के साथ खाए जाते हैं।
मसजिद ढह गई, मेहराब रह गई
मरने पर केवल नाम रह जाता है।
मस्ताई बकरी बोक का मुंह चूमती है
मस्ती चढ़ने पर हिताहित का ज्ञान नहीं रहता।
महद से लहद तक
जन्म से मरण तक।
महल्ले में आई बरात, पड़ोसन को लगी घबराट
व्यर्थ परेशान होना, जब कि कोई मतलब नहीं।
महावट बरसी, साढ़ी सरसी, (कृ.)
जाड़े में वर्षा होने से रबी की फसल अच्छी होती है।
महिमा घटी समुद्र की, जो रावन बसा पड़ोस
बुरे की संगति करने से अच्छे को भी कलंकित होना पड़ता है।
(लंका-विजय के समय राम ने समुद्र को बांधा था, यहां उसी से अभिप्राय है।)
महीना पुराया और कमेरा अघाया
महीना पूरा होते ही मज़दूर को तनख़्वाह मिलती है, इसलिए वह प्रसन्न होता है।
मां एली, बाप तेली, बेटा शाख़े ज़ाफ़रान
जब कोई छोटा आदमी बहुत दिखावा करता है, तब व्यंग्य में क.।
एली=इधर-उधर की।
शाख़े ज़ाफ़रान=केसर की टहनी।
मां का पेट, कुम्हार का आवा,
कोई गोरा, कोई काला।
एक ही मां के लड़के अलग-अलग रूप-रंग के होते हैं, उस पर क.।
मां का मान भला
मां का आदर करना चाहिए।
मां की सौक, न बाप से यारी, किस नाते तौन्ह महतारी, (स्त्रि.)
झूठा रिश्ता जोड़ना।
सौक=सौत।
मां के पेट से कोई सीखकर नहीं निकलता
काम करने से ही आता है।
मां खेत में पूत जनेत में
(पहेली) कुसुम को कहते हैं, जिसके रंग से पगड़ी रंगी जाती है और विवाह में पहनी जाती है।
(कहावत के रूप में उक्त वाक्य का अर्थ यही हो सकता है कि कोई कहीं, कोई कहीं।)
जनेत=विवाह।
मांग-जांच के गये झांझा, मांग लें तो लागे लाजा
झगड़कर मांगना, पर अच्छी तरह मांगने में शर्माना।
झांझा=झगड़ा। हुज्जत।
मांगन गए सो मरि गये, मरे जो मांगना जाहिं।
वे नर पहिले ही मरे, जो होते कह दें नाहिं।

स्पष्ट। जो पास में होते हुए भी न दे, उस पर क.।

मांगे के मंगनी, गुड़िया का सिंगार
मांगे की चीज से शौक करना।

मांगे-तांगे काम चले तो ब्याह क्यों करे?
हंसी में क.।

मांगे पर तांगा, बुढ़िया की बरात
भिखारी से भीख मांगना और बूढ़ी औरत से विवाह करना, दोनों बराबर हैं।

मांगे भीख, पूछें गांव की जमा
साधारण हैसियत का होते हुए भी जो बड़ी-बड़ी बातें करता है, या बड़ी बातों का भेद जानना चाहता है, उससे क.।
जमा=मालगुज़ारी।

मांगे में तांगा
मांगकर लाई गई चीज में से दान देना।

मांगे हड़, दे बहेड़ा
(1) कुछ कहना, कुछ सुनना।
(2) आज्ञा के विरुद्ध काम करना।

मां चाहे बेटी को, और बेटी चाहे मोटे धींग को, (स्त्रि.)
अभिप्राय यह कि लड़की मां की परवाह नहीं करती।

मां छोड़ मौसी से मज़ाक, (मु.)
मुसलमानों में मौसी से भी हंसी-दिल्लगी करते हैं। जाति-विद्वेषमूलक।

मां टेनी बाप कुलंग, बच्चे निकले रंग-विरंग
निकम्मे मां-बाप के निकम्मे लड़के।

मां डायन हो तो क्या बच्चे ही को खायगी, (स्त्रि.)
अपनी हानि आप कोई नहीं करता।

मां तेलिन बाप पठान, बेटा शाख़े ज़ाफ़रान
शेख़ीबाज़ से क.। जाति-विद्वेषमूलक कहावत।

मां धोबन, पूत बजाज
दे. ऊ.।

मां न मां का जाया, सभी लोक पराया
ऐसी जगह जहां अपना कोई न हो; विदेश।

मां नारंगी, बाप कोयला, बेटा रौशनउद्दौला
दे.—मां तेलिन...।

मां पनहारी, बाप कंजर, बेटा मिर्जा संजर, (स्त्रि.)
दे.—मां तेलिन...।

मां पिसनहारी अच्छी और बाप हफ़्तहज़ारी कुछ नहीं
क्योंकि बाप की अपेक्षा मां का स्नेह लड़के पर अधिक रहता है।

मां पिसनहारी पूत छैला, चूतड़ पर बांधे बूर का थैला, (स्त्रि.)
मां पिसनहारी है, इसलिए लड़का भूसी के सिवा और किस चीज से अपना शौक पूरा करेगा?

मां पै पूत पिता पै घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़म थोड़ा, (स्त्रि.)
लड़के में अपनी मां के और घोड़े में अपने पिता के थोड़े-बहुत गुण अवश्य आते हैं।
(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है : बापै पूत सिपाह पै घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा।)

मां बाप जीते कोई हराम का नहीं कहलाता
अपने किसी दावे का प्रमाण देने के लिए क.।

मां बेटियों में लड़ाई हुई, लोगों ने जाना बैर पड़ा, (स्त्रि.)
घर के लोगों की लड़ाई, लड़ाई नहीं कहलाती।

मां बेटी गानेवाली, बाप पूत बराती, (स्त्रि.)
जब कोई व्यक्ति किसी खुशी के मौके पर अपने इष्टमित्रों और संगे-संबधियों को न पूछे, और सब काम अकेले ही कर ले, तब क.।

मां भटियारी, पूत फ़तेहखां, (स्त्रि.)
पल्ले कुछ न होते हुए भी शेख़ी बघारना।

मां भटियारी, बेटा तीरंदाज़, (स्त्रि.)
दे. ऊ.।

मां मरे, मौसी जीवे
मौसी के प्रति अधिक प्यार दिखाने को क.।

मां मारे और 'मां' ही 'मां' पुकारे
लड़के का अपनापन मां के प्रति। मां के मारने पर भी वह मां को बुलाता है।

मां रोवे तलवार के घाव से, बाप रोवे तीर के घाव से
(1) पिता की अपेक्षा मां अपने लड़के के अनाचारों को अधिक धैर्य के साथ सहन करती है।
(2) मां-बाप अपने लड़के के दोषों को विभिन्न दृष्टियों से देखते हैं।

माई बाप के लातन मारे, मेहरी देख जुड़ाय।
चारों धामें जो फिर आवे, तबहुं पाप ना जाय।
स्पष्ट।
मेहरी=स्त्री।

माघ का जाड़ा, जेठ की धूप, बड़े कष्ट से उपजे ऊख, (कृ.)
ऊख की खेती में बहुत मेहनत करनी पड़ती है, माघ का जाड़ा सहना पड़ता है और जेठ की गर्मी भी, तब ऊख उपजती है।

माघ तिलातिल बाढ़े, फागुन गोड़े काढ़े

माघ में दिन थोड़ा-थोड़ा बढ़ने लगता है, फागुन में प्रत्यक्ष हो जाता है।

माघ नंगे, बैसाख भूखे

ग़रीब या अभागे के लिए क.।

माघे जाड़ न पूसे जाड़, बतासे जाड़, (कृ.)

माघ पूस के महीने में जब हवा चलती है, तभी जाड़ा पड़ता है।

माट का माट ही बिगड़ा है

सबके सब एक से खराब हैं। घर या समाज के लोगों के लिए क.।

(माट मिट्टी के उस बर्तन को कहते हैं, जिसमें रंगरेज रंग तैयार करते हैं। रासायनिक रंगों के आविष्कार के पहले नील, आल या टेसू के फूलों अथवा टहनियों आदि को मिट्टी के बर्तन में डालकर सड़ाते थे। अगर उनके सड़ने अर्थात खमीर उठने में कोई त्रुटि हो जाती थी, तो रंग नहीं उतरता था। इसे ही 'माट बिगड़ना' कहते थे, जो अब एक मुहावरा बन गया है, कुल का कुल काम बिगड़ जाना।)

माटी में माटी मिली, मिली पौन में पौन।
मैं तोय पूछूं ऐ सखि, दोनों में मुआ कौन।

स्पष्ट। शरीर पर कहा गया है।

मुआ=मरा।

भाड़ न जुरे, मांगे ताड़ी, (पू.)

हैसियत से अधिक शौक़।

ताड़ी=ताड़ के वृक्ष से निकाला हुआ नशीला रस, जिसका व्यवहार मद्य के रूप में करते हैं।

माता का हाथ, भाई का साथ

दोनों अमूल्य हैं।

माता के परसे, भादों के बरसे पेट भरता है, (कृ.)

स्पष्ट।

पाठा.—माता न परसे भरे न पेट, भादो न वरसे भरे न खेत। वर्षा भादों में ही अधिक होती है, इसीलिए कहा गया है।

माता बर्गी मामता, सौकन बर्गी बैर।
दूजा को राखे नहीं, देखा सांझ सबेर। (ग्रा.)

मां से अधिक ममता और सौतन से अधिक़ बैर रखनेवाला संसार में कोई नहीं। इसे अच्छी तरह खोज कर देख लिया गया है।

माथ पर मोटरी, बसंत के गीत, (पू.)

असंगत काम। भाव यह है कि बोझ तो ढो रहे हैं और बसंत के गीत गाने का शौक चर्राया है।

मोटरी=गठरी।

माथ मुड़ा के फ़जीहत भये, जात-पांत दोनों से गए

ऐसा काम करना, जिससे न इधर के रहें न उधर के। दोनों दीन से जाना।

(कथा है कि कोई मनुष्य इस विचार से फ़कीर हो गया कि भीख मांगकर जीवन बिताना अधिक सुविधाजनक है। किंतु थोड़े दिनों बाद यह रास्ता उसे अच्छा नहीं लगा, और उसने फिर अपनी जाति में मिलना चाहा, पर जातिवालों ने उसे नहीं लिया। इस प्रकार वह दोनों ओर से गया।)

माथे का मुड़ौना बेल का खिसकना, (पू.)

सिर मुड़ाते ही वेल गिरा। किसी कार्य का आरंभ करते ही विघ्न आ जाना।

माथे गटरी मधुरी चाल, आज न पहुंचब, पहुंचब काल, (पू.)

(1) बेफ़िक्र आदमी का कहना।

(2) काम धैर्यपूर्वक करना चाहिए, देर लगे कोई परवाह नहीं।

मान का पान भी बहुत होता है

सम्मान से दी गई थोड़ी वस्तु भी बहुत होती है।

मान का पान, हीरा समान

दे. ऊ.।

मान का माहुर और अपमान का लड्डू

मान का ज़हर भी अच्छा होता है।

मान घटे नित के घर जायें, ज्ञान घटे कुसंगत पाये।
भाव घटे कुछ मुख के मांगे, रोग घटे कुछ औषध खाये।

रोज-रोज (किसी के) घर जाने से इज्जत घटती है, बुरी संगत में बैठने से ज्ञान घटता है, किसी से कुछ मुंह से मांगने में क़द्र घटती है, और दवा के खाने से रोग दूर होता है।

मान न मान, मैं तेरा मेहमान

ज़बर्दस्ती किसी के गले पड़ना।

मान न मान, मैं दूल्हा की चाची, (स्त्रि.)

दे. ऊ.।

मानस कसने को मुआमला कसौटी है

आदमी की परख काम पड़ने पर होती है।

माने तो देव, नहीं भीत का लेव, (स्त्रि.)

विश्वास से ही सब होता है। पूरा वचन यों हैं : भाव भाव में सिद्धि, भाव भाव में भेव।

जो मानो तो देव है, नहीं भीत का लेव।

लेव=पलस्तर।

माने न जाने, 'मैं भी नौशा की खाला', (स्त्रि.)

दे.—मान-न-मान मैं तेरा मेहमान।

मामूं के कान में बालियां, भानजा ऐंड़ा-ऐंड़ा फिरे

दूसरे की दौलत पर घमंड या शेखी करना।

माया का क्या जोड़ना, खल खाना कंबल ओढ़ना

(1) किसी फक्कड़ का कहना।

(2) ऐसे धनी कंजूस के लिए भी व्यंग्य में कहते हैं, जो धन-संचय में ही सुख मानता है।

माया के भी पांव होते हैं, आज मेरे कल तेरे

लक्ष्मी एक जगह नहीं ठहरती।

माया गंठ और विद्या कंठ

पैसा पास रहने और विद्या कंठस्थ रहने से ही काम आती है।

माया तेरे तीन नाम, परसू, परसा, परसराम

आर्थिक स्थिति के हिसाब से ही मनुष्य का सम्मान होता है। किसी एक ग़रीब को लोग, परशुराम नाम होने पर भी, परसू ही कहते हैं,। वही व्यक्ति कुछ हालत सुधर जाने पर 'परसा' और फिर धनी हो जाने पर परशुराम कहलाने लगता है।

मतलब, पैसे की ही इज़्ज़त होती है।

माया मरी न मन मरे, मर-मर गए शरीर।
आशा तृष्णा ना मरे, कह गये दास कबीर।

माया, इच्छा, आशा और तृष्णा का नाश नहीं होता, शरीर ही का नाश होता है।

(सं.—भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता
स्तपो न तप्तं बयमेव तप्ता।
कालो न यातोवयमेव यातः,
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा। (भर्तृहरि)

माया मेरे राम की, धरनीधर की देह।
पूंजी साहूकार ही, यश कोई कर लेय।

स्पष्ट।

दान के लिए प्रेरित किया गया है।

माया से माया मिले कर कर लंबे हाथ।
तुलसीदास गरीब की, कोई न पूछे बात।

धनी के पास ही और अधिक धन आता है अथवा धनवान की सब इज़्ज़त करते हैं। ग़रीब को कोई नहीं पूछता।

माया से माया मिले, मिले नीच से नीच।
पानी से पानी मिले, मिले कीच से कीच।

जो जैसा होता है, वह वैसे ही की संगत करता है।

माया हुई तो क्या हुआ, हिरदा हुआ कठोर।
नौ नेजे पानी चढ़ा, तऊ न भौजी कोर।

हृदय में यदि उदारता नहीं, तो पैसा होने से क्या लाभ? पत्थर यद्यपि पानी में भीगा रहता है, किंतु फिर भी उस पर पानी का कोई असर नहीं होता।

नेजा=बांस।

कोर=किनार।

मार के आगे भूत नाचे

मार से सब भय खाते हैं।

पाठा.—मार के आगे भूत भागे।

मार खाता जाय, और कहे 'मारो तो सही'

कायर और निर्लज्ज के लिए क.।

मार खाना, मसज़िद में सो रहना

ठग और उठाईगीरों के लिए क.।

(जिसका कोई घरबार नहीं होता, वही मस्जिद में जाकर सोता है।)

मार गुसैंया, तेरी आस

बहुत सताए जाने पर नौकर का मालिक से या स्त्री का पति से कहना।

मारते का हाथ पकड़ा जाता है, कहते की ज़बान नहीं पकड़ी जाती

किसी को कोई झूठ या सच बात करने से रोका नहीं जा सकता।

मारते के पीछे और भागते के आगे

कायर के लिए क.।

मारतेखां से सब डरते हैं, (मुं.)

ज़बर्दस्त से भय खाते हैं।

मारने वाले से जिलाने वाला बड़ा दाता है

जब किसी संकट से किसी के प्राण बच जाएं, तब क.।

मार पीछे संवार

मारने के बाद माफी मांगना। अथवा लड़ाई में पहले तो बढ़कर हाथ जमाना चाहिए, फिर बाद में जो हो सो देखे।

मार-मार किये जाय, फतह दाद इलाही है

भरपूर प्रयत्न तो करना ही चाहिए, सफलता तो ईश्वर के अधीन है।

मार-मार के सती करना

इच्छा के विरुद्ध काम लेना।

मार मुए मार, तेरी हथड़ियां पिरायें, मेरी आदत—न जाय, (स्त्रि.)

बहुत हठीली और बेशर्म स्त्री से क.।

मारा चे अर्ज़ी क़िस्सा कि गाव आमद ख़ैर रफ़्त, (फ़ा)

गाय आई और गधा चला गया, मुझे इस किस्से से क्या मतलब? भाव यह कि अप्रयोजनीय विषय की चर्चा मत करो।

मारा मुंह तबाक़, आगे धरा न खाय

पिटा हुआ आदमी भोजन करने से डरता है, यद्यपि थाली आगे रखी है।

तबाक़=एक प्रकार की बड़ी तश्तरी।

मारे न चूही, नाम फतेहखां

डींग हांकने वाले से क.।

मारे मेहर और भागे पड़ोसन, (पू.)

कोई औरत पिट रही है और पड़ोसिन भागती है, कि कहीं मैं भी न पिट जाऊं।

मारे सिपाही, नाम सरदार का।

काटे वार, नाम तलवार का।

असली काम तो नीचे के छोटे आदमी ही करते हैं, पर यश मिलता है बड़ों को।

माल का मुंह करते हैं, जान का मुंह नहीं करते

पैसे का ख़्याल करते हैं, जान का नहीं करते।

कंजूस के लिए क., जो धन को प्राणों से अधिक चाहता है।

माल के नुक़सान में जान की ख़ैर

पैसा गया, पर जान तो बची। किसी का धन खो जाए, तो धैर्य बंधाने को कहते हैं।

माल का ज़क़ात है

हैसियत के मुताबिक हर आदमी को दान-पुण्य करना चाहिए। ज़क़ात=वार्षिक आय का चालीसवां हिस्सा, जो दान-पुण्य में खर्च करने के लिए मुसलमानी धर्म में कहा गया है।

मालवाला हार, गालवाला जीते

जिसका असली हक़ है, वह तो हार जाता है और बातूनी जीत जाता है।

(अदालतों के मामले-मुकद्दमों के संबंध में कहा गया है, जहां पावनेदार तो हार जाता है और वकीलों की पैरवी से देनदार जीतता है।)

माली चाहे बरसना, धोबी चाहे धूप।

साहू चाहे बोलना, चोर चाहे चूप।

स्पष्ट।

साहू=साहूकार।

चूप=चुप्पी।

मालूम होगा हश्र को पीना शराब का, (मु.)

शराबियों के लिए मुस्लिम क.।

जब क़यामत के दिन ईश्वर के यहां विचार होगा, तब शराब पीने का मजा मालूम पड़ेगा ।

माले मुफ़्त दिले बेरहम

दूसरे का माल लोग बेरहमी से ख़र्च करते हैं।

माशूक़ की जात बेवफ़ा है

स्पष्ट।

वेवफ़ा=वेमुरव्वत, कृतघ्न।

मास खाये मास बढ़े, घी खाये बल होय।

साग खाये ओझ बढ़े, बूता कहां से होय।

स्पष्ट।

ओझ=पेट

मास बिना सब साग रसोई, (मु.)

मांस के विना सब भोजन साग-भाजी की तरह है। मांसाहारियों का कहना।

मासे भर की चार कचौड़ी, खुरमा मासे ढाई का।

घर में रोवें बहिन भानजी, बाहर रोवे नाई का।

धीरे-धीरे जीमो पंचों, देखो गज़ब खुदाई का।

लालाजी ने ब्याह रचाया, लहंगा बेच लुगाई का।

दे. तोले भर की..।

मित्र वह मर जाये जो अड़ी में काम न आया

जो मौके पर काम न आए, वह मित्र ही किस काम का?

मिज़ाज क्या है कि एक तमाशा,

घड़ी में तोला, घड़ी में माशा

अव्यवस्थित चित्त।

मिट्टी पकड़े सोना हो

भाग्यवान पुरुष।

मियां का दम और किवाड़ की जोड़ी

किसी ऐसे भले आदमी की बात जिसके पास कुछ नहीं, और जो किसी बात की फ़िक्र भी नहीं करता।

मियां की दाढ़ी वाहवाही में गई

झूठी प्रशंसा के लाभ में जव कोई अपनी सब संपत्ति उड़ा दे तव क.।

(कहानी के लिए दे. मुल्ला की... ।)

मियां के मियां गये, बुरे-बुरे सुपने आये, (पू. स्त्रि.)

किसी स्त्री का पति मर गया है, या शायद विदेश चला गया है, उसका कथन। एक के बाद दूसरी मुसीबत।

मियां गये रौंद, बीवी गई पटरौंद

मियां का हाल बिगड़ा हुआ है, तो बीवी का हाल उनसे भी अधिक बिगड़ा हुआ।

मियान में से निकला ही पड़े है

आपे से बाहर हुआ जा रहा है। अकारण क्रोध करने पर क.।

मियां नाक काटने को फिरे, बीवी कहें नथ गढ़ा दो, (मु., स्त्रि.)

(1) एक-दूसरे की इच्छा के बिल्कुल विरुद्ध काम।

(2) परस्पर मेल न होना।

मियां ने टोही, सब काम से खोई, (स्त्रि.)

मियां ने कुछ गड़बड़ करना चाहा, और वह (नौकरानी) भाग गई।

अपनी बेवकूफी से अड़चन पैदा कर लेना।

मियां फिरें लाल गुलाल, बीवी के हैं बुरे हवाल, (स्त्रि.)

आप तो छैल चिकनियां वने फिरना, और घर की खबर न लेना।

मियां बीवी राज़ी तो क्या करेगा काज़ी

दो पक्ष एक हो जाएं, तो बीच में हस्तक्षेप करना व्यर्थ है।

मियां हाथ अंगूठी बीवी के कनपात। लौंडी के दांत मिस्सी, तीनों की एक बात। (पू.)

सब एक से शौक़ीन। जैसा मालिक वैसा नौकर।

कनपात=कान के पत्ते। कान का एक आभूषण।

मिरग की सी आंखें, चीते की सी कमर

रूपवती स्त्री।

मिरग, बांदरा, तीतर, मोर; ये चारों खेती के चोर, (कृ.)

स्पष्ट। इनसे खेती नष्ट होती है।

बांदरा=बंदर।

मिरज़ा फोया

बहुत सुकुमार आदमी।

फोया=रूई का टुकड़ा।

मिलकी क्या जाने पराये दिल की

कौन आदमी किस प्रकार जीवन बिता रहा है, यह धनी पुरुष नहीं जान सकता।

मिलकी ना कहे दिल की; पैठें दरवाजे, निकलें खिड़की, (पू.)

धनी पुरुष कब, कौन-सा काम, किस तरह करते हैं, कोई जान नहीं सकता।

मिल गए की सलाम आलेक है

झूठे मित्र के लिए क.।

मिस्सी काजल किसको, मियां चले भुस को, (स्त्रि.)

ग़रीबी की हालत पर क.। मिस्सी काजल किस पर लगाऊं? मियां तो जा रहे हैं भुस भरने।

मीज़ान ज्यों-का-त्यों, कुनबा डूबा क्यों?

दे. हिसाब ज्यों का त्यों...।

मीठा और कठौती भर

(1) अच्छी चीज कम ही मिलती है।

(2) दुहरा लाभ होने पर भी क.।

मीठा मीठा हप हप, कडुवा कडुवा थू थू

अच्छी चीज चुन-चुन कर लेना और बुरी दूसरों के लिए छोड़ देना।

मीठी छुरी

कपटी मनुष्य।

मीठी बातों में दिन रात कटे मालूम नहीं होते

स्पष्ट।

मीठे से मरे तो माहुर क्यों दीजे

दे. गुड़ दिये मरे...।

माहुर=ज़हर।

मीर साहब की ज़ात आली है मुंह चिकना और पेट खाली है

स्पष्ट। शौकीनों पर व्यंग्य।

मीर साहब ज़माना नाजुक है, दोनों हाथों से थामिये दस्तार

खूब सम्हल कर रहने के लिए कहा जा रहा है। अपनी इज्ज़त बचाइए।

दस्तार=पगड़ी।

मीरां की बोटी है, (मु.)

बड़ा हिस्सा तो बड़े आदमी को ही मिलेगा।

(दरगाहों के मुजाविर या मंदिरों के पुजारी चढ़ावे या प्रसाद का हिस्सा पीर या देवता के नाम से अलग रख लेते हैं, शेष सबको बांट देते हैं। उसी से मतलब है।)

मीरां गोर बराबर

जितने बड़े मियां उतनी ही बड़ी उनकी क़ब्र। आमदनी खर्च बराबर।

मुड़ा जोगी और पिसी दवा

पहचानी नहीं जाती।

मुंड़े सिर पर पानी पड़ा, ढल गया

बेशर्म।

मुंह कहे 'खाया खाया', हलक कहे 'सवाद न आया'

कोई चीज इतनी थोड़ी मिलनी कि उसमें कोई मजा ही न आए।

मुंह का निवाला तो नहीं है
जो जल्दी निगल लिया जाए। अर्थात अपने हाथ का काम नहीं है।

मुंह काला, वक्त उजाला
दुष्ट भाग्यवान के लिए क.।

मुंह की मीठी, हाथ की झूठी, (स्त्रि.)
मुंह से मीठी बात करे, पर हाथ से कभी कोई चीज उठा कर न दे।

मुंह के आगे खंदक नहीं
खाने या बात करने की एक सीमा होती है।

मुंह को कालख लग गई
बदनामी हो गई।

मुंह खाय, आंख लजाय
जिसका खाए उसका एहसानमंद होना ही पड़ता है।

मुंह मैल तमाचे हैं
आदमी को देखकर उसका सम्मान होता है।

मुंह चिकना, पेट खाली
कोरी, साफ़ शोकीनी।

मुंह देख के बीड़ा और चूतड़ देख के पीड़ा
आदमी की हैसियत देखकर ही लोग उसका आदर-सत्कार करते हैं। धनवान की अधिक खातिर की जाती है और ग़रीब की कम।
बीड़ा=पान।
पीड़ा=बैठने के लिए आसन।

मुंह देखी सब कहते हैं, खुदा लगती कोई नहीं कहता
मुलाहिजे में आकर पक्षपात की बात सब करते हैं, सच कोई नहीं कहना चाहता।

मुंह देखे की मुहब्बत है
दिखावटी प्रेम सब करते हैं।

मुंह धो रखो
अर्थात जो तुम चाहते हो, वह नहीं होने का।

मुंह न तूह, नाम चांद खां
नाम के अनुसार रूप नहीं।

मुंह नूर, न पेट सबूर
अभागा मनुष्य।
नूर=रौनक।
सबूर=धैर्य, अर्थात पेट खाली।

मुंह पर कहना खुशामद है
मुंह देखकर बात करना ठीक नहीं।

मुंह पर कहे सो मूंछ का बाल, पीछे कहे सो झांट का बाल
पीठ पीछे किसी की निंदा अच्छी नहीं, जो कहे सो मुंह पर ही कहना चाहिए।

मुंह पर हवाइयां लगीं
होश गुम हो गए। बुरी तरह घबरा गए।

मुंह पर पूत, पीछे हरामी भूत, (स्त्रि.)
सामने तो मीठी बात, पर पीछे निंदा।

मुंह पर फिटकार बरसने लगी
सभी धिक्कारने लगे।

मुंह पर मुमानी, पीठ पीछे सुअर खानी, (स्त्रि.)
दे. मुंह पर पूत...।
मुमानी=मामा की स्त्री। माई।

मुंह मांगी मुराद मिले
भीख मांगते समय भिक्षुक कहा करते हैं कि भगवान तुम्हारी इच्छाएं पूरी करे।

मुंह मांगी मौत तो मिलती ही नहीं
(1) मनुष्य जो चाहता है वह नहीं होता।
(2) मांगने से कुछ नहीं मिलता।

मुंह मांगे दाम नहीं मिलते, (व्य.)
मनचाहा कोई काम नहीं होता।

मुंह में आया सो बक दिया।
बिना सोचे बात करना।

मुंह में दांत, न पेट में आंत
बहुत बूढ़ा मनुष्य।

मुंह रहते नाक से पानी पिये
असंगत काम। मूर्ख से क.।

मुंह लगाई डोमनी, गावे ताल बेताल
किसी को बहुत मुंह नहीं लगाना चाहिए।
(कहावत का भाव यह है कि डोमनी को यदि सिर पर चढ़ा लिया जाए, तो फिर वह किसी की बात नहीं सुनेगी, जैसा मन में आएगा वैसा गाएगी।)
डोमनी=डोम की स्त्री, एक गाने बजाने वाली भिक्षुक जाति की स्त्री।

मुंह लगाई डोमनी बाल-बच्चों समेत आए
किसी के साथ थोड़ा भी अच्छा व्यवहार करो, तो वह फिर उसका अनुचित लाभ उठाता है। डोमनी से अच्छी तरह बात करो, तो वह पूरे परिवार को लेकर भोजन के लिए आती है।

मुंह लगी और फ़ेल मेरे पेट में
शराब के लिए क. कि एक बार जहां पीने की आदत पड़ गई कि बुरे कामों के सिवा आदमी को और कुछ नहीं सूझता।

मुंह सुई पेट कुई
(1) जो थोड़ा-थोड़ा करके बहुत खा जाए।
(2) जो देखने में तो भला, पर वास्तव में बहुत शरारती हो।

मुंह से निकली हुई पराई बात
बात मुंह से बाहर निकली नहीं कि वह फिर सबको मालूम हो जाती है।

मुंह से बोलो, सिर से खेलो
हां-हूं कुछ तो करो। जब किसी के सिर देवता आते हैं, तो वह बहुत देर तक सिर हिलाकर हूं-हूं करता है। उसी से 'सिर से खेलना', मुहावरा बना, जिसका अर्थ है सिर हिलाकर बात का जवाब देना।

मुंह से महावा
सामने मौजूद रहने से भय होता है। नजर रखने से काम ठीक होता है।

मुंह से राल टपकी पड़ती है
किसी चीज को देखकर उसे खाने अथवा पाने की बहुत लालसा होना।

मुंह से 'लाम' 'काफ' मत निकालो
बदज़बानी मत करो।

मुंह से हजार चाउर खाय, नाके से एक ना, (पू., स्त्रि.)
चावल मुंह से ही खाए जाते हैं, नाक से नहीं। ठीक ढंग से जितना काम बन सके, उतना ही करना चाहिए।

मुंह हाले सत्तर बला टाले
(1) रोगी के लिए क. कि यदि वह खाने लगे, तो समझ लो रोग चला गया। (2) आलसी के लिए भी कह सकते हैं जो केवल हां-हूं करके काम करने की मुसीबत से बचना चाहता है।

मुंह-ही-मुंह मारे और तोबा-तोबा पुकारे
लड़कों के संबंध में क. कि उनकी रिआयत नहीं करनी चाहिए। उन्हें ताड़ना करते रहना चाहिए।

मुई क्यों? सांस न आया, (स्त्रि.)
दे. मरी क्यों...। बेतुका प्रश्न।

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है?
(1) पितरों का श्राद्ध करने पर किसी अन्य धर्मी का व्यंग्य। (2) जब कोई बुढ़ापे में जवानी का मज़ा लूटना चाहे तब भी क.।

मुई बछिया बामन को दान, (हि.)
निकम्मी चीज दूसरे के मत्थे मढ़कर एहसान करना।

मुई माई, टूटी सगाई
मां के मरने पर नैहर का नाता टूट जाता है। क्योंकि मां ही लड़की को सबसे अधिक प्यार करती है।

मुई लोलो आंडो पर
कमजोर अपना गुस्सा बेकसूर पर उतारता है।
लोलो=पुरुषेन्द्रिय।

मुएंगे और सो रहेंगे
मरने पर सब झगड़ों से छुट्टी मिल जाती है।

मुए पर सौ दुर्रे, (मुं.)
मरे को सब मारते हैं।

मुए बैल की बड़ी-बड़ी आंखें
मरने के बाद आदमी की सब प्रशंसा करते हैं, जीते-जी कोई नहीं पूछता।

मुए शेर से जीती बिल्ली भली
साहस बड़ी चीज है।

मुकतमाल वानर लिए, वेद लिए अज्ञान।
परम सुंदरी जोगी लिए, कायर हाथ कमान।
बंदर के हाथ में मोतियों की माला, मूर्ख के हाथ में वेद, जोगी के साथ परम सुंदरी स्त्री, और कायर के हाथ में धनुप—ये सब हास्यजनक कार्य हैं।

मुख में 'राम राम' बगल में छुरी
पाखंडी।

मुखादिम खां के साले
वह जो दूसरों के बल पर लंबी-चौड़ी बातें करे।

मुज़र्रद सब से आला, जिसके लड़का न बाला
बिना ब्याह का आदमी सब से अच्छा, उसे किसी बात की फ़िक्र नहीं होती।
मुज़र्रद=क्वांरा।

मुझको न मारे तो सारे जहान को मार आऊं
कोरी डींग हांकनेवाले से क.।

मुझे और न तुझे ठौर
ऐसे दो व्यक्ति, जिनका एक-दूसरे के बिना काम न चले, पर जो एक-दूसरे से संतुष्ट भी न रहते हों।

मुझे दे सूप तू हाथों फूंक
स्वार्थी व्यक्ति।

मुद्दई मुद्दालेह नाव में, शाहद तैरते जायें
दे. नाव चढ़े...।

मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त
(1) जिसका असली काम है, वह तो लापरवाही करे, दूसरे आवश्यकता से अधिक दिलचस्पी दिखाएं तब क.।
(2) रिश्वत लेकर जो हमेशा झूठी गवाही देने को तैयार रहते हैं उन्हें भी क.।

मुफ़लिस का चिराग़ रोशन नहीं होता
ग़रीब आदमी का कोई काम सफल नहीं होता।

मुफ़लिस की जोरू सदा नंगी
पैसा न होने से गहना-कपड़ा नहीं मिलता।

मुफ़लिस से सवाल हराम है, (मु.)
ग़रीब से कुछ मांगना बुरा है।

मुफ़लिस हमेशा ख़्वार
ग़रीब हमेशा नीचा देखता है।

मुफ़लिसी और फालसे का शर्वत
हैसियत से बाहर जाना।

मुफ़लिसी और हाट की सैर
दे. ऊ.।

मुफ़लिसी में आटा गीला
विपत्ति में विपत्ति।

मुफ़लिसी सब बहार खोती है, मर्द का एतबार खोती है
ग़रीबी बुरी चीज है। ज़िंदगी का सब मजा चला जाता है, और मनुष्य अपना विश्वास भी खो बैठता है।

मुफ़्त का करना और दूर ले जाना
वृथा परिश्रम।

मुफ़्त का चंदन घिसे जा बिलल्ली, (स्त्री.)
(1) मुफ़्त का माल सबको अच्छा लगता है।
(2) दूसरे की वस्तु का दुरुपयोग करने पर भी क.।

मुफ़्त का माल किसको बुरा लगता है?
सबको अच्छा लगता है।

मुफ्त का सिरका शहद से मीठा
मुफ़्त की बुरी-से-बुरी चीज भी अच्छी होती है।
सिरका खट्टा होता है।

मुफ़्त की दावत में फ़क़त रोटी ही गोश्त है, (मु.)
मुफ़्त का रूखा भी खाने को मिले, तो वह भी अच्छा।

मुफ़्त की शराब काज़ी को भी हलाल, (मु.)
मुसलमानों में शराब पीना मना है। विशेषकर काजियों के लिए, पर मुफ़्त की मिले, तो फिर पीने में दोष क्या?

मुफ़्त के खानेवाले हम और हमारा भाई, (स्त्रि.)
स्त्रियां प्रायः अपने पति का धन अपने भाई-भतीजों को दे दिया करती हैं उसी पर कहा गया है।

मुफ़्त के चिड़वा भर-भर फंके
हराम का खाने वालों के लिए क.।
चिड़वा=चिऊड़ा हरे या उबले हुए चावलों को भूनकर बनाया गया विशेष प्रकार का चिपटा दाना।

मुफ़्त में निकले काम तो काहे को दीजे दाम
मुफ़्त में काम कराने वालों को क.।

मुफ़्त राचे गुफ़्त, (फ़ा.)
मुफ़्त की चीज़ में दोष नहीं निकालना चाहिए।

मुरगा पशम, भेड़ भसम, (मु.)
जो भेड़ को पचा सकता है उसके लिए मुर्गा क्या चीज है? धूर्त के लिए क.।

मुरगा बांग न देगा, तो क्या सुवह न होगी? (मु.)
किसी एक आदमी के न होने से दुनिया के काम नहीं रुकते।

मुरगा हज़म, बकरी पर दम, (मु.)
मुर्गा हज़म कर लिया, अब बकरी पर नज़र। लालची या धूर्त आदमी।

मुरगी अपनी जान से गई, खाने वाले को मज़ा न आया, (मु., स्त्रि.)
किसी के त्याग, परिश्रम या आत्मबलिदान की उचित प्रशंसा न करना।

मुरगी की अज़ान कौन सुनता है? (मु.)
(1) ग़रीब की कोई सुनवाई नहीं करता।
(2) स्त्रियों की बात का कोई विश्वास नहीं होता।
अज़ान=आवाज़।

मुरगी की बांग का क्या इतबार? (मु.)
किसी छोटे आदमी की बात का क्या विश्वास?

मुरगी के ख़्वाब में दाना-ही-दाना
जिसे जिसकी चिंता रहती है, सपने में भी उसे वही चीज दिखाई देती है।

मुरगी को तकले का ही घाव बस है, (स्त्रि.)
ग़रीब के लिए थोड़ी हानि भी असह्य हो जाती है।

मुरगे की एक ही टांग होती है, (मु.)
जब कोई आदमी सरासर झूठ बोलकर उसे सही साबित करने की कोशिश करे तब क.।
(इसकी कथा है कि कोई बावर्ची अपने मालिक के लिए

खाना पकाकर लाया। उसमें मुर्गे की एक ही टांग थी। एक टांग बावर्ची ने चुपचाप खा ली थी। मालिक ने पूछा—इसकी दूसरी टांग कहां गई? बावर्ची ने जवाब दिया—हुजूर, मुर्गे के सिर्फ एक ही टांग होती है। संयोगवश किसी दिन एक मुर्गा कूड़े के ढेर पर एक टांग से खड़ा था। बावर्ची ने मुर्गे की ओर इशारा करके कहा—हुजूर, एक टांग के मुर्गे को देखिए। जब मालिक ने ताली बजाई, तो मुर्गे ने झट दूसरा पैर जमीन पर रख दिया, और बावर्ची से कहा—देख, इसके दोनों पैर हैं कि एक? इस पर उसने जवाब दिया—हुजूर, ताली बजाने से दो पैर दीख पड़े। अगर उस समय भी आपने ऐसा किया होता, तो दूसरा पैर जरूर सामने आ जाता।)

मुरदा ब-दस्ते जिंदा, (फ़ा.)
मुरदा जिंदे के हाथ में है; उसका चाहे जो करो।
लाशे को दफ़न कीजे मेरे याके फेंक दीजे।
मुर्दा बदस्त ज़िंदा, जो चाहिए सो कीजे। (ज़ौक)

मुरदा बहिश्त में जाय या दोजख़ में, यहां तो हलवे मांड़े से काम, (मु.)
जो केवल अपना मतलब देखे उसके लिए क.।
(मुसलमानों में मुर्दे के सामने जो मुल्ला कुरान पढ़ता है, उसे मिठाई आदि मिलती है। उसी के मुंह से उक्त वाक्य कहलवाया गया है।) मुल्लों और पंडों का दृष्टिकोण।

मुरदे को बैठकर रोते हैं और रोज़गार को खड़े होकर
मुर्दे के लिए तो आदमी (आराम से) बैठकर रोता है, पर जीविका के चले जाने पर परेशान घूमता है। मतलब जीव से जीविका प्यारी होती है।

मुरदे पर सौ मन मिट्टी तो एक मन और सही, (मु.)
जब इतना नुक़सान हुआ तो थोड़ा और सही, पर काम तो करके छोड़ेंगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क.।

मुरदों से शर्त बांध कर सोता है
बेख़बर सोने वाला।

मुरब्बी बियार-बो मुरब्बा बिखूर, (फ़ा.)
मुरब्बी बिना मुरब्बा नहीं पकता। आशय यह कि किसी धनी आदमी को अपने काबू में किए बिना बढ़िया मालटाल खाने को नहीं मिलते।

मुलाज़िमे नौ तेज़ रौ, (फ़ा.)
नया नौकर काम में फुर्ती दिखाता है।

मुल्के खुदा तंग नेस्त, पाये मरा लंग नेस्त, (फ़ा.)
ईश्वर का मुल्क थोड़ा नहीं है और मैं भी पैरों से लंगड़ा नहीं हूं। किसी उद्योगी पुरुष का कहना, जिसे काम से जवाब दे दिया गया है।

मुल्ला की दाढ़ी तबर्रुक में गई, (मु.)
वाहवाही में सब धन लुट गया।
(कथा है कि कोई मुल्ला यादगार के तौर पर चेलों को चीजें बांट रहे थे। यह देखकर एक मसखरे ने कहा कि मुल्ला जी आपकी दाढ़ी हमेशा मुझे आपकी याद दिलाती रहेगी। यह कहकर उनकी दाढ़ी में से उसने एक बाल उखाड़ लिया। यह देखकर सभी चेले आगे बढ़े और मुल्ला के बहुत मना करते रहने पर भी उन्होंने एक-एक बाल करके उनकी सारी दाढ़ी नोंच डाली।)

मुल्ला जी क्या कहें, आखून जी आगे ही समझे हुए हैं, (मु.)
तुम क्या कहोगे, हम पहले से ही सब जानते हैं।
आखून जी=शिक्षक। उस्ताद।

मुल्ला न होगा तो क्या मसज़िद में अज़ान न होगी, (मु.)
किसी एक आदमी के बिना दुनिया का काम नहीं रुकता।

मुश्क आं अस्त कि खुदबोयद, न कि अत्तर गोयद, (फ़ा.)
कस्तूरी तो (अपनी गंध से) स्वयं अपना परिचय दे देती है, गंधी को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

मुश्किले नेस्त कि आसां न शवद, मर्द बायद कि हिरासां न शवद, (फ़ा.)
ऐसा कोई मुश्किल काम नहीं जो (प्रयत्न करने से) आसान न हो जाए; मनुष्य को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

मुसलमान दर गोर, मुसलमानी दर किताब, (फ़ा.)
मुसलमान सब क़ब्र में हैं, और उनका मज़हब किताबों में। अर्थात सच्चे मुसलमान अब नहीं रह गए।

मुसलमानी अबादानी, (मु.)
जहां भी मुसलमान होते हैं, वे सब इकट्ठे रहते हैं।

मुसलमानी में आनाकानी क्या? (मु.)
जो काम करना ही है उनमें हीले-हवाले की जरूरत क्या? मुसलमानी=मुसलमानों की वह रस्म, जिसमें छोटे बालक की इंद्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है। सुन्नत।

मुसल्ला पसार, बग़ल में यार, (मु.)
नमाज़ पढ़ने जा रहे हैं, फिर भी बग़ल में माशूक दबाए हैं। पाखंडी।
मुसल्ला=वह दरी, जिस पर नमाज़ पढ़ी जाती है।

मुसाफ़िर चले ही जाते हैं, कुत्ते भौंकते ही रहते हैं
काम करने वाले काम करते हैं, बकने वाले बकते रहते हैं।

मुहर्रम की पैदाइश, (मु.)
मनहूस आदमी।
(मुहर्रम के दिनों में मुसलमान हसन-हुसैन की यादगार में शोक मनाते हैं। इसीलिए क.।)

मुहरें लुटी जायें, कोयलों पर मुहर
दे. अशर्फियां लुटें...।

मूंग मोंठ में बड़ा कौन?
बिरादरी में कोई छोटा बड़ा नहीं होता; सब बराबर।

मूंछ मरोड़ा रोटा तोड़ा
आलसी आदमी।

मूंज की टट्टी और गुजराती ताला
असंगत या हास्यजनक काम।
(1) घास की टट्टी में गुजराती ताला (जो कीमती होता है) शोभा नहीं देता।
(2) मूंज़ की टट्टी, जो स्वयं कमजोर होती है, उसमें (गुजराती) मज़बूत ताला लगाना मूर्खता है।
(पंजाब का गुजरात नामक स्थान किसी समय तालों के लिए प्रसिद्ध था।)

मूंड़ दिया, मांग खाओ
योगियों का अपने-अपने चेलों से क. कि हमने चेला बना लिया अब अपना काम तुम करो।

मूंड मुड़ाये, जटा रखाये, नगन फिरैं ज्यों भैंसा।
खलड़ी ऊपर राख लगाये, मन जैसे का तैसा।
पाखंडी साधुओं के प्रति क.।

मूंड मुड़ाये तीन गुन, गई टांट की खाज।
बाबा हो जग में फिरें, खायं पेट भर नाज।
मूंड मुड़ाने (साधु होने) में तीन लाभ हैं–सिर की खुजली जाती रहती है, दुनिया में मान होता है और पेट भर खाने को मिलता है। दिखावटी साधुओं पर व्यंग्य।

मूज़ी का चंगुल
बुरा होता है।
मूज़ी=(1) कंजूस (2) अत्याचारी।
चंगुल=पकड़। फंदा।

मूज़ी का माल निकले फूट के खाल
मूज़ी का माल हज़म नहीं होता।

मूज़ी को नमाज़ छोड़ के मारे, (मु.)
दुष्ट जीव को जब देखे तभी मारे।

मूत का चुल्लू हाथ में
ऐसा आदमी जो दूसरों पर गंदगी उछालता फिरे।

मूरख की सारी रैन, चातुर की एक घड़ी
(1) मूरख के साथ सारी रात रहने की अपेक्षा चतुर के साथ घड़ी भर रहना अच्छा।
(2) जिस काम के करने में मूरख घंटों लगा देता है, चतुर उसे जरा देर में (बहुत सुघराई के साथ) निपटा देता है।

मूरख को समझाइए, ज्ञान गांठ को जाय
मूरख को उपदेश देना व्यर्थ है।

मूरख को समझावना सरस बीज बलि जाय।
ज्यों पत्थर के मारने, चोखो तीर नसाय।
मूर्ख को उपदेश देने से संपूर्ण अच्छे उद्देश्यों की हानि हो जाती है, जैसे पत्थर पर चोखा तीर मारने से वह नष्ट हो जाता है।

मूरख मूढ़ गंवार को सीख न दीजो कोय।
कूकड़ वर्गी पूंछड़ी कभी न सीधी होय।
मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है। चाहे जितना प्रयत्न करो कुत्ते की पूंछ कभी सीधी नहीं होती।

मूरख से क्या कहिये, जा से क्या विसाइये?
मूर्ख से बात क्यों की जाए? उससे कोई लाभ नहीं।

मूल से ब्याज प्यारा होता है, (व्य.)
मूल तो अपना ही है ब्याज नफ़े में मिलता है, इसलिए अधिक प्यारा होता है।

मूली अपने ही पातों भारी है
जो स्वयं अपनी ही विपत्ति में फंसा हो वह दूसरों की विपत्ति कैसे दूर कर सकता है?

मूली और मूली के पत्तों पर नोंन की डली, (पू.)
जब कोई अपनी अत्यंत साधारण वस्तुओं को ही बड़ी करके बताए तब क.।

मूली हाथ पराइयां, जिस चाहे तिस दे, (पं.)
दूसरे के हाथ की बात है, वह चाहे जो करे हम क्या कर सकते हैं? ऐसा भाव प्रकट करने को क.।

मेंढकी को भी ज़ुकाम हुआ
जब कोई साधारण आदमी अपने को बहुत महत्व दे तब क.।

मेंह बरसेगा तो बौछार आ ही जायेगी
किसी ऐसे मनुष्य का कहना जो यह आशा करता है कि कोई उदार हृदय धनी पुरुष यदि खर्च करेगा, तो उसे भी कुछ-न-कुछ मिल ही जाएगा।

मेंह, लड़का और नौकरी घड़ी-घड़ी नहीं हुआ करती
स्पष्ट।

मेरा था सो मेरा हुआ, बराये खुदा टुक देखने दे, (स्त्रि.)
दे. तेरा है सो मेरा था...।
बराये खुदा= ईश्वर के लिए।

मेरा दिल बेदिल हुआ देख जगत की रीत
ऐसे मनुष्य का कहना जो दुनिया के हालचाल देखकर विरक्त हो रहा है।

मेरा बैल मनतिक़ नहीं पढ़ा है
जब कोई आदमी व्यर्थ की हुज्ज़त करे तब उससे पिंड छुड़ाने के लिए क.।
(कथा है कि किसी तर्कशास्त्री ने एक तेली से पूछा कि तुम लोग अपने बैल के गले में घंटी क्यों बांधते हो? तेली ने जवाब दिया कि जब हम बैल के पास नहीं भी होते हैं, तो हमें घंटी के शब्द से मालूम हो जाता है कि बैल खड़ा नहीं है और काम कर रहा है। इस पर उन्होंने कहा कि यदि वह बैल यों ही खड़ा होकर अपना सिर हिलाए और घंटी बजाता रहे, तो तुम्हें कैसे पता चलेगा कि बैल काम करता है। इस पर तेली ने हंसकर ऊपर लिखा जवाब दिया।)
मनतिक़=न्याय। तर्कशास्त्र।

मेरा माथा उसी वक़्त ठनका था, (स्त्रि.)
मुझे तभी आशंका हुई थी (कि कोई विपत्ति आने वाली है।)

मेरी एक बोली, दो बोली, मेरी नकटी सटासट बोली, (स्त्रि.)
एक लड़ाकू स्त्री का दूसरी से कहना कि मैंने तो एक गाली दी, दो गालियां दीं, लेकिन यह नकटी तो बराबर गाली दिए जा रही है।

मेरी तेरे आगे और तेरी मेरे आगे कहना अच्छा नहीं
चुग़लखोरी अच्छा काम नहीं।

मेरी ही बिल्ली और मुझसे ही म्याऊं
मेरा ही खाए और मुझे ही आंख दिखाए?

मेरे गांव का कूड़िया, नाम रखा इन्दर जौ
जब कोई मनुष्य अपने निवास स्थान में तो बहुत साधारण हैसियत रखता हो, पर बाहर जाकर लंबी-चौड़ी बातें करे, तब क.।
(कूड़िया और इन्द्र जौ एक ही पौधे के दो नाम हैं।)

मेरे ब्याह, जीजी के ठिक-ठिक, (स्त्रि.)
बिना प्रयोजन दूसरे के सिर में दर्द।
जीजी=जिठानी, अथवा बड़ी बहन।

मेरे मियां के दो कपड़े, सुथना, नाड़ा बस, (स्त्रि.)
कोई स्त्री अपने अकर्मण्य पति का मजाक उड़ा रही है कि उसके पास पैजामा और नाड़ा, बस ये ही दो कपड़े हैं। वास्तव में कपड़ा तो एक ही है। नाड़ा कोई वस्त्र नहीं।

मेरे, मेरे मुंह की-सी; तेरे, तेरे मुंह की-सी करता फिरता है
चापलूस।

मेरे यहां आज गुर्रा है
मेरे यहां आज चूल्हा नहीं जला।
गुर्रा=उपवास।

मेरे लाल के सौ-सौ यार, धुनिये, जुलाहे और मनिहार, (स्त्रि.)
बुरी संगत में पड़े लड़के को लक्ष्य करके मां कह रही है।
मनिहार=बिसाती।

मेरे लाला की उल्टी रीत, सावन मास चुनावें भीत, (स्त्रि.)
जो काम जब न करना चाहिए, तब करना।

मेरे ही से आग लाई, नाम धरा बैसांदुर, (स्त्रि.)
दूसरे के यहां से चीज लाकर उस पर घमंड करना और किए का एहसान न मानना।
बैसांदुर=वैश्वानर, यज्ञ की पवित्र अग्नि का नाम।

मेरे है सो राजा के नहीं, और राजा मेरा मंगता, (स्त्रि.)
जब कोई अपनी चीज पर बहुत घमंड करे या किसी को मांगे से न दे, तब उसके प्रति क.।

मेले में झमेला हुआ ही करता है
मेले-ठेले में कुछ-न-कुछ दंगा-फ़साद हो ही जाता है।

मेव का पूत बारह बरस में बदला लेता है
स्पष्ट।
(मेव कथित हल्की श्रेणी के मुसलमान मछुए होते हैं, जो बड़े प्रतिहिंसक माने जाते हैं।)

मेव बेटी जब दे, जब ओखली भर रुपैया रखवाले
मेवों के ब्याह में लड़की बेचते हैं।

मेव मरा जब जानिए, जब तीजा हो जाय
मेव बड़े तगड़े, हट्टे-कट्टे और हठीले भी होते हैं। इसी से उनके संबंध में यह कहावत बनी।
(कथा है कि किसी मेवाती को एक बनिए का कर्ज़ चुकाना था। जब उसे कर्ज़ अदा करने का कोई और रास्ता नहीं सूझा, तो उसने अपने मरने की ख़बर फैला दी। उसके मित्र जब उसे कब्रिस्तान में दफ़नाने के लिए ले गए, तो बनिया भी यह जानने के लिए कि वह सचमुच मरा है या नहीं, उसके पीछे-पीछे लगा। उसके सामने ही मेवाती के मित्रों ने उसे दफ़ना दिया। पर ज्यों ही बनिया यहां से वापस आया, उन लोगों ने फिर जाकर उसे बाहर

निकाल लिया। दूसरे दिन बनिए ने जब मेवाती को ज़िंदा देखा, तब उसने उक्त वाक्य कहा। मुसलमानों में मरने के तीसरे दिन जो संस्कार होता है, वह तीजा कहलाता है।)

मेहनत आराम की कुंजी है

परिश्रम से ही सुख मिलता है।

मेहर करे तो मेह बरसावे

ईश्वर की कृपा से ही सब कुछ होता है।

मेहर गई, मुहब्बत गई, गई नान और पान।
हुक्के से मुंह झुलस के, बिदा किया मेहमान।

कंजूस की मेहमानदारी।

मेहर=कृपा।

नान=रोटी।

मेहर है पर दूध नहीं

झूठी आवभगत।

मेहरिया के आगे सगुन असगुन

स्त्रियों के लिए शकुन भी अपशकुन होता है। उन्हें हर बात में संदेह रहता है।

मेहरी की रोक, जान की शोक

स्त्री का हठ एक मुसीबत है।

मैं ओर मेरा मानुस, तीसरे का मुंह झुलस, (स्त्रि.)

स्वार्थी स्त्री, जो अपने सिवा किसी ओर की चिंता नहीं करती।

मैं कब कहूं 'तेरे बेटे को मिरगी आवे है', (स्त्रि.)

जिस बात के लिए वह कह रही है कि मैंने नहीं कहा, उसी का जानबूझ कर वह प्रचार भी कर रही है। अपनी सफाई देना और दूसरे की निंदा भी करते जाना।

मैं करूं तेरी भलाई, तू करे मेरी आंख में सलाई, (स्त्रि.)

भलाई के बदले बुराई करना।

मैं की गर्दन पर छुरी

बहुत 'मैं-मैं' करता है अर्थात अपनापन दिखाता है, इसीलिए वह मारा जाता है। अहंकारी को नीचा देखना पड़ता है।

मैं के गले पर छुरी

दे. ऊ.।

मैं क्या तेरी पट्टी तले हूं, (स्त्रि.)

मैं क्या किसी बात में तुझ से कम हूं ? अथवा क्या मैं तेरी दबैल हूं?

पट्टी=चारपाई से मतलब है।

मैं तुम्हें चाहूं और तू काले धींग को, (स्त्रि.)

हम जिसे चाहते हैं, वह दूसरे को चाहती है।

मैं तो तेरी लाल पगिया पै भूली रे, रघुआ

किसी बनठन कर रहने वाले पर व्यंग्य।

मैंने क्या उसकी खीर खाई है?

क्या मैं उससे दबा हुआ हूं?

मैं भली कि पनेठा?

मैं ही अच्छी हूं।

पनेठा=फेरी वाला।

मैं भली, तू शाबाश, (स्त्रि.)

एक-दूसरे की प्रशंसा करना।

(सं.—अहो रूपमहोध्वनि।)

मैं भी हूं पांचवें सवारों में

अपने को अनुचित महत्व देना।

(कथा के लिए दे.—पांचों सवार... ।)

मैं मरूं तेरे लिए, तू मरे बाके लिए

कोई दूसरे के लिए अपने प्राण दे, पर वह उसकी परवाह न करे, तब क.।

मैं ही पाल करा मुस्तंडा, मोय ही मारे लेके डंडा, (स्त्रि.)

अयोग्य और दुष्ट लड़के से मां का कहना।

मैदे और शहाब की-सी लोई

आधा चेहरा सफेद, आधा लाल।

शहाब=एक प्रकार का गहरा लाल रंग।

लोई=आटे की गोली।

मैना जो 'मैं ना' कहे, दूध भात नित खाय।
बकरी जो 'मैं मैं' करे, उल्टी खाल खिंचाय।

जो मैना 'मैं ना' कहती है, उसका आदर होता है और जो बकरी 'मैं मैं' करती है, उसकी खाल खींची जाती है। आशय यह कि विनम्र और मधुरभाषी की इज्ज़त होती है और दंभी मारा जाता है।

मैना=एक पक्षी।

मैं ना=मैं नहीं हूं, मेरा कोई अस्तित्व नहीं।

मैं मैं=(1) बकरे की बोली (2) मैं हूं, अर्थात अहंकार।

मैल का बैल बनाते हैं

बात का बतंगड़ बनाना।

मैला कपड़ा पातर देह, कुत्ता काटे कौन संदेह

हल्के तबके के सरकारी कर्मचारी प्रायः अनपढ़ ग्रामीणों और ग़रीबों को सताया करते हैं, उन्हीं पर कही गई है।

मोकों न तोकों, ले चूल्हे में झोंको, (स्त्रि.)

दो आदमी किसी चीज के लिए लड़ रहे हैं। उनमें से किसी

एक का कहना कि 'अच्छा, यह न मेरे लिए, न तुम्हारे लिए, इसे फेंको चूल्हे में।'

मोजे का घाव, मियां जाने या पांव

जूता कहां काट रहा है, इसे तो मियां जानते हैं या उनका पैर। जिसका कष्ट वही जानता है।

मोम की नाक

जिधर चाहो मोड़ दो। सीधे आदमी के लिए क.।

मोम हो तो पिघले, कहीं पत्थर भी पिघलता है।

कंजूस और कठोर आदमी के लिए व्यंग्य में क.।

मोर सइयां चिकनियां, पचास बीड़ा खायं,
आगे-पीछे रिनिहा, दीवान बने जायं। (स्त्रि.)

स्त्री का अपने ऐसे पति के संबंध में कहना, जो कर्जदार होकर फ़िजूलखर्च भी है।

रिनिहा=ऋण देने वाला, साहूकार।

मोरी की ईंट चौबारे चढ़ी, (स्त्रि.)

जब कोई नीच आदमी उच्च पद पर पहुंच जाए, अथवा नीच कुल की लड़की बड़े घर में ब्याही जाए, तब क.।

मोरी=नावदान। चौबारा=चौपाल।

मोरे बाप के उपजल कपास, मोरे लेखे पड़ल तुसार, (स्त्रि.)

ग़रीब घर में ब्याही गई लड़की का कहना कि मेरे बाप के यहां तो (मनों) कपास उपजता है और मेरे भाग्य में ठंड भोगना बदा है।

मौके का घूंसा, तलवार से बढ़कर

समय पर किए गए काम का नतीजा बहुत अच्छा निकलता है।

मौत और ग्राहक का एतबार नहीं, जाने किस वक़्त आ जाय, (व्य.)

स्पष्ट।

मौत की दारू नहीं

असाध्य रोगी के लिए क.।

मौत के आगे किसी का बस नहीं चलता

कोई मर जाए, तब उसकी मातमपुर्सी के समय क.।

मौत के आगे सब हारे हैं

दे. ऊ.।

मौत भली कि जान कंदन

असह्य पीड़ा से तो मौत अच्छी।

मौत सिर पर खेलती है

मौत आ गई है।

मौला यार, तो बेड़ा पार, (मु.)

ईश्वर की कृपा हो, तो सब काम हो जाता है।

मौला हाथ बढ़ाइयां, जिस चाहें तिस दें, (मु.,प्र.)

ईश्वर की जिस पर कृपा होती है, उसी को देता है।

म्याऊं को कौन पकड़ेगा?

असली जोखिम का काम कौन करेगा?

(कथा है कि एक बार चूहों ने सलाह की कि बिल्ली हमें जब मौका पाती है तब पकड़कर खा लेती है, इसलिए उसके गले में घंटा बांध देना चाहिए, जिससे जब वह आए तो घंटे की आवाज़ सुनकर हम लोग भाग जाया करें। यह बात सब को पसंद आई और इस पर विचार किया गया कि घंटा किस प्रकार बांधा जाए। किसी ने कहा मैं उसका पैर पकड़ लूंगा, किसी ने कहा मैं पूंछ पकड़ लूंगा, किसी ने कान पकड़ लेने को कहा; इसी प्रकार सब अपनी-अपनी बहादुरी बताने लगे। तब एक बूढ़े चूहे ने कहा—यह तो सब ठीक, पर म्याऊं को कौन पकड़ेगा? इस बात को सुनते ही सब चूहे डर के मारे भाग गए।

इस कहावत का शुद्ध रूप 'म्याऊं का ठौर कौन पकड़ेगा', इस प्रकार है।)

य

यक मन इल्मरा दहमन अक्ल भी बायद, (फ़ा.)
एक मन ज्ञान के लिए दस मन सहज बुद्धि की आवश्यकता होती है।
बुद्धि के बिना ज्ञान व्यर्थ है।

यक न शुद, दो शुद; (फ़ा.)
अभी तो एक थे अब दो हो गए।
जब एक के साथ दूसरा आदमी बीच में बोल उठे, अथवा उसका सहयोग दे, तब क.।

यक़ीन बड़ा रहबर है
विश्वास सच्चा मार्गदर्शन है।
(सं.—विश्वास फलदायक।)

यह आपके फ़रमाने की बात है
आप जो कुछ कहते हैं, वह ठीक है। मैं क्या कहूं?

यह किसी का भी सगा नहीं
धोखेबाज़ आदमी।

यह कुत्ता नहीं मानता।
छिछोरे के लिए क.।

यह कै फ़ाक़ों में सीखे थे
आपने जो यह लाजवाब बात कही, वह कितने उपवास करने के बाद सीखी थी?
जब कोई लेखक अपनी कही हुई कोई ऐसी सुनाए, जिसका उसे बड़ा गर्व हो, तब व्यंग्य में क.।

यह कौवा फंसने की चाल है
जब कोई गहरी चालाकी करे, तब क.।
(कौवों के बारे में प्रसिद्ध है कि वे मुश्किल से जाल में फंसते हैं।)

यह गंगा किसकी खुदाई है?
जब कोई अपने माल-मत्ता का बहुत घमंड करे, तब उससे ताने में क.। और दो अर्थों में कहावत का प्रयोग होता है : (1) उसके पास जो कुछ है, वह ईश्वर का दिया हुआ है। अथवा (2) उस सबके लिए वह वक्ता के निकट ऋणी हैं।

यह घोड़ा किसका? जिसका मैं नौकर; तू नौकर किसका? जिसका यह घोड़ा
किसी बात का सीधा उत्तर न देना; घुमा-फिरा कर बात कहना।

यह जवानी मुझे न भाव, सींग डलाव हंसी आव
कोई मनुष्य किसी जानवर को सींग हिलाते देखकर हंसने लगा, तब किसी दूसरे ने उससे उक्त बात कही। व्यर्थ दांत निपोरने पर क.।

यह तीन काने, और यह पौ-बारह
चौसर खेलते समय दो आदमियों में से एक के तीन काने (अर्थात एक-एक करके तीन) पड़े, तब दूसरे ने पांसे फेंककर उक्त बात कही कि लो, ये मेरे पौ बारह। अर्थात मैं ऐसा खिलाड़ी नहीं, जो मेरे तीन काने पड़ें।
(चौसर के खेल में तीन काने पड़ना बहुत व्यर्थ और असुविधाजनक माना जाता है, जब कि पौ बारह पड़ना बहुत अच्छा।)

यह तू शिक्षा साध की, निहचे चित में ला।
भेद न अपने जीउ का, औरन को बतला।
स्पष्ट।
निहचे=निश्चित रूप से।
जीउ=हृदय।

यह तो अच्छे थे, ऊपरवालों ने बिगाड़ दिया
कुसंग में पड़कर कोई आदमी बिगड़ गया। उसका कोई मित्र उसका पक्ष लेकर उक्त बात कह रहा है।

यह दाढ़ी धोखे की टट्टी है
दाढ़ी देखकर इसे भला आदमी मत समझो। धूर्त के लिए क.।
यह दिन सब के वास्ते है
मृत्यु के दिन से अभि.।
यह दीदे नदीदे हैं दीदार के
ये आंखें दर्शन की प्यासी हैं।
नदीदे=लोलुप।
दीदार=दर्शन।
यह दुनिया दिन चार है, संग न तेरे जाय।
साईं का रख आसरा, अरु वासेहि नेह लगा।
यह संसार नश्वर है, किसी के साथ नहीं जाएगा; ईश्वर पर भरोसा करके उससे प्रीति करनी चाहिए।
यह पट्टी नहीं पढ़े
हम तुम्हारी बातों में नहीं आने के। अथवा हम ऐसा अनुचित काम नहीं करने के।
यह वचन मेरा ठीक है, सोच इसे तू जान।
मरे विना छूटे नहीं, जीसे भोंड़ी वान।
स्पष्ट।
भोंड़ी वान=बुरी आदत।
यह बड़ मिट्ठा, यह बड़ खट्टा
मन की अस्थिरता।
यह बात, वह बात, टका धर मोरे हाथ
वार-वार अपने ही मतलब की बात करने वाले के लिए क.। *(ब्राह्मण पूजा कराते समय बात-बात में दक्षिणा मांगते हैं। कहावत में उसी ओर संकेत है।)*
यह बात शराफ़त से बईद है
यह बात या काम शिष्टता से बाहर है; मतलब, ऐसा मत करो।
यह बातें मत कीजिये, कधी न तू आय यार।
जिन बातों में रूस जायं, साई और संसार।
स्पष्ट।
रूस जाएं=अप्रसन्न हो जाएं।
यह बिस की गांठ है
बड़ा फ़ितरती है।
यह बेल मढ़े चढ़ती नज़र नहीं आती
जब कोई काम पूरा होते न दिखाई दे, अथवा उसकी सफलता में संदेह हो।
मढ़े=मंडप पर।
यह भी अपने वक़्त के हातिमताई हैं
बड़े परोपकारी हैं। (हातिम अरब के एक बहुत प्रसिद्ध दाता और परोपकारी हो गए हैं।)
यह भी किसी ने न पूछा कि तेरे मुंह में कै दांत हैं?
किसी ने मुझे टोका तक नहीं। राज्य के ऐसे सुप्रबंध के लिए, जहां जान-माल का ख़तरा न हो।
यह भी दाम गुलामों खाये, यह भी बैंगन काट पकाये
सब तरह से बरबाद होना।
यह भी मेरी बात तू, जिऊ बिच धर ले।
गज्जा दे गजवाल को, पर जिऊ भेद मत दे।
धन भले ही दे दे, पर मन का भेद किसी को न बताए।
गज्जा=गज। हाथी।
गजवाल को=हाथी वाले को। महावत को।
यह भी शिक्षा नाथ जी, कह गये ठीकम-ठीक।
खोवें आदर मान को, दगा, लोभ अरु भीक।
स्पष्ट।
यह मुंह और गाजरें?
योग्यता से अधिक पाने की इच्छा रखना।
(गाजर यद्यपि एक सस्ती वस्तु है, पर यहां व्यंग्य में ही कहा गया है।)
यह मुंह और मसूर की दाल?
दे. ऊ.।
यह मुंह पान जोगा?
जब किसी ऐसे मनुष्य को पान दिया जा रहा हो, जिसने किसी की निंदा की हो, तब उसके प्रति तिरस्कार दिखाते हुए क.।
दे. ऊपर की दोनों कहावतें भी।
यह मेरी शिक्षा निपट है आछी, रोटी भूल न खा अधकाची
कच्ची रोटी नहीं खानी चाहिए।
यह मेरी शिक्षा पिया चित लाओ, पर नारी को दूर से ताहो
पर स्त्री से दूर रहना चाहिए।
यह मेरी शिक्षा मान प्यारे, सौदा कभी न बेच उधारे, (व्य.)
सौदा कभी उधार न दे।
यह मेरी शिक्षा मान रे चेला, कभी बाट मत चाल अकेला
दूर की यात्रा अकेले नहीं करनी चाहिए।
यह मेरी शिक्षा मान रे चेले, बासूं मत मिल जुआ जो खेले
जुआरी की संगत न करे।
यह मेरी सिख मान रे बीरा, कपटी संग न राखो सीरा
कपटी के साथ कोई साझा या व्यवहार न करे।
यह मेरी सिख मान रे मीता, भीड़ समें मत रह हत रीता
भीड़ में खाली हाथ न रहे, अर्थात कुछ लाठी वगैरह साथ रखे।

यह मेरी शिक्षा मान सहेली, पर नर संग न बैठ अकेली, (स्त्रि.)
स्त्री को पराए पुरुष के साथ अकेला नहीं बैठना चाहिए।
यह वह गुड़ नहीं जो चिउंटी खाये
बहुत कंजूस या सतर्क आदमी की चीज, जिसे हर कोई आसानी से नहीं ले सकता।
यह वह फ़कीर नहीं, जो खा कर दुआ दे
ऐसा व्यक्ति, जो अहसान न माने।
यहां अच्छों के पर जलते हैं
यहां फरिश्ते भी घबराते हैं। कड़े अफ़सर के बारे में क.। कठिन काम के लिए भी क.।
यहां उल्टी गंगा बहती है
यहां सब काम उल्टे होते हैं।
यहां के बाबा आदम ही निराले हैं
जहां सनकीपन से काम लिया जा रहा हो, वहां क.।
यहां क्या तेरी नाल गड़ी है?
यहां क्या तेरी बपौती है? जब कोई मनुष्य किसी जगह को न छोड़ना चाहे, तब क.।
(हिंदुओं में प्रथा है कि बच्चे के पैदा होने पर उसकी नाल वहीं सोरी घर में गाड़ देते हैं। कहावत में उसी की ओर संकेत हैं।)
यहां जरूर कुछ दाल में काला है
कुछ गड़बड़ है।
यहां तुम्हारी टिक्की नहीं लगेगी
यहां तुम्हारा काम नहीं बनने का, अथवा हम तुम्हारी बातों में नहीं जाने के।
यहां तुम्हारी दाल नहीं गलेगी
दे. ऊ.।
यहां तो हम भी हैरान हैं
फिर तुम्हें क्या सलाह दें?
यहां परिन्दा पर नहीं मार सकता
कोई पास नहीं फटक सकता।
यहां फ़रिश्तों के पर जलते हैं, (मु.)
दे.—यहां अच्छों के पर...।
यहां फिक्र मैशत है वहां दगदगे हश्र,
आसूदगी हरफेस्त न यहां है, न वहां है।
इस लोक में खाने की चिंता है, और उस लोक में ईश्वरीय न्याय का डर; मनुष्य को सुख, न यहां है न वहां।
यहां सब कान पकड़ते हैं
(1) यहां कोई उस्ताद नहीं, सब चेले बनकर रहते हैं।
(2) यहां काम करने में सब घबराते हैं।
यहां हज़रत जिब्राईल के भी पर जलते हैं, (मु.)
यहां वे भी घबराते हैं।
दे.—यहां अच्छों के पर...।
(हज़रत जिब्राईल एक फ़रिश्ते हैं।)
यही गौर, यही मैदान
अर्थात घटना यहीं घटित हुई।
यही गौना, बहुरि नहींह औना
मृत्यु पर।
यही भरोसा ठीक है कि दाता दे तो लूं।
औरत का कर आसरा, जी तरसावे क्यूं।
ईश्वर के देने ही से काम चलता है।
यही भला है मीत जो, झूठ कधे ना बोल।
वंग न सोना हो सके, फिरत सुनहरी झोल।
झूठ कभी नहीं बोलना चाहिए, (क्योंकि) रांगे पर सोने का मुलम्मा करने से सोना नहीं होता।
यही मुंह, यही मसाला
आप इसी मुंह से यही मसाला खाएंगे? तात्पर्य यह कि आप पहले अपने को इस योग्य बनाएं तो!
यही लच्छन मार खाने के हैं
प्रायः बच्चों से कहते हैं, जब वे बड़ों का कहना नहीं मानते।
या इधर हो या उधर हो
बहुत आगा-पीछा सोचना ठीक नहीं। जल्दी निश्चय करो।

या करे दर्दमंद, या करे गर्ज़मंद
या तो दुखिया ख़ुशामद करता है या गरज़ वाला।
या किसी को कर रहे, या किसी का हो रहे
दुनिया में दो तरह से ही काम चलता है, या तो किसी को अपना अहसानमंद बना ले, या किसी का अहसानमंद होकर रहे।
या खाय घोड़ा, या खाय रोड़ा
घोड़े के रखने और मकान की मरम्मत में नित्य खर्च होता रहता है, इसीलिए क.।
रोड़ा=ईट-चूना।
या खुदा ख़ैर कर, ख़ैर का बेड़ा पार कर
हे ईश्वर, हमारी रक्षा कर, और भलों का भला कर। फ़कीर का भीख मांगते समय क.।

या खुदा ख़ैर, बया हाथ-पैर

स्पष्ट।

या खुदा तू दे, न मैं दूं

कंजूस को क.।

या तो भर मांग सेंदुर, या निपट ही रांड

किसी चीज के दिए जाने पर उसे अधिक मांगना, या फिर उसके बिना ही रहना। जो मिल रहा है, उसमें संतोष न करना।

(हिंदुओं में सेंदुर सौभाग्य का चिह्न माना जाता है, और ब्याह के समय कन्या की मांग सेंदुर से भरने की प्रथा है।)

याद करी भगवान की, तो हो गए भगत कबीर।
झूठे वाकी याद बिन, सब हैं पीर फ़कीर।

स्पष्ट।

(कबीर 15 वीं शताब्दी में एक बड़े संत और कवि हो गए हैं।)

याद भली भगवान की और भली ना कोय।
राजा की कर चाकरी, जो परजा तावे होय।

ईश्वर का ध्यान सबसे अच्छा है। जो राजा की सेवा करता है, सब उसके वश में रहते हैं।

याद रखो इस बात को, जो है तुम में ज्ञान।
साईं जाकौ हो गया, वाका सगर जहान।

स्पष्ट।

साईं=ईश्वर।

सगर=सकल। समस्त।

या बसे गूजर, या रहे ऊजर

यह कहा. निम्नलिखित किंवदंती पर आधारित है—

[कहा जाता है कि दिल्ली का बादशाह मुहम्मद तुग़लक (1324-1351) जब दिल्ली के नज़दीक तुग़लकाबाद का क़िला बनवा रहा था, तो उसी के पास ही प्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया एक कुआं खुदवा रहे थे। किले के काम में इससे बड़ी बाधा पड़ने लगी, क्योंकि सभी मज़दूर और राज निज़ामुद्दीन साहब के कुएं पर ही काम करने चले जाते थे। बादशाह को जब यह बात मालूम हुई, तो उसने इस बात का कड़ा हुक्म दिया कि एक मज़दूर भी कुएं पर काम करने न जाए। बेचारे मज़दूर तब दिन भर बादशाह के यहां और रात को संत साहब के यहां काम करने लगे। एक दिन बादशाह जब क़िले का काम देखने आया, तो उसने बहुत से मज़दूरों को अपने काम पर ऊंघते पाया। पूरा क़िस्सा मालूम होने पर बादशाह ने तेल बेचने वालों को निज़ामुद्दीन साहब के हाथ तेल बेचने से मना कर दिया। बादशाह ने सोचा था कि ऐसा करने से उनका रात का काम बंद हो जाएगा। दैव योग से उसी दिन कुएं में पानी का एक सोता निकला। तब निज़ामुद्दीन साहब ने मज़दूरों से कहा कि तुम लोग नित्य प्रति रात को काम करने आया करो। इसी कुएं का पानी तेल का काम करेगा। जैसा उन्होंने कहा था, वैसा ही हुआ। बादशाह को जब यह बात मालूम हुई तो उसने उन्हें एक जादूगर समझा और उनका सिर मांगा। दूसरे दिन जब निज़ामुद्दीन साहब को इसका पता चला, तो उन्होंने गुस्से में आकर बादशाह को शाप दिया कि तेरे ऊपर वज्रपात हो और उस किले में गूजरों का वास हो या ख़ाली ही पड़ा रहे। उसी समय आसमान में काली घनघोर घटाएं घिर आईं और क़िले पर बिजली टूटी, जिससे तुग़लक की मृत्यु हो गई। अब भी यह किला ध्वंसावस्था में पड़ा है, और इसके एक भाग में बहुत दिनों तक गूजर लोग रहते रहे। और इसी से कहावत चली।]

या बेईमानी, तेरा ही आसरा

जब कोई बेईमानी करे तब क.।

या बेहयाई, (मु., स्त्रि.)

बेशर्म से क।

या भैंसा भैंसों में, या कसाई के खूंटे पर

भैंसे को या तो भैंसों के झुंड में देखा जा सकता है, और यदि वह कसाई के हाथ बेच दिया गया है, तो उसके खूंटे से बंधा मिलेगा।

(कुसंग में पड़े ऐसे मनुष्य के लिए क., जिसके उठने-बैठने के कुछ निश्चित अड्डे बन गए हों।)

या मारे साझे का काम, या मारे भादों का घाम

साझे का काम और भादों की धूप, ये दोनों कष्टदायक होते हैं।

यारे शातिर हूं न बारे ख़ातिर, (फ़ा.)

मित्र वही जो सुख पहुंचाए, न कि दुख।

यार करूं, प्यार करूं? चूतड़ तले अंगार धरूं, जल जाय तो क्या करूं?

कपटी मित्र, जो ऊपर से प्रेम दिखाए, पर भीतर से हानि पहुंचाने की चेष्टा करता रहे।

यार का गुस्सा भतार के ऊपर

दुराचारिणी स्त्री के लिए क.। किसी वजह से वह अपने प्रेमी से नाराज़ हो गई है, तो उसका गुस्सा अपने पति पर उतारती है।

यार का दिल यार रखे तो यार का भी रखिये।
यार के घर खीर पक्के तो तनिक सी चखिये।
यार के घर आग लगी तो पड़े पड़े तकिये।
स्वार्थी मित्र।

यार की यारी से काम, या यार के फ़ेलों से
अपने मतलब से मतलब।

यार को करूं प्यार, ख़सम को करूं भसम, लड़के को करूं चटनी
बुरी औरत के लिए क.।

यार जिंदा, सोहबत बाकी
जब तक यार जिंदा है, तब तक उससे मिलने की उम्मीद भी रहती है।

यार डोम ने किया जुलाहा, तन ढाकन को कपड़ा पाया
डोम ने जुलाहे को अपना मित्र बनाया, तो पहनने को कपड़ा मिल गया।

यार डोम ने किया रंघड़िया और न देखा वैसा हड़िया
स्पष्ट।
हड़िया=चोर।
(रांघड़ एक छोटी जाति के राजपूत होते हैं, जो चोरी के लिए बदनाम हैं।)

यार डोम ने किया सिपाही, वात-बात में करें लड़ाई
स्पष्ट।

यार डोम की कीना कंजर, हर लिया पला पलाया कूकुर
स्पष्ट।

यार डोम ने कीना गूजर, चुरा-चुरा कर घर कर दिया ऊजड़
स्पष्ट।

यार डोम ने कीना नाई, कौड़ी देना बाल मुड़ाई
स्पष्ट।

यार डोम ने जाट बनाया, सीत, दूध इन मुक्ता पाया
स्पष्ट।
सीत=मठा।
मुक्ता=बहुत-सा।

यार डोम ने बनिया कीना, दस ले कर्ज़ सैकड़ा दीना
डोम ने बनिए को अपना मित्र बनाया, तो दस रुपए उधार लेकर सौ दिए।
(ऊपर की इन आठों कहावतों का तात्पर्य यह है कि जैसे का संग करोगे, वैसा ही फल मिलेगा।)

या रब मेरी आबरू, या दिन रखियो सोय।
जा दिन सब संसार का, निर्मल लेखा होय।
स्पष्ट।
रब=ईश्वर।

यार वही, जो भीड़ में काम आवे
स्पष्ट।
भीड़=विपत्ति

यार वही है पक्का, जिसने मन यार का रखा
सच्चा मित्र वही है, जो मित्र के मन को प्रसन्न रखे।

यारां चोरी न पीरां दग़ाबाज़ी, (मु.)
मित्रों से मन की बात छिपाना और संतों को ठगना ठीक नहीं।

या रिन्द रिन्दे, या फ़तहचंदे
या तो फ़कीर की तरह ग़रीब ही बने या फिर खूब अमीर।

यारी करें सो बावरे और कर के छोड़ें कूर।
या तों ओर निबाहिये, या फिर रहिये दूर।
जो प्रेम करते हैं, वे पागल हैं; जो करके छोड़ देते हैं वे मूर्ख हैं *(या तो अंत तक अपना कर्तव्य पूरा करे या फिर उस रास्ते से दूर ही रहे।)*

या संसार में करम प्रधान
कर्म ही प्रधान है, जो जैसा करता है; उसे वैसा फल मिलता है।

या सुख नींद सो, या माला जपो
एक समय में एक काम, दो काम एक साथ नहीं किए जा सकते।

या हंसा मोती चुगें या लंघन कर जायें
स्वाभिमानी पुरुष मान के साथ ही जीवन व्यतीत करते हैं। कवि-कल्पना है कि हंस केवल मोती ही चुगते हैं।
लंघन=उपवास।

यूं मत जाने बावरे, कि पाप न पूछे कोय।
साईं के दरबार में, इक दिन लेखा होय।
स्पष्ट। लेखा=हिसाब-किताब।

यूं मत जी में जान तू कि मनुख बड़ा जग बीच।
या बिना करतार की, है नीचन का नीच।
स्पष्ट।

यूं मत मान गुमान कर कि मैं हूं शेर जवान।
तुझ से इस संसार में लाखों हैं बलवान।
स्पष्ट।
मान-गुमान=अभिमान।

र

रंग की ख़ुशी, मन का सौदा
मनमौजी आदमी।
रंग कौवे सा और मेहताब नाम
नाम तो वड़ा अच्छा, पर रंगरूप विल्कुल उसके विपरीत।
मेहताव=चांद।
रंग रूप देख कर न भूलिए
ऊपरी तड़क-भड़क से धोखे में नहीं आना चाहिए।
रंगरेज होते, तो अपनी दाढ़ी रंगते
मन की एक मौज!
(रंगरेज़ के काम को देख कोई ख़ुश हो गया और वह मज़े में आकर कहता है।)
रंडियों की खरची और वकीलों का खरचा पेशगी ही दिया जाता है
क्योंकि बाद में फिर कोई जल्दी नहीं देता।
रंडी का जोवन रकाबी में
(1) जो पैसा दे, वह उसका उपयोग कर सकता है।
(2) बढ़िया चीजें खाने से रंडी का यौवन बना रहता है।
रंडी किसकी जोरू और भडुवे किसके साले
ये अपने मतलव के होते हैं।
रंडी की कमाई या खाय ढाढ़ी या खाय गाड़ी
रंडी का पैसा गायकों को खिलाने और गाड़ी-भाड़ा देने से बहुत ख़र्च होता है।
रंडी की गाली और भूत के पत्थर की चोट नहीं लगती
रंडी की गालियों का कोई बुरा नहीं मानता।
रंडी के घर मांड़े और आशकों के घर कड़ाके
रंडी जब बढ़िया माल-टाल उड़ाएगी, तो उसके चाहने वाले तो भूखों मरेंगे ही; क्योंकि उनका ही पैसा उसके यहां जाता है।
मांड़े=एक प्रकार की वहुत पतली बढ़िया रोटी।
रंडी के नाक न होती तो गू खाती फिरती
इसके दो अर्थ हैं—(1) रंडी को अगर नाक से वदबू न आती, तो वह गंदी-से-गंदी चीज खा लेती।
(2) उसे अगर अपनी नाक कटने (अर्थात वदनामी) का डर न होता, तो वह गंदे-से-गंदा काम करने में भी न हिचकती।
रंडी के सैकड़ों यार
स्पष्ट।
'रंडी तेरा यार मर गया' कहा, 'कौन सी गली का?'
रंडी के सैकड़ों यार होते हैं। कोई मर जाए, उसे क्या परवाह?
रंडी पैसे की आशना है
रंडी को पैसे से मतलव।
रंडी फ़क़ीर कर दे दम में शाहेजमां को।
बदफ़न करे पलक में इंसान नेकफ़न को।
स्पष्ट।
शाहेज़मां—दुनिया का वादशाह।
वदफ़न=दुर्गुणी।
रंडी मांगे रुपया 'ले ले मेरी मैया'।
फक्कड़ मांगे पैसा 'चल बे साले कैसा।'
रंडी को लोग खुशी से पैसा दे देते हैं, ग़रीब को नहीं देते।
रंडी मोम की नाक होती है
पैसा देकर चाहे जिधर मोड़ दो।
रंडु आ गया सगाई को, आपको लाभ या भाई को
स्त्री की उसे भी ज़रूरत है, इसलिए वह अपना मतलब पूरा करेगा या दूसरे का? उसे भेजा ही नहीं जाना चाहिए था।

रकत ले गैलों सौतिन के घर, (पू., स्त्रि.)
किसी स्त्री से किसी ने पूछा—कहां गई थी? तो वह खीझकर जवाब देती है—रक्त लेने गई थी मौत के घर। मन का तीव्र क्षोभ प्रकट करने के लिए क.।

रखा तो चश्मों से, उड़ा दिया तो पश्मों से
(1) नौकर का कहना। मुझे रखते हैं तो अच्छी बात है, नहीं रखते तो उसकी परवाह नहीं।
(2) किसी को पहले तो बहुत आदर से रखना, बाद में अनादर करके भगा देना, यह अर्थ भी कहावत का हो सकता है।

रक्खे तो पीत नहीं तो पलीत
निबाहा जा सके तो प्रेम, नहीं तो एक फजीहत है।

रक्खो इस मकूले पै दारो मदार,
कि नौ नगद अच्छे न तेरह उधार, (व्य.)
कम मुनाफ़े पर नक़द सौदा देना अच्छा, अधिक मुनाफ़े पर भी उधार देना अच्छा नहीं।

रख पछतावा कुछ नहीं, बेच पछतावा अच्छा, (व्य.)
माल बेचकर पछताना अच्छा, रखकर पछताना अच्छा नहीं।

रख पत, रखा पत
दूसरे की इज्ज़त रखो, तो तुम्हारी भी इज्ज़त रहेगी।

रज़ा व क़ज़ा
ईश्वर का किया मंजूर है।

रजील की दो, न असराफ़ की सौ
नीच की दो गालियां भी भले आदमी की सौ गालियों के बराबर हैं।

रत्तियों जोड़े, तोलों खोवे; वाको लाभ कहां से होवे
थोड़ा कमाए और बहुत खर्च करे, तो उसके पास कुछ बच कैसे सकता है?

रत्ती दान न धी को दिया, देखो री समधन का हिया, (स्त्रि.)
शिकायत कर रही है कि दहेज में कुछ नहीं दिया। समधिन बड़ी कंजूस है।

रत्ती दे कर मांगे तोला, वाको कौन बतावे भोला
स्पष्ट।

रत्ती भर की तीन चपाती, खाने बैठे सात संगाती, (स्त्रि.)
कंजूस पर क.।

रत्ती भर धन साथ न जावे, जब तू मर कर जीव गंवावे
स्पष्ट।

रत्ती भर सगाई, न गाड़ी भर आशनाई
(1) न किसी से हमें थोड़ा भी रिश्ता जोड़ना है, और न बहुत सी आशनाई, अर्थात हमें किसी से कुछ मतलब नहीं।
(2) मित्रता की अपेक्षा साधारण रिश्तेदारी अच्छी चीज है, यह अर्थ भी।

रन फ़तह हो गया
लड़ाई जीत गए। काम बन गया।

रपट परे की 'हर गंगा'
कोई आदमी गंगा के किनारे खड़ा था। नहाना नहीं चाहता था। पर पैर फिसला और पानी में गिर पड़ा, तो लोगों को यह बताने के लिए वह स्नान करने ही आया था, बोल उठा 'हर गंगा'। अनायास कोई अच्छा काम बन जाना।

रमज़ान के नमाज़ी मुहर्रम के सिपाही, (मुं.)
बाक़ी साल भर कुछ न करना। धूर्त या पाखंडी के लिए क.।
(रमज़ान के महीने में मुसलमान रोज़े रखते हैं। मुहर्रम मुसलमानी वर्ष का पहला महीना है, जिसमें हसन साहब शहीद हुए थे। उनकी यादगार में इस महीने में ताज़िए बनकर लोग चलते हैं। यहां उन्हीं सिपाहियों से मतलब है।)

रले-मिले पंचो रहिये, जान जाये पर सच न कहिये
फ़ितरती और झूठ बोलनेवाले पंचों पर व्यंग्य।

रस दिये मरे तो विष क्यों दीजे
सहज में काम बने, तो कठोरता का आश्रय क्यों ले।

रस मारे रसायन हो
(1) पारे को भस्म करने से चांदी व सोना बनता है।
(2) इच्छाओं का दमन करने से मनुष्य को सिद्धि मिलती है।

रस में विष
रंग में भंग। आनंद में विघ्न।

रसोई और रसायन बराबर
दोनों का बनाना मुश्किल है। सबको नहीं आता।

रस्सी का सांप बन गया
छोटी-सी बात व्यर्थ बहुत बढ़ गई।

रस्सी जल गई पर बल नहीं गये
बर्बाद हो जाने पर भी अकड़ नहीं गई।

रस्सों जकड़े अब नहीं ठैरते
(1) संसार के बंधनों में जकड़े रहने पर भी अब ठहरना

मुश्किल है, मौत नज़दीक है।
(2) यद्यपि हम बंधनों में जकड़े हैं, पर अब हमसे नहीं रहा जाता। जो करना चाहते हैं वह करेंगे।

रहना भला विदेस का, जहां न अपना कोई
किसी वीतराग का कहना।

रहव भुखले, चलब टिहुकले, (पू.)
भले ही भूखे रहें पर छाती तानकर चलेंगे।

रहमान को रहमान, शैतान को शैतान
(1) अच्छे के लिए अच्छा और बुरे के लिए बुरा।
(2) अच्छे को अच्छा ही मिलता है और बुरे को बुरा।

रहमान जोड़े पली-पली, शैतान लुढ़कावे कुप्पे
(1) घर में स्त्री जब कोई चीज इकट्ठी करके रखे और कुत्ता-बिल्ली खा जाएं तब क.।
(2) घर का एक आदमी संचय करे और दूसरा उड़ाए तब भी क.।

रहम दिली बड़ाई की निशानी है
स्पष्ट।

रह रह बेंगना होने दे बिहान, तुझ पर साजेंगे तीर कमान
झूठी डींग मारने वाले से क.।
बेंगना=मेढक।
बिहान=सबेरा।

रहा करीमना तऊ घर गया, गया करीमना तऊ घर गया, (स्त्रि.)
स्त्री का (शायद) अपने निखट्टू पति के प्रति कहना कि करीम रहा, तो भी घर नष्ट होगा, न रहा तो भी नष्ट होगा।
जब किसी आदमी के बिना काम न चले और उसके रहने से हानि भी हो तब क.।

रही बात थोड़ी, ज़ीन, लगाम, घोड़ी
किसी को रास्ते में एक चाबुक पड़ी मिल गई, तब उसने कहा कि अब क्या है, ज़ीन, लगाम और घोड़ी खरीदना ही बाकी रहा। बहुत थोड़े काम से ही जब आदमी यह समझ ले कि अब तो पूरा काम बन गया तब क.।

रहे अंत मोची के मोची
फिर जैसे को तैसा हो जाना। बहुत कष्ट उठाने के बाद भी हालत न सुधरना।

रहे के भुसहुल, नाव लेवे के धरोहर, (पू.)
रहते हैं झोंपड़ी में और नाम है धरोहर।
झूठी शान बघारने पर क.। धरोहर से मतलब है जो दूसरों का माल गिरवी रखे अर्थात साहूकार।

रहे झोंपड़ी में, ख्वाब देखे महलों का
उच्चाकांक्षा रखना।

रहे तो टेक से, जाय तो जड़ बेख से
(1) इज्जत से रहे, या फिर बिल्कुल खत्म हो जाए।
(2) ज़िद्दी के लिए भी कह सकते हैं कि मर भले ही जाए, पर अपनी हठ को पूरा करके रहेगा।
जड़ बेख से=जड़ वृक्ष से।

रहे नाम अल्लाह का
ईश्वर ही रहता है, नित्य है, और सब नष्ट हो जाता है।

रहे महमूद के, अंडे देवे मसूद के
किसी का खाना और काम किसी का करना।

रहो री कुतिया, मेरी आस; मैं आऊं कातिक मास, (स्त्रि.)
कोई स्त्री अपने निकम्मे और झूठा दिलासा देने वाले पति से कह रही है।

रांघड़, गूजर दो, कुत्ता बिल्ली दो; ये चारों न हों; तो खुले किवाड़ों सो
स्पष्ट।
(रांघड़ और गूजर चोरी के लिए बदनाम हैं। कुत्ता और बिल्ली तो रात में तंग करते ही हैं।)

रांड़ और खांड़ का जोबन रात को
स्पष्ट।
खांड़=मिठाई।

रांड़ का सांड़, छिनाल का छिनरा
विधवा का लड़का आवारा होता है, और छिनाल का शोहदा।

रांड़ का सांड़, सौदागर का घोड़ा, खाय बहुत चले थोड़ा
ग़रीब विधवा का लड़का और सौदागर के पास से खरीदा गया घोड़ा, ये अच्छे नहीं निकलते।

रांड़ की गांठ में माल का टूक
(1) विधवा के पास चर्खे की माल का टुकड़ा ही रहता है। अर्थात वह बहुत असहाय और ग़रीब होती है।
(2) किसी विधवा को कहीं से बहुत-सी संपत्ति मिल गई। तब उस पर भी कह सकते हैं कि वह अब मौज से रहेगी।

रांड़ के आगे गाली क्या? (स्त्रि.)
सधवा के लिए 'रांड़' से बढ़कर गाली और क्या हो सकती है?

रांड़ के चरखे की तरह चला ही जाता है
जो काम कभी रुके ही नहीं, अथवा जो आदमी हमेशा चलता-फिरता ही रहे उसे क.।

रांड़ को बेटी का बल, रंडुए को रुपए का बल

स्पष्ट।

(रांड़ को बेटी का बल इसलिए है कि रंडुए के साथ उसका विवाह करके अधिक-से-अधिक पैसा ले सकती है, रंडुए को इस बात का बल है कि वह अधिक-से-अधिक पैसा देकर कहीं भी शादी कर सकता है।)

रांड़ भइल के सुख कौन जो निचिंत सूतल, ना, (पू. स्त्रि.)

रांड़ होने का सुख ही क्या अगर आराम से नहीं सो पाए?

रांड़, भांड़ और सांड़ बिगड़े बुरे

ये तीनों ही अगर नाराज़ हो जाएं तो विकट रूप धारण कर लेते हैं।

रांड़ मुई, घर संपत नासी, मूंड मुड़ाये भये संन्यासी

स्त्री मर गई, घर की संपत्ति भी नष्ट हो गई, तो सिर मुड़ाकर संन्यासी बन गए।

(जो किसी धार्मिक भावना के वश होकर साधु नहीं बनते, उन पर कटाक्ष।)

रांड़ रोवे, कुंआरी रोवे, साथ लगी सत खसमी रोवे

रांड़ का रोना ठीक है, पर उसके साथ यदि कुंआरी और सतखसमी भी रोवे, तो यह हंसी की बात है। झूठे रोने पर क.।

रांड़, सांड़, सीढ़ी, संन्यासी, इनसे बचे तो सेवे काशी

स्पष्ट।

(काशी की गलियों में सीढ़ियां बहुत बनी है, सांड़ भी बहुत घूमते रहते हैं और संन्यासियों तथा संन्यासिनियों की संख्या तो अधिक है ही।)

रांड़ से बढ़ कर कोसना नहीं

सधवा के लिए 'रांड़ हो जा' इससे बढ़कर कोई शाप नहीं हो सकता।

रांड़ तो बहुतेरी रहें, जो रंडुए रहने दें

विधवाएं तो सच्चरित्र बनी रहना चाहती हैं, पर जो रंडुए रहने दें तब तो।

(दूसरों की इच्छा की खातिर जब विवश होकर कोई काम करना पड़े तब क.। प्रायः हंसी में ही क.।)

रांधो न सिझाओ, मुझे बैठ खिलाओ

स्पष्ट।

स्त्री का अपने लड़के या पति से कहना जो खाने के लिए जल्दी मचा रहा है।

सिझाना=पकाना।

राई को पर्वत करे, पर्वत राई मांह

ईश्वर की लीला के लिए क.।

राई भर नाता, न गाड़ी भर आशनाई

दे. रत्ती भर नाता...।

राई भर सगाई, न पेटहा भर प्रीत

दे. रत्ती भर नाता...।

पेटहा भर=पेट भर अथवा संदूक भर।

राखन हार भये भुज चार तो क्या बिगड़े भुज दो के बिगाड़े

ईश्वर जिसका सहायक है, मनुष्य उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

भुजचार=चार भुजा वाले विष्णु भगवान।

राचे का पान, विराचे की मेंहदी

(1) मुंह रचे तो पान है, नहीं तो मेंहदी के समान है।

(2) यदि सम्मान से दिया जाए तो पान, नहीं तो मेंहदी।

(स्त्रियों का विश्वास है कि प्रेम से दिए गए पान से ही मुंह रचता है। कहावत में यही भाव छिपा है।)

राज का दूजा, बकरी का तीजा, दोनों ख़राब

राजा के दो लड़के हों तो वे राज्य के लिए आपस में लड़ते हैं। बकरी के तीन बच्चे हों, तो भरपेट दूध नहीं पी सकते, क्योंकि उसके दो ही थन होते हैं।

राज का राज में, ब्याज का ब्याज में, नाज का नाज में

जहां का पैसा वहीं ख़र्च हो जाता है। राजा का राज में, साहूकार का कर्ज़ देने में और गल्ले वाले का गल्ले में लग जाता है।

राजपूत, जाट, मूसल के धनुही, टूट जात, नवे नहीं कब ही

राजपूत और जाट मूसल के उस धनुष के समान हैं जो झुकाने से झुकता नहीं, टूट भले ही जाए।

(ये दोनों ही अपनी हठ और कट्टरपन के लिए प्रसिद्ध हैं।)

राजा आगे राज, पीछे चलनी न छाज, (स्त्रि.)

विधवा का कहना है।

राजा से मतलब पति से है।

राजा करे सो न्याव, पांसा पड़े सो दाव

दे. पांसा पड़े सो दाव...।

राजा का दान, प्रजा का असनान

दोनों बराबर हैं। सबको अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार धर्मकार्य करना चाहिए।

असनान=तीर्थ-स्नान।

राजा का परचाना और सांप का खिलाना बराबर है।

दोनों खतरनाक हैं।

परचाना=परिचय। हिलना। मिलना।

राजा किसके पाहुने और जोगी किसके मीत

राजा और जोगी किसी के मीत नहीं होते।

राजा की बेटी, करमों की हेटी

भाग्य के लिए क.।

राजा की सभा नरक को जाय

क्योंकि सब खुशामद की बातें करते हैं।

राजा के घर गई और रानी कहलाई, (स्त्रि.)

राजा की कृपा जिस पर हो जाती है, उसी पर बड़प्पन लद जाता है।

राजा के घर काज, हमारे घर ठक ठक

राजा के घर विवाह हमारे घर फ़ाकामस्ती।

(प्रजा से धन खींचकर राजा मौज-मजा करते हैं, उसी से मतलब है।)

राजा के घर मोतियों का काल

एक आश्चर्य की बात।

राजा को मोती का दुख

दे. ऊ.।

राजा छुये और रानी होय

राजा की कृपा हुई नहीं कि आदमी को रुतबा मिला नहीं।

राजा छोड़े नगरी, जो भावे सो लेवे

जिस वस्तु से अपना कोई संबंध नहीं रहा उसे कोई भी ले ले।

राजा, जोगी, अगन, जल, इनकी उल्टी रीत।
डरते रहिये परसराम, ये थोड़ी पालें प्रीत।

स्पष्ट।

राजा जोगी किसके मीत

किसी के नहीं।

राजा नल पर विपदा पड़ी, भूनी मछली जल में तिरी

बुरे दिन आने पर सभी बातें उल्टी हो जाती हैं। विपत्ति अकेले नहीं आती।

(कथा है कि जब राजा नल जुए में अपना राजपाट हार गए, तो दमयंती को लेकर जंगल में चले गए। वहां एक दिन उन्हें कुछ खाने को नहीं मिला, तब भूख से व्याकुल होकर उन्होंने तालाब में से मछली पकड़ी और उसे आग में भूना। यह देखकर कि उसमें बहुत राख लगी है, रानी जब उसे पानी में धोने गई, तो वह ज़िंदा हो गई और तैर कर चली गई।)

राजा न्याव न करेगा तो घर तो जाने देगा

(1) अपनी स्पष्ट बात कहने में संकोच नहीं करना चाहिए।
(2) काम चाहे हो अथवा न हो, पर प्रयत्न तो करना ही चाहिए।

राजा बुलावे, टांढ़े आवें

राजा का संदेशा पाते ही दौड़कर आते हैं। जिसके हाथ में शक्ति है, उसका सब कहना मानते हैं।

राजा भीम की कज़ा, राम की रज़ा

भीम भी ईश्वर की इच्छा से ही मरे।

राजा रखे रानी खावे

पुरुष कमाता है, स्त्री खर्च करती है।

राजा राज, परजा चैन

जब न्यायी राजा होता है, तो प्रजा सुख से रहती है।

राजा रूठेगा तो अपना सुहाग लेगा, क्या किसी का भाग लेगा, (स्त्रि.)

कोई आदमी अगर हमसे नाराज़ होता है तो हो जाए, हमें इसकी बिल्कुल परवाह नहीं है, वह हमें जो कुछ देता है न दे, हम स्वयं अपना बहुत कर लेंगे—इस तरह की स्वाधीन भावना प्रकट करने के लिए कहते हैं।

सुहाग=सौभाग्य। यहां कृपा अथवा भेंट में दी गई वस्तु से मतलब है।

राजा रूठे अपनी नगरी लेगा

दे. ऊ.!

राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।
यहां यों भी वाह वाह है और वों भी वाह वाह है।
(नज़ीर)

जिसमें तू प्रसन्न रहे हम हर तरह से वही करने को तैयार हैं। (ईश्वर के प्रति कथन।)

रात की नीयत हराम, (लो.-वि.)

रात में सोचा गया काम सफल नहीं होता। लोक-विश्वास।

रात की मालज़ादी, दिन की खूज़ादी

रात को वेश्या और दिन को भलीमानसिन।

रात को झाड़ू देनी मनहूस है, (लो.-वि.)

रात में झाड़ू देना बुरा है।

रात को सांप का नाम नहीं लेते, (लो.-वि.)

लोगों का विश्वास है कि रात में सांप का नाम लेने से वह आकर मौजूद हो जाता है।

रात गई, बात गई

(1) समय भी नष्ट हुआ और काम भी नहीं हुआ।

(2) रात की बात रात के साथ गई, अब उसकी चर्चा छोड़ो।

रात थोड़ी, कहानी बड़ी

हमारे दुख की कहानी इतनी बड़ी है कि वह इतने थोड़े समय में पूरी नहीं होगी।

रात थोड़ी, स्वांग बहुत

समय थोड़ा है, पर काम बहुत करना है।

रात नर्वदा उतरी, सुबह कुआं देख डरी, (स्त्रि.)

रात में तो नर्मदा तैर कर उतर गई, और सुबह कुआं देखकर डरती है।

स्त्री-चरित्र पर क.।

(सं.—दिवा काकरुतादभीता, रात्रौ स्तरतिनर्मदाम्।)

रात पड़ी बूंद, नाम रखा महमूद, (स्त्रि.)

रात में ही गर्भ रहा, लड़के के होने में नौ महीने की देर, पर उसका नामकरण कर दिया। काम होने के पहले ही अपनी इच्छानुसार उसके नतीजे भी निकाल लेना।

रात पड़े उपासी, दिन को खोजे वासी, (स्त्रि.)

बहुत ग़रीबी।

रात भर गाई बजाई लड़के के नूनी ही नहीं

जिस काम के लिए आडंबर किया जाए, वह व्यर्थ सिद्ध हो तब क.।

लड़का होने की खुशी मनाई गई, पर उसमें पुरुषत्व के कोई चिह्न ही नहीं।

रात मां का पेट

रात मां के पेट की तरह है। सब कष्टों को भुला देती है, अथवा सब बुरे कामों को ढक लेती है।

रात रात का पड़ रहना, भोरे भए चल देना

राहगीर या फ़कीर का कहना।

रात हटाई, तड़के ही आई, भूख वेदना बुरी रे भाई

भूख के लिए क., रात को किसी तरह मिटाई, सुबह फिर लग आई।

रातों काता कातना, सिर पर नहीं नातना, (स्त्रि.)

रात भर सूत काता, फिर भी सिर ढकने को कपड़ा नहीं। व्यर्थ परिश्रम।

रातों रोई, एक ही मूआ, (स्त्रि.)

रात भर रोती रही (अथवा कोसती रही) पर मरा एक ही। *(प्रयास बहुत, लाभ थोड़ा)*

राधे राधे रटत हैं, आक ढाक अरु कैर।
तुलसी या ब्रजभूमि में कहा राम से बैर।

स्पष्ट।

(कहा जाता है, एक बार गोस्वामी तुलसीदास जी मथुरा गए। वहां उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को राधे-कृष्ण का नाम लेते ही देखा, राम की चर्चा कोई नहीं कर रहा था, तब उन्होंने उक्त दोहा कहा।)

रानी को कौन कहे 'आगा ढक', (स्त्रि.)

बड़े आदमी को कौन उपदेश दे?

रानी को राना प्यारा, कानी को काना प्यारा

(1) अपनी-अपनी वस्तु सबको प्यारी होती है, फिर वह कैसी ही हो।

(2) जो जैसा होता है वह वैसे ही आदमी को पसंद करता है।

रानी गई हाट, लाईं रीझ कर चक्की के पाट

क्योंकि उन्होंने चक्की का पाट कभी नहीं देखा था। बड़े आदमियों की सनक।

रानी दीवानी हुई, औरों को पत्थर, अपनों को लड्डू मार कर

होशियार पागल। देखने में सिड़ी पर बड़ा चतुर।

रानी रूठेगी अपना सुहाग लेगी क्या किसी का भाग लेगी?

दे. राजा रूठेगा...।

मालिक नाराज़ होगा, अपनी नौकरी लेगा।

राम की माया, कहीं धूप, कहीं छाया

ईश्वर की विचित्र लीला; कहीं सुख है तो कहीं दुख।

राम के भक्त काठ के गुड़िया, दिन भर ठक ठक, रात के घुसकुरिया, (भो.)

उन वैष्णव पुजारियों पर व्यंग्य जो दिन में भगवान के नाम की माला जपते हैं और रात में दुष्कर्म करते हैं।

राम छोड़ी अयोध्या, मन भावे सो लेय

दे. राजा छोड़े नगरी...।

राम जी का आसरा है

असहाय दुखिया का क.।

राम झरोखे बैठ के सब का मुजरा लेय।
जैसी जाकी चाकरी, वैसा वाको देय।

जो जैसी सेवा करता है, वैसा फल पाता है।

राम न मारे, आपई मरे, देय कुमति चढ़ाये, (पू.)

मनुष्य अपने दुष्कर्मों का ही फल भोगता है, ईश्वर को व्यर्थ दोष देता है।

राम नाम की लूट है, लूटी जाय सो लूट।
अंत काल पछतायगा, प्रान जायेंगे छूट।

स्पष्ट।

राम नाम के कारने सब धन डारो खोय।
मूरख जाने गिर पड़ा, दिन दिन दूना होय।
परोपकार में ख़र्च किया गया पैसा व्यर्थ नहीं जाता।
राम नाम को आलसी भोजन को तैय्यार
अकर्मण्य आदमी।
राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घी।
हर को नाम मिश्री, तू घोल घोल पी।
स्पष्ट।
राम नाम ले सो धक्का पावे, चूतड़ हिलावे सो टक्का पावे, (स्त्रि.)
दुश्चरित्रों को धन मिलता है, सच्चरित्रों को कोई नहीं पूछता।
कहावत में वेश्या से मतलब है।
राम नाम सुमरन करो, यही नाम है तंत।
तीन लोक चौदह भुवन, छाय रहे भगवंत।
स्पष्ट।
तंत=सार।
राम नाम शमशेर पकड़ ली, कृष्ण कटारा बांध लिया।
दया धरम की ढाल बनाले, जम का द्वारा जीत लिया।
स्पष्ट।
राम बढ़ाये सो बढ़े बल कर बढ़ा न कोय।
बल करके रावन बढ़ा छिन में डारा खोय।
जिस पर राम की कृपा होती है, वही बढ़ता है, या उन्नति करता है। अपना बल दिखाकर कोई नहीं बढ़ा, रावण ने बल दिखाया, जिससे उसका तुरंत नाश हो गया।
राम विना दुख कौन हरे?
बरखा बिन सागर कौन भरै?
लक्ष्मी बिन आदर कौन करै?
माता बिन भोजन कौन धरै?
राम के बिना दुख कौन दूर कर सकता है? वर्षा के बिना समुद्र कौन भर सकता है? लक्ष्मी (पतिव्रता स्त्री) के बिना आदर कौन कर सकता है, और मां के बिना कौन भरपेट खिला सकता है?
राम भरोसा भारी है
राम सबकी सुख लेते हैं।
राम भरोसे जे रहें पर्वत पर हरियायं।
तुलसी बिरवा-बाग के सींचत ही कुम्हलायं।
स्पष्ट।
बिरवा=वृक्ष।
राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा, एक कोढ़ी
दो एक से (दुष्ट) आदमियों का मिलना।
राम नाम कहते रहो, जब लग घट में प्रान।
कबहुं तो दीन दयाल के भनक परेगी कान।
राम का नाम लिये जाओ, कभी-न-कभी तो सुनवाई होगी ही।
राम नाम जपना, पराया माल अपना।
धूर्त साधुओं या पाखंडियों के लिए क.।
राम राम तू कहो मन मेरे, पाप कटेंगे छिन में तेरे
स्पष्ट।
राम नाम लिख दे, सिला तिर जायेगी।
भज ले सीताराम, मुक्त हो जायेगी।
स्पष्ट।
(कहावत में अहिल्योद्धार की घटना की ओर संकेत है।)
सिला=शिला।
राम ही राम सत है
ईश्वर जिसका सहायक है, उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है?
सत=सत्य।
राम सहाय करे तो कोई क्या कर सके
स्पष्ट।
रावन का साला
ऐसा दुष्ट व्यक्ति जिसका कोई बड़ा आदमी हिमायती हो।
रावन ने जब जनम लिया, थी बीस भुजा, दस सीस।
माय अचंभे हो रही, किस मुंह में दूं खीस।
स्पष्ट।
माय=माता।
खीस=खाना।
राव न रावड़ी, ले उठे खावड़ी
न कोई लड़ाई न झगड़ा, फिर भी तलवार खींच ली। कोई अकारण लड़ने को तैयार हो जाए तब क.।
राव=रार, टंटा, बातचीत
रास्तगो मुफलिस मजलिस में झूटा
ग़रीब आदमी सच भी बोले, तो भी वह अदालत में झूठा ठहरता है।
(जो लोग रिश्वत देकर विपक्ष में झूठी गवाही दिलाते हैं, उनकी आलोचना)
राह की बात है
हित की बात है।

राह छोड़ कुराह चले
उचित नहीं किया।
राह पड़े जानिये, या वाह पड़े जानिये, (पं.)
संग होने से या काम पड़ने से ही आदमी पहचाना जाता है।
रिकाब पर पांव रखे हुए हो
बहुत जल्दी में हो, जाने को तैयार हो।
रिजक न पल्ले बांधते, पंछी औ' दरवेश।
जिनका तकिया रब्ब है, उनको रिज़क हमेश।
जो ईश्वर पर निर्भर रहते हैं, उन्हें रोजी की फ़िक्र नहीं करनी पड़ती।
रिज़क=(रिज़्क़ अ.) नित्य का भोजन। जीविका।
तकिया=आश्रय, सहारा।
रब्ब=ईश्वर।
रिज़क है न मौत
बदनसीब के लिए क.।
रिज़ाला मस्त हुआ, खुदा को भूल गया, (मु.)
नीच के पास पैसा हो जाए, तो ईश्वर को भूल जाता है।
रिज़ाले का लट्ठ
(1) नीच का लड़का (2) बदशक़ल और बेहूदा आदमी।
रिज़ाले की जोरू को सदा तलाक़
कमीने की औरत को हमेशा ही छुट्टी।
रिज़ाले की दोस्ती पानी की लकीर।
शरीफ़ों की दोस्ती पत्थर की लकीर।
कमीने की मित्रता पानी की लकीर की तरह तुरंत मिट जाती है; भले आदमी की मित्रता पत्थर की लकीर की तरह स्थायी होती है।
रिज़ाले के नाखून हुए
सताने का साधन उसे मिल गया।
रियासत बगैर सियासत नहीं होती
बिना रौबदाब के शासन नहीं चलता।
रिश्वतखोर जहन्नुमी है
रिश्वत लेने वाला नर्क में जाता है। मत. रिश्वत लेना बुरा काम है।
रीछ का एक बाल भी बहुत है, (लो. वि.)
अपनी करामात दिखाता है। रीछ का बाल लड़कों को नज़र से बचाने के लिए तावीज़ में रखकर बांधते हैं।
रीझेंगे तो पत्थर ही मारेंगे
खुश होंगे तो भी नुकसान पहुंचाएंगे।
(ऐसे ओछे और नीच प्रकृति के आदमी के लिए जिससे प्रसन्न-से-प्रसन्न अवस्था में भी कभी भलाई की आशा न की जाए।)
रीत की कौड़ी, न ऊत बिलाव की ढेरी
ईमान की एक कौड़ी अच्छी पर मूर्ख की रुपयों की ढेरी अच्छी नहीं।
रीत न सतवांसा, मेरा लाड़ला नवासा, (स्त्रि.)
न तो कोई नेग-दस्तूर हुआ, न सतवांसा हुआ, फिर भी मेरे लाड़ला नाती हो ही गया। कोई जबर्दस्ती का संबंध जोड़ता फिरे तब क.।
सतवांसा=वह दस्तूर जो गर्भवती स्त्री के सातवें महीने में होता है।
नवासा=लड़की का लड़का।
रीता हाथ मुंह तक नहीं पहुंचता
खाली हाथ काम नहीं चलता।
रीते भरे, भरे ढुलकावे, मेहर करे तो फिर भर जावे
ईश्वर की इच्छा के लिए क.।
मेहर=दया। कृपा।
रीस न कर धनवंत की, निधन हो कर यार।
रीस करते सैकड़ों, देखे होते ख़्वार।
ग़रीब होकर धनवान से स्पर्द्धा नहीं करनी चाहिए।
रीस भली, हौंस बुरी
स्पर्द्धा अच्छी, पर द्वेष बुरा।
रुपया आनी जानी शय है
एक जगह नहीं टिकता।
शय=चीज।
रुपया तो शेख, नहीं तो जुलाहा, (मु.)
रुपए से ही आदमी छोटा या बड़ा बनता है।
रुपयावाले को रुपए की आस, मोको राम की आस
ग़रीब का आत्मसंतोष।
रुपया हाथ का मैल है
दान-पुण्य में खर्च करना चाहिए, भिखारी कहा करते हैं।
रुपए का काम रुपए से चलता है, (व्य.)
कोरी बातों से नहीं चलता।
रुपए की खीर है
रुपया है तो खीर खाओ।
रुपए को रुपया कमाता है, (व्यं.)
रुपया से रुपया आता है। रुपये से ही रोज़गार होता है।

रुपए वाले की हमेशा पूछ है

रुपए वाले के पास सब आते हैं, सब उसे तलाश करते हैं।

रूख बिना ना नगरी सोहे, बिन बरगन ना कड़ियां।
पूत बिना ना माता सोहै, लख सोने में जड़ियां।

स्पष्ट।

बरगा=लकड़ी के वे छोटे पटिए जो छत को पाटने के लिए कड़ियों पर रखे जाते हैं।

कड़ी=छत को पाटने के लिए रखी जाने वाली लंबी चौपहली लकड़ी; धरन।

रूखा खाना धरती सोना, नाह सुहेला फक्कड़ होना

फक्कड़ (या फ़कीर) होना आसान नहीं है, क्योंकि फ़क्कड़ को रूखा खाने को मिलता है और धरती पर सोना पड़ता है।

सुहेला=सहज।

रूखा सो भूखा

(1) जो रूखाई से बात करे, समझ लो वह भूखा है।

(2) रूखा (बिना घी का) खाने से भूख जल्दी लगती है, क्योंकि वैसा अन्न जल्दी हज़म होता है।

रूठे को मनाय नहीं, फटे को सिलाय नहीं, तो काम कैसे चले?

रूठे को न मनाया जाए, तो नाराज़ होकर ही बैठा रहेगा; फटे कपड़े को न सिया जाए, तो और फट जाएगा।

रूठे बाबा, दाढ़ी हाथ

बूढ़ा आदमी नाराज़ होता है, तो अपनी दाढ़ी नोंचता है; बेचारा करे क्या?

रूप न सिंगार, खतरानी की साध, (स्त्रि.)

न तो रूप है न बनाव-ठनाव है, फिर भी खतरानी बनने की साध।

(खत्रियों की स्त्रियां अपने सौंदर्य और शृंगार के लिए प्रसिद्ध हैं।)

रूप निरूप जाय नहिं बोली।
हलुका गरू जाय नहिं तोली।

(1) ईश्वर के लिए क., वह साकार है या निराकार, हलका है या भारी, कुछ कहा नहीं जा सकता।

(2) एक दूसरा अर्थ भी हो सकता है; अच्छे-बुरे सौंदर्य के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता है।

वह अपनी-अपनी रुचि पर निर्भर करता है।

रूप रोये, भाग खाये

रूपवान लड़की रोती है (ग़रीब घर में विवाह होने पर) भाग्यवान खाती है, (अच्छे घर में जाने पर), भाग्य ही बड़ी चीज है।

रूसल बहुरिया, उद्‌गारल आग, दोनों ठहरें बड़े हैं भाग

रूठी हुई स्त्री और जलती हुई आग अगर ठहर जाए, तो बड़े भाग्य समझिए। अर्थात स्त्री घर छोड़कर चली जाएगी और आग भी बिना फैले नहीं रहेगी।

रेवड़ी के फेर में आ गए

चक्कर में पड़ गए।

(रेवड़ी बहुत परिश्रम से बनती है। उसकी गाढ़ी चाशनी को कीली से लटकाकर खींचते हैं और लपेटते जाते हैं, जिससे उसमें कई बल पड़ जाते हैं।)

रो के पूछ ले, हंस के उड़ा दे

ऐसे धूर्त व्यक्ति के लिए क. जो सहानुभूति दिखाकर किसी के मन का भेद जान ले और बाद में उसकी हंसी उड़ाता फिरे।

रोग का घर खांसी, लड़ाई का घर हांसी

खांसी बीमारी का लक्षण है, बहुत हंसी-दिल्लगी करने से लड़ाई हो जाने का डर रहता है।

रोगिया भावे सो बैद बतावे

रोगी को जो अच्छा लगता है, वैद्य ने भी वही खाने को बतलाया है।

(रोगी कोई बड़ा आदमी हो तब क.।)

रोगी को रोगी मिला, कहा 'नीम पी'

जिसे जिस बात का अनुभव होता है, वही दूसरे को भी बतलाता है।

रोज़ कुआं खोदना और रोज़ पानी पीना

किसी ऐसे ग़रीब का कहना जो रोज़ मज़दूरी करके खाता है; कठिनाई में रहना।

रोज़गार और दुश्मन बार-बार नहीं मिलता

इनको पाकर छोड़ना नहीं चाहिए।

रोज़ रोज़ की दवा भी गिज़ा हो जाती है, (मु.)

जो दवा नित्य खाई जाए, वह फिर लाभ नहीं करती।

गिज़ा=खुराक़, भोजन।

रोज़ी का मारा दर दर रोवे, पूत का मारा बैठ के रोवे

(1) जिसकी रोज़ी छूट जाती है, वह घर-घर जाकर अपना दुखड़ा रोता है, पर जिसका पुत्र मर जाता है, वह किसके पास जाकर अपना दुख कहे?

रोज़े को गये, नमाज़ गले पड़ी, (मु.)

दे. गये थे रोज़ा छुड़ाने...।

मुसीबत हलकी करने गए, पर और बढ़ गई।

रोज़े खोर, खुदा का चोर, (मु.)

जो रोज़े में खाना खाता है, वह ईश्वर को धोखा देता है। *(रमज़ान के महीने में मुसलमान रोज़े रखते हैं, जिसमें वे दिन भर उपवास करते हैं।)*

रोटिया चाकर, घसहा घोड़ा, खाय बहुत चले थोड़ा, (पू.)

जिस नौकर को वेतन नहीं मिलता, और केवल खाने पर रखा जाता है, और जिस घोड़े को केवल घास खाने को मिलती है, दाना नहीं मिलता, वह बहुत कम काम करता है।

रोटी करो, सत्तू करो, भात बरोबर नाहीं।
मौसी करो, फूफी करो, माय बरोबर नाहीं।

चाहे रोटी बनाओ, चाहे सत्तू बनाओ, पर वह भात की बराबरी नहीं कर सकता; चाहे मौसी रखो, चाहे फूफी रखो, वह मां के तुल्य नहीं हो सकती।

रोटी कारन छोड़ कर, कुटम देस घरवार।
लाख कोस जाकर बसें, रोटी ढूंढ़नहार।

पेट के लिए सभी तरह के कष्ट सहने पड़ते हैं।

रोटी कारन जाल में, फंसे पखेरू आय।
रोटी कारन आदमी, लाखों पाप कमाय।

दे. ऊ.।

रोटी कारन लश्करी, रन में सीस कटाय।
रोटी कारन रैन दिन, गीत गवेसर गाय।

दे. ऊ.।

लश्करी=सिपाही।

गवेसर=गवैया।

रोटी कारन सीखते, विद्या हैं सब लोग।
जिस घर में रोटी नहीं, उस घर पूरा सोग।

ऊपर के चारों दोहे एक ही भाव को व्यक्त करते हैं, जो स्पष्ट है।

रोटी किस्मत की, हुक्का पांव दौड़ी का

रोटी भाग्य से ही मिलती है, पर हुक्का चलने-फिरने से मिल जाता है।

(किसी के यहां जाओ तो वह चिलम तमाखू से ख़ातिर करता है।)

रोटी की खाक़ झाड़ना

रोटी पर मक्खन लगाना। खुशामद करना। घी चुपड़ी खाना।

रोटी की जगह उपला खाना

बेहूदगी दिखाना।

रोटी को टोटी, पानी को बिल्ला, खसम को दादा

(1) फूहड़ औरत के लिए क.।

(2) जो जानबूझकर नासमझ बने उससे भी.।

रोटी को रोवे, खपड़ी को टोवे, (स्त्रि.)

बहुत ग़रीबी की हालत।

रोटी को रोवे, चूल्हे पीछे सोवे, (स्त्रि.)

दे. ऊ.।

(वास्तव में ये केवल तुकबंदियां हैं।)

रोटी खाइए शक्कर से, दुनिया ठगिए मक्कर से

जो लोग धूर्तता और खुशामद से दुनिया को ठगते हैं, वे ही मज़े में रहते हैं, सीधे और सच्चे दुख पाते हैं।

रोटी गई मुंह में, जात गई गुह में, (स्त्रि.)

पेट के लिए आदमी जात को भी छोड़ देता है।

विधर्मी बन जाते हैं।

गुह=गू, मल।

रोटी न कपड़ा, सेंत का भतार, (स्त्रि.)

खाना दे न कपड़ा, केवल नाम का भतार है।

जो दिखावटी प्रेम करे उसके लिए क.।

भतार=पति, स्वामी।

रोटी पड़ी जो पेट में, तो हो गया मस्त शरीर।
सूझन लागे जीव को, लाख जतन तदबीर।

पेट भरा होने पर ही आदमी को काम सूझते हैं।

रोटी पर का घी गिर पड़ा, मुझे रूखी ही भाती है

किसी वस्तु के हाथ से निकल जाने, गिर जाने या टूट-फूट जाने पर मन को समझाना; झेंप मिटाना।

रोटी पै रोटी रख कर खा

तुम्हें खूब रोटियां खाने को मिलें, खूब आराम से रहो। इस प्रकार का आशीर्वाद।

रोटी बिन भोंड़े लगें, सकल कुटुम के लोग।
रोटी ही को जान लो ठेठ मिलन का जोग।

स्पष्ट।

रोटी वहां खाओ तो पानी यहां पीओ

बहुत जल्दी आओ। विदेश से किसी को जल्दी बुलाना हो तब लिखते हैं। किसी ज़रूरी काम की ख़बर लाने के लिए किसी को भेजा जाए तो उससे भी क.।

रोटी ही का ब्याह है, रोटी ही सब काज।
सांच भलों ने है कहा 'सब से भला अनाज।'

स्पष्ट।

रोटी ही के कारने, दर दर मांगे भीख।
रोटी ही के वास्ते, करें कार सब ठीक।
स्पष्ट।

रोते क्यों हो? कहा, शकल ही ऐसी है
मनहूस या मुंहफुल्ले आदमी के लिए क.।

रोते गये मुए की ख़बर लाये
जब कोई आदमी बेमन से काम करे तब क.। भाव यह है कि वह अपनी इच्छा के विरुद्ध तो गया, और फिर लौटकर आया, तो बुरी ख़बर सुना दी, जिसमें फिर कभी न जाना पड़े।

रोते रिज़क है
रोने से ही नौकरी मिलती है। अथवा नौकरी में रोना पड़ता है।

रो दे, बनिया गुड़ देगा
स्त्रियां बच्चों से कहा करती हैं।

रोने को तो थी ही, इतने में आ गए भइया, (स्त्रि.)
मनचाहा काम करने के लिए बहाना मिल जाना। कोई औरत रुआंसी बैठी थी। पर सास के डर से रो नहीं पाती थी। इतने में भाई आ गया, तब खुलकर रोने लगी। *(ससुराल में मायके से जब कोई मिलने आता है, तो उसे देखकर स्त्री रो उठती है, यह कुछ रिवाज-सा है।)*

रोने से रोज़ी नहीं बढ़ती
रोज़ी परिश्रम से बढ़ती है।

रोया सो मुंह धोया
(1) प्रायः बच्चों से कहते हैं कि रोओगे तो तुम्हें फिर चीज नहीं मिलेगी।
(2) रोने से आदमी की शर्म मिट जाती है। यह अर्थ भी हो सकता है।

रोये से दान नहीं मिलता
ज़बर्दस्ती किसी से कुछ नहीं लिया जा सकता।

रो-रो के दान मांगते हो
दे. ऊ.।

रौ बंदे, ख़रीददार खुदा
चले चलो दोस्त, खुदा तुम्हारा माल खरीदेगा। अर्थात तुम्हारी मदद करेगा। (बूढ़ों का कहना।)

रौ में सब रवा है
धुन में जो काम किया जाए, वह सब ठीक है।

ल

लंका में से जो निकले, सो बावन गज का
किसी जगह के सभी लोग शरारती हों, तब क.।
लंगट पड़ले उधार के पाले, (भो.)
बेशर्म नंगे के पाले पड़ गया, अब अक्ल दुरुस्त हो जाएगी।
लंगड़ी कट्टो, आसमान में घोंसला
किसी का दिमाग़ न मिलना।
कट्टो=गिलहरी।
लंगड़ी घोड़ी, मसूर का दाना
अयोग्य पर खर्च करना। जो सम्मान योग्य नहीं, उसका सम्मान करना।
लंगड़े ने चोर पकड़ा, दौड़ियो मियां अंधे
बेतुकी बात के लिए क.।
लंगड़े-लूले गए बरात, दो-दो जूते दो-दो लात
निकम्मों की हर जगह यही हालत होती है।
लंगड़े-लूले गए बरात, भात की बिरियां खइलन लात
दे. ऊ.।
(दोनों ही बच्चों की तुकबंदियां हैं।)
लंगोटी में फाग खेलते हैं
(1) बिना पैसे कौड़ी के ही उत्सव मनाते है।
(2) चुपचाप ही कोई काम कर लेना चाहते हैं।
लंबे घूंघटवाली से डरिए
किसी ऐसे व्यक्ति का कहना जो स्त्रियों का सम्मान नहीं करता।
लकड़ी के बल बंदरी नाचे
भय दिखाने से ही काम होता है।
लकड़ी पर फ़क़ीर
लकड़ी लेकर ही वह फ़कीर बन गया है। कोरा दिखावा।
लकीर पर फ़कीर
पुराने ढर्रे पर चलने वाला।
पाठा.—लकीर के फ़कीर।
लग गई जूती उड़ गई खेह, फूल पान-सी हो गई देह
निर्लज्ज के लिए क.।
खेह=धूल।
लगा तो तीर, नहीं तुक्का ही सही
प्रयत्न करना चाहिए, कुछ-न-कुछ नतीजा तो निकलेगा ही।
लगा सो भगा
(1) शरीर क्षण-भंगुर है।
(2) जो काम आरंभ किया, वह समाप्त हुआ।
लगी में और लगती है
चोट में ही और चोट लगती है।
लगे आग तो बुझे जल से,
जल में लगे तो बुझे कहो कैसे?
अनहोनी का कोई उपाय नहीं।
लगे को बिड़ारिये ना, बिन लगे को हिलाइये ना
मित्र को त्यागना नहीं चाहिए, और अपरिचित को मुंह नहीं लगाना चाहिए।
हिलाना=अनुकूल बनाना, परचाना।
जैसे ढोरों को हिलाना, बच्चे को हिलाना।
लगे तोते भीतों बोलने
अर्थात बात फैल गई है।
लगे दम, मिटे ग़म
अफ़ीमचियों की उक्ति।
लगे रगड़ा, मिटे झगड़ा
भंगेड़ी कहा करते हैं।

लक्ष्मी बिन आदर कौन करे?
(1) अच्छी स्त्री के बिना आदर कौन कर सकता है?
(2) पैसे के बिना कोई नहीं पूछता।

लच्छमी से भेंट ना, दरिद्दर से बैर, (भौ.)
घर में पैसा नहीं, फिर भी दरिद्रता से लड़ते हैं। अर्थात और भी दरिद्र बने रहना चाहते हैं। कोई अच्छा काम न करके ऐसा काम करना जिससे कठिनाई और बढ़े।

लजाइल लड़िका ढोंढी टोहवे, (भो.)
शरमाया हुआ लड़का अपने पेट की ओर देखता है; उसे शौच जाना है, पर कह नहीं सकता।

लजाधुर बहुरिया, सराय में डेरा, (भौ.)
(1) बहू शर्मीली है और उसे सराय में ले जाकर टिका दिया गया। एक धर्म संकट की बात।
(2) अगर बहू स्वयं की सराय में जाकर टिकी, तो उसकी शर्म की बलिहारी।

लजाना बोलू मुंह बिदोरे, (पू.)
शरमाई बकरी मुंह बिदोरती है। कोई लज्जाशील स्त्री खुलकर हंस नहीं पाती; उसके लिए हंसी में कहा गया है।

लजालू मरे, ढिटाऊ जिये, चमारो गंगाजल पिये
शर्मदार मरता है, ढीठ और ओछे आदमी मजे करते हैं। (समय की उलटी रीति।)

लटा हाथी बिटौरे बराबर
बड़ा आदमी बिगड़ने पर भी छोटों से बड़ा ही रहता है। कहावत का साधारण अर्थ भी लिया जा सकता है कि दुबला हाथी कंडों के ढेर जितना दिखाई देता है।

लटे की जोय सारे गांव की सरहज, (पू.)
स्पष्ट।
ग़रीब को सब छेड़ते हैं।
सरहज=सलहज, साले की स्त्री, उससे मज़ाक करने का हक़ रहता है।

लटे पटे दिन काटिये
ग़रीबी के दिन आ जाएं, तो धैर्यपूर्वक काटना चाहिए।

लठ, मुंफट
जो बिना बिचारे बात करते हैं उनके लिए क.।

लड़कन के भगवा ना, बिलाई के गाती, (स्त्रि.)
घर के लोगों की ख़बर न लेकर दूसरों की सहायता करना।
भगवा=अंगोछी।
गाती=कुर्ती

लड़का जने बीवी और पट्टी बांधे मियां
किसी को दर्द, कोई रोता फिरे। प्रसव के बाद पेट में दर्द होने पर पट्टी बांधते हैं।

लड़का परकावे के न चाहीं, हरकावे के चाही, (पू.)
लड़के को डांटना चाहिए, लड़ियाना नहीं चाहिए।

लड़का रोवे खसम चिल्लाय, लड़कौरी मेहरिया फ़जीहत होय, (स्त्रि.)
गृहस्थी का झगड़ा।
लड़कौरी=जिसकी गोद में बच्चा हो।

लड़का रोवे बालों को, नाई रोवै मुड़ाई को
सब अपना स्वार्थ देखते हैं।
(लड़का इसलिए रो रहा है कि उसके बाल काट दिए गए।)

लड़की तेरा ब्याह कर दें, कहा 'मैं कैसे कहूं'?
कोई संकोच की बात बड़ों से कैसे कही जा सकती है?

लड़के के पांव पालने में पहचाने जाते हैं
होनहार लड़का बचपन में ही पहचान लिया जाता है।

लड़के को जब भेड़िया ले गया, तब टट्टी बांधी
काम बिगड़ जाने पर सचेत होना।

लड़के को मुंह लगाओ तो दाढ़ी खसोटे, कुत्ते को मुंह लगाओ तो मुंह चाटे
नादान या ओछे को मुंह नहीं लगाना चाहिए।

लड़कों का खेल, चिड़िया का मरना
अपने आराम के लिए दूसरे के कष्ट की परवाह न करना।

लड़कों में लड़का, बूढ़ों में बूढ़ा
सीधा आदमी। ऐसा आदमी जिसे सब चाहें।

लड़ते तो नहीं, मुए मारते हैं, (स्त्रि.)
किसी ज़नखे का कहना। लड़ाई में मारपीट तो होती ही है।

लड़तों के पीछे और भागतों के आगे
कायर के लिए क.।

लड़ाई और आग का बढ़ाना क्या?
बढ़ाना चाहो, तो बहुत जल्दी बढ़ सकती है।

लड़ाई का घर हांसी, और रोग का घर खांसी
स्पष्ट। दे. रोग का घर...।

लड़ाई में लड्डू नहीं बंटते हैं
मारपीट होती है, और वह अच्छी चीज नहीं।

लड़ाके के चार कान
झगड़ा करने के लिए दूसरे की बात बहुत जल्दी सुनता है।

लड़ें न भिड़ें, तरकस पहने फिरें
शेख़ीबाज को क.।

लड़ें सांड़, बारी का भुरकस
बड़ों की लड़ाई में छोटे पिट जाते हैं।
बारी=खेत के चारों ओर लगाई गई कंटीली झाड़ियों की आड़।

लड़े सिपाही, नाम हो सरदार का
काम अधीनस्थ कर्मचारी करते हैं, बड़ों को यश मिलता है।

'लड्डू' कहे मुंह मीठा नहीं होता
बातों से काम नहीं चलता।

लड्डू न तोड़ो, चूरा झार खाओ
मूल मत छुओ, ब्याज से काम चलाओ। पूंजी न विगाड़ो मुनाफ़ा खा लो।

लड्डू लड़े, चूरा झरे
दो बड़े आदमियों की लड़ाई में दूसरों को लाभ होता है।

लश्कर की अगाड़ी, और आंधी की पिछाड़ी
इनका दृश्य भयानक होता है।

लश्कर में ऊंट बदनाम
बदनाम आदमी के लिए क.।

लहू लगा शहीदों में मिले
झूठा यश चाहने वाले पर क.।

लाओ कुआं, मैं डूबूं
किसी बेशर्म से जब लोगों ने कुएं में डूब मरने को कहा तब वह जवाब देता है।

लाओ सीपी, खखोर भीती, मेरे सैयां पर इतनी बीती, (स्त्रि.)
लाओ सीपी, मैं दीवार खरोचकर साफ़ करूं, मुझे क्या पता था कि मेरे स्वामी का घर इस तरह बर्बाद हो रहा है। जब कोई व्यक्ति अपनी कारगुज़ारी दिखाने के लिए किसी काम में आवश्यकता से अधिक सावधानी बरते तब क.।
(कथा है कि कोई नव-विवाहिता स्त्री जब पहले-पहल ससुराल आई, तो उसने दीवार में भात लगा देखा, जो वहां विवाह के अवसर पर किसी दस्तूर को पूरा करते समय लगाया गया था। पर स्त्री ने यह समझा कि यह बेकार ही यहां लगा हुआ है। तब अपनी कर्मठता दिखाने के लिए उसने उक्त बात कही कि लाओ इस भात को मैं खरोच कर रखूं।)

लाख का घर ख़ाक में मिला दिया
सब सत्यानाश कर दिया।

लाख तदबीर एक तरफ़, और एक तक़दीर एक तरफ़
भाग्य के आगे तदबीर नहीं चलती।

लाग लगी तब लाज कहां
किसी से प्रेम हो जाने पर लाज-शर्म अलग रखी रहती है।

लाचार में विचार क्या?
मजबूरी में उचित-अनुचित का विचार नहीं किया जाता।

लाचारी पर्वत से भारी
मज़बूर होकर आदमी न जाने क्या-क्या करता है।

लाज की आंख जहाज से भारी
(1) शर्म के मारे जब कोई अपनी बात न कह पाए और आंख नीची करके रह जाए।
(2) संकोचवश किसी बात के लिए जब कोई इंकार न कर सके, तब भी कह सकते हैं।
(3) शर्मदार की बात टाली नहीं जा सकती, अथवा शर्मदार की सब इज्ज़त करते हैं, यह अर्थ भी हो सकता है।

लाठी के हाथ मालगुज़ारी बेबाक
लाठी के भय से काम जल्दी होते हैं।

लाठी मारे पानी जुदा नहीं होता
रिश्तेदारों में कितनी ही लड़ाई हो, पर उनके आपसी संबंध नहीं टूटते।

लाठी लिये पांव पर ख़ाक
लाठी लेकर चलने से पैर खराब होते ही हैं। लाठी के टेकने से धूल उड़ती है।

लाठी हाथ की, भाई साथ का
लाठी हाथ की ही काम आती है, भाई नज़दीक हो तब काम आता है।

लाड़ का नांव भनभार खातून
लाड़ का नाम 'लड़ाकू बिटिया'।
(प्रेम में आकर लोग बच्चों के अजीब-अजीब नाम रखते हैं उसी पर क.।)

लाड़ में आवे कुकड़ी, बल बल जावे कौवा
मुर्गी जब अपने नखरे दिखाती है, तो कौआ भी उस पर न्योछावर हो जाता है।

लाड़ला लड़का जुआरी और लाड़ली लड़की छिनाल
बहुत लाड़ करने से बच्चे बर्बाद होते हैं।

लात मारी झोंपड़ी चूल्हे मियां सलाम
जिसका रहने का कोई ठिकाना नहीं होता, उसके लिए क.।

लातों का देव बातों से नहीं मानता
नीच समझाने से नहीं मानता। अर्थात बिना पिटे सही रास्ते पर नहीं आता।

लाद दे, लदा दे, हांकनेवाला साथ दे

अनुचित मांग पर क.।

(जब किसी को कोई वस्तु दी जाए और वह कहे कि हमारे घर पहुंचा दीजिए, अथवा किसी को कोई लाभ का काम बताया जाए और वह कहे कि साथ चलकर करवा दीजिए। प्रायः तब क.।)

लाभे लोहा ढोइये बिन लाभ न ढोइय रुई

लाभ के काम में ही परिश्रम किया जाता है।

लायगा बारा तो खायेगी बारी, न लायगा बारा तो पड़ेगी ख़्वारी

पुरुष कमाकर लाएगा तो स्त्री खाएगी, नहीं तो झगड़ा होगा। गृहस्थी के बखेड़ों पर क.।

लाये दाम, बने काम

पैसे से ही सब काम होते हैं।

लारा लीरी का यार, कभी न उतरे पार

ज़रूरत से ज्यादा सोच-विचार करने वाले का काम कभी पूरा नहीं होता।

लाल किताब उठ बोली यों, तेली बैल लड़ाया क्यों?
खेल खिला कर किया मुसंड, बैल का बैल और डंड का डंड।

(क़िस्सा है कि किसी तेली के बैल ने एक काज़ी के बैल को मार डाला। इस पर काज़ी ने तेली से कहा कि तुम ने अपने बैल को खिला-पिलाकर मुसंड बनाया जिससे मेरा बैल मारा गया। अब तुम्हें मेरा बैल और जुर्माना दोनों देना होगा। बाद में जब काज़ी को पता चला कि उसके ही बैल ने तेली के बैल को मार डाला है, तो उसने यह कहकर मामले को खत्म कर दिया कि जानवर ही तो था, अर्थात बेचारा क्या जाने। भाव यह कि लोग दूसरों का ही दोष देखते हैं, अपना दोष हमेशा छिपाते हैं।)

लाल किताब से मतलब काज़ी से ही है।

लाल खां की चादर बड़ी होगी तो अपना बदन ढंकेगा, हमको क्या?

किसी के पास अगर बहुत धन है तो हमें उससे क्या लाभ?

वह उसी के काम आएगा, न कि हमारे।

लालच गुन घर विनास

बहुत लालच से घर बर्बाद हो जाता है।

लालच पशेमान है।

बहुत लालच से आदमी को शर्मिंदगी उठानी पड़ती है।

लालच बस परलोक नसाय

लालची को मुक्ति नहीं मिलती।

लालच बुरी बला है

लालच सबसे बड़ा दुर्गुण है।

लालची को जहान तंग

(1) लालची के लिए दुनिया में रहना मुश्किल हो जाता है।

(2) लालची को दुनिया बहुत छोटी मालूम होती है; वह चाहता है कि दुनिया की सब चीज उसे मिल जाए।

लाल, नीच निर्बचन कह, बांह देत सो बार।
भेड़ पूंछ भादों नदी, को गह उतरे पार।

नीच आदमी की सहायता पर कभी निर्भर नहीं करना चाहिए, भेड़ की पूंछ पकड़कर भला भादों की गहरी नदी कौन पार उतरना चाहेगा?

लाल प्यारा है तो उसका ख़्याल भी प्यारा है

लड़का अगर प्यारा है, तो उसकी हर बात मान ली जाती है।

लाल बुझक्कड़ बूझियां और न बूझा कोय।
कड़ी बरंगा टार के ऊपर ही को लेय।

मूर्खतापूर्ण सलाह के लिए।

(कथा है कि किसी जगह एक लड़का अपने दोनों हाथ खंभे के दोनों ओर फैलाए खड़ा था। उसी समय उसके बाप ने उसके दोनों हाथों में भुने चने दे दिए। अब लोगों के सामने यह समस्या उपस्थित हो गई कि किस तरह लड़का चना नीचे गिराए बगैर अपने हाथ खंभे से अलग करे। उसी समय लाल बुझक्कड़ वहां पहुंच गए। उन्होंने सलाह दी कि खंभे पर से कड़ी बरगा हटाकर लड़के को निकाल लिया जाए, इसके सिवा और कोई उपाय नहीं।)

लाल बुझक्कड़ बूझियां और न बूझा कोय।
पैरों चक्की बांध के हिरना कूदा होय।

दे. ऊ.।

(किसी गांव में होकर एक हाथी निकल गया था, जिससे उसके पैरों के चिह्न धूल में बन गए थे। गांव वाले उन लंबे-चौड़े गोल चिह्नों को देखकर चकित हुए। अपनी शंका दूर करने के लिए उन्होंने लाल बुझक्कड़ को बुलाया। उन चिह्नों को देखकर उन्होंने बताया कि भयभीत होने की कोई बात नहीं, यह तो हिरन अपने पैरों में चक्की बांधकर कूद गया है।

ये लाल बुझक्कड़ हिन्दी लोक साहित्य में एक ऐसे सयाने आदमी के प्रतीक बने हुए हैं, जो अपनी विलक्षण बुद्धि से काम लेकर ऐन मौके पर लोगों की सहायता करते हैं और उनकी शंकाओं का समाधान भी किया करते हैं। जन प्रवाद है कि ये बीरबल के पुत्र थे और उनका असली नाम

लाल था।)

लाला का घोड़ा, खाय बहुत चले थोड़ा

इसलिए कि लाला जी उसे रखना नहीं जानते।

बड़े आदमियों के नौकर चाकरों पर व्यंग्य।

लालों के लाल बन रहे हैं

बड़े आदमी के पुत्र से व्यंग्य में क.।

लिखतम के आगे बकतम नहीं चलती

लिखित के आगे ज़बानी (बात या प्रमाण) की कोई वुक़त नहीं होती।

लिखना आवे नहीं, मिटावें दोनों हाथ

नालायक के लिए क.।

लिखे ईसा, पढ़े मूसा, (मु.)

मूसा ही ईसा के लिखे को पढ़ सकते हैं।

बुरी हस्तलिपि के लिए क.।

लिखे न पढ़े, दूध मारे कढ़े

पढ़ा-लिखा कुछ नहीं, बस, मालटाल उड़ाते रहे।

व्यंग्य में मूर्ख लड़के से क.।

लिखे न पढ़े, नाम मुहम्मद फ़ाज़िल

मूर्ख के लिए क.।

लिखे मूसा, पढ़े खुदा, (मु.)

(1) खुदा ही मूसा के लिखे को पढ़ सकता है।

(2) ऐसा ख़राब लिखा है कि जिसने लिखा, उसके सिवा कोई आकर पढ़ नहीं सकता। मूसा और खुदा में श्लेष है।

मूसा=(1) पैगंबर। (2) बाल जैसा महीन (मू+सा)।

खुदा=(1) ईश्वर। (2) खुद आकर (खुद+आ)।

लिहाज़ की आंख जहाज़ से भारी, (स्त्रि.)

दे. लाज की आंख। संकोच की वजह से जब कोई किसी से कुछ कह न पाए, अथवा किसी वस्तु के लिए इंकार न कर पाए।

लीक लीक गाड़ी चले, लीकहिं चले कपूत।

लीक छोड़ि तीनहि चलें, शायर, सूर, सपूत।

गाड़ी ही बंधी हुई लकीर (मार्ग) पर चलती है, या फिर अकर्मण्य लड़का चलता है। कवि, वीर और पुरुषार्थी लड़का लकीर छोड़कर चलते हैं, अर्थात अपना नया मार्ग बनाते हैं।

लीप बहू दिवाली आई, पोत बहू दिवाली आई,
छेद-छिदाली माथ मारी, क्यों सासू यही दिवाली आई?

सास ने दिवाली के अवसर पर बहू से कसकर काम लिया, उसके बाद किसी बात पर नाराज़ होकर लीपने से बचा हुआ गोबर उठाकर उसके सिर से मार दिया, तब बहू ने ताना मारकर उक्त बात कही कि क्यों सासू जी, क्या दिवाली के उपलक्ष्य में यही पुरस्कार तुमने मुझे दिया?

लीपूं ओटा, मरे मोटा

दे ओटा देव ! कोई मोटा (धनी) आदमी मरे, तो मैं तुम्हें पूजा चढ़ाऊंगा।

(किसी महापात्र ब्राह्मण का कहना। महापात्रों के घर में 'ओटा' नाम के देवता की एक प्रतिमा रहती है और वे सदैव उसकी पूजा इसलिए किया करते हैं कि किसी धनी की मृत्यु हो जाए और उन्हें बहुत-सा धन मिले।)

लुगाई रहे तो आपसे, नहीं जाय सगे बाप से

दे. औरत रहे तो...।

लुटाया बिगाना माल, बंदी का दिल दरियाव, (स्त्रि.)

जो नौकर अपने मालिक का पैसा बेरहमी से ख़र्च करते हैं, उनके लिए क.। कृतघ्न या नमक हराम के लिए क.।

लुहार की कूंची, कभी आग में, कभी पानी में

एक-सी स्थिति न रहना।

लूट का मूसल भी बहुत

मुफ़्त का जो मिले सो अच्छा।

लूट कोयलों की मार बर्छी की

कोयलों की लूट में बर्छी का घाव।

परिश्रम बहुत, लाभ थोड़ा।

लूट में चरखा नफ़ा।

दे. लूट का मूसल...।

लूट लाए, कूट खाया

सफल चोर या ठग के लिए क.।

लूर न ऊर, चला मियां जगदीशपुर, (पू.)

अक्ल न शऊर और चले जगदीशपुर।

लेके दिया, कमा के खाया, ऐसी तैसी जग में आया

जो दूसरों का पैसा लेकर न दे उसके लिए क.।

लेता मरे कि देता!

जो अपना कर्ज़ नहीं चुकाना चाहता, उसका कथन कि देखें मुझसे कौन लेता है और देता है तो कौन?

ले दे आटा कठौती में

किसी चीज को घुमा फिराकर अपने पास ही रख लेना, देने का केवल नाम करना।

लेना एक न देना दो

(1) न किसी से एक लो न दो देना पड़े।

(2) न हमें किसी से कुछ लेना है, न देना है, किसी से कुछ

सरोकार नहीं।

लेना देना काम डोम दाढ़ियों का, मुहब्बत अजब चीज है

जो लेकर नहीं देते उन पर व्यंग्य।

लेना देना साढ़े बाईस

(1) सौदा पक्का करके भी फिर न खरीदना।

(2) कोरी बात करना, खरीदना कुछ नहीं।

लेने के देने पड़ गए

(1) लाभ की जगह उल्टी हानि हो गई।

(2) उल्टे मुसीबत में पड़ गए।

लेने देने के मुंह में ख़ाक, मुहब्बत बड़ी चीज है

(1) किसी का लेकर देने के वक़्त टरकाना।

(2) कंजूस की उक्ति भी हो सकती है।

लेना न देना, काटे न मसले

व्यर्थ समय नष्ट करना, न सौदा करना, न खरीदना।

लेना न देना 'गाड़ी भरे चना'

कुछ खरीदता है नहीं, फिर भी कहते हैं 'एक गाड़ी चना तोल दो।' व्यर्थ की बात करना।

लेना न देना, झूठों मुंह छुटव्वल

कोरी बात करना, खरीदना कुछ नहीं।

लेना न देना, बातों का जमा खर्च

दे. ऊ.।

(ऊपर की चारों कहावतों का लगभग एक-सा भाव है और दूकानदार उस समय उनका प्रयोग करते हैं, जब कोई ग्राहक बातचीत करके भी सौदा नहीं खरीदता।)

ले लिया पल्ला और बीनन लागी सिल्ला, (कृ.)

जो बिना पूछे किसी चीज में हाथ लगाता है या कोई काम करता है, उससे क.।

(फसल कट जाने के बाद खेत में अनाज की जो फलियां या बालें पड़ी रहती हैं, उन्हें सिला कहते हैं। खेत कटते ही ग़रीब मज़दूर उन्हें बीनने को दौड़ पड़ते हैं; तब मालिक उक्त प्रकार की बात कहकर प्रायः उन्हें मना करता है।)

ले लुंगड़ी, चल गुदड़ी, (स्त्रि.)

पुराने कपड़े उठा और जा गुदड़ी में। जो तेरा काम है सो कर।

लोमड़ी के शिकार को जाय, तो शेर का सामान कर लीजिए

किसी छोटी सी-मुसीबत का सामना करने के लिए भी इस तरह की पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए, जिसमें मौके पर अगर कोई नई बात सामने आ जाए, तो उसने भी निपटा जा सके।

(लड़ते वक़्त एक स्त्री दूसरी से कह रही है।)

लोहा करे अपनी बड़ाई, हम भी हैं महादेव के भाई

जब कोई फालतू आदमी किसी बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति से अपना संबंध जोड़ता फिरे, तब क.।

(यहां महादेव के त्रिशूल से मतलब है, जिसकी स्वयं भी पूजा होती है।)

लोहा जाने लुहार जाने, धौंकने वाले की बला जाने अपने काम से काम रखना।

(धौंकनी चलाने के लिए लुहार प्रायः मज़दूर नौकर रखते हैं। कहावत का भाव यह है कि लोहा गरम हुआ है या नहीं, अथवा कैसा क्या गरम होगा यह देखना तो लुहार का काम है और उसी को उससे मतलब भी है, धौंकने वाले को उससे क्या? उसे तो जो काम सौंपा गया सो किए जा रहा है।)

लोहे की मंडी में मार ही मार

लोहे की मंडी में तो दनादन हथौड़े ही चलते नज़र आते हैं।

लौंडी बन कर कमाना और बीवी बन कर खाना

परिश्रम करके कमाओ, और इज्ज़त से खाओ।

व

वकीलों का हाथ पराई जेब में

वकील हमेशा किसी-न-किसी की जेब टटोलते रहते हैं।

वक़्त का गुलाम और वक़्त ही का बादशाह

(1) जब जैसा वक़्त तब तैसा बन जाना; अवसरवादी। अथवा (2) वक़्त ही कभी किसी को गुलाम और कभी बादशाह बनाता है।

वक़्त का रोना बेवक़्त के हंसने से बेहतर है

हर काम अपने समय पर ही अच्छा लगता है।

वक़्त की ख़ूबी है

समय का प्रभाव है। व्यंग्य में क.।

वक्त को गनीमत जानिये

समय का सदुपयोग कर लेना चाहिए।

वक्त निकल जाता है, बात रह जाती है

जब कोई किसी की सहायता करने से इंकार कर दे, या किसी की शिकायत दूर न करे, तब क.।

वक़्त पड़े पर जानिए, को बैरी, को मीत?

विपद् पड़ने पर ही शत्रु-मित्र की पहचान होती है।

वक़्त पर कुछ बन नहीं आती

विपत्ति में अक्ल काम नहीं करती।

वक़्त पर कोई काम नहीं आता

ज़रूरत पड़ने पर किसी से सहायता नहीं मिलती।

वक़्त पर गधे को बाप बनाते हैं

अपने मतलब के लिए छोटे आदमी की खुशामद करनी पड़ती है।

वक़्त पर गांठ का पैसा ही काम आता है।

ज़रूरत पर कोई देता नहीं, इसलिए।

वक़्त पर जो हो जाय सो ठीक है

न हो सके, तो फिर परेशान नहीं होना चाहिए।

वक़्त पर भाग जाना मर्दानगी नहीं है

जब लड़ना चाहिए, तब भाग जाना बहादुरी नहीं।

वक़्त पर सब कुछ करना पड़ता है।

छोटे-से-छोटा काम भी समय पड़ने पर करना पड़ता है।

वक़्त पीरी शबाब की बातें, ऐसी हैं जैसे ख्वाब की बातें

बुढ़ापे में जवानी की बातें ऐसी जान पड़ती हैं, मानो स्वप्न की बातें हों।

वक़्त-वक़्त की रागनी है

(1) समय-समय की बात है।

(2) हर काम का एक समय होता है।

वक्त सब कुछ करा लेता है।

समय पड़ने पर सब करना पड़ता है।

वज़ीरे चुनी शहर यारे चुनां, (फा.)

जैसा वज़ीर होता है वैसा ही बादशाह।

वलायत में क्या गधे नहीं होते?

मूर्खों की कहीं कमी नहीं होती। अच्छे बुरे सब जगह होते हैं।

वली का बेटा शैतान

संत के घर में बुरा लड़का।

वली के घर शैतान

दे. ऊ.।

वली को वली ही पहचानता है

संत की क़द्र संत ही करता है।

वली सब का अल्लाह, हम तो रखवाली हैं

मालिक सब (चीज) का ईश्वर है, हम तो रखवाली करने वाले हैं।

वसीला बड़ी चीज है

किसी कंजूस का क.।

स्पष्ट।

वसीला=सहायता। ज़रिया। काम का रास्ता। हीला।

वसीले बिना रोज़गार नहीं मिलता

बिना हीले या ज़रिये रोज़ी नहीं मिलती।

वह अपने दम से अच्छा है

वह स्वयं अच्छा है (पर उसका परिवार नहीं)।

वह कमली ही जाती रही, जिसमें तिल बंधे थे

अवसर निकल जाने पर जब कोई किसी चीज की मांग करे, तब क.।

बहू की विदा के समय उसके दुपट्टे के छोर में तिल-चावल बांध देने का रिवाज है। उसी से कहावत बनी।

वह कीमियागर कैसा, जो मांगे पैसा

स्पष्ट।

(प्राचीन काल में यह शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता था; जो पारा, सीसा आदि धातुओं से सोना बनाने की फ़िक्र में रहते थे। उसी से कहावत का भाव यह है कि वह रसायन शास्त्री ही कैसा, जिसे पैसे की ज़रूरत पड़े, वह तो स्वयं सोना वना सकता है।)

कीमियागर=रसायन विद्या जानने वाला।

वह कुछ नाहर तो नहीं, जो खा जायेगा

जब कोई किसी के सामने जाने से डरे, तो उसका भय छुड़ाने को क.।

वह कौन-सी किशमिश है, जिसमें तिनका नहीं

कुछ-न-कुछ दोष हर चीज में होता है।

वह कौन-सी टपरी, जो हम से छपरी

वह कौन-सा घर है जो हमसे छिपा है? तात्पर्य यह कि तुम हमें क्या सिखाते हो; हम सब जानते हैं।

वह क्या मेरी खाला की खलबच्ची है?

अर्थात उससे मुझे क्या मतलब? वह मेरी कोई नहीं।

वह गुड़ नहीं जो च्यूंटियां खायं

हम तुम्हारी बातों में नहीं आने के। यहां तुम्हें कुछ नहीं मिलने का। प्रायः कंजूस के लिए क.।

वह गुड़ नहीं जो मक्खी बैठे

दे. ऊ.।

वह डूबें मझधार, जिन पर भारी बोझ

दुष्कर्मी के लिए क.।

वह तिरिया तो नित सुख पावे, जाका पुर खाव को चावे

जिस स्त्री का पति, उसे चाहता है, वह हमेशा सुख पाती है।

वह तिरिया पत नांह गंवावे; जाकी बर बर आंख लजावे

जिस स्त्री की आंखों में लज्जा होती है, उसका धर्म नष्ट नहीं होता।

बर बर=बार बार।

वह तो शैतान से भी एक दर्जा ज्यादा है

वहुत शैतान है।

वह दफ़्तर गाव खुर्द हो गए

उन दफ्तरों को गायों ने चर लिया। अर्थात वहां अव कुछ नहीं, केवल घास पैदा होती है।

वह दरबा ही जल गया

वह जगह ही अव नष्ट हो गई, वहां से अब कोई आशा नहीं।

दरबा=मुर्गो या क़बूतरों के रहने का खानेदार घर।

वह दिन गये जो खलील खां फाख्ता मारते थे

वे मज़ेमौज़ के दिन निकल गए। अब तो फटेहाल हैं।

वह दिन गए जो भैंस पकौड़े हगती थी

अव न वैसी आमदनी है, और न वैसा खर्च किया जा सकता है।

वह दिन डुब्बे, जब घोड़ी चढ़े कुब्बे

(1) वह दिन निकल गए, जब कुबड़ा घोड़ी पर चढ़ता था; अर्थात अब पहले जैसी धांधलीवाजी नहीं रही, या अव वैसा सुयोग नहीं मिलने का।

(2) अभिशाप के रूप में भी कहावत का प्रयोग हो सकता है कि वह दिन ग़ारत हो, जब कुबड़ा भी घोड़ी पर चढ़े।

वह नारी भी दिन दिन रोवे,
जाका पुरख निखट्टू होवे।

जिस स्त्री का पुरुप अकर्मण्य होता है, वह हमेशा रोती है।

वह पानी मुलतान गया

(1) अव तो वह बात बहुत दूर चली गई।

(2) तुम जो चाहते थे, वह अब नहीं होने का।

(कथा है कि एक समय गुरु गोरखनाथ भक्त रैदास से मिलने आए। प्यास लगने पर उन्होंने पानी मांगा, जो रैदास जी ने उनके खप्पर में भर दिया। जब उन्हें ध्यान आया कि रैदास तो जाति के चमार हैं, तो उन्होंने पानी नहीं पिया और उसे खप्पर में ही रहने दिया। वहां से वे कबीर से मिलने गए। जब कबीर ने पूछा कि खप्पर में क्या है, तो उन्होंने असली किस्सा बता दिया। कबीर की लड़की कमाली, जो उस समय वहां बैठी हुई थी और रैदास की ख्याति से भली-भांति परिचित थी, उस पानी को पी गई। पानी पीते ही उसे दिव्य ज्ञान उत्पन्न हो गया। ऐसा

आश्चर्यजनक परिवर्तन होते देख गोरखनाथ को होश हुआ और फिर रैदास जी के पास आकर उन्होंने पानी मांगा। इसी बीच में कमाली अपने पति के साथ मुलतान चली गई। रैदास ने अपने योगबल से सब हाल जानकर गोरखनाथ जी से कहा—प्यावत थे जब पिया नहीं, तब तुमने बहु अभिमान किया, भूला योगी फिरे दिवाना, वह पानी मुलतान गया।)

वह पुरखा इक दिन पछतावे, दया, धरम जो जी से ताहवे
जो मुनष्य दया धर्म हृदय से त्याग देता है, उसे एक दिन पछताना पड़ता है।

वह पुरखा तो फले और फूले; जो दाता को मूल न भूले
जो ईश्वर को (अथवा अपने उपकारी को) नहीं भूलता, वह सदैव फलता-फूलता है।

वह पुरखा दिन-दिन पछतावे, जो आमद से दुगना खावे
जो आमदनी से खर्च अधिक करता है, वह हमेशा पछताता है।

वह पुरखा भी अति दुख पावे, सीख बड़ों से जो फिर जावे
जो वड़े-बूढ़ों का कहना नहीं मानता, वह भी वहुत दुख पाता है।

वह पुरखा भी मूल है खोटा, पावे लाभ बतावे टोटा
वह मनुष्य भी विल्कुल बुरा है, जो लाभ होने पर भी हानि वतावे।

वह पुरखा ले निपट भलाई, जिसको होव खौफ़ इलाही
जो ईश्वर से डरता है, उसकी हमेशा प्रशंसा होती है।

वह बात कोसों गई
वह मौक़ा दूर निकल गया, अब नहीं आने का।

वह बिल्ली पूज के चलते हैं
अर्थात शकुन-अपशकुन बहुत मानते हैं।
(हिंदुओं में बिल्ली को पवित्र माना जाता है, और उसे मारते नहीं।)

वह बूंद मुलतान गई
अब तो वह मौका निकल गया।
दे.—वह पानी मुलतान गया...।
(वाक्य का यह साधारण अर्थ भी हो सकता है कि वर्षा की वह बूंद जो पंजाब की पांच नदियों में से किसी एक में गिरी मुलतान पहुंच गई है और अब हाथ नहीं आने की।)

वह बूंद बलायत गई
दे. ऊ.।

वह भला मानस कैसा, जिसके पास नहीं पैसा
पैसे से ही भला मानस बनता है।

वह भी ऐसे गये जैसे गधे के सिर से सींग
चुपचाप उठकर चले जाने पर क.। पता ही नहीं चला कब गए।
(गधे के सिर पर सींगों का निशान भी नहीं होता। कुछ जातियों के लोगों में यह विश्वास प्रचलित है कि पहले गधों के सींग और घोड़ों के पर होते थे। संभव है कहावत उसी आधार पर बनी हो।)

वह भी कन्या जिसके अबलख बाल
जिसके बाल सफ़ेद हो जाएं, क्या वह भी कन्या ही है। किसी अनहोनी या आश्चर्यजनक बात के लिए क.।
(हिंदुओं में इतनी बड़ी उम्र तक स्त्री अनब्याही नहीं रह सकती।)
अबलख=आधा सफ़ेद आधा काला।

वह भी कुछ ऐसा तो न था
इतना बुरा नहीं था; (जितना सुनने में आ रहा है।)

वहम की दारू तो लुकमान के पास भी नहीं
शक्की को कोई नहीं समझा सकता।
दारू=दवा।
लुकमान=अरब के प्रसिद्ध हकीम ओर दार्शनिक। मुसलमानों में उनका वही स्थान है, जो हिंदुओं में धनवंतरि का।

वहम की दारू ही नहीं
स्पष्ट। दे. ऊ.।

वह मढ़ी ही जाती रही जहां अतीत रहते थे
(1) वह आदमी ही अव नहीं अथवा
(2) वह समय ही अव जाता रहा। ऐसे मृत पुरुष की याद में कहते हैं, जो अपने जीवन काल में वहुत उदार रहा हो, और जिसके निकट अनेक लोगों को बरावर आश्रय मिलता रहता हो।

वह मर गये, हमें मरना है
हम व्यर्थ झूठ नहीं बोलेंगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क.।

वह मानस तो नित सुख पावे; सीख बड़ों की जो चित लावे
जो बड़े-बूढ़ों का कहना मानता है, वह हमेशा सुखी रहता है।

वह राजा मरता भला, जिसमें न्याव न होय।
मरी भली वह इस्तरी, लाज न राखे जोय।
वह राजा मर जाए सो अच्छा, जो न्याय न करे;
वह स्त्री भी मर जाए सो अच्छा, जो अपनी और दूसरों की

लज्जा न रखे।

वह शराब पानी की तरह पीता है, (मु.)

बहुत शराबी है।

वह शैतान से ज्यादा मशहूर है, (मु.)

उसे हर कोई जानता है।

वह समय ही नहीं रहे

बीते दिनों की याद में क.।

वहां उसके घर बसंत है, यहां मेरे घर बसंत है

इसलिए मैं क्यों उसके यहां जाऊं?

वहां तलक हंसिये जो न रोइये

हंसी-दिल्लगी या ख़ुशी को सीमा के भीतर ही रखना चाहिए।

वहां फ़रिश्तों के भी पर जलते हैं

दे.—यहां फरिश्तों के...।

वही अपना जो अपने काम आवे

जो वक़्त पर मदद करे, वही अपना।

वही ढाक के तीन पात

अर्थात (आर्थिक) अवस्था ज्यों की त्यों है, पहले से बिल्कुल नहीं सुधरी।

(ढाक की एक टहनी में तीन ही पत्ते होते हैं।)

वही तीन बीसी, वही साठ, वही चारपाई वही खाट

बात वही है, कोई अंतर नहीं, ऐसा भाव प्रकट करने को क.।

वही फूल जो महेश चढ़े

जिस वस्तु का सदुपयोग हो, उसी का होना सार्थक है।

वही बड़ा जग बीच है, जिन पूजा करतार।
बिन पूजा तो मनुष से, आछे माटी राख।

संसार में वही बड़ा है, जो ईश्वर की पूजा करता है। जो नहीं करता, उस मनुष्य से तो मिट्टी और राख अच्छी।

वही बड़ा है जगत में, जिन करनी कै तान।
कर लीना है आपना महाराज भगवान।

संसार में वही बड़ा है जिसने अपने सत्कर्मों के द्वारा परमपिता ईश्वर को अपना बना लिया है।

वही भला है मेरे लेखे, हक नाहक को जो देखे

जिसे कर्तव्य अकर्तव्य का ज्ञान न हो, मेरी समझ में वही मनुष्य अच्छा है।

वही मन, वही चालीस सेर

एक ही बात। किसी तरह कहो।

(एक मन में चालीस सेर होते हैं।)

वही मनुष धनवंत है, वही मनुष बलवंत।
जो साईं के नाम पर, बैठा होय निचंत।

संतवाणी।

[वही मनुष्य (सच्चा) धनवान और वही (सच्चा) बलवान है जो भगवान के नाम पर निश्चिंत बैठा हो।]

वही मनुष तो दे सके, राजन को सिख ज्ञान।
जो ना राखे लोभ धन, और धरे हाथ पर जान।

वही मनुष्य राजाओं को ज्ञान और उपदेश दे सकता है, जिसे धन का लोभ न हो और जो प्राणों को हथेली पर लिए रहे, अर्थात निडर हो।

वही रहेगा चैन में, लाभ किया जिन दूर।
साईं का कर आसरा, राखा जी भरपूर।

जिसने लोभ को दूर कर दिया है, और जो पूरी तरह भगवान पर निर्भर है, वही सुख से रहेगा।

वही रांड़ की रांड़, वही बाबा पीटी

दोनों एक सी गालियां हैं। कुछ भी कहो; बात वही है। रांड़ की रांड़ एक बुरी गाली है; और बाबा पीटी, अर्थात पिता के द्वारा पीटी गई, यह भी गाली है।

वही राग गाना

वही दुखड़ा रोना। वही बात बार-बार कहना।

वाकी गति वाही जाने

(1) उसके मन की वही जाने।

(2) ईश्वर के लिए भी क. कि उसकी लीला वही जान सकता है।

वाको आछा मत कहे, जो तेरे धोरे आय।
करे बुराई और की, अपने तईं बधाय।

उस मनुष्य को अच्छा नहीं समझना चाहिए, जो तुम्हारे पास आकर अपनी तो बड़ाई करे, और दूसरों के दोष दिखाए।

धोरे=द्वारे, दरवाजे पर, घर पर।

वाको सीख न दीजिये, जो हो मूढ़ गंवार।
गोली मठ पर डाल दो, पकड़े नाहिं करार।

मूर्ख और गंवार को उपदेश देना व्यर्थ है। मंदिर के गुंबद पर अगर गोली डाल दो, तो वह कहीं रुकेगी नहीं; *(लुढ़क कर नीचे आ जाएगी।)*

करार=किनारा।

वा तिरिया तो एक दिन भाजै; जाकी आंख कधीं ना लाजै

वह स्त्री, जिसकी आंख में शर्म नहीं होती, कभी-न-कभी भाग जाती है।

वा तिरिया संग बैठ न भाई; जा को जगत कहे हरजाई
जिस स्त्री को दुनिया व्यभिचारिणी कहे, उसके पास नहीं बैठना चाहिए।

वादाखिलाफ़ी बुरी बात है
स्पष्ट।
वादाखिलाफ़ी=कथन के विरुद्ध काम करना। वचन देकर पूरा न करना।

या दिन देखे जायेंगे, भले बुरे सब कार।
जा दिन लेखा लेगा, वो कादिर करतार।
परमपिता परमात्मा जिस दिन हिसाब लेगा, उस दिन सबके भले-बुरे काम देखे जाएंगे।
फकीरों की उक्ति।

वा नर से मत मिल रे मीता, जो कभी मिरग कभी हो चीता
ऐसे मित्र से कभी मित्रता नहीं करनी चाहिए जो कभी तो हिरन और कभी चीता बन जाए, अर्थात कभी तो बहुत सीधा जान पड़े और कभी धूर्त बन जाए।

वा नारी को मत कूढ़ बताव, जासूं दिन दिन लाभा पाव
जिस स्त्री से तुम्हें सुख मिल रहा हो, उसे कूढ़ (बेवकूफ़) नहीं समझना चाहिए।

वा पुरखा की दिन दिन ख़्वारी; जाकी तिरिया हो कलहारी
जिसकी स्त्री कलहकारिणी (झगड़ालू) होती है, उसकी दिन-प्रति-दिन खराबी आती है।

वा पुरखा को जगत सराहवे; जो हरी नाम के बल बल जावे
उस मनुष्य की संसार प्रशंसा करता है, जो अपने को भगवान के नाम पर न्योछावर कर देता है।

वार करत पिय जात है, फेर न आवत हाथ।
वेग चरन पिय के गहो, जो भूल न छूटे साथ।
विलंब करने से पिय चले जाएंगे, फिर हाथ नहीं आएंगे, जल्दी उनके चरण पकड़ो, जिसमें फिर बिल्कुल साथ न छूटे।
पिय=(1) प्रियतम। ईश्वर से अभिप्राय है।

वार कहें उत पार है, पार कहें इत वार।
पकड़ किनारा बैठ रहो, यही पार यही वार।
इस पार को उस पार कहते हैं, और उस पार को इस पार। (सबसे अच्छा तो यह है कि) किनारा पकड़कर बैठ रहो, और उसी को इस पार, उस पार समझ लो। तात्पर्य यह कि शब्दों के भ्रम में मत पड़ो। एक दृढ़ विचार के वशीभूत होकर काम करो।

वार न पूर, अधम मांनैया, खेवा कहे कि 'उतरो भैया'
न तो यह किनारा न वह किनारा, मंझधार में नाव है, और मल्लाह कहता है कि 'उतरो भाई।' चक्कर में पड़ना।

बार बार पानी पीते हैं, (स्त्रि.)
बार-बार न्योछावर हो रहे हैं।
(कुछ जातियों में यह प्रथा है कि ब्याह के अवसर पर वर के सिर पर पानी घुमाकर मां पीती है। इसे पानी वारना कहते हैं। उसी से कहावत बनी। भाव यह है कि बड़े खुश हैं।)

वार वाले कहें पार वाले अच्छे, पार वाले कहें वार वाले अच्छे
हर आदमी दूसरे को अपनी अपेक्षा अधिक सुखी समझता है, अपनी अवस्था से किसी को संतोष नहीं मिलता।

वारी गई, फेरी गई, जलवे के वक़्त टल गई, (स्त्रि.)
ऊपरी लाड़-प्यार दिखाना, पर ज़रूरत के वक़्त खिसक जाना।

वारी फेरी जब गई, जब नेव धराई; (और) मुंह भीड़े बातें करे जब तारवों आई, बाप मुडेरी उतरा, जम दिये दिखाई
मकान बनने का रूपक है, जो स्त्री पर घटित किया गया है। जब नींव रखी जा रही थी (अर्थात जब ब्याह हुआ) तब बड़ी खुशामद करती रही, (कारीगर की) मकान बनने में कोई बाधा न आ जाए, अर्थात पति नाराज़ न हो जाए। जब मकान बनकर मेहराब तक पहुंचा (अर्थात जब अधेड़ हो गई) तो मुंह मोड़कर बातें करने लगी, और जब मकान मुंडेर तक पहुंच गया तो कारीगर यम की तरह दिखाई देने लगा, अर्थात पति जब बूढ़ा हो गया तो उसकी बिल्कुल उपेक्षा करने लगी।

वारी सोवे उठे सवेरे; वाको नांह दलिद्दर घेरे
जो देर से सोता और जल्दी उठता है उसे कभी दारिद्रय नहीं घेरता।

वाह पीर अलिया, पकाई थी खीर, हो गया दलिया
अच्छा काम करने गए, पर बुरा हो गया।
(अलिया एक पहुंचे हुए फ़कीर थे, जो हांसी के निवासी थे। एक बार जब वे भीख मांगते हुए घूम रहे थे, तो उन्होंने एक औरत को कुछ पकाते हुए देखा। उन्होंने पूछा 'क्या पकाती है?' औरत ने जवाब दिया 'दलिया'। जब कि वास्तव में वह खीर पका रही थी। 'अच्छा, ऐसा ही सही।' कहकर अलिया साहब चल दिए। उनके जाने के बाद औरत ने बर्तन खोलकर देखा, तो उसमें खीर की जगह दलिया मिला। तब उसने कहावत के उपर्युक्त शब्द कहे।)

वाह पुरखा, तेरी चतुराई; चून बेच कर गाजर खाई

घोर मूर्खता।

(गाजर एक बहुत सस्ती चीज है और उसे ढोर ही खाते हैं। आटे के बदले में उसे लेना और खाना एक अहमकपन है। पुरखा का अर्थ सयाना है जो व्यंग्य में प्रयुक्त हुआ है।)

वाह पुरखा, तेरी चतुराई, मांगा गुड़च, लादी खटाई

कुछ करने को कहा और किया कुछ।

वाह पुरखा, मेरे चातुर ज्ञानी; मांगी आग, उठा लाया पानी

दे. ऊ.।

चातुर=चतुर।

वाह बहू, तेरी चतुराई, देखा मूसा, कहे बिलाई

असली बात न बताना।

वाह मियां काले, खूब रंग निकाले

'अपनी शक्ल ही बदल ली। पहचाने ही नहीं जाते।' इस तरह का भाव छिपा है।

वाह मियां नाक वाले

व्यंग्य में कहा गया है।

नाक वाले=इज्ज़त वाले।

वाह मियां बांके, तेरे दगले में सौ-सौ टांके

किसी छैल-चिकनियां के लिए व्यंग्य में कथित।

दगला=अंगरखा, कुर्ती।

वाही नर को जान तू, पूरा अपना मीत।
जो राखे बिन लाभ के, तुझसे पीत परीत।

उसी मनुष्य को अपना सच्चं मित्र समझो, जो बिना स्वार्थ के प्रीत करे।

वैसा ही तोको फल मिले, जैसा बीज बुवाय।
नीम बोय के बाल के, गांडा कोई न खाय।

जैसा बीज बोओगे, वैसा ही फल मिलेगा, नीम बोकर ईख कोई नहीं खाता।

वोई नर भरपूर कहावे; अपने आप को जो बिसरावे

वही मनुष्य पूर्ण ज्ञानी है, जो अपने अहम् को—घमंड को भूल जाता है।

श

शंका डायन, मनसा भूता, (हिं.)
शंका ही डायन और मनसा (इच्छा) ही भूत है। अर्थात ये मनुष्य के शत्रु हैं।

शकल चुड़ैल की, मिजाज़ परियों का
जब कोई बदशकल (औरत) बहुत टिमाक से रहे, तब क.।

शकल भूत की-सी, नाम अलबेलेलाल
रूप तो बुरा, नाम अच्छा।

शक्करखोरे को खुदा शक्कर ही देता है, (मु.)
जो जिस योग्य होता है, ईश्वर उसे वैसा ही देता है।

शक्करखोरे को शक्कर ही मिलती है।
स्पष्ट। दे. ऊ.।

शक्कर दिए मरे तो ज़हर क्यों दीजे
दे. गुड़ दिए मरे...।

शतरंज नहीं सदरंज है
शतरंज में सौ परेशानियां हैं। इसमें दिमाग बहुत लगाना पड़ता है, इसीलिए क.।
सद=सौ।

शब्द भेद को लखा नहीं तो क्या हो पुस्तक चीन्ह लिये,
जो दिल दिलवर से मिला नहीं तो क्या हो करवा कोपीन लिये
संतवाणी। शब्दों के अर्थ को यदि नहीं समझा, तो केवल पुस्तक पढ़ लेने से क्या लाभ हुआ? दिल अगर दिलवर (प्रेमी यानी ईश्वर) से नहीं मिला, तो भिक्षापात्र लेना और साधुओं के कपड़े पहनना व्यर्थ है।

शमला ब मिकदारे इल्म, (फा.)
उसकी पगड़ी उतनी ही ऊंची जितना उसका ज्ञान। अर्थात बड़ा दंभी है।

शमा का दुश्त और रू बराबर है, (मु.)
मोमबत्ती का आगा-पीछा एक-सा होता है। सज्जन के लिए क., जिसके मन में कोई छल-कपट नहीं होता। *(दुर्जन की उपमा चिराग़ से देते हैं, जिसके पीछे के हिस्से की छाया पड़ती है।)*

शमा की रोशनी जलते तलक और दीये की रोशनी महशर तक, (मु.)
मोमबत्ती की रोशनी तो जब तक वह जलती रहती है, तभी तक रहती है; पर दीये (1. दीपक तथा 2. दान) की रोशनी क़यामत के दिन तक रहती है। अर्थात दान-पुण्य स्वर्ग तक साथ देता है।

शमा के सामने चिराग़ की क्या ज़रूरत है?
चिराग़ की रोशनी मोमबती से कम होती है, इसलिए क.।

शरन गुरु की आय के, जो सुमरे सियाराम।
यहां रहे आनंद से, अंत बसे हरिधाम। (हिं.)
जो गुरु की शरण में जाके भगवान का भजन करता है, वह इस लोक में आनंद से रहता है और अंत में स्वर्ग पाता है।

शरम की बहू नित भूखी मरे, (स्त्रि.)
जो बहू खाने-पीने में शर्म करती है, वह भूखों मरती है।

शरमाई बिल्ली खंभा नोंचे
अपनी शर्म छिपाने के लिए। चेहरे पर मूर्खता छा जाना।

शरह में शरम क्या? (मु.)
व्यवहार में संकोच की ज़रूरत नहीं।

शराब कायथों की घुट्टी में पड़ती है
कायस्थ आमतौर से शराब पीते थे, इसीलिए कहावत बनी।

शराबख्वार हमेशा ख्वार
शराबी हमेशा दुर्दशा में रहते हैं।

शराब से सब नशे नीचे हैं
शराब से अच्छा और कोई नशा नहीं।

शराबियों से दूर ही भले
उनका संग न हो तो अच्छा।

शर्म चे कुत्तीस्त कि पेश मरदां बि आयद, (फ़ा.)
शर्म क्या कुतिया है जो मर्दों के पास आएगी? बेशर्म के लिए व्यंग्य में क.।

शहद की छुरी
चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाला; धोखेबाज।

शहद लगा कर चाटो
ऐसे कागज़ या दस्तावेज के लिए, जिसके संबंध में कोई कार्यवाही न की जा सके। मियाद से बाहर हुआ कागज़।

शहद, सुहागा, घी, भरी धात का जी
इन तीनों के सेवन से शरीर पुष्ट होता है।
धात=(धातु) शरीर को बनाए रखने वाले पदार्थ।

शहर का गुंडा है
गाली।

शहर का सलाम, देहात का दाल-भात
शहर में (कोरी) सलाम से ख़ातिर करते हैं ओर देहात में भोजन से।

शहर में ऊंट बदनाम
जब कोई आदमी व्यर्थ ही बदनाम हो जाता है, तब क.।

शाकिर को शक्कर, मूजी की टक्कर, (मु.)
अहसान मानने वाले को मिठाई और कृतघ्न को थप्पड़ें, (मिलती हैं।)

शागिर्द क़हर, उस्ताद गज़ब
जैसा मालिक अत्याचारी वैसा ही नौकर भी ज़ालिम।

शादी, खाना आबादी
ब्याह से घर बसता है।

शादी ग़मी सब के साथ है
सुख-दुख सब को लगा है।

शादी है, कुछ गुड़ियों का ब्याह थोड़ा ही है
शादी में बहुत खर्च होता है। यह मत समझिए कि आप सस्ते निपट जाएंगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क.।

शान में क्या जुफ़्ते पड़ेंगे? (मु.)
शान में क्या बट्टा लग जाएगा; (अगर तुम जैसा मैं कहता हूं वैसा करोगे तो)?
जुफ़्ते=शिकनें, सिकुड़नें।

शाबाश मियां तुझको, तूने मोह लिया मुझको
बेतुका या मूर्खतापूर्ण काम करने पर व्यंग्य में क.।

शाम के मुद को कब तक रोये?
इस तरह कैसे पूरा पड़ेगा? सारी रात कोई रो नहीं सकता।

शाम भई दिन ढल गया, चकवी दीनी रोय।
चल चकवे वा देश में, जहं शाम कभी न होय।
स्पष्ट।
(लोगों की कल्पना है कि संध्या होते ही चकवा और चकवी बिछुड़ जाते हैं। एक नदी या तालाब के इस किनारे होता है तो दूसरा उस क़िनारे। वे फिर सारी रात इस प्रकार संभाषण करते हैं : "चकवा मैं आऊं?" "नहीं चकवी।" "चकवी मैं आऊं?" "नहीं चकवा।")

शाह का माल भुईं पड़े दूना
साहूकार का माल नीचे गिर जाए, तो भी दुगना हो जाता है। वह हर सौदे में मुनाफ़ा करता है।

शाह के दूने
स्पष्ट। दे. ऊ.।

शाह के सयावे कमबख़्त के दूने
जो कम मुनाफ़े से माल बेचे, वही (सच्चा) साहूकार है, जो अधिक मुनाफ़ा खाता है उसका व्यापार नष्ट हो जाता है।

शाह खानम की आंखें दुखती हैं, शहर के दिए गुल कर दो, (स्त्रि.)
पुराने ज़माने में राजा या जमींदार अपने आराम के लिए जनता के सुख-दुख की ओर परवाह नहीं करते थे, उसी पर गहरा व्यंग्य।
(जब कोई झूठी नज़ाकत दिखाए, प्रायः तब क.।)
शाह खानम=बेगम।

शाहजहां बूढ़े, बगल में छड़ी, खाते-पीते बिपत पड़ी
बुढ़ापे में कष्ट होना।
(भारत का मुग़ल सम्राट शाहजहां जब बूढ़ा हुआ, तो उसके पुत्र औरंगज़ेब ने उसे क़ैद कर लिया था। उसी पर कहावत बनी।)

शाह जी की अमलदारी है
किसी राजा, ज़मींदार या हाक़िम की अमलदारी (शासन) में कोई अनोखी बात होना।
(यहां 'शाह जी' शब्द व्यक्ति विशेष के नाम के रूप में ही प्रयुक्त हुआ समझा जाना चाहिए, पर हो सकता है कि शिवाजी के पिता शाह जी भोंसले के नाम पर कहावत बनी हो।)

शाहिद वार-वार, मुकदमे वाले पार-पार
गवाह तो इस पार हैं, और मुकदमे वाले उस पार।

(1) उद्देश्यों की विभिन्नता, एक कुछ कहे, दूसरा कु.।

(2) घुमा फिरा कर जवाब देना।

शिकार के वक्त कुतिया हगासी

काम के वक्त (बहाना बनाकर) ग़ायब हो जाना।

शिकार को गए और खुद शिकार हो गए

दूसरे को मारने गए, और स्वयं ही मौत के घाट उतर गए।

शिकारी शिकार खेलें, चूतिया साथ फिरें

जो दूसरों के साथ (जो काम में लगे हैं) अपना वक्त ख़राब करे, उसे क.।

शिव जपें, न राम जपें, ना हरि से लावें हेत।
वे नर ऐसे जाएंगे, ज्यों मूली के खेत।

जो ईश्वर का भजन नहीं करते, वे मूली के खेत की तरह हैं।

शीन के शटक्के (या शड़प्पे)

जो 'स' की जगह तालव्य 'श' का उच्चारण करते हैं, उनका मज़ाक उड़ाकर क.।

शुक सारी राखें सबै, काक न राखै कोय।
मान होत है गुनन ते, गुन विन मान न होय।

(वृंद)

तोता मैना सभी पालते हैं, कौवा कोई नहीं पालता। गुणों से ही इज्ज़त होती है, बिना गुणों के नहीं होती।

शुक्करवार की बादली, रहै शनीचर छाय।
ऐसा बोले भड्डरी, बिन बरसे ना जाय। (कृ.)

शुक्रवार के दिन बदली हो, और शनिवार तक छाई रहे, तो भड्डरी कहते हैं जल अवश्य बरसेगा।

(भड्डरी के समय और जन्मस्थान आदि का ठीक पता नहीं चलता। पर वह उत्तर प्रदेश के बताए जाते हैं उनकी वर्षा और शकुन संबंधी कहावतें जन-साधारण में बहुत प्रसिद्ध हैं।)

शुगल बेहतर है इश्कबाज़ी का, क्या हकीकी और क्या मजाज़ी का

इश्क़बाज़ी (प्रेम) का धंधा ही अच्छी चीज है, फिर चाहे वह आध्यात्मिक हो या लौकिक।

शुगल=(शग़ल); कामधंधा। मनोविनोद

शुतर गमज़े करते हैं

ऊंट जैसी नज़रों से देखते हैं। अर्थात

(1) चालाकी करते हैं।

(2) अवज्ञा की दृष्टि से देखते हैं।

(शुतुर गमजा करना, एक मुहावरा है जिसका अर्थ 'छल-करना' है।)

शुनीदा कये बबद मानिदे दीदा, (फ़ा.)

सुनना देखने जैसा नहीं होता। दोनों में अंतर है।

शेख़ क्या जाने साबुन का भाव?

जिसका जिस काम से संबंध नहीं, वह उसका भेद-भाव क्या जाने।

शेख चंडाल, न छोड़े मक्खी, न छोड़े बाल

बहुत खाऊ के लिए तिरस्कारपूर्वक क.।

शेख ने कछुए को भी दग़ा दी है

कछुआ बहुत सीधा जानवर होता है। शेख ने उसे भी नहीं छोड़ा। धोखेबाज आदमी।

शेख़ ने कौवे को भी दगा दी

कौवा बहुत चतुर होता है। पर शेख उससे भी बढ़कर निकल गए।

(इसकी कथा है कि किसी शेख़ ने एक कौवे को पकड़ना चाहा। इसके लिए वह अपने मुंह में रोटी का एक टुकड़ा लेकर मृतवत जमीन पर पड़ा रहा। एक कौवे ने ज्यों ही उसके शरीर पर बैठकर उस टुकड़े को लेना चाहा त्यों ही उसने उसकी चोंच अपने मुंह से पकड़ ली। कौवे ने छुटकारा पाने का कोई उपाय न देख उसकी जात पूछी, यह सोचकर कि ज्यों ही यह मुंह खोलेगा, मैं उड़ जाऊंगा। पर शेख उससे भी अधिक चालाक निकला। उसने और भी मज़बूती से उसकी चोंच अपने दांतों के बीच दबाकर कहा—'शेख़')

शेख़ सद्दो का बकरा है

दुष्ट के लिए क.।

(शेख सद्दो एक जिन यानी भूत हैं, जिनके नाम से औरतें बहुत डरती हैं।)

शेख़सादी शीराज़ी, आशिक़ों के बादशाह, माशूक़ों के काज़ी, (मुं.)

फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि शेखसादी के संबंध में किसी मनचले की उक्ति।

शेख़ी और तीन काने

(पांसे के) तीन काने आपने फेंके और उस पर भी इतनी शेख़ी!

(चौसर के खेल में तीन काने बिल्कुल व्यर्थ माने जाते हैं। काना पांसे पर की बिंदी या चिह्न को कहते हैं। एक बिंदी की एक संख्या गिनते हैं।)

शेख़ी का मुंह काला

शेख़ीबाज को नीचा देखना पड़ता है।

शेख़ीखोरे से कहा–''तेरा घर जलता है'' कहा–''बला से, मेरी शेखी तो मेरे पास है''
(1) शेखी के मारे घर की आग भी नहीं बुझाना चाहते। अथवा
(2) हज़रत का घर जल गया है, फिर भी अकड़ ज्यों-की-त्यों।

शेखी सेठ की, धोती भाड़े की
किराए की धोती पर सेठ जी शेखी बघारते हैं। झूठी शान।

शेखों की शेखी, पठानों की टर,
'यहां न धोवेंगे, धोवेंगे घर'
शेख और पठान अपनी शेखी और घमंड को घर जाकर ही धोते हैं। अर्थात बाहर हमेशा बड़ी अकड़ दिखाते हैं।

शेर का एक ही भला
लड़का सपूत हो तो एक ही अच्छा।

शेर का खाजा बकरी
शेर की खुराक बकरी है। सबल का भोजन निबल।

शेर का जूठा गीदड़ खाय
(1) आलसी और अकर्मण्य ही दूसरों पर निर्भर रहते हैं।
(2) बड़ों से छोटों का बहुत काम चलता है।

शेर के बुरके में छीछड़े खाते हैं
जो घृणित उपायों से जीवन व्यतीत करते हैं, उन पर क.।

शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं
अच्छे शासन और प्रबंध के लिए क.।

शेरशाह की दाढ़ी बड़ी या सलीमशाह की?
मूर्खतापूर्ण बातों को लेकर जब कोई झगड़े और बहस करे, तब भर्त्सना करते हुए क.।

शेरों का मुंह किसने धोया?
उन छोटे बच्चों से हंसी में कहते हैं जो साफ-सुथरे नहीं रहते।

शेरों के शेर ही होते हैं
यशस्वी पिता के लड़के भी यशस्वी होते हैं।

शैतान की आंत, (मु.)
बहुत लंबी चीज के लिए क.।

शैतान की खाला, (स्त्रि.)
दुष्ट और लड़ाकू औरत।

शैतान के कान काटे, (मु.)
ऐसा आदमी जो चालाकी (या दुष्टता) में शैतान से भी बढ़कर हो।

शैतान के कान बहरे, (मु.)
शैतान बहरा हो जाय; अर्थात कोई एक बात ऐसे लोगों तक न पहुंच जाए, जो उसका अनुचित लाभ उठा लें।

शैतान जान न मारे, हैरान तो जरूर करे, (मु.)
दुष्ट आदमी प्राण न ले, लेकिन परेशान तो जरूर करता है।

शैतान तूफान से खुदा निगहबान, (स्त्रि.)
ईश्वर हमें शैतान और उसकी शरारतों से बचाए। बहुत बड़े शरारती के लिए क.।

शैतान ने भी लड़कों से पनाह मांगी है, (मु.)
लड़कों से शैतान भी घबराता है।
(इस पर कथा है कि किसी शैतान को लड़कों के साथ खेलने में बड़ा आनंद मिलता था। एक दिन वह गदहे के रूप में उनके बीच खेलने आया। लड़कों ने उसे देखते ही उस पर सवारी गांठनी शुरू कर दी। चार लड़के तो आसानी से उसकी पीठ पर बैठ गए, पर जब पांचवें को कहीं जगह नहीं, मिली, तो वह उसकी दुम में बांस बांध कर बैठ गया। शैतान के लिए यह असह्य हो गया। वह फ़ौरन वहां से रफ़ूचक्कर हुआ और फिर कभी लड़कों के पास नहीं आया।)

शैतान सिर पर चढ़ रहा है, (मु.)
क्रोध के आवेश में होना।

शैतान से ज्यादा मशहूर
जिसे सभी लोग जानते हों, ऐसे के लिए व्यंग्य में क.।

शौक़ दाद इलाही है
(काव्य, कला आदि जैसी अच्छी चीजों का शौक स्वाभाविक होता है।
दाद इलाही=ईश्वर का दिया हुआ।

शौकीन बहुरिया, चटाई का लहंगा (मु.,स्त्रि.)
बेतुका शौक।
बहुरिया=बहू।
पा.–शौकीन बुढ़िया...।

शौकीन बीवी, कम्मल की चोली;
चोली में आग लगल, तहलल फिरी, (मुं. स्त्रि.)
शौकीन बीवी ने कंबल की चोली पहनी; चोली में आग लग गई, तो तलफती (हाय! हाय! करती) फिरी। किसी छैल छबीली औरत का मज़ाक।

स

संख बजाओ, सोवो साधू, जो सुख पावे काया
ढोंगी साधुओं पर कटाक्ष।
काया=शरीर।
संख बाजे, सत्तर बला टाले, (लो. वि.)
घर में शंख बजते रहने से विपत्तियां दूर होती हैं।
संग आमद-ओ सख़्त आमद, (फा.)
पत्थर की चोट जब लगती है, तब कड़ी लगती है।
(1) विपत्ति पर विपत्ति आती है।
(2) कठिन समय में धैर्य और तत्परता से काम लेना चाहिए।
संगत अच्छी बैठिये, खैये नागर पान।
खोटी संगत बैठ के, कटे नाक और कान।
स्पष्ट।
नागर=पान की एक जाति, नागौरी।
संगत का प्रभाव है
स्पष्ट। जब कोई बुरी संगत में पड़ जाता है, प्रायः तब क.।
संगत की फूट का अल्लाह बेली
भगवान आपस के झगड़ों से बचाए।
संगत से फल होत है, वही तिली वहि तेल।
जात-पांत सब छोड़ के, पाया नाम फुलेल।
संगत का फल मिलता है। तिलों का वही तेल
(फूलों की महक में बसकर) फुलेल कहलाने लगता है।
संग सोई तो लाज क्या? (स्त्रि.)
पास सोई तो फिर शरम किस बात की?
संतन की बानी सुने, प्रेम सहित जो कोय।
गंगादिक सब तीर्थ फल, बिन अरनाने होय।
जो संतों की वाणी को प्रेमपूर्वक सुनता है, उसे गंगा जैसी पवित्र नदियों में स्नान करने का फल मिलता है।

संतोख कडुया, पर फल मीठा
स्पष्ट।
संदल के छापे मुंह को लगे
तुम्हारी प्रतिष्ठा बढ़े। आशीर्वाद।
संदल के छापे=चंदन के तिलक।
संपत की जोरू, विपत का यार, (हिं.)
स्त्री धन की साथी है और सच्चा मित्र विपत्ति का साथी है।
संपत से भेंटा नहीं, दलिद्दर से दूं-टां, (पू.)
धन का तो अभाव है और दरिद्रता से लड़ते हैं, अर्थात ऐसा काम करते हैं जिससे हानि हो। मूर्ख मनुष्य।
सखी करीम पड़े एड़ियां रगड़ते हैं।
बखील मूसलों से मोतियों को फोड़ते हैं।
दाता और उदार तो दुख पाते हैं, कंजूस मौज करते हैं।
बखील=कृपण।
सखी का खज़ाना कभी खाली नहीं होता
दाता के पास पैसे की कभी कमी नहीं रहती।
सखी का बेड़ा पार और सूम की मट्टी ख़्वार
दाता के सब काम बनते हैं, कंजूस कष्ट भोगता है।
सख़ी का बेड़ा पार है
स्पष्ट। दे. ऊ.।
सख़ी का सर बुलंद, मूजी की गोर तंग, (मु.)
दाता का सर ऊंचा रहता है, कृपण की क़ब्र तंग रहती है। (वह वहां भी दुख पाता है) भिखारियों की टेर।
सख़ी की कमाई में सबका साझा
क्योंकि वह दूसरों को बांटकर खाता है।
सख़ी की नाव पहाड़ चढ़े
दाता के कठिन-से-कठिन काम सफल होते हैं।

सख़ी के माल पर पड़े, सूम की जान पर पड़े

दाता का तो केवल धन ख़र्च होता है, (दान करने में) पर कंजूस के प्राणों पर आ बनती है, (चोर, डाकू उसे मार डालते हैं।)

सख़ी देवे और शरमावे, बादल बरसे और गरमावे

दाता दान देकर शरमाता है कि मैंने थोड़ा ही दिया, पर बादल पानी बरसाकर गर्मी पकड़ता है, घमंड करता है कि मैंने बहुत दिया।

सख़ी न सहेली, अली अकेली, (स्त्रि.)

ऐसी स्त्री जो अकेले रहना पसंद करे।

सख़ी सख़ावत फलता है, अदू अदावत से जलता है

दानी दान से सुख पाता है, ईर्ष्यालु ईर्ष्या करके मरता है।

सखी सूम का लेखा बरस दिन में बराबर हो जाता है

इसलिए कि कंजूस का धन चोर-डाकू इकट्ठा ले जाते हैं।

सखी से भेंटा नहीं तो सूम से क्यों बिगाड़े?

मित्रता तो हरेक से रखनी चाहिए।

सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब

दाता से तो कृपण अच्छा, जो तुरंत नहीं कर देता है। देने में जो बहुत टालमटोल करे, उससे क.।

सखी हो, हम हूं राजकुमारि!

ताना मार कर क.। हम भी बड़े आदमी हैं।

सगरी उमर में पाप कमाई, जनम न कीना पुन्न।
लेवनहारा आ गया, तो तन-मन हो गया सुन्न।

स्पष्ट। संत वचन।

सगरी रैन बन-बन फिरी, भोर भये कुएं से डरी, (स्त्रि.)

दिखावटी लज्जा। दुश्चरित्रा के लिए क.।

सगरे गांव घुर अइली, कहीं न देखी लबदा।
पटना सहर अइसन देखलिन, कांख तरे लबदा।

सब नगर ओर गांव मैंने घूमे, पर कहीं लाभ नहीं दिखाई दिया, पर पटना नगर ऐसा है जहां बगल में लाभ मौजूद है। इससे जान पड़ता है पटना कभी व्यवसाय का बड़ा केंद्र रहा होगा।)

लवदा=लब्धि, प्राप्ति।

सगरे घर में रेंग के मुसरी सिर पटक के मर जा

(1) किसी को कोसना।

(2) विपत्ति में पड़े से भी कह सकते हैं।

मुसरी=मूसल।

सगों बिन सगाई कैसी? भलों बिन भलाई कैसी?

संबंध तो सगे-संबंधियों से ही रहते हैं, और भलाई भलों से ही होती है।

सच और झूठ में चार अंगुल का फ़रक है

आंख से देखी बात सच और कान से सुनी बात झूठ होती है, और आंख तथा कान में चार अंगुल का अंतर होता है। उसी से सच और झूठ का अंतर चार अंगुल बताया गया है।

सच कहना आधी लड़ाई मोल लेना है

क्योंकि सच बात किसी को अच्छी नहीं लगती।

सच कहे सो मारा जाय

दे. ऊ.।

सच की संसी बुरी होती है

सच की पकड़ बुरी होती है; लोग सच से घबराते हैं। संसी=लोहे का एक औजार जिससे कोई चीज पकड़ते हैं; संड़ासी, जंबूरा।

सच बराबर पुन्न नहीं, झूठ बराबर पाप

स्पष्ट।

सच बात आधी लड़ाई होती है

दे.—सच कहना...।

सच बात कड़वी लगती है

स्पष्ट।

सच बोलना और लड़ाई मोल लेना बराबर है

दे.—सच कहना...।

सच बोलना और सुखी रहना

स्पष्टवादी का कथन।

सच बोल, पूरा तौल, (व्य.)

व्यापार का सूत्र।

सच सबको कड़वा लगता है

स्पष्ट।

सच है, हरामज़ादे की रस्सी दराज़ है

दुष्ट का अंत मुश्किल से आता है।

दराज़=बड़ी।

सच्चाई में खुदा की सूरत है, (मु.)

स्पष्ट। सत्य ही परमेश्वर है।

सच्चा जाय, रोता आय; झूठा जाय, हंसता आय

अदालतों के न्याय पर क., जहां झूठों की ही जीत होती है।

सच्चे की बहुरे, झूठे की न बहुरे

(1) सच्चे का समय आता है, झूठे का नहीं आता।

(2) सच्चे की बात सच साबित होकर रहती है।

सच्चे के आगे झूठा रो मरे

सच्चे के आगे झूठे की नहीं चल पाती।

सच्चे राम को छोड़ कें, पूजें देवी भूत।
आप विचारे मर गए, उनसे मांगे पूत।

स्पष्ट।

सच्चे लोग कसम नहीं खाते

झूठी बात को सच साबित करने को ही क़सम खाई जाती है।

सजन चले परदेस को, धर घोड़े पै जीन।
जो मैं ऐसा जानती, चाबुक लेती छीन।

स्त्री का क., जिसका पति विदेश चला गया है।

सजन तुम झूठ मत बोलो, खुदा को सांच प्यारा है।
कहावत है वड़ों की यूं, कधी सांचा न हारा है। (स्त्रि.)

स्पष्ट।

सजन विन ईद कैसी? (स्त्रि.)

पति के बिना उत्सव कैसा?

सजन सकारे जाएंगे, और नैन भरेंगे रोय।
बिधना ऐसी रैन कर, कि भोर कधी ना होय।

स्पष्ट।

किसी स्त्री का पति विदेश जा रहा है। वह कहती है 'हे भगवान तू ऐसी (लंबी) रात कर कि कभी सवेरा ही न हो; जिसमें मेरे पति जा न सकें।

सज्जन चित कधू न धरे, दुर्जन जन के बोल।
पाहन मारे आम को, तऊ फल देत अमोल।

स्पष्ट।

पाहन=पत्थर।

सड़ी साहिबी और गच का सोना

झोंपड़ी में रहकर महलों के ख्वाब देखना।

गच=चूने का फ़र्श।

सत मत छोड़े हे पिया, सत छोड़े पत जाय।
सत की बांधी लच्छमी, फेर मिलेगी आय। (स्त्रि.)

हे प्रियतम! सत्य नहीं छोड़ना चाहिए। सत्य छोड़ने से सम्मान जाता है, सत्य के वश में हुई लक्ष्मी फिर आकर मिलती है (चले जाने पर भी)।

सतरा बहतरा

फालतू आदमी। ऐरे गैरे।

सतवंती का लाज बड़, छिनाली के बत बड़, (स्त्रि.)

पतिव्रता लज्जाशील होती है, और दुश्चरित्रा बहुत वातूनी अर्थात निर्लज्ज।

सत हारा, गया मारा

जो सत्य छोड़ देता है, वह मारा जाता है।

सती कुच, भुजंगमणि, केसरि केस, गजदंत।
सूर कटारी, विप्र धन, हाथ लगे जब अंत।

पतिव्रता स्त्री के स्तन (स्तीत्व), सर्प की मणि, सिंह के बाल, हाथी के दांत, शूरवीर की तलवार और ब्राह्मण का धन, ये उनके मरने पर ही हाथ लगते हैं।

सत्त मान के बकरा लाये, कान पकड़ सिर काटा।
पूजा थी सो मालिन ले गई, मूरत को धर चाटा। (कबीर)

मूर्तिपूजा पर व्यंग्य।

सत्तर कीने सात के, और सोलह के किए सौ।
ब्याज बुरा रे बालके, यासूं राखौ भौ।

सूदखोर और कर्ज़ पर क.।

सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज्ज को चली

बुरे कर्म करते हुए भी धर्मात्मा बनने का ढोंग करना। *(बिल्ली की कथा बहुत पुरानी है। वह जातक और महाभारत में मिलती है। एक बिल्ली चूहों से यह झूठी बात कह कर कि अब तो मैंने संन्यास ले लिया है और मांस खाना भी छोड़ दिया है, एक-एक करके उन सबको खा जाती है।)*

सत्तू खाके शुक्र क्या? (मु.)

सत्तू खाकर क्या धन्यवाद देना?

तुच्छ वस्तु पाकर प्रशंसा क्या?

सत्तू बांध कर पीछे पड़ना

दृढ़ता के साथ उद्देश्य को पूरा करने में लगे रहना।

सत्तू मनभत्तू, जब घुलवा जब खइबा, जब जइबा;
धान विचारे भल्ले, कूटे खाये चल्ले; (पू.)

दो और दो पांच बताना, या काले को सफेद कहना।

सत्तू को घोलने और खाने में थोड़ा समय लगता है, जब कि धान को कूटना और चावल पकाना एक श्रमसाध्य कार्य है।

दे. पूरी कथा के लिए धान विचारे...।

सत्य रहेगा, सब मरेगा

सत्य ही जीवित रहता है।

सदका दिए रद बला, (लो. वि.)

दान-पुण्य करने से विपत्तियां दूर होती हैं।

सदा ईद नहीं जो हलुवा खाये, (मुं.)

आनंद के दिन सदा नहीं रहते।

सदा किसी की नहीं रही

हमेशा किसी के अच्छे दिन नहीं रहे।

सदा की पदनी, उरदों दोष, (स्त्रि.)
अपने किसी बुरे ऐब के लिए दूसरे को जिम्मेवार ठहराना। पदनी=पादने वाली। उड़द पेट में वायु पैदा करते हैं।
सदा के उजड़े, नाम बस्तीराम
शेखीवाज़।
सदा के दानी, मूसल के नौ टके!
व्यंग्य में कृपण के लिए क. कि वह एक टके की चीज के नौ टके देता है।
सदा के दुखिया, नाम चंगे खां
हैसियत के प्रतिकूल नाम।
सदा दिन एक से नहीं रहते
दुख और सुख आदमी को लगे ही रहते हैं।
सदा दिवाला संत के, जो घर गेहूं होय
घर में खूब खाने-पीने को हो तो नित्य त्योहार है।
सदा दौर दौरा यह रहता नहीं, गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं
स्पष्ट।
दौर दौरा=प्रभाव, प्रताप, दबदबा।
सदा न काहू की रही, पीतम के गल बांह।
ढलते ढलते ढल गई, तरवर की-सी छांह !!
स्पष्ट।
सदा न फूले केतकी, सदा न सावन होय।
सदा न जोबन थिर रहे, सदा न जीव कोय।
सदा दिन एक से नहीं रहते।
(सावन आनंद, उत्सव की ऋतु मानी जाती है।)
सदा नाम साईं का
ईश्वर का नाम ही सदा रहता है।
सदा नाव कागज़ की बहती नहीं
(1) कच्चा काम स्थायी नहीं होता।
(2) धोखा हमेशा नहीं दिया जा सकता।
सदा फूली फूली चुनी है
हमेशा फूली कलियां ही चुनी हैं; अर्थात मुरझाई कली कभी उसके हाथ नहीं आई।
भाग्यवान के लिए क.।
सदा भवानी दाहने, सम्मुख रहें गनेश।
पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
आशीर्वाद।
सदा मियां घोड़े ही तो रखते हैं
किसी को व्यंग्य में क.।
सदा रहे नाम अल्लाह का
फकीरों की टेर।
सदा सुहागन
(1) व्यंग्य में वेश्या से क.।
(2) एक प्रकार के फ़कीर जो सधवाओं की तरह वस्त्राभूषण पहनते हैं।
सपूती रोवे टूकों को, निपूती रोवे पूतों को, (स्त्रि.)
जिसके बाल-बच्चे हैं उसके धन नहीं, जिसके धन है उसके बाल-बच्चे नहीं।
सपूतों के कपूत और कपूतों के सपूत होते आए हैं
अच्छे के बुरे और बुरों के अच्छे होते ही हैं।
सफ़र और सक़र बराबर
यात्रा और नरक़ दोनों बराबर हैं, अर्थात यात्रा में बहुत कष्ट होता है।
सफ़र और सक़र में एक नुक्ते का फ़र्क है
सफ़र (यात्रा) और सक़र (नरक) में बहुत थोड़ा अंतर है। *(फ़ारसी के फे अक्षर में—जिससे सफ़र लिखा जाता है एक नुक़्ता होता है, दो नुक़्ता रखने से वही काफ़ बन जाता है, जिससे सक़र लिखते हैं।)*
सफ़र कर्द : बिसयार गोयद दरोग, (फ़ा.)
(दूर देशों के) यात्री तरह-तरह की गप्प-हांकते हैं।
सफ़र, बसील-अये-ज़फर
यात्रा से ही प्राप्ति होती है; (ज्ञान या धन की)।
सब उस्तरे बांधो, कोई तलवार न बांधो।
कर दो यह मुनादी, कोई दस्तार न बांधो।
(1) कायरों पर व्यंग्य।
(2) अंग्रेज़ों के ज़माने के आर्म्स एक्ट पर भी ताना है।
दस्तार=पगड़ी।
सब एक ही थैली के चट्टे हैं
जहां सबके स्वार्थ एक से हों, अथवा सब एक-सी ही बात कहते हों, वहां क.।
सब एक ही माथे
(1) सब काम एक के ही ज़िम्मे। अथवा
(2) एक के माथे ही तिलक।
सबक़ और तबक़ दोनों मौजूद हैं, (मुं.)
पाठ और भोजन दोनों।
(1) पुराने ज़माने में मक़तब में जो लड़के पढ़ने जाते थे, उनसे मौलवी साहब घर का सब काम भी करवाते थे। उसी से अभिप्राय है कि लड़कों को पढ़ाओ और उनसे

भोजन भी बनवाओ।

(2) विद्यार्थियों को मिलने वाली आर्थिक सहायता से भी मतलब हो सकता है।

सब काम धक्का, तो बुरा काम तक्का।

जब कोई मनुष्य पेट के लिए ओछा काम करने लगता है, तब क.।

सब कामों में पूरी, कोई न कहे अधूरी, (स्त्रि.)

जो अपने को बहुत होशियार समझे, उससे व्यंग्य में क.।

सब की मैया सांझ

संध्या सबकी माता है। वह सबको अपनी गोद में विश्राम देती है।

सब कुछ गई, मियां, तेरी चुलबुल न गई, (स्त्रि.)

कोई स्त्री अपने बूढ़े पति से कह रही है।

सब कुछ गया, मियां की टखटख न गई, (स्त्रि.)

दे. ऊ.।

टखटख=बहुत बात करना। ऐब निकालना। खीझना।

सब के दांव अंडे-बच्चे, हमारे दांव कुड़क

सबको तो जहां कोई वस्तु मिल रही हो, पर स्वयं को न मिले, तब क.।

कुड़क=ऐसी मुर्गी जिसने अंडा देना बंद कर दिया हो। कुड़क हो जाना=अंडा देना बंद कर देना।

सब के दाता राम

भगवान सब को देते हैं।

सब केहू बोले तो नीक लागला, कपूर बहू बोले टिहुक बड़ेला, (स्त्रि.)

सास अपनी बहू के बारे में कह रही है जिसमें वह बहुत अप्रसन्न रहती है—कोई और बोलता है तो मुझे अच्छा लगता है, पर जब कपूर बहू बोलती है तो मेरा बदन जल उठता है। बहू का पक्ष लेकर सास से भी कोई उक्त बात कह सकता है कि कोई और बोलता है, तो तुम कुछ नहीं कहतीं पर कपूर बहू के बोलने से तिनक उठती हो।

सब कोई झूमर पैरे, लंगड़ी कहे 'हमहूं', (स्त्रि.)

सब झूमर पहनते हैं, तो लंगड़ी भी पहनना चाहती है। किसी वस्तु के उपयोग करने के योग्य न होने पर भी उसके पाने की इच्छा करना।

झूमर=पैरों में पहनने का एक गहना।

सब कोई मिलियो, लंगोटिया न मिलियो

क्योंकि वह बचपन की सब बातें जानता है।

लंगोटिया=छुटपन का साथी।

सब को ठेल, मैं अकेल

स्वार्थी मनुष्य, जो सब चीज अपने लिए ही चाहे।

सब गहनों में चंदनहार

(1) चंद्रहार सब गहनों में अच्छा होता है।

(2) सब में अच्छा मनुष्य।

सब गुड़ मट्टी हुआ

बना-बनाया काम बिगड़ गया।

सब गुन की आगर धीया, नाक बिना बेहाल, (पू., स्त्री.)

एक दुर्गुण होने से सब गुण नष्ट हो जाते हैं।

धीया=धी, लड़की।

सब गुन की आगर, फूटल गागर, (स्त्रि.)

गगरी में और तो सब गुण हैं, पर वह फूटी है। दे ऊ.।

सब गुन पूरी, कौन कहे अधूरी, (स्त्रि.)

बेशऊर स्त्री को व्यंग्य में क.।

सब गुन भरी, बैतरा सोंठ

व्यंग्य में भ्रष्ट स्त्री या धूर्त के लिए क.।

(बैतरा सोंठ बहुत गुणकारी मानी जाती है, इसमें रेशा नहीं होता।)

सब घटा देते हैं मुफलिस के गरज माल का मोल

ग़रीब आदमी जब गरज़ पड़ने पर अपनी कोई चीज बेचता है, तो सब उसके कम दाम लगाते हैं। अर्थात ग़रीबों की सब उपेक्षा करते हैं।

सब घर मटियाले चूल्हे

(1) सब घरों का एक-सा ही हाल है।

(2) सब घरों में कोई-न-कोई बुराई मोजूद है।

सब जग रूठा, रूठन दे, एक वह न रूठा चाहिए

ईश्वर के प्रति किसी ऐसे मनुष्य का कहना है जिसका समय खराब आ गया है, और जिससे सभी ने मुंह मोड़ लिया है।

सब जीते-जी के झगड़े हैं, यह तेरा, यह मेरा है।
जब चल बसे इस दुनिया से, ना तेरा है ना मेरा है।
(नज़ीर)

स्पष्ट।

सबजी मत देव गंवारन को,
हंड़िया भर भात बिगारन को, (पू.)

गंवारों को भंग मत दो, व्यर्थ भोजन का सत्यानाश मारेंगे। जो मनुष्य जिस वस्तु की क़द्र नहीं जानता, वह उसे नहीं देनी चाहिए।

(भंग खाने से भूख खूब लगती है, पर हज़म नहीं होता।)

सबज़ी में सुरखी, खबर लाये धुर की
भंग का नशा जब चढ़ता है तो वह दूर-दूर की ख़बर लाता है। भंगेड़ियों का कहना।

सब तोड़ें, मेरा एक रब न तोड़े, (स्त्रि.)
दे.—सब जग रूठा...।
रब=ईश्वर।

सब दिन चंगे, तिहवार के दिन नंगे, (स्त्रि.)
खुशी के दिन खुशी न मनाना। स्त्रियां प्रायः बच्चों से कहा करती हैं।

सब धान बाईस पसेरी
(1) जहां सबको एक डंडे से हांका जाय, वहां क.।
(2) बहुत सस्ती चीज के लिए भी क.।

सब पीर छूटे, पकड़ी गई बीबी नूर, (मु.)
व्यंग्य में कहा गया है। मतलब है कि जो असली बदमाश थे, वे तो बच गए; पर एक ग़रीब पकड़ा गया।

सब पेड़ों में बड़ा जो बड़, आकाश वाकी चोटी, पाताल वाकी जड़, हरे हरे पत्ते, लाल लाल फर, अकबर बादशाह गीदी ख़र
कविता का मज़ाक उड़ाया गया है।
(कथा इस प्रकार है—यह जानकर कि अकबर बादशाह कविता के बड़े प्रेमी हैं और कवियों का विशेष सम्मान करते हैं चार देहातियों ने कोई कविता बनाकर उन्हें प्रसन्न करने का इरादा किया। तीन ने तो उपर्युक्त तुकबंदी के तीन चरण बना लिए, पर चौथे से कुछ न बन सका। इतने में एक भांड वहां से जा निकला। उसने उन चारों को कविता बनाने में व्यस्त देखकर चौथे चरण की पूर्ति कर दी। चारों देहाती खबर भेजकर दरबार में पहुंचे और बादशाह के हुक्म से अपनी-अपनी रचना सुनाने लगे। तीन तो बारी-बारी से अपने पद सुना गए, पर चौथे ने जब अपना पद सुनाया, तो सब दरबारी सन्नाटे में आ गए और बादशाह भी बहुत नाराज़ हुए। उस देहाती की समझ में जब यह आया कि उससे कोई बड़ी भूल हुई है, तो उसने उस व्यक्ति को बता दिया जो वहीं बैठा हुआ था और जिसने वह चौथा चरण बनाया था। यह देखकर कि वह तो दरबार का ही मशहूर भांड है, बादशाह ने हंसकर मामले को टाल दिया।)

सब बातों में है यारो, यही सखुन दुरुस्त।
अल्लाह आबरू से रक्खे और तंदुरुस्त।
सब बातों में बस यही बात ठीक है कि ईश्वर इज्ज़त से रखे और तंदुरुस्त रखे।

सब मद मदई हैं, विद्या मद उन्माद
सब नशों में विद्या का नशा अधिक है, वह मनुष्य को पागल बना देती है।

सब शकल लंगूर की, एक दुम की कसर है
सिलबिल्ले लड़के से क.।

सब सदके, मैं अलग, (स्त्रि.)
अपने को छोड़कर (तुम पर) सब न्योछावर। दिखावटी प्रेम।

सब संसै मिट जायगा, जब होगा राम सहाय।
रानी उस भगवान से लीजे ध्यान लगाय।
स्पष्ट।
राजा नल का दमयंती के प्रति कथन।
संस=संशय।

सब से बड़ी भूख, जो पावे सो चूख
भूख में जो मिलता है, वही खा लिया जाता है।

सब से बेहतर है, मियां, साहब सलामत दूर की
किसी से बहुत घनिष्ठता बढ़ानी ठीक नहीं।

सब से भला किसान, खेती करे और घर रहे
जीविका के लिए जो बाहर जाते हैं, उन पर क.।

सब से भली चुप
स्पष्ट।
(सं.—मौनम् सर्वार्थ साधकम्।)

सब से भले मूसलचंद, करें न खेती, भरें न दंड
किसानों को जो सरकारी लगान देना पड़ता है, उस पर कहा गया है कि मूर्ख अच्छा जो खेती नहीं करता, और किसी परेशानी में नहीं पड़ता।

सब से मीठी भूख
भूख में सब चीज अच्छी लगती है।

सब से रलमिल चालिये, जब लग पार बसाय।
मिष्ट बचन मुख बोलिये (जो) नेकी ही रह जाय।
स्पष्ट।
रलमिल=हिलमिल कर।

सब से हिलिये, सब से मिलिये, सब से कीजे चाव।
हां जी, हां जी सब से कहिये, बसिये अपने गांव।
सबको प्रसन्न रखकर चलना चाहिए।

सब ही कूकर जो काशी जाएं, तो पातर चाटन कौन आएं? (स्त्रि.)
सब कुत्ते अगर (तीर्थ यात्रा के लिए) काशी जाएं, तो

पत्तल चाटने कौन आए?

मूर्ख यदि समझदारी का काम करने लगे, तो फिर समझदारों को कौन पूछे।

सब ही जात चमार की, बिना चाम नहिं कोय।
बिना चाम वह आप है, जिसको लखे न कोय।

स्पष्ट।

सब ही बात खोटी, सिरे दाल रोटी

(1) दाल रोटी सबसे अच्छी होती है। अथवा
(2) दुनिया में दाल रोटी ही मुख्य है

सबेरे का टहलना, दिन भर की खुशी

सुबह घूमने से दिन भर चित्त प्रसन्न रहता है।

सबेरे का भूला सांझ को भी आवे, तो भूला नहीं कहलाता

अपनी भूल को जब कोई स्वयं ही जल्दी सुधार ले, तब क.।

सब्र का अज़्र खुदा देगा, (मु.)

संतोष का फल ईश्वर देता है।

सब्र कर मन में, तो सुख लहे मन में

संतोष से सुख मिलता है।

सब्र की डाल में मेवा लगता है

संतोष का फल अच्छा होता है।

सब्र की दाद खुदा के हाथ है

संतोषी की ईश्वर सहायता करता है।

सब्र की दाद खुदा देगा

दे. ऊ.।

सब्र तल्ख़ अस्त, व लेकिन बरे शीरीं दारद, (फ़ा.)

संतोष कड़वा है, पर उसका फल मीठा होता है।

सभा की चूकी डोमनी और डाल का चूका बंदर बराबर

डोमनी अगर किसी के यहां मौके पर गाने-बजाने न जा पाए, तो हानि उठाती है; इसी तरह डाल का चूका बंदर भी हानि उठाता है।

सभा बिगारें तीन जनें, चुगल, चूतिया, चोर

जिस सभा में चुगल, चूतिया (फालतू आदमी) और चोर ये तीन मौजूद हों, उस सभा का सब आनंद जाता रहता है।

सभी पदारथ पान है, एक ही औगुन आह।
जाके कर पै धरत हैं, विदा करत हैं ताह।

पान बहुत अच्छी चीज है, पर उसमें एक ही अवगुण है कि जिसे देते हैं, उसे विदा करने के लिए ही देते हैं।

(राज-दरबारों में यह नियम था कि जब कोई राजा से मिलने जाता था, तो विदा करते समय राजा उसे अपने हाथ से पान देते थे। उसका अर्थ यह होता था कि 'भेंट समाप्त हो गई, अब आप जाइए।' उक्त दोहे में उसी पर कटाक्ष है।)

सभी मिसरी की हैं डलियां

(वे) सभी भले मानुस हैं।

सभी सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपक देत बुझाय।

(वृंद)

बलवान के सब सहायक होते हैं, निर्बल का कोई नहीं। हवा आग को प्रज्ज्वलित करती है, और दीपक को बुझा देती है।

समझ का घर दूर है

समझदारी एक मुश्किल चीज है।

समझने वाले की मौत है

(1) समझदार पर ही सब काम की जिम्मेदारी आकर पड़ती है, इसलिए कोई काम अगर बिगड़ जाए, तो उसकी बुराई भी उसी को भुगतनी पड़ती है।
(2) समझदार चुप नहीं रह पाता, और अगर वह अपनी कोई स्पष्ट राय जाहिर कर देता है, तो उसकी मुसीबत आ जाती है।

(इसकी कथा है कि एक बार अकबर बादशाह के दरबार में किसी अच्छे गवैये का गाना हो रहा था। उसे सुनकर सब अपना सिर हिला रहे थे। बादशाह ने अंचभे में आकर बीरबल से पूछा क्यों 'ये सब लोग गाना समझते हैं?' बीरबल ने उत्तर दिया 'इसका पता मैं अभी लगाए देता हूं।' और उन्होंने दरबारियों को संबोधन करके कहा कि 'आप लोगों का जहांपनाह के सामने इस तरह सिर हिलाना अच्छा नहीं मालूम देता। अब अगर कोई ऐसी गुस्ताखी करेगा, तो उसका सिर कलम कर दिया जाएगा।' इस पर सब संभलकर बैठ गए, और गाना चलता रहा। थोड़ी देर में एक बूढ़े दरबारी के मुंह से निकल पड़ा—'हे भगवान समझदार की मौत है।' बीरबल ने पूछा—'क्यों भाई, क्या बात है?' तब उस दरबारी ने जवाब दिया—'क्या बताऊं, गाना सुनकर मैं सिर हिलाए बिना नहीं रह सकता और आपने उसके लिए मना कर दिया।' तब बीरबल ने बादशाह से कहा कि 'जहांपनाह यही एक साहब हैं जो गाना समझते हैं। बाकी तो सब यों ही सिर हिला रहे हैं।')

समझा और पत्थर हुआ

समझदार अपने विचार को आसानी से नहीं बदलता।

समझाये समझे नहीं, मन नहिं धरता धीर
प्रालब्ध पहले बनी, पीछे बना शरीर।
स्पष्ट।
प्रालब्ध=प्रारब्ध, भाग्य।

समझे सो गधा, अनाड़ी की जाने बला
समझदार की मुसीबत है।

समझो न बूझो, खूंटा ले के जूझो
विना समझे हठ करना। दुराग्रही।

समय चूक पुन का पछताने
अवसर निकल जाने पर पछताना व्यर्थ है।

समय न बारंबार, (हिं.)
अच्छा अवसर बार-बार नहीं आता।

समय समय की बात है
कभी सवल को भी दुर्वल के आगे दबना पड़ता है।

समय समय की बात, बाज पर झपटे बगुला
दे. ऊ.।

समय समय के दाता राम, (हिं.)
समय पर भगवान सहायक होते हैं।

समय समय सुंदर सभी, रूप कुरूप न कोय
अपने-अपने समय पर सभी अच्छी लगते हैं, स्वयं कोई न रूपवान होता है, न कुरूप।

समा करे (नर क्या करे) समय समय की बात।
किसी समय के दिन बड़े, किसी समय की रात।
मनुष्य कुछ नहीं करता। परिस्थितियां ही सब करवाती हैं।
समा=समय।

समुन्दर क्या जाने दोज़ख का अज़ाब, (मु.)
समुद्र नरक के कष्टों को क्या जाने ?
(क्योंकि नरक में तो हमेशा आग भभकती रहती है और समुद्र पानी का ढेर है। पानी क्या समझे कि आग क्या चीज है?)

समुन्दर सोख को दरया क्या?
जो समुद्र को सोख सकता है, उसके लिए नदी कोई बड़ी चीज नहीं।
(अगस्त्य ऋषि ने समुद्र सोख लिया था। उसी ओर संकेत है।)

सम्मन ऐसी प्रीत कर जैसी करे कपास।
जीते तो हुरमत रखे, मुए चलेगी साथ।
प्रेम तो कपास की तरह करना चाहिए, जो जीते-जी शरीर को ढक कर इज़्ज़त रखनी है और मरने पर कफ़न बनकर साथ जाती है।

सम्मन ऐसी प्रीत कर, जैसे शक्कर घीउ।
जात पांत पूछे नहीं, जिससे मिल जाय जीउ।
प्रेम तो शक्कर और घी की तरह करना चाहिए, (सब उनकी दृष्टि में बराबर हैं।) जिससे प्रेम हो जाए, उसकी जात-पांत नहीं पूछनी चाहिए।

सम्मन ऐसी प्रीत कर, ज्यों हिन्दू की जोय।
जीते-जी तो संग रहे, मरै पै सत्ती होय।
स्पष्ट।

सम्मन चूड़ी कांच की, कौड़ी कौड़ी देख।
जब गल लागी पीऊ के, लाख टके की एक। (स्त्रि.)
कांच की चूड़ी एक बहुत सस्ती चीज है, पर वही जब सधवा के हाथ में पहनी जाकर (उसके) प्रियतम के गले से लगती है, तो उसका मूल्य लाखों रुपए हो जाता है।

सम्मन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे पर जो जोड़ हो, बीच गांठ पड़ जाय।
स्पष्ट।

सम्मन वह दिन कौन से, जो सुख से लाए पीत।
अब दुख दे न्यारे भये, कौन गांव की रीत।
स्पष्ट।

सम्मन वह फल कौन से, जो पक्के पै कड़वास।
कच्चे लगें सुहावने, गद्दर करें मिठास।
मनुष्य की तीन अवस्थाओं पर.।
पक्के पै=वृद्ध होने पर। कच्चे=वचपन में। गद्दर=युवावस्था में।

सम्मन सांझ अंधेर मां, भूल बाट मत चाल।
जान गंवावे एक दिन, संग गंवावे माल।
संध्या के बाद अंधेरे में यात्रा नहीं करनी चाहिए। जान-माल का खतरा रहता है।

सम्मन सांसा मत करो, सिर पर है साईं।
जो कुछ लिखा लिलाट में, भेजेंगे याहिं।
स्पष्ट।
सांसा=संशय।

सयाना कौवा खे खाय
अपने को बहुत होशियार समझने वाला मनुष्य जब कोई स्पष्ट भूल कर बैठे, तब क.।
खे=मल, विष्ठा।

सयाने का गू तीन जगह
जो बहुत होशियार बनता है, वही हमेशा धोखा खाता है।

(दो मित्र एक साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में कहीं उनके पैरों में विष्ठा लग गई। एक ने तो तुरंत अपना पैर धो डाला। पर दूसरे ने सोचा कि यह विष्ठा है या नहीं, इसका क्या सबूत? इसलिए उसे हाथ लगाकर देखा। जब इस पर भी उसे निश्चय न हुआ तब, उसने हाथ को सूंघा; जिससे विष्ठा उसकी नाक में लग गई। इस प्रकार वह तीन जगह गंदा हुआ।)

सयाने तो हैं बहुत से, सब से सयाना छोह।
हीना देख हो चौगुना, ठांडे पर कम होय।

क्रोध सबसे समझदार है, वह ताकतवर पर तो कम, और कमजोर पर अधिक बल दिखलाता है।

सरकार से मिला तेल, पल्ले ही में मेल

सरकार से छोटी-से-छोटी वस्तु भी मिले, तो उसे प्रसन्नतापूर्वक लेना चाहिए।

सरदारी का डंडा अटका है

जो अपनी बीती हुई प्रतिष्ठा के अभिमान में रहकर कोई छोटा पद स्वीकार नहीं करना चाहता, उसे क.।

सरदी का मारा पनपता है, अन्न का मारा नहीं पनपता

सरदी से आदमी बच सकता है, पर भूख से मर जाता है।

सरधा ढाल जो पहने खावे, वाके टोटा कभी न आवे

जो अपनी हैसियत के अनुसार चलता है, उसे कभी किसी बात की कमी नहीं रहती।

सरधा=श्रद्धा, सामर्थ्य।

सरधा लागल, कइलों भतार, ओहू निकसल जात के चमार, (स्त्रि.)

बड़े चाव से तो ख़सम किया और वह भी निकला जात का चमार ! (अभिलाषा का पूरा न होना।)

सरफियां रा मग्ज़ बायद चूं सगां; नहवियां रा मग्ज बायद चूं शहां, (फा.)

विभक्ति या प्रत्यय के प्रयोग के लिए बहुत समझदारी की आवश्यकता नहीं पड़ती। पर पदयोजना के लिए विशेष योग्यता चाहिए। (अरबी भाषा के संबंध में कहते हैं।)

सरसों फूले फाग में, और सांझी फूले सांझ।
नाह कभी फूले फले, जो तिरिया हो बांझ।

फागुन के महीने में सरसों और सूर्यास्त के समय सांझ फूलती है, पर बांझ स्त्री कभी नहीं फलती-फूलती अर्थात कभी पुत्रवती नहीं होती।

(संध्या समय आकाश में जो लाली फैलती है उसे सांझ फूलना कहते हैं।)

सराय का कुत्ता हर मुसाफ़िर का यार

मुफ़्तख़ोर।

सराहल बहुरिया डोम घर जाय, (स्त्रि.)

सराही बहू भंगी के साथ निकल जाती है। जो व्यक्ति हमारी दृष्टि में बहुत योग्य होता है, उससे ही कभी-कभी हमें बहुत निराशा भी होती है।

सरेसे का टट्टू बना फिरता है

इन्द्र का घोड़ा बना फिरता है। निकम्मे आदमी से व्यंग्य में क.।

सरेस=सुरेश, इन्द्र।

सला न शुद, बला शुद, (फ़ा.)

निमंत्रण क्या, एक मुसीबत थी।

सलामत रहे बहू, जिसका बड़ा भरोसा है, (स्त्रि.)

किसी का लड़का मर जाने पर उसे दिलासा देते हुए क.।

सलाम बिसर मियां जी क्यों रुसाये?

(1) सलाम न करके मियां जी तुमने (उसे) नाराज़ क्यों कर दिया? अथवा

(2) मियां जी तुम इतने नाराज़ क्यों हो गए जो (हमसे) सलाम नहीं किया?

भाव यह है कि अपने अशिष्ट व्यवहार से किसी को अप्रसन्न करना ठीक नहीं।

सलीते में मेख लश्कर में शेख़ न रखे

बोरे में कील-कांटा न रखे और फौज में शेख़ को भर्ती न करे।

(मुसलमानों के चार फ़िरके हैं : सैय्यद, मुगल, पठान और शेख़। इनमें शेख़ लड़ने में बोदे माने जाते थे।)

सलेमो बिन ईद कैसे? (स्त्रि.)

सलेमों के बिना भला ईद कैसे हो सकती है? उनके बिना तो मज़लिस सूनी ही रहेगी।

(सलेमो किसी छैल-छबीली औरत का काल्पनिक नाम है।)

सवाब न अज़ाब, कमर टूटी मुफ़्त में

निष्फल परिश्रम।

सबाब=पुण्य।

अज़ाब=पाप।

सवाल दीगर, जवाब दीगर

पूछा जाय कुछ, जवाब मिले कुछ।

ससुराल सुख की सार, जो रहे दिना दो-चार

ससुराल बहुत अच्छी चीज है, पर वहां अधिक न रहे।

(इस पर कथा है कि एक कायस्थ अपनी ससुराल गए। वहां अपना विशेष आदर सत्कार देखकर उन्होंने पहला

वाक्य कहा। जब उनके साले ने देखा कि ये तो यहां जमकर रहना चाहते हैं, तो उसने दूसरा वाक्य उसमें जोड़ दिया। पूरी कहावत इस प्रकार है : ससुराल सुख की सार, जो रहे दिना दो चार। रहे मास पखवारा, हाथ में खुर्पा बगल में खारा।)

सस्ता ऊंट, महंगा पट्टा

उल्टी बात। ऊंट महंगा और पट्टा सस्ता मिलना चाहिए।

सस्ता रोवे बार-बार, महंगा रोवे एक बार

सस्ती वस्तु खराब होने के कारण रोज-रोज बिगड़ती है, पर महंगी चीज का एक बार दाम अधिक जरूर लग जाता है, पर वह टिकाऊ होती है।

सस्ता हंसावे, महंगा रुलावे, (कृ.)

सस्ता अन्न होने पर लोग प्रसन्न रहते हैं, महंगा होने पर कष्ट पाते हैं।

सस्ती भेड़ की टांग उठा कर देखते हैं

सस्ती चीज को बार-बार देखते हैं, इसलिए कि उसके अच्छे होने में संदेह रहता है।

सस्ते को देखभाल कर लेना चाहिए

कि कहीं खराब न हो।

सहता सहे, न सहता छाती दहे

(1) सहने योग्य बात ही सही जाती है, जो असह्य है, उससे छाती जलती है।

(2) जो सहनशील है, वह सब सह लेता है; असहनशील से बड़ा कष्ट पहुंचता है।

सहरी खाये सो रोजा रक्खे, (मु.)

रोज़े के दिनों में मुसलमान सूर्योदय के पहले ही कुछ खाना खा लेते हैं। फिर दिन भर कुछ नहीं खाते। सुबह का वह भोजन ही सहरी कहलाता है।

(कथा है कि एक मियां साहब के पास एक कुत्ता था। एक दिन उस कुत्ते ने उनकी सहरी खा डाली। इस पर मियां साहब ने नाराज़ होकर उसे एक खंभे से बांध दिया और कहा कि बस अब आज मेरे बदले यह कुत्ता ही रोज़ा रखेगा, क्योंकि इसने ही सहरी खाई है। इस प्रकार मियां साहब ने उस कुत्ते की ओट लेकर स्वयं अपने को रोज़ा रखने की मुसीबत से बचा लिया और दोहपर में मज़े से खाना खाया।)

सहरी भी न खाऊं तो काफ़िर न हो जाऊं, (मु.)

सहरी के लिए दे. ऊ.।

(इसकी भी कथा है कि एक समय बहुत से मुलमान इकट्ठे होकर सहरी खा रहे थे। उनमें एक मुसलमान ऐसा भी था, जो रोज़ा नहीं रखे हुए था। उसे अपनी पंक्ति में देखकर सबके सब कह उठे कि तुम क्यों सहरी खा रहे हो? तुम क्या रोज़ा रख रहे हो? इस पर उसने जवाब दिया—मैं तो नमाज़ भी नहीं पढ़ता, न रोज़ा ही रखता हूं, अब अगर सहरी भी न खाऊं तो क्या काफिर हो जाऊं? मतलब की बात तुरंत ढूंढ़ लेना।)

सहस्सर गोपी एक कन्हैया

एक वस्तु के अनेक चाहक।

सहस्सर डुबकी मैं लई, मोती लगा न हाथ।
सागर का क्या दोष है, हीन हमारे भाग।

भाग्यहीन पुरुष।

सही गए, सलामत आए, (स्त्रि.)

जो किसी काम से कहीं जाकर असफल लौटे, उससे व्यंग्य में क.।

सांईं अंखियां फेरियां, बैरी मुलक जहान।
टुक इक झांकी मिहर दी, लक्खां कर्रे सलाम। (पं.)

ईश्वर जिससे विमुख होता है, संसार उसका बैरी हो जाता है, और जिस पर उसकी कृपा होती हे, सब उसे सिर झुकाते हैं।

सांईं अपने चित्त की, भूल न कहिये कोय।
तन लग मन में राखिये, जब लग कारज होय।

जब तक काम न हो जाए, तब तक अपना मनोविचार किसी पर प्रकट नहीं करना चाहिए।

सांईं इस संसार में, भांत भांत के लोग।
सब से मिल के बैठिये, नदी-नाव संजोग।

जैसे नदी पार होते समय एक नाव में सभी तरह के लोग इकट्ठे हो जाते हैं, वैसे ही इस संसार में भी सभी प्रकार के लोगों से काम पड़ता है, इस कारण सबसे मिलकर रहना चाहिए।

सांईं का घर दूर है, जैसे लंब खजूर।
चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकनाचूर।

ईश्वर का घर बहुत ऊंचा है, जैसे खजूर का पेड़। यदि वहां तक पहुंच सके, तो (प्रेम) रस पीने को मिलता है, और यदि (फिसलकर) गिर जाए, तो नष्ट हो जाता है।

सांईं का रख आसरा और वाही का ले नाम।
दो जग में भरपूर हों (तो) तेरे सगरे काम।

ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और उसी का नाम लेना चाहिए, तो दोनों लोकों में (मनुष्य के) सब काम सफल

होते हैं।

साईं का सुमरन करो, जो होयं संपूरन कार।
साईं भी सन्मुख मिले और भगत करे संसार।
ईश्वर का स्मरण करने से सब कार्य सफल होते हैं। ईश्वर भी मिलता है और संसार भक्त के रूप में याद करता है।

साईं के दरबार में, बड़े बड़े हैं ढेर।
अपना दाना बीन ले, जिसमें हेर न फेर।
ईश्वर के यहां किसी बात की कमी नहीं है, मगर तुम्हारे भाग्य में जो बदा है, वही तुम्हें मिलेगा। आशय यह कि जो तुम्हें मिले, उसी में संतोष करो, किसी से ईर्ष्या मत करो।

साईं के सौ खेल हैं
ईश्वर की लीला अद्‌भुत है, वह क्या किया चाहता है, पता नहीं चलता।

साईं को सांच प्यारा, झूठे का मालिक न्यारा
ईश्वर सच्चे को प्यार करता है, झूठे का कोई ईश्वर ही दूसरा है।

साईं घोड़ मर गए, गदहन आयो राज।
काग हाथ पै लेत हैं, दूर कियो है बाज।
योग्य का सम्मान न होना।

साईं जिसके साथ हो, उसको सांसा क्या?
छिन में उसके कार सब, दे भगवान बना।
ईश्वर जिसका सहायक हो, उसे किस बात का डर? भगवान उसके सब काम पल भर म बनाता है।

साईं जिसको राख ले, मारन हारा कौन?
भूत, देव, क्या आग हो, क्या पानी क्या पौन?
भगवान जिसकी रक्षा करता है, उसे कोई मार नहीं सकता। पौन=पवन, हवा।

साईं तेरा आसरा, छोड़े जो अनजान।
दर-दर हांडे मांगता, कौड़ी मिले न दान।
जो ईश्वर पर निर्भर नहीं करता, उसे मांगे से भीख भी नहीं मिलती।
हांडे=फिरता है।

साईं तेरी याद में, जिन तन कीन खाक।
सोना उसके रूबरू, चूल्हे की राख।
ईश्वर के ध्यान में जिसने अपना शरीर धूल बना डाला उसके लिए सोना चूल्हे की राख के समान है।

साईं तेरी सोहली और आदर करे न कोय।
दुर-दुर करें सहेलियां, मैं मुड़-मुड़ देखूं तोय। (स्त्रि.)
हे स्वामी ! मैं तो तुम्हारी ही दासी हूं, (फिर भी) कोई मेरा आदर नहीं करता। सब सखियां मुझे अपने से दूर भगाती हैं, और मैं मुड़-मुड़ कर तेरी ओर देखती हूं। भक्त का ईश्वर को उलाहना।

साईं तेरे आसरे, आन परे जो लोग।
उनके पूरे भाग हैं, उनके पूरे जोग।
जो ईश्वर की शरण में जाता है, वही भाग्यवान और योगी है।

साईं तेरे कारने, छोड़ा बलख बुखार।
नौ लख घोड़े पालकी, और नौ लख असवार।
हे प्रियतम ! मैंने तेरे लिए बलखबुखारा छोड़ा, लाखों घोड़े पालकी और लाखों सवार छोड़ दिए हैं—(मुझे तुम अपनी शरण में लो। भक्त का इश्वर के प्रति निवेदन।)

साईं तेरे कारने, जिन तज दिया जहान।
ठेठ किया बैकुंठ में, उसने जहां मकान।
हे ईश्वर ! तेरे लिए जो संसार को छोड़ देता है, उसे स्वर्ग मिलता है।

साईं तेरे नेह का, जिन तन लागा तीर।
वो ही पूरा साधु है, वो ही पीर फकीर।
जिसे ईश्वर से सच्चा स्नेह है, वही पूरा साधु और संत है।

साईं ते सच्चा रहो, बंदे ते रत भाव।
भावें लंबे केश रख, भावें घोंट मुड़ाव।
चाहे सिक्खों की तरह लंबे बाल रखो, चाहे हिंदुओं की तरह उन्हें कटवा डालो, पर ईश्वर के प्रति सच्चे रहो, और सबसे सद्‌भाव रखो।

साईं तो बिन कौन है, जो करै नवड़िया पार।
तू ही आवत है नजर, चहूं ओर करतार।
स्पष्ट।
नवड़िया=नाव।

साईं मोर आप बिरुझल, लोग दिहल पोचारा।
लात, मूका हम सहलौं, और सहलौं दू गारा। (स्त्रि.)
स्त्री का कहना—मेरा पति स्वयं मुझसे नाराज़ था, लोगों ने उसे शह दे दी। मैंने मार सही और गालियां भी सहीं। बलती आग में घी डालना। पोचारा (पुचारा)=भीगे कपड़े के पोंछने का काम। पतला लेप करने का काम।
पोचारा (पुचारा) देना=(मु.) खुशामद करना, बढ़ावा देना।

साईं राज बुलंद राज, पूत राज दूत राज
विधवा का कथन, क्योंकि पति के समय में उसे जो सुख प्राप्त था; वह अब पुत्र के समय में नहीं है। बुलंद=ऊंचा। दूत राज=निकृष्ट राज।

साईं साईं जीभ पर, और गरब, कपट मन बीच।
वह नर डाले जाएंगे, पकड़ नरक में खींच।
जो मन के कपटी और अहंकारी हैं, और ऊपर से ईश्वर का नाम लेते हैं, वे नरक में जाते हैं।

साईं सांसा मेट दे, और न मेटे कोय।
वाको सांसा क्या रहा, जा सिर साईं होय।
जिसका ईश्वर सहायक है, उसे किसी बात का भय नहीं। सांसा=संशय।

सांई से जो फिर गया, उसको लाभ न होय।
वह तो यूं ही जायगा, जनम अकारथ खोय।
जो ईश्वर से विमुख है, उसका जीवन वृथा है।

सांई से सांची कहूं, बाज बाज रे ढोल।
पंचन मेरी पत रहे, सखियों में रहे बोल।
हे प्रियतम ! मैं तेरे प्रति सच्ची रहूं (ढोल इसकी घोषणा करे या साक्षी दे), पंचों में मेरी इज्ज़त रहे और सखियों में भी मेरी बात।

सांच को आंच नहीं
सच्चे को आग नहीं जलाती, अर्थात उसे किसी बात का भय नहीं होता।
(प्राचीन काल में किसी व्यक्ति के दोष या निर्दोष होने की परीक्षा उसे अग्नि पर चला कर अथवा जलता हुआ तेल, पानी या लोहा उसके बदन से छुआकर करते थे। कहावत उसी संदर्भ में कही गई है।)

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके मन में सांच है, ताके मन में आप।
जिसके मन में सत्य है, उसके मन में ईश्वर का वास होता है।

सांची बात गोपालै भावे
ईश्वर को सत्य प्रिय है।

सांची बात सादुल्ला कहे, सब के मन से उतरा रहे
सच बात किसी को अच्छी नहीं लगती।

सांचे गुरु का बालका, मरे न मारा जाय
जो सच्चे गुरु का चेला है, वह किसी से डरता नहीं।

सांचों कोई न मानें, झूठों जग पतपाय
सच बात कोई नहीं मानता, झूठ सब मान लेते हैं।

सांझा जाए और भोर आए, वह कैसे न छिनाल कहाये
भ्रष्टाचारिणी के लिए क.।

सांझी चली सांझ से, साथ बसंता पूत।
माधो भी तो जात है, बांध कमर के सूत।
स्पष्ट।
(किस्सा है कि किसी गांव में माधो नाम का एक गड़रिया रहता था। उसकी स्त्री का नाम सांझी और लड़के का नाम बसंता था। जब उस पर बहुत कर्ज़ा हो गया और लोगों ने कड़ा तक़ाज़ा किया, तो उसने कहा—"मैं भागूंगा नहीं और जो जाऊंगा तो कहकर जाऊंगा।" एक दिन होली के दिनों में स्वांग बनाकर और उक्त दोहा सबको सुनाकर, वह चंपत हो गया।)
बांध कमर के सूत=कमर से फेंटा बांध कर।

सांटे की सगाई और ब्याजू रुपए का अहसान क्या? (व्य.)
बदले का ब्याह और ब्याज पर लिये गए रुपए में किसी का क्या अहसान ?
(सांटे की सगाई या ब्याह उसे कहते हैं, जिसमें किसी के लड़के के साथ अपनी लड़की का ब्याह करते समय बदले में अपने लड़के का ब्याह उसकी या उसके किसी रिश्तेदार की लड़की से कर देते हैं।)

सांटे की सगाई सेधे, तेल की मिठाई सेधे
बदले का ब्याह और तेल की मिठाई, दोनों ही खराब होती हैं।

सांप और चोर की धाक बड़ी होती है।
दोनों से डर लगता है, फिर चाहे वे कोई हानि न करें।

सांप और चोर दबे पर चोट करते हैं
दोनों से डर लगता है, फिर चाहे वे कोई हानि न करें। इन्हें जब अपने ऊपर आक्रमण का कोई भय होता है, तभी वे आक्रमण करते हैं।

सांप का काटा पानी नहीं मांगता
क्योंकि उसके काटने से जल्दी मौत आ जाती है। धूर्त जिसे अपने चक्कर में फंसा लेता है, वह फिर पनपता नहीं।

सांप का काटा रस्सी से डरता है
एक बार कोई कटु अनुभव हो जाने पर मनुष्य उस प्रकार के सामान्य मामले में भी फिर बहुत सावधान रहता है।

सांप का काटा सोवे, बिच्छू का काटा रोवे
सांप के काटने से आदमी बेहोश हो जाता है और मर भी जाता है; पर बिच्छू का ज़हर तेज जलन पैदा करता है, जिससे रुलाई आती है।

सांप का बच्चा संपोलिया
साप का बच्चा भी सांप जैसा ही जहरीला होता है। जब किसी दुष्ट का लड़का भी दुष्टता करे, तब क.।

सांप का सिर भी कभी काम आता है
किसी वस्तु को निकम्मी समझ कर फेंक नहीं देना चाहिए।

सांप का सिर ही कुचलते हैं
इसलिए कि फन में ही जहर होता है और फन के कुचलने से ही वह मरता है।
सांप की तो भाप भी बुरी, (लो. वि.)
उसकी हवा भी बुरी।
दुष्ट से दूर रहना चाहिए।
सांप की-सी केंचली झाड़ दी
लंघन के बाद रोगी को जब आराम हो जाता है, तब कहते हैं कि उसका नया शरीर बन गया।
सांप के मुंह में छछूंदर, निगले तो अंधा, उगले तो कोढ़ी
दोनों तरह से मुसीबत। कोई काम करो तो भी आफ़त, न करो तो भी आफ़त।
(कहा जाता है कि छछूंदर अगर सर्प के मुंह में फंस जाय और सर्प यदि उसे निगल ले, तो वह अंधा हो जाता है छोड़ दे तो कोढ़ी।)
सांप निकल गया, लकीर पीटा करो
अवसर पर काम न करके बाद में करने से कोई लाभ नहीं होता।
सांप मरे, ना लाठी टूटे
(1) सांप तो मर जाए, पर लाठी न टूटे। अपना काम भी बन जाए और कोई हानि भी न हो।
(2) सांप भी न मरे और लाठी भी न टूटे; अर्थात दो मनुष्यों के बीच का झगड़ा आसानी से निपट जाए।
(3) युक्ति पूर्वक काम करने के लिए भी क.।
सांप, सतावा, धोकिया, तीनों जीउ निकास।
जब लग पार बसाय तो, बैठ न इनके पास।
सांप, शत्रु और ठग, इनसे जहां तक बन सके; दूर ही रहना चाहिए।
जीउ निकास=प्राण लेने वाले।
सांप सब जगह टेढ़ा चलता है, पर अपने बिल में सीधा जाता है।
जहां जैसा अवसर हो, वहां वैसा ही बर्ताव करना चाहिए।
सांप, सिंह, जित देह पखार्ले,
ढोर मनुख हालन ज्यों हालें, (ग्रा.)
साप और सिंह जहां होते हैं, वहां सब जीव भय से कांपते रहते हैं।
हालन=डोलन, भूकंप।
सांपों की सभा में जीभों की लपालप
वहां और होगा क्या?
जहां बहुत से गप्पी आदमी इकट्ठे हो गए हों और कोरी बकवास हो रही हो, वहां क.।
सांभर जाय, अलोना खाय
इससे बढ़कर मूर्खता और आलस्य की बात कुछ हो नहीं सकती।
दे.—तेली खसम किया...।
सांभर=प्रसिद्ध झील, जहां के खारे पानी से नमक बनता है।
सांभर में नोंन का टोटा
जिस वस्तु की जहां प्रचुरता है, वहां के लोग उसी के अभाव से कष्ट पाएं, तब क.।
सांभर में पड़ा सो सांभर हुआ
साभर झील का पानी इतना खारा है कि उसमें जो वस्तु गिरती है, वह भी गलकर नमक बन जाती है। आशय यह है कि किसी वस्तु (या समाज) के प्रबल प्रभाव से अपने को बचाना बड़ा कठिन होता है।
सांस सांस में जीतब घटे, बाधा मूल न होय।
इस जीतब पर फूल कर, मत भूलो हरि कोय।
हरेक सांस के साथ जीवन घट रहा है, इसमें कोई बाधा नहीं पड़ती, इस जीवन पर घमंड करके ईश्वर को नहीं, भूलना चाहिए।
सांसा भला न सांस का, और बान भला ना कांस का
कांस की रस्सी जिस तरह अच्छी नहीं होती, उसी तरह एक क्षण के लिए भी भय (या चिंता) अच्छा नहीं।
सांसा मत कर मूरखा, सिर पर है करतार।
वोही है सब जगत का, सांसा मेटनहार।
जब ईश्वर जैसा सहायक मौजूद है, तब चिंता किस बात की? वही संसार के सब कष्टों को दूर करने वाला है।
सांसा सांई मेट दे, और न मेटे कोय।
जब हो काम संदेह का, तो नाम उसी का लेय।
ईश्वर ही मन के संशय को दूर करता है। जब कोई दुविधा की बात हो, तब उसी का स्मरण करना चाहिए।
सांसा सुध-बुध सभी घटावे, सांसा सुख का खोज मिटावे
संशय (या डर) बुरी चीज है। संशय में पड़े मनुष्य को सुख नहीं मिलता।
साईसी इल्म दरयाव है
साईसी करने के लिए भी अक्ल चाहिए। सभी पेशों में कुछ-न-कुछ रहस्य की बात होती है। मूर्ख से व्यंग्य में क.।
साईसों का काल मुंशियों की बहुतात
साईस कम और मुंशी बहुत मिलते हैं। पढ़े-लिखों में

वेकारी।

साख गए फिर हाथ न आए

लेन-देन के बारे में एक बार विश्वास उठ जाने पर फिर नहीं लौटता।

साख लाख से भली, (व्य.)

लाखों रुपयों की अपेक्षा साख बड़ी चीज है।

साग में शोरुवा, अंडे में पानी, क्यों बीबी पटानी, (स्त्रि.)

फूहड़पन से काम करना।

साजन आवत हूं सुनो, कुछ नीरे कुछ दूर।
पलकन ही से झाड़ लूं उन पांवन की धूर। (स्त्रि.)

सुना है प्रियतम आ रहे हैं, नज़दीक ही हैं, या दूर हों; आने पर पलकों से उनके पैरों की धूल साफ़ करूंगी। प्रेम की अधिकता।

साजन दुखिया कर गए, और सुख को ले गए साथ।
अब दुख दे न्यारे भये, बहुर न पूछी बात। (स्त्रि.)

स्पष्ट।

वहुर=फिर

साजन पीत लगाय के, दूर देस जिन जाव।
वसों हमारी नागरी, हम मांगे तुम खाव। (स्त्रि.)

स्पष्ट।

साजन! यों मत जानियो, तोहि बिछरत मोहि चैन।
आले बन की लाकड़ी, सुलगत हूं दिन रैन। (स्त्रि.)

स्पष्ट।

आले बन की=हरे जंगल की।

साजन वह दिन कौन थे, जो सुख से लाये पीत।
अब दुख दे न्यारे भये, कौन गांव की रीत। (स्त्रि.)

स्पष्ट।

साजन साजन मिल गए, झूठे पड़े बसीठ, (स्त्रि.)

लड़ाई-झगड़े के बाद दो मित्र या सगे-संबंधी तो आपस में मिल जाते हैं, पर उनका पक्ष लेने वाले व्यर्थ में मूर्ख बनते हैं।

साजन हम तुम एक हैं, देखत ही के दोय।
मन से मन को तौल ले, दो मन कभी न होय।

स्पष्ट।

मन शब्द के दो अर्थ हैं :

(1) सुहृदय। (2) चालीस सेर की तौल।

साझा जोरू खसम ही का भला

साझा अच्छी चीज नहीं।

साझा भला न बाप का, ताव भला न ताप का, (व्य.)

साझे का काम बाप के साथ भी अच्छा नहीं।

साझा सधे न बाप का, (व्य.)

साझा बाप के साथ भी नहीं निभता।

साझा सधे न बाप का, है रासे की खान।
घर न्यारा कर बालमा, बात मेरी तू मान। (स्त्रि.)

स्त्री पति से कह रही है कि बाप के साथ हम लोगों की नहीं बन सकती। अच्छा है, हम लोग अलग ही रहें।

साझे का काम, उखाड़े घाम

साझे के काम में हमेशा झगड़ा हुआ करता है।

साझे की मां गंगा न पावे, (हिं.)

लड़के साझे की मां के अंतिम संस्कार की भी परवाह नहीं करते। जब बाप मरा तो सारी संपत्ति वंट गई, केवल मां साझे में रही। जब वह मरी तो उसे गंगा नहीं मिली।

साझे की सुई सांग में चले

साझे की सुई लट्ठे पर चलती है। अर्थात इस बात का झगड़ा होने पर कि उसे कौन ले चले, लट्ठे से बांधकर ले जाते हैं।

साझे की हांड़ी चौराहे में फूटे

साझे के काम की बड़ी दुर्गति होती है।

साझे की होली सब से भली, (हि.)

मिल-जुलकर जो उत्सव मनाया जाता है, वही अच्छा होता है।

(भाव यह है कि उत्सव मनाने का काम ही ऐसा है जो मिल-जुलकर किया जा सकता है।)

साठ गांव बकरी चर गई

कोई बड़ा नुकसान हो जाने पर क.।

(कथा है कि किसी समय कोई एक राजा शिकार से बहुत थका हुआ लौट रहा था और रात हो जाने के कारण किसी ग़रीब आदमी की झोंपड़ी में आ टिका। उस ग़रीब ने राजा की यथाशक्ति आवभगत की। प्रातःकाल चलते समय उसकी सेवा से संतुष्ट होकर साठ गांव का दान एक पत्ते पर लिखकर उसे दे दिया। दुर्भाग्यवश उसकी एक बकरी ने उस पत्ते को खा डाला। दूसरे दिन वह बेचारा रोता कलपता राज-दरबार में पहुंचा और उसने वहां चिल्लाकर उक्त वाक्य कहा। राजा ने उसे पहचान लिया। और उसके नाम दूसरा दानपत्र लिख दिया।)

साठ सास, ननद हों सौ; मां की होड़ न इन सूं हो, (स्त्रि.)

मां की बराबरी न तो सास ही कर सकती है और न ननद ही।

(फिर वे चाहे जितनी अच्छी क्यों न हों।)

साठा नाठा

(1) गाली।

(2) ऐसा आदमी जिसके आगे-पीछे कोई न हो।

नाठा=(सं. नष्ट) भाग्यहीन पुरुष।

साठा सो पाठा, बीसी सो खीसी

साठ वर्ष का होने पर भी पुरुष जवान रहता है और स्त्री बीस वर्ष में ही बुड्ढी दिखाई देने लगती है।

साढ़ा टिढ़ गड़बड़ाया, हगन दा वेला आया, (पं.)

पेट गड़बड़ हो तो पाखाने हो जाना चाहिए।

साढ़ी की साख और पीपल की लाख, (कृ.)

रबी की फ़सल और पीपल की लाह ये दोनों अच्छी होती हैं।

सात तवों से मुंह काला करना, (स्त्रि.)

सात घरों में जाकर बैठना, (सात खसम करना)।

(1) भ्रष्ट स्त्री के लिए क.।

(2) कोई बहुत बुरा निंदनीय काम करने वाले से भी।

सात पांच की लाकड़ी, एक जने का बोझ

कई आदमियों के हाथ की एक-एक लकड़ी मिलकर एक आदमी के लिए बोझ हो जाती है। सबकी सहायता से जो काम आसानी से हो जाता है, वही एक आदमी के लिए मुश्किल पड़ जाता है।

सात पांच पकुआ न, एक गूलर, (पू.)

कई पकुओं से एक गूलर अच्छा।

एक लड़का अगर सपूत निकले, तो वही बहुत।

(पकुआ एक बहुत बेस्वाद जंगली फल होता है।)

सात पांच मिल कीजे काज, हारे जीते न आवे लाज

कोई भी (शुभ) कार्य दस-पांच लोगों के साथ मिलकर अथवा उनसे सलाह लेकर करना चाहिए। वैसा होने से काम अगर बिगड़ भी जाए, तो शर्मिंदगी नहीं उठानी पड़ती।

सात मामा का भानजा, न्यौता ही न्यौता फिरे; (हिं.)

उसे फिर कोई भोजन नहीं कराता, हरेक का यह ख्याल रहता है कि वह किसी दूसरे के यहां खा आया होगा; इसलिए वह भूखा ही जाता है। जिस काम के बहुत से लोग जिम्मेवार होते हैं, वह फिर अधूरा ही पड़ा रहता है। सबका काम किसी का भी काम नहीं समझा जाता।

सात मामा का भानजा, भूखा ही भूखा पुकारे

दे. ऊ.।

सात सौ चूहे खाके बिल्ली हज्ज को चली

दे. सत्तर चूहे...।

सात हाथ हाथी से रहिये, पांच हाथ सिंगहारे से।
बीस हाथ नारी से रहिये, तीस हाथ मतवारे से।

हाथी से सात हाथ, सींग वाले जानवर (बैल आदि) से पांच हाथ, स्त्री से बीस हाथ और शराबी से तीस हाथ दूर रहना चाहिए।

साथ के लिए भात छोड़ा जाता है

(यात्रा में) किसी का साथ मिल रहा हो, तो उसके लिए भोजन भी छोड़ देना चाहिए।

साथ कोई आया, न कोई जाए

मनुष्य अकेला जन्म लेकर आता है और मरने पर अकेला ही जाता है।

साथ कौन किसी के जाता है

मरने पर कोई किसी के साथ नहीं जाता।

साथ जोरू खसम का

किसी का जीवनपर्यंत सच्चा साथ यदि होता है तो वह पति और पत्नी का ही।

साथ तो हाथ का दिया ही चलता है

मरने पर जो दान दिया जाता है, वही साथ जाता है।

साथ सोओ, पेट का दुख, (स्त्रि.)

साथ सोने का दुख यह है कि गर्भ रह जाता है।

साथ सोई बात खोई, (स्त्रि.)

स्पष्ट।

साथ सोना और मुंह छिपाना, (स्त्रि.)

जिससे कोई बात छिपी न हो, उससे पर्दा करना।

साथी ऐसा चाहिए, जो सारा साथ निभाय।
साथ न उसका लीजिए, जो दुख बिच काम न आय।

जो दुख में काम आए, वही सच्चा साथी है।

साथी तो वोही भला, जो धुर दे तुझां पहुंचाय।
वाको साथी मत कहो, जो छोड़ अधम मां जाय।

साथी तो वही सच्चा है जो ठिकाने तक पहुंचा दे। जो बीच में ही छोड़ चला जाए, उसे साथी नहीं समझना चाहिए।

साध खुटाई ना करें, ना मूरख से पीत।
धातुर तो बैरी भला, मूरख भला न मीत।

सज्जन कभी किसी की बुराई नहीं करते, वे मूर्ख से मित्रता भी नहीं करते। समझदार तो शत्रु अच्छा, मूर्ख मित्र अच्छा नहीं।

साध चले बैकुंठ को, बैठ पालकी माहिं।
रस्ते में से आए फिर, भांग तमाखू नाहिं।

(1) जो साधु गांजा, चरस आदि वहुत पीते हैं, उन पर व्यंग्य।

(2) तमाखू की तारीफ में भी क.।

साधन पीई, संतन पीई, पीई कुंवर कन्हाई।
जो विजया की निंदा करे, उसे खाय कालिका माई।

भांग पीने वाले कहा करते हैं।

साध भगत की करे जो सेवा, पार तुरत हो वाका खेवा

जो साधु-संतों की सेवा करते हैं, उनका जल्दी बेड़ा पार होता है।

साध भगत दें जिन्हां असीस; सुखी रहें वे बिस्वे-बीस, (ग्रा.)

साधु-संत जिन्हें आशीर्वाद देते हैं, वे पूर्ण सुखी रहते हैं।

साध भगत हों जिस पर छो, भूल भला न उसका हो

साधु जिस पर कुपित हो जाते हैं, उसका भला नहीं होता।

साध भये तो क्या हुआ, गत मत जानें नाहिं।
तुलसी पेट के कारने, साध भये जग माहिं।

ऐसे साधु किस काम के, जिन्हें किसी विषय का कोई ज्ञान ही न हो, और जो केवल पेट के लिए साधु हों।

साध संत की टहल कर, कर लीजे कछु धर्म।
तुलसी फेर न मिलेगा, बार-बार यह जन्म।

स्पष्ट।

साध संत की टहल को, उठो न बैठो जाय।
तुलसी लालच लेन को, दौड़ा-दौड़ा जाय।

साधु संतों की सेवा न करके जो दिनरात लोभ में पड़े रहते हैं, उन पर क.।

साधु मिलन अरु हरि भजन, दया, धरम, उपकार।
तुलसी या संसार में, पांच रतन हैं सार।

साधुओं का सत्संग, ईश्वर का भजन, दया, धर्म और उपकार; संसार में ये पांच वस्तुएं ही मुख्य हैं।

साधू कहिये सूप को, पाया फेंके हिलोर।
ओछी कहिये चालनी, भूसी राखे बटोर।

सज्जन सूप की तरह होते हैं जो भूसी को फेंककर सार रख लेता है; दुर्जन चलनी की तरह होते हैं जो भूसी बटोर कर सार फेंक देती है।

साधू की जिन संगत कीनी, उन्हीं कमाई पूरी कीन्हीं

जो साधुओं का सत्संग करते हैं, उन्हीं का जीवन सफल है।

साधू जन रमते भले दाग न लागे कोय

साधु को हमेशा चलते-फिरते रहना चाहिए। उससे चित्त निर्मल रहता है।

साधू तो वोही भला, जो भर साधू का भेस।
पूजा करता रब्ब की, हांडे देस विदेस। (पं.)

स्पष्ट।

रब्ब=ईश्वर।

हांडे=फिरे।

साधू बच्चे, बहुते झूठे थोड़े सच्चे

साधुओं में झूठे वहुत और सच्चे थोड़े ही होते हैं।

साधू दुखिया सब संसारा, जो सुखिया सो राम अधारा

जो ईश्वर के भरोसे रहता है, वही इस संसार में सुखी है।

साधू वही जो साधन करे; क्रोध, लोभ और मोह को हरे

स्पष्ट।

साधू वही सराहिये, जाके हिरदे गांठ।
लड्डू ले भीतर धरे, चरनामृत दे बांट।

साधु तो वही प्रशंसा के योग्य है, जो सार की वस्तु को हृदय की गांठ में बांधकर रखे और जो बांटने योग्य है, वह दूसरों को भी बांटे।

साधू वही सराहिये, जो दुखें दुखावें नाहिं।
फल फूलहिं छेड़े नहीं, रहे वगीचे माहिं।

स्पष्ट।

साधू सत कर बैठ जा, वही साधु है टीक।
वाको साधू मत कहो, जो घर-घर मांगे भीक।

स्पष्ट।

साधू हो कर कपट जो राखे, वह तो मजा नरक का चाखे

स्पष्ट।

साधू हो कर करे जो चोरी, उसका घर है नरक की मोरी

स्पष्ट।

मोरी=नाबदान।

साधू हो कर करे जो जारी, उसकी हो दो जग में ख्वारी

साधु होकर जो दुराचार करता है, वह दोनों लोकों में कष्ट पाता है।

जारी=परस्त्रीगमन।

साधू होकर देवे बुत्ता, उसको जानो पेट का कुत्ता

स्पष्ट।

बुत्ता=धोखा।

साधों को क्या सवाद गुड़ नहीं बताशे ही सही

किसी साधू ने एक स्त्री से थोड़ा गुड़ मांगा। स्त्री

बोली—महाराज, गुड़ तो नहीं है, बताशे हैं। तब साधु ने उक्त बात कही। ढोंगी साधुओं पर व्यंग्य।

साधों ने काम साधपन से, कुत्तन ने काम कुत्तापन से
सज्जन सज्जनता से काम लेते हैं, और दुर्जन दुर्जनता से।

साबन काटे मैल को, जस तन को काटे तेग
स्पष्ट।
तेग=तलवार

सावन थोड़ा, पानी गंदला, क्या मलमल कर धोता है।
अंदर दाग लगा कुदरत का जब देखो जब रोता है।
मनुष्य की स्वाभाविक बुराइयां आसानी से दूर नहीं होतीं।

साबुन दिए मैल कटे, गंगा नहाये पाप, (हिं.)
साबुन से जैसे मैल दूर होता है, वैसे ही गंगा-स्नान से पापों का क्षय होता है।

साबास तेरे सऊर को! सुखा पका लिया।
सक्कर को घोलघाल के, सरवत बना लिया।
जो तालव्य 'श' का प्रायः 'स' उच्चारण करते हैं, उनका मज़ाक।

साबित क़दम को सब जगह ठांव
दृढ़ता से काम लेने वाले के लिए हर जगह आश्रय है।

साबित नहीं कान, बालियों का अरमान, (स्त्रि.)
किसी वस्तु का उपयोग करने के योग्य न होते हुए भी उसकी इच्छा करना।

साबिर व शाकिर दोनों मन्नती हैं, (मुं.)
धैर्यवान और उपकार मानने वाला, ये दोनों पुण्यात्मा होते हैं।

सामने पानी भरा कलसा आ जाय तो अच्छा सगुन होता है, (लो. वि.)
स्पष्ट।

सारंग ने सारंग गहो, सारंग बोलो आय।
जो सारंग सारंग कहे, सारंग मुंह से जाय।
पहेली। सारंग शब्द के यहां मोर, सर्प, बादल, मोर की ध्वनि, आदि कई अर्थ हैं। उनके अनुसार दोहे का अर्थ यह है—एक मोर ने सर्प को पकड़ लिया। इतने में बादल गरज उठा। अब अगर मोर बादलों की आवाज़ सुनकर (हर्ष से) कूकता है, तो सर्प उसके मुंह से निकल जाएगा।
(सारंग का एक अर्थ मेंढक भी है, जिससे दोहे का इस तरह एक दूसरा अर्थ भी लगाया जा सकता है कि एक सर्प ने मेंढक को पकड़ लिया। इतने में मोर बोल उठा। अब अगर सर्प (घबराकर) अपना मुंह खोलता है, तो मेंढक भाग जाएगा।

सार पराई पीर की क्या जाने अनजान?
अनुभवहीन आदमी दूसरे के कष्ट की गहराई को नहीं समझ सकता।

सारस की-सी जोड़ी
दो घनिष्ठ मित्र, या दो सगे भाई, जिनमें आपस में बहुत प्रेम हो।
(कहते हैं सारस पक्षी का जोड़ा एक साथ रहता है और कभी बिछुड़ता नहीं।)

सारस की-सी जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी
दो बुरे आदमी, जो हमेशा साथ रहें।

सार सरावत ना करें, ब्याह काज के बीच।
इसमें धन को यों समझ, जैसे कंकर कीच।
ब्याह के काम में कंजूसी नहीं करनी चाहिए। उस तरह के काम में पैसे को तुच्छ समझे।
(ब्राह्मणों का उपदेश अपने जजमानों को, जिसमें उन्हें खूब दान-दक्षिणा मिले।)

सार खेल तक़दीर का है
सुख या दुख भाग्य से होता है।
(सं.—भाग्यं फलति सर्वत्र।)

सारा गांव जल गया, काले मेघा पानी दे
गांव जल जाने पर बादलों से पानी मांगना। हानि हो जाने पर उपाय सोचना।

सारा घर जल गया जब चूड़ियां पूछीं, (स्त्रि.)
दे.—घर जल गया, तब...।

सारा जाता देखिये तो आधा दीजे बांट
सारी संपत्ति नष्ट हो रही हो, तो उसमें से आधी बांट कर यश लूट लेना चाहिए।

सारा धड़ देख नाचे मोरवा, पांव देख लजाय
स्पष्ट। मोर के पैर भद्दे होते हैं।

सारा जाता देखिये तो आधा दीजे बांट
सारी संपत्ति नष्ट हो रही हो, तो उसमें से आधी बांटकर यश लूट लेना चाहिए।

सारा धड़ देख नाचे मोरवा, पांव देख लजाय
स्पष्ट। मोर के पैर भद्दे होते हैं।

सारा नरबदा फिरदी, कुआं देख डरदी, (पं.)
कोई स्त्री अपने प्रेमी से मिलने के लिए नर्मदा तो पार कर गई, पर कुआं देखकर भयभीत हो गई। स्त्री-चरित्र पर क.।

सारा शहर जल गया, बीबी फ़ातमा को ख़बर ही नहीं, (स्त्रि.)
अड़ोस-पड़ोस की कोई ख़बर न रखना। अपने रंग में ही मस्त रहना।

सारी उमर काठ में रहे, चलते वक्त पांव से गए
कोई आदमी जिंदगी भर लकड़ी के कुंदे में पड़ा रहा, पर जब छोड़ा गया तो फिसल कर गिरने से उसका पैर टूट गया, जिससे वह फिर चल ही नहीं सका। भाग्यहीन के लिए क.।
(प्राचीन काल में अपराधी को जब सज़ा दी जाती थी, तो उसका पैर लकड़ी के कुंदे में फंसा दिया जाता था, जिसे 'काठ में देना' कहते थे।)

सारी उम्र भाड़ ही झोंका
(1) बेशऊर से व्यंग्य में क.।
(2) बदकिस्मत से भी क.।

सारी कुड़ियां मर गईं, नानी से राह चले?
क्या जवान औरतें मर गईं, जो नानी के पीछे दौड़ते हो?

सारी ख़ुदाई एक तरफ़, जोरू का भाई एक तरफ़
साले की लोग बड़ी इज्ज़त करते हैं, इसीलिए व्यंग्य में क.।
सारी सृष्टि एक ओर, ईश्वर की महिमा एक ओर।

सारी चोट निहाई के सिर
घर के बड़े या ज़िम्मेदार के सिर ही सारी मुसीबत आती है।
निहाई=सोनारों और लोहारों का लोहे का वह चौकोर औज़ार, जिस पर वे धातु को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं।

सारी देग में एक ही चावल देखते हैं, (मु.)
हांड़ी का एक चावल देखकर ही पता लगा लिया जाता है कि सब चावल गल गए अथवा नहीं।
(1) नमूना देखकर ही माल का पता चल जाता है कि वह कैसा होगा।
(2) एक छोटी-सी बात से मन का सारा भेद मालूम हो जाता है।

सारी रात कहानी सुनी, सुबह को पूछे : 'जुलेखा औरत थी या मर्द', (मु.)
ध्यान से किसी की बात न सुनना या सुनकर भूल जाना अथवा समझाने से न समझना।
(जुलेखा फ़ारस की एक प्रसिद्ध प्रेम-कथा की नायिका है।)

सारी रात मिमियानी और एक ही बच्चा ब्यानी, (स्त्रि.)
चिल्ल-पों बहुत, पर काम कुछ नहीं।

सारी रात रोई और एक ही मरा
बहुत परिश्रम का भी कुछ फल न निकलना।

सारी रात सोये अब सुबह को भी न जागें
स्पष्ट।

सारी रामायन सुन के पूछा : 'सीता किसकी जोरू थी?', (हिं.)
स्पष्ट। दे.—सारी रात कहानी...।

सारे डील में ज़बान ही हलाल रे
सारे शरीर में जीभ ही पवित्र है।
(इसलिए हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए।) हलाल=धर्मसंगत। जायज़।

सारे दिन ऊनी ऊनी, रात को चरखा पूनी
बे-समय का काम करना।
ऊनी ऊनी=उनींदी, आलस्य में भरी हुई।
(चर्खा दिन में ही कातते हैं; रात में कातना अशुभ माना जाता है।)

सारे दिन पीसा पीसा, चपनी भर भी न उठाया, (स्त्रि.)
परिश्रम का कोई विशेष फल नहीं।
निकम्मापन।

सारे धड़ की सुई निकाले, सो कोई नहीं, आंख की सुई निकाले सो सब कोई (स्त्रि.)
दे.—आंख की सुइयां...।

सारे नगर में दो ही, धुनक्कर या भुनक्कर
कोई जब ओछे लोगों में ही बैठे, तब क.। जाति-विद्वेष टपकता है।
धुनक्कर=धुनाई करने वाला।
भुनक्कर=भड़भूंजा।

सारे शहर में ऊंट बदनाम
बदनाम आदमी का हर काम में नाम लिया जाता है।

साली आधी निहाली, सलहज पूरी जोय, (मु.)
साली (पत्नी की बहिन) और सलहज (साले की स्त्री) इनसे हंसी-दिल्लगी का रिवाज़ है, इसीलिए क.।
निहाली=निहाल करने वाली, आनंद देने वाली।

साली निहाली, चहिये ओढ़ी, चहिये बिछा ली
दे. ऊ.।

साव का साथ भला, और रात का घात भला
मित्रता धनी की अच्छी होती है और दांवपेच का या भेद का काम रात में अच्छा होता है।

सावन की न सीत भली, जातक की न पीत भली
सावन के महीने में दही खाना और छोटे लड़के से प्रेम करना अच्छा नहीं।

सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझे
जो सावन में अंधा हो जाता है, उसे हरे रंग की ही स्मृति रह जाती है।
हर आदमी दूसरों का माल अपना जैसा ही समझता है। व्यंग्य में उन लोगों के लिए, जो अनुचित उपाय से बहुत-सा पैदा कर लेते हैं और यह समझते हैं कि दूसरों के पास भी उसी तरह का मुफ़्त का पैसा होगा।

सावन के रपटे और हाक़िम के डपटे का कुछ डर नहीं
सावन में वर्षा के कारण फिसलन हो जाती है और लोग अक्सर फिसल कर गिर पड़ते हैं। इससे सावन में फिसल कर गिरने में कोई लज्जा की बात न होनी चाहिए। इसी तरह हाक़िम के डपटने का भी बुरा नहीं मानना चाहिए, क्योंकि हाक़िम सबको डपटते रहते हैं।

सावन कैसा सांथरा? पूह मास कैसा पांखड़ा
सावन के महीने में चटाई और पूस के महीने में पंखा बेकार है।
(जिन लोगों के कच्चे घर होते हैं, वे वर्षा ऋतु में चारपाई पर ही लेटते हैं, नीचे नहीं लेटते।)

सावन खीर जो खाये सकारे, मिरग ताल कुर चालें मारे, (ग्रा.)
सावन में जो (नित्य) सुबह खीर खाता है, वह हरिन की तरह उछलता फिरता है। (खूब तंदुरुस्त रहता है।)

सावन घोड़ी, भादों गाय, माघ मास में भैंस वियाय; जी से जाय, या खसमें खाय
लोगों का विश्वास है कि अगर सावन में घोड़ी, भादों में गाय और माघ के महीने में भैंस वियावे तो वह या तो स्वयं मर जाती है या उसके मालिक का अनिष्ट होता है।

सावन मास चले पुरवैया, खेले पूत दला ले मैया, (कृ.)
सावन में पुरवैया चलने से सूखा पड़ता है, इसलिए किसान का लड़का बेकार रहता है और उसकी मां (ईश्वर से) कुशल मनाती है; क्योंकि अन्न पैदा नहीं होता।
(पुरवाई क्वार-कार्तिक में ही चलती है। सावन में नहीं चलती।)

सावन मास बहे पुरवैया, बेचे बरदा कीनो गैयां, (कृ.)
सावन में पुरवैया चलने से वर्षा नहीं होती, इसलिए किसान को चाहिए कि वह बैल बेचकर गाय खरीद ले, जिसमें उसकी गुज़र हो सके।

सावन में करेला फूला, नानी देख नवासा भूला
कोरी तुकबंदी। नानी नवासे को बहुत प्यार करती है, इसीलिए क.।

सावन में हुए सियार, भादों में आई बाढ़, 'ऐसी बाढ़ कभी नहीं देखी थी'
जब कोई छोटी उम्र का आदमी बड़े-बूढ़ों जैसी बातें करे या दूर की हांके तब क.। महीने भर की उम्र में सियार दूसरी बाढ़ कहां से देखेगा?

सावन शुक्ला सप्तमी, छिपके ऊगे भान।
कहे घाघ सुन घाघनी, बरखा देव उठान।
श्रावण शुक्ला सप्तमी को यदि बादल फटकर सूर्य निकले अर्थात रात में बादल रहें, तो देवोत्थान तक वर्षा होती है।

सावन साग, न भादों दही; क्वार मीन न कातिक मही
सावन में हरा साग, भादों में दही, क्वार में मछली और कार्तिक में मठा नहीं खाना चाहिए।

सावन सिवा उपास
सावन का महीना शिवजी के उपवास का है।
(हिन्दुओं में सावन का महीना शिव के व्रत के लिए पुनीत मानते हैं। विशेषकर सोमवार को व्रत रखते हैं।)

सावन सोवे सांथरे, माह खुरैरी खाट।
आपहि वह मर जाएंगे, जो जेठ चलेंगे बाट।
सावन में सील के कारण नीचे चटाई पर न सोवे, माघ में सरदी के कारण खुरैरी (खाली) चारपाई पर न सोवे, और जेठ में लू के कारण रास्ता न चले।

सावन हरे न भादों सूखे
सदा एक-सी हालत में।

सास उठलिया, बहू छिनलिया, ससुरा भाड़ झुकावे।
फिर भी दूल्हा सास-बहू को, सीता सती बतावे।
सास पराए पुरुष के साथ भाग गई है, बहू छिनाल है, ससुरा भाड़ झोंकता है, फिर भी दूल्हा अपनी मां और पत्नी को सीता जैसी सती बताता है। अपने घर के लोगों की कोई बुराई नहीं करना चाहता।

सास का ओढ़ना, बहू का बिछौना, (स्त्रि.)
सास जो कपड़े ओढ़ती है, बहू उन्हें बिछाती है। अर्थात बहू अपने को सास से बड़ा मानती है।
(जो होना नहीं चाहिए।)

सास की चेरी, सब की जिठेरी, (स्त्रि.)
सास की नौकरानी सबकी जिठानी। सब बहुएं उससे डरती हैं।

सास की रीसी पतोह के माथे, (स्त्रि.)
सास का गुस्सा बहू पर उतरता है।

सास के आगे बहू को क्या बढ़ाई?
सास के आगे वहू को (किसी काम के लिए) कैसे शाबाशी दी जा सकती है?

सास के ओढ़ना, पतोह के बिछौना, (पू., स्त्रि.)
दे.—सास का ओढ़ना...।

सास, कोठे पर की घास, (स्त्रि.)
कोई स्त्री सास के प्रति अवज्ञापूर्वक कह रही है।

सास कोठे, बहू चबूतरे, (स्त्रि.)
सास कोई काम छिपकर करती है, तो वहू खुल्लम-खुल्ला। वहू सास से बढ़कर है।

सास को नहीं पायंचे, बहू चाहे तंबू और सरांचे, (स्त्रि.)
सास के पास तो घाघरा नहीं है, और बहू तंबू और परदा चाहती है।
(इतना दिमाग उसका।)

सास गई गांव, बहू कहे 'मैं क्या-क्या खाऊं'? (स्त्रि.)
सास के जाने पर वहू की मौज़ रहती है। मनचाहे सो करती है।

सास झांके टुईं-टुईं, बहू चली बैकुंठ, (स्त्री)
सास चुपचाप खड़ी देख रही है और बहू तीर्थयात्रा को चल दी है। उस वहू के लिए ताने में कहा गया है, जो सास की ज़रा भी परवाह नहीं करती, और जहां भी जी चाहता है, वहां सैर-सपाटे के लिए चली जाती है।

सासड़ कारन बैद बुलाया, सौक कहे तेरा पगड़ौ आया, (स्त्रि.)
सास के लिए वैद्य बुलाया, सौतिन कहती है, तेरा यार आया।
(सौतियाडाह ऐसा ही होता है।)

सासड़ सांसा मत करै, देख थुड़ैरा काम।
थोड़े को बहुता करे, देन लगे जब राम। (स्त्रि.)
कोई स्त्री सास से कह रही है कि रोज़गार मंदा है, तू इसकी चिंता मत कर। भगवान को जब देना होगा, तो (इसी) थोड़े में बहुत देंगे।

सास न नंदी, आप ही आनंदी, (स्त्रि.)
घर में न सास है न ननद। अकेली मौज़ में है।
(सास की तरह ननद भी बहू के लिए एक विपत्ति होती है।)

सास बहू की हुई लड़ाई, करै पड़ौसिन हाथापाई, (स्त्रि.)
सास और बहू की लड़ाई होने पर पड़ोस की औरतें बीच में आ कूदती है।
(झगड़े में मज़ा लेती हैं।)

सास बहू की हुई लड़ाई सिर को फोड़ मरी हमसाई, (स्त्रि.)
सास बहू की लड़ाई में पड़ोसिन का सिर फूटता है। वह जिसका भी पक्ष लेती है, वही उससे अप्रसन्न हो जाता है। दूसरे के झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए।

सास बिन कैसी ससराल? लाभ बिन कैसी माल? (स्त्रि.)
सास के बिना (जमाई के लिए) ससुराल व्यर्थ है और लाभ के बिना रोज़गार।

सास मर गई अपनी अखाह तूंबे में छोड़ गई, (स्त्रि.)
मर जाने पर भी सास की आत्मा बहू को कष्ट देती है।
(कथा है कि कोई बूढ़ी औरत अपनी बहू को बहुत तंग किया करती थी। जब वह मरने लगी तो बहू से बोली कि देखो, मरने के बाद मैं अपनी आत्मा घर में रखे तूंबे में बंद कर जाऊंगी। तुम उस तूंबे को ही सास समझना और हर काम उससे पूछकर किया करना। उसके मर जाने पर बहू ऐसा ही करने लगी। रोज सुबह तूंबे के पास जाती और उससे सलाह लेती। एक दिन जब वह तूंबे के पास खड़ी होकर कुछ पूछ रही थी, तब उसकी पड़ोसिन संयोग से वहां आ गई। उसने जो यह तमाशा देखा, तो तूंबे को लेकर ज़मीन पर पटक चकनाचूर कर दिया। उस दिन के बाद से बहू फिर आनंदपूर्वक रहने लगी।)

सास मुई, बहू बेटा जाया; वाका पल्टा यामें आया, (स्त्रि.)
हिसाब-किताब ज्यों-का-त्यों।
दे.—बाप मरा घर बेटा...।

'सास मोरी मरे, ससुरा मोरा जीये', नई बहुरिया के राज भये, (स्त्रि.)
सास के मर जाने पर बहू स्वतंत्रापूर्वक दिन व्यतीत करती है।

सासरा, सुख बासरा, (स्त्री.)
(1) लड़की का ससुराल में रहना ही अच्छा। ससुराल में रहने से सुख मिलता है।
(2) जो लोग ससुराल में रहना पसंद करते हैं, उन पर व्यंग्य।

सास-री सास, तुझे पेट का दुख, पहले चूल्हा ही याद आया, (स्त्रि.)
बहू का सास से कथन। स्पष्ट।

सास-रे तेरे साग, माये तेरे भाग; बाप के तेरे राज, तू बैठी-बैठी झांक, (स्त्रि.)
सास का कहना बहू के प्रति जो हमेशा मायके की बड़ाई

किया करती है—ससुराल में तुझे सब तरह का सुख है, तू भाग्यशालिनी है; तेरे बाप के घर अगर राज्य है, तो तू बैठी-बैठी ताका कर (उससे तुझे क्या लाभ)।

सास लुक्का लुक्का, बहू बुक्का बुक्का, (स्त्रि.)

सास जो काम छिपकर करती है, बहू उसे खुलकर करती है।

सास से तोड़, बहू से नाता, (स्त्री.)

(1) एक मूर्खता का काम, क्योंकि घर में तो सास का ही राज्य रहता है, बहू का नहीं। जिसकी चलती है, उसी से प्रेम रखना चाहिए।

(2) ऐसे व्यक्ति के लिए भी कह सकते हैं, जो आपस में तोड़-फोड़ कराए।

सास से बैर, पड़ौसन से नाता, (स्त्रि.)

एक अनुचित काम। बहू को सास से प्रेम रखना चाहिए, न कि पड़ोसिन से।

सासू छोटी बहू बड़ी

जवान लड़का और बहू के रहते हुए जब कोई मनुष्य एक छोटी लड़की से दूसरी शादी करता है, तब क.।

साह के सवाये, कमबख्त के दूने, (व्य.)

समझदार व्यापारी कम मुनाफ़े पर ही माल बेचता है। अथवा कम ब्याज पर रुपया उधार देता है, पर नासमझ दूने करता है (जिससे उसका व्यापार चौपट हो जाता है)।

साहिब मेरा बानिया, सहज करे व्यापार।
बिन डंडी बिना पालड़े, तोले जग संसार।

ईश्वर के लिए कहा गया है कि वह सच्चा बनिया है, बिना तराजू के ही वह (न्याय की तराजू पर) सारे संसार को तोला करता है।

साहूकार को किसान, बालक को मसान, (व्य.)

साहूकार के पीछे किसान (रुपया उधार लेने के लिए) उसी तरह लगा रहता है, जैसे बालक के पीछे श्मशान का भूत।

साहू बट्टे वह भी साह, (व्य.)

जो घाटे से सौदा बेच देता हो, वह भी साहूकार है। बहुत दिनों तक व्यर्थ माल को रखे रहने से ब्याज का नुकसान होता है, इसलिए उसे निकाल देना अच्छा।

साहू बहे न जाएं, गों से जाएं

दूकानदार जो भी काम करता है, वह अपने मतलब से। *(इस पर एक चुटकुला है कि किसी समय एक बनिया नदी में बहा जा रहा था। वह तैरना बिल्कुल नहीं जानता था, इसलिए सहायता के लिए चिल्ला उठा। एक मसखरे ने, जो नदी किनारे खड़ा था, उसकी चिल्लाहट सुनकर हंसी में जवाब दिया—साहू जी, बहे नहीं जा रहे हैं, बल्कि अपने मतलब से कहीं जा रहे हैं।)*

सिंह चढ़ी देवी मिलें, गरुड़ चढ़े भगवान।
बैल चढ़े शिव जी मिलें, अड़े संवारें काम।

स्पष्ट। आशीर्वाद।

सिंह पराये देश में, नित मारे नित खाय

चोर-डकैत दूर देश में जाकर ही उपद्रव मचाते हैं।

सिंह सांप से हेत कर, भूतों के गल लाग।
रांगड़ उठे नमाज को, कोस पचासे भाग।

सिंह, सांप, और भूतों से भले ही प्रेम करे, पर रांगड़ से बचना चाहिए।

(रांगड़ एक हलका श्रेणी के मुसलमान हैं, जो बड़े उद्धत माने जाते हैं। उन पर ही व्यंग्य है।)

सिंह से सरवर करे सियार

सियार सिंह का मुक़ाबला करे।

एक अनहोनी बात।

सिखाये पूत दरबार नहीं जाते

जिस लड़के को सिखाना पड़े, उसे दरबार नहीं जाना चाहिए।

(झूठे सिखे-पढ़ाये गवाहों से मुकदमा नहीं जीता जाता।)

सिड़ी है तो क्या? पर बात ठिकाने की कहता है

मूर्ख भी कभी-कभी समझदारी की बात करता है।

सिपहगरी के छत्तीस फन हैं

सिपाही के काम में भी कुछ कलाओं की जरूरत पड़ती है; अर्थात वह भी एक मुश्किल काम है।

सिपाही का माल, झांट का बाल

सिपाही के पास कुछ नहीं होता। वह फक्कड़ होता है।

सिपाही की जोरू हमेशा रांड

क्योंकि वह हमेशा बाहर रहता है और लड़ाई में कभी भी मारा जा सकता है।

सिपाही की रोटी सिर बेचे की

उसके सदा मरने का खतरा रहता है।

सिपाही को ढाल रखने की जगह चाहिए

फिर तो वह अपने लायक जगह स्वयं बना लेता है। अथवा उसका कोई घर नहीं होता। जहां लेट रहता है, वहीं उसका घर है।

सिफत भी हो, मुफ्त भी हो, बड़े पने का भी हो
जो कम दाम देकर बढ़िया चीज खरीदता है उससे व्यंग्य में क.।

सिफले की मौत माघ
माघ में गरीब की मौत आती है; क्योंकि जाड़े के कपड़े बनवाने के लिए उसके पास पैसे नहीं होते।

सिफ़ारिश बगैर रोज़गार नहीं मिलता
स्पष्ट।
रोज़गार=नौकरी।

सियार औरों को शगुन दे, आप कुत्तों से डरे
सियार दूसरों के लिए तो शुभ होता है, पर स्वयं कुत्तों से डरता है। अर्थात अपना बचाव नहीं कर सकता।
(यात्रा में सियार का मिलना अच्छा माना जाता है।)

सियार के मंत्री कौवा, छोड़ दहले हाड़ चाम, खाइले मसवा, (भौ.)
मक्खन तो स्वयं रख लेना और छाछ दूसरों के लिए छोड़ देना।
(कहा जाता है कि अकबर के मंत्री टोडरमल ने जब कांगड़ा घाटी पर कब्जा किया, तब उन्होंने बढ़िया उपजाऊ ज़मीन तो बादशाह के लिए रख छोड़ी और खराब वहां के जमींदारों को दे दी। तब टोडरमल ने उक्त बात कही कि मैंने मांस तो ले लिया है, हड्डी तथा चमड़ा जागीरदारों के लिए छोड़ दिया है।)

सियालकोटी, हराम बोटी
पंजाब के सियालकोट के लोगों को व्यंग्य में क.।

सियाह करो या सफ़ेद
(1) कुछ तो करो। अथवा
(2) जो चाहे सो करो, सब तुम पर ही निर्भर है।

सियाही बालों की गई, दिल की आरजू न गई
बूढ़े लंपट के लिए क.।
आरजू=इच्छाएं।

सिर का नहाया पाक
सबसे ऊंचा हाक़िम जो फैसला सुना दे, वह ठीक ही होता है।
(मुसलमान प्रायः नहाने के समय सिर भिगो लेते हैं, और उसे पर्याप्त मानते हैं।)

सिर का पसीना एड़ी को आना
(1) बहुत अधिक परिश्रम का काम करना।
(2) कठिन परिस्थिति से सामना पड़ना।

सिर का पांव और पांव का सिर
उल्टी-सीधी बात करना।

सिर का बाल घर की खेती है
कटवाने पर फिर बढ़ जाते हैं।

सिर गाड़ी, पैर पहिया करे तो रोटी मिलती है
चलने-फिरने (उद्यम करने) से ही पैसा मिलता है।

सिर गाला, मुंह बाला
बूढ़े होकर भी लड़कों जैसी बात करना।
गाला=रुई के गाले की तरह (सफ़ेद)।
बाला=बच्चों जैसा।

सिर गैल सिरवाहा है
जैसा सिर वैसी पगड़ी चाहिए।
नेता या अगुआ के विना काम नहीं चलता, ऐसा भाव प्रकट करने को क.।

सिर झाड़, मुंह पहाड़
बहुत भद्दी शक्ल का आदमी।

सिर तो नहीं ख़ुजलाया है
मार खाने की इच्छा तो नहीं है?

सिर तो नहीं फिरा है ?
जो व्यर्थ की बात बकते हो।

सिर दिया ओखली में तो मूसलों से क्या डरना?
जव किसी ख़तरनाक काम को करने का वीड़ा ही उठाया, तो फिर उसकी कठिनाइयों से नहीं डरना चाहिए।

सिर नक़द, नौकरी उधार
काम तो तुरत करा लेना, पर मज़दूरी के लिए टरकाना।

सिर नहीं, या सिरोही नहीं
मरने-मारने पर उतारू हो जाना।
(राजपूताने के सिरोही नामक स्थान की बनी तलवार किसी ज़माने में बहुत प्रसिद्ध रही है। उसी से यह शब्द तलवार के लिए रूढ़ हो गया है।)
सिरोही=तलवार।

सिर पर आरे चल गए, तो मदार ही मदार, (स्त्रि.)
कठिन संकट में पड़कर भी 'मदार' ही 'मदार' पुकारना, अर्थात केवल ईश्वर का ही नाम लेना, बचने का कोई उपाय न सोचना। घोर आलसी और अकर्मण्य के लिए क.।

सिर पर जूती, हाथ में रोटी, (स्त्रि.)
बहुत अपमान सहकर भी रोटी कमाना।

सिर बड़ा सरदारों का, पैर बड़ा पलदारों का

सरदारों का सिर बड़ा होता है और मज़दूरों (या गंवारों) का पैर बड़ा।

पलदार=पल्लेदार, बोझ ढोने वाला।

सिर मुड़ा के क्या घुटना मुड़ाओगे?

जो कुछ कर चुके हो, उससे अधिक अब और क्या करोगे?

सिर मुंडा के फ़जीहत हुए

अपना बना काम छोड़कर दूसरा काम करना और उसमें भी सफल न होना।

दे.—मूड़ मुड़ाये...।

सिर मुड़ाते ही ओले पड़े

(1) काम करते ही मुसीबत आई।

(2) शुरू में ही काम ख़राब हो गया।

सिर में बाल नहीं, भालू से लड़ाई, (स्त्रि.)

कमज़ोर होते हुए भी अपने से बलवान से झगड़ा करना। *(बालों के न होने के कारण भालू खोपडी ही नोंच डालेगा। वैसे कुछ रक्षा भी हो जाती।)*

सिर सलामत, तो पगड़ी पचास

सिर रहेगा तो पगड़ी बहुत मिल जाएंगी; जैसे मूल रहेगा तो ब्याज बहुत आ जाएगा, लड़का रहेगा तो बहुएं बहुत आ जाएंगी, पेड़ रहेगा तो फल भी लग जाएंगे, इत्यादि।

सिर सहलावें, भेजा खावें

ऊपर से मीठी-मीठी बातें करे, भीतर से जड़ काटें। धूर्त या कपटी मित्र।

सिर सिजदे में, मन बड़ियों में

बगुला भगत।

सिजदा=ईश्वर की प्रार्थना।

सिर सिर अक्कल, गुर गुर विद्या

सबकी अलग-अलग बुद्धि, और सबकी सिखावन भी अलग-अलग होती है।

सिर से उतरे बाल, गू में जाओ या मूत में

जिस वस्तु या मनुष्य को त्याग ही दिया, उससे फिर क्या मतलब?

सिर से कफ़न बांधे फिरते हैं

जो हथेली पर जान लिये फिरे, या मरने-मारने पर उतारू हो, उसे क.।

सिर से ख़ाया भारी

(1) असंगत काम। अथवा

(2) कोई बेडौल चीज।

ख़ाया=अंडकोश

सिरे ही की भेड़ कानी

शुरू में ही ग़लती या विघ्न।

सिवैयों बिन ईद कैसी? (स्त्रि.)

पकवान के बिना उत्सव किस काम का? *(मुसलमानों के यहां ईद में मीठी सिवैयां विशेष रूप से बनती हैं।)*

सिसकते गए, बिलखते गए

बे-मन से काम करना।

सिहबंदी के प्यादे का आगा पीछा बराबर

जिस आदमी को तीन आने रोज मिलते हों, उसका भूत, भविष्य दोनों बराबर हैं।

सिहबंदी=सरकारी लगान वसूल करने वाला कर्मचारी। अमीन।

प्यादा=चपरासी

सींख सड़प्पे तो लाला जी के साथ गए, अब तो देखो और खाओ

कंजूसों पर क.। जब किसी कृपण का लड़का उससे भी बढ़कर कृपण हो, तब व्यंग्य में क.। *(कथा है कि किसी कंजूस ने अपने घर में यह नियम बना रखा था कि घी के बर्तन में सींक डुबाने से जितना घी निकले, उतना ही हर आदमी ले लिया करे। जब वह मर गया, तो उसका लड़का उससे भी बढ़कर निकला। उसने घी के बर्तन का मुंह बंद करके उस पर पक्की डाट लगा दी और घरवालों से उक्त बात कही कि देखो, लाला जी के ज़माने में तुम लोगों ने सींक डुबो-डुबो कर खूब घी खाया, अब तो देखो और खाओ। इसी प्रकार एक बंगाली कंजूस की भी कथा है कि वह नदी किनारे बैठकर भात खाया करता था और प्रत्येक कौर के साथ नदी की ओर हाथ बढ़ाकर कहता था—'ऊ मशली, ई भात।' इस प्रकार वह मछली खाने का आनंद उठा लिया करता था।)*

सींग कटा बछड़ों में मिलना

(1) लड़कपन का काम करना।

(2) बड़ी उम्र के होते हुए भी लड़कों में उठना-बैठना।

सींग की के हूक? और अरंड का के रूख

सींग का आंकड़ा क्या और अरंड का वृक्ष क्या? दोनों ही बेकार।

हूक=अंग्रेज़ी 'हुक'।

सींचों हम हित जानके, इन न करी कछु कान।
छाती पै पेंड़ा किया, ओछे की पहचान।

जल काठ से कहता है कि वृक्ष के रूप में इसे मैंने सींचा और जब यह बड़ा और मजबूत हुआ, तो यह मेरी ही छाती पर नाव (या जहाज़) बनकर चलने लगा। कृतघ्नता।

सीख उसी को देनी आछी, जो तेरी शिक्षा मानें सांची

सीख तो उसी को देनी चाहिए, जो उसे सुने और माने।

सीख तो वाको दीजिए, जाको सीख सुहाय।
बंदर को क्या दीजिए, बये का घर ही जाय।

दे. ऊ.।

(कथा है कि एक बया पक्षी ने वर्षा ऋतु में एक बंदर को पानी में भीगते देखकर कहा—
मानस के-से हाथ पांव, मानस की-सी काया, चार महीने बरषा बीती, छप्पर क्यों नहीं छाया। जब बंदर ने कहा—मुझे तो घर बनाना आता ही नहीं। तो बये ने उसे अपने जैसा घोंसला बनाना सिखा दिया। इसका फल यह हुआ कि बंदर ने अपना घर बनाने के लिए बया का घोंसला ही तोड़ डाला, और अपना तो वह बना ही नहीं सका। बंदर और बया पक्षी की यह कथा जातक में है और पचतंत्र में भी।)

सीख देत औरों को पांड़ा; आप भरें पापों का भांड़ा

स्वयं न करना, दूसरों को सीख देना।

(सं.—परोपदेशे पांडित्यं।)

सीखना न सिखाना, नाहक सिर फोड़ना

ऐसे लड़के से क., जो कुछ पढ़े-लिखे नहीं।

(सीखना-सिखाना का अर्थ केवल सीखना ही है। रोटी-ओटी की तरह ही उसका प्रयोग हुआ है।)

सीखी सीख पड़ौसन को, घर में सीख जिठानी को, (स्त्रि.)

सीखी हुई सीख वह पड़ोसन को देती है, और घर में जिठानी को भी।

दूसरों के पास से सीखी हुई विद्या औरों को सिखाना।

सीखेगा नाऊ का, कटेगा बटाऊ का

दे.—करेगा बटाऊ का...।

सीखो बेटा सोई, जामें हंड़िया खुदबुद होई

ऐसी विद्या पढ़ो, जिसमें खाने को मिलता रहे।

स्कूल में पढ़ने वाले लड़के से पिता का कहना।

सीढ़ी-सीढ़ी छत पर चढ़ते हैं

क्रम-क्रम से ही काम होता है।

सीत दूध जिसने दे साई, वाको तो बैकुंठ यहां ई

ईश्वर जिसे दूध-भात खाने दे, उसे यहीं बैकुंठ है।

(सीत का अर्थ मठा भी होता है।)

सीतल रख संसार को, जो तू भी सीतल होय।
तनक सी आग रे बालके, फूल देत जग कोय।

सब को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसमें तुम भी प्रसन्न रहो; थोड़ी-सी भी आग संसार को भस्म कर सकती है।

सीतला का खाजा

ऐसा मनुष्य जिसके मुंह में शीतला के दाग बहुत हों।

सीतला का थड़ा

दे. ऊ.।

थड़ा=स्थान।

सीतला का पुजापा

(1) निकम्मी वस्तु।

(2) बहुत बदशक्ल आदमी।

(शीतला चेचक की देवी हैं और उन्हें पुजापे में अत्यंत साधारण वस्तुएं ही चढ़ाई जाती हैं।)

सीधा घर खुदा का

अदालत से अभिप्राय है। किसी को वहां जाने से रोक-टोक नहीं।

सीधी उंगलियों घी नहीं निकलता, (व्य.)

कड़ाई के बिना काम नहीं चलता।

(जाड़े के दिनों में जब घी जम जाता है, तब उंगलियां टेढ़ी करके ही निकालना पड़ता है।)

सीधी उंगलियों घी निकले तो टेढ़ी क्यों कीजे?

अगर आसानी से मामला तै हो जाए, तो कोई और (सख्त) कार्यवाही क्यों की जाए?

सीधी राह छोड़ के टेढ़ी राह मत चलो

स्पष्ट।

सीपी से समुद्र खाली करना

मूर्खतापूर्ण कार्य।

सीमाब की खासियत रखती है

पारे की तरह (चंचल) है।

सीलवंत गुन न तजे, औगुन तजे न गुलाम।
हरदी ज़रदी ना तजे, खटरस तजे न आम।

सज्जन अपनी सज्जनता नहीं छोड़ता, दुष्ट भी अपनी दुष्टता नहीं त्यागता; उसी तरह जैसे कि हल्दी अपना पीलापन नहीं छोड़ती और आम खटाई नहीं छोड़ता।

सीस काटे, बालों की रक्षा

सिर काटकर बालों की रक्षा; असंभव है।

सुई, कतरनी, गज, उंगलेटा, रखे सो दर्जी का बेटा

आदमी के पेशे की पहचान उसके साज-सामान से हो जाती है

उंगलेटा=लोहे या पीतल की वह टोपी, जिसे दर्जी सीते समय एक उंगली में पहन लेते हैं; अंगुश्ताना।

सुई कहे 'मैं छेदूं छेदूं', पहले छेद कराये

सुई कपड़े को छेदना चाहती है, पर वह स्वयं छिदी हुई होती है।

मनुष्य दूसरों के दोष देखना चाहता है, पर अपने दोष नहीं देखता।

सुई का भाला हो गया

तिल का ताड़ हो गया। साधारण बात बढ़कर बड़ी हो गई।

सुई के नाके से सब को निकाला है

(1) जो दूसरों के प्रति उचित सम्मान न दिखाए और सबके साथ एक-सा नासमझी का बर्ताव करे, उसके लिए क.।

(2) होशियार आदमी के लिए भी क., जो सबको एक रास्ते पर चलाए।

नाका=छेद।

सुई चोर सो, बज्जुर चोर

चोरी हर हालत में चोरी ही कहलाएगी, चाहे थोड़ी करे चाहे बहुत।

बज्जुर=वज्र, फौलाद, यहां लोहे के टुकड़े से मतलब है।

सुई जहां न जाय, वहां सूआ घुसेड़ते हैं

जो काम हो नहीं सकता, उसे ज़बर्दस्ती करना।

सूआ=बड़ी मोटी सुई। सूजा।

सुख कारन सागर तजो, आन विधायो अंग।
मोती नर यू कंपिया, तू हंसी और के संग।

सुख के लिए मोती ने समुद्र (अर्थात अपना घर) छोड़ा और अपना शरीर छिदवाया, अर्थात कष्ट उठाया; पर जब स्त्री पर-पुरुष के साथ हंसी, तो वह कांप उठा।

[उक्त दोहा मोती और पुरुष दोनों पर घटित होता है, जैसा स्पष्ट है। स्त्री के हंसने से बेसर का मोती कांपता (अर्थात हिलता) है। और पर-पुरुष के साथ उसे हंसते देखकर मोती रूपी नर (मुनष्य) कांप उठा।]

सुख के बड़े जोधा रखवाले हैं

सुख वीर पुरुष ही भोग सकते हैं। साधारण मनुष्यों को मुश्किल से मिलता है।

सुख के सब साथी हैं

सुख में सभी मित्र बनते हैं; दुख में कोई नहीं पूछता।

सुख दुख में जो रहे सहाई; सज्जन वाको बोलें भाई

जो सुख दुख में सहायक हो, वही सज्जन है।

सुखन उन्हों पर डारिये जो हंसे हंस राखे मान, (स्त्रि.)

उन्हीं से कुछ मांगो, जो तुम्हारी बात रखें।

सुखन (सखुन)=(1) वचन। (2) कौल, वादा। (3) कविता। (4) सूक्ति।

सुखन-गोई मुश्किल नहीं, सुखन फ़हमी मुश्किल है

बढ़िया बात कहना मुश्किल नहीं, पर दूसरों की बढ़िया बात समझना मुश्किल है।

सुखन=दे. ऊ.

सुख बढ़े मुटापा चढ़े

सुख मिलने से ही आदमी मोटा होता है।

सुख मानों तो सुख है, दुख मानों तो दुक्ख।
सच्चा सुखिया वह है, जो सुख माने ना दुक्ख।

स्पष्ट।

सुख में आये करमचंद, लगे मुड़ावन गंज

कोई मनुष्य बहुत सुख में तो आया और अपनी गंजी खोपड़ी मुड़वाने लगा। बैठे-ठाले मुसीबत मोल ले लेना। *(गंजी खोपड़ी मुड़वाना एक महामूर्खता का काम है, उस से तो खून निकल आएगा।)*

सुख में सांई को भजो, जो दुख मूल न होय।
साध कहें रे बालके, सीख मान जस लेय।

सुख में ईश्वर का भजन करने से फिर दुख बिल्कुल नहीं होता।

सुख संपत का सब कोई है

दे.—सुख के सब...।

सुख से दुख भला जो थोड़े दिन का होय

अनेक नए अनुभव होते हैं।

सुख सोवै कुम्हार, जाकी चोर न लेवे मटिया

जिस आदमी के पास जितनी कम चिंताएं होती हैं, वह उतने ही आराम से होता है।

सुख सोवें शेख़ और चोर न भांड़े लेय

शेख़ एक जाति के भाट होते हैं, जो पीरों का यश गाते फिरते हैं। वे बहुत ग़रीब होते हैं, और उनके पास चुराने लायक कोई बर्तन-भांड़ा नहीं होता।

सुख सोवै शेख, जिनके टट्टू न भेख

दे.—ऊ.।

सुख सोवै होरू, जिनके गाय न गोरू

दे. सुख सोवै कुम्हार...।

होरू=नाम विशेष।

सुखार दुहार आसमानी फरमानी है, (पू., कृ.)

अनावृष्टि और अतिवृष्टि ईश्वर के हाथ है।

सुखी रहेगा वह सदा, जिन छो दीना मार।
जग मां भला कहत है, छो का मारनहार।

जो क्रोध को जीत लेता है, वह सुखी रहता है।

सुगंध लगाऊं तो ऊभ मरूं, ऊभ मरूं पहने तन सारी।
हार चमेली का भारी लगत, तुम जनत हौ तन की सुकवारी।

रूपगर्विता का कथन। झूठी सुकुमारता दिखाना। ऊभ=गर्मी। घबराहट।

सुघड़ बलैयां ससुरा ले, बैल मांग बहू को दे, (कृ.)

होशियार बहू को ससुर भी प्यार करता है। घर में बैल न हों, तो भी उसे उधार लाकर देता है।

(खेती के लिए।)

सुघड़ सुघड़ हंस गई, फूहड़ों को आया हांसा, (स्त्रि.)

हंसी की कोई बात होने पर समझदार केवल मुस्करा देते हैं, पर मूर्ख ठठाकर हंसते हैं।

सुता जो राखै चोरी पर, तो पगड़ी पत रख मोरी पर

जो चोरी की नीयत रखता है, उसे अपनी इज्जत को भी एक ओर रख देना चाहिए।

सुता=सुध।

मोरी=नावदान।

सुध और छो का वैर है, छो आवत सुध जाय।
वो ही नर भरपूर है, जो सुध न देत गंवाय।

वही सच्चा मुनष्य हे, जो क्रोध में अपनी बुद्धि नहीं खो देता।

सुध बुध अपनी ठीक रख जब आवे तुझको छो।
छो है भूत बिगाड़वा, इसका मीत न हो।

क्रोध आने पर अपनी विवेक-बुद्धि को ठीक रखना चाहिए। क्रोध भूत की तरह बिगाड़ करने वाला है।

सुध बुध ना खो आपनी, बात ले मेरी मान।
इस दुनियां रहना नहीं, होवे मत अनजान।

स्पष्ट।

सुध सूं सुधरें कार सब, सुध बिन होत बिगाड़।
ऐसा सुध बिन है मनुख, जैसा पत्थर झाड़।

बुद्धि से ही सब काम बनते हैं। बुद्धि के विना मनुष्य पत्थर-पेड़ सरीखा है।

सुन कोई हज़ार कुछ सुनावे
कीजे वही जो समझ में आवे
काबू हो तो कीजै न ग़फ़लत
आज़िज़ हो तो हारिये न हिम्मत
आता हो तो हाथ से न दीजे,
जाता हो तो उसका ग़म न कीजे।

स्पष्ट।

सुन रे ढोल, बहू के बोल, (स्त्रि.)

किसी को सचेत करने के लिए क.।

(इसकी कथा है कि कोई बूढ़ी औरत अपने लड़के से उसकी स्त्री की हमेशा शिकायत किया करती थी। स्त्री बदचलन थी। पर लड़के ने कभी उस पर ध्यान नहीं दिया। कुछ दिनों बाद वह स्त्री बीमार पड़ी। कुल पुरोहित ने आकर उससे कहा कि तुम्हारा अंतिम समय निकट है। तुमने अब तक जितने अपराध किए हैं, उन्हें स्वीकार कर लो। स्त्री जब ऐसा करने को तैयार हो रही थी, तब बुढ़िया ने अपने लड़के को एक बड़े ढोल में छिपा दिया, जो वहीं रोगी के पास रखा हुआ था। इधर जब स्त्री अपने किए सभी दुष्कर्मों को एक-एक करके पुरोहित के सामने स्वीकार कर रही थी, तब उधर उसकी सास उक्त वाक्य कहकर ढोल बजाती जाती थी, जिससे उसका लड़का अपनी दुराचारिणी स्त्री के सभी कर्मों को ध्यान से सुन ले।)

सुन सुन के तेरी बात सहेली, सोच हुआ मेरे मन को।
करके ब्याह घरों नहीं रखते, बाबुल अपनी धी को। (स्त्रि.)

किसी कुंआरी लड़की का कहना कि ऐ मेरी सखी, तेरी यह बात सुनकर मुझे बड़ी चिंता हो रही है कि विवाह के बाद मां-बाप लड़कियों को घरों में नहीं रखते।

(तब फिर पीहर जैसा सुख मुझे कहां मिलेगा?)

सुन सुन मीठी बोल गत, बैठ न बैरी पास।
दही भुलावे बाबरे, खाये कधी कपास।

दुश्मन की मीठी बातों में नहीं आना चाहिए। नहीं तो कभी दही के धोखे कपास खानी पड़ती है।

सुनाड़ी बेचे कांतू, अनाड़ी बेचें भांछू, (पू.)

होशियार आदमी हड्डी भी बेच लेता है, मूर्ख मछली बेचता है।

(वह किसी काम में लाभ नहीं उठा पाता।)

सुनार अपनी मां की नथ में से भी चुराता है

सुनार अपनी मां को भी ठग लेता है, फिर औरों की तो बात क्या?

सुनार की खटाई और दरजी के बंद
प्रसिद्ध हैं।
टालमटोल करने पर क.।
सुनार, दर्जी आदि कभी वादे पर काम करके नहीं देते। *(इनसे जब कोई अपनी चीज मांगने जाता है, तब सुनार 'सब तैयार है, केवल खटाई में डालना है' और दर्जी 'केवल बंद लगाना है'—यह कहकर ग्राहक को टाल देता है।)*

सुनिये सब की, कीजिए मन की
बात सबकी सुननी चाहिए, पर अपने को जो ठीक जंचे, वही करना चाहिए।

सुनी सुनाई बात की, गठरी बांधे खूंट।
बरछिन की मार पड़ी, ककड़िन की भई लूट।
सुनी-सुनाई बातों को सच मान लेना, फिर चाहे वे संभव हों या असंभव।
(ककड़ी एक बहुत सस्ती चीज है। इनकी लूट और लूट में फिर बरछियों की मार का सवाल ही नहीं।)

सुन्नी ना शिया, जी में आया सो किया
(1) स्वतंत्र विचारों का व्यक्ति। अथवा
(2) मनमाना करने वाले के लिए भी क.।
(सुन्नी और शिया मुसलमानों के दो फ़िर्के हैं, जिनमें हमेशा विरोध रहता है।)

सुपने की-सी माया, जिसको अपनी बतलावे
धन-संपत्ति किसी के पास हमेशा नहीं रहती, वह सपने जैसी चीज है।

सुपने में राजा भए, दिन को वही हवाल
सपने की बात सच नहीं होती।
मन के लड्डू खाने वाले के लिए क.।

सुपने में स्वामी मिले, कर न सकी दो बात।
सोवत थी, रोवत उठी, मलती रह गई हात।
स्पष्ट।

सुपुरदम ब तू मायये ख़ेशरा,
तू दानी हिसाबे कम-ओ-बेशरा
मैंने अपनी वस्तु (रचना) तुम्हारे सुपुर्द कर दी। अब उसके गुण-दोषों का विवेचन आप करें।
(पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं।)

सुफल होत मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीत।
अपनो ऐपन लायके, तिरिया पूजत भीत।
प्रेम और विश्वास से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं। स्त्रियां अपना लेप लाकर दीवार पर चित्र बनाती हैं।
(प्रेम और विश्वास के वश होकर ही।)
ऐपन=पिसे हुए चावल और हल्दी का घोल।

सुफेद बाल, जवानी का ज़वाल
बाल सफ़ेद होने पर बुढ़ापा माना जाता है।

सुफेद बाल, मौत का पैग़ाम
स्पष्ट।
पैग़ाम=संदेश।

सुबह का भूला शाम को आवे तो भूला नहीं कहलाता
दे.—सवेरे का भूला...।

सुबह की नांह अच्छी नहीं, (व्य.,लो.वि.)
सुबह-सुबह जब कोई ग्राहक दूकान पर जाकर सौदा लेने की बात करके फिर लेने से इंकार कर देता है, तब दूकानदार कहा करता है।

सुबह की बोहनी, और अल्लाह मियां की आस
स्पष्ट। दे. ऊ.।
(सुबह की पहली बिक्री को दूकानदार शुभ मानते हैं, और उसके आधार पर ही दिन भर की बिक्री का अनुमान लगाते हैं इसीलिए क.।)

सुबह ही सुबह खुदा का नाम लो
स्पष्ट।

सुबह होती है, शाम होती है।
उम्र यूं ही तमाम होती है।
जीवन की क्षण-भंगुरता।

सुमरन कर में, सुरत न हरि में, कहो भेख यह कैसा है।
ऊपर से तो सिद्ध बन बैठा, भीतर पैसा पैसा है।
स्पष्ट।
सुमरन=सुमरिनी। माला।
सुरत=ध्यान।

सुरतीला सो फुरतीला
जो सब बातों का ध्यान रखता है, वह काम में भी तेज होता है।
सुरतीला=सुर्त रखने वाला। ऐसा व्यक्ति जो किसी बात को भूले नहीं।

सुर, नर, मुनि की है यह रीति।
स्वारथ लोग करहिं सब प्रीति। (तुलसी)
संसार में सब लोग अपने मतलब से ही प्रेम करते हैं।

सुरमा सब लगाते हैं, पर चितवन भांत-भांत, (स्त्रि.)
काम सब करते हैं, पर काम करने की विशेषता सब की

अलग-अलग होती है।

सुर में इस्सर बसे

संगीत में ईश्वर का वास है।

सुस्त मनुख का कोई न लागू, फुर्तीले के सब ले भागू

आलसी को कोई पसंद नहीं करता, तेज काम करने वाले को सब चाहते हैं।

सुस्ती बुरी रे बालके, याकूं जी से टार।
रत्ती बोझा सुस्त को, लागे बोझ पहाड़। (ग्रा.)

आलस्य बुरी चीज है। आलसी को एक बहुत छोटा काम भी पहाड़ जैसा बड़ा लगता है।

सुस्सा, गादड़, लोमड़ी, डरपोक तू इनको जान।
मानस, कूकर देख कर, तजने लगें पिरान।

स्पष्ट।

सुस्सा=खरगोश।

गादड़=गीदड़

सुरसों जाऊं या गुस्सों जाऊं

खरगोश के लिए जाऊं, या उपले बीनने जाऊं?

(एक औरत जंगल में ढोरों का सूखा गोबर बीनने जाया करती थी। संयोग से एक दिन एक खरगोश उसके हाथ आ गया। तब उसने सोचा कि उसे रोज़ इसी तरह ख़रगोश मिल जाया करेगा और उसने उक्त वाक्य कहा।)

सुहागन का पूत पिछवाड़े खेले है

सुहागिन का अगर लड़का मर जाए, तो यह समझना चाहिए कि वह कहीं गया नहीं, बल्कि पिछवाड़े ही खेल रहा है। तात्पर्य यह कि उसे फिर भी पुत्र उत्पन्न होने की उम्मीद रहती है।

किसी बड़े रोज़गारी या अच्छी आमदनी वाले का जब कोई नुकसान हो जाता है, तब इस तरह का भाव प्रकट करने के लिए कि 'चिंता की और कोई बात नहीं, घाटा शीघ्र पूरा हो जाएगा'—वाक्य का प्रयोग करते हैं।

सुहाग भाग अरजानी, चूल्हे आगम न घड़े पानी, (स्त्रि.)

सौभाग्य तो सस्ता मिल गया, पर चूल्हे में न आग है, न घड़े में पानी।

बहुत ग़रीब या अभागे के विवाह पर क.।

सुहाते की लात, न सुहाते की बात

(1) प्रियजन की लात भी सही जा सकती है, जो प्रिय नहीं है, उसकी बात भी बुरी लगती है।

(2) जहां कुछ मिलने की आशा हो वहां गाली भी सह ले। पर जहां कुछ प्राप्ति न हो, वहां साधारण बात से भी नाराज हो उठे, तब भी क.।

सूआ सेमल देख के, सभी गंवाई बुद्ध।
फल देख के रम रहे, फल की रही न सुद्ध।

सेमल के फूल से आकृष्ट होकर तोता अपनी सुध-बुध खो बैठा। फूल पर इतना मोहित हुआ कि फल का उसे ध्यान ही नहीं आया।

(वह यह नहीं सोच सका कि सेमल में फल होता ही नहीं और मैं यहां व्यर्थ आया हूं।)

सूखा ढाक, बढ़ई का बाप

ढाक की लकड़ी सूखने पर बहुत कड़ी हो जाती है।

सूखा-साखा बामन हो गया फूलफाल चुगत्ता

ग़रीबी हालत से जो एकदम बहुत पैसे वाला बन जाए, उसके लिए क.।

सूखी चिनाई करते हैं

सूखे मसाले भीत उठाते हैं।

(1) बुरे ढंग से व्यवसाय करना।

(2) ब्राह्मणों व चौबों पर ताना, जो खाते समय पानी नहीं पीते, जिसमें ज्यादा खाया जाए।

सूखे धानों पानी पड़ा

धान सब सूख रहे थे, तब पानी बरस गया। ऐन मौके पर सहायता मिल गई।

सूखे मां झड़बेर घने हों, सम्मत मां अन ढेर घने हों, (कृ.)

अकाल में झड़बेरी बहुत होती है, और सुकाल में अन्न बहुत होता है।

सम्मत=संवत, अच्छे वर्ष से अभिप्राय है।

सूखे लकड़ी की तरह, खाय बकरी की तरह

खाए तो बहुत, फिर भी दुर्बल।

(बच्चों के सूखा रोग में प्रायः ऐसा ही होता है।)

सूखे सावन, रूखे भादों, (कृ.)

सावन सूखा जाने पर भदई फ़सल अच्छी नहीं होती।

सूज सटका, कपड़ा फटका

सुई के घुसते ही कपड़े में छेद हो जाता है।

दुष्ट आदमी के लिए क.। जहां जाता है कुछ-न-कुछ उपद्रव करता है।

सूजी फूली, जैसे घी का कुप्पा

मोटी औरत के लिए क.।

सूझे न बिटौरा, चांद से राम-राम

बिटौरा (उपलों का टीला) तो दिखाई न पड़े, चलूं दूज का चांद देखने।

सूझे नहीं और गुलेल का शौक़

जिस काम के योग्य ही नहीं, उसे करने का चाव।
गुलेल=वह कमान जिससे मिट्टी या पत्थर की गोलियां चलाई जाती हैं।

सूत की अंटी और यूसुफ़ की खरीददारी

थोड़ी-सी पूंजी से बहुमूल्य चीज खरीदने की इच्छा करना। *(यूसुफ़ हज़रत याकूब के पुत्र थे, जिन्हें उनके भाइयों ने ईर्ष्यावश बेच डाला था। कहते हैं कि जब मिस्र के बाजार में वह बेचे जा रहे थे, तब एक बुढ़िया ने एक अंटी सूत में उन्हें ख़रीदना चाहा था। उसी से कहावत बनी।)*

सूत के विनौले हो गए

सब काम चौपट हो गया। गुड़ गोबर हो गया।

सूत न कपास, कोली से लट्ठमलट्ठा

बिना कारण ही लड़ना।
कोली=उत्तर प्रदेश की एक बुनकर जाति; हिन्दू, जुलाहा।

सूधे का मुंह कुत्ता चाटे

बहुत सीधापन भी अच्छा नहीं होता।

सूना खेत कुलच्छना, हिरना ही चुग जाय।
खेत बिराना बोय के, बीज अकारथ जाय। (कृ.)

जिस खेत की रखवाली नहीं होती, वह किसी काम का नहीं। उसे हिरन ही चर आते हैं। खेत का लगान तो देना ही पड़ता है, बीज भी व्यर्थ जाता है, (अर्थात कुछ लाभ नहीं होता)।

सूना वर, भिड़ों का राज

खाली घर में बर्रें मौज करती हैं, अर्थात कुछ दिनों में वह नष्ट हो जाता है।

सूनी सेज से मरखना बैल भी भला, (स्त्रि.)

रंडापे से तो बुरे स्वभाव वाला पति ही अच्छा। कुछ न होने से तो कुछ होना हज़ार दर्जे अच्छा।
(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है कि 'सूने सार से मरखना बैल भी भला' और यही ठीक भी है। पर फैलन ने इसे उक्त प्रकार से ही लिखा है।)

सूने मां मत धीज रख ले जाय चोर चकार।
खाऊ है धन औ जीव का, सूना और उजार।

स्पष्ट।
सूना=सुनसान, निर्जन स्थान

सूप बोले सो बोले, चलनी भी बोले; जिसमें बहत्तर छेद

स्वयं अपने अवगुणों को न देखकर जब कोई दूसरों की बुराई करता है, तब क.।

सूम की थाती

(1) ऐसे कंजूस के धन के लिए कहते हैं, जो किसी काम में कुछ भी खर्च नहीं किया चाहता।
(2) बहुत यत्न से रखी जाने वाली वस्तु के लिए भी।

सूम के घर कुत्ता जाय, न जाने दे

धनवान कृपण के नीच नौकर पर व्यंग्य।

'सूमन पूछे सूम से, 'कहो बदन मलीन?
का गांठी से गिर पड़ा, का काहू को दीन?'
'ना गांठी से कुछ गिरा, ना काहू को दीन।
देते देखा और को, ताते बदन मलीन।'

सूम की स्त्री सूम से पूछती है कि 'आज आपका चेहरा उदास क्यों है? क्या आपके पास से कुछ गिर गया है या किसी को आपने कुछ दिया है?' सूम उत्तर देता है—'न तो मेरा कुछ गिरा है, न किसी को कुछ दिया है, पर मैंने दूसरे को देते देखा है, इसी से मैं उदास हूं।'
(कंजूसों पर करारा व्यंग्य। वे स्वयं तो किसी को कुछ देते ही नहीं, दूसरे को देते देखकर भी उन्हें दुख होता है।)

सूरज को क्या आरसी लेके देखते हैं?

वो तो स्वयं ही दिखाई पड़ता है।

सूरज धूल डालने से नहीं छुपता

(1) बड़ों की बुराई करने से वे बुरे नहीं बन जाते।
(2) तेजस्वी पुरुष किसी के छिपाने से नहीं छिपता।

सूरज ने भान उभारी, रैन घर को सिधारी

सूर्य निकलने पर रात चली जाती है।

सूरज वैरी ग्रहन है, (और) दीपक बैरी पौन।
जीका वैरी काल है, आवत रोके कौन?

स्पष्ट।
पौन=पवन। हवा।

सूरत चुड़ैल की-सी, मिज़ाज परियों का-सा

बदशक्ल होते हुए दिमाक से रहना।

सूरत न शकल, भाड़ में से निकल

कालाकलूटा, बदशक्ल आदमी।

सूरत में ऐसे, सीरत में ऐसे

न देखने में अच्छे, न करनी के अच्छे; सब तरह से बुरा आदमी।

सूरत मेरे मित्र की, मन में रही समाय।
ज्यूं मेहंदी के पांत में, लाली लखी न जाय।

अपने मित्र (या प्रियतम) की छवि मेरे हृदय में इस प्रकार बसी हुई है, जिस प्रकार मेहंदी के पत्ते में उसका लाल रंग

छिपा रहता है, और उसे कोई देख नहीं पाता।

सूरदास जनम के नहीं आंधर

सूरदास जन्म के अंधे नहीं थे।

अमुक व्यक्ति बिलकुल मूर्ख नहीं, उसने दुनिया देखी है, ऐसा भाव प्रकट करने को क.।

(हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और भक्त सूरदास अकबर के समय में हुए हैं। कहा जाता है कि किसी स्त्री के रूप पर मोहित हो जाने के कारण उन्होंने अपने नेत्र फोड़ लिए थे।)

सूरमा चना भाड़ नहीं फोड़ सकता

चने का मज़बूत-से-मज़बूत दाना भी भाड़ नहीं फोड़ सकता। *(कमजोर आदमी के लिए अपने से अधिक ताक़तवर का मुकाबला करना ठीक नहीं।)*

सूरा काटे और बिल में घुस जाय

वीर पुरुष अपना रास्ता आप बना लेता है।

सूरा रन में जाय के, लोहा करो निसंक।
ना मोहिं चढ़े रंड़ापड़ो, ना तोहि चढ़े कलंक। (स्त्रि.)

वीर पत्नी का अपने स्वामी से कहना कि युद्ध-क्षेत्र में जाकर तुम इस तरह अपने जौहर दिखाओ कि न तो मुझे वैधव्य ही भोगना पड़े, और न तुम्हारे माथे कलंक का टीका ही लगे।

सूरा सो पूरा

(1) अंधा बहुत होशियार होता है।

(2) जो वीर है, वह सब कुछ कर सकता है, यह अर्थ भी है।

सूली पर की रोटी खाता है

ऐसे काम करके अपना जीवन-निर्वाह करता है, जिसमें मौत की सज़ा हो सकती है।

सूली पर भी नींद आती है

नींद ऐसी चीज है, जो कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी आ जाती है।

सूहा जोग सुहाग का और कूप जोग है नीर।
गुरु विद्या का जोग है, सोच समझ रे वीर।

लाल रंग (यानी सेंदुर) सुहाग को, पानी कुएं को, और विद्या गुरु को शोभा देती है।

सूहे की रीति नहीं, मशरू की तौफीक नहीं, (स्त्रि.)

लाल रंग के कपड़े पहनने का चलन नहीं, और रेशम ख़रीदने की ताकत नहीं।

जो संभव है उसे न करना और जो असंभव है उसे करने को मन चलना।

मशरू=एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

तौफ़ीक=सामर्थ्य। शक्ति।

सेंत का चूना, दादा की क़ब्र, (पू.,मु.)

मुफ़्त की चीज का उपयोग करने के लिए हर आदमी तैयार रहता है।

सेंत का माल, हिरदा निर्दयी, (पू.)

मुफ़्त का माल ख़र्च करने में दर्द नहीं होता।

सेंदुर टिकुली अरल, तो पेटो मां बज्जर पड़ल, (स्त्रि.)

किसी स्त्री का कहना जो ससुराल में कष्ट पा रही है– शौक की चीज नहीं मिलती, तो क्या पेट भर खाने को भी नहीं मिलेगा? जब किसी नौकर को पूरी तनख़्वाह न मिले तब वह भी कहता है।

सेंदुर न लगाएं तो भतार का मन कैसे रखें?

कुछ काम ऐसे होते हैं तो दूसरों को प्रसन्न करने के लिए करने ही पड़ते हैं।

सेज की मक्खी भी बुरी, (स्त्रि.)

फिर सौत के संबंध में तो कहा ही क्या जाए?

सेठ क्या जाने साबुन का भाव?

जिसका जिस काम से कोई संबध नहीं, वह उसका भेदभाव क्या जाने?

सेर की हांडी में सवा सेर पड़ा और उफ़नी

छोटे आदमी को किसी काम में थोड़ी भी सफलता मिल जाए, तो उसका दिमाग फिर जाता है।

सेर कौ दूध, अधौन कौ पानी; घम्मर घम्मर फिरे

बच्चों की तुकबंदी।

यह बुंदेलखंड में इस प्रकार प्रचलित है–

सेरक दूध, पसेर पानी, घम्मर घम्मर दूध मथानी।

(प्रायः दूध में पानी मिलाने वाले अहीरों के लिए क.।)

अधौन=बर्तनों को धोने से बचा हुआ यानी, धोवन।

सेर को सवा सेर

(1) ज़बर्दस्त को भी कोई-न-कोई दबाने वाला होता है।

(2) चालाक को भी उससे अधिक चालाक मिल जाता है।

सेर में पसेरी का धोखा, (व्य.)

(1) एक असंगत बात। सेर भर माल की तौल में पसेरी की गड़बड़ी कैसे हो सकती है?

(2) बहुत अधिक नुकसान हो जाने पर भी क.।

सेर में पूनी भी नहीं कती

अभी कुछ भी काम नहीं हुआ।

पूनी=धुनी हुई रूई की वह छोटी बत्ती, जो सूत कातने के

लिए बनाई जाती है।

सेवक सठ, नृप कृपन, कुनारी।
कपटी मित्र शत्रु सम चारी। (तुलसी)

धूर्त नौकर, कंजूस राजा, दुराचारिणी स्त्री और कपटी मित्र—ये चारों शत्रु के समान हैं।

सेवक सोई जानिये, रहे बिपत में संग।
तन छाया ज्यों धूप में, रहै साथ इक रंग।

सेवक तो वही है, जो विपत्ति में साथ दे; जैसे धूप में छाया शरीर का साथ नहीं छोड़ती।

सेवा ऐसी लाभ दे, ज्यों गांडा दे रस।
सेवा की थी डोम ने, हुए एक के दस।

सेवा से उसी तरह लाभ होता है, जैसे गन्ने के रस से मिलता है। एक बार किसी डोम ने (भगवान की) सेवा की थी, उसका दस गुना फल उसे मिला।

(पता नहीं किस डोम की सेवा की चर्चा यहां है।)

सेवा करे सो मेवा पावे

सेवा का फल अच्छा मिलता है।

सेह का कांटा घर में मत रखो, लड़ाई होगी, (लो. वि.)

लोगों का विश्वास है कि सेही का कांटा घर में रखने से लड़ाई होती है।

सैयां के अरजन, भैया के नाऊं, पहन ओढ़ मैं सासुर जाऊं, (स्त्रि.)

खरीदे हुए मेरे पति के हैं, नाम भाई का है, उन्हीं (वस्त्रों) को पहनकर मैं ससुराल जा रही हूं। मांगकर लाई हुई चीज से शौक़ करना।

(स्त्रियां प्रायः पति के द्वारा खरीद कर लाई गई वस्तु को मायके का बताकर ससुराल लाती हैं। कहावत में उसी का वर्णन है। भाव यह है कि कपड़ों के ख़रीदने में भाई का कुछ ख़र्च नहीं हुआ और ससुराल के लोगों के सामने उसके बड़प्पन की रक्षा भी हो गई।)

सैयां गए बिदेस, मैं तो कात कात मुई।
आगरे का चरखा, बुरहानपुर की रुई। (स्त्रि.)

किसी स्त्री का पति विदेश चला गया है। वही कह रही है।

(कठपुतली का नाच दिखाने वाले प्रायः इस तरह के गीत गाया करते हैं।)

सैयां गये लदनी, लदाइन झड़ाझड़।
सौ के पचास किये, चले आये घर। (स्त्रि.)

व्यापार में किसी को नुकसान हुआ। उसी को स्त्री व्यंग्य में कहती है।

लदनी=माल लादना।

सैयां जामत बिदेस को, कंया हाट मत खोल।
हुनर देख मेरे हाथ का, कातं सूत अनमोल। (स्त्रि.)

कोई स्त्री अपने पति को विदेश जाने से रोकती हुई कह रही है कि 'हे प्रियतम ! आप (व्यापार के लिए) दूर देश न जाएं, और आप कोई दूकान भी न खोलें, आप मेरे हाथ का कौशल देखें, मैं कितना बढ़िया सूत कातती हूं। उससे मज़े में जीवन निर्वाह हो जाएगा।

(इस कहावत से यह बात बहुत अच्छी तरह प्रकट होती है कि आज से सौ साल पहले जिस समय यह कहावत बनी होगी, भारत की स्त्रियां सूत कातने में विशेष निपुण ही नहीं थीं, बल्कि इस कार्य के द्वारा वे मज़े में जीवन-यापन भी कर सकती थीं।)

सैयां तेरे कारने, जल बल हो गई राख।
पत गे मैं बेपत भई, पंचन में गई साख। (स्त्रि.)

पर-पुरुष से प्रेम करने वाली विरहिणी स्त्री का कहना।

सैंयां ने इस दुनिया में लाखों पये बट्टे।
कधी न लाये लड्डू पेड़े, बेर खिलाये खट्टे। (स्त्रि.)

किसी धनाढ्य और सूम पति के प्रति उसकी स्त्री का उलाहना।

बट्टे=इकट्ठे किए।

सैंयां भये कोतवाल, अब डर काहे का? (स्त्रि.)

घर का आदमी ही जब किसी रोब-दाब वाली जगह पर पहुंच गया, तो अब किस बात का डर?

(चाहे जो करो।)

(फैलन की इस पर टिप्पणी है कि कोतवाल यद्यपि पुलिस का एक साधारण कर्मचारी होता है, पर साधारण जनता के लिए वह जोर-ज़ुल्म का प्रतीक है।)

सैकड़ों के वारे-न्यारे हो गए

काफ़ी ख़र्च हो गया।

सोंटा बल बिन काम न आवे, बैरी छीन तुझे गुदकावे

शक्ति के बिना लाठी भी काम नहीं आती, दुश्मन छीनकर उल्टी मार लगा सकता है।

सोंटा हाथ, देह में हांगा, उसने भेंटे सब कुछ मांगा

जिसके हाथ में लाठी और शरीर में बल है, उसके लिए सब कुछ सुलभ है।

सोंटे अब चल तेरी बारी

सब तरह से हारकर अंतिम उपाय काम में लाना।

(इसकी कथा है कि एक बार शेख़चिल्ली ने—जो अपने

नाम के प्रसिद्ध मूर्ख हुए हैं—अपनी मां से कहा कि मैं देश-भ्रमण के लिए जाऊंगा, मेरे लिए रास्ते में खाने के लिए कुछ बना दे। उसकी मां ने चार रोटियां बना कर दीं, जिन्हें लेकर वह यात्रा पर चल पड़ा। पहले मुकाम पर ही एक पेड़ के नीचे जाकर बैठा और रोटियां निकालकर कहने लगा—एक खाऊं, दो खाऊं या चारों को ही खाऊं। संयोग की बात कि उस पेड़ पर चार परियां रहती थीं शेख़चिल्ली की बात सुनकर उन्होंने समझा कि अवश्य यह कोई बड़ा दैत्य है, जो हम चारों को ही खाना चाहता है। इसलिए वे उसके सामने आकर बोलीं कि अगर आप हमें प्राणदान दें, तो हम आपको एक बहुत अनोखी वस्तु भेंट करेंगी। शेख़चिल्ली इसके लिए राज़ी हो गया। तब परियों ने उसे एक जादू की कड़ाही दी और कहा कि आप इससे जितनी भी पूड़ियां मांगेंगे, यह आपको देगी। शेख़चिल्ली कड़ाही पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे लेकर घर की तरफ़ लौट पड़ा। चलते-चलते एक जगह रात हो गई और एक सराय में ठहर गया। वहां उसने बड़े चाव से कड़ाही की सब विशेषता भटियारे को बता दी। वह बड़ा चालाक था। उसने चुपचाप उस कड़ाही को उठाकर उसके स्थान पर एक दूसरी कहाड़ी रख दी। शेख़चिल्ली को इसका कुछ पता नहीं चला। वह जब घर पहुंचा, तो वही बदली हुई कड़ाही मां को देकर बोला—इसकी परीक्षा करो, यह मांगने से पूड़ियां देगी पर जब कड़ाही चूल्हे पर चढ़ाई गई और पूड़ियां मांगी गई तो कुछ भी न मिला। शेख़चिल्ली बड़ा दुखी और निराश हुआ। दूसरे दिन वह फिर चार रोटियां साथ ले उसी पेड़ के नीचे आकर बैठ गया और फिर अपनी उसी बात को दुहराया कि 'एक खाऊं, दो खाऊं या चारों खाऊं,।" सुनकर परियां बड़ी हैरान हुईं कि आखिर क्या बात है। अंत में में जब उन्हें सारा किस्सा मालूम हुआ, तो इस बार उनको एक रस्सी और सोंटा देकर उन्होंने कहा कि इसकी सहायता से तुम्हारी कड़ाही मिल जाएगी। शेख़चिल्ली उन दोनों चीजों को लेकर फिर उसी सराय में गया और रस्सी को ज़मीन पर बिछाकर बोला—बांध ले सबको। रस्सी ने उन सब लोगों को जो वहां मौजूद थे, तुरंत बांध लिया। फिर सोंटे को ज़मीन पर पटककर उसने कहा—सोंटे, अब चल तेरी बारी। उसके इतना कहते ही सोंटा सबको पीटने लगा। मार से घबरा कर भटियारे ने तब उसकी कड़ाही वापिस कर दी, जिसे लेकर वह खुशी-खुशी घर आया।)

सोच के चलना मुसाफ़िर यह ठगों का गांव है।
(1) संसार में काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि जो शत्रु हैं, उनसे बचे रहना चाहिए।
(2) संसार में सभी अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को ठगने के लिए तत्पर रहते हैं, उनसे खूब सावधान रहना चाहिए।

सोचना, जी मोचना
चिंता करना मन को कष्ट देना है।

सो जाये सुपने में प्रानी धन दौलत को पावे।
जाग पड़े जैसे को तैसो, हाथ कछू नहिं आवे।
सुपने की-सी माया, जिसको अपनी बतलावे।
स्पष्ट।

सोत का पानी पाक
झरने का पानी स्वच्छ और पवित्र होता है।

सोता नाग जगाना
(1) किसी दुष्ट को छेड़ना।
(2) जानबूझ कर कोई उपद्रव मोल लेना।

सोती थी पर काता नहीं, जो काता तो पांच पाव, (स्त्रि.)
(मैं) सो रही थी इसलिए नहीं काता, पर जब कातने बेठी, तो सवा सेर कात डाला। आलसी पर व्यंग्य।

सोती भिड़ जगाना
सोती हुई बर्रों के छत्ते को छेड़ना, अर्थात जानकर मुसीबत बुलाना।

सोती रार जगाना
रुके-रुकाए झगड़े को फिर उभाड़ना।

सोते का कटहा, जागते की कटिया
सचेत रहने वाला मुनाफ़े में रहता है।
दे.—जागते की कटिया...।

सोते का मुंह कुत्ता चाटे
असावधान को हर आदमी ठगता है।

सोते को सोता कब जगाता है?
अज्ञानी को अज्ञानी नहीं सुधार सकता।

सोते लड़के का मुंह चूमा, न मां खुश, न बाप खुश
किसी मनुष्य के साथ ऐसा उपकार करने से कोई लाभ नहीं होता, जिसका उसे पता ही न चले।

सोना उछालते चले जाओ
राज्य के अच्छे प्रबंध के लिए क.।

सोना कहे सुनार से, उत्तम मेरी जात।
काले मुंह की घिरमिटी, तुली हमारे साथ।

मैं लालों की लाड़ली, लाल ही मेरा रंग।
काला मुंह जब से हुआ, तुली नीच के संग।

यह सोना और रत्ती, अर्थात सोना और घुंघुची की बातचीत है। सोना सुनार से कहता है—मैं ऊंची श्रेणी का हूं और यह काले मुंह की (अर्थात नीच जाति की) घुंघुची मेरे साथ तुलने की धृष्टता करती है।

घुंघुची जवाब देती है—मैं लालों की (रत्नों की) प्यारी हूं, (अर्थात मेरे साथ रत्न तुलते हैं) मेरा रंग भी लाल है। पर नीच के साथ (अर्थात तुम्हारे साथ) तुलने से मेरा मुंह काला हो गया है; मैं बदनाम हो गई हूं।

(घुंघुची, जिससे सोना आदि तोला जाता है, लाल रंग की होती है, और उस पर काला दाग होता है। यहां 'काला' और 'लाल' दोनों ही शब्दों में श्लेष है।)

सोना-चांदी आग ही में परखे जाते हैं

मनुष्य की परीक्षा विपत्ति पड़ने पर ही होती है।

सोना छुए मिट्टी हो

अभागे, कर्महीन मनुष्य के लिए क.।

सोना जाने कसे, और मानस जाने बसे

सोने की परीक्षा कसौटी पर कसने से और मनुष्य की परीक्षा उसके निकट रहने से होती है।

सोना-सोना कुछ जात नहीं, (स्त्रि.)

रुपए-पैसे से जाति नहीं पहचानी जाती।

सोना नीक तो कान फराये के? (स्त्रि.)

सोना अच्छा है तो क्या कान फड़वाने के लिए?

अच्छी वस्तु से हानि हो, तो उसे त्यागना ही चाहिए।

सोना ले के मिट्टी भी नहीं देता, (व्य.)

लेकर न देने वाले के लिए क.।

सोना लेने पी गए, (और) सूना कर गए देश।
सोना मिला, न पी मिले, रूपा हो गए केश।

ऐसा काम जिसमें गांठ की पूंजी भी चली गई, और परेशानी हो रही है अलग।

रूपा=चांदी, चांदी के रंग के, सफ़ेद।

सोना सुगंध है

बहुत ही अच्छी वस्तु। (सोने में सुगंध नहीं होती, यदि होती, तो वह बहुत अनमोल हो जाता।)

सोना सुनार का, आभरण संसार का

गहना पहनने वालों का, पर सोना सुनार का ही होता है। *(इसकी कथा है कि एक बार किसी बादशाह ने सुनार से पूछा कि तुम रुपए में कितना खा सकते हो? सुनार ने जवाब दिया—'सोलहों आना।' बादशाह ने इसकी परीक्षा करनी चाही और एक सोने की मूर्ति राजमहल में बैठकर ही बनाने को कहा। साथ ही उस पर कड़ा पहरा बिठला दिया। राजमहल में जाकर काम शुरू करने के पहले सुनार ने अपने घर पर ही एक पीतल की मूर्ति बना ली और उसे अपनी स्त्री के पास दही की मटकी में डालकर छोड़ दिया। राजमहल में जब सब के सामने स्वर्णमूर्ति बनकर तैयार हो गई तो उसने कहा कि इसे अब खटाई में साफ करना होगा। उसी समय उसकी स्त्री, जिसे उसने पहले से सिखा-पढ़ा रखा था, 'दही लो, दही लो' की आवाज़ करती हुई निकली। सुनार ने यह कहकर कि खटाई के लिए इसका दही ख़रीद लिया जाए, उसे बुला लिया, और उसकी मटकी लेकर उसमें सोने की मूर्ति डाल दी और उसके स्थान पर पीतल की मूर्ति, जो उसमें पड़ी हुई थी, निकाल ली। इस प्रकार सोने की मूर्ति उसके घर पहुंच गई और बादशाह के सामने उसने अपनी बात रख ली।)*

सोने का गडुवा और पीतल की पेंदी

(1) अशोभन कार्य।

(2) ऐसी वस्तु या मनुष्य, जिसमें सब अच्छाइयों के होते हुए भी कोई बड़ा दोष हो।

सोने का निवाला खिलाइए और शेर की नज़रों से देखिये

लड़कों के लालन-पालन के संबंध में क. कि उन्हें प्यार तो करें, पर उन पर कड़ी नज़र भी रखे, जिससे वे बिगड़ने न पाएं।

सोने की अंगूठी, पीतल का टांका, मां छिनाल, पूत बांका

किसी अच्छी वस्तु में एक ऐब होने से ही वह सब-की-सब वस्तु बुरी बन जाती है।

सोने की कटारी को कोई पेट में नहीं मारता

बड़े-से-बड़े लाभ के लिए कोई अपने प्राण नहीं दे देता।

सोने की कटोरी में कौन भीख न देगा?

(1) सुंदर कन्या को वर मिलने में देर नहीं लगती।

(2) धनी मनुष्य को जल्दी ही कर्ज़ मिल जाता है।

सोने की चिड़िया हाथ लगी है

(1) जब किसी लुच्चे व लफंगे धनवान को अपना आसामी बना लेते हैं, अथवा जब किसी उदार पुरुष की किसी पर विशेष कृपा हो जाती है, तब क.।

(2) वकीलों व अदालत के मामलों के पंजे में जब कोई धनी मुवक्कल फंस जाता है, प्रायः तब क.।

(3) धनी जजमान के मरने पर उसके पुरोहित का कथन।

सोने की चिड़िया हाथ से उड़ गई
दे. ऊ.। यह उसका उल्टा है।
जब कोई अच्छा ग्राहक हाथ से निकल जाता है, तब प्रायः दूकानदार कहा करता है।

सोने की बड़ेरी, फूस का छप्पर
(1) बिल्कुल ही विवेकहीनता का काम।
(2) असंगत काम।
बड़ेरी=वह लंबा लट्ठा जिस पर छप्पर रखते हैं।

सोने को सलाम, रूपे को आलेक, भूखे को न देख
सब लोग धनी मनुष्य की ही इज़्ज़त करते हैं, ग़रीब को कोई नहीं पूछता।
सलाम+आलेक=सलामालेक; सलाम-अलैकुम का विकृत रूप मुसलमानों में वह प्रणाम या बंदगी के लिए प्रयुक्त होता है।

सोने में पीली, मोतियों में धौली (स्त्रि.)
सोने-मोती के गहनों से लदी हुई स्त्री।
धौली=उज्ज्वल। सफ़ेद।

सोने से गढ़ाई महंगी
वस्तु के मोल से बनवाने की मज़दूरी अधिक। अथवा कम लाभ के लिए बहुत परिश्रम।

सोभा रन की सूरमा, घर की सोभा वीर।
रज की सोभा चांदनी, भोजन सोभा खीर।
वीर पुरुष से युद्ध की, गृहिणी से घर की, चांदनी से रात की और खीर से भोजन की शोभा बढ़ती है।

सोभा लावें मनुख को, सुरत फुरत और ज्ञान।
जिसमें यह तीनों नहीं, वे नर ढोर समान।
बुद्धि, चातुर्य और ज्ञान—ये मनुष्य की शोभा हैं; जिसमें ये तीनों नहीं, वह पशु के समान है।

सोया और मुआ बराबर
जो सचेत नहीं, वह मरे के समान है।

सोया सो चूका
आलस किया और गए।

सोरठ मीठी रागनी, रन मीठी तलवार।
जाड़े मीठी कामली, सेजों मीठी नार।
मीठी होती है सोरठ रागिनी, मीठी होती है युद्ध में तलवार, मीठी होती है जाड़े में कमली, मीठी होती है शैया पर रमणी।
कमली=कंबल।

सोवेगा सो खोवेगा, जागेगा सो पावेगा
जो सावधान रहता है, उद्योग करता है, वह पाता है।

सोवे भाड़ पर सपना देखे धरोहर का
साधारण मनुष्य के बड़ी-बड़ी इच्छाएं करने अथवा डींग हांकने पर क.।

सोवे राजा का पूत या जोगी अवधूत
क्योंकि इन्हें किसी बात की चिंता नहीं होती।

सोहनी बुआ और चटाई का लहंगा
बेतुका शौक़।
दे.—शौक़ीन बुढ़िया...।

सोहबत का असर है
संगत का प्रभाव होता है।
जब कोई बुरी सोहबत में पड़ जाता है प्रायः तब क.।

सौ ऐबों का एक ऐब नादारी
ग़रीबी स्वयं ही एक बड़ा ऐब है।

सौकन चून की भी बुरी है, (स्त्रि.)
सौत आटे की भी बुरी होती है।

सौकन बुरी चून की और साझे का काम।
कांटा बुरा करील का और बदरी का धाम। (स्त्रि.)
स्पष्ट। दे.—कांटा बुरा...।

सौ कपूत से एक सपूत भला, (स्त्रि.)
स्पष्ट।

सौ कालियों में एक काला
बहुत धूर्त।
कालियों में=काले आदमियों में।

सौ की हानी, सहस्सर बखानी
बात बढ़ाकर कहना।

सौ के रह गए साठ, आधे गए नाठ, दस देंगे,
दस दिला देंगे, दस का देना क्या?
कोई कर्ज़दार साहूकार से कह रहा है कि हमने तुमसे जो सौ रुपए लिए थे, उनमें से साठ ही तो देना बाकी हैं, आधे छूट गए; दस रुपया दे देंगे, दस (किसी) से दिला देंगे, बाकी रहे दस, सो उनका देना क्या? जब कोई अपना देना चुकाने में बहुत हीला-बहाना करता है, तब उससे भर्त्सना में क.। झूठा-सच्चा हिसाब बताकर रक़म को बराबर कर देने पर भी क.।

सौ कोसा और एक भरोसा बराबर, (स्त्रि.)
एक ग़मखोरी सौ गालियां देने के बराबर है। गालियां देने

से सहनशीलता अच्छी।

सौ कौवों में एक बगला भी नरेस

धूर्तों का राजा भी धूर्त होता है।

(कौवे की तरह बगुला भी चालाकी का प्रतीक माना जाता है।)

सौ खोटों का वह सरदार, जिसकी छाती एक न बार

स्पष्ट।

(सामुद्रिक दृष्टि से ऐसा व्यक्ति, जिसकी छाती में बाल न हों, बुरा माना जाता है।)

सौ गज़ वारूं और गज भर न फाडूं

(1) देना कुछ नहीं, झूट-मूठ ही मन बहलाना।

(2) कहना बहुत, काम कुछ न करना।

सौ गाड़ी न एक छकड़ा सौ सोते न एक मचला

सो गाड़िया एक छकड़े के बराबर हैं और सौ सोते हुए आदमी एक ऊंघते के बराबर। भाव यह कि जो जानबूझ कर भी न देखे, वह अंधों से भी बुरा है।

सौ गाड़ी न एक छकड़ा, सौ हरामज़ादे न एक मगरा

मगरा या घुन्ना आदमी बहुत बुरा होता है। वह सौ हरामज़ादों से भी बढ़कर होता है।

मगरा=ऐसा मनुष्य जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भाव को मन में ही छिपाकर रखे; चुप्पा, घुन्ना।

सौ गालियों का एक गाला बनाया और उड़ा दिया

सहनशीलों का क.।

सौ गुंडा न एक मुछमुंडा

एक मुछमुंडा सौ गुंडों से भी अधिक बदमाश होता है। *(यह कहावत उस समय चली होगी, जब लोगों ने मूंछें साफ़ रखना शुरू किया ही होगा। मूंछें मुंड़वाना विशेषकर पिता के जीवित रहते हुए किसी समय बहुत बुरी-दृष्टि से देखा जाता था।)*

सौ गुलामों घर सूना, (स्त्रि.)

सौ नौकरों के रहते हुए भी घर सूना लगता है।

(मालिक के बिना।)

सौ जीवों का एक बचाव

जहां एक कमाने वाला और बहुत खाने वाले हों, वहां क.।

सौ डंडी न एक बुंदेलखंडी

एक बुंदेलखंडी सौ लठैतों के बराबर होता है।

(बुंदेला राजपूत अपनी वीरता के लिए किसी समय प्रसिद्ध रहे हैं।)

सौत की मूरत भी बुरी, (स्त्रि.)

दे. सौकन चून...।

सौत चून की भी बुरी, (स्त्रि.)

दे. सौकन चून...।

सौत जाय, सौत का नाड़ा न जाय, (स्त्रि.)

सौत चली जाए, पर उसका पति न जाए।

नाड़ा=इज़ारबंद।

सौत पर सौत और जलापा, (स्त्रि.)

सौत की सौत मौजूद है, और जलन अलग।

सौत भली, सौतेला बुरा, (स्त्रि.)

सौतेले लड़के से सौत भली। *(वह सौत से बुरा होता है।)*

सौतिया डाह मशहूर है

बड़ा विकट होता है।

सौदा अच्छा लाभ का, और राजा अच्छा दाव का

सौदा वही अच्छा, जिसमें मुनाफ़ा हो; राजा वही अच्छा, जिसका रोब-दबदबा हो।

सौदा कर नफ़ा होगा

माल ख़रीदो और बेचो, ज़रूर नफ़ा होगा। भाव यह कि उद्योग करो। फल मिलेगा।

सौदा बिक गया, दूकान रह गई

ज़वानी निकल गई, पंजर रह गया।

रस निकल गया, फोकट रह गया।

सौदा लीजे देखकर, और रोटी खाइए सेंक कर

सौदा देखभाल कर लेना चाहिए, और रोटी सेंककर खानी चाहिए।

सौदा सौदाइयों बात नफ़े में

सौदा तो सौदा करने वालों के लिए है, बातें नफ़े में (सुनने को मिलीं)।

दूकानदार ग्राहक पटाने के लिए जो तरह-तरह की लच्छेदार बातें करते हैं, उनसे ही अभिप्राय है।

सौ दिन चोर के तो एक दिन साह का

कोई बदमाश आदमी कई बार शरारत करके भले ही बचता रहे, पर कभी-न-कभी पकड़ा ही जाता है।

सौ दिल्ली उजड़ गई, तौ भी सवा लाख हाथी

सब कुछ दिल्ली उजड़ गई हो, पर उसकी शान वैसी ही बनी है।

दे.—लटा हाथी...।

सौ नकटों में एक नाकवाला नक्कू

बुरे आदमियों के समाज में भला आदमी निभ नहीं पाता।

वह अपनी भलमनसाहत के लिए ही बदनाम हो जाता है। नक्कू शब्द के यहां दो अर्थ हैं : (1) बड़ी नाक वाला। (2) ऐसा व्यक्ति जो सबसे अलग हो।

सौ बात की एक बात यह है
सारांश यह है।

सौ बार तेरी, एक बार मेरी
चालाक के लिए क.। कभी-न-कभी चक्कर में फंसोगे ही।

सौ बैरी कटवां कहे, मस्तक लिखा सो होय।
लेख लिखे को बालके, मेट न सक्के कोय।
शत्रुओं के कोसने से किसी का कुछ बिगड़ता नहीं। जो भाग्य में लिखा होता है, वही होता है।
कटवां कहे=कड़वी बात कहे।

सौ भड़वे मरे तो एक चम्मच चोर पैदा हो
सौ रंडी मरें तो एक आया
सौ भड़ुवों के मरने पर एक चम्मच चोर पैदा होता है और सौ रंडियों के मरने पर एक आया।
(चम्मच-चोर से यहां मतलब उन खानसामों व ख़िमदतगारों से है, जो अंग्रेज़ों के ज़माने में उनके यहां काम किया करते थे। फैलन की उक्त कहा. पर टिप्पणी है कि अंग्रेज़ों के ख़ानसामा और आया ये दोनों ही अपनी दुश्चरित्रता के लिए अत्यंत बदनाम हैं, इसीलिए ऐसा कहा गया है।)

सौ मारे और एक न गिने
अर्थात बराबर पीटता ही जाए।
निकम्मे या बदमाश के लिए क.।
भाव यह है कि यह पीटे जाने के सिवा और किसी योग्य नहीं।

सौ मारे और निन्नानवे से भूल जाय
अर्थात मारता ही जाए, हाथ बंद न होने पाए।
ऊ. भी दे.।

सौ में फूला, हज़ार में काना, सवा लाख में ऐंचाताना
(आंख में) फुलीवाला सौ के मुकाबले में, काना हज़ार के मुक़ाबले में और ऐंचकताना सवा लाख के मुक़ाबले में बुरा होता है।
फुला=जिसकी आंख में चोट आ जाने की वजह से सफ़ेद दाग पड़ गया हो।
ऐंचकताना=भेंड़ी आंख वाला।

सौ लगी तो क्या? हज़ार लगी तो क्या?
ऐसे व्यक्ति के लिए क., जो कई बार पिट चुका हो या अपमानित हुआ हो।
('सौ लगी' से मतलब जूतियों के लगने से है।)

सौ लठैत न एक पटैत
एक पटेबाज़ सौ लठैतों को हरा सकता है।
(पटा लोहे की एक पट्टी होती है, जिससे तलवार के काट और बचाव सीखे जाते हैं। उसी से पटैत या पटेबाज़ शब्द बना है।)

सौ हाथी लट गया तौ भी सवा लाख रुपए का
दे.—हाथी हजार लटा...।

स्याम न छोड़ों, छोड़ो न सेत; दोनों मारो एक ही खेत
दे.—काली भली न सेत...।

स्वर्ग से उतरा, बबूल में अटका
जब किसी पूरे होते हुए काम में यकायक फिर कोई बाधा आ जाए, तब क.। (फैलन की टिप्पणी है कि यह कहावत उन सरकारी कर्मचारियों के लिए प्रयुक्त होती है, जो अक्सर लोगों का रुपया रोक रखते हैं, और समय पर देते नहीं।)

स्वांत बूंद सीपी मुक्त, करदली भयो कपूर।
कारे के मुख बिखर भयो, संगत सोभा सूर।
स्वाति की बूंद सीपी में पड़ने से मोती, कदली में पड़ने से कपूर, और सर्प के मुख में पड़ने से विष बन जाती है। सूरदास कहते हैं यह सब संगत का फल है।
(स्वाति नक्षत्र में जो जल बरसता है, उसके विषय में लोगों का ऐसा ही विश्वास है, और वही कहावत में व्यक्त हुआ है।)

स्वांस स्वांस में कृष्ण रट, स्वांस बिरथा मत खोय।
ना जानूं या स्वांस का, यही अंत ना होय।
जीवन का कुछ ठिकाना नहीं, न जाने कब अंत आ जाए, इसलिए प्रतिक्षण कृष्ण का नाम लेते रहो।

ह

हंसते ठाकुर, खंसते चोर, इन दोनों का आया ओर

हंसने से ठाकुर का रोब जाता रहता है और खांसने से चोर पकड़ा जाता है।

ठाकुर=गांव का ज़मींदार या मुखिया।

ओर=अंत।

हंसते ही घर बसता है

हंसी-मजाक करते-करते घर बस जाता है, अर्थात प्रेम संबंध हो जाता है।

हंसते हो, कुछ पड़ा पाया है?

जब कोई व्यर्थ हंसता दिखाई दे, तब क.।

हंसना बामन, खंसना चोर, कुपढ़ कायथ, कुल का बोर

हंसोड़ ब्राह्मण, खांसने वाला चोर, और अनपढ़ कायस्थ—ये तीनों कुल का नाश करते हैं।

हंस गुन पावे, तेवर लागे, (पू.)

प्रसन्नतापूर्वक उसे जो चीज दी जाती है, उसे वह भौंहें सिकोड़ कर लेता है, अर्थात कोई अहसान नहीं मानता। कृतघ्न के लिए क.।

हंस हंस खइये फूहड़ का माल, (स्त्रि.)

मूर्ख का माल उसे बेवकूफ़ बनाकर खाना चाहिए।

हंसा चलल फूहड़ केओ न संगे लाग, (पू.)

मरने पर कोई साथ नहीं जाता।

हंसा=आत्मा से अभिप्राय है।

हंसा थे सो उड़ गए (और) कागा भये दिवान।
जा बम्मन घर आपने, सिंह काके जजमान।

जब किसी सज्जन के स्थान पर दुर्जन का आधिपत्य हो जाए, तब क.।

(कथा है कि कोई लोभी ब्राह्मण सिंह की मांद में गया। उसने सोचा था कि सिंह ने जिन मनुष्यों को मार डाला है, उनका गहना और धन वहां पड़ा मिल जाएगा। पर सिंह ने देखते ही उसे पकड़ लिया। उस समय सिंह का मंत्री एक हंस था। उसने ब्राह्मण देवता के प्राण बचाने के उद्देश्य से सिंह को समझाया कि आपके पुरोहित हैं और आप इनके जजमान, इनको मारना ठीक नहीं। सिंह ने हंस की बात मान ली और जो धन पड़ा था, उसे भी ले जाने दिया। कुछ दिन बाद ब्राह्मण फिर उसी स्थान पर पहुंचा। उस समय एक कौवा सिंह का मंत्री हो गया था। उसने ब्राह्मण को मार डालने की सलाह दी। किंतु सिंह को यह पसंद नहीं आया और उसने हंस की बात याद करके ऊपर की पंक्तियां ब्राह्मण से कहीं।)

हंसिये दूर, पड़ौसी से ना

दूर वालों से हंसी-मजाक करे, पड़ोसी से कभी नहीं।

हंसी और फंसी

स्त्री अगर हंसकर जवाब दे, तो समझ लो कि वह काबू में आ गई। हंसना सम्मति का लक्षण है।

हंसी बैरी बइयर की, खांसी बैरी चोर की

हंसी स्त्री की शत्रु है और खांसी चोर की।

हंसी में खंसी

(1) बहुत हंसने से बुराई पैदा होती है।

(2) बहुत हंसने से खांसी आती है।

हंसी में बिखेली भेल, (पू.)

हंसी में विष पैदा हो गया।

हंसी-हंसी में बिगाड़ हो गया।

हंसुवा के ब्याह, खुरपा के गीत, (पू.)

असंगत काम।

हंसुवा=हंसिया, घास वगैरह काटने का एक औज़ार।

हंसुवा चोख न, खुरपा भोंतर, (पू.)
दोनों निकम्मे। हंसिया भी तेज नहीं, और खुरपा भी भोथरा।

हंसुवा दूर की पड़ोसिन की नाक, (स्त्रि.)
पड़ोस की एक स्त्री दूसरी स्त्री से हमेशा लड़ने को तैयार रहती है, उसी से अभिप्राय में क.।

'हंसुवा रे! तू टेढ़ काहे?' 'आ तो अपना गों से', (पू. स्त्रि.)
'क्यों रे हंसिया! तू टेढ़ा क्यों?' जवाब मिला—
'अपने मतलब से।' हंसिया टेढ़ा न हो, तो घास नहीं काट सकता। मनुष्य को अपना काम बनाने के लिए टेढ़ा बनना पड़ता है।

हंसे तो औरों को, रोवे तो अपनों को
मनुष्य अगर प्रसन्न रहे, तो दूसरे भी उसे देखकर प्रसन्न होते हैं, अथवा उसके साथ हंसते हैं और यदि वह रोने बैठ जाए, तो उसे अकेला ही रोना पड़ेगा; मतलब कोई उसके साथ रोने नहीं आएगा।

हंसे तो हंसिये, अड़े तो अड़िये
जो जैसा करे, उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिए।
अड़ना=झगड़ा करना।

हक़ अल्ला, पाक ज़ात अल्ला, (मु.)
ईश्वर सत्य है, पवित्र है।

हक़ कड़वा है
सत्य कड़वा होता है।

हक़कर, हलालकर, दिन में सौ बार कर, (मु.)
सही और उचित काम कर, धर्म का काम कर, दिन में सौ बार कर।

हक़ कहने से अहमक़ बेजार
बेचारा मूर्ख सच नहीं बोल पाता। अथवा मूर्ख को सच से चिढ़ होती है।

हक़ कहे से मारा जाय
सच कहने वाले को जान से हाथ धोना पड़ता है।

हक़ कहे सो दाढ़ीजार, (स्त्रि.)
ईश्वर को सच पसंद है।

हक़ का साथी खुदा, (मु.)
ईश्वर सच बोलने वाले की मदद करता है।

हक़दार तरसें, अंगार बरसें
जो हक़दार का हक़ छीनता है, उस पर अंगारे बरसते हैं।

हक़ न पावे, इनाम, (पू.)
नियमानुसार जो मिलना चाहिए, वह तो उसे कोई देता नहीं, इनाम चाहता है।

हक़ नाम अल्ला का, (मु.)
सत्य नाम परमात्मा का है।

हक़ सब को प्यारा
सत्य सब को प्रिय है।

हक़ हक़ है और ना-हक़ ना-हक़
सही सही है और ग़लत ग़लत।

हक़ीम को क़ारूरे से लाज
कोई मनुष्य व्यवसाय से संबंध रखने वाली चीज से घृणा करे, तो काम कैसे चल सकता है?
क़ारूरा=पेशाब।

हग न सकें पेट को पीटें
स्वयं काम न कर सकें, दूसरों को दोष दें।

हगा, न घर रखा
दोनों दीन से गए; न इधर के रहे न उधर के।
(कथा है कि एक बार किसी राजा ने शास्त्रार्थ में एक जाट से हार मान ली और उसे वचन दिया कि जो तुम मांगोगे वही देंगे। इस पर जाट ने कहा कि मैं आपके बिछौने पर हगूंगा। राजा उससे चूंकि कह चुके थे, इसलिए पलट नहीं सके और उसकी बात उन्हें माननी पड़ी। उस समय मंत्री को एक युक्ति सूझी। उसने जाट से कहा कि बिछौने में हगना तो ज़रूर, लेकिन पेशाब न करना। अगर पेशाब की तो तुम्हारा घर छीन लिया जाएगा। जाट ने इस शर्त को मान लिया, किंतु हगने के पहले ही उसने पेशाब कर दिया। तब उसे पकड़ लिया गया और उसका घर ज़ब्त हो गया।)

हगासे लड़के के नथने पहचाने जाते हैं, (स्त्रि.)
मनुष्य का चेहरा देखकर पता चल जाता है कि वह कष्ट में है।

हज का हज, निज का निज, (मु.)
मक्का शरीफ़ की यात्रा भी, और अपना मतलब भी। एक काम में दो काम।
(बहुत से मुसलमान यात्री मक्का केवल इसलिए जाते हैं कि वहां से बहुत-सी चीजें खरीद कर लाई जाएं और फिर मुनाफ़े पर उनको यहां बेच दिया जाए। वही भाव कहावत में छिपा है।)
पाठा.—हज का हज, बनिज का बनिज।

हज़ामत हो गई
ठगे गए; मूर्ख बना लिए गए।

हज़ार आफ़तें हैं एक दिल लगाने में
प्रेम करना एक मुसीबत की चीज है।
हज़ार इलाज और एक परहेज़
रोगी के लिए नियम-संयम से रहना, हजारों इलाज से कहीं अच्छा है।
हजार कहो इसके कान पर एक जूं नहीं चलती
कोई जब किसी की वात पर ध्यान न दे, तब क.।
हजार जूतियां मारूं और एक न गिनूं
वहुत पीटने के लिए क.।
हज़ार जूतियां लगीं और इज्जत न गई
बेशर्म के लिए क.।
हज़ार दवा और एक दुवा
हज़ार दवाओं से उतना लाभ नहीं होता, जितना ईश्वर की एक प्रार्थना से।
हज़ार नियामत और एक तंदुरुस्ती
तंदुरुस्ती हजार न्यामतों के वरावर है।
न्यामत=दुर्लभ वस्तु।
हज़ार बरस का रेज़ा और नन्हीं नांव
जव कोई वृद्धा-पुराना आदमी अपने को भोला और अनजान वताए, तव.।
रेज़ा=नग, खंड, अदद। बोलचाल की भाषा में रेज़ा मजदूर के साथ काम करने वाली औरत या छोटे लड़के को कहते हैं।
हज़ार भडुवे मरें तो एक खिदमतगार हो
स्पष्ट। (अंग्रेजों के जमाने में जो नौकर उनकी मेज पर खाना लगाते थे, वे ख़िदमतगार कहलाते थे और अपनी चालाकी के लिए वदनाम थे।)
हज़ार रंडियां मरें तो एक आया हो
स्पष्ट।
(यह कहावत भी ऊपर की कहावत की तरह ही है। अंग्रेजों के यहां जो नौकरानी उनके बच्चों को खिलाया करती थी, वह आया कहलाती थी और प्रायः दुश्चरित्रा होती थी।)
हज़ार लाठी टूटी, तो भी घर-बार के बासन तोड़ने को बहुत हैं
भले ही बूढ़े हो गए हों, पर दम तो अब भी है।
हज़ारों घड़े पानी के पड़ गए
बहुत शर्मिंदा हुए।
हज्जाम का उस्तरा मेरे सिर पर भी फिरता है, तुम्हारे सिर पर भी।
जैसा मैं हूं वैसे ही आप। एक आदमी उतना ही अच्छा हो सकता है, जितना दूसरा, बल्कि उससे भी अच्छा हो सकता है।
हज्जाम का टका
कहीं नहीं जाता। चाहे जैसे बाल बनाये पर एक टका उसे मिलेगा ही। ऐसा मुनाफ़ा जिसमें कोई ख़तरा नहीं।
हज्जाम का लड़का पहले उस्ताद का ही सिर मूंड़ता है
स्पष्ट। जब कोई अपने गुरु को ही चूना लगाए, तव क.।
हज्जाम के आगे सबका सिर झुकता है
वक़्त पर सबको सिर झुकाना पड़ता है।
हड़काया कुत्ता
भड़काया हुआ कुत्ता। ऐसा व्यक्ति जिसे किसी की शह मिल गई हो।
हड़काया बन गया
दूसरों की बातों में आ गया, भड़क गया। पागल हो गया।
हड़काया भला, परकाया न भला, (पू.)
पागल अच्छा, दुतकारा अच्छा नहीं।
हड़ खायें, उगलें बहेड़ा
कहें कुछ, करें कुछ।
हड्डी खाना आसान, पर पचाना मुश्किल
रिश्वतखोर के लिए क.।
हथिया चले न पैयां, बैठे दे गुसैयां, (पू.)
आलसी के लिए क.।
हथिया बरसे, चित्रा मंडराय, घर बैठे किसान रिरियाय, (कृ.)
हस्त नक्षत्र में वर्षा होने और चित्रा में केवल बादलों के घिरने से फ़सल को हानि होती है।
(हस्त नक्षत्र अक्तूबर में और चित्रा नवंबर में लगता है।)
हथियार वरसे तीन होत हैं, शक्कर, शाली, माश।
हथिया बरसे तीन जात हैं, तिल्ली, कोदों, कपास। (कृ.)
हस्त नक्षत्र में वर्षा होने से ईख, धान और उर्द की दाल, इन तीन की फ़सल को लाभ और तिली, कोदों तथा कपास को हानि पहुंचती है।
हथियों से गन्ने खाने
हाथी से गन्ना छीनकर खाना।
जानवूझकर वड़े आदमी की दुश्मनी मोल लेना।
हथेली का फफोला
चौवीसों घंटे की मुसीवत। कष्टदायक मनुष्य।
हथेली पर ज़हर रखा रहो, खायेगा सो मरेगा
जो खतरनाक काम करेगा, वही हानि उठायेगा।

हथेली पर जान लिए फिरता है
मरने से नहीं डरता।
हथेली पर सरसों जमाते हैं
काम करते ही तुरंत उसका लाभ उठाना चाहते हैं। मुंह से बात निकालते ही काम हो जाए, ऐसा चाहते हैं।
(सरसों बहुत शीघ्र जमती है, इसी से कहावत की सार्थकता है।)
हनोज़ दिल्ली दूर है
अभी दिल्ली दूर है। अभी बहुत काम बाकी पड़ा है। अयोग्य या मूर्ख का काम जल्दी पूरा नहीं होता।
हनोज़=अब भी, अभी तक।
हनोज़ रोज़ अव्वल
अभी तो पहला ही दिन है। उन्नति की अब भी आशा है। अब भी चीज को सुधारा जा सकता है।
हप, हप, झप, झप खाते, हां, धंधा करते तजते प्रान
कामचोर के लिए क.।
हम क्या रांड़ के जंवाई हैं?
क्या लावारिस हैं?
हम खुरमा ओ हम सवाब, (फ़ा.)
खाने का खाना और उसका पुण्य भी।
खुरमा अर्थात छुहारा मुसलमानों में बहुत पवित्र माना जाता है।
हम चौड़े, बाज़ार सकरा
अहंकारी के प्रति क., जो अपने को बड़ा और दूसरों को छोटा समझता है।
हमने क्या गधे चराये हैं?
क्या हम मूर्ख हैं?
हमने क्या घास खोदी है?
क्या हम कुछ जानते नहीं?
हमने भी तुम्हारी आंखें देखी हैं
हम भी तुम्हारी तरह ही हैं। हमें धौंस मत दिखाओ।
हमने लिया, तुम लीजियो, राह राह जाने दीजियो
साधारण वाक्य है। कोई आदमी संदेश लेकर जा रहा है। उसके संबंध में कहते हैं कि उसे छेड़ना नहीं, अपनी राह जाने देना।
हम परदेसी पाहुने (और) आन किया बिसराम।
भोर भये उठ जायेंगे, बसो तिहारा गांव।
स्पष्ट। कोई यात्री किसी गांव में रात्रि में विश्राम करके सुबह जा रहा है। तब वह कहता है।
हम प्याला ओ हम निवाला, (फ़ा.)
एक साथ खाने-पीने वाले। निकट संबंधी अथवा गहरे मित्र।
हम रोटी नहीं खाते, रोटी हमको खाती है
रोटी के लिए आदमी चिंतित रहता है, इसीलिए कहा गया है।
हम सांप नहीं हैं कि जियें घाट के मिट्टी
किसी नौकर या मज़दूर का कहना, जिसे बहुत थोड़ा वेतन मिलता है और काम बहुत करना पड़ता है।
हमसे और चौसर
हमसे भी चालाकी ! अथवा हमसे मज़ाक।
हम से बहू बड़ी सयानी, पैंचा मांगे पानी, (पू., स्त्रि.)
सास कहती है कि बहू हमसे भी अधिक होशियार है। पानी भी उधार लेती है। इसलिए कि कोई दूसरा आदमी उससे कोई चीज मुफ़्त न मांग सके।
हम ही को करना सिखाने आया है।
हम ही को बेवकूफ़ समझता है।
हमारा काम हो बीता, जहां से मैं चला रीता
मरते हुए आदमी का कहना।
हमारा दम तो तुम पर निकलता है, और तुम और पर मरती हो
स्पष्ट। प्रेम का बदला न चुकाना।
हमारी बिस्मिल्ला, और हमसे ही 'छू', (स्त्रि.)
हमसे ही मंत्र सीखा और हम पर ही उसकी परीक्षा।
हमारी बिल्ली और हम ही से म्याऊं
हमारे आश्रित रहकर हम पर ही रोब। अथवा हमारे चेले होकर हमसे ही उस्तादी!
ऊ. भी दे.।
हमारी हमसे पूछो, कोहकन की कोहकन जाने
हम तो अपनी बात (या अपनी मुसीबत) जानते हैं, दूसरे का दूसरे से पूछो। मुझे व्यर्थ तंग मत करो।
(कोहकन या फ़रहाद फ़ारसी की प्रसिद्ध लोक-कथा 'शीरीं व फ़रहाद' से संबद्ध है।)
हमारे घर आओगे क्या लाओगे? तुम्हारे घर आवेंगे क्या खिलाओगे?
हर हालत में अपना ही मतलब देखना।
हमारे दादा ने घी खाया और हमारा हाथ सूंघो
अपनी कोई योग्यता न रखकर जो केवल पुरखों की बड़ाई करे, उसके लिए क.।

हमारे दोनों मीठे

हम हर तरह से लाभ में।

हमारे बड़े पराये बरदे आज़ाद करते थे

हमारे पुरखे बड़े उदार थे, वे दूसरे के बैलों को छुटकारा दिलाया करते थे। जो दूसरों का पैसा खर्च करवाकर यश लूटे, उसके लिए क.।

हमारे, हां से आग लाई, नाम धरा बैसांदुर, (स्त्रि.)

(1) मांगे की चीज पर घमंड करना।

(2) दूसरे का उपकार न मानना।

बैसांदुर=वैश्वानर, यज्ञ की अग्नि।

हमेशा रोते ही जनम गुज़रा

मां-बाप प्रायः उन बच्चों से कहते हैं, जो बहुत अच्छा खाते-पीते रहने पर भी हमेशा रोते रहते हैं।

हम्माम की लुंगी, जिसने चाहा उसने बांध ली

ऐसी वस्तु जो सर्वसाधारण के काम आती रहे।

हर एक के कान में शैतान ने फूंक मार दी है 'तेरे बराबर कोई नहीं'

हरेक आदमी अपने को दूसरे से बड़ा समझता है।

हर एक बात की कुछ इन्तहा भी है

जब कोई सीमा से बाहर काम करे, तब क.।

हर कमाले रा ज़वाले, (फ़ा.)

हर उत्थान का पतन भी है।

हर कसे मस्लहत-ए-ख़ेश निकोमीदानद, (फ़ा.)

हर आदमी अपना भला-बुरा पहचानता है।

हरका माने, पा का न मानें, (पू.)

नाराज़ आदमी समझाने से मान जाता है, पर भडकाया हुआ नहीं मानता।

हर कारे ओ हर मैं, (फ़ा.)

हर एक आदमी को अपना ही काम सूझता है।

हर के भजे सो हर का होय, जात पांत पूछे नहिं कोय

जो ईश्वर का स्मरण करता है, वही उसे प्रिय होता है।

हरखे पितर तिलंजल पाये

पुरखों का श्राद्ध करने से वे प्रसन्न होते हैं।

हर जैसे को तैसा

(1) जो जैसा करता है, भगवान उसे वैसा ही फल देता है।

(2) जिसकी जैसी भावना होती है, ईश्वर उसे वैसा ही फल देता है।

हर देगी चमचा, (स्त्रि.)

हर देग के लिए चमचा।

(1) हरफ़न मौला।

(2)अविश्वासी पति के लिए भी क.।

हर निवाले बिस्मिल्ला, (मु.)

जो हमेशा खाने को तैयार रहे, पर काम कुछ न करे, उसे क.।

हर बार गुड़ मीठा?

जब कोई हमेशा ही अपनी सफलता चाहता हो, तब क.।

(कथा है कि एक लड़का किसी बनिए की दूकान पर नौकर था। उसे रोज घड़े में से गुड़ चुराकर खाने की आदत पड़ गई थी। एक दिन उस बनिए ने अनुभव किया कि गुड़ कोई अवश्य चुराकर खा लेता है, क्योंकि घड़ा बहुत खाली था। चोर को पकड़ने की गरज़ से उसने गुड़ के घड़े को उठाकर अलग रख दिया और उसके स्थान पर बिरोजे से भरा एक दूसरा घड़ा रख दिया। दूसरे दिन रोज की तरह लड़का वहां पहुंचा और गुड़ के धोखे बिरोजा निकालकर खा गया, जिससे उसका मुंह चिपक गया। इस तरह बनिये को चोर का पता चल गया और लड़के की उसने खूब मरम्मत की। इसी से कहावत चली।)

हर भूम को राज

अत्याचारी शासन के लिए क.।

[हर भूमि इलाहाबाद के निकट एक छोटा गांव है, जहां का ज़मींदार बड़ा अत्याचारी था। इलियट ने अपनी Glossary (अभिधान) में इस कहावत की यही व्याख्या की है।]

हर रोज़ ईद नेस्त कि हलवा खुर्द कसे, (फ़ा.)

हर रोज़ ईद नहीं होती कि हलवा खाने को मिले। हर एक चीज का समय होता है।

हर रोज़ कुआं खोदना और नया पानी पीना

रोज़ कमाना, रोज़ खाना। कठिनाई में जीवन बिताना।

हर शब शबे बरात है, हर रोज़ रोज़े ईद

(1) (मन अगर चंगा है तो) रोज़ शबे-बरात और रोज़ ईद है।

(2) बहुत शान-शौकत से रहने वाले व्यक्ति के लिए भी कह सकते हैं।

शबे-बरात=मुसलमानों का एक त्योहार, जिसमें आतिशबाजी छोड़ी और मिठाई बांटी जाती है।

ईद=मुसलमानों का प्रसिद्ध त्योहार।

हराम का बोल उठता है, हलाल का झुक जाता है

असल जहां विनम्रता से सिर झुका लेते हैं, वहां कम असल बेधड़क बोल उठता है।

हराम की कमाई, हराम में गंवाई
बुरी कमाई बुरे काम में खर्च होती है।
हराम कोठे चढ़ के पुकारता है
बुरा काम छिपा नहीं रहता, अपने आप प्रकट हो जाता है।
हराम खाना और शलजम, (मु.)
अन्याय का (अथवा मुफ़्त का) खाना, तो भी शलजम *(तात्पर्य यह कि जब ईमान ही बिगाड़ा तो शलजम क्यों खाएं, फिर तो हलवा-पूड़ी खाना ही अच्छा।)*
हरामखोरी मुश्किल से छूटती है
रिश्वतखोरी (या कामचोरी) मुश्किल से छूटती है।
हराम चालीस घर ले कर डूबता है
दुश्चरित्र आदमी अपने साथ दूसरे को भी बदनाम करता है।
हरामज़ादे की रस्सी दराज़ है
बदमाशों से कोई कुछ नहीं कह पाता।
दराज़=लंबी।
हरामजादे से खुदा भी डरता है
सब डरते हैं।
हराम में बड़ा मज़ा है
हरामखोरी करने वालों पर व्यंग्य।
हरिगुन गावे धक्का पावे, चूतड़ डुलाते टक्का पावे, (स्त्रि.)
सज्जन को कोई नहीं पूछता, उचक्के मौज करते हैं। *(कहावत में चूतड़ डुलाने वाली से मतलब वेश्या से है।)*
हरिया हाथी हाकिम चोर, दोनों के बिगरे ओर न छोर
जंगली हाथी और चोर हाकिम, इनके उपद्रव की कोई सीमा नहीं होती।
हरि सेवा सोलह बरस, गुरु सेवा पल चार।
तौं भी नहीं बराबरी, वेदों किया विचार।
गुरु सेवा का फल हरि सेवा से अधिक है। गुरुओं ने इस प्रकार अपने पुजाने का मसाला कर लिया।
हरी की माया, छिन में धूप, छिन में छाया, (हिं.)
ईश्वर की लीला पर क.।
हरी खेती, गायन गाय, मुंह पड़ तब जानी जाय, (कृ.)
जब तक खेत का अनाज घर पर न आ जाय, और गाय भी न बियाए, तब तक क्या पता क्या हो?
हरे रूख पर सब परंद बैठते हैं, ठूंठ पर कोई नहीं बैठता
जहां से कुछ मिलने की आशा होती है, सब वहीं जाते हैं। धनी का सब आश्रय लेते हैं।
परंद=पक्षी।

हलक का न ताल का, यह माल मियां लालू का
(1) बुरी चीज या अन्याय से उपार्जित धन के लिए क.।
(2) कंजूस की चीज के लिए भी कह सकते हैं, उसे आसानी से कोई नहीं पा सकता।
हलक़ के कोतवाल
बच्चों के लिए क., जो भोजन की सामग्री में से स्वयं कुछ खाए बिना बड़ों को नहीं खाने देते।
हलक़ न तालू, खायें मियां लालू
किसी फ़ालतू आदमी का मज़ाक़ उड़ाया गया है।
हलक़ रोवे और टोवे
किसी को बहुत थोड़ी चीज खाने को मिली। तव वह क.।
हलक़ से निकली ख़लक़ में पड़ी
बात मुंह से निकली और दुनिया में फैली।
हलके पिछोड़े, उड़ उड़ जायें, (स्त्रि.)
थोथा अनाज फटको तो उड़ जाता है।
(1) ओछा आदमी घमंडी होता है।
(2) ओछे से किसी वात की आशा नहीं करनी चाहिए।
(3) ओछे में गंभीरता नहीं होती।
हलवाई की जाई और सोवे साथ कसाई
धर्म विरुद्ध कार्य। हलवाई हिन्दू होते हैं और कसाई मुसलमान।
जाई=वेटी।
हलवाई की दूकान और दादा जी का फातिहा, (मु.)
हलवाई की दूकान पर जाकर (अर्थात उसके मत्थे) दादा जी का फातिहा मनाना।
दूसरों के पैसे पर वाहवाही लूटना।
(मरे हुए आदमी के नाम पर जो चढ़ावा बांधा जाता है, वह फातिहा कहलाता है।)
हलवा खाने को मुंह चाहिए, अथवा
हलवा-खुरदन रारुए वायदा, (फ़ा.)
(1) अच्छी वस्तु पाने के लिए वैसी योग्यता भी चाहिए।
(2) हलुवे में पैसा बहुत लगता है। हर आदमी नहीं खा सकता, इसलिए भी क.।
हलवा पूरी बांदी खाय, पोता फेरने बीबी जाए
निकम्मे नौकरों के लिए क.।
हलवा-पूरी बीबी खाय, पुड़ा पिटावन बांदी जाय
हलवा-पूरी खाने के लिए तो बीबी, और पिटने के लिए बांदी।

हलवाही चरवाहे को!

चरवाहे को हल चलाने का काम सौंपना।

जिसका जो काम नहीं, उससे वह काम लेना।

हलाल में हरकत, हराम में बरकत

सज्जन दुख पाते हैं, और बुरे मौज़ करते हैं, दुनिया की रीति।

हल्दी की गांठ हाथ लगी, चूहा पंसारी ही बन बैठा

जब कोई थोड़ा धन या थोड़ी विद्या पाकर ही अपने को बड़ा समझ बैठे, तब क.।

हल्दी ज़र्दी ना तजे, खटरस तजे न आम।
जो हल्दी जर्दी तजे, तो औगुन तजे गुलान।

हल्दी भले ही अपना पीलापन और आम अपनी खटाई छोड़ दे, पर नीच अपनी नीचता नहीं छोड़ता।

हल्दी लगी न फिटकरी, पटाक बहू आन पड़ी

जब कोई मुफ़्त में ही अपना काम बना ले, तब क.।

हल्दी लगे न फिटकरी, रंग चोखा ही आवे

मनुष्य जब बिना खर्च किए ही काम अच्छा चाहता है, तब क.।

(हल्दी फिटकरी, कपड़ा रंगने के काम आती है।)

हवाई दीदा

शोहदे के लिए क., जो हमेशा इधर-उधर नज़र फेंकता रहता है। दीदा=आंख।

हवा के घोड़े पर सवार हैं

(1) लंब-तड़ंगी हांकने वाले के लिए क.।

(2) बहुत जल्दबाज के लिए भी क.।

हस्त ओ नेस्त बराबर हैं

उसका होना न होना (मेर लिए) बराबर है।

हस्ती का क्या भरोसा?

ज़िंदगी का भरोसा क्या?

हां करो या ना करो

आखिर, कुछ तो कहो। जो कुछ कहना हो स्पष्ट कहो।

'हांजी हांजी' सब से कीजे, करिए अपने मन की

सबको खुश रखकर जो अपने को ठीक लगे, वहीं करना चाहिए।

हांड़ी का भात छुपे, मुंह की बात न छुपे

भात हांड़ी में छिप सकता है, पर मुंह पर आई बात नहीं छिपती, वह प्रकट होकर रहती है।

हांड़ी न डोई, सब पत खोई, (स्त्रि.)

स्त्री की पति से शिकायत कि घर में कुछ नहीं है, सब इज्ज़त बर्बाद कर दी।

हांड़ी में अच्छत ना 'चला समधी जेबे', (पू.)

कोरी शान बघारना।

हांड़ी में होगा सो डोई में आप ही आवेगा

मन में जो बात होगी, वह अपने आप सामने आएगी।

हाड़े से दांड़ा भला

बेकार घूमने की अपेक्षा तो बंद होकर बैठना अच्छा।

हांसी बैरी बइयर की, खांसी बैरी चोर की

हंसी-दिल्लगी से औरत बिगड़ती है और खांसने से चोर पकड़ा जाता है।

हाकिम की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी न खड़ा हो

हाकिम के आगे खड़े होने से वह मन में नाराज़ हो सकता है, घोड़े के पीछे खड़े होने से उसकी दुलत्ती लग सकती है।

हाकिम के आंख नहीं होती, कान होते हैं

अफ़सर सुनी हुई बात मान लेते हैं, स्वयं आंख से नहीं देखते कि वह कितनी सच या झूठ है।

हाकिम के तीन, शहना के नौ

हाकिम के तीन और कर्मचारी के नौ हिस्से होते हैं। हाकिम के पास (रिश्वत में) जो कुछ पहुंचता है, उससे अधिक नीचे के क्लर्क और चपरासी खा जाते हैं।

शहना=चोकीदार, चपरासी।

हाकिम के मारे और कीचड़ के फिसले का किसने बुरा माना है?

हाकिम के हाथ से पिटने और कीचड़ में रपट कर गिरने का बुरा नहीं मानना चाहिए। व्यंग्य में ही कहा गया है।

हाकिम, दो जानने वालों में एक अनजान

वादी और प्रतिवादी दो ही सच्चा हाल जानते हैं, न्यायाधीश कुछ नहीं जानता।

हाकिम महकूम की लड़ाई क्या?

अधीनस्थ अपने अफ़सर से लड़ ही कैसे सकता है?

हाकिम हारे, मुंह ही मुंह मारे

जिसके हाथ में ताकत है, उससे बहस नहीं करनी चाहिए।

हाज़री के मेले में कोई हो, (मु.)

अच्छे काम में सब शरीक़ हो सकते हैं।

(मुहर्रम में शिया लोग एक भोज देते हैं, जो हाज़िरी का मेला कहलाता है। उसमें सभी फ़िरकों के मुसलमान आमंत्रित किए जाते हैं।)

हाजिते मश्शातह नेस्त रुए दिल-आराम रा, (फ़ा.)
सौंदर्य को शृंगार की जरूरत नहीं।

हाज़िर को लुक़्मा, ग़ायब की तकबीर
जो मौजूद हैं उनका भरणपोषण करते हैं, मरों के नाम खैरात करते हैं। परोपकारी के लिए क.।

हाज़िर मारे गाफ़िल रोये
जो मौके पर मौजूद रहता है वह हाथ मारता है, (लाभ उठाता है); और जो चूक जाता है वह पछताता है।

हाजिर में हुज्जत नहीं, गैर की तलाश नहीं
जो मौजूद हैं उन्हें देने में कोई आपति नहीं, और जो नहीं हैं उन्हें तलाश करने नहीं जाएंगे।

हाट हाट पुकारे वैसा, जैसा करे सो पावे तैसा
जो जैसा करता है, वह वैसा पाता है।
(वैसा नाम के एक फ़कीर हो गए हैं।)

हाड़ होंगे तो मांस बहुतेरा हो रहेगा
जिंदा हैं तो तगड़े भी हो जाएंगे। बीमार के प्रति क.।

हाड़ों ढेरी या दामों ढेरी
या तो हड्डियों का ढेर हो जाए (मर जाए) या फिर खूब रुपया पैदा करे।

हाड़ों थका, त्यौहारों थका
शरीर में भी थका, काम-काज से भी थका। बूढ़े का कहना।

हातम की ग़ोर पर लात मारी, (मु.)
हातिम से भी बढ़कर दानी हो गए। व्यंग्य में कंजूस से क.।
ग़ोर=क़ब्र।
(हातिम अरब के एक बहुत प्रसिद्ध दानी और परोपकारी हो गए हैं।)

हाथ उठाना अच्छा नहीं
मारना ठीक नहीं। अधिकतर स्त्री और बच्चों के संबंध में कहते हैं।

हाथ कंगन को आरसी क्या? (स्त्रि.)
हाथ के कंगन को देखने के लिए दर्पण की क्या जरूरत? प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

हाथ कसीदह आसमान दीदा, (स्त्रि.)
बेलबूटे काढ़ रही है और आंखें आसमान की तरफ़ हैं। एक काम करते समय दूसरी ओर ध्यान लगाना। एकाग्र होकर काम न करना।

हाथ का चूहा बिल में पैठा
(1) हाथ में आई चीज निकल गई।
(2) बना-बनाया काम बिगड़ गया।

हाथ का दिया आड़ी आये
दान-पुण्य समय पर काम आता है।

हाथ का दिया साथ खाने लगा
धृष्ट के लिए क.।

हाथ का दिया साथ चलेगा
दानपुण्य परलोक में काम आता है।

हाथ का देना और बैर बिसाना, (व्य.)
किसी को पैसा उधार देना उससे दुश्मनी मोल लेना है; क्योंकि मांगने से बुराई पैदा होती है।

हाथ का हथियार, पेट का आधार
अपने औज़ारों के संबंध में कारीगर का कहना। उन्हीं से वह रोटी कमाता है।

हाथ की लकीरें कहीं मिटी हैं?
(1) पुश्तैनी संबंध नहीं छूटता।
(2) भाग्य का लिखा होकर रहता है। भाग्यवादियों का कहना।

हाथ के सांकल, मुंह के प्यार, (पू.)
हाथों में बंधन डालना, और मुंह से प्यार की बात करना। दिखावटी प्रेम।

हाथ को हाथ नहीं सूझता
घना अंधेरा।

हाथ को हाथ पहचाने
जिसके हाथ से हमने चीज ली उसी को देंगे, ऐसा भाव प्रकट करने के लिए क.।

हाथ कौड़ी न, बाजार लेखा
झूठी शान पास में कौड़ी नहीं, कहते हैं हमारा बाजार में हिसाब-किताब है, रक़म जमा है।

हाथ गोड़ लकड़ी, पेट बकरी
ऐसे लड़के से कहते हैं, जो बहुत खाता है फिर भी दुबला हो।

हाथ गोड़ सिरकी, पेट नदकोला
दे. ऊ.।
सिरकी=सींक।
नदकोला=नांद।

हाथ देखन को आरसी क्या? (स्त्रि.)
स्पष्ट। दे.—*हाथ कंगन को आरसी क्या?*

हाथ न गले, नाक में प्याज के डले, (स्त्रि.)
हाथ और गले में कोई गहना नहीं, पर नाक में प्याज के डले हैं। बेहूदा औरत के लिए क.।

हाथ न मुट्ठी, हलबलाती उट्ठी, (स्त्रि.)
पास में पैसा नहीं, फिर चीज लेने का शौक।

हाथ पांव की आलकसी (और) मुंह में मूंछें जायं, (मु.)
आलसी के लिए क.। जो अपनी मूंछ भी नहीं संभाल सकता।

हाथ पांव के लंगड़े, नाम सलामत खां
निकम्मा आदमी।

हाथ पांव दियासलाई बात करने को फजल इलाही
कमज़ोर आदमी जो बहुत बात करे, पर काम कुछ न कर सके।

हाथ-पांव बचाइए, मूजी को टरकाइए
दुष्ट को दूर से ही प्रणाम कर लेना चाहिए।
मूंजी=शत्रु, सांप, कंजूस।

हाथ-पांव हिला, भगवान देगा, (स्त्रि.)
मेहनत का फल मिलता है।

हाथ वेचा है। कुछ ज़ात नहीं वेची, (हि.)
ऐसे नौकर का कहना, जिससे उसका मालिक कोई ऐसा काम करने को कह रहा हो, जो उसके योग्य नहीं।

हाथ में न गात में, 'मैं धनवंती जात में', (स्त्रि.)
न हाथ में पैसा है और न बदन पर कपड़ा, फिर भी कहती है कि मैं बिरादरी में धनवंती (सबसे बड़ी) हूं। झूठी कुलीनता दिखाना।

हाथ में लाना, पात में खाना, (स्त्रि.)
बहुत ग़रीब आदमी।

हाथ लिया कांसा, तो रोटियों का क्या सांसा
जब भीख ही मांगनी है, तो रोटियों की क्या कमी रहेगी?
कांसा=कटोरा, भिक्षापात्र।
सांसा=संशय।

हाथ सुमरनी पेट कतरनी
धूर्त साधुओं के लिए क.।
सुमरनी=माला।

हाथ सुमरनी बगल कतरनी, पढ़े भगवत गीता रे।
औरों को तू ज्ञान बतावे, आप फिरे तू रीता रे।
जो केवल दूसरों को उपदेश देते हैं स्वयं उसके अनुसार नहीं चलते, उसके लिए कहा गया।

हाथ सूखा, फ़कीर भूखा
(1) फ़कीर जब इतना कमज़ोर हो जाता है कि भिक्षापात्र भी हाथ में नहीं ले सकता, तब वह भूखों मरने लगता है।
(2) हाथ में कुछ नहीं, फ़कीर भूखा गया, यह भाव भी हो सकता है।

हाथी अपनी हथयाई पर आ जाय तो आदमी भुनगा है
बलवान यदि अपना बल दिखाने लगे, तो सबकी आफ़त आ जाए।
(भाव यह छिपा है कि जो सच्चा बलवान है, वह किसी को कष्ट नहीं पहुंचाता।)

हाथी आवें, घोड़े जायं, ऊंट बेचारे गोते खायं
ऐसी परिस्थिति के लिए क., जिससे निपटना बहुत मुश्किल हो।

हाथी का कंधा खाली नहीं रहता
हमेशा कोई-न-कोई उस पर बैठता है, क्योंकि उस पर बैठना बड़प्पन की निशानी है।

हाथी का जग साथी, कीड़ी पाहन पीड़ी
ज़बर्दस्त के सब साथी होते हैं, ग़रीब का कोई नहीं। हाथी से सभी डरते हैं, और चींटी को पैरों से कुचलते हैं।

हाथी का दांत, घोड़े की लात, मूंजी का चंगुल
(1) इनसे बचना चाहिए।
(2) गाली के रूप में भी कहते हैं, तू हाथी के दांत या घोड़े के पैरों से कुचला जाए या मूंजी के चंगुल पड़े।

हाथी का दांत निकला जहां निकला
(1) कोई बात एक बार खुल गई सो खुल गई।
(2) कोई आदमी एक बार धृष्ट (या निर्लज्ज) बन गया, सो बन गया।

हाथी का बोझ हाथी ही उठाता है
(1) बड़ों का भार बड़े ही सहन कर सकते हैं।
(2) बड़े कठिन काम को वही कर सकता है, जो उसके करने की क्षमता रखता हो।

हाथी का पीर आंकुस
हाथी अंकुश से ही दबता है।
पीर=महात्मा, सिद्ध, ऐसा व्यक्ति जिसके वश में देवी-देवता रहते हों।

हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और
कोई आदमी जब कहे कुछ और करे कुछ, तब क.।

हाथी के पांव में सब का पांव
बड़ों के साथ बहुत-से छोटे लोगों की गुज़र होती है।

हाथी घोड़ा बहा जाए, गदहा कहे 'कितना पानी'
जिस काम को बड़े भी न कर सकें, छोटे उसे करने का

दुस्साहस दिखाएं।

हाथी चढ़े कुत्ता काटे

हाथी पर सवार आदमी को कुत्ते ने काट खाया। होनी को कोई रोक नहीं सकता।

हाथी निकल गया, दुम रह गई

(1) जब किसी बड़े काम का बहुत थोड़ा हिस्सा करने को बाकी रह जाए, तब क.।

(2) काम का एक बड़ा हिस्सा हो जाए, पर थोड़े में असमंजस रह जाए, तब भी क.।

हाथी फिरे गांव गांव, जिसका हाथी उसका नांव

(1) किसी बड़ी या मूल्यवान वस्तु के असली मालिक का नाम छिपा नहीं रहता।

(2) किसी बड़े काम को करने वाले का नाम भी नहीं छिपता।

हाथी हजार लटा, तौ भी सवा लाख टके का

(1) बड़ा आदमी कितना भी ग़रीब हो जाए, तो भी साधारण आदमी से तो उसकी स्थिति अच्छी रहती ही है।

(2) मरा हाथी भी दांत और हड्डियों के लिए बहुत दाम में बिकता है, इसलिए भी क.।

हाथों मेंहदी पांवों मेंहदी, अपने लच्छन औरां दें दो, (स्त्रि.)

किसी विधवा ने हाथ-पैरों में मेंहदी लगाई, तब उससे कहा जा रहा है कि तू अपने (बुरे) लक्षण औरों को भी सिखा रही है।

(मेंहदी लगाना सुहागिन का ही काम है, विधवा लगाए, तो उसे गई-बीती समझना चाहिए।)

हाथों हाथ बिक गया, (व्य.)

तुरंत बिक गए माल के लिए क.।

हान, लाभ, जीवन, मरन, जस, अपजस, विध हाथ

ये सब ईश्वर के हाथ हैं।

हानी को हनिये, पाप-दोष ना गिनिये

पापी को मारने में कोई पाप नहीं लगता।

पाठा.—हंते को हनिए...।

हाय री जवानी!

जवानी की मूर्खताओं पर क.।

हाय रे बुढ़ापे!

जवानी के दिनों की याद करके कोई अपने बुढ़ापे पर दुख प्रकट कर रहा है।

हार का न्याब क्या?

हारी हुई बाज़ी के लिए क्या किया जा सकता है?

हार जीत क़िस्मत के हाथ

हानि-लाभ भाग्य के अधीन है।

हार जीत सब में रहे, हारे नहिं दातार

परमात्मा को छोड़कर सभी के साथ हार-जीत लगी है, अर्थात सभी दुख भोगते हैं।

हार मानी, झगड़ा जीता

जो हार मान लेता है, झगड़े में वही जीतता है। दो में से एक व्यक्ति यदि अपना हठ छोड़ दे, तो झगड़ा मिट जाता है।

हार में हार, न घर में खेती

ग़रीबी हालत के लिए क.। न तो खेती होती है और न घर में कोई धंधा।

हार=(1) जंगल, मैदान। (2) खेत।

खेती=(1) कृषि। (2) काम-धंधा।

हारू तो हूरूं, जीतूं तो हूरूं

हारने पर भी (मैं तुम्हें) नोचूंगा, जीतने पर भी नोचूंगा।

(1) जब हर हालत में कोई अपनी ही जीत चाहे, तब क.।

(2) इच्छा के विरुद्ध किसी से कोई काम नहीं कराया जा सकता।

हारे के हर नाम

मनुष्य जब शरीर से शिथिल हो जाता है अथवा असहाय बन जाता है, तब उसे भगवान का नाम सूझता है।

हारे जुआरी को कब कल पड़ती है?

हारे जुआरी को चैन नहीं पड़ता, वह फिर जुआ खेलने की फ़िक्र करता है।

हारे भी हरावे, जीते भी हरावे

जो सब तरह से अपनी ही जीत चाहे, उसके लिए क.।

हारे भी हार, जीते भी हार

अदालत के मुकदमों पर क.। बहुत से मुकदमों में इतना खर्च पड़ता है कि जीतने पर भी हानि ही रहती है।

हाल का, न काल का; टुकड़ा रोटी, चमचा दाल का, (स्त्रि.)

ऐसा आदमी, जो किसी काम का न हो।

हाल का, न रोज़गार का

निकम्मा आदमी।

हाल गया, अहवाल गया, दिल का ख्याल न गया

स्वास्थ्य गया, पैसा गया, पर बुरी आदत न गई।

हाल में फाल, दही में मूसल

जब चैन से गुज़र रही हो, तब ज्योतिषी के पास जाकर भाग्य पूछना बिल्कुल ही मूर्खता है। दही के लिए मूसल की जरूरत नहीं पड़ती। अथवा हलवाहा हांकने वाला

अच्छा, और बैल चलने वाला अच्छा।

हाली का पेट सुहाली से नहीं भरता, (कृ.)

हलवाहे का पेट सुहाली से नहीं भरता, उस जैसे परिश्रमी के लिए तो अधिक भोजन चाहिए।

सुहाली=मोमन दी हुई बढ़िया किस्म की पूड़ी होती है।

हासिद का मुंह काला

ईर्ष्या करने वाले की फ़ज़ीहत होती है।

हा हा खाये बूढ़े नहीं ब्याहे जाते

(1) कोई असंगत काम हाथ-पैर जोड़कर नहीं कराया जा सकता।

(2) बूढ़े विनती करके नहीं ब्याहे जा सकते, हां, यदि रुपया खर्च किया जाए; तो भले ही काम बन जाए।

हिंदी न फ़ारसी, लाला जी बनारसी

पढ़ा-लिखा मनुष्य जब कोई मूर्खता दिखाए, तब व्यंग्य में।

(बनारस संस्कृत के विद्वानों का केंद्र स्थल है।)

हिंदू मुसलमान का चोली दामन का साथ है

दोनों का घनिष्ठ संबंध है, एक के बिना दूसरा रह नहीं सकता।

(अचकन या अंगरखे के ऊपर का हिस्सा जो कमर तक बदन से चिपका रहता है, चोली और नीचे का ढीला-ढाला हिस्सा दामन कहलाता है।)

हिकमते चीन, हुज्जते बंगाला, (फ़ा.)

चीन वाले हिकमती (कला-निपुण) और बंगाली हुज्जती (झगड़ालू) होते हैं।

हिमायती की घोड़ी इराक़ी को लात मारे

(1) जब कोई साधारण व्यक्ति किसी प्रभावशाली मनुष्य का संरक्षण पाकर अपने से किसी बड़े और शक्तिशाली व्यक्ति से लड़ने की हिम्मत करे, तब क.।

(2) ऊंचे अफ़सरों के नौकर-चाकर अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझते और प्रायः प्रतिष्ठित लोगों का अपमान भी कर बैठते हैं, तब भी क.।

हिमायती की घोड़ी=ऐसी घोड़ी, जिसे किसी की विशेष सहायता प्राप्त हो; बड़े आदमी की घोड़ी।

हिम्मते मरदां, मददे ख़ुदा, (फ़ा.)

जो (काम करने की) हिम्मत करता है, ईश्वर उनकी सहायता करता है। अथवा मनुष्य को उद्योग करना चाहिए, ईश्वर सहायता करता है।

हिरसी टट्टू

ईर्ष्यालु आदमी।

हिरी फिरी बल गई, जलवे के वक्त टल गई, (मु.)

नव-विवाहिता वधू पहले-पहल ससुराल आई है, कोई स्त्री बार-बार उसे प्यार तो बहुत कर रही है, पर जब उस पर नज़र-न्योछावर करने का वक्त आया तो चुपचाप खिसक गई। उसी से कहा. का प्रयोग तब करते हैं, जब कोई मनुष्य किसी काम में उत्साह तो बहुत दिखाए, पर जब कुछ खर्च करने का मौका आए तो ग़ायब हो जाए।

(मुसलमानों में जलवा वह दस्तूर होता है, जिसमें बहू पहले-पहल ससुराल आने पर लोगों के सामने अपना मुंह खोलती है। इस अवसर पर बहू को भेंट देने का रिवाज़ है।)

हिरे फिरे खेत में को राह

सब कुछ देख रहा है, फिर भी खेत में होकर ही जाता है। जानबूझकर ग़लत काम करना।

हिल न सकूं, मेरे सौ बखरे, (स्त्रि.)

(1) हिल नहीं सकता, फिर भी कहता है कि मेरे सौ बखर (हल) चलते हैं। झूठी शेखी मारना।

(2) बखरे का अर्थ हिस्से भी हो सकता है। तब कहा. का अर्थ हो जाएगा—काम कुछ न करे, पर अपना हिस्सा पूरा मांगे। आलसी के लिए कहेंगे।

हिलाव न झुलाव, मुझे बैठे ही खिलाव

घोर आलसी और कामचोर के लिए क.।

हिसाब-ए-दोस्तां दर दिल, (फ़ा.)

दोस्तों का हिसाब दिल में रहता है।

हिसाब जो जो, बखशिश सौ सौ, (व्य.)

हिसाब एक-एक पाई का करना चाहिए, इनाम में चाहे सैकड़ों दे दे।

हिसाब ज्यों का त्यों, कुनबा डूबा क्यों?

बार-बार हिसाब लगाने या नाप-जोख करने पर भी जब किसी भूल का कारण समझ में न आए, तब क.।

(कथा है कि कोई सेठ जी सपरिवार बैलगाड़ी पर यात्रा कर रहे थे। रास्ते में उन्हें एक नदी मिली। वे तुरंत गाड़ी पर से उतरे और नदी के भिन्न-भिन्न स्थानों के जल को नाप डाला। औसत में पानी गाड़ी के पहिए के बराबर साबित हुआ। तब अपने उस हिसाब के अनुसार यह सोचकर कि ख़तरे की कोई बात नहीं और गाड़ी मज़े में पार हो जाएगी उन्होंने गाड़ीवान से गाड़ी को नदी में होकर ले चलने के लिए कहा। पर आगे पानी गहरा था। और गाड़ी जब वहां पहुंची, तो डूबने लगी, साथ ही सेठ जी के

बच्चे चुभुर-चुभुर करने लगे। वे इस पर बड़े परेशान हुए। उन्होंने फिर अपना हिसाब लगाया और उसे ठीक पाया। तब उपरोक्त बात कही। अल्पविद्या हानिकर होती है।)

हिसाब नित नया

(1) हिसाब का नित नया खाता खोलना चाहिए, तात्पर्य पुरानी बातों को भूल जाना चाहिए।

(2) रोज़ पिछला हिसाब देख लेना चाहिए, जिसमें उसे भुलाया न जा सके।

हिसाब लेब, कि बनिया डांड़ब? (भो.)

हिसाब लोगे या मुझे बनिया समझकर धींगा-मुश्ती करते हो?

बनिया डांड़ब=बनिया का-सा दंड दोगे।

हींग हगते फिरोगे

अपने कर्मों का दंड भोगोगे, पड़े-पड़े रोओगे।

हीजड़े की कमाई मुड़ौनी में गई

क्योंकि अपने चेहरे को सुंदर और औरतों जैसा बनाये रखने के लिए वह रोज़-रोज़ हजामत बनवाता है।

हीजड़े के घर बेटा हुआ

जब कोई मनुष्य किसी ऐसे काम को करने का वादा करता है, जो उसके लिए असंभव हो, तब क.।

हीनी पुड़िया, छत्तीस रोग

(1) घटिया दवा से छत्तीस रोग पैदा होते हैं। अथवा
(2) छत्तीस रोगों से ग्रस्त हैं और घटिया दवा का आश्रय लेते हैं।

हीरे की क़दर जौहरी जाने

गुण की परख गुणी ही कर सकता है।

हीले रिज़क, बहाने मौत

हीले से ही रोज़ी मिलती है, और बहाने से मौत होती है। आशय यह है कि ईश्वर ही रोज़ी देता है और वही मारता है। मनुष्य का प्रयास या रोग तो केवल एक उपलक्ष है।

हुंड़रा रे! बकरी चरैबे पठरू समेत? (पू.)

क्यों रे भेड़िये! क्या बकरी चरायेगा, बुकरेलू समेत? वह तो इस काम के लिए तैयार ही बैठा है, पर उससे इस तरह की बात कहना महान मूर्खता है।

हुंड़ार चीन्हे बामन का पूत? (पू.)

भेड़िया ब्राह्मण के लड़के को क्या पहचाने? वह तो उसे भी खा जाएगा।

कोई दुष्ट भले आदमी को सताए, तब क.।

अदालत के रिश्वतख़ोर कर्मचारियों के लिए क., जो किसी की रू-रियायत नहीं करते।

हुकूमत की घोड़ी और छः पसेरी दाना

हाक़िम की घोड़ी छः पसेरी दाना खाती है। वास्तव में वह खाती तो एक पसेरी ही होगी, बाकी नौकर-चाकर उड़ाते हैं।

हुक्का अफ़ीमी का

अफ़ीमची ही हुक्का पीना जानता है।

हुक्का चार वक्त अच्छा; सो के, मुंह धो के, खा के, नहा के और चार वक्त बुरा–आंधी में, अंधेरे में, भूक में और धूप में

स्पष्ट।

हुक्का पैर दौड़ी का, रोटी किस्मत की

(1) हुक्का चलने-फिरने से मिल जाता है, जहां जाओ वहां लोग पिला देते हैं, पर रोटी भाग्य से ही मिलती है।

(2) हुक्का के लिए आग लाने जाना पड़ता है।

हुक्का भर बड़ों को दीजे, जब सुलगे तब आप ही लीजे

स्पष्ट।

हुक्के का शिष्टाचार।

हुक्का यकदम, दो दम, सिह दम बाशद, न कि मीरासे-जद्दो-आम बाशद (फ़ा.)

हुक्का एक फूंक, दो फूंक, वा तीन फूंक पीना चाहिए, उसे अपनी मीरास या बपौती नहीं समझ लेना चाहिए। जहां चार आदमी बैठे हों, वहां बारी-बारी से सबको हुक्का देना चाहिए, यह नहीं कि उसे स्वयं ही गुड़-गुड़ पीते रहें।

हुक्का, सुक्का, हुरकनी, गूजर और जाट;
इनमें अट कहा, बाबा जगन्नाथ का भात।

इसमें छूतछात नहीं मानी जाती।

सुक्का=सुंघनी।

हुरकनी=वेश्या।

हुक्का हर का लाड़ला, रखे सब का मान।
भरी सभा में यूं फिरे, ज्यूं गोपिन में कान।

हुक्के की प्रशंसा में।

हुक्का हुक्म खुदा का, चिलम बहिश्त का फूल।
पीवें मर्द खुदा के, घूरें नामाकूल।

यह भी धूम्रपान की प्रशंसा में।

हुक्के और बातों में बैर है

हुक्का पीते समय बात नहीं की जा सकती।

हुक्के का मज़ा जिसने ज़माने में न जाना।
वह मर्द मुखन्नस है, न औरत, न ज़नाना।

हुक्का पीने वालों की उक्ति।

हुक्के पानी का सुख
सब तरह का आराम।

हुक्के से हुरमत गई, नेम गया सब छूट।
पगड़ी बेच तमाखू लिया, गई हिये की फूट।
स्पष्ट। धूम्रपान की निंदा।
हुरमत=इज़्ज़त।
नेम=नियम, धर्म।

हुक्म के साथ सब कुछ मौजूद है
अधिकार होने पर सब चीज सुलभ रहती हैं।

हुक्म निशानी बहिश्त की, जो मांगे से पाए
हुकूमत बहिश्त है, उससे सब कुछ मिल सकता है।

हुक्मी बंदा जन्नत में
बड़ों की आज्ञा मानने वाला स्वर्ग जाता है।

हुक्म हाकिम मर्गे मफ़ाजात, (फ़ा.)
हाकिम का हुक्म आकस्मिक मृत्यु के समान है; एक मुसीबत है।

हुजूरी की मजदूरी भली
मालिक की नज़र के सामने ही काम करना अच्छा होता है, क्योंकि तब वह उसकी क़द्र कर सकेगा।

हुज्जती ला उम्मती, (मु.)
तर्क करने वाला संशयवादी होता है, वह यकायक किसी बात में विश्वास नहीं करता।

हुनरमंद भूखा नहीं रहता
स्पष्ट।

हूं सजनी जानत नहीं, पिय बिछुड़न की सार।
जिय बिछुड़न से कठिन है, पिय बिछुड़न की बार।
स्पष्ट।
सार=तत्व, परिणाम।

हूर भी सौकन को डायन से बुरी है, (स्त्रि.)
सौत परी के समान भी सुंदर हो, तो भी डायन से भी बुरी होती है। सौतिया डाह पर क.।

हेर फेर आवे तो काकड़ी मटकावे, (ग्रा.)
यदि वह फिर मेरे पास आ जाए, तो ककड़ी खाने को मिले।
(कथा है कि किसी ग्रामीण को एक मोहर मिल गई। उसका वास्तविक मूल्य न जानकर उसने उसे एक शरीफ़ के हाथ इस शर्त पर बेच दिया कि वह उसे नित्य प्रति एक पैसा ककड़ी खाने को दिया करेगा। बहुत दिनों तक उस ग्रामीण को एक पैसा रोज़ मिलता रहा। अंत में एक दिन शरीफ़ ने उसे टरका दिया, तब उसने उक्त वाक्य कहा।)

हैं मर्द वही पूरे जो हर हाल में खुश हैं
साहसी मनुष्य वही है, जो हर परिस्थिति में प्रसन्न रहे।

हैं घट में, सूझे नहीं, कर से गहा न जाय।
मिला रहे और ना मिले, तासे कहा बसाय।
स्पष्ट। ईश्वर के लिए कहा गया।

है आदमी, है काम, नहीं आदमी, नहीं काम
(1) जब तक मनुष्य जीवित रहता है, उसे हज़ार काम लगे रहते हैं, मरने पर सब काम भी ख़तम हो जाते हैं। अथवा (2) तुम अगर मनुष्य हो, तो तुम्हारे लिए काम की कमी नहीं। नहीं हो, तो काम भी नहीं है।

है घरनी घर गाजत है, नहिं घरनी, घर पादत है, (पू.)
स्त्री के बिना घर की शोभा नहीं होती।

होंठ चाटने से प्यास नहीं बुझती
जहां बहुत की आवश्यकता हो, वहां थोड़े से काम नहीं चलता।

होंठ से निकली हुई पराई बात
मुंह से बाहर निकलते ही बात फैल जाती है, सबको मालूम हो जाती है।

होंठ हिले न जिनिया खोली, फिर भी सास कहे बड़-बोली, (ग्रा.)
सास ने किसी बात पर बहू को डांटा, तब बहू कहती है कि मैंने तो मुंह से कुछ कहा भी नहीं, फिर भी सास मुझे ढीठ बताती है।

होठों निकली कोठों चढ़ी
मुंह से निकली हुई बात धीरे-धीरे सब जगह फैल जाती है।

होठों से अभी दूध की बू नहीं गई
अभी तुम निरे बच्चे हो।

हो गई ढड्ढो, ठुमक चाल कैसी?
बुढ़िया हो गई, अब ठसक से चलना क्या?

होड़ का कार, जी का भार
स्पर्द्धा का काम बड़ा कठिन होता है, चिंता रहती है।

होत का बाप, अनहोत की मां
संपत्ति में ही पिता काम आता है, विपत्ति में मां काम आती है।

होत की जोत है
जब तक तेल रहता है, तभी तक दीया जलता है, तब तक

धन रहता है, तभी तक सब कुछ है।

होती आई है

परंपरा से चली आई है।

होती आई है कि अच्छों के बुरे होते हैं

हमेशा से होता आया है कि...।

होती आई है कि अच्छों को बुरा कहते हैं

हमेशा से होता आया है कि...।

होते ही ना मर गए, जो कफन भी थोड़ा लगता

नालायक के लिए क.। मज़ाक में भी प्रयुक्त करते हैं।

होनहार बिरवा के चिकने-चिकने पात

होनहार लड़के के लिए क., जो बचपन से ही अपनी योग्यता और प्रतिभा का परिचय देने लगता है।

होनहार मिटती नहीं, होवे बिस्वे बीस

जो होना है, वह अवश्य होकर रहता है।

विस्वे बीस=बीस बिस्वा, (मु.) निस्संदेह।

होनहार हिरदै बसै, बिसर जाय सब बुद्ध

स्पष्ट। पूरा शुद्ध दोहा इस प्रकार है :

होनहार हिरदे बसै, बिसर जाय सब सुद्ध।

जैसी हो होतव्यता, तैसी उपजै बुद्ध।

होनहार होके टले

दे.–होनहार मिटती नहीं...।

होना न होना खुदा के हाथ है, मार मार तो किये जाय

किसी काम का होना न होना तो ईश्वर के हाथ है, पर प्रयत्न तो करना ही चाहिए।

होनी बलवान है

दे.–होनहार मिटती नहीं...।

होम करत हाथ जले, (हिं.)

भला करते बुरा हुआ। प्रायः उस समय कहते हैं जब किसी के साथ कोई उपकार किया जाए और उसका नतीजा उल्टा हो।

होय भले के अनभला, होय दानी के सूम ।

होय कपूत सपूत के, ज्यों पावक में धूम।

स्पष्ट।

अनभला=बुरा।

होल खाये मुंह हाथ दोनों काले

स्पष्ट।

होला=आग में भुने हरे चने या मटर की फलियां।

होली का भड़ुआ है

फालतू आदमी। जिसका सब मज़ाक उड़ायें।

होश की (दवा) बनवाओ

अपने होश को ठिकाने करो।

हौंसनाक बुढ़िया, चटाई का लहंगा, (पू.)

बेतुका शौक।

हौंसनाक=स्पर्द्धा करने वाली।

पाठा.–शौकीन बुढ़िया...।

हौंस से रिस भली

स्पर्द्धा (या द्वेष) से शत्रुता अच्छी।

हौज़ भरे तो फव्वारे छूटें

जब खूब पैसा हो, तो खर्च भी खूब किया जाता है।

परिशिष्ट

अतिरिक्त कहावतें

अधूरे काम और जनती लुगाई को कभी न देखे

अरुचि पैदा होती है।

जनती लुगाई=ऐसी स्त्री, जिसके बच्चा हो रहा हो।

असौज में जो बरसे दाता, नाज नियार का रहे न घाटा, (कृ.)

क्वांर के महीने में पानी बरसने से फ़सल अच्छी होती है।

आंख, नाक मुख मूंद के, नाम निरंजन लेय।
भीतर के पट जब खुलें, जब बाहर के पट देय।

एकाग्रचित होकर जो निरंजन अर्थात कल्मष-शून्य भगवान है, उसका ध्यान करना चाहिए। भीतर के पट (द्वार) तभी खुलते हैं, अर्थात सच्चा ज्ञान तभी प्राप्त होता है, जब बाहर के पट बंद कर दिए जाएं, अर्थात काम, क्रोध आदि का रास्ता रोक दिया जाए।

आग, जवासा, आगरी, चौथा गाड़ीवान।
ज्यों-ज्यों चमके बीजरी, त्यों-त्यों तर्जे प्रान।

ज्यों-ज्यों बिजली चमकती है, त्यों-त्यां आग, जवासा, आगरी और गाड़ीवान ये चारों घबराते हैं; अर्थात पानी बरसने से इन्हें हानि पहुंचती है।

जवासा=एक प्रकार की कांटेदार झाड़ी जो प्रथम वृष्टि होते ही मर जाती है।

आगरी=नोनिया नामक साग।

आता है हाथी के मुंह, जाता है च्यूंटी के मुंह

रोग के लिए क.।

आता बहुत जल्दी है, जाता मुश्किल से है।'

आदमी चने का मारा मरता है

(मौत आने पर) चने की चोट से भी आदमी मर जाता है। जीवन की क्षणभंगुरता पर क.।

आप डूबा सो डूबा, और को भी ले डूबा

अपने साथ दूसरों को भी हानि पहुंचाई।

आप मिले सो दूध बराबर, मांगे मिले सो पानी।
कहें कबीर वह रकत बराबर, जामें ऐंचातानी।

जो बिना मांगे मिले, वह दूध के बराबर (कीमती) है, जो मांगने से मिले वह पानी है। कबीर कहते हैं, देने वाले को जिसमें किसी तरह का कष्ट हो, वह रक्त के बराबर (घृणित और तुच्छ) है।

आपा तजे तो हरी को भजे

अहंकार को छोड़ने से ही ईश्वर की उपासना होती है।

आसपास बरसे, दिल्ली पड़ी तरसे

जहां जिस चीज की बहुत ज़रूरत है, वहां तो वह न मिले पर और जगह सुलभ हो। एक दुख की बात। अथवा ईश्वर की विचित्र लीला।

आसमान की चील, जमीन की असील, (मु.)

आसमान में उड़ती हुई चील (जब तक किसी ने उसे देखा नहीं) अच्छे वंश की ही चिड़िया मानी जाएगी।

असील=उच्च कुल का।

उड़द कहे मैं सब से नीका,
सब पंचों मिल दीना टीका;
जब मेरे हों उड़दी बड़े,
तो गबरू खा जायं खड़े खड़े। (ग्रा.)

उड़द की दाल की प्रशंसा में क.।

दे.–उड़द कहे मेरे माथे टीका...।

('सब पंचों मिल दीना टीका' से अभिप्राय है कि मैं सब दालों में प्रमुख हूं। उड़द पर सफ़ेद छींटा तो होता ही है।)

ऊंट की बरसात में कमबख्ती
क्योंकि वह रेगिस्तान का जानवर है, कीचड़ में चल नहीं पाता।

एक आसामी सौ अर्ज़ियां
एक जगह, और उसके उम्मीदवार बहुत से।
एक झूठ के सबूत में सत्तर झूठ बोलने पड़ते हैं।
स्पष्ट।
एक आम अनुभव की बात।
एक पापी सारी नाव को डुबोता है
एक के बुरे काम का दंड सारे समाज को भोगना पड़ता है।
एक बोटी, सौ कुत्ते
चीज तो एक ओर ग्राहक बहुत से।
एक शेर मारता है, सौ लोमड़ियां खाती हैं
एक बड़े की कमाई से दस छोटे लाभ उठाते हैं।

कट मर जायेंगे एक दिन, जो नर राखें वैर।
बकरे की मां कब तलक, रहे मनाती खैर।
जो मनुष्य दूसरों से वैर-भाव रखते हैं, वे एक दिन नष्ट हो जाएंगे; बकरे की मां कब तक कुशल मनाएगी? (एक न एक दिन उसकी गर्दन पर छुरी फिरेगी ही)।
करना है सो आज कर, 'कल कल' मत ना कर।
चलता फिरता आदमी, छिन मां जावे मर।
जो भी (अच्छा) काम करना हो, सो कल के लिए न छोड़कर आज ही कर लेना चाहिए, क्योंकि जिंदगी का कुछ ठिकाना नहीं।
करनी ही संग जात है, जब जाय छूट सरीर।
कोई साथ न दे सके, मात, पिता, सुत, बीर।
मनुष्य के मरने पर उसके अच्छे कर्म ही साथ जाते हैं, मां-बाप, पुत्र या भाई—कोई साथ नहीं जाता।
कल्लर खेत रहे जिस पास;
वाके होय नाज न घास (कृ.)
जिसके पास ऊसर खेत होता है, उसके न तो अनाज ही पैदा होता है; न घास।
कां काशी, कां काश्मीर, कां खुरासान, गुजरात।
तुलसी यां तो जीव को, परालब्ध लै जात।
भाग्य मनुष्य को न जाने कहां-कहां ले जाता है।
काजल की कजलौटी और फूलों का हार
रंग कजलौटी जैसा काला और पहनने को चाहिए फूलों का हार।
किसी बदसूरत का टिमाक से रहना।
कजलौटी=काजल रखने की डिबिया।
क़ाजी के मरने से क्या शहर सूना हो जाएगा?
किसी एक मनुष्य के मरने से—फिर वह कितना ही बड़ा ही क्यों न हो—दुनिया के काम नहीं रुकते।
क़ाजी जी अपना आगा तो ढाको, पीछे किसी को नसीहत करना, (मु.)
पहले अपने दोष तो ढको, फिर दूसरों को उपदेश देना। (आप तो खुद नंगे हैं।)
आगा=सामने का हिस्सा।
क़ाजी जी बहुतेरे हर यें, मैं हारता नहीं
कोई कुछ कहे, मैं मानता ही नहीं। ज़िद्दी आदमी।
क़ाजी बन्दो गवाह राज़ी, (मु.)
दो गवाहों से अदालत को संतोष हो जाता है।
कातक मां जो सीत को, पिये सो लाभा पाय।
भादों मां जो कोई पिये, देवे ताप चढ़ाय।
कार्तिक में मठा पीने से लाभ और भादों में पीने से हानि होती है।
काना, याना, लाड़ला, तीनों हठ की खान।
अंधा गूंगा कैंयड़ा हैं पूरे शैतान।
काना, अयाना (छोटा लड़का) और लाड़ला (दुलारा) ये तो हठी होते ही हैं, पर अंधे, गूंगे और तिरछी आंख वाले भी पूरे शैतान होते हैं।
कानूनगो की खोपड़ी मरी भी दगा दे
कानूनगो और पटवारी, माल विभाग के ये दो कर्मचारी किसानों को हमेशा बड़ा तंग करते रहे हैं, इसी से क.।
काल करते आज कर, आज करते अब्ब।
पल में परले होत है, फेर करेगा कब्ब।
स्पष्ट।
दे.—करना है सो आज क...।
परले=प्रलय।
काल का मारा सब जग हारा
मौत से सब हारे हैं।
काला हिरन मत मारियो रे सत्तर हो जायेंगी रांड़
हिरनियों के एक पूरे झुंड में एक ही नर होता है, जो उनका स्वामी माना जाता है। अब यदि वह मर जाए, तो निस्संदेह सभी हिरनियों को दुख होगा; इसी से कहा गया

है। भाव यह है कि कभी ऐसे मनुष्य का घात नहीं करना चाहिए, जिसके आश्रित बहुत से लोग हों।

कुल्ला करे न दातुन फेरे
फिर कैसे हों दांत निखेरे
दांतों को साफ़ रखने के लिए नित्य कुल्ला-दातुन करना चाहिए।

खाद संवारे खेत को और सीख संवारे पीत को, (कृ.)
खाद से खेत अच्छा बनता है, और दूसरों की बात मानने से मित्रता दृढ़ होती है।

खेत जो तन्ने भेंटे न हरी; वाके मिलते मत ले डहरी, (कृ.)
यदि नहर के किनारे का खेत मिले, तो उसकी जगह फिर नीची ज़मीन वाला न ले।

खेत भला ना झील का, और घर आछा नहिं सील का, (कृ.)
नीची ज़मीन का खेत और सीलदार (नम) घर अच्छा नहीं होता।

गधा मरा कुम्हार का और धोबिन सत्ती होय
किसी का कोई मरे और कोई रोने जाए। जिससे कोई संबंध नहीं, उसके लिए अनावश्यक सिर दर्द।

गाड़ी तो चलती भली, ना तो जान कवाड़
जो वस्तु काम में आए, उसी का लेना सार्थक है।
कवाड़=टूटे-फूटे सामान।

गाली मत दे किसी को, गाली करे फ़साद।
गाली सूं लाखों हुए, लड़भिड़ कर बरबाद।
गाली देना अच्छा नहीं।

गुरबा कुश्तन रोज़े अव्वल, (फ़ा.)
बिल्ली को पहले ही दिन मारो।
(कथा प्रसिद्ध है कि एक पहलवान ने अपनी नव-विवाहिता स्त्री पर रोब जमाने के लिए सुहागरात के दिन एक बिल्ली को मार डाला, जो उसके शयनकक्ष में घुस आई थी। कहावत का भाव यह है कि किसी नए आदमी पर अपना प्रभाव जमाने के लिए शुरू से ही कड़ा रुख दिखाना चाहिए।)

गेहूं आछा नहर का और चावल आछा डहर का, (कृ.)
गेहूं नहर के किनारे का और चावल नीची ज़मीन का अच्छा होता है।
(डहर मिट्टी के बड़े बर्तन को भी कहते हैं, जिसमें चावल आदि भरकर रख दिया जाता है। इसलिए चावल पुराना अच्छा होता है, वह अर्थ भी हो सकता है।)

गेहूं कहे सुनो रे बीर; मैं हूं सब नाजन का मीर
सब अन्नों में गेहूं श्रेष्ठ है।

घर का खेत, न खेती बारी, कहें मियां नंबरदारी, (कृ.)
झूठी शेख़ी बघारना।

घर की खांड़ किरकिरी, चोरी का गुड़ मीठा
घर की किसी अच्छी चीज को पसंद न करना और उस तरह की बाहर की बुरी चीज के लिए भी ललचाना। प्रायः उन लोगों के लिए कहते हैं जो पत्नियों की उपेक्षा करके वेश्या के यहां जाते हैं। जिन्हें बाजार की मिठाई खाने की आदत पड़ जाती है, उनके लिए भी क.।

घर की जोरू की चौकसी कहां तक?
घर के आदमी पर कहां तक नज़र रखी जा सकती है?
(यदि वह कुछ गड़बड़ करता हो तो।)

घर की शोभा घरवाली के साथ
स्पष्ट।

घी खावत बल तन में आवे, घी आंखों की जोत बढ़ावे
घी खाने से शरीर में बल आता है और आंखों की ज्योति बढ़ती है।

घूंघट वाली देखकर भली बीर मत जान
किसी स्त्री को घूंघट डाले देखकर उसे सच्चरित्र मत समझ लो।

चना पकत है चैत में और गेहूं बैसाख विचार।
कातिक पाके बाजरा और मगसिर पाके ज्वार।
चैत में चना, बैसाख में गेहूं, कार्तिक में बाजरा और अगहन में ज्वार की फ़सल आ जाती है।

चप्पे जितनी कोठरी और मियां मुहल्लेदार
झूठी शान दिखाना।
चप्पे जितनी=चार अंगुल जगह; थोड़ी जगह।

चाक कुनम, गिरह कुनम, देखो मेरा हुनर
मेरा हुनर देखिए ! मैं काट भी सकता हूं, और सी भी सकता हूं। बहुत चालाक को व्यंग्य में क.।

चिराग़ से चिराग़ जलता है
ज्ञान से ज्ञान की ज्योति फैलती है, संतान से संतान बढ़ती है; एक समर्थ से दूसरे को सहायता मिलती है, इस प्रकार का भाव प्रकट करने को क.।
(कहावत उस समय का स्मरण कराती है, जब दियासलाई

का आविष्कार नहीं हुआ था और दीये से दीया जलाकर काम चलाते थे।)

जने जने से मत कहो कार भेद की बात
अपने रोज़गार का (या मन का) भेद हरेक को नहीं बताना चाहिए।

जल की मछली जल ही में भली
जहां का जीव वहीं सुख पाता है।

जल से अगनी बुझत है, जल बरसत ठंड होय।
जल से धोबी मैल को, दूर करत है धोय।
स्पष्ट।

जल्दी काम शैतान का, और देर काम रहमान का
(1) जल्दबाज़ी में किया काम शैतान के लिए होता है, और धीरज से किया गया काम ईश्वर, के लिए अथवा
(2) शैतान ही हर काम में जल्दबाजी करता है, ईश्वर सोच-समझ कर काम करता है।

जहां गाय, वहां गाय का बच्छा
जहां मां, वहां बेटा।

जहां गुल होगा वहां खार भी ज़रूर होगा
गुलाब में कांटा अवश्य होता है।
सुख के साथ दुख लगा है।

जाप के बिरते पाप
यह सोचकर कि अच्छे कर्मों से बुरे कर्म ढके जा सकते हैं, दुष्कर्म करना।

जिन मोलों आई उन्ही मोलों गंवाई
जिस तरह कोई चीज आई, उसी तरह वह हाथ से निकल भी गई; उसे खरीदने में कोई लाभ नहीं हुआ।

जिसका घोड़ा उसके बार
जिसकी वस्तु है, उससे संबंधित सामग्री भी उसी की मानी जाएगी।

जिस घर बड़े न बूझिये, दीपक जले न सांझ।
वह घर ऊजड़ जानिये, जिनकी तिरिया बांझ।
जिस घर में बड़े-बूढ़ों से सलाह न ली जाए, जहां संध्या को दीपक न जले और जिस घर की स्त्री बांझ हो, उसे नष्ट हुआ समझना चाहिए।

जिस बहुअर की बैरन सास।
वाका कभी न हो घर वास। (स्त्रि.)
जिस बहू की सास लड़ाकू होती है, वह कभी सुख नहीं पाती।

जीऊ किसी का मत सता, जब लग पार बसाय।
कांटे हैं इस राह में, इस बटिया मत जाय।
जब तक वश चले, किसी को सताना नहीं चाहिए। यह रास्ता कंटीला है। इस पर मत चल।

जी जलाने से हाथ जलाना बेहतर
(किसी का) हाथ भले ही जलाए, पर हृदय न जलाए।

जेठ, जिठानी, देवरा, सब मतलब के मीत।
मतलब बिन तो कोई भी राखे नाहिं प्रीत। (ग्रा. स्त्रि.)
सब सगे संबंधी मतलब के ही यार होते हैं, मतलब के विना कोई प्रेम नहीं करता।

जेठ तपत हो बरखा गहरी, हसै बांगरू, रोवे नहरी, (कृ.)
जेठ में गरमी पड़ने से वर्षा खूब होती है; (तब) ऊंची ज़मीन वाले हंसते और नीची ज़मीन वाले रोते हैं। (क्योंकि ज़मीन बहुत गीली हो जाती है।)

जैसी लक्खो बंदरिया, वैसे मनवा भांड़
दोनों एक से (चालाक)।
मनवा=नाम विशेष।

जैसी सरधा हो तेरी, वैसा ही बोझ उठाय।
हाथी बोझा च्यूंटी ठावत दब मर जाय।
अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही काम करना चाहिए; चींटी अगर हाथी का वोझ उठाए तो दबकर मर जाएगी।

जैसी सेवा करे वैसा मेवा पाये
स्पष्ट।
मेवा=फल।

जैसे के संग तैसा करे, आछा नाहीं काम।
बुरे के संग नेकी करे, नेकी कौ परनाम।
जैसे के साथ तैसा करना अच्छा नहीं। बुरे के साथ नेकी करना चाहिए। नेकी का फल मिलता है।

जो ईश्वर किरपा करें तो खड़े हिलावें कान अरहर के खेत में
ईश्वर जब देता है तब अनायास देता है।
(कथा है कि एक बार राज्य का ख़जाना गधों पर लदकर जा रहा था। संयोगवश उनमें से एक गधा अरहर के खेत में घुस गया और चरने लगा। किसी ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। दूसरे दिन खेत के मालिक ने आकर देखा कि एक गधा खेत में खड़ा कान हिला रहा है। पास जा कर देखा तो उस पर रुपए लदे पाए। उसने सब रुपए तो लेकर घर में रखे और गधे को मारकर भगा दिया। तब कहावत का उक्त वाक्य उसने कहा।)

जो कोसत बैरी मरे और मन चितवे धन होय।
जल में घी निकसन लगे तो रूखा खाय न कोय।

न तो कोसने (शाप देने) से शत्रु ही मरता है, और न इच्छा करने मात्र से धन ही मिल जाता है। यदि जल में से घी निकलने लगे तो फिर रूखा कोई नहीं खाएगा।

जोगी किसके मीत और पातर किसकी नार

योगी किसी के मित्र नहीं होते और न वेश्या किसी की पत्नी।

जो जल असाढ़ लगत ही बरसे, नाज नियार बिन कोई न तरसे, (कृ.)

यदि आपाढ़ के शुरू होते ही पानी वरस जाए, तो फ़सल बहुत अच्छी होती है।

असाढ़=अंग्रेज़ी का जून का महीना।

जो तू ही राजा हुआ, अपना सुख मत ठान।
फक्कड़ और फकीर के, दुख सुख पर कर ध्यान।

स्पप्ट।

जोते हल तो होवे फल, (कृ.)

परिश्रम का फल मिलता है।

जो बैरी हों बहुत से और तू होवे एक।
मीठा वन कर निकस जा, यही जतन है नेक।

दुश्मनों में अगर अकेले फंस जाओ, तो भी मीठे वनकर निकल जाओ; झगड़ा मत करो।

जो मैं ऐसा जानती, प्रीत किये दुख होय।
नगर ढिंढोरा फेरती, प्रीत न कीजो कोय। (स्त्रि.)

अगर मैं ऐसा जानती कि प्रेम करने से दुख होता है तो मैं मुनादी करवा देती–'कोई प्रेम मत करो।'

जो सांई के हुक्म से मुंह न फेरे तोई।
तेरे भी फिर हुक्म से मुंह न फेरे कोई।

तू यदि ईश्वर की आज्ञा माने, तो सव लोग तेरी भी आज्ञा मानेंगे।

जो सावन में बरसा होवे, खोज काल का बिल्कुल खोवे, (कृ.)

सावन में वर्षा होने से फ़सल अच्छी होती है।

ज्यों-ज्यों बाव बहै पुरवाई।
त्यों त्यों अति दुख घायल पाई।

पूरब की हवा चलने से चोट का दर्द बढ़ जाता है।

झांसी गले की फांसी, दतिया गले का हार।
ललितपुर ना छाड़िये, जब लग मिले उधार।

(इस कहावत का ठीक अर्थ लगाना कठिन है। इतना अवश्य है कि दतिया एक सुरम्य स्थान है। राज्यों के विलीनीकरण के पहले यह मध्य भारत का एक छोटा, परंतु प्रतिष्ठित देशी राज्य था। अब मध्य प्रदेश का एक ज़िला है। झांसी में गर्मी बहुत पड़ती है। किसी के लिए कोई आकर्षण नहीं। खुश्क जगह है। ललितपुर दतिया की तरह ही आकर्षक है। किसी समय रुपए का लेन-देन वहां बहुत होता था और जैन साहूकारों की वजह से लोगों को आसानी से रुपया मिल जाता था। अब वह बात नहीं। स्थानीय देशभक्ति की अभिव्यक्ति है।)

झूठ कहना और जूठ खाना बराबर है

स्पप्ट।

झूठी तो होती नहीं, कभी सांची बात।
जैसे टहनी ढाक में, लगे न चौथा पात।

सच बात कभी झूठ नहीं हो सकती। ढाक की टहनी में तीन ही पत्ते होते हैं, चार नहीं होते।

झूठे की क्या दोस्ती, लंगड़े का क्या साथ।
बहरे से क्या बोलना, गूंगे की क्या बात?

इन चारों से कोई लाभ नहीं।

तुझ घोरे जो चाकरा, देवे उमर गंवाय।
बूढ़ा वाको जानकर, घोरे से मत ताह।

जिस नौकर ने जिंदगी भर तुम्हारे यहां काम किया हो, उसे बुढ़ापे में भगा नहीं देना चाहिए।

दूर गये की आस क्या?

जो दूर देश गया, उसका क्या ठीक कव लौटे?

देख जगत में औदसा, मत डर और मत रो।
विना हुकुम भगवान के, बाल न बांका हो।

संसार की कठिनाइयों से मत घबराओ, भगवान की इच्छा के विना किसी का कुछ नहीं विगड़ सकता।

देवा को रिन मिले सुहेला; अनदेवा को मिले न धेला, (व्य.)

जो लेकर दे देता है, उसे बहुत उधार मिलता है; जो लेकर नहीं देता, उसे अधेला भी नहीं मिलता।

दोनों बैरी दीन के, रांगड़ और शैतान।
बुरा करावें और से, और आप बुरे से काम।

रांगड़ और शैतान दोनों ही धर्म के शत्रु हैं। स्वयं बुरे कर्म करते हैं, और दूसरों को भी बहकाते हैं।

(रांगड़ छोटी श्रेणी के मुसलमान होते हैं, जो चोरी-चपाटी के लिए बदनाम हैं।)

धन जोड़न के ध्यान में, यू ही उमर न खो।
मोती बरगे मोल के, कभी न ठीकर हो।
धन जोड़ने की चिंता में आयु वृथा मत खोओ। कंकड़ कभी बेशकीमती मोती नहीं हो सकते।

धरम पाप सब मनुख के, धोवत हैं इस तौर।
जल साबुन ज्यों धोवत हैं, सब कपड़न का घोर।
धर्म से मनुष्य के सब पाप उसी तरह कट जाते हैं, जैसे साबुन से कपड़ों का मैल कटता है।

धान कहे मैं हूं सुलतान, आये गये का राखूं मान, (ग्रा.)
धान की प्रशंसा में।

धोबी के घर पड़े चोर, वह न लुटे, लुटे और
उसके ग्राहकों के ही कपड़े चोरी जाएंगे, उसका क्या बिगड़ता है?

धौले भले हैं कापड़े धौले भले न बार।
काली आछी कामली, काली भली न नार।
सफ़ेद कपड़े अच्छे होते हैं, पर सफेद बाल अच्छे नहीं; काला कंबल अच्छा होता है, पर काली स्त्री अच्छी नहीं।

नहा कर खाए और खाकर सोवे, उसके औसक कभी न होवे
जो नहा के खाता है, और खाकर विश्राम करता है, वह कभी बीमार नहीं पड़ता।

निकसत हैं इक आंक से, धोई, धोबी, धान।
ओछे भोंड़े हो गये, सब करतब के तान।
धोई, धोबी और धान, तीनों शब्द एक ही अक्षर से प्रारंभ होते हैं, पर अपने गुण-धर्म के कारण अच्छे और बुरे माने जाते हैं।
धोई=ठग, धोखेबाज

निन्नानवे घड़े दूध में एक घड़ा पानी क्या जाना जाय?
सब सयाने एक ही जैसा सोचते हैं।
(कथा है कि एक बार अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि किस जाति के लोग सबसे अधिक चतुर होते हैं। बीरबल ने जवाब दिया 'ग्वाले'। और अपने इस कथन की सत्यता को सिद्ध करने के लिए उन्होंने आगरे के सब ग्वालों को बुलवाया और उनसे एक बड़े हौज़ को रात में दूध से भरने के लिए कहा। हरेक ग्वाले ने अपने मन में सोचा कि सब लोग तो दूध डालेंगे ही, यदि वह उसमें एक लोटा पानी डाल देगा तो किसी को पता नहीं चलेगा। यही समझकर सबने दूध की जगह पानी ही डाला और जब दूसरे दिन सुबह बादशाह और बीरबल हौज़ को देखने गए, तो उसे पानी से भरा पाया।)

निपट सबेरे खेत मां, जाकर हल को बाह।
जब सूरज हो सिखर मां, बैठ छांव में जा। (कृ.)
किसान को उपदेश। स्पष्ट।
हल को बाह=हल चला। सिखर मां=सिर पर।

पंडित और मसालची दोनों उल्टी रीत।
और दिखावे चांदनी आप अंधेरे बीच।
पंडित और मशालची इन दोनों का उल्टा तरीक़ा है। दूसरों को प्रकाश दिखाते हैं, पर स्वयं अंधेरे में रहते हैं।
(पंडित दूसरों को उपदेश देता है, पर स्वयं उनके अनुसार काम नहीं करता।)

पढ़तम ते मरतम, ना पढ़तम ते मरतम
जो पढ़ते हैं वे भी मरते हैं, नहीं पढ़ते हें वे भी मरते हैं; मरना हर हालत में है।

पढ़े के आगे टोकरा डाला, उसने कहा 'मुझे उपलों को भेजा'
पढ़े के आगे टोकरा डाला गया, तो उसने तुरंत समझ लिया कि मुझसे उपले लाने के लिए कहा जा रहा है।
पढ़ा-लिखा इशारे में बात समझ लेता है।

पत चाहे तो बालके, पढ़ विद्या भरपूर।
बिन विद्या के आदमी, हैंगे जैसे बूर।
मान-सम्मान चाहते हो, तो विद्या पढ़ो। बिना विद्या के मनुष्य धूल की तरह है।

परजा जड़ है राज की, राजा है ज्यों रूख।
रूख सूख कर गिर पड़े, जब जड़ जावे सूख।
प्रजा राज्य की जड़ है। राजा वृक्ष की तरह है;
जड़ सूखने से वृक्ष भी सूखकर गिर पड़ता है।

परजा भाजे छोड़ के कुन्यायी का गाम।
चहूं ओर जग मां करे, फेर उसे बदनाम।
स्पष्ट। कुन्यायी=अन्यायी।

पराई बदशुगनी के वास्ते अपनी नाक कटाई
दूसरों को हानि पहुंचाने के लिए अपनी हानि कर लेना। दुष्टों का काम।

पराया खाइये गा बजा, अपना खाइये टट्टी लगा
घर का भेद किसी को बताना नहीं चाहिए।

पाप डुबोवे धरम तिरावे, धरमी कभी नाह दुख पावे
स्पष्ट।

पाबंदी एक की भली
अधीनता एक की ही अच्छी।

पीर मियां बकरी, मुरीद मियां बांगा; आ गई बकरी चब गई बांगा, (पू.)

पीर मियां तो बकरी हैं, और उनका चेला है कपास का खेत; बकरी आई और कपास चर गई।

गुरु चेलों की ही कमाई खाते हैं।

पैर जो पछवा मां बरसावे; वो ही निरमल रास उठावे, (कृ.)

पश्चिम की हवा चलने पर उड़ावनी करने से अनाज की राशि शीघ्र प्राप्त हो जाती है।

(फसल कट जाने पर उसे खलिहान में इकट्ठा करके थोड़ा-थोड़ा करके बैलों से कुचलवाते हैं; इसी कुचले हुए अंश को पैर कहते हैं। इसे टोकनी में भरकर धीरे-धीरे नीचे गिराते हैं, जिससे भूसा कुछ दूर जाकर गिरता है और दाना नीचे गिरता जाता है। पश्चिम की हवा चलने पर उड़ावनी की यह क्रिया शीघ्र संपन्न होती है। कहा. में यही बात कही गई है।)

पैसे बिन माता कहे 'जाया पूत कुपूत'।
भाई भी पैसे बिना मारें लख सिर जूत।

स्पष्ट।

बंजी और बटाउआ, सुख पायें जिस गाम।
बाकी तो चौखूंट में, करें नेक सरनाम।

व्यापारी और राहगीर सब जगह उस गांव की प्रशंसा करते हैं, जहां उन्हें सुख मिलता है।

बगल था सिपारा, तो पूत था हमारा।
जब कमर हुआ कटारा, तो कंत हुआ तुम्हारा।

जब उसकी बगल में किताबें थीं। (अर्थात जब वह छोटा था) तब तो वह मेरा लड़का था, और जब उसकी कमर में कटारी बंध गई है (अर्थात वह सिपाही बन गया है।) तब वह तेरा कंत हो गया।

(सास का बहू को उलाहना जो ईर्ष्यावश अपने पति को उसके पास जाने से मना करती है।)

बड़े आदमी ने दाल खाई, तो कहा सादा मिजाज़ है,
गरीब ने दाल खाई, तो कहा कंगाल है

जिस काम के लिए बड़े आदमी की प्रशंसा होती है, उसी काम के लिए ग़रीब की निंदा की जाती है।

बड़ों को होवे दुख बड़ा, छोटों से दुख दूर।
तारे सब न्यारे रहें, गहें सहु ससि सूर।

बड़ों के कष्ट भी बड़े होते हैं। ग्रहण चंद्र और सूर्य को ही लगता है, तारों को नहीं लगता।

बनते देर लगती है, बिगड़ते देर नहीं लगती

स्पष्ट।

बनी बनावे बानिया, बनी बिगाड़े जाट।
मूंड़े सीस सराह कर, डोम, कबीसर, भाट।

बनिया बने काम को (और भी अच्छा) बनाता है; जाट बने काम को नष्ट कर देता है; डोम, कवि और भाट खुशामद करके पैसा खाते हैं।

बल सूं नामी हो गए, रुस्तम, अर्जुन, भीम।
बल बिन कैसी हाकिमी, कह गये सांच हकीम।

बल के बिना हुकूमत नहीं होती।

बल से राजा राव है, बल बिन बड़ा न कोय।
सांच बड़े रे कह गये, बल बिन बड़ा न कोय।

स्पष्ट।

बहू नवेली और गऊ दुधेली (ग्रा.)

बहू सुंदर और गाय दुधार (होनी चाहिए।)

बाजरा कहे मैं हूं अलेला
दो मूसल से लड़ूं अकेला
जो मेरी नाजो खिचड़ी खाय
तो तुरत बोलता खुश हो जाय (कृ.)

बाजरा अपनी प्रशंसा में कहता है मैं सब अनाजों में अलबेला हूं, अकेला दो मूसलों से लड़ता हूं (अर्थात मुझे साफ़ करने के लिए मूसल से कूटना पड़ता है) सुकुमारी यदि मेरी खिचड़ी खाए, तो तुरंत खुश होकर बात करने लगे।

बाड़ लगाई खेत को, बाड़ खेत की खाय।
राजा हो चोरी कर, न्याव कौन चुकाय।

खेत की रखा के लिए बाड़ लगाई, (पर) बाड़ ही खेत को खाने लगी; कोई राजा होकर चोरी करे, तो न्याय कौन करेगा?

बात पर बात याद आती है

स्पष्ट।

बातों हाथी पायं, बातों हाथी पायं

बातों में ही हाथी की सवारी या हाथी इनाम में मिलता है, और बातों से ही हाथी के पैर तले कुचलवा दिया जाता है।

बाप डोम और डोम ही दादा; कहे मियां 'मैं शरफ़ाज़ादा'

शेखी मारना।

शरफ़ा=शरीफ़ आदमी का लड़का।

बारह बरस के को वेद क्या? और अठारह बरस के को कैद क्या?

बारह वर्ष के लड़के को सिखाने की क्या ज़रूरत? वह

स्वयं **समझता है** और अठारह वर्ष के लड़के पर नियंत्रण की भी **क्या** ज़रूरत।
(उसे स्वयं अपना भला-बुरा समझना चाहिए।)

बिद्या तो वह माल है, जो खरचत दुगना होय;
राजा, राव, चोरटा, छीन न सक्के काय।
विद्या ऐसा धन है जो खर्च करने से बढ़ता है, उसे न कोई चुरा सकता है न छीन सकता है।

बेटा जनकर निब चले; सोना पहनकर ढक चले, (स्त्रि.)
लड़के को जन्म देने के बाद (स्त्री को) विनम्र बनकर रहना चाहिए; और सोने के गहने पहनकर उन्हें ढक कर रखना चाहिए।
तात्पर्य यह कि संतान या धन का घमंड ठीक नहीं।

बैरी लागे हाथ तो, छोड़ न लेकर माल।
उसकी जड़ को मूल ही, बाहर फेंक निकाल।
दुश्मन अगर चंगुल में फंस जाए, तो रुपए के लालच में उसे छोड़ नहीं देना चाहिए; (बल्कि) उसे जड़ से नष्ट कर देना चाहिए।

बैरी संग ना बैठिए, पीकर मद और भंग।
जी खोवा है बैठना, जब बैरी के संग।
नशा करके बैरी के साथ नहीं बैठना चाहिए, प्राण संकट में पड़ सकते हैं।

बैरी होना आपना, लाख जतन कर देख।
मेटे से मिट्टे नहीं, ज्यूं करमन की रेख।
भाग्य में लिखा कभी मिटता नहीं, उसी तरह कितना ही प्रयत्न करो, दुश्मन कभी दोस्त नहीं बन सकता।

भाग्यवान तो जगत में, बैस कोई न होय।
जो कोई राजा न्याव में, सगर उमर दे खोय।
जो राजा न्याय (करने) में ही अपना सारा जीवन बिता देता है, उसके बराबर कोई भाग्यवान नहीं।

भूखा चाहे रोटी दाल; घाया कहे 'मैं जोडूं माल'
भूखा तो भोजन चाहता है, पर जिसका पेट भरा है (जिसके पास पैसा है) वह रुपया इकट्ठा करना चाहता है।
घाया=अघाया, संतुष्ट।

भैंस कहे गुन मेरा पूरा; मेरा दूध पी होवे सूरा।
जिसे के घर मैं बंध जाऊं, दूध दही का नाल बहाऊं। (ग्रा.)
भैंस कहती है—मुझमें कोई कमी नहीं, मेरा दूध पीकर लोग वीर बनते हैं; मैं जिस घर में पहुंच जाती हूं, वहां दूध-दही की नालियां बहने लगती हैं।

मंदर मांस ही संझ से, राखो दीपक बाल।
सांझ अंधेरे बैठना, है अति भौंड़ी चाल।
संध्या होते ही घर में दीपक जला लेना चाहिए; संध्या के अंधेरे में बैठना बुरा है।

मरना है बद नेक को जीना जीना नांह सदाय।
बेहतर है जो जगत मां नेक नाम रह जाय।
भले बुरे सबको मरना है। कोई हमेशा जीवित नहीं रहता। ऐसा काम करो, जिससे संसार में तुम्हारी कीर्ति बनी रहे।

मापा कनिया और पटवारी; भेंट लिये बिन करें न यारी
खेत नापने वाला (अमीन), कानूनगो और पटवारी, ये तीनों रिश्वत लिए बिना काम नहीं करते।

मिंतर से अंतर नहीं, बैरी से नहिं नेह।
पीतम से परदा नहीं, जिन निरखी सब देह। (स्त्रि.)
स्पष्ट।
अंतर=भेदभाव।

मिल्लत मां अति लाभ है, सबसे मिलकर चाल।
माखी जब हों एकठी, तो देवें शहद महाल।
सबसे मिलकर रहो, मिलकर रहने में बड़ा लाभ है। मधुमक्खियां जब मिलकर एक होती हैं, तभी बहुत-सा मोम और शहद इकट्ठा कर पाती हैं।

मीत बनाये ना बने, बैरी, सिंह औ नाग।
जैसे कधे न हो सकें, एक ठौर जल आग। (ग्रा.)
जैसे पानी और आग एक साथ नहीं रह सकते उसी तरह शत्रु, सिंह और सर्प ये किसी के मित्र नहीं बन सकते।

मूरख को मत सौंप तू, चतुराई का काम।
गधा बिकत मिलती नहीं, बढ़ घोड़े के दाम।
मूर्ख को चतुराई का काम नहीं सिखाना चाहिए; गधा कभी कीमत में घोड़े की बराबरी नहीं कर सकता।

मूरख, मूढ़ गंवार को, सीख न दीजो कोय।
कूकर बरगी पूंछड़ी, कधी न सीधी होय। (ग्रा.)
मूर्ख या गंवार को उपदेश देना व्यर्थ है। कितना ही प्रयत्न करो, कुत्ते की जाति की पूंछ को कभी सीधा नहीं किया जा सकता।

मूल न वा सूं भय करो, जो नर करे गरूर।
जो नर साईं से डरे, वा से डरो ज़रूर।
जो घमंड दिखाए, उससे बिल्कुल मत डरो, पर जो ईश्वर से

डरे, उससे अवश्य भय खाओ।

मेले में जो जाय तू, तो नावां कर में टांक।
चोर, जुआरी, गंठकटे, डाल सकें न आंख। (ग्रा.)
मेले-ठेले में जाने पर पैसा अपने हाथ में रखना चाहिए, जिससे कोई चुरा न ले।

मैं हूं ऐसी चातुर सयानी; चातुर भरे मेरे आगे पानी
जो अपने को बहुत होशियार समझे, उससे व्यंग्य में क.।

मौत दीजो पर मंदी न दीजो, (व्य.)
मौत अच्छी, पर बाजार की मंदी अच्छी नहीं। व्यापारियों की उक्ति।

मौत दीजो, पर मौर न दीजो
मौत अच्छी, पर ब्याह अच्छा नहीं।
मौर=ब्याह के समय का सिर पर पहनने का एक आभूषण, जो ताड़ या खजूर पत्र का बनता है।

राजी राख किसान को जो हाला भर धन दे;
राजी हुआ मजूर तो मुकता काम करे। (ग्रा.)
जो किसान हमें खाने को दे, उसे संतुष्ट रखना चाहिए; मजदूर यदि प्रसन्न रहे, तो वह अधिक काम करता है।

लाज भली है बालके, या मत जी से खोय।
लाज बिना ऐसा मनुस; खसम बिना ज्यं जोय।
स्पष्ट।

लालच मत कर बावरे, लालच बुरी बलाय।
तुरत पखेरू जाल मां, लालच सूं फंस जाय।
लालच बुरी चीज है।

लावन बिन ना सोहे रोटी; बिन गूंधे ना सोहे चोटी
मिर्च-मसाले से रोटी अच्छी लगती है, और गूंथने से चोटी!

सुख, संपत और औदसा, सब काहू को होय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय।
सुख-दुख सब को लगे हुए हैं, पर (दुख के दिनों को) समझदार समझदारी के साथ और मूर्ख रो-रोकर काटता है।

सूना खेत, जौंड़िया सोव; क्यों न खेती ऊजड़ होवे
खेत यदि सूना हो, और रखवाली करने वाला भी सोता हो, तो खेती तो उजड़ ही जाएगी।

सेज चढ़ते ही रांड़
(1) जीत के समय ही किसी की मृत्यु हो जाना।
(2) जीती बाजी हार जाना।
(3) बना-बनाया काम बिगड़ जाना। इत्यादि।

हाट भली ना सीर की, और संगत भली ना बीर की, (व्य.)
साझे की दुकान अच्छी नहीं, और स्त्री का साथ अच्छा नहीं।

छाली आछा हांगला, और बदला आछा धांगला, (कृ.)
(1) हलवाहा अगर बैलों को अच्छी तरह हांकता रहे, तो बैल भी अच्छी तरह चलेंगे। अथवा
(2) हलवाहा हांकने वाला अच्छा, और बैल चलने वाला अच्छा।

होना बैरी जानकर, मत निडर हो यार।
कीड़ी चढ़कर सूंड़ मां, दे हाथी को मार।
शत्रु को छोटा नहीं समझना चाहिए।
कीड़ी=चींटी।

हुए फेरे, चूमे मेरे
ब्याह हो गया, औरत मेरी; अब मैं उसके मनमाने चूमे ले सकता हूं। अर्थात काम हो गया, अब मुझे किसी की कोई परवाह नहीं। अथवा चीज मेरे हाथ में आ गई, उसका मनचाहा उपयोग कर सकता हूं।

होड़ लीजे गोड़, उधार दीजे छोड़
उधार दिया हुआ भले ही छोड़ दे, मगर जीता हुआ न छोड़े।

होते की बहिन और बाप हैं, बिन होते की जोए।
तुलसी रुपया पास का, सब से नीका होय।
बहन और बाप समृद्धि में ही काम आते हैं। स्त्री विपत्ति में काम आती है।
तुलसीदास कहते हैं, अपने पास का पैसा ही सबसे अच्छा होता है।

□□□

मुद्रकः डी.आर. प्रिंटर्स एण्ड कन्वर्टर्स प्रा. लि. ए-31, सैक्टर-9, नोएडा, यू.पी.